नमो नमो निम्मलदंसणस्स

बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथाय नम:

पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरूभ्यो नम:

आगम परिभाषा कोष: [३]

आगम शब्दादि परिचय [च..से..न]

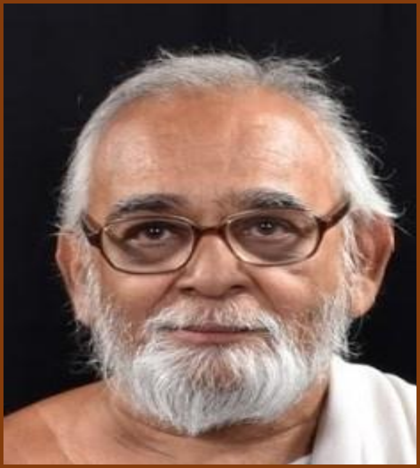

सर्जन कर्ता

आगम दीवाकर डो.मुनि दीपरत्नसागरजी

[M.Com. M.Ed. Ph.D. श्रुत महर्षि]

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथाय नम:
पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरूभ्यो नम:

आगम-परिभाषा-कोष: [३]

[आगम शब्दादि परिचय– च.. से ..न.]

(7200 से ज्यादा शब्द और करीब 12600 व्याख्याए)

પ્રકાશન તારીખ --/--/202- --વાર તિથી- ----, ---,-

અનુવાદક અને સંપાદક

આગમ દિવાકર મુનિ દીપરત્નસાગરજી
[M.Com. M.Ed. Ph.D. श्रुत महर्षि]

∞∞: સંપર્ક :∞∞

જૈનમુનિ ડૉ૦ દીપરત્નસાગર [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

Email: - jainmunideepratnasagar@gmail.com **Mobile: - 09825967397**

Web address:- (1) www.jainelibrary.org, (2) Deepratnasagar.in

ફક્ત માહિતી માટે સંપર્ક

આગમ દિવાકર ડો. મુનિશ્રી દીપરત્નસાગરજી મ.સા.
'પાર્શ્વવિહાર' જૈન દેરાસરજી, ફોરેસ્ટ રેસ્ટ હાઉસ સામે, હાઈવે ટચ
Post: ઠેબા, Pin: 361120, Dis. જામનગર (ગુજરાત)

-: ટાઈપ સેટિંગ :- આસુતોષ પ્રિન્ટર્સ, 09925146223

-: પ્રિન્ટર્સ :-નવપ્રભાત પ્રિન્ટીંગ પ્રેસ, 09825598855

४५ आगम वर्गीकरण

क्रम	आगम का नाम	सूत्र	क्रम	आगम का नाम	सूत्र
०१	आचार	अंगसूत्र-१	२५	आतुरप्रत्याख्यान	पयन्नासूत्र-२
०२	सूत्रकृत्	अंगसूत्र-२	२६	महाप्रत्याख्यान	पयन्नासूत्र-३
०३	स्थान	अंगसूत्र-३	२७	भक्तपरिज्ञा	पयन्नासूत्र-४
०४	समवाय	अंगसूत्र-४	२८	तंदुलवैचारिक	पयन्नासूत्र-५
०५	भगवती	अंगसूत्र-५	२९	संस्तारक	पयन्नासूत्र-६
०६	ज्ञाताधर्मकथा	अंगसूत्र-६	३०.१	गच्छाचार	पयन्नासूत्र-७
०७	उपासकदशा	अंगसूत्र-७	३०.२	चन्द्रवेध्यक	पयन्नासूत्र-७
०८	अंतकृत् दशा	अंगसूत्र-८	३१	गणिविद्या	पयन्नासूत्र-८
०९	अनुत्तरोपपातिकदशा	अंगसूत्र-९	३२	देवेन्द्रस्तव	पयन्नासूत्र-९
१०	प्रश्नव्याकरणदशा	अंगसूत्र-१०	३३	वीरस्तव	पयन्नासूत्र-१०
११	विपाकश्रुत	अंगसूत्र-११	३४	निशीथ	छेदसूत्र-१
१२	औपपातिक	उपांगसूत्र-१	३५	बृहत्कल्प	छेदसूत्र-२
१३	राजप्रश्निय	उपांगसूत्र-२	३६	व्यवहार	छेदसूत्र-३
१४	जीवाजीवाभिगम	उपांगसूत्र-३	३७	दशाश्रुतस्कन्ध	छेदसूत्र-४
१५	प्रज्ञापना	उपांगसूत्र-४	३८	जीतकल्प	छेदसूत्र-५
१६	सूर्यप्रज्ञप्ति	उपांगसूत्र-५	३९	महानिशीथ	छेदसूत्र-६
१७	चन्द्रप्रज्ञप्ति	उपांगसूत्र-६	४०	आवश्यक	मूलसूत्र-१
१८	जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	उपांगसूत्र-७	४१.१	ओघनिर्युक्ति	मूलसूत्र-२
१९	निरयावलिका	उपांगसूत्र-८	४१.२	पिंडनिर्युक्ति	मूलसूत्र-२
२०	कल्पवतंसिका	उपांगसूत्र-९	४२	दशवैकालिक	मूलसूत्र-३
२१	पुष्पिका	उपांगसूत्र-१०	४३	उत्तराध्ययन	मूलसूत्र-४
२२	पुष्पचूलिका	उपांगसूत्र-११	४४	नन्दी	चूलिकासूत्र-१
२३	वृष्णिदशा	उपांगसूत्र-१२	४५	अनुयोगद्वार	चूलिकासूत्र-२
२४	चतु:शरण	पयन्नासूत्र-१	---	---------------	-----

અમારા પ્રકાશનો ૩૦/૦૬/૨૦૨૦ સુધીમાં

ક્રમ	સાહિત્યનો પ્રકાર	બુક્સ	કુલપાના	બુક્સ	કુલપાના
1	આગમ સાહિત્ય મૂળ [૧ થી ૩] કુલ પુસ્તકો	--	-------	149	07,864
	1. આગમ મૂળ પ્રિન્ટેડ (સાઈઝ A – 5)	49	03510		
	2. આગમ મૂળ નેટ (સાઈઝ A – 4)	47	02832		
	3. આગમ મંજુષા નેટ	53	01522		
2.	આગમ અનુવાદ સાહિત્ય [૪ થી ૯] કુલ પુસ્તકો	--	--------	175	23,080
	1. આગમ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ– મૂળ, પ્રિન્ટેડ	49	03360		
	2. આગમ હિન્દી અનુવાદ–મૂળ, નેટ	48	02898		
	3. આગમદીપ ગુજરાતી અનુવાદ પ્રિન્ટેડ	07	02962		
	4. આગમ ઈંગ્લીશ અનુવાદ નેટ	11	00410		
	5. આગમ સટીક ગુજરાતી અનુવાદ પ્રિન્ટેડ	48	10340		
	6. આગમ હિન્દી અનુવાદ–મૂળ, પ્રિન્ટેડ	12	03110		
3.	આગમ વિવેચન સાહિત્ય [૧૦ થી ૧૬] કુલ પુસ્તકો	--	---------	171	60,888
	1. આગમ સૂત્ર સટીકં પ્રિન્ટેડ	46	13806		
	2. આગમ–મૂલં એવં વૃત્તિ– 1 નેટ	51	17992		
	3. આગમ–મૂલં એવં વૃત્તિ– 2 નેટ	09	02560		
	4. આગમ ચૂર્ણિ સાહિત્ય નેટ	09	02668		
	5. સવૃત્તિક આગમ સૂત્રાણિ– 1, પ્રિન્ટેડ	40	18460		
	6. સવૃત્તિક આગમ સૂત્રાણિ–2, પ્રિન્ટેડ	08	02648		
	7. સચૂર્ણિક આગમ સૂત્તાણિ, પ્રિન્ટેડ	08	02754		
4.	આગમ ડિક્ષનેરી સાહિત્ય [૧૭ થી ૨૧] કુલ પુસ્તકો	--	---------	016	05,506
	1. આગમ સદ્દકોસો, પ્રિન્ટેડ	04	02184		
	2. આગમ કહા વ નામ કોસો, પ્રિન્ટેડ	01	00208		
	3. આગમ સાગર કોષ, નેટ	05	01126		
	4. આગમ બૃહત નામ કોષ, પ્રિન્ટેડ	02	00500		
	5. આગમ શબ્દાદિ સંગ્રહ, પ્રિન્ટેડ	04	01488		
5.	આગમ વિષયાનુક્રમ સાહિત્ય [૨૨ થી ૨૪] કુલ પુસ્તકો		-------	009	01,578
	1. આગમ વિષયાનુક્રમ પ્રિન્ટેડ + નેટ	02	00726		
	2. આગમ સટીક વિષયાનુક્રમ નેટ	04	00428		
	3. આગમ સૂત્ર + ગાથાનુક્રમ નેટ	03	00424		
	અમારા સાહિત્ય પ્રકાશનો ચાલુ.....				

અમારા પ્રકાશનો ૩૦/૦૬/૨૦૨૦ સુધીમાં

ક્રમ	સાહિત્યનો પ્રકાર	બુક્સ	કુલપા	બુક્સ	કુલપાના
6	આગમ અન્ય સાહિત્ય [૨૪ થી ૨૭] કુલ પુસ્તકો	--	---	15	03544
	1. આગમ સંબંધી લેખ, પ્રિન્ટેડ	3	0068		
	2. આગમ કથાનુયોગ, પ્રિન્ટેડ	6	2172		
	3. આગમ સંબંધી અન્ય સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ	4	1140		
	4. આગમ પૂજન સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ	1	0068		
	5. આગમ સંક્ષિપ્ત પરિચય,પ્રિન્ટેડ	1	0096		
	કુલ આગમ સાહિત્ય 1,02,460 પેજ	--	---	535	102460
	આગમ સિવાયનું અન્ય સાહિત્ય 09,080 પેજ	--	---	80	009080
1	તત્ત્વાભ્યાસ સાહિત્ય,પ્રિન્ટેડ	13	2090		
2	સૂત્રાભ્યાસ સાહિત્ય,પ્રિન્ટેડ	6	1480		
3	વ્યાકરણ સાહિત્ય,પ્રિન્ટેડ	5	1048		
4	વ્યાખ્યાન સાહિત્ય,પ્રિન્ટેડ	5	1300		
5	જિનભક્તિ સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ	9	1196		
6	વિધિ સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ	3	0256		
7	આરાધના સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ	3	0534		
8	પરિચય સાહિત્ય,પ્રિન્ટેડ	3	0136		
9	પૂજન સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ	1	0068		
10	તીર્થંકર સંક્ષિપ્ત દર્શન પ્રિન્ટેડ	25	0680		
11	પ્રકીર્ણ સાહિત્ય, પ્રિન્ટેડ	5	0246		
12	દીપરત્નસાગરના લઘુશોધનિબંધ,પ્રિન્ટેડ	2	0106		

આગમ સાહિત્ય	બુક્સ 535	કુલ પેજ	1,02,460
આગમેતર સાહિત્ય	બુક્સ 80	કુલ પેજ	0,09,140
કુલ સાહિત્ય નિર્માણ	બુક્સ 615	કુલ પેજ	1,11,600
'તત્ત્વાર્થસૂત્ર' એક વિશિષ્ટ સંકલનની *DVD* 84બુક્સ			0,27,930

કુલ સાહિત્ય નિર્માણ 615 બુક્સ + 1 *DVD*, કુલપાના 1,39,530

संक्षेप- आगम रत्न कोषः

संक्षेप	आगमनाम	संक्षेप	आगमनाम	संक्षेप	आगमनाम
अनुत्त०	अनुत्तरोपपातिक	जंबू०	जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	पिं०	पिंडनिर्युक्ति
अनुओ०	अनुओगद्वार	जीत०	जीतकल्प	पुप्फ०	पुष्पचूलिका
अंत०	अंतकृत् दशा	जीवा०	जीवजीवाभिगम	पुप्फि०	पुष्पिका
आचा०	आचारांग	ज्यो०	ज्योतिषकरण्डक	बुह०	बृहत्कल्प
आव.चू०	आवश्यक चूर्णि	ठा०	स्थानांग	भग०	भगवती
आतु०	आतुर प्रत्याख्यान	तं०	तंदुलवैचारिक	भत्त०	भक्तपरिज्ञा
आव.म०	आवश्यक मलयगिरि	दश०	दशवैकालिक	मर०	मरणसमाधि
आव.वृ०	आवश्यक वृत्ति	दशा०	दशाश्रुतस्कंध	महानि०	महानिशीथ
उत्त०	उत्तराध्यायनानि	देवि०	देवेन्द्रस्तव	महाप०	महाप्रत्याख्यान
उपा०	उपासकदशा	नं०	नंदीसूत्र	रा०	राजप्रश्निय
उव०	उववाइय	नाया०	ज्ञाताधर्मकथा	वव०	व्यवहार
ओह०	ओघनिर्युक्ति	निर०	निरयावलिका	विपा०	विपाकसूत्र
कल्प०	कल्पसूत्र	निसी०	निशीथ	वि०	विशेषावश्यक
गच्छा०	गच्छाचार	पंच०चू०	पंचकल्पचूर्णि	वीर०	वीरस्तव
गणि०	गणिविद्या	पंच०भा०	पंचकल्पभाष्य	संथा०	संस्तारक
चउ०	चउशरण	पण्हा०	प्रश्नव्याकरण	सम०	समवायांग
चंद०	चन्द्रप्रज्ञप्ति	पन्न०	प्रज्ञापना	सूर०	सूर्यप्रज्ञप्ति
चंदा०	चन्द्रवेध्यक	पा०	पाक्षिकसूत्र	सूय०	सूत्रकृतांग

संक्षेप	विस्तार	संक्षेप	विस्तार	संक्षेप	विस्तार	संक्षेप	विस्तार
अ०	अध्ययन	ठा०	स्थान	प्रति	प्रतिपत्ति	श०	शतक
उ०	उद्देशक	द्वा०	द्वार	भा०	भाष्य	श्रु	श्रुतस्कन्ध
गा०	गाथा	नि	निर्युक्ति	व०	वर्ग	सम०	समवाय
चू०	चूर्णि	प०	पद	वक्ष०	वक्षस्कार	सू०	सूत्र
चूलि०	चूलिका	पाहु०	प्राभृत	वृ०	वृत्ति	--	------

मुझे कुछ कहेना है

*** मै ईस 'आगम परिभाषा कोष:' की कुछ मुख्य बाते बताना चाहता हुं ---

[१] ४५ आगम मूल, उन की निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि और वृत्तिमे जो आगमिक शब्दो कि व्याख्याए कि गइ है, उसी को यहा 'आगम परिभाषा कोष' मे हमने स्थान दिया है.

[२] ईस कोषमे ४५ आगम, उस के साथ ४ वैकल्पिक आगम (पंचकल्प, पिंडनिर्युक्ति, चन्द्रवेध्यक और वीरस्तव), पाक्षिक सूत्र (जो १४वि सदीमे एक आगम के रुपमे स्विकृत हुआ था), ज्योतिष करण्डक (जो पयन्ना रूप से गिना जाता है), कल्पसूत्र (जो दशाश्रुतस्कन्ध का अध्ययन होते हुए भी विशिष्ट महत्त्व रखता है) और विशेषावश्यक भाष्य (जो की आवश्यक सूत्र के पहेले अध्ययन पर रचित है)का समावेश ईस कोषमे किया है.

*** ईस विराट कार्य की भूमिका—

कोष रचना (डीक्षनेरी) के विषयमे हमारा अनुभव तो था ही. हमने पूर्वमे १.आगम सद्दकोसो, २.आगम कथाकोसो, ३. आगम सागर कोष, ४.आगम शब्दादि संग्रह, ५. आगम बृहत् नाम कोष. ये पांच डीक्षनेरी की रचना कि है, जिसमे 'आगम सागर कोष' के अलावा सभी डीक्षनेरी प्रिन्टेड स्वरुपमे भी मौजुद है.

मेरे मनमे ये 'आगम परिभाषा कोष' बनाने का बीज अंकुरित हुआ उस के दो प्रमुख कारण है-

(१) आगमो का मनोयोगपूर्वक वांचन करते हुए, एक बात दृष्टि संमुख आयी कि- हम किसी भी शब्द का कुछ भी विपरीत या अन्यथा अर्थ निकालते है अथवा पूर्वाचार्य कृत सही अर्थ नहि करते है तो प्रायश्चित्त आता है.

(२) आगम सम्बन्धी अलग अलग कोष का अवलोकन करते करते ये देखा की बहोत से शब्दोमे मैने देखा की कोइ कोइ शब्द अभिधान राजेन्द्रमे छुटे है, तो बहोत से शब्द अल्प परिचित शब्द कोषमे भी छुटे है, अर्धमागधी कोषमे एवं जैन लक्षणावलिमे भी अनेक शब्द नहि दिख रहे है. इस के अलावा दुसरे परिवर्तन भी हमारी नज़रमे आये है, जैसे की कोइ कोइ स्थानमें अकारादि क्रममे शब्द आगे-पीछे दिखे थे, किसी जगह व्याख्या के संदर्भ गलत थे वगैरेह; उन स्थानोमे मेरी शारीरिक स्थिति के हिसाब से जितने हो शके उतने परिवर्तनो को यहां स्थान देने कि मनीषा से हमने कार्य का आरम्भ भी किया. आगे-पीछे हुए शब्दो को अ-कारादि क्रममे कर दिये, प्रत्येक अर्थ, व्याख्या या परिभाषा को अलग पंक्तिमे रख दिये, आगम संदर्भमे आगमो के नाम भी लिख दिये है, बहोत शब्दो को शामिल भी किये; फ़िर भी मै यह कहुंगा की जो अभ्यासक संपूर्ण सूची की इच्छा रखते है, उन को तो हमारे jainelibrary.org मे तैयार होनेवाले 'डेटाबेझ' कि हि मदद लेनी पडेगी.

मेरे हिसाब से करीब ४५,००० जितने शब्दो और ७७,००० से ज्यादा आगमिक व्याख्याए ईस कोषमे शामिल है. जिस का स्वरुप ईस डीक्षनेरीमे ईस तरह प्रस्तुत है. पहेले बोल्ड टाइपमे दिया गया शब्द आगम का प्राकृत भाषा का शब्द है और जहां संस्कृत व्याख्या का हि शब्द मिला, वहां उन का प्राकृत शब्दमे रुपान्तर कर के भी दिया है. उस के बाद नोर्मल टाईपमे उन शब्दो की व्याकरणीय ओळख दी है, उस के बाद इटालिक टाईपमे उसी शब्दो के संस्कृत रुपान्तर दिये है; फ़िर शब्दो कि नीचे से उन कि आगमिक व्याख्याए आरंभ होती है, साथमे उन आगमो के संदर्भ भी बताये है. प्रत्येक व्याख्या 'आगम संदर्भ के साथ अलग अलग लाइनमे कंपोझ की हुइ है.

आप के करकमलोमे ये -५- भागोमे तैयार किया हुआ आगम परिभाषा कोष: हम अर्पण कर रहे है .

डो. मुनि दीपरत्नसागर

[M.Com.,M.Ed.,Ph.D.,श्रुतमहर्षि]

च-कारादि शब्द-परिभाषाः

च- अव्य० *[च]*

समुच्चये, । विपा० । निसि० । सम० । रा० ।

सामान्य/एकार्थिक समुच्चये, पण्हा० १ अ० ।

अनुक्तसमुच्चये, जीत० ।

पुनरर्थे, दर्श० । वव० । पण्हा० ।।

हरिशब्दार्थे, विशे० ।

अवधारणे, । निसि० । दश०

लक्षणे, विशेषे, निसि० १ उ० ।

पूरणे/पादपूरणे, निसि०१ उ० । आव०म० ।

अनुमतौ, निसि० १ उ० ।

भेदप्रदर्शने, निसि० १ उ०

अर्थानुकर्षणे, निसि०१ उ० ।

उपप्रदर्शने, उव० ।

अतिशयवचनप्रदर्शने, निसि० ४ उ० ।

आधिक्ये, आचा०१ श्रु०१ अ०४ उ० ।

चइउं- अव्य० *[त्यक्त्वा]*

त्यागं कृत्वेत्यर्थे, जीवा०१ अधि० ।

चइऊण- अव्य० *[च्युत्वा त्यक्त्वा]*

च्यवनं कृत्वेत्यर्थे, उत्त०९ अ० ।

चइत्ता- अव्य० *[च्युत्वा]*

त्यक्त्वा । च्यवनं कृत्वेत्यर्थे, ठा०८ ठा० । कल्प० । भग० ।

त्यागं कृत्वेत्यर्थे, आचा०१ श्रु०६ अ०२ उ० । भग० । उव० ।

चइत्ताण- अव्य० *[त्यक्त्वा]*

त्यागं कृत्वेत्यर्थे, उत्त० १ अ० ।

चइत्तु- न० *[त्यक्त्वा]*

त्यागं कृत्वेत्यर्थे, उत्त०१ अ० ।

चउकट्ठी- स्त्री० *[चतुष्काष्ठी]*

चतुरस्राकारे काष्ठचतुष्टये, निसि०१ उ० ।

चउकप्पसेगसित्त- त्रि० *[चतुष्कल्पसेकसित्त]*

चतुर्भिः सेकविषयैः कल्पैः सित्ते ओदने, चत्वारश्च कल्पाः सेकविषया रसवतीशास्त्राभिज्ञेयभ्यो भावनीयाः ।जीवा०३ प्रति०

चउकारणसंजुत्त- त्रि० *[चतुष्कारणसंयुक्त]*

चतुर्भिः कारणैः संयुक्ते कारणचतुष्कसहिते, उत्त० ।

चउक्क- त्रि० *[चतुष्क]*

चत्वारि परिमाणस्येति चतुष्कः । उत्त० १ अ० ।

चतसृणां रथ्यानां समागमे, बृह० १ उ० ।

चतुष्पथयुक्ते स्थाने, नाया० १ श्रु०१ अ० ।

यत्र रथ्या चतुष्टयं मिलति ।कल्प०४क्षण० ।भग० ।उव० । रा० ।

चउक्कनइय- न० *[चतुष्कनयिक]*

वयचतुष्काभिप्रायतश्चिन्त्यमाने सूत्रे, सम० ।

चउक्कर- त्रि० *[चतुष्कर]*

चत्वारः करा यस्येति चतुष्करः । चतुर्भुजे देवे, उत्त० ८ अ० ।

चउक्कसायावगय- त्रि ० *[चतुष्कषायापगत]*

अपगतक्रोधादिकषायो यः सः । दश० ८ अ० १ उ० ।

क्रोधादिनिरोधकर्तरि, दश० ८ अ० १ उ० ।

चउक्काल- पु० *[चतुष्काल]*

दिवसरजनिप्रथमचरमयामेषु, आव० ४ अ० ।

'चउक्कालं सज्झाय करित्तए ।' ठा० ४ ठा०१ उ० ।

चउक्कोण- त्रि० *[चतुष्कोण]*

चतुरस्रे, चत्वारः कोणा यासां ता श्चतुष्कोणाः । रा० । जंबू० ।

चउगाउय- न० *[चतुर्गव्यूत]*

गव्यूतचतुष्टये, 'चउगाउए जोयणे पण्णत्ते ।' सम० ४ सम० ।

चउगुरुग-पु० *[चतुर्गुरुक]*

चत्वारश्च ते गुरुकाश्चतुर्गुरुकाः । 'आयरियगिलाणवच्छल्लं न करेति चउ गुरूगा, पत्तेयं खमगस्स पाहुणस्स वच्छल्लं न करेति चउलहुगा ।' निसि० १ उ० ।

चउचलणपइट्ठाण- त्रि० *[चतुश्चरणप्रतिष्ठान]*

चतुर्भिश्चरणैः प्रतिष्ठिते चतुर्भिश्चरणैः प्रतिष्ठानं भुवि यस्याः सा । ठा०७ ठा० । अणुओ० ।

चउचामरवालवीइयंग- त्रि० *[चतुश्चामरबालवीजिताङ्ग]*

चतुर्णां चामराणां बालैर्वीजितमङ्गं यस्य स तथा। चामर-चतुष्ककेशैर्वीजितविग्रहे, भग० ७ श० ९ उ० ।

चउज्झाइया-स्त्री० *[चतुर्ध्यायिका]*

घटकस्य रसमानविशेषस्य चतु-र्थभागमात्रे मानविशेषे, भग० ७ श० ८ उ० ।

चउट्ठाणपरिणामपज्जत्त-न० *[चतुःस्थानपरिणामपर्याप्त]*

चातुरक्ये, जीवा०३ प्रति० ।

चउणउइ-स्त्री० *[चतुर्नवति]*

चतुरधिकायां नवतिसंख्यायाम्, सम० ८३ सम०

चउणयय-न० *[चतुर्नयक]*

संग्रहव्यवहारऋजुसूत्रशब्दरूपनयचतुष्टयोपेते, संग्रहादिनयचतु-ष्टयेन चिन्त्यमाने, नं० ।

चउणाणोवगय-त्री० *[चतुर्ज्ञानोपगत]*

मतिश्रुतावधिमनःपर्यायज्ञान रूपज्ञानचतुष्टयसमन्विते, चंद० १ पाहु० । सूर० १ पाहु० । रा० ।

केवलज्ञान-वर्जज्ञानचतुष्कसमन्विते, भग०१ श०१ उ० ।

चउणाम-न० *[चतुर्नामन्]*

आगमादिचतुष्प्रकारैर्निष्पन्ने नाम्नि, अणुओ० ।

चउतीस-स्त्री० *[चतुस्त्रिंशत्]*
चतुरधिकायां त्रिंशत्संख्यायाम्, चतुस्त्रिंशद्बुद्वानां जिनानां वचन प्रमुखः सर्वस्वभावाऽनुगतं वचनं धर्मावबोधकरमित्यादिनोक्त-स्वरूपा येऽतिशेषास्तान् प्राप्तो यः स तथा। उव०।

चउत्थ-त्री० *[चतुर्थ]*
चतुःसंख्यापूर्वके चत्वरे, विपा० १ श्रु०३ अ०

चउत्थभत्त-न० *[चतुर्थभक्त]*
केवलमेकं पूर्वदिने, द्वे उपवासदिने, चतुर्थे पारणकदिने भक्तं भोजनं परिहरतो यत्र तपसि तच्चतुर्थभक्तम्। प्रवृत्तिस्तु चतुर्थभक्तशब्दस्यैकोपवासे, ठा०३ ठा०३ उ०।

चउत्थभत्तिय-त्रि० *[चतुर्थभक्तिक]*
केवलमेकं पूर्वदिने द्वे उपवासदिने चतुर्थं पारणकदिने भक्तं भोजनं परिहरतो यत्र तपसि तच्चतुर्थभक्तं, तद्यस्यास्ति स चतुर्थभक्तिकः। प्रवृत्तिस्तुचतुर्थभक्तशब्दस्य एकाद्युपवासे इति। ठा०३ ठा०३ उ०।
एकान्तरोपवासिनि साधौ, कल्प०८ क्षण०।

चउत्थी-स्त्री० *[चतुर्थी]*
'चाउद्दसिं पन्नरसिं च, जिज्जा अट्ठमिं च नवमि च। छट्ठिं च चउत्थिं च, वारसिं च दुण्हं पि पक्खाणं। ज्यो०। विशे०।
'चउत्थी संपयावणे' संप्रदाने चतुर्थी। अणुओ०।
यथा-भिक्षवे भिक्षां दापयति ददाति वेति। ठा०८ ठा०।
नमो देवेभ्यः स्वाहा, अग्नये, इत्यादिषु संप्रदाने चतुर्थी भवतीत्येके। अन्ये तु उपाध्यायाय गां ददाति इत्यादिष्वेव संप्रदाने चतुर्थीमिच्छन्ति। अणुओ०।

चउदंत-पु० *[चतुर्दन्त]*
चत्वारो दन्ता अस्य। ऐरावते इन्द्रगजे, । ठा०। कल्प०।

चउद्दसपुव्वि-पु० *[चतुर्दशपूर्विण्]*
चतुर्दश पूर्वाणि विद्यन्ते यस्य, तेनैव तेषां रचितत्वात्, असौ चतुर्दशपूर्वीः। श्रुतकेवलिनि, चंद० १ पाहु०। । जंबू०।
चतुर्दशपूर्विणः षट्स्थानपतित्वम्। निसि०१५ उ०। विशे०।

चउद्दिस-न० *[चतुर्दिक्]*
दिक्चतुष्टये, 'माणसुत्तरस्स णं पव्वयस्स चउद्दिसिं चत्तारि कूडा पन्नत्ता' चतसृणां दिशां समाहाश्चतुर्दिक्, तस्मिंश्चतुर्दिशि, अनुस्वारः प्राकृतत्वात्। ठा० १० ठा० १ उ०।

चउधाउय-त्रि० *[चतुर्धातुक]*
चतुर्भिर्धातुभिर्निष्पन्ने, सूय०।

चउपत्थ-न० *[चतुष्प्रस्थ]* चत्वारः प्रस्थाः समाहृताश्चतुषारथम्। आढके, तोल्यत्वचिन्तायां पञ्चाशत्पलेषु, ज्यो०२ पाहु०। ।

चउपाल-न० *[चतुष्पाल]*
'चउपालका'ऽभिधानप्रहरणकोशे, । रा०।

चउपुरिसपविभत्तगइ-स्त्री० *[चतुष्पुरुषप्रविभक्तगति]*
चतुर्धा पुरुषाणां प्रविभक्तगतौ, विहायोगतेश्चतुर्दशो भेदः। पन्न०।

चउप्पइया-स्त्री० *[चतुष्पदिका]*
भुजपरिसर्पिणीभेदे, जीवा० २प्रति०

चउपज्जाय-त्रि० *[चतुष्पर्याय]*
चत्वारः पर्यायाः नामाकारद्रव्यभावलक्षणा यत्र तच्चतुष्पर्यायम्। नामादिचतुर्विधनिक्षेपनिक्षिप्ते, विशे०।

चउप्पडोयार-त्रि० *[चतुष्प्रत्यवतार]*
चतुर्षु भेदलक्षणालम्बनानुप्रेक्षालक्षणेषु पदार्थेषु प्रत्यवतारः समवतारो विचारणीयत्वेन यस्य तच्चतुर्विधप्रत्यवतारम्। । भग० २५ श० ९ उ०। गच्छा०। ठा०।
'चउपडोयारं नाम एक्केक्कं तत्थ चउव्विहं' निसि० ४ उ०।

चउप्पद-पु० *[चतुष्पद]*
चत्वारि पदानि पादा येषां ते। ठा० १० ठा०।
अश्वादौ, निसि०३ उ०।
चतुष्पदा दशधा–'गावी महिसी उट्ठी, अय एलग आस आसतरगा या। घोडग गद्दभ हत्थी, चउप्पदा होंति दसधा उ।' निसि० २ उ०।
एते प्रतीता नवरमस्यां वाहीकादिदेशोत्पन्ना जात्या अश्वाः, अश्वतरा वेगसरा अजात्या घोटकाः। आचा०। सम०। आव०चू०। सूय०। विशे०। दश०। आव०। अणुओ०।

चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिय-पु० *[चतुष्पद स्थलचर पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिक]* चत्वारि पदानि पादा येषां ते चतुष्पदास्ते च ते, स्थले चरन्तीति स्थलचराश्चेति चतुष्पदस्थलचरास्ते च ते पञ्चेन्द्रियाश्चेति विग्रहः, पुनस्तिर्यग्योनिकाश्चेति कर्मधारयः। स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकभेदेषु, ठा० १० ठा०। सूय०।

चउप्पयविहिपरिमाण-त्रि० *[चतुष्पदविधिपरिमाण]*
चतुष्पदानामुपभोगपरिमाणे, उवा० १ अ०।

चउप्पया-स्त्री० *[चतुष्पद्या]*
पौषीपूर्णिमायाम्, चतुष्पद्या पौरुषी स्यात्। चतुर्भिः पदैर्गम्यमाने दिनप्रहरे, उत्त० २६ अ०।

चउप्पदी-स्त्री० *[चतुष्पदी]*
स्थलचरतिर्यग्स्त्रीभेदे, 'से किं तं चउप्पदीओ ? चउप्पदीओ चउव्विहाओ पण्णत्ताओ। तं जहा –एगखुरीउव० जाव सण्णप्पईओ।' जीवा० २ प्रति०।

चउप्पुडय-न० *[चतुष्पुटक]*
चतुर्भिः पुटकैरुपेते, भग० ३ श०२ उ०।

चउव्वग्ग-पु० *[चतुर्वर्ग]*
चतुर्णां वर्गे, आचा०२ श्रु०२ चू०।

चउब्भाग-पु० *[चतुर्भाग]*
पादे, चतुर्थांशे, ठा० ३ ठा० ४ उ०।

चउब्भुय-पु० *[चतुर्भुज]*
'दट्ठूण तओ जणणी, चउब्भुयपुत्तमब्भुमणग्घं'। सूय० १ श्रु०३ अ० १ उ०।

चउभंग-त्रि० *[चतुर्भङ्ग]*
चत्वारो भङ्गाः समाहृताश्चतुर्भङ्गी, चतुर्भङ्गं वा,चतुर्षु भङ्गेषु, 'सुद्धे नामं एगे सुद्धे, सुद्धे नामं एगे असुद्धे, असुद्धे नामं एगे सुद्धे, असुद्धे नामं एगे असुद्धे चउभंगो' ठा० ४ ठा० १ उ०।

चउभाइया-स्त्री० *[चतुर्भागिका]*
माणिकायाश्चतुर्भागवर्तित्वात् चतुषष्टिपलमाना चतुर्भागिका। माणिकायाश्चतुर्भागवर्तिनि रसमानविशेष, अणुओ०।

चउमट्टिया-स्त्री० *[चतुर्मृत्तिका]*
चैलेन कुट्टितायां मृत्तिकायाम्, 'चेलेण सह मट्टिया कुट्टिया चउमट्टिया'। निसि० १८ उ०।

चउमुट्ठिलोय-पु० *[चतुर्मुष्टिलोच]*
चतुर्मुष्टिकलोचे, कल्प०।

चउमुह-पु० *[चतुर्मुख]*
चतुर्मुखे पथि, यस्माच्चतृष्वपि दिक्षु पन्थानो निस्सरन्ति। आव०म०। जीवा०।
चतुद्वारि देवकुलादौ, उव०। भग०। कल्प०। ठा०। आचा०। अणुओ०। नाया०।
स्वनामख्याते पाटलिपुत्रस्य राज्ञि, 'यं एयं च नयरं, पाडलिपुत्तं तु विस्सुयं लोए। एत्थं होई राया, चउम्मुहो नाम नामेणं।।' नाया० १ श्रु०१ अ०।

चउपाह-न० *[चतुरह]*
दिनचतुष्टये, आचा०२ श्रु०३ अ०१ उ०।

चउर-त्रि० *[चतुर]*
चतुःसंख्यायाम्, चतुःसंख्या समन्विते च। उत्त०३ अ०।

चउरंग-न० *[चतुरङ्ग]* चत्वारि चतुर्गुणितानि अङ्गानि मनुष्यादि भावाङ्गानि,। उत्त० ४ अ०।
तेषां समाहारः मानुष्यधर्मश्रुतिश्रद्धातपःसंयमवीर्यचतुष्टयरूपे, वव० ३ उ०।
मोक्षोपायसाधने, उत्त०३२ अ०।

चउरंगत-त्रि० *[चउरङ्गान्त]*
चतुरङ्गेषु नरकतिर्यङ्नरामरगतिरूपेष्वन्तः गर्यन्तो यस्य स तथा। चतुरन्ते संसारे, वव० ३ उ०।

चउरंगवग्गुरापरिवुड-त्रि० *[चतुरङ्गवागुरापरिवृत]*
'चउरंगिणी सेणाहत्थी। अस्सा, रहा, पाइक्का, सा एव वग्गुरा' तथा परिवृतः अहेडगा रूढेहिं' संमताद्वेष्टिते, निसि० १५ उ०।

चउरंगिणी-स्त्री० *[चतुरङ्गिणी]*
चत्वारि गजाश्वरथपदातिलक्षणानि अङ्गानि विद्यन्ते यस्या यस्यां वा सा चतुरङ्गिणी।हस्त्यश्वादिसमुदितायां सेनायाम्,तं०। निसि०

चउरंगीय-न० *[चतुरङ्गीय]*
चतुरङ्गेभ्यः मानुष्यधर्मश्रुतिश्रद्धा तप संयमवीर्यचतुष्टयरूपेभ्यो हितं तत्स्वरूपवर्णनेन चतुरङ्गीयम्। उत्तराध्ययनानां तृतीये अध्ययने, उत्त० ३ उ०।

चउरंगुली-स्त्री० *[चतुरङ्गुली]*
चत्वार्यङ्गुलानि सुष्ठु प्रमाणं यस्याः। चतुरङ्गुलमितेऽर्थे, । पण्हा० ४ अ०।

चउरंत-न० *[चतुरन्त]*
चतुर्गतिके संसारे, सूय० १ श्रु० ५ अ० २ उ० ।
चतुरन्तं-चतुर्विभागम्। *पण्हा०* ।

चउरंतमहंत-त्रि० *[चतुरन्तमहान्त]*
चतुरन्तं चतुर्विभागं दिग्भेदगतिभेदाभ्यां महान्तं महायामं, यत्। तस्मिन्, 'चउरंतमहंतमणवदग्गरुद्दसंसारसागरं' उव०।

चउरंस-त्रि० *[चतुरश्र]*
चतस्रोऽश्रयोकोणा, तत्समासान्ताच् प्रत्यये चतुरश्रम, अणुओ०। 'अक्खउगसमचउरंससंठाणसंठियाओ' ठा०८ ठा०। अणुओ०। 'एगे चउरंसे' ठा०७ ठा०। उत्त०। सम०। रा०।
'चउरंस संठाणपरिणया' चतुरश्रसंस्थानपरिणताः कुम्भिकादि-वत् पुद्गलाः। पन्न०१ पद।
चतुष्कोणे, ब्रह्मसन्ताने केतु-भेदे, पुं०।

चउरंसपसत्थसमणिडाल-त्रि० *[चतुरस्रप्रशस्तसमललाट]*
चतुरस्रं चतुष्कोणं प्रशस्तं प्रशस्तलक्षणोपेतं समम् ऊर्ध्वाधस्तया दक्षिणोत्तरतया च तुल्यप्रमाणं ललाटं यासां ताश्चतुरस्रसमल-लाटाः। सुलक्षणललाटे, जीवा० ३ प्रति०।

चउरासी-स्त्री० *[चतुरशीति]*
नन्द्यध्ययने, 'चउरासी अकिरियावाईणं', रा०।

चउरिंदिय-पु० *[चतुरिन्द्रिय]*
चत्वारि स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुर्लक्षणानि इन्द्रियाणि येषां ते चतुरि-न्द्रियाः। भ्रमरमक्षिकामशकवृश्चिककीटपतङ्गादिषु संसारसमा-पन्नजीवभेदेषु,।जीवा०।पिंड०।पन्न०।आव०म०।आव०। ठा०।

चउवग्ग-पु० *[चतुर्वर्ग]*
'चउवग्गे वि हु उ अस्रं, थराऽऽगंतुग्गा उ वच्चंति। वेत्थवाओ असंथरे, मोत्तूण गिलाण संघाडे'। चउवग्गो नामवत्थव्वा संजयासजतीतो वि। आगंतुगा संजया संजतीओ य। एते चउवग्गा। निसि० १५ उ०।

चउविगप्प-त्रि० *[चतुर्विकल्प]*
चतुष्प्रकारे, वव० १ उ०।

चउव्विह-त्रि० *[चतुर्विध]*
चतस्रो विधा भेदा यस्य तत्तथा। चतुष्प्रकारे, ठा० ४ ठा० १ उ०। रा०।

चउवीस-त्रि० *[चतुर्विंशति]*
चतुर्भिरधिका विंशतिश्चतुर्विंशतिः। चतुर्भिरधिकायां विंशति-संख्यायाम्, तत्संख्येये च। आव०म०।

चउवीसत्थय-पु० *[चतुर्विंशतिस्तव]*
चतुर्विंशतितीर्थकराणां नामोत्कीर्तनपूर्वकगुणकीर्तने, आव०म०

चउवीसदंडय-पु० *[चतुर्विंशतिदण्डक]*
चतुर्विंशतिपप्रतिवद्धो दण्डको वाक्यपद्धतिश्चतुर्विंशतिदण्डकः। स इह वाच्य इति शेषः। स चायम्–'नेरइया १ असुराई १०, पुढवाई ५ वेइन्दियादओ चेव ४। नर १ वंतर १ जोतिसिया १, वेमाणिय १ वंडओ एवं'।। भवनपतयो दशधा 'असुरा नागसुवन्ना, विज्जू अग्गीय दीव उदही य। दिसि पवण थणिय नामा, दसहा एए भवणवासि।। ति' एतदनुसारेण सूत्राणि वाच्यानि यावच्चतुर्विंशतितमम्। ठा० १ ठा० १ उ०।

चउवीसवासपरिजाय-त्रि० *[चतुर्विंशतिवर्षपर्याय]*
चतुर्विंशतिवर्षपरिमाणप्रव्रज्यापर्याये, भग० १५ श०१ उ०।

चउव्विह-त्रि० *[चतुर्विध]*
चतस्रो विधा भेदा यस्य तत् चतुर्विधम् ठा० ४ ठा०१ उ०।
चतुःस्वभावे, भग० १८ श० ४ उ०
'चउव्विहं गेयं गायंति' रा०।

चउसट्ठि-स्त्री० *[चतुष्षष्टि]*
चतुरधिकषष्टिसंख्यायाम्, 'चउसठी सट्ठी खलु, छच्च सहस्साओ असुरवज्जाणं' पन्न०२ पद।

चउसट्ठिआ-स्त्री० *[चतुःषष्टिका]*
मणिकाचतुःषष्टितमभागनिष्पन्ने चतुःपबप्रमाणे रसमानविशेषे, अणुओ०। भग०।

चउसट्ठिलट्ठिय-त्रि० *[चतुःषष्टिलष्टिक]*
चतुषष्टिर्लष्टीनां शराणां यस्मिन्नसौ। शराणां चतुष्वष्ट्या युते, सम० ६४ सम०।

चउसमयसिद्ध-पु० *[चतुःसमयसिद्ध]*
सिद्धत्वसमयाच्चतुर्थसमये सिद्धे परम्परासिद्धभेदे, पन्न०१ पद।

चउसरणगमन-न० *[चतुःशरणगमन]*
चतुर्णामर्हत्सिद्धसाधुकेवलिप्रज्ञप्तधर्माणां शरणगमनम्। 'चत्तारि सरणं पवज्जामि इत्यादिरूपे प्रधानशरणोपगमे। आव०।

चउसिर-न० *[चतुरिशरम्]*
चत्वारि शिरांसि यस्मिन् तच्चतुःशिरः। प्रथमप्रवेशे क्षमणाकाले शिष्याचार्य्ययोरवनतं यच्छिरोद्वयं निष्क्रम्य पुनः प्रदेशे तथैव शिरोद्वयम्। शिरश्चतुष्टयोगिनि वन्दनके, । आव०। सम०।

चओवचइ-त्रि० *[चयोपचयिक]*
वृद्धिहान्यात्मके, आचा० १ श्रु० १ अ० ५ उ०।

चंकमंत-त्रि० *[चङ्क्रममाण]*
चलनस्वभावे, उव०। कल्प०।

चंकमंत-त्रि० *[चङ्क्रम्यमाण]*
चलनस्वभावे, उव०। कल्प०।

चंकमण-न० *[चङ्क्रमण]*
उपाश्रयान्तरे शरीरश्रमव्यपोहार्थमितस्ततः संचरणे, सम०।

चंकमिय-न० *[चङ्क्रमित]*
गतिविभ्रमे, 'चंकमियं ठियं जंबू०पियं व, विप्पखित्तं च सविलासं। आगारियवहुविधे, वट्ठु भुत्तेयरे दोसा'। निसि०१ उ०

चंकारअणुओग-पु० *[चकारानुयोग]*
समाहारेतरेतरयोगसमुच्चयान्वाचयाऽवधारणपादपूरणाधिकवच-नादिषु, (ठा०) अत्रानुस्वारोऽलाक्षणिकः, ततश्चकार इत्यर्थः। तस्य चानुयोगो यथा– चशब्दः समाहारेतरेतररयोगसमुच्चया-न्वाचयावधारणपादपूरणाधिकवचनादिषु इति। तत्र–(इत्थीओ सयणाणि य त्ति) इहसूत्रे चकारः समुच्चयार्थः स्त्रीणां शयानानां चापरिभोग्यतातुल्यत्वप्रतिपादनार्थः ठा० १० ठा०।

चंगबेर-पु० *[चंगबेर]*
काष्ठपात्र्याम्, 'पीढए चंगबेरे य, नंगले मइयं सिया। जंतलट्ठी व नाभी वा, गंडिया व अलं सिया' । दश० ७ अ०

चंगेरी-स्त्री० *[चङ्गेरी]*
महत्यां काष्ठपात्र्यां, बृहत्पाटलिकायां च। पण्हा०१ अ०। रा०। आव०म०। जीवा०। पन्न०।

चंचपुड-पु० *[चञ्चपुट]*
आघातविशेषे, 'खुरचलणचंचपुडेहिं धरणिअलं अभिहणमाणं' जंबू० ३ वक्ष०।

चंचल-त्रि० *[चञ्चल]*
लोले। बुह० १ उ०।
अनवस्थितचित्ते । नाया० १ श्रु० १ अ०। जीवा०। पन्न०।
अतीवचटुले । उव०।
विमुक्त स्थैर्ये । नाया० १ श्रु० १ अ०।
चपले । उव० । भग०। तं०। पण्हा० ।

चंचा-स्त्री० *[चञ्चा]*
चमरचञ्चानाम्नि चमरस्य राजधान्याम्, ठा०।

चंचुच्चिय-न० *[चञ्चुरित्]*
चंचुच्चियमिति कुटिलगमने, उव०।

चंचुच्चिय-न० *[चञ्चूचित]*
चञ्चुश्शुकचञ्चुः तद्वद्वक्रतयेत्यर्थः उच्चितं उच्चताकारणं पादस्य उच्चितं वा उत्पादनं पादस्यैवं चञ्चूच्चि तम्।पादोत्थापने, आव०

चंचुमालइए-त्रि० *[देशी]*
रोमाञ्चिते, कल्प०१ क्षण० । नाया० ।

चंड-पु० *[चण्ड]*
क्रोधने, उत्त०१ अ० । नाया० । आव० ।
प्रबलकोपसहिते, सम० ।
क्रोधनिघ्मातचिते, उत्त०१० अ० ।
क्रोधने, चारभटवृत्त्याश्रयणकर्त्तरि, उत्त०१ पु०अ० ।
चण्ड-कोपने, परुषभाषिणि । उत्त०१० अ० ।
रोषणे, दश०८ अ०१ उ० ।
उत्कटरोषे, नाया०१ श्रु०१८ अ० ।
रौद्रे, उत्त०२६ अ० । जीवा० । भग० । सम० । उव० । नाया० ।
तीव्रे, कल्प०२ क्षण० । जंबू० । पण्हा० ।
कर्कशे, ठा०८ ठा० ।

चंडकोसिय-पु० *[चण्डकौशिक]*
वीरस्य उपसर्गकारिणि कस्मिंश्चित्सर्पे, आव० । कल्प० । आव० म० । आव०चू० । ठा० ।

चंडज्झय-अव्य० *[चण्डध्वज]*
'अरुखुरीति' नामप्रत्यन्तनगरस्य माण्डलिकराज्ञि, आव०चू० ।

चंडदंड-पु० *[चण्डदण्ड]*
रौद्रदण्डकर्तरि, 'पावा पचंडदंडा, अणारिया निग्घिणा निरणु-कंपा । धम्मोत्ति अक्खराइं, जेसु न नज्जंति सुविणो वि । सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

चंडपज्जोय-पु० *[चण्डप्रद्योत]*
मालवदेशभूपसेव्ये उज्जयिन्या नगर्याः स्वनामख्याते राज्ञि, विशे० । उत्त० । तं० । ठा० । आव०म० ।

चंडपिंगल-पु० *[चण्डपिङ्गल]*
स्वनामख्याते चौरे, स च राजगणिकारक्त इति राज्ञा मारितः । आव०म० । आव०चू० ।

चंडमेह-पु० *[चण्डवेग]*
अश्वग्रीवस्य प्रतिवासुदेवस्य स्वनामख्याते दूते, यः प्रजापतिसुत-स्य त्रिपृष्ठवासुदेवस्य सभायामाधर्षितः ।आव०म० । आव०चू०

चंडरुद्द-पु० *[चण्डरुद्र]*
प्रकृतिरोषणे स्वनामख्याते आचार्ये ।

चंडविस-पु० *[चण्डविष]*
चण्डं झगिति अल्पकालेनैव दष्टशरीरव्यापकं विषं यस्य सः झग् इति दष्टशरीरव्यापकविषयुक्ते सर्पे नाया०श्रु०८अ० ।उत्त० ।भग०

चंडा-स्त्री० *[चण्डा]*
तथाविधमहत्वाभावेनेषत्कोपादिभावाच्चण्डा चमरादीनां देवेन्द्रा-णां मध्यमायां पर्षदि, भग०४ श०१ उ० । जीवा० । ठा० ।
गत्युत्कर्षयोगाद् रोद्रायां देवगतौ, भग०९ श० १० उ० ।
रुद्रायां तीव्रायामतिशायिन्याम् उत्कटायां वक्तुमशक्यायाम्, उत्त०१० अ० ।
'विपुला कक्कसा पगाढा चंडा दुहा तिव्वा दुरहिय त्ति' एकार्थाः । विपा० १ श्रु०१ अ० ।
विपुला तीव्रा चण्डा प्रगाढा कडी कर्कशा इत्येवं लक्षणा द्रष्टव्या । अंत० ४ वर्ग० ।

चंडानिल-पु० *[चण्डानिल]*
चण्डमारुते, जंबू०२ वक्ष० ।

चंडाधर-त्रि० *[चण्डाधर]*
चण्डाधरोष्ठे, विपा० १ श्रु०२ अ० ।

चंडाल-पु० *[चण्डाल]*
चण्डेल अलमस्य चण्डेन वा कलितः स चातिक्रूरत्वाच्चण्डालः । उत्त०१ अ० ।
शुद्रेण ब्राह्मण्यामुत्पन्ने, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ० । उत्त० ।
'माहणा खत्तिया वेस्सा, चंडाला अदुवोक्सा । एसि पावेसिया सुद्दा, जे य आरम्भणिस्सिया' सूय० १ श्रु० ८ अ० ।
रेवयसरमंताओ, हवंति दुहजीविणो । कुचेला य कुवित्तिय, चोरा चंडालमुट्ठीया, अणुओ० ।

चंडालिय-न० *[चण्डालीक]*
चण्डः क्रोधस्तद्वशादलीकम् । यद्वा चण्डाले, चण्डालजातौ भवं चण्डालीकम् । अनृतभाषणेचण्डालकर्मणि, उत्त०१ अ० ।

चंडिक्क-न० *[चाण्डिक्य]*
रौद्राकारकरणे, क्रोधकषायविशेषकार्ये, गौणमोहनीयकर्मणि, सम० ५१ सम० । भग० ।

चंडिक्किअ-त्रि० *[चाण्डिक्यित]*
चाण्डिक्यं रौद्ररूपत्वं संजातमस्येति चाण्डिक्यितः संजात-चाण्डिक्ये प्रकटितरौद्ररूपे भग०७ श०८ उ० । नाया० । निसि० । विपा० ।
दारुणीभूते, विपा० १ श्रु०१ अ० ।
रोषणाभूते, निर० वर्ग० ।
आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किये मिसिमिसियमाणेत्ति एकार्थाः । उत्त० २१ अ० ।

चंडीदेवग-पु० *[चण्डीदेवक]*
चक्रधरप्राये चण्डीभक्ते, सूय०१ श्रु०७ अ० ।

चंद-पु० *[चन्द्र]*
ज्योतिष्काणामिन्द्र, ठा०२ ठा०३ उ० । भग० । सम० ।
शशधरे, उव० ।
चन्द्रः शशी निशाकर उडुपतिः रजनीकर इत्येवमादि चन्द्र-पर्य्यायाः । आव०चू० १ अ० । आव०म० । पन्न० । ठा० । सूय० । पण्हा० । भग० ।

चंदउउ-पु० *[चन्द्रर्तु]*
चन्द्रसम्बन्धिनि ऋतौ, ज्यो०१४ पाहु० । ।

चंदकंत- त्रि० *[चन्द्रकान्त]*
चन्द्रप्रभे, आव०म० ।
चतुर्थे, देवलोकस्थे, स्वनामख्याते विमाने, सम० ३ सम० ।

चंदकंता-१ स्त्री० *[चन्द्रकान्ता]*
गान्धाराधिपतेः शतबलनामराजस्य कान्तायाम्, महाबलस्य मातरि, आव० ।

चंदकंता-२ स्त्री० *[चन्द्रकान्ता]*
चक्षुष्मतो द्वितीयकुलकरस्य पत्न्याम्, आव० । आव०म० ।सम० । आव०चू० ।

चंदकंता-३ स्त्री० *[चन्द्रकान्ता]*
स्वनामख्यातायां नगर्यां च। यत्र विजयसेनो नामराजा आसीत्। कल्प० १ क्षण० ।

चंदकूड-१ न० *[चन्द्रकूट]*
चतुर्थदेवलोकस्यं विमाने, सम०३ सम० ।

चंदकूड-२ न० *[चन्द्रकूट]*
जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य पश्चिमेन रुचकवरे सप्तमे स्वनाम-ख्याते कूटे, ठा० ८ ठा० ।

चंदग-पु० *[चन्द्रक]*
वामदक्षिणावर्तभ्रमदष्टचक्रः खमध्यनिर्गच्छदूर्ध्वमुखशरप्रायः। ततो भूस्थकुण्डिकागततैलान्तः प्रतिविम्बितगगनस्थाधोमुख पुत्तलिकावामलोचने, तं० । बुह० ।

चंदगवेज्झ-न० *[चन्द्रकवेध्य]*
चन्द्रकरूपं वेध्यं चन्द्रकवेध्यम्। आतु० । वव० ।
राघावेधे, तद्वदुराराध्ये अनशने, च। निसि० ११ उ० । बुह० । सम० । चंदा० ।

चंदगुत्त-पु० *[चन्द्रगुप्त]*
मौर्य्यग्रामसंजाते चाणक्येन नन्दराजसिंहासनमारोहिते स्वनाम-ख्याते पाटलिपुत्रराजनि, आव०चू० ।

चंदचरिय-न० *[चन्द्रचरित]*
चन्द्रस्य ग्रहपतेश्चरितं चन्द्रचरितम्। चन्द्रस्य वर्णसंस्थानप्रमाण नक्षत्रयोगराहुग्रहादिके, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

चंदचार-पु० *[चन्द्रचार]*
चन्द्रस्य मण्डलोपसंक्रमणे, । चंद० ।

चंदच्छाय-पु० *[चन्द्रच्छाय]*
मल्लिनाथेन सह प्रव्रजितऽङ्गराजे, चंदच्छाए अंगराया । नाया० १ श्रु० ८ अ० । ठा० ।

चंदजसा-१ स्त्री० *[चन्द्रयशस्]*
मित्रप्रभोः राज्ञो रागृहस्थायां भार्यायाम्, आव० ।

चंदजसा-२ स्त्री० *[चन्द्रयशस्]*
पद्मिनीखण्डनगरराजस्य भार्यायाम्, आव० ४ । आव०चू० ।

चंदजसा-३ स्त्री० *[चन्द्रयशस्]*
प्रथमकुलकरस्य विमलवाहनस्य स्वनामख्यातायां चतुर्दश पत्न्याम्, । ठा० । सम० । आव०म० ।

चंदज्झय-१ पु० *[चन्द्रध्वज]*
चतुर्थदेवलोकस्ये स्वनामख्याते विमाने, सम०३ सम० ।

चंदज्झय-२ पु० *[चन्द्रध्वज]*
'अरुखीरीति' प्रत्यन्तनगरस्य माण्डलिके रशि, आव०चू०४ अ० ।

चंदण-१ न० *[चन्दन]*
स्वनामख्याते गन्धप्रधाने वृक्षविशेषे,आव०म० । पन्न० । आचा० । उव० । रा० । सूय० । नाया० ।

चंदण-२ न० *[चन्दन]*
रुचकपर्वतस्य पूर्वस्यां दिशि स्वनामख्याते कूटे, । जंबू० ।

चंदणकयच्चाग-त्रि० *[चन्दनकृतचर्चाक]* चन्दनकृतोपरागे ज०१ वक्ष० । रा० ।

चंदणकलस-पु० *[चन्दनकलश]*
माङ्गल्यघटे, कल्प०५ क्षण० । जीवा० । उव० ।

चंदणक्खत्तजोग-पु० *[चन्द्रनक्षत्रयोग]*
चन्देण सह नक्षत्रस्य योगे, (ज्यो०) ।

चंदणखोडि-स्त्री० *[चन्दनखोटि]*
गोशीर्षचन्दनस्य खोटौ, वव० ३ उ० ।

चंदणघड-पु० *[चन्दनघट]*
चन्दनकलशे, चन्दनघटैश्चन्दनकलशैः सुकृतानि सुष्ठ कृतानि, शोभनानि इति तात्पर्य्यार्थः। यानि तोरणानि तानि चन्दनघटसुकृतानि प्रसिद्धानि, प्रतिद्वारे देशभागे यस्यां सा तथा। जीवा० ३ प्रति० ।

चंदणज्जा-स्त्री० *[चन्दनाया]*
वीरजिनस्य प्रथमशिष्यायाम्, सम० ।

चंदणपुड-न० *[चन्दनपुट]*
चन्दनमुख्यगन्धद्रव्यपुटे घुटपरिमिते चन्दनाख्यगन्धद्रव्ये, रा० ।

चंदणपेसिया-स्त्री० *[चन्दनपेषिका]*
चन्दनपेषणकारिकायां, हरिता-लादिपेषिकायां च। भग०११ श०११ उ० ।

चंदणसार-न० *[चन्दनसार]*
चन्दनसारो गर्भस्तेन निर्मापितो यः कोणो वादनण्डस्तेन परिघट्टिता। जंबू०१ वक्ष० । जीवा०३ प्रति० ।

चंदणा-स्त्री० *[चंदना]*
महावीरजिन-प्रथमशिष्यायाम्,आव० ।अंत ।कल्प० ।आव०म० द्वीन्द्रियजीवभेदे, पन्न० १ पद ।

चंदणागरी-स्त्री० *[चन्दनागरी]*

उत्तरबलिसहात् स्थविरान्निर्गतस्य उत्तरबलिसहगणस्य चतुर्थ्यां शाखायाम्, कल्प० ८ क्षण०।

चंदणुक्खित्तगायसरीर-त्रि० *[चन्दनोक्षिप्तगात्रशरीर]*

चन्दनोपलिप्ताङ्गदेहे, भग० ९ श० ३३ उ०। रा०।

चंदणोक्किण्णगायसरीर-त्रि० *[चन्दनोत्कीर्णगात्रशरीर]*

चन्दनेन प्रतीतेन उत्कीर्णमिवोत्कीर्णं गात्राणि शरीरं यस्य स तथा। दशा०१० अ०।

चन्दनेन श्रीचन्दनेनोत्कीर्णं चर्चितं गात्र शरीरं येन स तथा। चन्दनचर्चितदेहे, तं०।

चंददरिसणिया-स्त्री० *[चन्द्रदर्शनिका]*

जातपुत्रस्य चन्द्रदर्शनेनोत्सवविशेषे, कल्प०२ क्षण०।

चंददह-पु० *[चन्द्रह्रद]*

जम्बूद्वीपे उत्तरकुरुषु दशभिः काञ्चनकाभिधानैश्चन्द्रसमान नाम-देवाधिवासैर्दशयोजनान्तरैः पूर्वापरव्यवस्थितैर्गिरिभिरूपेते महा ह्रदे, ठा० ५ ठा०उ०। जीवा०।

चंददिण-अव्य० *[चन्द्रदिन]*

प्रतिपदादिकायां तिथौ, 'चेददिणेणं एगूणतीसं मुहुत्ते सातिरेगे मुहुत्तग्गेणं' । विशे०।

चंददीव-न० *[चन्द्रद्वीप]*

चन्द्राणां द्वीपे, । जीवा०।

चंदद्ध-न० *[चन्द्रार्द्ध]*

अष्टमीचन्द्रे, (चन्द्रार्द्धेन अष्टमीचन्द्रेण समं समानं ललाटं यासां ताः चन्द्रार्द्धसमललाटाः)। जीवा०३ प्रति०।

चंदद्धसम-त्रि० *[चन्द्रार्द्धसम]*

शशधरसमप्रविभागसद्दशे, णिव्वणसमलट्ठमट्ठचंदद्धसमणिडाला जीवा० ३ प्रति०।

चंदपडिमा-स्त्री० *[चन्द्रप्रतिमा]*

चन्द्र इव कला वृद्धिहानिभ्यां या प्रति सा चन्द्रप्रतिमा। प्रतिमा भेदे, शुक्लप्रतिपदि एकं कवलमभ्यवहृत्य ततः प्रतिदिन कवल वृद्ध्या पञ्चदश पूर्णमास्यां कृष्णप्रतिपदि च पञ्चदश भुक्त्वा प्रतिदिनमेकहान्याऽमावस्यायामेकमेव यस्यां भुङ्क्ते। यस्यां तु कृष्णप्रतिपदि पञ्चदश भुक्तवा एकैकहान्या अमावस्यायामेकं शुक्लप्रतिपदि चैकमेव ततः पुनरेकैकवृद्ध्या पूर्णिमायां पञ्चदश भुङ्क्ते सा वज्रस्येव मध्यं यस्यास्तन्विर्थः।सा वज्रमध्या चन्द्रप्रति-मेति, एतदेवसूत्रकृदाह–'दो पडिमाओ पन्नत्ताओ तं जहा–जव मझे चेव चंदपडिमा वइरमझे चेव चंदपडिमा'।ठा०२ठा० ३ उ०

चंदपण्णत्ति-स्त्री० *[चन्द्रप्रज्ञप्ति]*

चन्द्रचारप्रतिपादके शास्त्रे, । सा चाङ्गबाह्यप्रकीर्णकरूपा। आव० ४ ठा० १ उ०।

चंदपरिवेस-पु० *[चन्द्रपरिवेस]*

चन्द्रस्य परिता वलयाकारपरिणातौ, जीवा०३ प्रति०। अणुओ०। चन्द्रसमन्ताज्जायमानः कुण्डला-कारस्तेजः परिधि। *भग०*।

चंदपव्वय-पु० *[चन्द्रपर्वत]*

जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पश्चिमे शीतोदायां महानद्या उत्तरे कूल्ले, वक्षस्कारपर्वते, ठा०४ ठा०२ उ०। जंबू०।

'दो चंदपव्वया'। ठा०२ ठा०३ उ०।

चंदपाणिलेह-त्रि० *[चन्द्रपाणिरेख]*

चन्द्राकाराः पाणौ रेखा यस्य स तथा। उव०। जीवा०। पण्हा०। चन्द्राकृतिहस्तरेखे, तं०।

चंदप्पभ-१ पु० *[चन्द्रप्रभ]*

चन्द्रस्येव प्रभा ज्योत्स्ना सौम्यलेइयाविशेषोऽस्वेति चन्द्रप्रभः। तथा देव्याश्चन्द्रपानदोहदोऽश्रूत् चन्द्रसमवर्णश्च भगवान् इति चन्द्रप्रभः।अस्वामवसर्पिण्यां भरतवर्षे जातेऽष्टमे तीर्थकरे, सम० सर्वेपि तीर्थकृतश्चन्द्रवत् सोमलेश्याकास्तको विशेषमाह–जण-णीए चंदपियणम्मि, दोहलो तेण चंदाभो' येन कारणेन भगवति गर्भगते जनन्याश्चन्द्रपाने दौहृदमजायत चन्द्रसद्दशवर्णश्च भगवान् तेन चन्द्राभश्चन्द्रप्रभ इति विश्रुतः। आव० म० । अणुओ०।

चंदप्पभ-२ पु० *[चन्द्रप्रभ]*

चन्द्रकान्तमणौ, रा०। आव०म०। आव०चू०। नाया०। पन्न०। जीवा०। कल्प०।

तेषां तोरणानां पुरतो द्वे द्वे चामरे प्रक्षप्ते सानि च चामराणि चंद्रप्रभः चन्द्रकान्तो वज्रं वैडूर्यं च प्रतीतं चन्द्रप्रभवज्रवैडूर्याणि शेषाणि च नानामणिरत्नानि खचितानि येषु दण्डेषु तथा एवं रूपाश्चित्रा नानाकारा दण्डा येषां चामराणां तानि जीवा०३ प्रति०

चंदप्पभ-३ पु० *[चन्द्रप्रभ]*

चतुर्थदेवलोकस्य विमानभेदे, नं०। सम० ३ सम०।

चंदप्पभ-४ पु० *[चन्द्रप्रभ]*

चन्द्रस्य ज्योतिष्केन्द्रस्य सिंहासने, न०। नाया०२ श्रु०१ अ०।

चंदप्पभा-१ स्त्री० *[चन्द्रप्रभा]*

चंद्रस्येव प्रभा आकारे यस्यास्सा। सुरा विशेषे, जीवा०३ प्रति०।

चंदप्पभा-२ स्त्री० *[चन्द्रप्रभा]*

चन्द्रस्य प्रथमायामग्रमहिष्याम्, । नाया० श्रु० १ अ०। जंबू० । भग०। सूर०।

चंदप्पभा-३ स्त्री० *[चन्द्रप्रभा]*

दशमतीर्थकरस्य शीतलस्य चतुर्विंशत्य च वीरस्य निष्क्रमण-शिबिकायाम्, सम०। आव० म० । कल्प०।

चंदभागा-स्त्री० *[चन्द्रभागा]*

सिन्धुमहानद्यां संगतायां जलसमर्पिकायाम् स्वनामख्यातायां नद्याम्, ठा० ५ ठा०३ उ०।

चंदमंडल-न० *[चन्द्रमण्डल]*
चन्द्रविमाने, सम० ६२ सम०।

चंदमंडलणिभ-त्रि० *[चन्द्रमण्डलनिभ]*
चन्द्रमण्डलाकारे, रा०।

चंदमंडलसमप्पभ-त्रि० *[चन्द्रमण्डलसमप्रभ]*
शशधरबिम्बवत् प्रभति वृत्ततया शोभमागे, पण्हा०४ अ०।

चंदमग्ग-पु० *[चन्द्रमार्ग]*
चन्द्रमण्डले, । सूर०।

चंदमा-पु० *[चन्द्रमस्]*
चन्द्र, 'नक्खत्ताणं च चंदमा' सूय० १ श्रु० ११ अ०।
चन्द्रदृष्टान्तप्रतिपादके दशमे ज्ञाताध्ययने, सम०१९ सम०

चंदमालिया-स्त्री० *[चन्द्रमालिका]* चन्द्राकृतिमालायाम्, उव०।

चंदमास-पु० *[चान्द्रमास]* चन्द्रे भवश्चान्द्रः, स चासौ मासश्च। कृष्णपक्षप्रतिपद आरभ्य यावत्पूर्णमासीपरिसमाप्तिस्तावत्कालमाने मासभेदे, स च एकोनत्रिंशदहोरात्राणि द्वात्रिंशश्च द्वाषष्टिभागा अहोरात्रस्य २ कर्ममास ऋतुमास इत्येकोऽर्थः। स त्रिंशद्दिवसप्रमाणः। बुह०१ उ०। सम०। निसि०। सूर०। ज्यो०।

चंदलक्खण-न० *[चन्द्रलक्षण]* कलाभेदे, सम०।

चंदलेसा-स्त्री० *[चन्द्रलेश्या]* चन्द्रस्य लेश्या, लेश्या दीप्तिस्तत्कारणत्वान्मण्डलम्। चन्द्रमण्डले, सम०१५ सम०। चतुर्थदेवलोकस्थे विमानभेदे, न०। सम०३ सम०।

चंदलेहा-स्त्री० *[चन्द्रलेखा]* चन्द्रं चन्द्रकान्तिं लिखति, लिखअण्। उप०सम०। 'हाकुच ख्याते लताभेदे, चन्द्ररेखायाम्, पञ्चदशाक्षरे छन्दोभेदे, वाच०। राजपुरनगरराजस्य समरकेतोः कन्यायाम्, दर्श०। 'जंबू०बुद्दीवे सिंहलदीवे रयणदोससि रिपुरनयरे चंदगुत्तो राया, तस्य चंदलेहा भारिआ' जम्बूद्वीपस्थचन्द्रगुप्तस्य राज्ञो भार्यायाम्, ती०१० कल्प०। 'सिरिसालिवाहणरन्नो चंदलेहाभिहाणा महासई देवी' शालिवाहन रास्य स्वनामख्याताया महासत्यां स्त्रियाम्, ती०५३ कल्प०।

चंदवडिंसग-अव्य० *[चन्द्रावतंसक]* चन्द्रस्य ज्योतिष्केन्द्रस्य विमान, चंद०१८ पाहु०। । सूर०। साकेतनगरस्याधिपतौ मुनिचन्द्रभिधानस्य मुनेः पितरि, उत्त०१३ अ०। आव०म०। आव०चू०।

चंदवण्ण-न० *[चन्द्रवर्ण]* चतुर्थदेवलोकस्थे स्वनामख्याते विभागे, सम०३ सम०।

चंदवयणा-स्त्री० *[चन्द्रवदना]* विश्वपुरराजपुत्रमहेन्द्रमित्रस्य मदनश्रेष्ठिपुत्रस्य भार्यायाम्, गच्छा०३ अधि०।

चंदवागरण-न० *[चन्द्रव्याकरण]* विंशतेर्व्याकरणानां मध्ये चतुर्थे व्याकरणे, कल्प०१ क्षण०।

चंदविकंप-पु० *[चन्द्रविकम्प]* चन्द्रस्य विकम्पक्षेत्रे, (ज्यो०)।

चंदविमाण-न० *[चन्द्रविमान]* चन्द्रसत्कविमाने, जंबू०७ वक्ष०।

चंदविलासिणी-स्त्री० *[चन्द्रविलासिनी]* चन्द्रवन्मनोहरणशीलायाम्, रा०। जंबू०। जीवा०।

चंदसंवच्छर-पु० *[चन्द्रसंवत्सर]*
चान्द्रमासैर्निष्पन्ने प्रमाणसंवत्सरे, चंद० १० पाहु०। । सम०।

चंदसाला-स्त्री० *[चन्द्रशाला]*
प्रासादोपरितनशालायाम्, पण्हा० १ अ०। जंबू०। नाया०।
शिरोगहे, जीवा० ३ प्रति०।

चंदसिंग-न० *[चन्द्रश्रृङ्ग]*
चतुर्थदेवलोकस्थे स्वनामख्याते विमाने, सम० ३ सम०।

चंदसिट्ठ-न० *[चन्द्रशिष्ट]*
चतुर्थे देवलोकस्थे स्वनामख्याते विमाने, सम०३ सम०।

चंदसिरी-स्त्री० *[चन्द्रश्री]*
द्वितीयकुलकरस्य चक्षुष्मतो मातरि, आव० चू०१ अ०।
पूर्वभवे चन्द्रस्याग्रमहिष्या मातरि,नाया०२श्रु०१अ०

चंदसूरदंसावणिया-स्त्री० *[चन्द्रसूर्यदर्शनिका]*
सद्यो जातस्य बालस्य तृतीये दिवसे क्रियमाणे चन्द्रसूर्यदर्शनाभिधे उत्सवविशेषे, भग० ११ उ०। नाया०।

चंदसूरपासणिया-स्त्री० *[चन्द्रसूर्यदर्शनिका]*
अन्वर्थानुसारिणि सद्यो बालस्य तृतीयदिवसोत्सवे । विपा० १ श्रु० २ अ०।

चंदसूरि- पु० *[चन्द्रसूरि]*
आर्यवज्रस्वामिशिष्यश्रीवज्रसेनसूरीणा शिष्ये, यतश्चन्द्रकुलं विनिर्गतम्। 'श्रीवज्रसेनसञ्ज्ञस्तत्पदपूर्वाद्रिचूलिकाऽऽदित्यः। मूलं चान्द्रकुलस्याजनि च ततश्चन्द्रसूरिगुरुः'। गच्छा०४ अधि०। स च वैक्रमसंवत्सराणां द्वितीयशतकेऽभूवदिति पट्टावलिकादर्शनात् प्रतीयते। निरयावलिकानां श्रुतस्कन्धस्य विवरणकर्तरि, स च 'वसुलोचनरविवर्षे, श्रीमच्छ्रीचन्द्रसूरिभिर्हृब्धा। आभडवसाकवसतौ, निरयावलिशास्त्रवृत्तिरियम्।। निर०५ वर्ग०।

चंदसूरोतरण-न० *[चन्द्रसूर्यावितरण]*
समवसरणभूमौ श्रीवीरस्वामि-वन्दनार्थं सविमानयोश्चन्द्रसूर्य्ययोः अवतरणे, कल्प० ५ क्षण०। विपा० । निर०।

चंदसूरोवराग-पु० *[चन्द्रसूर्योपराग]*
ग्रहणे, 'चंदसूरोवरागो गहणं भन्नति' निसि० १९ उ०।

चंदा-स्त्री० *[चन्द्रा]*
चन्द्राद्वीपे चन्द्रदेवस्य राजधान्याम्, जीवा०३ प्रति०।

चंदागमणपविभत्ति-न० *[चन्द्रागमनप्रविभक्ति]*
वीरवन्दनार्थं समागतस्य चन्द्रस्याभिनयात्मके नाट्यभेदे, रा०।

चंदागारोवम-त्रि० *[चन्द्राकारोपम]*
चन्द्राकारश्चन्द्राकृतिः स उपमा येषां तानि तथा। चन्द्रमण्डलवद् वृत्ते, जीवा० ३ प्रति०। रा०।

चंदाणण-पु० *[चन्द्रानन]*
जम्बूद्वीपे ऐरवतवर्षेऽस्याभवसर्पिण्यां जाते प्रथमतीर्थकरे, सम० । आव० ।

चंदाणणा-१ स्त्री० *[चन्द्रानना]*
चन्द्रवदाननं मुखं यासां ताः । जीवा०३ प्रति० । रा० ।
चन्द्रमुख्याम् नेमिकुमारस्य राजीमत्याः भार्याया स्वनामख्याता-यां सख्याम्, कल्प०७ क्षण० ।

चंदाणणा-२ स्त्री० *[चन्द्रानना]*
स्वनामख्यातायां शाश्वत जिनप्रतिमायाम्, सा चोत्कर्षतः पञ्चधनुःशतानि जघन्यतः सप्तहस्ता । रा० ।

चंदाभ-१ पु० *[चन्द्राभ]*
अवसर्पिण्यामेकादशे कुलकरे, जंबू० २ वक्ष० भग० ।

चंदाभ-२ पु० *[चन्द्राभ]*
'चंदाभो त्ति सामन्नं स च्चेव ताव सोमलेसा विसेसो चंदपिय-णम्मि दोहिलो चंदाभोयति,' चन्द्रप्रभे तीर्थकरे, आव०चू०२ अ०
पञ्चमदेवलोकस्थे विमानभेदे, सम०९ सम० ।

चंदाभ-३ पु० *[चन्द्राभ]*
अभ्यन्तरपश्चिमायाः कृष्णराजेरग्रे लोकान्तिकविमाने, यत्र गर्द-तोया लोकान्तिकदेवा निवसन्ति । ठा० ८ ठा० ।

चंदालग-न० *[चन्द्रालक]*
देवतार्चनिकाद्यर्थं ताम्रमये मथुराप्रसिद्धे भाजने, सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ० ।

चंदावली-स्त्री० *[चन्द्रावली]*
तडागादिषु जलमध्यप्रतिम्बितचन्द्रपङ्क्तौ, रा० । जीवा० । जंबू० । आव०म० ।

चंदावलीपविभत्ति-न० *[चन्द्रावलीप्रविभक्ति]*
चन्द्रावलीप्रविभागाभिनयात्मके नाट्यभेदे, । जीवा० ३ प्रति० । जंबू० ।

चंदाविज्झय-न० *[चन्द्रावेध्यक]*
चन्द्रो यत्रपुत्तलिकाक्षिगोलको गृह्यते, तथा आ मर्य्यादया विध्यते इति आवेध्यं, तदेवावेध्यकं, चन्द्रलक्षणमावेध्यकं चन्द्रावेध्यकम् । राधावेधे, तदुपमानमारणाराधनप्रतिपादके शास्त्रविशेषे च । तच्च प्रकीर्णकरूपम् उत्कालिकश्रुतभेदः । नं० ।

चंदिमा-स्त्री० *[चन्द्रिका]*
चन्द्रज्योत्स्नायाम्, नाया० १ श्रु० ८ अ० ।

चंदिमाइय-पु० *[चान्द्रिक]*
चन्द्रदृष्टान्तप्रतिपादके प्रथमश्रुतस्कन्धस्य ज्ञाताध्ययने, आव० ४ अ० । आव०चू० । पण्हा० ।

चंदुत्तरवडिंसग-न० *[चन्द्रोत्तरावतंसक]*
चतुर्थे देवलोकस्थे स्वनामख्याते विमाने, सम० १ सम० ।

चंदोत्तर-न० *[चन्द्रोत्तर]*
कौशाम्ब्या नगर्या बहिः स्वनामख्याते उद्याने, । विपा० १ श्रु० ५ अ० ।

चंदोवग-न० *[चन्दोपक]*
कुशालम्बननिमित्ते परिव्राजकोपकरणे ठा० ४ ठा० २ उ० ।

चंदोवराग-पु० *[चन्द्रोपराग]*
चन्द्रस्य चन्द्रविमानस्य उपरागो राहुविमानतेजसोपरञ्जनं चन्द्रो-परागः । ठा०१० ठा० ।
चन्द्रग्रहणे, भग० ३ श० ६ उ० । अणुओ० ।

चंपग-पु० *[चम्पक]*
पुष्पप्रधाने स्वनामख्याते वृक्षविशेषे, स च सुवर्णचम्पकः काष्ठचम्पकश्चेति द्विविधः ।जंबू० १ वक्ष० । रा० । ठा० । आव० म० ।कल्प० ।आचा० । आव० । भग० । पन्न० । जीवा० । नाया० ।
विंशतितमजिनस्य किम्पुरुषाणां च चम्पकश्चैत्यवृक्षः । पण्हा० २ अ० । सम० ।
तच्च स्वर्णवत्पीतं भवति । पण्हा०२ अ० ।
जम्बूद्वीपस्य विजयद्वारसत्कविजयाभिधानराजधान्याः पश्चिम-दिग्वर्तिचम्पकवनस्याधिपतौ देवे, पुं० । जीवा० ३ प्रति० ।

चंपगकुसुम-न० *[चम्पककुसुम]*
सुवर्णचम्पकत्वचि, । जीवा० ३ प्रति० । पन्न० ।

चंपगगुम्म-न० *[चम्पकगुल्म]* ह्रस्वस्कन्धबहुकाण्डपत्रपुष्पफलोपेतेषु चम्पकवृक्षेषु, । जंबू० २ वक्ष० ।

चंपगछल्ली-स्त्री० *[चम्पकछल्ली]*
सुवर्णचम्पकत्वचि, पन्न० १७ पद । जंबू० ।

चंपगपिय-त्रि० *[चम्पकप्रिय]*
यस्य चम्पकपुष्पं प्रियं तस्मिन्, भाव० ३ अ० ।

चंपगभेय-पु० *[चम्पकभेद]*
सुवर्णचम्पकच्छेदे, जीवा० ३ प्रति० ।

चंपगमाला-स्त्री० *[चम्पकमाला]*
असुइठाणे पडिया, चंपगमाला न कीरई सीसे । आव०३ अ० ।

चंपगलया-स्त्री० *[चम्पकलता]*
चम्पका द्रुमविशेषाः, लतास्तिर्य्यक्शाखाः प्रचाराभावात्, चम्प-कानां लतास्तनुकास्त एव । लताकृतिषु चम्पकवृक्षेषु, । जंबू० १ वक्ष० । उव० ।

चंपगवडिंसय-पु० *[चम्पकावतंसक]*
सौधर्मादिविमानानां मध्यदेशवर्तिनि अन्यतमेऽवतंसके, । पन्न० २ पद । रा० ।

चंपरमणिज्ज-न० *[चम्पारमणीय]*
कुमाराख्यसंनिवेशस्य बहिः स्वनामख्याते उद्याने, । आव०चू० १ अ० । आव०म० ।

चंपा-१ स्त्री० *[चम्पा]*
अङ्गाख्यजनपदराजधान्याम्, आव०१ अ० । आव०म० । कल्प० । सूय० । नाया० । ठा० । पन्न० । आव० । अंत० ।
चम्पानगर्यां हि व्याख्या प्रज्ञप्तेः पञ्चमशतकस्य दशम उद्देश उक्ता । भग० ५ श० १ उ० ।

चंपाकुसुम-न० *[चम्पककुसुम]*
सुवर्णचम्पकपुष्पे, रा० । जीवा० ।

चंपिज्जिया-स्त्री० *[चम्पीया]*
स्थविराद् भद्रयशसो निर्गतस्य उडुपातिकगणस्य प्रथमशाखा-याम्, कल्प० ८ क्षण० ।

चकोर-पु० *[चकोर]*
रक्तपादे दीर्घग्रीवे जलचरपक्षिणि, निसि० १७ उ० । पण्हा० ।

चक्क-१ न० *[चक्र]*
नाभिप्रोतारबद्धे वृत्ताकृतौ पदार्थे, पण्हा०३ अ० ।
यथा रथाङ्गमरघट्टाङ्गं वा । उव० । पण्हा० ।
रत्नभूतप्रहरणविशेषे, ठा०२ ठा०४ उ० । ओह० । आव० । रा० ।
वासुदेवानां सुदर्शनाभिधानं चक्रम् । उत्त०११ अ० ।
चक्राकारे शिरोभूषणविशेषे, जंबू०२ वक्ष० ।
आभरणविशेषे, उव० ।
अरघट्टयन्त्रिकाचक्राणि । *नाया०* ।

चक्क-२ न० *[चक्र]*
चक्रवाके, कल्प०३ क्षण० ।
पक्षिविशेषे, पुं० । जीवा०१ प्रति० । पन्न० ।

चक्कजोहि-पु० *[चक्रयोधिन्]*
चक्रेण युद्धकर्तरि वासुदेवे, आव०१ अ० ।

चक्कज्झय-पु० *[चक्रध्वज]*
चक्रालेख्यरूपचिह्नोपेतायां ध्वजायाम् जंबू० १ वक्ष० । रा० । जीवा० ।

चक्कट्ठपइट्ठाण-त्रि० *[चक्राष्टप्रतिष्ठान]*
चक्रेष्वष्टासु प्रतिष्ठानं प्रतिष्ठाऽवस्थानं यस्य तत्तथा । अष्टचक्र-युक्ते, ठा०९ ठा० ।

चक्कणाभि-पु० *[चक्रनाभि]*
चक्रारप्रोतस्थाने, 'भरहो रहेण समुद्द-भवगाहिया चक्कणाभिं० जाव ततो नामकं सरं विसज्जाइ' आव०१ अ० ।

चक्कपाणिलेह-त्रि० *[चक्रपाणिरेख]*
चक्र इव पाणिरेखा येषां ते तथा । चक्राङ्कितहस्तरेखेषु, । पण्हा० ४ अ० ।

चक्कपुरा-स्त्री० *[चक्रपुरा]*
वल्गुविजयराजधान्याम्, जंबू० ४ वक्ष० । आव० ।
'दो चक्कपुराओ' ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

चक्कवाल-न० *[चक्रवाल]*
सर्वतः परिमण्डलरूपे, । जंबू०२ वक्ष० । पण्हा० । कल्प० । भग० । उव० ।
मण्डल, ठा०३ ठा०४ उ० ।
जलपारिमाण्डल्य, सम०१०० सम० ।
समूह, आतु० ।
वक्ष, भग० १ श० १ उ० ।

चक्कवालपव्वय-पु० *[चक्रवालपर्वत]*
कुण्डलाभिधानैकादशद्वीपवर्तिनि पर्वते, ठा० १० ठा० ।

चक्कवालविक्खंभ-पु० *[चक्रवालविष्कम्भ]*
चक्रवालस्य विष्कम्भः । पृथुत्वे, ठा०२ ठा०३ उ० ।

चक्कवाला-स्त्री० *[चक्रवाला]*
वलयाकृतौ श्रेण्याम्, ठा०७ ठा० ।

चक्कय-पु० *[चक्रक]*
चक्रकारे, पन्न०१ पद० ।

चक्करयण-न० *[चक्ररत्न]*
चक्रजातौ वीर्यत उत्कृष्टे, चक्रवर्ति नामे- केन्द्रियरत्ने, ठा० ७ ठा० । सम० । पन्न० । जंबू० । आव०म० । आव०चू० ।

चक्कल-पु० *[चक्रल]*
पादानामधोवृत्ताकारेऽवयबविशेषे, आव०म०

चक्कलक्खण-न० *[चक्रलक्षण]*
चक्रस्वरूपे, तत्प्रतिपादकशास्त्रे, तद्विज्ञाने च । सूय० २ श्रु०२ अ० । सम० ।
चक्राकारचिह्नोपेते, ठा० ९ ठा० । उव० ।

चक्कलियाभिण्ण-त्रि० *[चक्रलिकाभिन्न]*
वृत्तखण्डे, बुह०१ उ० ।

चक्कवट्टि-पु० *[चक्रवर्तिन्]*
चक्रेण रत्नभूतेन प्रहरणविशेषेण वर्तितुं शीलमस्य चक्रवर्ती । ठा०२ ठा०४ उ० ।
चक्रं प्रहरणं तेन विजयाधिपत्ये वर्तितुं शीलमस्येति । आव०४ अ० । पण्हा० । आव०म० । रा० । अणुओ० ।
षट्खण्डभरतेश्वर, सूय०२ श्रु०१ अ० उत्त० । आव० ।

चक्कवट्टिविजय-पु० *[चक्रवर्तिविजय]*
चक्रवर्तिनो विजयन्ते येषु यान् वा ते चक्रवर्त्तिविजयाः ।ठा० ८
चक्रवर्तिविजेतव्ये क्षेत्रखण्डे, नाया०१ श्रु०८ अ० । सम० ।

चक्कवाग-पु० *[चक्रवाक]*
पक्षिविशेषे, नाया०१ श्रु०९ अ० । उव० । जीवा० ।पण्हा० । रा० ।

चक्कवूह-पु० *[चक्रव्यूह]*
चक्रमिव व्यूहः सैन्यस्थितिरचनाविशेषः । युद्धार्थं मण्डलाकारे तत्परिज्ञानात्मके कलाभेदे, नाया०१ श्रु०१ अ० । जंबू० । उव० ।

चक्कसाला-स्त्री० *[चक्रशाला]*
तिलपीडनशालायाम्, वव० १० उ० ।

चक्कहर-पु० *[चक्रधर]*
वासुदेवे, विशे० ।

चक्कहरगंडिया-स्त्री० *[चक्रधरगण्डिका]*
चक्रधरवक्तव्यतार्थाधिकारानुगतायां वाक्यपद्धतौ, सम० ।

चक्काउह-पु० *[चक्रायुध]*
षोडशतीर्थकरस्य प्रथमशिष्ये, सम० ।

चक्काग-न० *[चक्राक]*
चक्राकारे, 'चक्कगं भज्जमाणस्स समो भंगो य दीसइ' पन्न०१ पद। आचा० ।

चक्कारवद्ध-न० *[चक्रारवद्ध]*
गन्त्र्यादौ द्विपदे याने, दश० ५ अ० १ उ० ।

चक्किय-पु० *[चाक्रिक]*
चक्रं प्रहरणमेषामिति चाक्रिकाः चक्रप्रहरणेषु योद्धषु, चक्रं वाऽस्ति येषां ते चाक्रिकाः कुम्भकारतैलिकादिषु चक्रं चोपदर्श्य याचन्ते ये ते चाक्रिकाः। चक्रधरेषु, नाया० १ श्रु०१ अ० । उव० । भग० । जंबू० । कल्प० ।

चक्कियसाला-स्त्री० *[चाक्रिकशाला]*
तैलविक्रयशालायाम्, वव० ९ उ० ।

चक्खिंदिय-न० *[चक्षुरिन्द्रिय]*
रूपग्राहके इन्द्रियभेदे, तच्च लब्ध्युपकरणभेदाद् द्विधा-तत्र लब्धीन्द्रियमेकद्वित्रिचतुरिन्द्रियाणामपि, उपकरणेन्द्रियं तु चक्षुरिन्द्रियस्यान्तर्मध्ये केवलिगम्या धान्यमसूराकारा काचिन्निर्वृत्तिरस्ति रूपग्रह नोपकारे वर्तते, तं० ।आव०म० ।आव०चू० । गच्छा० 'चक्खिंदियदुद्दंतज्जणस्स अहएत्तिओ भवति दोसो। जंबू० जलण-म्मि जलंते, पडइ पयंगो अबुद्धो उ' नाया०१ श्रु०१७ अ० ।

चक्खिंदियणिग्गह-पु० *[चक्षुरिन्द्रियनिग्रह]*
चक्षुरिन्द्रियस्य विषयलाम्पट्यनिरोधे, । उत्त० ।

चक्खु-न० *[चक्षुष्]*
चक्ष्यतेऽनेनेति चक्षुः। लोचने, तत् द्रव्यतोऽक्षि, भावतो ज्ञानम्। ठा० २ ठा० ४ उ० । सूय० ।

चक्खुइंदियबल-न० *[चक्षुरिन्द्रियबल]*
चक्षुरिन्द्रियस्य स्वसामर्थ्यग्रहणे, ठा० १० ठा० ।

चक्खुकंता-स्त्री० *[चक्षुष्कान्ता]*
प्रसेनजितः कुलकरस्य भार्यायाम्, आव०म० ।आव०क० । सम०

चक्खुदंसण-न० *[चक्षुर्दर्शन]*
दर्शनभेदे, । ठा० ।
चक्षुरिन्द्रियप्रीत्यर्थं दर्शनप्रतिज्ञायाम्, निसि० १२ उ० ।

चक्खुदंसणवडिया-स्त्री० *[चक्षुर्दर्शनप्रतिज्ञा]*
चक्षुषा संद्रष्टुं प्रतिज्ञायाम्, । आचा० ।

चक्खुदंसणावरण-न० *[चक्षुर्दर्शनावरण]*
दर्शनावरणकर्मभेदे, यदुदयात् जीवानां चक्षुर्दर्शनं सामान्यग्राही बोधः, न भवति। सम० ९ सम० ।

चक्खुदय-पु० *[चक्षुर्दय]*
चक्षुरिव चक्षुः श्रुतज्ञानं, शुभाशुभार्थविभागकारित्वात्, तत् दयते इति चक्षुर्दयः। सम० ।
तद्ददतीति चक्षुदाः। रा० ।
न मार्गानुसारिणी श्रद्धा सुखेनावाप्यते। चक्षुः समानश्रुतज्ञान-दायकेषु तीर्थकृत्सु, कल्प०१ क्षण० ।

चक्खुपडिलेहा-स्त्री० *[चक्षुःप्रतिलेखा]*
चक्षुषाऽवलोकने, निसि० १ उ० ।

चक्खुपह-पु० *[चक्षुष्पथ]*
लोचनमार्गे, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

चक्खुपहट्ठिय-पु० *[चक्षुष्पथस्थित]*
लोकानां लोचनमार्गे भवस्थ-केवल्यवस्थायां स्थिते लोकानां सूक्ष्मव्यवहितपदार्थाविर्भावनं चक्षुर्भूते, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

चक्खुपम्हनिवाय-पु० *[चक्षुःपक्ष्मनिपात]*
उन्मेषनिमेषमात्रक्रियायाम्। भग०१ श०३ उ० ।

चक्खुफास-पु *[चक्षुःस्पर्श]*
चक्षुषोः दृष्टेः स्पर्श इव स्पर्शो, न तु स्पर्श एव, चक्षुषोः अप्राप्यकारित्वात् इति चक्षुः स्पर्शः। भग०१ श०६ उ० ।
दर्शन, उव० ।
दृष्टिगोचरे, उत्त०१ अ० ।
चक्षुःस्पर्शं स्थूलपरिणतिमत्पुद्गलद्रव्यम्। *उत्त०*।

चक्खुविक्खेव-पु० *[चक्षुर्विक्षेप]*
चक्षुर्भ्रमे, भग०३ श०२ उ० ।

चक्खुडीय-त्रि० *[चक्षुर्भीत]*
चक्षुःशब्दोऽत्र दर्शनपर्यायः। दर्शनादेव भीते, आचा० १ श्रु० ८ भग० ९ उ० ।

चक्खुमंत-१ पु० *[चक्षुष्मत्]*
स्वनामख्यातेऽवसर्पिण्यां जाते द्वितीये कुलकरे, आव०म० । आव०क० । सम० । जंबू० । ठा० । आव० चू० ।

चक्खुमंत-२ पु० *[चक्षुष्मत्]*
लोचनयुक्ते, त्रि० । विशे० ।

चक्खुम्मेल-पु० *[चक्षुर्मेल]*
एकस्य चक्षुष उन्मीलनेऽपरस्यनिमीलने, वव० १ उ० ।

चक्खुय-पु० *[चाक्षुष]*
चक्षुःस्पर्शे दृष्टिगोचरे अभ्रेन्द्रचापादौ, आव० म०

चक्खुलोल-पु० *[चक्षुर्लोल]*
चक्षुषा लोलश्चञ्चलः, चक्षुर्वा लोलं यस्य स तथा। स्तूपादीना-लोकयित्वा व्रजति, ठा०४ ठा०४ उ०।
'चक्खुलोलए इरियावहियाए पलिमंथू' बुह० ६ उ०।

चक्खुल्लोयणलेस्सस-त्रि० *[चक्षुर्लोकनलेश्य]*
चक्षुःकर्तृकलोकने, अवलोकने लेश्यति च दर्शनीयत्वातिशयतः श्लिष्यतो वा यत्र तत्तथा। जीवा०३ प्रति०।
चक्षुःकर्तृकलोकने लिशतीव दर्शनीयत्वातिशयात् श्लेष्यतीव यत्र तत्। तथाविधे सुरूपे, येन तत्पश्यच्चक्षुर्न विश्लिष्यति। रा०

चक्खुवित्तिहय-त्रि० *[चक्षुर्दीष्टिहत]*
दृष्ट्याऽऽपरिचिते, वव०८ उ०।

चक्खुहर-त्रि० *[चक्षुधर]*
दृष्ट्याक्षेपकत्वात्,अथवा प्रच्छादनीयाङ्गदर्शनात् चक्षुर्हरति धरति वा निर्वर्तयति यद्यूनत्वात्तत्तथा। तथाविधेऽतिशीघ्रेऽभिनये, नाया० १ श्रु०१ अ०।

चच्चर-१ न० *[चत्वर]*
अनेकरथ्यासङ्गमस्थाने, कल्प०४ क्षण०। उव० रा०। भग०। जंबू०। विपा० । पण्हा०। ठा०।
रथ्याष्टकमध्ये, नाया०१ श्रु०१ अ०।
त्रिपथभेदिस्थाने, नाया०१ श्रु०१ अ०। उव०
'छण्हं रत्थाण जहिं, पवहो तं चच्चरं विंति'। यत्र षण्णां रथ्यानां प्रवहो निर्गमस्तं चत्वरं ब्रुवते तीर्थकरगणधराः। बुह० १ उ०।

चच्चर-२ त्रि० *[चर्चर]*
करध्वनौ, 'रासे चच्चरीओ य' आव० १ अ०।

चच्चसा-स्त्री० *[चर्चसा]*
वाद्यभेदे, 'अट्ठसयं चच्चसाणं अट्ठसवं चच्चसावायगाणं'। रा०।

चट्टसाला-स्त्री० *[चट्टशाला]*
ब्रह्मवटूनामध्ययनशालायाम्, बुह० १ उ०।

चडग-पु० *[चटक]*
कलविङ्के पक्षिविशेषे, पन्न०१ पद सूय०। पण्हा०। आव०। म०।
कोशकारे, कोशकारभवं सूत्रं चटकसूत्रमिति लोके प्रतीतम्। अणुओ०। आव०म०।

चडगर-पु० *[चटकर]*
समुदाये, नाया० १ श्रु०१ अ०।
विस्तरे, भग०९ श०३३ उ०। विपा० । आव०म०।
विच्छर्दे, 'महया प्रडचडगरविंदपरिक्खंतं'। नाया०१ श्रु०१ अ०।

चडगरत्तण-न० *[चटकरत्व]*
अतिप्रपञ्चकथने, महया चडगरमुणेणं अन्यकहा हणइ।दश० ३

चडवेला-स्त्री० *[चटवेला]*
चपेटायाम्, पण्हा० २ अ०।

चडुयार- पुं० *[चटुकार]*।
मुखमङ्गलकरे, पण्हा०३ अ०।

चडुल-त्रि० *[चटुल]*
चञ्चले, चपले च, विद्युति,। सूय०।

चडुलभाव-त्रि० *[चटुलभाव]*
चटुलश्च विविधवस्तुषु क्षणे आकाङ्क्षादिप्रवृत्तेर्भावाश्चित्तं यस्य स तथा। विषयासक्तचञ्चलचित्ते, पण्हा० २ अ०।

चडुलिया-स्त्री० *[चडुलिका]*
पर्यन्तज्वलिततृणपूलिकायाम्, नं०।

चड्ड-धा० *[पिषृ]*
चूर्णने, पात्रविशेषे, बुह०१ उ०।

चण-पु० *[चण]*
चणकधान्ये, जंबू०३ वक्ष०।

चणइया-स्त्री० *[चणकिका]*
मसूरधान्ये, ठा० ५ ठा०३ उ०।

चणग-पु० *[चणक]*
सनासवृत्तफलके सस्यभेदे, तत्फलरूपे धान्यभेदे च। (चना) आव० चू० ६ अ०।

चणगगाम-पु० *[चणकग्राम]*
गोल्लविषये स्वनामख्याते ग्रामे, यत्र चणिद्विजात्मजश्चाणक्यो जज्ञे। आव० म० । आव०चू०। आव०।

चणगपुर-पु० *[चणकपुर]*
चणकक्षेत्रं दृष्ट्वा निवासिते नगरे, यत्क्रमेण राजगृहं नाम नगरं जातम्। आव०। आव०चू०।

चणि-पु० *[चणि]*
चाणिक्याख्यस्य चन्द्रगुप्तमहाराजस्य मन्त्रिणो ब्रह्मणस्य पितरि, आव०। आव०चू०।

चत्तदेह-न० *[त्यक्त]*
परिहृते । उत्त० ९ अ०।

चत्तदेह-त्रि० *[त्यक्तदेह]*
त्यक्तो निर्ममत्वेन परिचर्य्याभावेन अवगणितो देहो यैस्ते त्यक्तदेहाः। उत्त० १२ अ०।
व्युत्सृष्टशरीरे, संथा०।

चत्तालीस-स्त्री० *[चत्वारिंशत्]*
चतुर्गुणितायां दशसंख्यायाम्, तीसा 'चत्तालीसा' पन्न०२ पद०।

चत्वारिंशत्क-त्रि० *[चत्वारिंशत्क]*
चत्वारिंशद्वर्षजाते, 'भोगायनीसगस्स उ, चत्तालीसस्स विन्नाणं।' तं०।

चमढणा-स्त्री० *[चमढना]*
कदर्थनायाम्, उद्वेगे, बुह० १ उ०। उव०।

चमढिअ-त्रि० *[चमढित]*
विनाशिते, वव० २ उ०।

चमढिज्जंत-त्रि० *[चमढायमान]*
कदर्थ्यमाने, ओह०।
उद्वेज्यमाने, बुह०१ उ०।

चमर-१ पु० *[चमर]*
आरण्ये गवि, पण्हा०३ अ०। रा०। जंबू०। पन्न०। भग०। उव०। नाया०।

चमर-२ पु० *[चमर]*
सुमतिनाथस्य प्रथमशिष्ये, सम०।

चमर-३ पु० *[चमर]*
दाक्षिणात्यानामसुरकुमाराणामिन्द्रे, पन्न०२ पद। सम०

चमरचंच-पु० *[चमरचञ्च]*
चमरस्थावासपर्वते । भग०।

चमरचंचा-स्त्री० *[चमरचञ्चा]*
रत्नप्रभापृथिव्याः चमरस्यासुरराजस्स राजधान्याम्, ठा० ५ ठा० ३ उ०।

चमरपच्छिमशरीर-न० *[चमरपश्चिमशरीर]*
चमराणां गोविशेषाणां पश्चिमशरीरम् देहपश्चाद्भागः। चामरे, पण्हा० ४ अ०।

चमरुप्पाय-पु० *[चमरोत्पात]*
चमरस्यासुरराजस्योत्पतने ऊर्द्धगमने, ठा०१० ठा०।

चमस-पु० *[चमस]*
दर्विकायाम्, उव०।

चमू-स्त्री० *[चमू]*
सेनायाम्, आव० म० । नाया०।

चम्म-न० *[चर्मन्]*
सलोमकृत्स्नचर्मग्रहणम् । बुह०।

चम्मकम्म-न० *[चर्मकर्मन्]*
चर्मनिर्माणपरिज्ञानात्मिकायां षष्टिकालायाम्, कल्प०७ क्षण०।

चम्मकरग-न० *[चर्मकरक]*
गालनोपकरणे, 'गालिंति तवं तु करगेणं'। प्रासुकं द्रव्यं पानकं च चर्मकरकेण गालयन्ति। निसि०२ उ०।

चम्मकिट-न० *[चर्मकिट]*
चर्मव्यूते खद्वादिके, भग०१३ श०९ उ०।

चम्मकोस-पु० *[चर्मकोश]*
छविकोशे, तं०।
पार्ष्णित्रे छल्लकादौ, आचा०२ श्रु०२ अ०३ उ०।

चम्मकोसिया-स्त्री० *[चर्म्मकोशिका]*
शस्त्रक्षेपणकोत्थके, सूय०२ श्रु०२ अ०।

चम्मखंडिय-पु० *[चर्मखण्डिका]*
चर्मपरिधाने, चर्ममयं सर्वमेवोपकरणं यस्य स चर्मखण्डिकः। सर्वचर्मोपकरणे, अणुओ०। गच्छा०। नाया०।
चर्मखण्डकः-चर्मपरिधानः चर्मोपकरण इति। *नाया०*।

चम्मखेड-न० *[चर्मखेट]*
कलाभेद, सम० ७३ सम०।

चम्मग-न० *[चर्मक]*
पादुकादौ, सूय०२ श्रु०२ अ०। पंच०भा०। आचा०।

चम्मच्छदन– न० *[चर्मच्छेदण]*
वर्द्धपट्टिका, चर्मच्छेदनकं पिप्पलकादि। *ओघ० २१८*।

चम्मच्छेयणग-न० *[चर्म्मच्छेदनक]*
वर्ध्रपदिकायाम्, पिप्पलकादौ च। आचा०।

चम्मट्ठिल-पु० *[चर्म्माष्ठिल]*
चर्मचटके पण्हा० १ अ०।

चम्मपक्खि-पु० *[चर्मपक्षिण्]*
चर्ममयपक्षाः पक्षिणः चर्मपक्षिणः। वल्गुलीप्रभृतिषु पक्षिभेदेषु, ठा०४ ठा०४ उ०। सूय०।
'से किं तं चम्मपक्खी ? चम्मपक्खी अनेगविधा–वग्गुला। जलोया अडिला भारुंडपक्खी जीवंजीवा समुद्दवायसा कण्णत्तिया पक्खिविराली, जे यावण्णे तहप्पगारा, जीवा० १ प्रति०।

चम्मपट्ट-पु० *[चर्मपट्ट]*
वर्ध्रे, विपा० १ श्रु०६ अ०।

चम्मपणग-न० *[चर्मपञ्चक]*
अजादिचर्मपञ्चके।

चम्मपरिच्छेयणग-न० *[चर्म्मपरिच्छेदनक]*
वर्ध्रे, तद्विच्छिन्नसंधानार्थम्। अथवा-द्विखण्डसन्तानहेतोर्ध्रियते। वव० ८ उ०।

चम्मपाणि-पु० *[चर्मपाणि]*
चर्म अङ्गुष्ठाङ्गुल्योराच्छादनरूपं यस्य तस्य तथा। स्फुरकहस्ते, रा०। भग०।

चम्मपाय-न० *[चर्मपात्र]*
चर्मनिर्मिते पात्रे, आचा०२ श्रु०६ श्र०१ उ०।

चम्मरयण-न० *[चर्मरत्न]*
चर्मजातौ यद् वीर्यत उत्कृष्टं तच्चर्मरत्नम्। चक्रवर्तिनामेकेन्द्रियरत्नभेदे, ठा० ७ ठा०। सम०। आव०चू०।

चम्मरुक्ख-पु० *[चर्मवृक्ष]*
वृक्षभेदे, भग० ८ श०३ उ०।

चम्मलक्खण-न० *[चर्मलक्षण]*
कलाभेदे, उव०।

चम्मेट्ठगा-स्त्री० *[चर्मेष्टिका]*
चर्मनद्धपाषाणे, पण्हा० ३ अ० ।
इष्टिकाशकलादिभृतचर्मकुतुपे, यदाकर्षणेन धनुर्धरा व्यायामं कुर्वन्ति। उवा०७ अ०।
लोहमये लोहादिकुट्टनप्रयोजने लोहकाराद्युपकरणविशेषे, भग० १६ श० १ उ०।
चर्मेष्टका इष्टिकाशकलादिभूतचर्मकुतुपरूपा, यदाकर्षणेन धनुर्द्धरा व्यायामं कुर्वन्ति, द्रुघणाको मुद्गरो, मौष्टिको मुष्टिप्रमाणः प्रोतचर्मरज्जुकः पाषाणगोलकस्तैः समाहतानि व्यायामकरणे प्रवृत्तौः सत्यां तमितानि निचितानि गात्राण्यङ्गानि यत्र स तथा एवंविधः कायो यस्य स तथा। अनेनाभ्यासजनितं सामर्थ्यमुक्तम्। उवा०७ अ०। रा०। जीवा०।

चय-१ धा० *[त्यज्]*
हानौ, त्यजेश्चयादेशः। सूय०१ श्रु० ३ अ० १ उ०।

चय-२ पु० *[चय]*
चयनं चयः। पिण्डीभवने, अणुओ०।
वृद्धौ, आचा०१ श्रु० १ अ०५ उ०। आव०म०।
परमाणूपचयाच्चयः। संघाते, ओह० ।आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ०

चय-३ पु० *[चय]*
शरीरे, आव०५ अ०। विपा० ।
देवभवसंबन्धिनि देहे, विपा० २ श्रु०१ अ०।

चय-४ पु० *[च्यव]*
च्यवने, ठा० ८ ठा०। नाया०। भग०। निर०।

चयंत-त्रि० *[शक्नुवत्]*
सामर्थ्यं भजमाने, सूय० १ श्रु० ३ अ० ३ उ०

चयण-१ न० *[चयन]*
कुशलकर्मण उपचयकरणे, भग०।
कषायादिपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रे, । ठा० २ ठा० ४ उ०। विशे०

चयण-२ न० *[च्यवन]*
च्युतिश्च्यवनम्। वैमानिकज्योतिश्चक्राणां मरणे च्यवनमेकजीवापेक्षया नानाजीवापेक्षया च–पूर्ववदिति। ठा० १ ठा०१ उ०। 'दोण्हं चयणे पन्नत्ते। तं जहा–जोइसियाणं चेव वेमाणियाणं' इत्युतिश्च्यवनं, मरणमित्यर्थः। तच्च ज्योतिष्कवैमानिकानामेव व्यपदिश्यते। ठा० २ ठा० ३ उ०।

चयणकप्प-पु० *[च्यवनकल्प]*
च्यवनं चारित्रात् प्रतिपतनं, तस्य कल्पः प्रकारश्च्यवनकल्पः। पार्श्वस्थादिविहारे, गच्छा० १ अधि०।

चयणमुह-त्रि० *[च्यवनमुख]*
मरणमुख, तं०।

चयणोववाय-पु० *[च्यवनोपपात]*
च्यवने उपपाते, चंद० १५ पाहु०। ।

चयावचइय-न० *[चयापचयिक]*
इष्टाहारोपभोगतया धृत्युपष्टम्भादौदारिकवर्गणापरमाणूपचयाच्चयः, तदभावेन तद्विघट्टनादपचयः। चयापचयौ विद्येते यस्य तच्चयापचयिकम्। तथाविधे शरीरे, 'एयं असासयं चयोवचइयं विपरिणामधम्मं पासह'। आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ०।

चयोवचय-पु० *[चयोपचय]*
अधिकत्वेन वृद्धौ, हीनत्वेनापवृद्धौ च। सूर० १ पाहु०। ।

चर-पु० *[चर]*
चरणे। आव०चू०। ठा०। आव०म०। आचा० ।

चरंत-त्रि० *[चरत्]*
विहरति, उत्त०२ अ०।
अटति, सूय०१ श्रु०१ अ०।
विश्वं व्याप्नुवति, पण्हा०४ अ०।

चरंती-स्त्री० *[चरन्ती]*
यस्यां दिशि भगवानर्हन् विहरति तस्याम्, । वव० । तथा तिस्रो दिशः प्रशस्ता ग्राह्याः। तद्यथा पूर्वा, उत्तरा, चरन्ती।
चरन्ती नाम यस्यां भगवानर्हन्विहरति सामान्यतः केवलज्ञानी मनःपर्यवज्ञानी अवधिज्ञानी चतुर्दशपूर्वी त्रयोदशपूर्वी यावत् नवपूर्वी। यदि वा- यो यस्मिन् युगे प्रधान आचार्यः स प्रतिहारिकान् यथा विहरति। वव० १ उ०।

चरग-पु० *[चरक]*
धाटिभिक्षाचरे, नाया०१ श्रु०१५ अ०।
परिव्राजकविशेषे, दश०१ अ०। वव०।
संधाटिवाहकाः सन्तो ये भिक्षां चरन्ति ये भुञ्जानाश्चरन्ति। गच्छा० २ अधि०।
ये धावितभैक्षोपजीविनः।अथवा कच्छोटकादयः।पन्न०२० पद।
दंशमशकादौ च। सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०।
चरगतिभक्षणयोः। आचा०१ श्रु०५ अ०१ उ०।

चरण-न० *[चरण]*
गमने, गच्छा० १ अधि०। आव०म०। ठा० । आव०।
अतिशयगमने, नं०।
विहरणे, सूय०१ श्रु०१० अ०२ उ०।
अवस्थाने, आचा० १ श्रु०५ अ०३ उ०।
संयमानुष्ठाने, सूय०१ श्रु०१० अ०।
सेवने, जीवा०२ प्रति०।

चरणकरणपरिहीण-त्रि० *[चरणकरणपरिहीन]*
व्रतादिना पिण्डविशुद्ध्यादिना च परिहीनः। मूलोत्तरगुणहीने, बुह० ३ उ०।

चरणकरणपारविअ-त्रि० *[चरणकरणपारवित्]*
चर्य्यते इति चरणं मूलगुणाः, क्रियत इति करणमुत्तरगुणाः, तेषां पारं तीरं पर्यन्तगमनं, तद्वेत्तीति चरणकरणवित्। मूलोत्तरगुण-पारज्ञे, सूय० १ श्रु०१ अ०।

चरणकरणाणुओगः– त्रि० *[चरणकरणानुयोग]*
अर्हद्वचनानुयोगस्य चतुर्थो भेदः, आचारादिकः। *आचा०* ।

चरणकरणाभिलासि-अव्य० *[चरणकरणाभिलाषिन्]*
योऽवसन्न आत्मन उद्यतचरणो भविष्यामीत्यभिलाषिणि। निसि० १५ उ०।

चरणगुण-पु० *[चरणगुण]*
चरणं चारित्रं पञ्चमहाव्रतरूपं, तस्य गुणाः। पिण्डविशुद्ध्यादिषु करणचरणसप्ततिरूपेषु, 'नाणिस्स दंसणिस्स य, नाणेण विणा ण होंति चरणगुणा। अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमुक्खस्स निव्वाणं।।' अणुओ०।

चरणगुणट्ठिय-त्रि० *[चरणगुणस्थित]*
चर्यत इति चरणं चारित्रं, गुणः साधनमुपकारकमित्यनर्थान्तरम्। तच्चसौ गुणश्च निर्वाणः अत्यन्तोपकारितया चरणगुणः। तस्मिन्, उत्त० १ अ०। आचा०। ज्ञाननयव्यवस्थिते, विशे०।
चरणं चारित्रं क्रिया, गुणोऽत्र ज्ञानं, तयोः स्थितः। ज्ञानक्रियाभ्यां द्वाभ्यामपि युक्ते, विशे०।

चरणग्ग-अव्य० *[चरणाग्र]* चरणेनाग्रः प्रधानश्चरणाग्रः। निश्चयनयम-तापेक्षया क्षीणकषायादिके अकषायचारित्रे, पिंड०।

चरणणय-त्रि० *[चरणनय]*
नयभेदे क्रियानये, स च चरणस्य प्राधान्यमभिदधति। आचा० १ श्रु० १ अ० ७ उ०।

चरणपडिवत्ति-स्त्री० *[चरणप्रतिपत्ति]*
चर्यते इति चरणं व्रतादि,तस्य प्रतिपत्तिः चरणप्रतिपत्तिः। ओह०

चरणपुरिस-पु० *[चरणपुरुष]*
मूलोत्तरगुणरूपे पुरुषोपमितेऽर्थे, 'मूलुत्तरगुणरूवस्स ताइणो परमचरणपुरिसस्स। अवराहसल्लपभवो, भाववणो होइ नायव्वो।।' आव० ५ अ०।

चरणय-न० *[चरणक]*
कन्यापरिधाने, आव० म० ।

चरणरय-त्रि० *[चरणरत]*
चरणप्रतिबद्धे, दश०३ अ०।

चरणविप्पहूण-त्रि० *[चरणविप्रहीण]*
क्रियारहिते, 'सुबहुं पि सुयमधीतं, किं काही चरणविप्पहूणस्स? अवस्स जह पलित्ता दीवसतसहस्सकोडी वि।' दृशिक्रियापूर्वक क्रियाविकलत्वात्त- स्योति भावः। आचा० १ श्रु० ९ अ० ४ उ०।

चरणविहि-१ पु० *[चरणविधि]*
चरणं चारित्रं, तस्य विधिर्यत्र वर्ण्यते शास्त्रे स चरणविधि। नं०। उत्कालिकश्रुतविशेष, नं०।

चरणविहि-२ पु० *[चरणविधि]*
चारित्रविधौ, चारित्रस्य विधाने उत्त०३० अ०। उत्तराध्ययनेषु एकत्रिंशत्तममध्ययनम्। *सम०* ।

चरणसंपण्ण-अव्य० *[चरणसंपन्न]*
सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रतपः सपन्ने, पंच०चू०। ।

चरणहीण-त्रि० *[चरणहीन]*
सर्वथा चारित्रसत्ताविकले द्रव्यचरणहीने, आव०।

चरणेरिया-स्त्री० *[चरणेर्या]*
चरणं, तद्रूपेर्या चरणेर्या श्रमणस्य केनापि प्रकारेण भावरूपे गमने, आचा०२ श्रु०३ अ०१ उ०।

चरम-त्रि० *[चरम]*
अवसानवृत्तौ। पर्यन्तवर्तिनि, पन्न० ५ पद। भग०।

चरमंत-पु० *[चरमान्त]*
इह च विवक्षयाऽऽदिरप्यन्तो भवति तद्व्यवच्छेदार्थं चरम-ग्रहणम्। चरमः पर्यन्तवर्ती अन्तो न पुनरादिभृत इति पर्यन्त-वर्तिनोऽन्ते, विशे०।
'लोगस्स य चरिमंतो, चरिमंतो होइ भासाए।' विशे०।

चरमकाल-पु० *[चरमकाल]*
मरणसमये, विशे०।

चरमणिदाहसमय-पु० *[चरमनिदाघसमय]*
जेष्ठमासपर्यन्ते, जीवा०३ प्रति०।

चरमतित्थयर-पु० *[चरमतीर्थकर]*
अन्तिमतीर्थकरे, यथाऽवसर्पिण्यां महावीरः। ठा०१ ठा०१ उ०।

चरमवण्ण-पु० *[चरमवर्ण]*
अधमवर्णे, यथा ब्राह्मणेन क्षत्रियायां जातः क्षत्रियो भवति इति चरमवर्णव्यपदेशः। आचा० २ श्रु० १ अ०।

चरमसमय-पु० *[चरमसमय]*
सयोग्यवस्थान्तिमसमये, नं०।

चरमसमयभवत्थ- पु० *[चरमसमयगवस्थ]*
चरमसमये भवस्य जीवितस्य तिष्ठति यः स तथा। आयुश्चरम-समये स्थिते, भग० ७ श० १ उ०।

चरमाण-त्रि० *[चरत्]*
सेवमाने, ठा० ५ ठा० ३ उ०।

चरिऊण-कृ० *[चरित्वा]*
आसेव्येत्यर्थे, आव०म०।

चरिगा-स्त्री० *[चरिका]*
परिव्राजिकायाम्, ओह०। आव०म०।

चरित्त-न० [*चरित्र*]

चरन्त्यनिन्दितमनेनेति। चरित्रम् चारित्रमोहनीयक्षयोपशमे, दश०१ अ०। आव०। वव०।

चरित्रमेव चारित्रं, किमुक्तं भवति ? अन्यजन्मोपात्ताष्टविधकर्म-सञ्चयापचाय चरणं, सर्वसावद्य योगनिवृत्तिरूपं चारित्रमिति। आव०म०।

चरन्त्यनिन्दितमनेनेति चारित्रम्, अष्टविधकर्मचयरिक्तीकरणाद् वा चारित्रम्। सर्वविरतिक्रियायाम्, विशे०।

चर्यते मुमुक्षुभिरासेव्यते तदिति, चर्यते वा गम्यते अनेन निर्वृ-ताविति चारित्रम्, अथवा चयस्य कर्मणां रिक्तीकरणाच्चरित्रं, निरुक्तन्यायादिति। ठा०।

चारित्रमोहनीयक्षयाद्याविर्भूते आत्मनो विरतिरूपे परिणामे,ठा०।

'एगे चरित्ते' तदेकं वक्ष्यमाणानां सामायिका दितद्भेदानां विरतिसामान्यान्तर्भावादेकस्य चैकदा भावाद्वेति, एतेषां च ज्ञानादीनामयमेव क्रमो, यति नाऽज्ञातं श्रद्धीयते, नाश्रद्धिं तं सम्यगनुष्ठीयत इति। ठा० १० ठा०। सूय०।

विरतिपरिणामरूपेण क्षायिकभावापन्नम्। *जंबू०*।

चर्यते आसेव्यते अनेन वा, चर्यते गम्यते मोक्ष इति चारित्रम्। मूलोत्तरगुणकलापे, ठा० २ ठा० १ उ०।

आश्रवनिरोधे, वव०१ उ०।

अनुष्ठाने, नाया०१ श्रु०२ अ०। ठा०।

अज्ञानोपचितस्य कर्मव्रजस्य रिक्तीकरणे, निसि०१ उ०।

सर्वसंवरे, सूय०२ श्रु०१ अ०।

चारित्रमोहनीयक्षयक्षयोपशमजे जीवपरिणामे, भग०८श०२ उ०

सावद्ययोगनिवृत्तौ, पण्हा०८ अ०।

बाह्यसदनुष्ठाने, रा०।

क्रिया चेष्टादिके, उत्त०२८ अ०।

चारित्रं-सावद्ययोगनिवृत्तिलक्षणम्। *पण्हा०*।

चरित्तकप्प-पु० [*चरित्रकल्प*]

चारित्रप्रतिपादके शास्त्रे, पंच०भा०।

चरित्तगुणप्पमाण-न० [*चरित्रगुणप्रमाण*]

चरत्यनिन्दितमनेनेति चरित्रं, तदेव चारित्रं, चारित्रमेव गुणः। सावद्ययोगाविरतिरूपे गुणप्रमाणभेदे,'चरित्तगुणप्पमाणे पंचविहे पन्नत्ते। तं जहा–सामाइअचरित्तगुणप्पमाणे, छेआवेट्ठावणच-रित्तगुणप्पमाणे, परिहारविसुद्धिअचरित्तगुणप्पमाणे, सुहुमसं-परायचरित्तगुणप्पमाणे, अहक्खायचरित्तगुणप्पमाणे'। अणुओ०

चरित्तट्ठाया-स्त्री० [*चारित्रार्थता*]

सदनुष्ठानरूपेऽर्थे, ठा०५ ठा०३ उ०।

वर्षास्वपि अन्यत्र गच्छेत्- चारित्रार्थतया तु तस्य क्षेत्रस्यानेषणा स्त्र्यादिदोषदुष्टतया तद्रक्षणार्थम्। ठा०५ ठा०२ उ०।

चरित्तट्ठवणा-स्त्री० [*चारित्रस्थापना*]

चारित्रास्यानिर्बाह्यत्वेन न्यासे, यथा–शय्यातरस्य कल्पस्थिका-यामाचार्येण चारित्रस्य स्थापना कृता प्रतिसेवते इति भावः। बुह० ४ उ०।

चरित्तधम्म-पु० [*चारित्रधर्म*]

चरित्रं क्षयोपशमरूपं, तस्य भावश्चारित्रमशेषकर्मक्षयाय चेष्टे-त्यर्थः। ततश्चारित्रमेव धर्मश्चारित्रधर्म इति। श्रमणधर्मे, 'चरित्त-धम्मो समणधम्मो त्ति' वचनात्। दश०१ अ०। ठा०।

स च क्षान्त्यादिरूपो दशधा। नं०।

चारित्रं मूलोत्तरगुणकलापः, तदेव धर्मश्चारित्रधर्मः।ठा०२ ठा०।

क्षान्त्यादिश्रमणधर्मः। अयं च द्विविधोऽपि द्रव्य-भावभेदे धर्म्मे भावधर्म्म उक्तः। यदाह–'दुविहो उ भावधम्मो, सुयधम्मो खलु चरित्तधम्मो य। सुयधम्मो सज्झाओ, चरित्तधम्मो समणधम्मो। त्ति' ठा०२ ठा०३ उ०।

प्राणातिपातादिनिवृतिरूपे धर्मभेदे, दश०४ अ०।

चारित्रं मूलोत्तरगुणकलापस्तदेव धर्मश्चारित्रधर्मः। ठा०।

चरित्तधम्मआराहणा-स्त्री० [*चारित्रधर्माराधना*]

आराधनाभेदे, ठा० ३ ठा० १ उ०।

चरित्तपडिवत्ति-स्त्री० [*चारित्रप्रतिपत्ति*]

चारित्रस्य वैराग्यतया शुद्धौ, पंच०चू०। ।

चरित्तपरिणाम-पु० [*चारित्रपरिणाम*]

चारित्रमेव परिणामः। परिणामभेदे, पन्न०१२ पद। ठा०।

चरित्तपायच्छित- न० [*चारित्रप्रायश्चित्त*]

प्रायश्चित्तभेदे, ठा० ३ ठा० ४ उ०।

चरित्तपुरिस-पु० [*चरित्रपुरुष*]

तद्वति, ठा० ३ ठा० १ उ०।

चरित्तबल-न० [*चारित्रबल*]

चारित्रानुपालसामर्थ्ये, यद् दुष्करमपि सकलसङ्गवियोगं करोति आत्मा, यच्चानन्तमवाधमैकान्तिकमात्यन्तिकमात्मायत्तमानन्दम् आप्नोति। ठा० १० ठा०। दृढचरित्रे, पन्न०९ पद।

चरित्तभावणाय-त्रि० [*चारित्रभावनाक*]

चारित्रेण सामायिकादिना भावना वासना यस्य स चारित्रभाव-नाकः। चारित्रवासनायुक्ते पण्हा० १ अ०।

चरित्तभेइणी-स्त्री० [*चारित्रभेदिनी*]

चारित्रभेदकारिण्यां विकथायाम्, । ठा० ।

न सम्भवन्तीदानीं महाव्रतानि साधूनां प्रमादबहुलत्वादतिचार-प्रचुरत्वादतिचारशोधकाचार्य-तत्कारकसाधुशुद्धीनामभावादिति ज्ञानदर्शनाभ्यां तीर्थं प्रवर्तत इति ज्ञानदर्शनकर्त्तव्येष्वेव यत्नो विधेय इति। प्रतिपन्नचारित्रस्यापि तद्वैमुख्यमुपजायते, किं पुनस्तदभिमुखस्येति चारित्रभेदिनीति। ठा० ७ ठा०।

चरित्तमोहणिज्ज-न० *[चारित्रमोहनीय]*
मोहनीयकर्मभेद। विशे०।

चरित्तरक्खणट्ठ-न० *[चारित्ररक्षणार्थ]*
पञ्चप्रकारं चारित्रं सामायिकाद्यमथाख्यातपर्यवसानं, तस्य रक्षणार्थम्। भूतरक्षायाः परि पालनार्थे, पंच०चू०। ।
'चारित्तरक्खणट्ठा, सूयगमस्सुवरि ठविताइं।।' पंच०भा०।

चरित्तलंभ-पु० *[चारित्रलाभ]*
चारित्रस्याऽन्यजन्मोपात्ताष्टविधकर्मसंचयापचयायसर्वसावद्ययोग निवृतिरूपस्य लाभे, आव०म० ।

चरित्तविणय-पु० *[चारित्रविनय]*
चारित्राद् विनयश्चारित्रविनयः।चारित्रेण विनीतकमतायाम्,दश०

चरित्तविराहणा-स्त्री० *[चारित्रविराधना]*
चारित्रं सामायिकादीनि, तेषां विराधना खण्डना। सम०३ सम०

चरित्तवीरिय-न० *[चारित्रवीर्य]*
अशेषकर्मविदारणसामर्थ्ये,क्षीरादिलब्ध्युत्पादनसामर्थ्ये।निसि०।

चरित्तसंपण्णया-स्त्री० *[चारित्रसंपन्नता]*
यथाख्यातचारित्रयुक्तत्वे, उत्त० १० अ०।

चरित्तसुद्धि-स्त्री० *[चारित्रशुद्धि]*
चरणविशुद्धतायाम्, पिंड०।

चरित्ताचरित्त-न० *[चरित्राचरित्र]*
चरित्रं तदचरित्रं चेति चरित्राचरित्रम्। संयमाऽसंयमे, भग० ८ श० २ उ०।

चरित्तायार-पु० *[चरित्राधार]*
चारित्रिणां समित्यादिपालनात्मके व्यवहारे, सम० १०० सम०।

चरित्ताराहणा-स्त्री० *[चारित्राराधना]*
'तिविहा चरित्ताराहणा पन्नत्ता। तं जहा–उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा।' ठा० ३ ठा० ४ उ०।

चरित्तारिय-पु० *[चारित्रार्य]*
चारित्रेण-आर्य, पन्न०।

चरित्ति-त्रि० *[चारित्रिन्]*
संयते, अणुओ०।

चरित्तोवघाय-पु० *[चारित्रोपघात]*
समितिभङ्गादिभिश्चारित्रस्योपघाते, ठा० १० ठा०।

चरिमपच्चक्खाण-न० *[चरमप्रत्याख्यान]*
अन्तिमप्रत्याख्याने, चरमं चरिमोऽन्तिमो भागः। स च दिवसस्य भवस्य चेति द्विधा। तद्विषयं प्रत्याख्यानमपि चरमं। इह भव-चरमं यावज्जीवं, तत्र द्विविधेऽपि चत्वार आकारा भवन्ति। दिवसचरिमं भवचरिमं वा पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ।' आव०म०।

चरिमसगलसुयणाणि-त्रि० *[चरमसकलश्रुतज्ञानिन्]*
चरममपश्चिममिति।सकलं कृत्स्नं, निरवशेषमित्यर्थः। पंच० चू० ज्ञानं यस्य सः। भद्रबाहुस्वामिनि, पंच०भा०।

चरिय-त्रि० *[चरित]*
सेविते, पण्हा०३ अ०।
चेष्टिते, पण्हा०।
सत्ये उदाहरणे, तत् चरितमभिधीयते यद्दत्तं, तेन कस्यचिद्दार्ष्टान्तिकार्थप्रतिपत्तिर्जन्यते। तद्यथा–दुःखाय निदानं यथा ब्रह्मदत्तस्य। दश० १ अ०। नं०।

चरियव्व-त्रि० *[चरितव्य]*
आसेवितव्ये, भग० ९ श०३३ उ०।आव०म०

चरिया-१ स्त्री० *[चरिका]*
नगरप्राकारयोरन्तरेष्वष्टहस्तप्रमाणे मार्गे, पण्हा०१अ०। नाया०। जीवा०। रा०। सम०। अणुओ०। बुह० । उव०।
गृहप्राकारान्तरे हस्त्यादिप्रचारमार्गे, भग० ५ श०७ उ०।

चरिया-२ स्त्री० *[चर्या]*
चर्यते चरणं वा चर्या। आचा०१ श्रु०५ अ०१ उ०। आव०। आव०चू०।
गमने, साधुना हि सति प्रयोजने युगमात्रदृष्टिना गन्तव्यम्। सूय० १ श्रु० १ अ० ४ उ०।
ग्रामादिष्वनियतविहारित्वे, सम० २२ सम०।
भिक्षादिके, सूय० १ श्रु०९ अ०।
वाहने, ठा० ४ ठा०३ उ०।

चरियाचरिअ– न० *[चरित्राचरित्र]*
देशविरतिः स्थूलप्राणातिपाता-दिनिवृत्तिलक्षणम्। *आचा०* ।

चरियापरीसह-पु० *[चर्यापरीषह]*
चरणं चर्या ग्रामानुग्रामविहरणात्मिका, सैव परीषहश्चर्यापरीषहः। उत्त०२ अ०। पण्हा०।
वर्जितालस्यो ग्रामनगरकुलादिषु अनियतवसतिर्निर्ममत्वः प्रतिमासंचर्यामाचरेदिति। आव० ४ अ०।
इत्येवंरीत्या ग्रामान्तरादिष्वप्रतिबद्धतया सञ्चरणकरणे, भग० ८ श० ८ उ०।

चरियापविट्ठ-त्रि० *[चरिकाप्रविष्ट]*
अभिनिचारिकानिमित्तं व्रजिकादिषु प्रविष्टे, वव०।

चरियारय-त्रि० *[चर्यारत]*
भिक्षारते, आचा० २ श्रु०२ अ०२ उ०।

चरु-पु० *[चरु]*
स्थालीविशेषे, उव०।
तत्र पच्यमानं द्रव्यमपि चरुरेव।वलि, निर० ३ वर्ग०। आव०म०

चल-त्रि० *[चल]*
अस्थिरे, भग०५ श०४ उ० । ठा० ।
भङ्गुरे, ठा० ५ ठा०३ उ० ।
श्लथे, ठा०४ ठा०२ उ० । निसि० ।
अनियते, विशे० ।
चपले, निसि०४ उ० ।
अनियतविहारिणि, आचा०१ श्रु०६ अ०५ उ० ।

चलइत्ता-अव्य० *[चलयित्वा]* स्थानात् स्थानान्तरं नीत्वेत्यर्थे, 'चलइत्ता आहरे पाणभोयणे' चलयित्वाऽऽहरेदानीय दद्यादित्यर्थः । दश०५ अ०१ उ० ।

चलंत-त्रि० *[चलत्]*
पतति, भ्रश्यति, अणुओ० ।
ईषत्कम्पमाने, जंबू० १ वक्ष० ।

चलचल-पु० *[चलचल]*
घृते निष्कास्यमानेषु त्रिषु घाणेषु, 'ताव पढमं जंबू० घयं खित्तं तत्थ अण्णं अपक्खिवंती आदिमे जे तिन्नि घाणा ते चलचलेति' निसि० ४ उ० ।

चलचवल-त्रि० *[चलचपल]*
अतिशयेन चपले, चलचपलमतिशयेन चपलं यच्चित्रं नानाप्रकारं क्रीडनं यश्च चित्रो नानाप्रकारो द्रवः परिहासस्तौ प्रियौ येषां ते चलचपलचित्रक्रीडनद्रवप्रियाः । जीवा० ३ प्रति० । सम० ।

चलचित्त-त्रि० *[चलचित्त]*
वानरवच्चपलाभिप्राये, तं० । निसि० ।

चलण-१ पु० *[चरण]*
व्रतश्रमणधर्मेत्यादिसप्ततिस्थानरूपे चरणे ।जंबू० ।उव० ।नाया० ।

चलण-२ न० *[चलन]*
कर्मणः संचरणे, विशे० ।
'चलमाणे चलिए' इत्याद्यर्थनिर्णयार्थे चलनविषये व्याख्याप्रज्ञप्तेः प्रथमोद्देशके, भग० १ श० १ उ० ।
चलनविषयको भगवत्याः प्रथमशतके प्रथमोद्देशकः । *भग०* ।

चलणकम्मगइ-स्त्री० *[चलनकर्मगति]*
चलनं स्पन्दनं, तेन कर्मगतिर्विशिष्यते । चलनाख्यायां कर्मगतौ, दश०१ अ० ।

चलणगइ-स्त्री० *[चलनगति]*
चलिरियं परिस्पन्दने वर्तते । चलनं स्पन्दनमित्येकोऽर्थः । चलनं च तद्गतिश्च सा चलन गतिः । गमनक्रियायाम्, दश० १ अ० ।

चलणमालिया-स्त्री० *[चरणमालिका]*
पादाभरणभेदे, पण्हा० १० अ० ।

चलणा-स्त्री० *[चलना]*
स्फुटतरस्वभावायामेजनायाम्, । भग० ।

चलणिया-स्त्री० *[चलनिका]*
साध्वीनां कट्युपकरणभेदे, 'जाणुप्पमाण चलणी, असिव्वियालंखियाए व्व'चलनिकाऽपि अर्धोरुकवत्, नवरमधोजानुप्रमाणाऽस्यूतलङ्खिकापरिधानवत् वंशाग्रनर्तकी चलनकवन्मन्तव्या । बुह०३ उ० । निसि० ।

चलणी-स्त्री० *[चलनी]*
चलनमात्रस्पर्शिनि कर्दमे, जीवा० ३ प्रति० ।
चलनप्रमाणः कर्दमश्चलनीत्युच्यते । भग० ७ श० ९ उ० ।

चलणोववायकारिया-स्त्री० *[चलनोपपातकारिका]*
पादसेवाविधायिन्यां दास्याम्, नाया०१ श्रु०९ अ० ।

चलमण- त्रि० *[चलमनस्]*
चलितचित्ते, नाया० १ श्रु० ९ अ० ।

चलमाण-त्रि० *[चलत्]*
स्थितिक्षयादुदयमागच्छति विपाकाभिमुखी भवति कर्मणि, 'चलमाणे चलिए' भग० १ श० १ उ० ।

चलसत्त-त्रि० *[चलसत्व]*
चलमस्थिरं परीषहादिसम्पाते ध्वंसात्सत्वं यस्य स चलसत्त्वः ।
अस्थिरसत्त्वे, ठा०४ ठा०३ उ० ।
भङ्गुरसत्त्वे पुरुषजाते, ठा०५ ठा०३ उ० ।

चलसभाव-त्रि० *[चलस्वभाव]*
चञ्चलस्वाभिप्राये,'समुद्दवीची विव चलसभावाओ' ।तं० । भग०

चलाचल-त्रि० *[चलाचल]*
स्थूणादौ, आचा०२ श्रु०५ अ०१ उ० ।
अप्रतिष्ठितेऽस्थिरे, दश०५ अ०१ उ० ।

चलिंदिय-त्रि० *[चलेन्द्रिय]*
इन्द्रियविषयनिग्रहे रूपापातं प्राप्याऽसमर्थे, आव०चू०१ अ० ।

चलिय-त्रि० *[चलित]*
ईषत्कम्पमाने, रा० ।
कम्पिते, आव०म० ।
स्वस्थानगमनापन्ने, पण्हा०३ अ० ।
गन्तुं प्रवृत्ते, उव० ।

चलेमाण- त्रि० *[चलत्]*
गच्छति, आचा०१ श्रु०८ अ०१ उ० ।

चलोवगरणट्ठया- स्त्री० *[चलोपकरणार्थता]*
चलोपकरणलक्षणोयोऽर्थस्तद्भावश्चलोपकरणता ।तस्याम् । भग० ५ श० ४ उ० ।

च्यव-पु०
च्यवने, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

चवण-न० *[च्यवन]*
चारित्रात्प्रतिपतने, बुह०१ उ० ।

चवणकप्प-पु० *[च्यवनकल्प]*

च्यवनं चारित्रात्प्रतिपतनं तस्य कल्पः प्रकारश्चयवनकल्पः। पार्श्वस्थादिविहारे, बृह० १ उ०।

चवल-१ त्रि० *[चपल]*

आकुले, आव०म०।

कायचपलोपेततया । भग०३ श०१ उ० ।

मनोवाक्कायास्थैर्यात् । सम० ।

स्वरूपतो वा । उव० ।

संभ्रमवशादेव । आव०म० ।

आकुले, आव०म०। उव०।

अनवस्थिताचित्ते, पन्न०२ पद।

इतस्ततः कम्पमाने, कल्प०१ क्षण०।

यत्किञ्चनकारिणि, सूय०१ श्रु०२ अ०।

चञ्चले, नाया०१ श्रु०८ अ०। उत्त०। पण्हा०।

उत्सुकतयाऽसमीक्षिते, पण्हा० २ अ०।

हस्तग्रीवादिरूपकायचलनवति, पण्हा०३ अ०।

चवल-२ पु० *[चवल]*

धान्यभेदे, जंबू०३ वक्ष०। ठा०।

अतिचपला इति यावत्, तथा उच्चमात्मप्रमाणं येशामेवंविधा ये कल्लोलास्तैः लौलत् पुनरेकीभूय पृथक् भवत् एवंविधं तोयं पानीयं यस्य सः। कल्प०३ क्षण०।

चवलक्ख-पु० *[चपलाक्ष]*

चक्षुरिन्द्रियलोले, चक्षुरिन्द्रियविपाके, गच्छा० २ अधि०।

चवला-स्त्री० *[चपला]*

चपलेव चपला क्रोधविशिष्टस्येव क्षमाऽसंवेदात्, । जीवा० ३ प्रति० । रा०।

कायचापल्यवत्यां देवगतौ, कल्प०२ क्षण०। भग०।

चविया-स्त्री० *[चविका]*

वनस्पतिविशेषे, पन्न० १७ पद०।

चविला-स्त्री० *[चपेटा]*

करतलघाते, उत्त० १ अ०।

चवेडा– स्त्री० *[चपेटा]*

पञ्चाङ्गु-लीप्रहारः। *उत्त०* ।

चवेयव्व-न० *[च्योतव्य]*

च्यवनीये, कर्त्तव्ये च्यवने, । ठा०३ ठा०३ उ०।

चव्वाइ-त्रि० *[चार्वाकिन्]*

चर्वणाशीले, 'रोमंथयते कज्जं, चव्वागी नीरसं च विसने त्ति।' यथा वृषनेत्रं वृषसागारिकं नीरसमपरो वृषमश्चर्वयति, एवं यः कार्यं रोमन्थायमानो निष्फलं रचयन् तिष्ठेत्, चर्वणाशीलः चार्वाकी दुर्व्यवहारौ। वव० ३ उ०।

चव्वाग-पु० *[चार्वाक]*

लौकायतिके, । सूय०।

चार्वाकास्त्वेवमभिहितवन्तः। यथा–नास्तिकश्चित्परलोकयायी भूतपञ्चकाद्व्यतिरिक्तः पदार्थो, नाऽपि पुण्यपापे स्त इत्यादि, एवं चाङ्गीकृत्यैते लोकायतिकाः मानवाः पुरुषाः सक्ताः गृद्धा अध्युपपन्नाः कामेष्विच्छामदनरुपेषु। सूय०१ श्रु० १ अ० १ उ०।

चव्वागि-त्रि० *[चार्वाकिन्]*

'चव्वाइण' शब्दार्थे, वव० ३ उ०।

चसग-पु० *[चषक]*

सुरापानपात्रे, जंबू०५ वक्ष०।

चाइ-त्रि० *[त्यागिन्]*

सङ्गत्यागवति, भग०२ श०१ उ०।

संविग्नमनोज्ञसाधुदानं वा। *पण्हा०*।

चाउक्कालं– त्रि० *[चतुष्कालं]*

दिवसरजनीप्रथमचरमप्रहरेष्वित्यर्थः। *आव०* ।

चाउक्कोण-त्रि० *[चतुष्कोण]*

चत्वारः कोणा अस्रयो यस्य सः। चतुरस्रे, जीवा०३ प्रति०।

चाउघंट-त्रि० *[चतुर्घण्ट]*

चतस्रो घण्टाः पृष्ठतोऽग्रतः पार्श्वतश्चाल-म्बमाना यस्य सः। निर०१ वर्ग०। जंबू०। नाया०।

चतुर्घण्टोपेते, भग०श० ३३ उ०।

चाउज्जाम-न० *[चातुर्याम]*

चतुर्णां परिग्रहविरत्यन्तर्भूतब्रह्मचर्यत्वेन चतुः सङ्ख्यानां यामानां समाहारश्चतुर्यामम्। पंच०भा०। ठा०।

तदेव चातुर्यामम्। । निसि० ।

चतुर्महाव्रत्याम्, ठा०।

चाउत्थिय-पु० *[चातुर्थिक]*

चतुर्थे चतुर्थेऽह्नि जायमाने रोगभेदे, जीवा०३ प्रति०।

चाउद्दसी-स्त्री० *[चातुर्दशी]*

प्रतिपद आरभ्य चतुर्दशेऽहोरात्रे, ज्यो० ३ पाहु०। । गणि०।

चाउरंगिज्ज-न० *[चातुरङ्गीय]*

उत्तराध्ययनेषु चतुर्थेऽध्ययने, तत्र हि मानुष्यं १ श्रुतिः २ धर्मः २ श्रद्धा ४ चेति चत्वारि परमाङ्गाणि दुर्लभत्वेनोक्तानि। सम०५१ सम०। अणुओ०।

चाउरंत-१ त्रि० *[चातुरन्त]*

चत्वारोऽन्ताः पर्यन्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमसमुद्रहिमवल्लक्षणा यस्याः पृथिव्याः सा चतुरन्ता, तस्या अयं स्वामित्वेनेति चातुरन्तः। ठा०४ ठा०१ उ०।

चत्वारोऽन्ता भूमिभागाः पूर्वसमुद्रादिरूपा यस्य स तथा, स एव चातुरन्तः। चक्रवर्त्तिनि, पण्हा०४ अ०।

चाउरंत-२ न० *[चतुरन्त]*

चतसृणां गतीनां नारकतिर्यङ्नरामरलक्षणानामन्तो यस्यास्तच्च-तुरन्तम्, समृध्यादित्वादात्त्वम्। चत्वारोऽन्ता गतयो यस्य स तथा। चतुर्गतिके, सूय०२ श्रु०२ अ० २ उ०। पण्हा०।

दिग्भेदगतिभेदाभ्यां चतुर्विभागे, पण्हा० २ अ०।

चाउरंतचक्कवट्टि-पु० *[चातुरन्तचक्रवर्तिन्]*

चत्वारोऽन्ताः समुद्रत्रयहिमवल्लक्षणा यस्याः सा चतुरन्ता पृथ्वीं, तस्या अयं स्वामी चातुरन्तः, स चासौ चक्रवर्ती च। ठा०५ ठा०।

चतुर्षु पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपेषु अन्नेषु वनितुं शीलमस्य। जीवा० चतुरन्ताया भरतादिपृथिव्या एते स्वामिन इति चातुरन्ताः, चक्रेण वर्तनशीलत्वाच्च चक्रवर्त्तितः, चतुरन्तग्रहणेन च वासुदे-वादीनां व्युद। भग०१२ श०९ उ०।

चतुरन्तायाः पृथिव्या ईश्वरेषु चक्रवर्तिषु चतुर्भिर्हयगजरथप-दातिभिः सेनाङ्गैरन्तोऽरीणां विनाशो यस्य सः चतुरन्त एव चातुरन्तः।

आसमुद्रमा हिमालयं विविधविद्याधरवृन्दगीतकी-र्तितया एकच्छत्रषड्खण्डराज्यपालके, उत्त० ११ अ०।

चाउरंतसंसारकंतार-पु० *[चातुरन्तसंसारकान्तार]*

चतुरन्तं चतुर्विभागं नरकत्वादिभेदेन, तदेव चातुरन्तं, तच्च तत्संसारकान्तारं चेति। चतुर्गतिके संसाराऽरण्ये, ठा०।

'तिहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अवाईयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं विई पवज्जा। तं जहा–अणिदाणयाए, दिट्ठिसंपन्नयाए, जोगवाहियाए'। ठा०१ ठा०३ उ०।

चाउरक्कगोखीर-न० *[चातुरक्यगोक्षीर]*

चतुःस्थानपरिणामपयन्ते गोक्षीरे, । जीवा० ।

तच्चैवम् गवां पुण्ड्रदेशोद्भवेक्षुचारिणीनामनातङ्गनां कृष्णानां यत् क्षीर तदन्याभ्यः कृष्णगोभ्य एव यथोक्तगुणाभ्यः पानं दीयते तच्चक्षीरमप्येवंभूताभ्योऽन्याभ्यस्तत्क्षीरमप्यन्याभ्य इति चतुः-स्थानपरिणामपर्यन्तम्, एवं भृतं यत् चातुरक्यं गोक्षीरम्। जीवा०३ प्रति०। आव०म०।

चाउल-पु० *[तण्डुल]*

शालिव्रीह्यादेस्तण्डुले, आचा०२ श्रु०१ अ०१ उ०।

तन्दुलधावनम्। *बृह०*।

चाउलपलंब-न० *[तण्डुलप्रलम्ब]*

चाउलाः-तण्डुलाः शालिव्रीह्यादेस्त एव चूर्णीकृतास्तत्कर्णिका वा। आचा० २ श्रु० १ अ० १ उ०।

अर्द्धपक्षशाल्पादिकाणिकादिके, आचा०२ श्रु०१ अ० ६ उ०।

भग्नशाल्यादितण्डुलेषु, आचा०२ श्रु०१ अ०११ उ०।

चाउलपिट्ठ-अव्य० *[तण्डुलपिष्ट]*

तन्दुलसत्कपिष्टे, आचा०२ श्रु०१ अ०८ उ०।

चाउलोदग-अव्य० *[तण्डुलोदक]*

अट्ठिकरके, 'तंडुलोदंगं अहुणा धोयं च वज्जए' दश०५ अ०।

तण्डुलधावनोदके, गच्छा०

चाउल्लग-न० *[देशी]*

पुरुषपुत्तलके, निसि०१ उ०।

चाउव्वण्ण-न० *[चातुर्वर्ण]*

चत्वारो वर्णाः प्रकाराः श्रमणादयो यस्मिन् स तथा स एव स्वाथकाण् विधानाच्चातुर्वर्णम्। ठा० ५ ठा०२ उ०।

श्रमणश्रमणीश्रावकश्राविकाचतुष्टयरूपे सङ्घे, ठा०५ ठा०२ उ०।

ब्राह्मणादिलोके, भग०१५ श०१ उ०।

चाउव्वण्णाइण्ण-त्रि० *[चातुर्वर्णाकीर्ण]*

चत्वारो वर्णाः श्रमणादयः समाहृता इति चतुर्वर्णं, तदेव चातुर्वर्णम्। तेनाकीर्ण आकुलश्चातुर्वर्णाकीर्णः।

अथवा–चत्वारो वर्णाः प्रकारा यस्मिन्स तथा, चतुर्वर्णः चासावाकीर्णश्च क्षमाज्ञानादिभिर्महागुणैरिति चतुर्वर्णाकीर्णः।

तथाविधे सङ्घे, 'समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वन्नाइन्ने संघे। तं जहा–समणा, समणीओ, सावगा, साविगाओ।' ठा० १० ठा०। भग०।

चाउव्वेज्ज-न० *[चातुर्वेद्य]*

चतुर्णां विद्यानां समाहारे, ठा० १ ।

चाडुकर-त्रि० *[चाटुकर]*

प्रियवादिनि, उव०।

प्रियम्वदे, नाया० १ श्रु०१ अ०। पण्हा०।

चाणक्क-पु० *[चाणक्य]*

चणकग्रामे जातः, चणकस्य द्विजस्यापत्यं वा चाणक्यश्चाणिक्यो वा। आव०म०। संथा०। नं०। आचा०। ठा०।

चामर-न० *[चामर]*

चमरपुच्छे, नाया०१६ अ०।

प्रकीर्णके, सम०३४ सम०। नाया०। उव०। रा०।

चामरज्झय-पु० *[चामरध्वज]*

चामरयुक्तध्वजायाम्, उव०।

चामरधारपडिमा-स्त्री० *[चामरधारप्रतिमा]*

चामरधारिण्यां प्रतिमायाम्, जिनप्रतिमानां प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोर्द्वे द्वे चामरधारप्रतिमे प्रज्ञप्ते। जीवा० १ प्रति०। रा०।

चामरा-स्त्री० *[चामरा]*

चमरीपुच्छे, भग०

'नानामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ संखककुंददगरयअमियमहियफेणपुंजसन्निगासाओ धवलाओ चामराओ गहाय सलीलं वीयमाणीओ २ चिट्ठंति' । भग०९ श०३३ उ०। जीवा०।।

चामीकर-न० *[चामीकर]*
कनके। आव०म०।
चामीकररइय-त्रि० *[चामीकररचित]*
सुवर्णरचिते सुवर्णमये, कल्प० २ क्षण०।
चामुंडा-स्त्री० *[चामुण्डा]*
निहतचण्डमुण्डायां भगवत्याम्, विशे०। आव०म०।
चायंत-त्रि० *[शक्नुवत्]*
समर्थे, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ०।
चार-पु० *[चार]*
चरणं चारः।अनुष्ठाने, आचा०१श्रु०५अ०३ उ० निसि०। पण्हा०। संचरणे, उव०।
चरन्ति भ्रमन्ति ज्योतिष्क-विमानानि यत्र स चारः। समस्ते ज्योतिष्कक्षेत्रे, व्युत्पत्त्यर्थमात्रानपेक्षणेन शब्दप्रवृत्तिनिमित्ताश्रयणात्। ठा०२ ठा०२ उ०।
परिभ्रमणे, सम०१२ सम०।
मण्डलगत्या परिभ्रमणे, सूर० १० पाहु०। ।
चारग-न० *[चारक]*
बन्दिप्रभृतीनामवस्थापनार्थं गृहविशेषे, दशा० ६ अ०। कल्प०। कारागृहे, आव०१ अ०।
गुप्तिगृहे, ठा०९ ठा०। वव०।
भरतस्य साम्राज्यानुभवनकाले चतुर्विधा दण्डनीतिरभूत्, तत्र तृतीया चारकलक्षणा भरतेन माणवकविधिं परिभाव्य प्रवर्तिता, सा गुरुतरापराधविषया। आव०म०।
गुप्तौ, उव०। आव०म०।
चारगपरिसोहण-न० *[चारकपरिशोधन]*
चारकशब्देन कारागृहमुच्यते, तस्य शोधनं शुद्धिः। बन्दिविमोचने, भग०११ श०११ उ०। कल्प०।
चारगपाल-पु० *[चारकपाल]*
गुप्तिरक्षके, विपा० १ श्रु०६ अ०।
चारट्ठिइय-पु० *[चारस्थितिक]*
चारे ज्योतिश्चक्रे क्षेत्रे स्थितिरेव येषां ते चारस्थितिकाः। समयक्षेत्रबहिर्वर्तिषु घण्टाकृतिषु ज्योतिष्केषु, ठा०२ ठा०२ उ०।भग०
चारस्य यथोक्तस्वरूपस्य स्थितिरभावो येषां ते चारस्थितिकाः अपगतचारेषु, सूर० १९ पाहु०। । जीवा०।
चारण-पु० *[चारण]*
गमनमन्येषामप्यस्ति ततो विशेषणान्यथाऽनुपपत्या चरणमिह विशिष्टम् आकाशे गमनमागमने वाऽभिगृह्यतेऽत एवातिशयितो, अतिशयितगमनागमनलब्धिसपन्नेषु, आव०म०। आव०। नं०। आव०चू०। भग०।
साधुविशेषेषु, विशे०। उव०।

चारणगण-पु० *[चारणगण]*
श्रीगुप्ताचार्यनिर्गते स्वनामख्याते वीरतीर्थीयानामेकक्रियावाचनानां साधूनां समुदाये, ठा० ९ ठा०
चारणभावणा-१ स्त्री० *[चारणभावना]*
चारणशब्दे चारणस्योक्तं स्वरूपम्,चारणस्वरूपं भाव्यते सविस्तरं प्रतिपाद्यते यासु ताश्चारणभावनाः। आव०म०।
चारणभावणा-२ स्त्री० *[चारणभावना]*
अङ्गबाह्यकालिकश्रुतभेदे।ताश्च षोडशवर्षपर्यायस्य दीयन्ते। पा०
चारणलद्धि-स्त्री० *[चरणलब्धि]*
लब्धिभेदे, यद्वशाच्चारणलब्धिर्विद्याधरलब्धिश्च जायते। आव० चू० १ अ०।
चारणसमण-पु० *[चारणश्रमण]*
बहुविधैश्वर्यभूतलब्धिकलापोपेते महातपस्विनि,सूय०२श्रु०२अ०
चारपुरिस-पु० *[चारपुरुष]*
गुप्तिरक्षकेषु, आव०म०।
चारभड-पु० *[चारभट]*
राजपुरुषे, बुह०१ उ०। पण्हा०। निसि०।
चौरग्राहे, पण्हा०३ अ०। आव०।
चारि-स्त्री० *[चारि]*
भोजनसंपत्तौ। विशे०। नं०।
चारित्त-न० *[चारित्र]*
श्रामण्ये, संथा०।
अष्टादशशीलाङ्गसहस्रनिष्प्रतिपत्तौ, । पंच०चू०। ।
स्थूलसूक्ष्मप्राणातिपातादि विरमणपरिणामाऽऽत्मके, । आव० म० । आचा०।
क्रियारूपेऽर्थे, आव०६ अ०।
बाह्ये सदनुष्ठाने, नाया०१ श्रु०१ अ०।
चारित्ततह-न० *[चारित्रतथ्य]*
तपसि द्वादशविधे संयमे सप्तदशविधे सम्यगनुष्ठाने, सूय०२ श्रु०
चारित्तपज्जव-पु० *[चारित्रपर्यव]*
सर्वविरतिरूपपरिणामस्य बुद्धिकृते अविभागपलिच्छेदाविषयकृते वा पर्याये, भग० २५ श० ६ उ०।
चारित्तब्भस-पु० *[चारित्रभ्रंश]*
भ्रष्टचारित्रत्वे, (गच्छा०)
चारित्तभावणा-स्त्री० *[चारित्रभावना]*
चारित्रस्य फलपर्यालोचनायाम्, आव०४ अ०।
चारित्तभेइणी-अव्य० *[चारित्रभेदिनी]*
कुतीर्थकज्ञानादिरूपायां विकथायाम्, न संभवन्तीदानीं महाव्रतानि साधूनां, प्रमादबहुलत्वाददतिचारशोधकाचार्यतत्कारकशुद्धीनामभावादित्यादिरूपा। आव०म०।

चारित्तविणय-पु० *[चारित्रविनय]*
चारित्रमेव विनयः, चारित्रस्य वा श्रद्धानादिरूपो, विनयश्चारित्र-विनयः। विनयभेदे, 'सामाइयादि चरणस्स सद्दहणया तहेव कायेणं।संफासणं परूवणमह परओ भववसत्ताणं। ठा०७ ठा०।
'से किं चारित्तविणए ? चारित्तविणए पंचविहे पण्णत्ते। तं जहा– सामाइअचारित्तविणए छेदोवट्ठावणिअचारित्तविणए परिहार-विसुद्धि चारित्तविणए सुहुमसंपरायचारित्तविणए अहक्खाय चारित्त विणए, से तं चारित्तविणए'। उव०।

चारित्तविसोही-स्त्री० *[चारित्रविशोधि]*
चारित्रस्याचारपरिपालनतो विशुद्धौ, ठा० १० ठा०।

चारित्तसमाहि-पु० *[चारित्रसमाधि]*
अभ्युद्यतविहारमरणयोः चारित्रसमाधावपि विषयसुखनिस्पृह-तया निष्किञ्चानोऽपि परं समाधिमाप्नोति। तथा चोक्तम्– 'तणसंथारणिसण्णे, वि मुणिवरो भट्ठरागमयमोहो। जंबू० पावइ मुत्तिपहं, कत्तो तं चक्क-वट्टी वि।।' सूय०१ श्रु०१० अ०।

चारित्तायार-पु० *[चारित्राचार]*
समितिगुप्तिरूपे आचारभेदे, ठा०२ ठा०३ उ०। । नं०।

चारिय-पु० *[चारिक]*
हैरिके, पण्हा०२ अ०। बुह०।
भाण्डिके निसि०१ उ०।

चारु-१ त्रि० *[चारु]*
शोभने, सूर० २० पाहु०। । उवा०। उव० ।
चारु शोभनमुल्लपितं च मन्मनभाषितादि, तत् सहगतमुखा-दिविकारोपलक्षणमेतत्, प्रेक्षितं चार्द्धकटाक्षवीक्षितादि, उल्ल पितप्रेक्षितम्। उत्त०१६ अ०। उव०। चंद०।
विशिष्टचङ्गिमोपेते, रा०।

चारु-२ पु० *[चारु]*
तृतीयतीर्थकरस्य प्रथमशिष्ये, सम०। निर०।

चारु-३ पु० *[चारु]*
प्रहरणविशेषे, जीवा० ३ प्रति०।

चारुणिया-स्त्री० *[चारुणिका]*
चारुणदेशोत्पन्नायां दास्याम्, नाया० १ श्रु०१ अ०।

चारुदत्त-१ पु० *[चारुदत्त]*
कुक्कुटेश्वरतीर्थकारकस्य ईश्वरनृपस्य जीवे, कल्प०।

चारुदत्त-२
ब्रह्मदत्तचक्रवर्त्तिना परिणीतायाः कात्यायनीनाम्न्याः कन्यायाः पितरि, उत्त० १३ अ०।

चारुपाणि-त्रि० *[चारुपाणि]*
चारु प्रहरणविशेषः पाणौ येषां ते चारुपाणयः। करेण चारु-नामकप्रहरणधारके,जीवा०१ प्रति०। रा०

चारुपेहिणी-स्त्री० *[चारुपेक्षणी]*
चारु प्रेक्षितुमवलोकितुं शीलमस्याश्चारुप्रेक्षिणी। अधोदृष्टितादि-दोषादुष्टायाम्, उत्त० १ अ०।
सुन्दरावलोकनायां, सुन्दरनयनायां वा। उत्त० २२ अ०।

चारुरूव-त्रि० *[चारुरूव]*
मनोहररूपे, कल्प०३ क्षण०।

चारुवण्ण-त्रि० *[चारुवर्ण]*
सत्कीर्तौ, शौर्य्यादिशरीरवर्णयुक्ते, उव०

चारुवेस-त्रि० *[चारुवेष]*
चारुर्वेषो नेपथ्यं सत्प्रज्ञा वा यस्य सः। जीवा०३ प्रति०।
मनोहरनेपथ्ये, जंबू०१ वक्ष०।

चारोवग-पु० *[चारोपग]*
चारयक्ते ज्योतिष्के, सूर०१९ पाहु०। ।

चारोववण्णग-पु० *[चारोपपन्नक]*
चारो मण्डलगत्या परिभमणं, तमुपपन्नाश्चारोपपन्नाः। चारमाश्रि-तवत्सु ज्योतिष्केषु, जीवा०३ प्रति०। जंबू०। ठा०।

चालण-न० *[चालन]*
स्थानात्स्थानान्तरनयने, नाया० १ श्रु०३ अ०।

चालणा-स्त्री० *[चालना]*
गोचरमर्द्धगोचरं वा दूषणं चाल्यते आक्षिप्यते यया वचनपद्धत्या सा चालना। बुह०१ उ०।

चालणी-स्त्री० *[चालनी]*
(चालनी) तितइ, आव०। आव०म०। विशे०।

चालणीपडिवक्ख-न० *[चालनीप्रतिपक्ष]*
चालनीप्रतिपक्षभूते वंशदलनिर्मापिते तापसभाजने, ततो हि बिन्दुमात्रमपि न प्रस्रवति। आव०म०।

चालित्तए-कृ० *[चालयितुम्]*
भङ्गकान्तरं कर्तुमित्यर्थे, उवा०२ अ०।

चालेमाण-त्रि० *[चालयत्]*
शरीरस्य मध्यभागे संचरति, जीवा०३ प्रति०।

चाव-पु० *[चाप]*
धनुष, उव०। आव०म०। जंबू०। उवा०। जीवा०। भग०। नाया०। पण्हा०।

चावपाणि-त्रि० *[चापपाणि]*
चापं पाणौ येषां ते चापपाणयः। धनुर्हस्तेषु,जीवा०३प्रति०। रा०

चावाली-स्त्री० *[चावाला]* स्वनामख्याते ग्रामे, सा चोत्तरदक्षिणभे-दाद् द्विधा–'सामी दाहिणचावालीओ उत्तरचावालिं वच्चति' आव० म० । आव०चू०। आव०।

चाविअ-त्रि० *[च्यावित]*
परिभ्रसिते, अणुओ०।

चामेडी-स्त्री० *[चापेटी]*
विद्याभेदे, ययाऽन्यस्य चपेटायां दीयमानायामातुरः स्वस्थी-भवति। वव० ५ उ०।

चास-पु० *[चाष]*
किकीदिविनि, पण्हा०१ अ०।
पक्षिविशेषे, रा०। जीवा०। प्रव०। पन्न०। नाया०। उत्त०।

चासपिच्छ-न० *[चाषपिच्छ]*
चाषपक्षे, रा०।
चासस्य पत्रम्। पन्न०।

चित्त-अव्य० *[चित्त]*
व्याप्ते, अणुओ०।

चिआग-पु० *[त्याग]*
संयतेभ्यो वस्त्रादिदाने आव० ४ अ०।

चिइ-स्त्री० *[चिति]*
कारणे कार्योपचाराद्रजोहरणाद्युपधिसत्तो, चीयतेऽस्राविति वा व्यत्पत्तेः। आव०३ अ०।
इष्टकादिचये, उत्त०९ अ०।

चिइकम्म-न० *[चितिकर्मन्]*
कृतिकर्मणि वन्दनके, आव० ३ अ०।
चितिकर्मापि द्विधैव-द्रव्यतो, भावतश्च। द्रव्यतस्तापसादिलि-ङ्गग्रहकर्म, अनुपयुक्तसम्यग्दृष्टे रजोहरणादिकर्म च, भावतः सम्यग्दृष्ट्युपयुक्तरजोहरणाद्युपधिक्रियेति। आव० ३ अ०।

चिउर-पु० *[चिकुर]*
पीतरामद्रव्यविशेषे, जंबू०१ वक्ष०। आव० म०। पन्न०। रा०।
गन्धद्रव्यविशेषे, रा०। पन्न०।

चिउरंगराग-पु० *[चिकुराङ्गराग]*
चिकुरसंयोगनिमित्ते वस्त्रादौ रागे, रा०। आव०म०।

चिउरबंध-पु० *[चिकुरबन्ध]*
केशबन्धपरिज्ञानलक्षणे स्त्रीकलाभेदे, कल्प०७ क्षण०।

चिउरराग-पु० *[चिकुरराग]*
पीतद्रव्यविशेषनिष्पादिते वस्त्रादौ रागे, पन्न०१७ पद।

चिंचा-स्त्री० *[चिञ्चा]*
अम्लिकायाम्, बुह०१ उ०। वव०।

चिंतग-पु० *[चिन्तक]*
अप्रमादेन ध्यातरि, आव०४ अ०।

चिंतण-न० *[चिन्तन]*
अनुस्मरणे, पर्यालोचने, आव०४ अ०।
चेतसि स्मरणे, परिभावने, उत्त० ३२ अ०।

चिंतणिया-स्त्री० *[चिन्तनिका]*
अनुप्रेक्षायाम्, ठा० ५ ठा० ३ उ०।

चिंतयंत-त्रि० *[चिन्तयत्]*
स्मरति, संथा०।
मन्यमाने, सूय०१ श्रु० १२ अ०।

चिंता-स्त्री० *[चिन्ता]*
चिन्तनं चिन्ता। नं०।
मनश्चेष्टायाम् आव०४ अ०।
विचारे, उत्त०२३ अ०।
पर्यालोचने, सूय०१ श्रु०१२ अ०। दश०।
स्वरूपपर्यालोचनरूपायां कथायाम्, आव०४ अ

चिंतावग-स्त्री० *[चिन्तापक]*
अनुभावके, आव० म० ।

चिंतासोगसागरप्पविट्ठा-स्त्री० *[चिन्ताशोकसागरप्रविष्टा]*
चिन्तैव शोकसागरश्चिन्ताप्रधानो वा शोकसागरश्चिन्ताशोकसाग-रस्तं प्रविष्टः शोकाधिनिमग्ने, सूय० २ श्रु० १ अ०।

चिंतिय-न० *[चिन्तित]*
स्मरणे, भग०९ श०३३ उ०।निर०।उव०।निसि०।भग०। विपा०
चिन्ता सञ्जाताऽस्मिन्निति चिन्तितः। चिन्ताऽऽत्मके, जीवा०३ प्रति०। रा०। उव०। विपा० । सूय०।
परेण हृदि स्थापिते, नाया०१ श्रु०१ अ०।

चिंतियव्व-अव्य० *[चिन्तितव्य]*
मनसा विकल्पनीये, तं०।

चिंधगय-अव्य० *[चिह्नगत]*
चिह्नानि लक्षणानि गतः। उव०।
चिह्न-प्राप्ते, उव०।

चिंधज्झय-अव्य० *[चिह्नध्वज]*
चिह्नभूतगरुडसिंहवराहाङ्कितध्वजादौ, नाया० १ श्रु० ८ अ०।

चिंधज्झयपडाग-त्रि० *[चिह्नध्वजपताक]*
चिह्नध्वजा गरुमादि चिह्नयुक्ताः केतवः पताका यस्य स तथा। चिह्नयुक्तध्वजपताकोपेते, विपा० १ श्रु० १ अ०।

चिंधणिप्पण्णा-स्त्री० *[चिह्ननिष्पन्न]*
लिङ्गिते, 'लिंगियं ति वा चिंधणिप्पण्णं ति वा करणणिप्पण्णं ति वा णिमित्तियणिप्पण्णं ति वा एगट्ठा' आव०चू०९ अ०।

चिंधपड-पु० *[चिह्नपट]*
वीरतासूचके नेत्रादिवस्त्रामवपट्टोपेते, उव०।

चिंधपुरिस-पु० *[चिह्नपुरुष]*
पुरुषचिह्नैः श्मश्रुप्रभृतिभिरुपलक्षिते नपुंसके पुरुषवेदे, तेन चिह्नयते पुरुष इति कृत्वेति पुरुषवेषधारिणी स्त्र्यादौ। ठा०३ ठा० १ उ०। विशे०।

चिंधित्थी-स्त्री० *[चिह्नस्त्री]*
चिह्नयते ज्ञायतेऽनेनेति चिह्नं, स्तननेपथ्यादिकम्। सूय०१ श्रु०४

चिक्कण-त्रि० *[चिक्कण]*
श्लक्ष्णस्कन्धनिष्पन्ने, भग०१७ श०१ उ०।
पिच्छिले, तं०।
दुर्विमोचे, पण्हा०१ अ०।
आश्लेषवति, पण्हा०१ अ०।
दारुणे, 'कम्म वंधेइ चिक्कणं' दश० ६ अ०।

चिक्कणंग-न० *[चिक्कणाङ्ग]*
चिगचिगायमाने शरीरे, तं०।

चिक्कणीकय-त्रि० *[चिक्कणीकृत]*
तथाविधमृत्पिण्डवत् सूक्ष्मकर्मस्कन्धानां सरसतया परस्परं गाढ-संबन्धकरणतो दुर्भेवीकृते कर्मणि, भग० ६ श०१ उ०।

चिक्खल्ल-न० *[चिक्खल्ल]*
चिच्च करोति खल्लं च भवति चिक्खल्लम्। अणुओ०।
प्रबलकर्दमे, पण्हा०१ अ०। बुह०। ठा०। भाव०। पन्न०।
कर्दमः संसार पक्षे विषयधनस्वजनादिप्रतिबन्धः। *सम०*।

चिच्चा-कृ० *[त्यक्त्वा]*
हित्वेत्यर्थे, उत्त०१८ अ०। सूय०।

चिच्चि-अव्य० *[चिच्चि]*
चीत्कारे, विपा० १ श्रु०२ अ०।

चिट्ठ-धा० *[स्था]*
ऊर्ध्वस्थानेनोपवशेन, ऊर्ध्वस्थानेन, तिष्ठति, चिट्ठइत्ता भवति स्थाता भवति। दशा० ३ अ०।

चिट्ठणा-स्त्री० *[स्थान]*
अवस्थाने, 'पतिट्ठा ठावणा ट्ठाणं, ववत्था संठिती ठिती अवट्ठाणं अवत्था य, एगट्ठा चिट्ठणा वि य' बुह० ६ उ०।

चिट्ठा-स्त्री० *[चेष्टा]*
कायव्यापारे, आचा० २ श्रु०२ चू०। निसि०। बुह०।
देहावस्थायाम्, आव० ४ अ०।

चिट्ठिण-कृ० *[स्थित्वा]*
ऊर्ध्वस्थानेनोपविश्येत्यर्थे, ठा० ३ ठा० २उ०

चिट्ठिय-न० *[चेष्टित]*
सकाममङ्गप्रत्यङ्गावयवप्रदर्शनपुरः सरे प्रियस्य पुरतोऽवस्थाने, चंद० २० पाहु०। । सूर०२० पाहु०। ।हस्त न्यासादौ, पण्हा०४ अ०। कृतचेष्टोपेते, नाया० १ श्रु०१ अ०

चिट्ठियव्व-न० *[स्थातव्य]*
निष्क्रमप्रवेशादिवर्जितस्थाने संयमात्मप्रवचनवाधापरिहारेणोर्ध्व-स्थानेनोपवेष्टव्ये, भग० २ श०१ उ०।

चिणंसु- *[क्रिया]*
अतीतकाले चिन्वति, ठा०२ ठा०४ उ०।
गृहीतवति, ठा०९ ठा०।

चिण्ण-त्रि० *[चीर्ण]*
चीर्णे, प्रोषितव्रतमित्यादिरूढितः साधुत्वम्। अन्यथा चरितमिति युक्तम्। उत्त०१३ अ०।
अङ्गीकृते, निषेविते, उत्त०३१ अ०।
हारिते, भग०१९ श०३ उ०। सूर०। पञ्चा०।
सुचीर्णं सम्यक् प्रकारेण कृतं संयमतपादि सर्वम्।उत्त०१३ अ०

चित्त-१ त्रि० *[चित्र]*
आश्चर्यभूते, विपा० १ श्रु०६ अ०।
नानाप्रकारे, । जीवा०।
अनेकविधे, ठा०१०ठा० ।पन्न० ।सम० ।उव० ।विशे० ।उत्त०। रा०
आश्चर्यकारिणि, कल्प०३ क्षण०।
अतिरम्यतयाऽद्भुते, उव०।
शोभवाऽद्भुतभूते, तं०।
अनेकरूपवति, सूर०१८ पाहु०। ।
विचित्रे नाया०१ श्रु०१ अ०।
चित्रकारिणि, कल्प०१ क्षण०।
चित्रवति, उत्त०१८ अ०। भग०। नाया०।
भित्त्यादिलेख्ये, 'चित्रमेव हि संसारो० । विशे०। उव०
कर्बुरे, नाया०१ श्रु०८ अ०।
आलेखने, रा०। आव०म०

चित्त-२ न० *[चित्त]*
अन्तः करणे, आव०४ अ०। आचा०।
चित्तं मनो विज्ञानमिति पर्यायाः। अणुओ०। भग०।
मानसे, उव०। आतु०। मतौ, आव०४ अ०।
चेतयति येन तत् चित्तम्। ज्ञाने, आचा०१ श्रु०१ अ० ५ उ०।
आचार्याभिप्राये, आचा०१ श्रु० ५ अ०४ उ०।
सामान्योपयोगे, अणुओ०।
चित्तं चेतना संज्ञानमुपयोगोऽवधानमिति पर्यायाः।आव०६ अ०।
चित्तमुपयोगो ज्ञानम्। सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०।
दृढाऽध्यवसाये, बुह०

चित्त-३ पु० *[चित्र]*
वेणुदेववेणुदारिणोः प्रथमे लोकपाले, ठा०४ ठा०१ उ०। भग०।

चित्त-४ पु० *[चित्र]*
शङ्खराजस्य भागिनेये, आव० म० ।

चित्त-५ पु० *[चित्र]*
प्रदेशिराजदूते, श्वेतव्यानगर्य्या चित्रनाम दूतः प्रदेशिराज्ञा प्रेषितः श्रावस्त्यानगर्य्यां जितशत्रुसमीपे स्पगृहान्निर्गत्य गतः।निर०१ वर्ग

चित्त-६ पु० *[चित्र]*
काम्पिल्यनगरे ब्रह्मदत्तचक्रिपूर्वभवजीवस्य सम्भूतस्य चाण्डाल योनेर्भ्रातरि, उत्त०१३ अ०।

चित्त-७ पु० *[चित्र]*
ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिनो राजमहिष्योः विद्युन्मालाविद्युन्मत्योः पितरि, उत्त० १३ अ०।

चित्तउत्त-पु० *[चित्रगुप्त]*
षोडशे भविष्यज्जिने, सम०।

चित्तंग-१ पु० *[चित्राङ्ग]*
चित्रस्यानेकविधस्य,विवक्षायाः प्राधान्यात्, माल्यस्यकारणत्वा-च्चित्राङ्गाः। ठा०७ ठा०।
सुषमसुषमायां कर्मभूमिषु सदा चाकर्मभूमिषु युगलिकमनुष्य-समये जायमानेषु कल्पद्रुमभेदेषु, आव०म०। सम०। जीवा०।

चित्तंग-२ पु० *[चित्राङ्ग]*
चित्राङ्गेषु माल्यमनेकप्रकारसरससुरभिनानावर्णकुसुमदामरूपं भवति। तं०।

चित्तंग-३पु० *[चित्राङ्ग]*
श्रीऋषभदेवस्याष्टमे पुत्रे, कल्प०७ क्षण०।

चित्ततरलेस्सा-पु० *[चित्रान्तरलेश्या]*
चित्रमन्तरं लेश्या च येषां ते तथा। तथाविधेषु ज्योतिष्केषु, यथा चित्रमन्तरं सूर्य्याणां, चन्द्रान्तरितत्वात्, चित्रलेश्या चन्द्रमसां शीतरश्मित्वात्, सूर्याणामुष्णरश्मित्वात्। जंबू०७ वक्ष०। सूर०।
चित्रमन्तरं लेश्या च प्रकाशरूपा येषां ते चित्रान्तरलेश्याकाः। सूर०। जीवा०।

चित्तकट्टर-न० *[चित्रकट्टर]*
चित्रशब्देन कलिञ्जादिकं वस्तु किञ्चिदुच्यते। तस्य कट्टरः खण्डः। चित्रखण्डे, अणुओ०।

चित्तकणगा-स्त्री० *[चित्रकनका]*
द्वितीयायां विद्युत्कुमारीमहत्तरिकायाम्, जंबू०५ वक्ष०। ठा०।
विदिग्रुचकाद्रिवासिन्यां दिक्कुमारिकायाम्, । आव०।

चित्तकम्म-न० *[चित्रकर्म्मन्]*
चित्रलिखितरूपके, अणुओ०। गच्छा०। आचा०।

चित्तकर-पु० *[चित्रकर]*
चित्रकारे शिल्पिनि, आव०४ अ०। अणुओ०
परिनिष्ठितश्चित्रकारोऽमाप्यापि रेखादिकं प्रमाणयुक्तं चित्रं करोति तावन्मात्रं वा वर्णकं गृह्णाति यावन्मात्रेण समाप्यते। आव० म०

चित्तकह-त्रि० *[चित्रकथ]*
नानाकथाकथके, उत्त० ३ अ०।

चित्तकूड-पु० *[चित्रकूट]*
चित्राणि चित्ररूपाणि कूटानि यस्य सः। निर०।
जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य सीताया महानद्या उत्तरमूले वक्षस्कारपर्वते, ठा०४ ठा०२ उ०। सम०।
'दो चित्तकूडा' ठा०२ ठा०३ उ०।

चित्तगुत्ता-१ स्त्री० *[चित्रगुप्ता]*
रुचकपर्वते विहरणशीलायां दिक्कुमारीमहत्तरिकायाम्, । जंबू०। आव०। आव०म०। ठा०।

चित्तगुत्ता-२ स्त्री० *[चित्रगुप्ता]*
चमरस्यासुरेन्द्रस्यासुरकुमारराजस्य सोमस्य महाराजस्याग्रम-हिष्याम्, भग०१० श०५ उ०। ठा०।

चित्तधरग-न० *[चित्रगृहक]*
चित्रप्रधाने गृहके, जंबू०७ वक्ष०। रा०। जीवा०।

चित्तचमक्कय-न० *[चित्तचमत्कृत]*
मनआश्चर्यावगाहित्वे, 'जायइ चित्तचमक्कं, देविंदाणं पि तं गच्छं'। महानि० ५ अ०।

चित्तणिवाइ-पु० *[चित्तनिपातिन्]*
चित्तमाचार्याभिप्रायः, तेन नियतितुं क्रियायां प्रवर्त्तितुं शीलम-स्येति चित्तनिपाती। गुरुच्छन्दानुवर्त्तिनि, आचा०१श्रु०५अ०४उ०

चित्तधणप्पभूय-त्रि० *[चित्तधनप्रभूत]*
प्रभूतं बहु चित्रमाश्चर्यमनेकप्रकारं वा धनमस्मिन्निति प्रभूत चित्रधनम्। प्राकृतत्वात्प्रभूतशब्दस्य परनिपातः। उत्त०।
नानाप्रकारचित्रधनशालिनि, 'इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं'। उत्त०१३ अ०।

चित्तपक्ख-पु० *[चित्रपक्ष]*
चतुरिन्द्रियजीवभेदे, जीवा०१ प्रति०। पन्न०।
सुवर्णकुमाराणामिन्द्रयोर्वेणुदेववेणुदारिणोस्तृतीये लोकपाले । भग० ३ श० ८ उ०। ठा०।

चित्तपरिच्छेय-पु० *[चित्तपरिच्छेक]*
लघौ, 'चित्तपरिच्छेयपच्छाए' चित्रपरिच्छेको लघुः प्रच्छदो वस्त्रविशेषो यस्य स तथा। भग० ७ श०९ उ०। उव०।

चित्तफलग-न० *[चित्रफलक]*
चित्रयुक्ते फलके, चित्रफलकं हस्ते गतं यस्य। भग० १५ श० १ उ०।

चित्तबहुल-पु० *[चेत्रबहुल]*
चैत्रमासस्यान्धकारपक्षे, जंबू० २ वक्ष०।

चित्तभित्ति-स्त्री० *[चित्रमिति]* चित्रगतायां स्त्रियाम्, दश०८ अ०।

चित्तमंत-त्रि० *[चित्रवत्]*
चित्तं जीवलक्षणं तदस्यास्तीति चितवत्। सजीवे, दश०४ अ०। सचेतने, दश०४ अ०। आव०। आचा०।

चित्तमाणंदिय-त्रि० *[चित्तानन्दित]*
चित्तेनानन्दितः। नाया०१ श्रु०१ अ०।
चित्तमानन्दितं स्फीतीभूतं यस्य स चित्तानन्दितः। भार्यादिदर्श-नात्पाक्षिको निष्ठानतस्य परनिपातः। चेतसा प्रहृष्टे,। जीवा० ३

चित्तय-पु० *[चित्रक]*
(चीता) द्वीपिभेदे, आव०म० ।
रोमार्थं चित्रका बध्यन्ते। आचा० ।

चित्तरस-पु० *[चित्ररस]*
चित्रां विचित्रा रसा मधुरादयो मनोहारिणो येभ्यः सकाशात्-संपद्यन्ते ते चित्ररसाः। ठा०७ ठा० ।
भोजनाङ्गेषु, ठा०१० ठा० ।
विशिष्टदलिककलमशालिसालनकपक्कान्नप्रभुतिभ्योऽपि चापरिमितस्वादुतादिगुणोपेतेन्द्रियबलपुष्टिहेतुस्वादुभाजनपदार्थपरिपूर्णः फलमध्यौर्विराजमनेषु (तं०)
भोजनदायिषु, सम०१० सम० ।
अनेकबहुविश्रसा परिणतभोजनविधिनापपेतेषु, जीवा०३ प्रति०
युगलिकमनुष्योपभोग्यकल्पवृक्षेषु, आव०म० ।

चित्तराग-अव्य० *[चित्रराग]* विविधरागरञ्जिते, पण्हा०४ अ० ।

चित्तल-पु० *[चित्रल]*
शबले, आव०४ अ० । वव० ।
आरण्ये जीव विशेषे, जीवा०१ प्रति० ।

चित्तलंग– पु० *[चित्रलांगा]*
कर्बुरावयवाः। *भग०* ।

चित्तलय-१ त्रि० *[चित्रलक]*
विचित्रे पञ्चवर्ण रचनोपेते रजोहरणे, गच्छा० ३ अधि० ।

चित्तलय-२ त्रि० *[चित्रलक]*
हरिणाकृतौ द्विखुरविशेषे, पण्हा०१ अ० ।

चित्तलि-पु० *[चित्रलिन्]*
मुकुलिसर्पभेदे, पन्न०१ पद।

चित्तवल्लि-स्त्री० *[चित्रवल्लि]*
गन्धप्रधाने वल्लीभेदे, कल्प०७ क्षण० ।

चित्तविचित्तजमगपव्वय-पु० *[चित्रविचित्रयमकपर्वत]*
देवकुरुषु शीतोदाया उभयपार्श्वतश्चित्रकूटश्च पर्वतः, तथा उत्तरकुरुषु शीताभिधाया नद्या उभयतो यमकाभिधानौ पर्वतौ स्तः। तेषु भग० १४ श० ८ उ० ।

चित्तविब्भम-पु० *[चित्तविभ्रम]*
चित्तभ्रमकारणे, तं० । आव०म० ।

चित्तवीणा-स्त्री० *[चित्रवीणा]*
आकारविशेषवत्यां वीणायाम्, रा० ।

चित्तसंभूइय-न० *[चित्रसंभूतीय]*
चित्रसम्भूतयोश्चाण्डालयोनिजातयोराख्यानकप्रतिबद्धे उत्तराध्ययनानां द्वादशेऽध्ययने, । उत्त० ।

चित्तसभा-स्त्री० *[चित्रसभा]*
चित्रकर्मवन्मण्डपे, पण्हा०१ अ० आव० । नाया० ।

चित्तसमाहिट्ठाण-न० *[चित्रसमाधिस्थान]*
मनसः समाधिपदेषु, । दशा० ।
येषु सत्सु चित्तस्य प्रशस्तपरिणतिर्जायते। दशा० ५। ठा० ।

चित्तसमाहिय-त्रि० *[चित्तसमाहित]*
चित्तेनातिप्रसन्ने, दश०१० अ०

चित्तसाहु-पु० *[चित्रसाधु]*
भवान्तरे चाण्डालपुत्रः चित्राख्यो भूत्वा सार्थवाहपुत्रीभूय प्रव्रजिते ब्रह्मदत्तचक्रिणो मित्रसाधौ, सूय० १ श्रु०३ अ०२ उ० ।

चित्तसेणग-पु० *[चित्रसेनक]*
ब्रह्मदत्तचक्रिराइयाः भद्रायाः पितरि, उत्त० १३ अ० ।

चित्ता-१ स्त्री० *[चित्रा]*
नक्षत्रभेदे, जंबू०९ वक्ष० । सूर० ।ज्यो० ।विशे० ।अणुओ० । ठा० ।
'दो चित्ताओ' ठा०२ ठा०३ उ० ।

चित्ता-२ स्त्री० *[चित्रा]*
विदिग् रुचकाद्रिवासिन्यां विद्युत्कुमारीमहत्तरिकायाम्, ठा० ।
आव०म० । आव०क० । जंबू० ।

चित्ता-३ स्त्री० *[चित्रा]*
शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराजस्य सोममहाराजस्याग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा०१ उ० । भग० ।

चित्ता-४ स्त्री० *[चित्रा]*
नानारूपा आश्चर्यवन्तो वा। *जंबू०* ।
चित्रवन्तः आश्चर्यवन्तो वा। *सम०* ।

चित्ताणुय-त्रि० *[चित्तानुग]*
आचार्यचित्तानुगामिनि, उत्त०२ अ० ।

चित्ति-स्त्री० *[चिति]*
भित्त्यादेश्चयने, मृतकदहनार्थं दारुविन्यासे च। पण्हा०११ अ०

चित्तिया-स्त्री० *[चित्रिका]*
व्याघ्रविशेषस्त्रियाम्, पन्न०११ पद० ।

चिप्पिडय-पु० *[चिप्पिटक]*
चपलसदृशे धान्यभेदे, दशा० ६ अ० । ठा० ।

चिप्पिण-पु० *[चिप्पिन]*
केदारवति तटवति वा देशे, केदारे च। भग०५ श०७ उ० ।

चिब्भडियामच्छ-पु० *[चिर्भटिकामत्स्य]*
मत्स्यभेदे, जीवा०१ प्रति० ।

चिमिढ-पु० *[चिपिट]*
निम्ने, 'चीणचिमिढणासाओ'। नाया०१ श्रु० ८ अ० ।

चिय-त्रि० *[चित]*
शरीरे, चयं गते, भग०१ श०१ उ० ।
उपचिते ठा०४ ठा०४ उ० ।
इष्टकादिरचिते प्रासादपीठादौ, अणुओ० ।

चियत्त-कृ० *[त्यक्त]*
अप्रीत्यकरणे, ठा०३ ठा०।
प्रीतिकरे, उव० रा०।
अभिमते, सूय०२ श्रु०३ अ०।

चियत्तंतेउरघरप्पवेस-पु० *[त्यक्तान्तःपुरगृहप्रवेश]*
'चियत्तंतेउरघरप्पवेसा चियत्तो त्ति' लोकानां प्रीतिकर एवान्तः पुरे वा गृहे वा प्रवेशो येषां ते तथा, अतिधार्मिकतया सर्वात्रानाशङ्कनीयास्त इत्यर्थः।
अन्ये त्वाहुः-(चियत्तो त्ति) नाप्रीतिकरोऽन्तःपुर-गृहयोः प्रवेशः शिष्टजनप्रवेशनं येषां ते तथा, अनीर्ष्यालुताप्रतिपादनपरं चेत्थं विशेषणमिति।
अथवा-(चियत्तो त्ति) त्यक्तः अन्तः पुरगृहयोः परकीययोः यथाकथञ्चित् प्रवेशो यैस्ते तथा। भग०२ श०५ उ०।
तथाविधे अतिधार्मिके, सर्वत्रानाशङ्कनीये श्रावके, दशा०१० अ०

चियत्तकिच्च-त्रि० *[त्यक्तकृत्य]*
त्यक्तानि कृत्यानि दशविधचक्रवालसामाचारीरूपाणि सर्वाणि येन सः। जीत०।
कृत्यं करणीयं, त्यक्तं कृत्यं येन सः। त्यक्तचारित्रे, निसि० १ उ०। पंच०चू०। ।

चियत्तदेह-त्रि० *[त्यक्तदेह]*
त्यक्तो वधबन्धाद्यवारणात्, अथवा चियत्तः सम्मतः प्रीति-विषयो, धर्मसाधनेषु प्रधानत्वाद्देहस्येति। भग०१० श०२ उ०।
परीषहसहनात् वा देहो यस्य। अभिग्रहविशेषयुक्ते, कल्प० ६ क्षण०। वव०।

चियलोहिय-त्रि० *[चित्तलोहित]*
चितमुपचयं प्राप्तं लोहितं शोणितमस्येति चितलोहितः। लोहितमिति शेषधातूपलक्षणम्। उद्रिक्तधातौ, उत्त०९ अ०।

चिया-स्त्री० *[चिता]*
शवदाहार्थं चितेन्धनाग्नौ, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ०।

चियाग-पु० *[त्याग]*
त्यजनं त्यागः। संविग्नैकसं भोगिकानां भक्ता-दिदाने, ठा०५ ठा०१ उ०।
श्रमणधर्मे, ठा०१ ठा०१ उ०।
त्यागो द्विधाद्रव्यत्यागो, भावत्यागश्च। द्रव्यत्यागो नामआहारो-पधिशय्यादीनामप्रायोग्याणां परित्यागः, प्रायोगयाणां यतिज-नेभ्यो दानम्। भावत्यागः क्रोधादीनां विवेको, ज्ञानादीनां यतिजनेभ्यो वितरणम्। आव०म०।

चियायमंत-त्रि० *[त्यागवत्]*
दानीशीले, स च स्तोकादपि स्तोकं ददानो गणस्य बहुमान-भाग्भवति इति स गच्छोपग्रहयोग्यः। वव०३ उ०।

चिर-न० *[चिर]*
दीर्घकाले, वव०१ उ०।
प्रभूतकाले, आतु०। सूय०। आव०।

चिरंजीविय-न० *[चिरंजीवित]*
दीर्घे आयुषि, ठा०१० ठा०।

चिरंतण-त्रि० *[चिरन्तम]*
पुराणे, आव०४ अ०।

चिरजुसिय-त्रि० *[चिरजुषित]*
चिरसेविते, जुषी-प्रीतिसेवनयोरिति वचनात्।भग०१४ श०७ उ०

चिरट्ठितिय-त्रि० *[चिरस्थितिक]*
चिरं प्रभूतकालं स्थितिरवस्थानं येषां ते तथा। सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।
प्रभूतकालस्थितिकेषु, सूय०१ श्रु०५ अ०३ उ०।
एकद्व्यादिसागरोपमस्थितिकेषु, ठा० ८ ठा०।
उत्कृष्टतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि, जघन्यतो दशवर्षसहस्राणि तिष्ठन्ति देवा नारकाश्च। सूय०१ श्रु०९ अ०। दशा०।
'एयाइ फासाइं फुसंति बालं, निरंतरं तत्थ चिरट्ठितीयं।' सूय० १ श्रु०५ अ० २ उ०।

चिरदिक्खिय-त्रि० *[चिरदीक्षित]*
प्रभूतकाले प्रव्रजिते, वव० ४ उ०।

चिरपरिचिय-त्रि० *[चिरपरिचित]*
पुनःपुनर्दर्शनतः परिचिते, भग० १४ श० ७ उ०।

चिरपोराण-त्रि० *[चिरपुराण]*
चिरप्रतिष्ठितत्वेन पुराणे, भग०३ श०७ उ०।

चिरपव्वइ-पु० *[चिरप्रव्रजित]*
चिरदीक्षिते, बुह०१ उ०।

चिरप्पवास-पु० *[चिरप्रवास]*
चिरवियोगे, पंच०चू०। ।

चिरसंथुत-त्रि० *[चिरसंस्तुत]*
चिरं बहुकालमतीतं यावत्संस्तुतः चिर स्नेहात्प्रशंसिते, भग० १४ श० ७ उ०।

चिरसंसिट्ठ-त्रि० *[चिरसंसृष्ट]*
चिरं बहुकालं यावत् चिरे वाऽतीते प्रभूते काले संश्लिष्टः। चिरस्नेहात्संबद्धे, भग० १४ श०७ अ०।

चिराइय-त्रि० *[चिरादिक]*
चिरश्चिरकाल आदिनिवेशो यस्य तच्चिरादिकम्। निर० ५ वर्ग०। उव०। नाया०।
चिरकालिके, विपा० १ श्रु०१ अ०।

चिराणुगय-त्रि० *[चिरानुगत]*
ममानुगतिकारित्वात् चिरमनुगते, भग० १४ श०७ उ०।

चिराणुवुत्ति-त्रि० *[चिरानुवृत्ति]*
चिरमनुवृत्तिरनुकूलवर्तिता यस्यासौ चिरानुवृत्तिः। प्रभूतकालमनुकूलतया संजाते, 'चिरपरिचितो सि मे गोयमा ! चिरजुसिओ सि मे गोयमा !, चिराणुगओ सि मे गोयमा ! चिराणुवत्ती सि मे गोयमा !' भग० १४ श०७ उ०

चिरादण-त्रि० *[चिरंतन]*
प्राचीने आचार्यपरम्परागते, बुह०३ उ०।

चिरोववण्णग-त्रि० *[चिरोपपन्नक]*
चिरजाते, आव०५ अ०।

चिलाइया-स्त्री० *[किरातिका]*
किराताख्यानार्यदेशोत्पन्नायांदास्याम्, निर० १वर्ग० ।रा०। आव० चू०। दशा०। भग०।

चिलाई-स्त्री० *[किराती]*
किराताख्यानार्यदेशोत्पन्नायां चेट्याम्, नाया० १ श्रु०१ अ०।

चिलाईपुत्त-पु० *[किरातीपुत्र]*
घनश्रेष्ठिदास्याः किरात्याः पुत्रे। नाया० १ श्रु०

चिलाय-पु० *[किरात]*
सिन्धुमहानदस्य पश्चिमायामविदूरे बलूचिस्तान इति ख्याते म्लेच्छदेशभेदे, तज्जे मनुष्वजातौ च। ये हि भरतेन महाराजेन आपाना नाम किराताः पराजिताः। पन्न०१ पद। जंबू०। ठा०।
कोटीवर्षस्याधिपतौ राजनि, आव० ४ अ० आव०। आव०चू०।

चिलायपुत्त-पु० *[किरातपुत्र]*
किरातीपुत्रे, वव०१ उ०।
कीटिकाभक्षितो मुनिः। *संथा०* ।

चिलिमिली-स्त्री० *[चिलिमिलि]*
जवनिकायाम् वव० ८ उ०। आचा०
प्रच्छादनपट्याम्, सूय०२ श्रु०२ अ०।

चिलीण-त्रि० *[चिलीन]*
मनसः कलिमलपरिणामहेतौ, जीवा०३ प्रति०।

चिल्ल-पु० *[चिल्ल]*
वृक्षविशेषे, पन्न० १६ पद०।

चिल्लग-त्रि० *[चिल्लक]*
देदीप्यमाने, पण्हा०४ अ०। चंद० । नाया०।
श्वापदभेदे, पन्न० ११ पद०।
शिष्ये, 'एगस्स आयरियस्स चिल्लओ अविणीओ' आव० म० ।

चिल्लम-पु० *[चित्रक]*
व्याघ्रे, आचा०२ श्रु०३ अ०३ उ०।

चिल्लणा-स्त्री० *[चिल्लणा]*
वैशालिकपुराधिपतेश्चेटकराजस्य कन्या यां श्रेणिकमहाराजस्य भार्यायाम्, आव०। अंत। आव० म०। निर० । नाया०।

चिल्लल-अव्य० *[चिल्लव]*
चिक्खल्लमिश्रोदके जलाशयविशेषे, भग०५ श०७ उ०। पन्न०। नाया०।
आरण्यके पशुविशेषे, जीवा० ३ प्रति०।
खरविशेषे, पण्हा०१ अ०। नाया०। जंबू०।

चिल्ललिया-स्त्री० *[चिल्ललिका]*
चिल्ललाख्यपशुजातीयस्त्रियाम्, पन्न०११ पद०।

चिल्लिय- *[देशी]*
देदीप्यमाने, जीवा०३ प्रति०। कल्प०। भग०। जंबू०
लीने, दीप्ते च। उव०।

चिहुर-पु० *[चिकुर]*
रागद्रव्यविशेषे, जीवा०३ प्रति०।

चिहुरंगराय-पु० *[चिकुराङ्गराग]*
चिकुरसंयोगनिमित्ते वस्त्रादौ रागे, जीवा०३ प्रति०।

चीण-पु० *[चीन]*
श्रीऋषभजिनस्य द्वादशे सुते, तद्राज्ये च। कल्प ०७ क्षण०।
म्लेच्छदेशविशेषे, सूय०। पण्हा०। बुह०। पन्न०।
ह्रस्वे। चीना ह्रस्वा चिपिटा निम्ना बंका वक्रा भग्नेव भग्ना, अयोधनकुट्टितेवेत्यर्थः, नासिका यस्य स तथा। नाया०१ श्रु०८ अ०।

चीणंसुय-न० *[चीनांशुक]*
स्वनामख्यातः कोशिकारः तज्जे, चीन-विषये निष्पन्ने वस्त्रभेदे च। चीनांशुको नाम कोशिकाकोऽप्यस्ति, तस्माज्जातं चीनांशुकम्। यद्वा-चीनो नाम जनपदस्तत्र यः श्लक्ष्णतरः पट्टस्तस्मात् जातं चीनांशुकम्। बुह०१ उ०। कल्प ठा०। आव०म०।
चीनांशुकानिनानादेशेषु प्रसिद्धानि दुकूलविशेषरूपाणि, पूर्वोक्तस्यैव वल्कस्य यान्यन्तरहीरैर्निष्पाद्यन्ते सूक्ष्मतराणि च भवन्ति तानि चीनांशुकानि। जंबू०२ वक्ष०। निसि०।
चीनदेशे आमिषपुञ्जाः क्रियन्ते, तदर्थिनः कीटीरागत्य लालां मुञ्चन्ति, तत्सूत्रं भवति, तन्निष्पन्नं वस्त्रं चीनांशुकमित्युच्यते इति वृद्धाः। अणुओ०।

चीणपिट्ठ-पु० *[चीनपिष्ट]*
लोहितवर्णे वस्तुविशेषे (रा०)
लोकप्रसिद्धे, पन्न०१७ पद।

चीरकंडूसगपट्ट-पु० *[चीरकण्डूसकपट्ट]*
रजोहरणबन्धभेदे, जाहे रयहरणं तिभागपएसे खोमिएण ओणिएण वा चीरेणं वेढयं भवति, ताहे उन्निदोरेण तिपासियं करेति, तं चीरकंडूसगपट्टओ भण्णति' निसि०५ उ०।

चीरग-पु० *[चीरक]*
रथ्यापतितचीवरपरिधाने लिङ्गिनि, गच्छा०२ अधि०।
रथ्यापतितचीवरपरिधानः चीरोपकरण इति। *नाया०*।

चीरल्ल-पु० *[चीरल्ल]*
पक्षिविशेषे, पण्हा०१ अ०।
चीरिय-पु० *[चीरिक]*
रथ्यापतितचीवरपरिधाने, चीरोपकरणे वा पाखण्डिसाधौ, नाया०१ श्रु०१४ अ०। अणुओ०।
चीवर-न० *[चीवर]*
वस्त्रे, ठा०५ ठा०२ उ०। उत्त०।
चीवरधारि-त्रि० *[चीवरधारिन्]*
वस्त्रधारिणि, कल्प०८ क्षण०।
चुअ-१ त्रि० *[च्युत]*
विनष्टे, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ०।
उच्छासनिश्वासजीवितादिदशविधप्राणेभ्यः परिभ्रष्टे, अणुओ०।
चुअ-२ त्रि० *[च्युत]*
देवलोकादवतीर्णे, कल्प०१ क्षण०।
चुइ-स्त्री० *[च्युति]*
च्यवने, वैमानिकज्योतिष्काणां मरणे, ठा० १ ठा०१ उ०।
चुइसमय-पु० *[च्युतिसमय]*
इहभवपरभवशरीरायुः पुद्गलपूर्वपरिशाटसमये, आव० म० ।
चुंचुण-पु० *[चुञ्चुन]*
इभ्यजातिभेदे, ठा०६ ठा०। पन्न०।
चुंचुय-पु० *[चुञ्चुक]*
म्लेच्छजातिभेदे, पण्हा०१ अ०।
चुंबण-न० *[चुम्बन]*
चुम्बनविकल्पः सम्प्राप्तकामभेदः। दश०६ अ०।
चुक्क-धा० *[भ्रंश]*
अधःपतने, 'चुक्कइ' भ्रश्यति। आव०।
विस्मृते, बुह०४ उ०।
चुक्कखलित्त-न० *[भ्रष्टस्खलित]*
अनाभोगे, 'अणाभोगो चुक्कखलितो भण्णति' निसि० २० उ०।
चुक्खभुत्त-त्रि० *[चोक्षभुक्त]*
शुचिसमाचारे, बुह०१ उ०।
चुच्चुय-न० *[चूचुक]*
स्तनाग्रभागे, रा०। पण्हा०।
चुडल-न० *[चुटल]*
जीर्णतायाम्, पिंड०।
चुडली-स्त्री० *[चुटली]*
प्रदीप्ततृणपूलिकायाम्, भग०१ श०५ उ०। तं०।
वन्दनदोषभेदे, चुटली नाम- उल्का, उल्कामिवालातमिव पर्यन्ते रजोहरणं गृहीत्वा भ्रामवन् यत्र वन्दते तच्चुटलिकम्। द्वात्रिंशत्तमे वन्दनदोषे, आव०चू०। बुह०। आव०

चुण्ण-१ पु० *[चूर्ण]*
यवादीनाम्, बदरादिकानाम्, मोदकादिखाद्यकचूरौ,। बुह० १ उ०। आचा०। पन्न०।
गन्धद्रव्यसम्बन्धिनि रजसि, भग०३ श०७ उ०।
चुण्ण-२ पु० *[चूर्ण]*
वशीकरणादिफले द्रव्यसंयोगे, बुह० १ उ०।
चुण्ण-३ न० *[चौर्ण]*
पदभेदे, (दश०)
चुण्ण-४ न० *[चौर्ण]*
अत्थबहुलं महत्थं हेउनिवाओवसग्गभीरं। बहुपायमवोच्छिन्नं गमणयसुद्धं च चुण्णपयं। दश०।
चुण्णकोसग-न० *[चूर्णकोशक]*
चूर्णभृते कोशकाकृतौ भक्ष्यभेदे, पण्हा० ५ संव०द्वार।
चुण्णपेसि-त्रि० *[चूर्णपेषिन्]*
ताम्बूलचूर्ण-गन्धद्रव्यचूर्णस्य वा पेषणकारके,। भग० ११ श० ११ उ०।
चुण्णगुंडियगाय-त्रि० *[चूर्णगुण्ठितगात्र]*
गैरिकक्षोदाबगुण्ठितशरीरे विपा० १ श्रु०२ अ०।
चुण्णजुत्ति-स्त्री० *[चूर्णयुक्ति]*
कोष्ठादिसुरभिद्रव्येषु चूर्णीकृतेषु तदुचितद्रव्यमेलने,जंबू०२ वक्ष० एषाहि स्त्रीकलाभेदः। कल्प० ७ क्षण०। नाया०। उव०।
चुण्णजोग-१ पु० *[चूर्णयोग]*
स्तम्भनादिकर्मकारिणि द्रव्यचूर्णानां योगे, नाया०१ श्रु०१४ अ०।
चुण्णजोग-२ पु० *[चूर्णयोग]*
अदर्शीकरणाद्यञ्जने मोहवचूर्णयोगेनाहारग्रहणरूपे चतुर्दशे उत्पादनदोषे, उत्त० २४ अ०।
चुण्णपिंड-पु० *[चूर्णपिण्ड]*
चूर्णमञ्जनादि, तत्प्रयोगेण लब्धः पिण्डः। जीवा०१ प्रति०।
वशीकरणद्यर्थं द्रव्यचूर्णादवाप्ते पिण्डे, आचा०२ श्रु०१ अ०९ उ०
चुण्णपडोला-स्त्री० *[चूर्णपटोला]*
शस्यभेदे, पन्न०१ पद।
चुण्णभेय-पु० *[चूर्णभेद]*
चूर्णभेदे, ठा०१० ठा०।
चुण्णय-न० *[चूर्णक]*
सन्त्रस्ते, विपा० १ श्रु०२ अ०।
चुण्णवास-पु० *[चूर्णवास]*
चूर्णलक्षणे वासे, नाया०१ श्रु०९ अ०।
'अमयवासं च चुण्णवासं च' आचा०२ श्रु०३ चू०।
चुण्णिय-कृ० *[चूर्णयित्वा]*
चूर्णनं कृत्वेत्यर्थे, भग०१ श०८ उ०।

चुण्णियाभेद-पु० *[चूर्णिकाभेद]*
तिलादिचूर्णवद् द्रव्यभेदे, भग०५ श०४ उ०।
'से किं तं चुण्णियाभेदे ? चुण्णियाभेदे जण्णं तिलचुन्नाण वा मुखचुन्नाण वा मासचुन्नाण वा पिप्पलीचुन्नाण वा मरियचुन्नाण वा सिंगबेरचुन्नाण वा चुन्नियाए भेदे भवति से त्तं चुण्णियाभेदे'। पन्न० ११ पद०।

चुय-त्रि० *[च्युत]*
कुतोऽप्यनाचारात्स्वपदात्पतिते, नाया०१ श्रु०३ अ०
परिभ्रष्टे, आव०म०।
जन्मान्तरं गते, सूय०१ श्रु०१० अ०। सम०।
कालान्तरेण च्युते, अ०।
जीवनादिक्रियाभ्यो भ्रष्टः। *पण्हा०* ।

चुयधम्म-त्रि० *[च्युतधर्मन्]*
धर्मात्प्रभ्रष्टे, वव०१० उ०।

चुयसामि-त्रि० *[च्युतस्वामिन्]*
उत्सन्नस्वामिके, वव०२ उ०।

चुलणी-१ स्त्री० *[चुलनी]*
काम्पिल्यपुरे ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिनो मातरि, उत्त०१३ अ०।

चुलणी-२ स्त्री० *[चुलनी]*
द्रुपदमहाराजस्य स्त्रियाम्, । नाया०१ श्रु०१६ अ० । तं०। आव०। सम०।

चुलणीपिया-पु० *[चुलनीपितृ]*
वाराणसीवास्तव्ये स्वनामख्याते गृहपतौ, चुलनीपितृनामा गृहपतिर्वाराणसीनिवासौ तथैव प्रतिबद्धः प्रतिपन्नप्रतिमो विमर्शक देवेन मातरं त्रिखण्डां क्रियमाणां दृष्ट्वा क्षुभितश्चलितप्रतिज्ञो देवनिग्रहार्थमुहधाव, पुनः कृतालोचनस्तथैव दिवं गत इति वक्तव्यताप्रतिथद्धे तृतीये उपासकदशानामध्ययने, ठा०१० ठा०

चुलसीइ-स्त्री० *[चतुरशीति]*
चतुरधिकायामशीतौ, जंबू०२ पक्ष०। सम०। पन्न०। पण्हा०।

चुलसीइसमज्जिय-त्रि० *[चतुरशीतिसमर्जित]*
एकत्र समये समुस्पद्यमानानां येषां राशिः चतुरशीतिसमर्जितः स्यात् तेषु नैरयिकादिषु, भग०२० श०१० उ०। उवा०।

चुलसीय-त्रि० *[चतुरशीत]*
चतुरशीत्यधिके, 'चुलसीयं मंमलसतं चरति' सूर० १ पाहु०। ।

चुलुक्क-पु० *[चुलुक्य]*
क्षत्रियकुलविशेषे, यस्मिन् सिद्धराजादय आसन्, कुमारपालराज आसीत्। 'अहो चौलुक्यपुत्रीणां, साहसं जगतोऽधिकम्। पत्युर्मृत्यौ विशन्त्यग्निं, याः प्रेमरहिता अपि'। ठा०४ ठा०२ उ०।

चुल्ल-त्रि० *[क्षुद्र]*
महदपेक्षया लघौ, ठा०२ ठा०४ उ०।

चुल्लकप्पसुय-न० *[क्षुद्रकल्पश्रुत]*
अल्पग्रन्थे, अल्पार्थे च सविरादिकल्पप्रतिपादके उत्कालिकश्रुते, नं०।

चुल्लग- *[देशी]*
भोजने, मनुष्यत्वलाभे चुल्लग (भोजन) दृष्टान्तः आव०।

चुल्लपिउ-पु० *[क्षुद्रपितृ]*
लघुपितरि, विपा० १ श्रु०३ अ०।
'अज्जए पज्जए वा वि, वप्पो चुल्लपिउ त्ति य'। दश०७ अ०।

चुल्लमाउया-स्त्री० *[क्षुद्रमातृका]*
लघुमातरि, निर० १ वर्ग०।
'कूणियस्स रण्णो चुल्लमाउया' अंत८ वर्ग०। नाया०।

चुल्लसयय-पु० *[क्षुद्रशतक]*
महाशतकापेक्षया लघुःशतकश्चुल्लशतकः। स्वनामख्याते गृहपतौ, स चाऽलम्भिकाभिधाननगरनिवासिदेवेनोपसर्गकारिणा द्रव्यमुपह्रियमाणमुपलभ्य चलितप्रतिज्ञः पुनर्निरतिचारः सन् दिवमगमदिति यथा तथा यत्राभिधीयते तस्मिन् उपासकदशानां चतुर्थेऽध्ययने, ठा० १० ठा०
उपासकदशानां पञ्चममध्ययम्। *उपा०* ।

चुल्लहिमवंत-अव्य० *[क्षुद्रहिमवत्]*
महदपेक्षया लघुर्हिमवान् चुल्लहिमवान्। ठा०२ ठा०३ उ०।
वर्षधरपर्वतभेदे, ठा०७ ठा०। सम०।

चुल्लहिमवंतकूड-न० *[क्षुद्रहिमवत्कूट]*
क्षुद्रहिमवतो भरतकूटस्य पूर्वे सिद्धायतनकूटस्य पश्चिमे कूटभेदे, तदधिपे देवे च। जंबू० ४ वक्ष०। ठा०।

चुल्लहिमवंतगिरीकुमार-पु० *[क्षुद्रहिमवद्गिरीकुमार]* क्षुद्रहिमवद्-वर्षधरपर्वतकूटदेवे, तस्य क्षुद्रहिमवती नाम राजधानी। जंबू०४ वक्ष०।
भरतविजयाधिकारे, 'तओ चुल्लिहिमवंतगिरिकुमारं देवं उयवेइ, तत्थ वावत्तरिजायणाइं सरो उवरिं हुत्तो वच्चति।' आव०म०। आव०चू०।

चुल्लि-स्त्री० *[चुल्लि]*
पाकार्थमग्निस्थापनस्थाने, (चूला) आचा०।

चुल्ली-स्त्री० *[चुल्ली]*
'चुल्लि' शब्दार्थे, आचा०२ श्रु०२ चू०।

चूचूसाय-पु० *[चूचूशाक]*
लोकप्रसिद्धे शाकभेदे, उवा०१ अ०।

चूय-१ पु० *[चूत]*
आम्रे, विशे०। ठा०।
सहकारे, उव०। जंबू०। निसि०। आचा०।
चूत एव चूतकः, तस्यामन्त्रणं हे चूतक ! आव०४ अ०।

चूय-२ पु० *[चूत]*
विजयराजधान्यां चूतवनखण्डस्वामिनि देवे, जीवा०३ प्रति०।

चूयमंजर-स्त्री० *[चूतमञ्जरी]*
आम्रमञ्जर्याम्, जंबू०३ वक्ष०।

चूयवडिंसग-न० *[चूतावतंसक]*
विमानमध्यगानां पञ्चानामवतंसकानामन्यतमे, रा०।

चूयवडिंसगा-स्त्री० *[चूतावतंसिका]*
स्वनामख्यातायां शक्राग्रमहिष्याम्, जीवा०३ प्रति०।

चूयवण-न० *[चूतवन]*
चूतप्रधाने वने, रा०।

चूया-स्त्री० *[चूता]*
स्वनामख्यातायां शक्राग्रमहिष्याम्, ठा०ठा० २ उ०।

चूला-स्त्री० *[चूमा]*
शिखरे, नं०।

चूलाकम्म-न० *[चूडाकर्मन्]*
बालानां चूलके मुण्डने, आव०म०

चूलामणि-स्त्री० *[चूडामणि]*
सकलपार्थिवरत्नसर्वसारे देवेन्द्रमूर्धकृतनिवासेनिःशेषापमङ्गलाऽ-शान्तिरोगप्रमुखदोषापहारकारिणी प्रवरलक्षणोपेते परममङ्गल-भूते आभरणविशेषे, रा०। जंबू०। आव०म०। उत्त०। उव०। चूडामणिर्नाम मुकुटरत्नं चिन्हभूतं येषां ते तथा, असुरकुमार-भवनवासिनश्चूडामणिमुकुटरत्नाः। पन्न०२ पद०।

चूलियंग-न० *[चूलिकाङ्ग]*
चतुरशीत्या लक्षैर्गुणिते प्रयुते, अणुओ०। जीवा०। ठा०।

चूलिया-१ स्त्री० *[चूलिका]*
चतुरशीत्या लक्षैर्गुणिते चूलिकाङ्गे, जीवा०३ प्रति०। भग०। अणुओ०। जंबू०। ठा०।

चूलिया-२स्त्री० *[चूलिका]*
उक्तानुक्तार्थसंग्रहात्मिकायां ग्रन्थपद्धतौ, नं०।
यथा दृष्टीवादे परिकर्मसूत्रपूर्वगतानुयोगोक्तार्थानुक्तासंग्रहपरा ग्रन्थपद्धतयः। सम०।

चेइय-१ न० *[चैत्य]*
चितिः पत्रपुष्पफलादीनामुपचयः। चित्या साधु चित्यं, चित्यमेव चैत्यम्। उद्याने, 'मिहिलाए चेइए वच्छे, सीअच्छाए मनोरमे।' उत्त०३ अ०।

चेइय-२ न० *[चैत्य]*
प्रशस्तमनस्त्वे, तद्धेतुत्वात् जिनबिम्बे, कारणे कार्योपचारात्। आव० १ अ०। विशे० ।
अर्हत् प्रतिमा, देवबिम्बे, । आव०चू०। नाया० । बुह० ।
इष्ट देवता प्रतिमा, । आव०। उव०।

चेइय-२ न० *[चैत्य]*
चित्तमन्तःकरणं, आव० १ अ०।

चेइयकड-न० *[चैत्यकृत]*
वृक्षस्याधो व्यन्तरादिस्थानके, आचा०२ श्रु०३ अ०३ उ०।

चेइयखंभ-पु० *[चैत्यस्तम्भ]*
जिनसक्थ्यायतनरूपे स्तम्भे, यथा सुधर्मायां सभायां माणवको नाम चैत्यस्तम्भः तत्र वज्रमयेषु सिक्ककेषु वज्रमयेषु समुद्गकेषु बहूनि जिनसक्थीनि निक्षिप्तानि तिष्ठन्ति। सूर० १८ पाहु०। । रा०। जीवा०।

चेइयजत्ता-स्त्री० *[चैत्ययात्रा]*
श्रृङ्गारितप्रवररथे जिनप्रतिमां संस्थाप्य समहं स्नात्रपूजादिपुरस्सरं समस्तनगरे पूजाप्रवर्तनादिरू-पायां रथयात्रायाम्, । ठा०।

चेइयट्ठ-पु० *[चैत्यार्थ]*
जिनप्रतिमानां प्रयोजने, पण्हा० ८ अ०।

चेइयथूम-पु० *[चैत्यस्तूप]*
सिद्धायतनस्य प्रत्यासन्ने स्तूपे, चित्ताह्लादके च। ठा०४ ठा०२ उ०

चेइयभत्ति-स्त्री० *[चैत्यभक्ति]*
चैत्यादिभक्तौ, आव०३ अ०।

चेइयमह-पु० *[चैत्यमह]*
चैत्यमहोत्सवे, आचा० २ श्रु०१ अ०२उ

चेइयरुक्ख-पु० *[चैत्यवृक्ष]*
बद्धपीठवृक्षेषु येषामधस्तात्तीर्थकृतां केवलान्युत्पन्नानि। सम०।

चेइयसण्णिवेस-पु० *[चैत्यसन्निवेश]*
स्वनामख्याते सन्निवेशे, यत्राष्टमे भवे वीरजिनः षष्टिलक्षपूर्वायुः अग्निद्योतो नाम विप्रस्त्रिदण्डी भूत्वा मृतो नवमे सुरो जातः। कल्प०२ क्षण०।

चेइयहर-न० *[चैत्यगृह]*
देवसदने, जिनमन्दिरे, जीवा०१ प्रति०।

चेट्ठण-न० *[स्थान]* अवस्थाने, वव० ४ उ०।

चेड-पु० *[चेट]*
पादमूलिके, उव०। भग०।
दासे, कल्प० ३ क्षण०।
कुमारके, नाया०१ श्रु०२ अ०।

चेडग-पु० *[चेटक]*
हैहयकुलजाते स्वनामख्याते वैशालिकापुराधिपतौ आव०। आव०चू०। विशे०। कल्प०।
'समणे भगवं महावीरे भगवओ माया चेडगस्स भगिणी भोई।' आचू०१ अ०।
चेटकेन हल्लविल्लौ रक्षितौ, कूणिकेन सह रथमुशलमहा-कण्टकशिलासंग्रामनामानौ संग्रामौ कृतौ। भग०७ श०९ उ०।

चेडरूव-त्रि० *[चेटरूप]*
कुमारकल्पे, बुह०१ उ० ।

चेडिय-न० *[चेष्टितृ]*
चेष्टायाम्, उव० ।
सकाममङ्गप्रत्यङ्गोपाङ्गदर्शनादौ, जीवा०३ प्रति० ।

चेडियाचक्कवाल-न० *[चेटिकाचक्रवाल]*
दासीसमूहे, चेटीचक्रवालेनाऽर्थात् स्वदेशसम्भवेन वर्षधराणां वर्द्धितकरणेन नपुंसकीकृतानामन्तः पुरमहल्लकानाम्। भग०९ श०३३ उ० । दशा० ।

चेडी-स्त्री० *[चेटी]*
दास्याम्, आव०म० ।

चेत्त-स्त्री० *[चैत्र]*
चैत्रीपूर्णिमाघटिते मासे, चित्रानक्षत्रान्विता पूर्णिमा चैत्री। चित्रान्वितायां पूर्णिमायाममायां च। जंबू०७ वक्ष० । चंद० ।

चेत्तगण-पु० *[चैत्रगण]*
चैत्रगच्छे, बुह०६ उ० ।

चेय-न० *[चेतस्]*
अन्तःकरणे, दश०५ अ०१ उ० ।
मनसि, ठा० ९ ठा०२ उ० ।

चेयकड-न० *[चेतःकृत]*
जीवस्वरूपभूतया चेतनया बद्धे, जीवानां किं चेतःकृतानि कर्माणि, अचेतःकृतानि कर्माणि वा ? भग० ।

चेयण-न० *[चेतन]*
सचित्ते, वव०१ उ० । सूय० ।
जीवे, ठा०४ ठा०४ उ० । विशे० ।

चेयणा-स्त्री० *[चेतना]*
संज्ञाने, उपयोगे, अवधाने, आव०६ अ० ।
करणे च। अत एव 'सेज्जं ठाणं वा जहिं चेइए' यत्र चेतयते, 'चिती' संज्ञाने, अनुभवरूपतया विजानाति, वेदयते इत्यर्थः। अथवा–चेतयते करोति इति, । आव० म० । आचा० ।

चेर-न० *[चर्य]*
चरणे, निसि०१ उ० ।

चेल-न० *[चैल]*
वस्त्रे, आव०१ अ० । निसि० । दश० । पण्हा० । आचा० । ठा० । बुह० । उत्त० । नाया० । उव० । सूय० ।
कल्पादौ, वव०७ उ० ।

चेलकण्ण-पु० *[चैलकर्ण]*
वस्त्रकर्णे, आचा०२ श्रु०१ अ०७ उ० ।

चेलकरण-पु० *[चैलकरण]*
चैलेकदेशे, दश०४ अ० ।

चेलगोल-न० *[चैलगोल]*
वस्त्रात्मके कन्दुके, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।

चेलट्ठ-न० *[चैलार्थ]*
वस्त्रार्थे, बुह०३ उ० ।

चेलपाय-न० *[चैलपात्र]*
वस्त्रनिर्मितपात्रे, आचा०२ श्रु०६ अ०१ उ० ।

चेलपेडा-स्त्री० *[चैलपेटा]*
वस्त्रमञ्जूषायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ० । निर० । तं० ।

चेलपोट्टलिया-स्त्री० *[चैलपोट्टलिका]*
चैलानि वस्त्राणि तेषां पोट्टलिका इव सुसंगृहीताः सुरक्षितः। तस्याम्, दशा० १० अ० ।

चेलुक्खेव-पु० *[चैलोत्क्षेप]*
तीर्थकृद्भक्तिकार्यदर्शनाद्देवकृते प्रमोदभरेण वस्त्राणामूर्द्धक्षेपे, रा० । आव० । कल्प० । ठा० ।

चेल्लअ-पु० *[चेलक]*
शिष्ये, 'चेल्लओ भणति मिच्छा मि दुक्कडं' दश० १ अ० ।

चेल्लणा-स्त्री० *[चेल्लणा]*
चेटकराजस्य दुहितरि, आव०चू० ४ अ० । दश० ।
श्रेणिकमहाराजस्य भार्यायाम्, आव०म० ।

चेल्लय-न० *[चेल्लक]*
आरण्ये जीवविशेषे, आचा०२ श्रु०१ अ०५ उ० ।

चेव-अव्य० *[चैव]*
च-एव-समासः। समुच्चयमात्रे, ठा० २ ठा० १ उ० ।

चोअअ-त्रि० *[चोदक]*
प्रेरक, अणुओ० ।

चोइज्जंत-त्रि० *[चोद्यमान]*
परेण पृच्छ्यमाने, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।
शिष्यमाणे, वव०७ उ० ।
नोद्यमाने, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

चोइय-त्रि० *[चोदित]*
प्रेरित, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० । उत्त० ।
विद्धे, दश०९ अ०२ उ० ।

चोक्ख-त्रि० *[चोक्ष]*
शुद्धे, नाया०१ श्रु०९ अ० ।
शूचीकृते, बुह० १ उ० पवित्रे, रा० ।
परमशुचीभूते, कल्प०९ क्षण० ।
अपनीताशुचिद्रव्ये, भग०९ श०३३ उ० ।
अशुचिद्रव्यापगमात् ।भग०११ श०९ उ० ।
विवक्षितमलापनयनात् । उव० ।
लेपशिक्थाद्यपनयनेन । भग०३ श० १ उ० । नाया० । विपा० ।

चोक्खवत्थ-न० *[चोक्षवस्त्र]*
रजकपार्श्वादतीवोज्वलीकारितवस्त्रे, बुह० १ उ० ।

चोक्खा-स्त्री० *[चोक्षा]*
स्वनामख्यातायां परिव्राजिकायाम्, याहि दानशौचधर्मानाख्यातवती तीर्थकृद्मल्लिपराजिता काम्पिल्यनगरे जितशत्रु राजानं तद्वृत्तं संदिष्टवती । नाया० ८ अ० ।
पिशाचभेदविशेषः । पन्न० ७० ।

चोक्खायार-त्रि० *[चोक्षाचार]*
निरवद्यव्यवहारे, उव० ।

चोज्जपसंगि-त्रि० *[चौर्यप्रसङ्गिन्]*
चौर्यप्रशक्ते, नाया०१ श्रु०१८ अ० ।

चोण्ण-त्रि० *[चौर्ण]*
कर्मणि, 'कम्मं ति वा खहं ति वा चोण्णं ति वा कलुसं ति वा वेज्जं ति वा वेरं ति वा ।' निसि०२० उ० ।
काष्ठहारादिके अधमकर्मणि, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

चोत्तीस-स्त्री० *[चतुस्त्रिंशत्]*
चतुरधिकायां त्रिंशत्संख्यायाम्,चोत्तीसं बुद्धवयणतिसेसा० रा०

चोदग-त्रि० *[चोदक]*
पृच्छके, निसि०१ उ० ।

चोद्दसपुव्वि-पु० *[चतुर्दशपूर्विन्]*
सम्पूर्णश्रुतधरे, उत्त०५ अ० । आव०म० । नं० । ठा० । निसि० ।

चोप्पाल-न० *[चतुष्पाट]*
मत्तवारणे, जंबू० २ वक्ष० । जीवा० । निसि०

चोय-स्त्री० *[त्वक्]*
हीरच्छल्लीरूपे वृक्षावयवे, । निसि०१६ उ० । नाया० । भग० । बुह० । पण्हा० । जंबू० ।
गन्धद्रव्यविशेषे, आव०म० । अणुओ० । जीवा० । रा० ।
'चोओ' उपलविशेषे, अणुओ० ।

चोयग-१ पु० *[चोदक]*
प्रश्नं चोदयतीति चोदकः । नं० ।
पीलितेक्षुच्छोटिके, आचा०२ श्रु०१ अ०१८ उ० ।
उपपन्नप्रश्नकारिणी, वव०१ उ० । सूय० ।
गन्धद्रव्यविशेषे, जीवा०३ प्रति० ।

चोयग-२ न० *[त्वक]*
छल्ल्याम्, आचा० २ श्रु०७ अ०२ उ० ।

चोयणा-स्त्री० *[चोदना]*
प्रोत्साहकरणे, वव० १ उ० । आव०म० ।
चक्रवालसामाचारीं हापयतो नोदनायाम्, बुह० १ उ० ।

चोयणिज्जाससार-पु० *[चोयनिर्यासस्सार]*
चोयनामगन्धरसप्रधाने आसवे, जीवा०१ प्रति० । जंबू० ।

चोयपुड-पु० *[चोयपुट]*
चोयनामगन्धद्रव्यपुटे, रा० ।
पत्रादिमये त्वग्भाजने, नाया०१ श्रु०१७ अ० ।

चोयाल-स्त्री० *[चतुश्चत्वारिंशत्]*
चतुराधिकायां चत्वारिंशति, पन्न० २ वाद० ।

चोयासव-पु० *[चोयासव]*
चोयसारनिष्पन्ने आसवे, जीवा०३ प्रति० ।

चोर-पु० *[चौर]*
स्तेने, । पण्हा० । सूय० ।
गवादिहारिणि, बुह०१ उ० ।
चौरशब्दोऽन्यत्र तस्करे रूढो दाक्षिणात्यानुमोदने, ठा० । अणुओ० ।

चोरग्गाह-पु० *[चौरग्राह]*
चौरग्राहके राजपुरुषे, पण्हा०१ अ०

चोरद-पु० *[चौरद]*
हरीतकवनस्पतिभेदे, पण्हा०१ अ० ।

चोरपउर-त्रि० *[चौरप्रचुर]*
दोषभेदे, यत्र बहवश्चौरा उद्गच्छन्ति । वव०३ उ० ।

चोरसंघ-पु० *[चौरसङ्घ]*
पदातिरूपचौरसमूहे, पण्हा०३ अ० ।

चोरण-पु० *[चौराक]*
स्वनामख्याते सन्निवेशे, यत्र प्रतिमास्थितभगवतस्तपःप्रभावाद् गोशालो मण्डपं ददाह । आव० म० ।

चोरिअ-न० *[चौर्य]*
स्तेय, ठा०३ ठा०४ उ० ।
अदत्तादाने, ठा०१ ठा०१ उ० ।

चोरिक्क-न० *[चौरिक्य]*
चोरणं चौरिका, सैव चोरिक्यम् । प्रथमे गौणादत्तादाने, पण्हा०३

चोरिय-न० *[चौरिक]*
परद्रव्यापहारके, । आव०म० ।
प्रणिधिपुरुषे, पण्हा०१ अ० ।

चोरिया-स्त्री० *[चोरिका]*
चोरणे, पण्हा०१ अ० ।

चोल-पु० *[चोड]*
देशभेदे, तद्राज्यसम्पादके ऋषभदेवपुत्रे, कल्प० ७ ।

चोलइ-न० *[चोलक]*
चूडोपनयने, बालकप्रथममुण्डने, पण्हा०२ अ० । आव०म० ।

चोलपट्ट-पु० *[चोलपट्ट]*
चोलस्स पुरुषचिह्नस्य पट्टः प्रावरणवस्त्रं चोलपट्टः । ओह०

चोलोवणग-न० *[चौलोपनक]*
चूडाधारणे, भग०११ श०११ उ०।

चोल्लग-पु० *[चोल्लक]*
परिपाटीभोजने, उत्त०३ अ०। आव०म०।
मानुषत्वदुर्लभत्वे चोल्लकदृष्टान्तः। तत्र चोल्लको ब्रह्मदत्त-चक्रवर्तिमित्रकल्याणभोजनम्। आव० म० ।

च-कारादि शब्द-परिभाषा: समाप्ता:

छ-कारादि शब्द-परिभाषा:

छ-१ पु० [छ]

'छ' इत्ययं वर्णो दोषाणामसंयमयोगलक्षणानामाच्छादने भवति। आव० म० ।

छ-२ अव्य० [षट्]

एकाधिकपञ्चसंख्यायाम्, बुह० ६ उ०।

'छण्हं मासाणं।' भग०१ श०८ उ०।

छइपुत्त-पु० [छायापुत्र]

छायासुते, सोऽप्रतिष्ठाने नरके उत्पन्नः। जीवा० ३ प्रति०।

छउम-१ न० [छद्मन्]

छादयतीति छद्म। छादयति ज्ञानादिकं गुणमात्मन इति छद्म। छादयत्यात्मस्वरूपं यत्तत् छद्म। ठा०२ ठा०१ उ०।

छाद्यते केवलज्ञानं केवलदर्शनं चात्मनोऽनेनेति छद्म। गच्छा०१ अधि०। ठा०।

पिधाने, तच्च ज्ञानादीनां गुणानामावारकत्वाज्ज्ञानावरणादि-लक्षणं घातिकर्मचतुष्टयम्। आव ०४ अ०। आव०म०।

ज्ञानावरणदर्शनारणमोहनीयान्तरायकर्मोदये सति तस्मिन् केव-लस्यानुत्पादात् तदापगमानन्तरं चोत्पादात्। कल्प०२ क्षण०।

छउम-२ न० [छद्मन्]

शठत्वे, आवरणे सम०१ सम०। भग०।

छउम-३ न० [छद्मन्]

उपधौ, छद्मनि, मायायाम्, दश०९ अ०।

छउमत्थ-१ पु० [छद्मस्थ]

छद्मनि तिष्ठति इति छद्मस्थः। आव०म०

छादयतीति छद्मज्ञानावरणादि तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थः। *ठा०* ।

छद्मनि ज्ञानदर्शनावरणमोहनीयान्तरायात्मके तिष्ठतीति छद्म-स्थः। आचा०१ श्रु०९ अ०४ उ०। ठा०। उत्त०।

छद्मनि स्थितः छद्मस्थः। निसि०२ उ०।

छउमत्थ-२ पु० [छद्मस्थ]

निरतिशयज्ञानयुक्ते, उव०। निसि०।

अकेवलिनि, आव०४ अ०।

छद्मस्थः-अवधिज्ञानरहितः। *भग०* ।

सकषाये, ठा०५ ठा०१ उ०।

अतीन्द्रियज्ञानाभाववति, जीवा० १ प्रति०। पन्न०।

छद्मस्थ-इह निरतिशय एव द्रष्टव्यः। *ठा०* ।

छउमत्थकालिय-पु० [छद्मस्थकालिक]

'छउमत्थकालियाए त्ति' । छद्मस्थकाले, ठा० १० ठा०।

छउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिय-पु० [छद्मस्थक्षीणकषाय-वीतरागदर्शनार्थ] वीतरागदर्शनार्थभेदे, पन्न०१ पद०।

छउमत्थमरण-न० [छद्मस्थमरण]

छद्मस्थानां सतां मरणे, 'मणपज्जवबोहिनाणी, सुतमण्णाणी मरंति जे समणा। छउमत्थमरणमेयं,' उत्त० । निर० १ अ०।

मनःपर्यायनिर्देशो विशुद्धिकृतप्राधान्यमङ्गीकृत्य चारित्रिण एव, तुदपजायत इति स्वामिकृतप्राधान्यापेक्षया वा, एवमवध्यादि-ष्वपि यथायोगं स्वधियैव हेतुरभिधेयः। उत्त०५ अ०।

मरणस्यैकादशो भेदः, अकेवलिमरणम्। *उत्त०*। *सम० ३३*।

छादयतीति छद्मज्ञानावरणादि तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थः, तस्य मरणं । *ठा०*।

छउमत्थवीयराय-पु० [छद्मस्थवीतराग]

छद्मनि आवरणद्वयरूपे अन्तराये च कर्मणि तिष्ठतीति छद्मस्थोऽनुत्पन्नकेवलज्ञानदर्शनः स चासौ वीतरागश्च, उपशान्त-मोहत्वात् क्षीणमोहत्वाद्वा विगतरागोदय इत्यर्थः। ठा०७ ठा०।

छउमत्थवीयरागेणं मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेएइ तं जहा–णाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं वेयणियं आउयं नामं गोयमंतराइयं।'एकादशद्वादशगुणस्थानवर्तिनि जीवे,उत्त०२ अ०

छउमत्थावक्कमण-न० [छद्मस्थापक्रमण]

छद्मस्थानां सतां गुरुकुलान्निर्गमने, भग०९ श०३३ उ०।

छउलुग-पु० [षडुलूक]

षडलूकगोत्रे पुरुषे, 'छउल्लुगो य गोत्तेणं तेण छउलुओ त्ति जीवो।' आव०चू०१ अ०।

वैशेषिकमतप्रवर्तके रोहगुप्ते, विशे०।

छंद-१ पु० [छन्द]

छन्दनं छन्दः। अभिप्राये। पण्हा०। दश०। आव० आव०चू०। नाया०। सूय०। आचा०। ठा०। उत्त०।

गुरोरभिप्राये, आव०म०।

परानुवृत्त्या भोगाभिप्राये, आचा०१ श्रु०२ अ०४ उ०।

स्वकीयाऽभिप्रायविशेषे, ठा० १० ठा०।

'छंदेणं अज्जो तुब्भं छंदेणं ति' स्वाभिप्रायेण यथेष्टमित्यर्थः। भग०१ श०८ उ०।

गुर्वादेशं विनैव प्रवर्तने, उत्त०४ अ०।

इच्छायाम् वव०१ उ०। दश०।

आयासे, निसि०१ उ०।

अनालोचितपूर्वापरविषयाऽभिलाषे, आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ०।

प्रार्थनाऽभिलाषे, इन्द्रियाणां स्वविषयाऽभिलाषे वा। सूय०१ श्रु०१० अ०।

छंद-२ अव्य० [छन्दस्]

वेदस्य चतुर्थेऽङ्गे, आव० ३ अ०। आव०चू०। अणुओ०।

पद्यवचनलक्षणे शास्त्रे, उव०। कल्प०।

सूत्रे, उत्त० ४ अ०।

छंद-३ अव्य० *[छन्दस्]*
द्वासप्ततिकलाभेदे, कल्प०७ क्षण० । आचा० ।

छंदणा-स्त्री० *[छन्दना]*
छदि सम्वरणे इत्यस्यानेकार्थत्वात् कुरु ममानुग्रहं, परिभुङ्क्ष्व ममेदमित्येव पूर्वानीतासनादिपरिभोगविषये साधूनामुत्साहनायाम्, अणुओ० ।
पूर्वागृहीतेनाशनादिना साधूनामभ्यर्थनायाम्, बुह०१ उ० ।
पूर्वगृहीतेनाशनादिना गुर्वाज्ञया यथार्हाणां निमन्त्रणं एषा ज्ञेया विशेषविषयेति छन्दना। *ठा०*।

छंदणिरोह-पु० *[छन्दोनिरोध]*
छन्दोऽवशस्तस्व निरोधः। स्वच्छन्दतानिरोधे, उत्त०४ अ० । गुर्वादेशं विनैव प्रवर्तनं छन्दस्तस्य निरोधो निवारणम्। गुर्वाज्ञया प्रवर्तने, उत्त०३ अ० ।

छंदरागाभिणिविट्ठ-त्रि० *[छन्दोरागाभिनिविष्ट]*
छन्दः स्वाभिप्रायः, रागो नाम स्नेहरागादिः, तत्राभिनिविष्टः। छन्दोरागप्रत्यर्पितदृशि, दशा०५ अ० ।

छंदा-स्त्री० *[छन्दा]*
छन्दात् स्वकीयादभिप्रायविशेषाद् गोविन्दवाचकस्येव सुन्दरीनन्दनस्येव वा परकीयाद्वा भ्रातृवशभवदत्तस्येव या सा छन्दा। प्रव्रज्याभेदे, ठा० २ ठा० २ उ० ।

छंदाणुवट्टय-पु० *[छन्दोऽनुवर्तक]*
छन्दोऽनुवर्तिनि, नाया०१ श्रु०३ अ० । सूय० ।

छंदाणुवत्तण-न० *[छन्दोऽनुवर्तन]*
अभिप्रायाराधने, देशकालदाने, कटकादौ विशिष्टनृपतेः प्रस्तावदाने, दशा० ९ अ०१ उ० । सम०

छंदाणुवत्तय-पु० *[छन्दोऽनुवर्तक]*
'छंदाणुवट्टय' शब्दार्थे, नाया०१ श्रु०३ अ० । सूय० ।

छंदाणुवत्ति-त्रि० *[छन्दोऽनुवर्तिन्]*
गुरोश्छन्दानुवर्तिनि, गुरोरभिप्रायानुयायिनि, गुरोरभिप्रायानुवर्तिनि , गच्छा० २ अधि० ।

छंदाणुवत्तिता-स्त्री० *[छन्दोऽनुवर्तिता]*
छन्दो गुरूणामभिप्रायः, तमनुवर्तते आराधयतीत्येवंशीलश्छन्दोऽनुवर्ती, तद्भावश्छन्दोऽनुवर्तिता। विनयभेदे, वव० ।

छंदिय-त्रि० *[छन्दित]*
अनुजाते, ओह० ।
निमन्त्रिते, निसि०२ उ० ।

छंदिय- कृ० *[छन्दित्वा]*
निमन्त्रयित्वेत्यर्थे, दश०१० अ० ।

छंदोणिबद्ध-अव्य० *[छन्दोनिबद्ध]*
पद्ये, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

छंदोवणीय-न० *[छन्दोपनीत]*
छन्दः स्वाभिप्रायः इच्छामात्रम्, अनालोचितपूर्वापरविषयाभिलाषो वा, तेन छन्दसोऽपनीतः, अभिप्रायानुवर्तिनि, आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ० ।

छक्क-त्रि० *[षट्क]*
षट्परिमाणमस्येति षट्कः ।षट्परिमिते, उत्त० १ अ० । आव० । निसि० । पिंड० ।

छक्कजीवणिगाय-पु० *[षट्कजीवनिकाय]*
दशवैकालिकस्य तृतीय-ऽध्ययन, दश० ।

छक्कट्ठय-न० *[षट्काष्ठक]*
गृहस्य बाह्यालन्दके षड्दारुके, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

छक्कम्म- न०पु० *[षट्कर्म]*
यजनादिषट्कर्मसु, ठा०५ ठा०३ उ० ।
यजनं, याजनम्, अध्ययनम्, अध्यापनं, दानं, प्रतिग्रहश्चेति। निसि० १३ उ० ।

छक्कम्मणिरय-त्रि० *[षट्कर्मनिरत]*
यजनादिषट्कर्मनिरते, ठा०५ ठा०३ उ० । निसि० ।

छक्कसमज्जिय-त्रि० *[षट्कसमर्जित]*
षट् प्रमाणमस्येति षट्कं वृन्दं तेन समर्जिताः पिण्डिताः षट्कसमर्जिताः। षट्कवृन्देनोत्पद्यमानेषु, ये एकत्र समये समुत्पद्यन्ते, तेषां राशिः षट्प्रमाणो यदि स्यात् तदा ते षट्कसमर्जिता उच्यन्ते। भग०२० श०१० उ० ।

छकाय-न० *[षट्काय]*
षण्णां कायानां समाहारः षट्कायम्। संथा० ।
षट्कायेषु ते यथा षट्कायाः, पृथ्वीजलानलवायुवनस्पतिभेदात् ।पृथ्वीकायजलकायानलकायवायुकायवनस्पतिकायत्रसकायलक्षणा इत्यर्थः। दश० । ठा० । सूय० ।

छकायपमद्दण-पु० *[षट्कायप्रमर्दन]*
पृथिव्याद्यारम्भके, पृथिव्याद्युपमर्दके, दश०१० अ० ।

छक्कायमुक्कजोग-त्रि० *[षट्कायमुक्तयोग]*
षट्कायेषु मुक्तो योगो यतनालक्षणो व्यापारो याभिस्ताः षट्कायमुक्तयोगाः। षट्कायारम्भनिरतेसु, गच्छा० ३ अधि० ।

छकायवग्गहत्था-स्त्री० *[षट्कायव्यग्रहस्ता]*
षट्काययुक्तहस्ततायाम्, पिंड० ।

छक्कायसमारंभ-पु० *[षट्कायसमारम्भ]*
षण्णां कायानां भूदकाग्निवायुवनस्पतित्रसरूपाणां समारम्भे परितापने, आव० ।

छक्कोडि– स्त्री० *[षट्कोटि]*
शुद्धं नाम यत् स्वभावतः षट्स्वपि दिक्षु शुद्धम्। *बृह०*।

छग-न० *[छग]*
पुरीषे, ओह०।

छगण-न० *[छगण]*
गोमय, निसि०।

छगणपीठय-न० *[छगणपीठक]*
गोमयपीठक, निसि०१२ उ०।

छगणियच्छार-न० *[छगणिकक्षार]*
गोमयक्षारे, ओह०।

छगणिया-स्त्री० *[छगणिका]*
गोमयप्रतर, अणुओ०।

छगल-पु० *[छगल]*
छागे, उव०। आव०म०। प्रव०। पन्न०। पण्हा०।

छगलय-पु० *[छगलक]*
पशुविशेषे, अणुओ०।

छगलगगलबालग-पु० *[छगलकगलबालक]*
शास्त्राध्ययनविकलेषु यद्वाछगलकस्य गलं ग्रीवां वलयन्ति मोटयन्ति। छगलकग्रीवामोटकेषु मुण्डितेषु सत्स कुटुम्बिषु सौद्धोदनीयेषु, पिंड०।

छगलपुर-न० *[छगलपुर]*
नगरभेदे, यत्र शकटो जन्मान्तरे छागलिको जातः। ठा० १० ठा०। विपा० ।

छगुणकालग-पु० *[षड्गुणकालक]*
षड्भिर्गुणितकालके पुद्गले, ठा०६ ठा०। निसि०।

छगुणलुक्ख-पु० *[षड्गुणरूक्ष]*
षड्गुणरूक्षे पुद्गले, ठा०६ ठा०।

छग्गुरु-पु० *[षड्गुरु]*
अशीत्यधिके उपवासानां शते, उपवासत्रये च। षड्गुरुशब्देन शतमशीत्यधिकमुपवासानामुच्यते स्म, साम्प्रतकाले तु तद्विपरीतेनैव षड्गुरुशब्देनोपवासत्रयमेव संकेत्यते, जीतकल्पव्यवहार अनुसारात्। ठा०२ ठा०१ उ०।

छज्जा-स्त्री० *[छाद्या]*
छाद्यते उपरि स्थग्यते इति छाद्या। स्थगनक 'ढक्कन' इति ख्याते, रा०

छज्जिया-स्त्री० *[छाद्यिका]*
छाद्या एव छाद्यिका। रा०।

छज्जीवणिकाय-पु० *[षड्जीवनिकाय]*
तत्त्व। षड्जीवनिकायप्रतिपादकमध्ययनं षड्जीवनिकायाध्ययनम्। विपा० २ श्रु०१ अ०।
दशवैकालिकस्य तृतीयेऽध्ययने, तत्र षड्जीवनिकायाध्ययनोक्त जीवाजीवाभिगमस्यैकदेशमात्रम्। दश०४ अ०। आचा०

छज्जीवणिकायसंजम-पु० *[षड्जीवनिकायसंयम]*
षण्णां जीवनिकायानां पृथिव्यादिलक्षणानां संघट्टनादिपरित्यागे, छसु जीवनिकाएसु,जे वूहे संजते सया।सो चेव होति विण्णेयो परमत्थेणावि संजए। दश० १ अ०।

छट्ठ-त्रि० *[षष्ठ]*
एकस्मिन्नहनि एकं भक्तं विधाय पुनर्दिनद्वयमभुक्त्वा चतुर्थेऽह्न्येक भक्तमपि विधत्ते, ततश्चाद्यन्तयोरेकभक्तदिनयोर्भक्तद्वयं मध्यदिवसयोश्च भक्तचतुष्टयमित्येवं षण्णां भक्तानां परित्यागात् षष्ठं भवतीति। षष्ठभक्ते, 'अहवा अट्ठमेणं वसमेणं छट्ठेणमेगया भुंज'। आचा० १ श्रु०९ अ०४ उ०

छट्ठभत्तिय-पु० *[षष्ठभक्तिक]*
दिनद्वयमुपोषिते, पण्हा० १ अ०।

छट्ठाण-न० *[षट्स्थान]*
षट्स्थानाख्ये षष्ठेऽध्ययने, ठा०६ ठा०।

छट्ठितंत-न० *[षष्टितन्त्र]*
षष्टिः पदार्था यस्मिन् शास्त्रे तन्त्र्यन्ते तत् षष्टितन्त्रम्। सांख्यशास्त्रे, तच्च मरीचिशिष्येण कपिलेन ब्रह्मलोके कल्पे देवत्वेनोत्पन्नेव कथितमिति समयविदः। आव०म०।

छट्ठी-स्त्री० *[षष्ठी]*
तिथिभेदे, ज्यो०३ पाहु०। । विशे०। गणि०।
विभक्तिभेदे, नं०।
स्वस्वामिभावसंबन्धे, तस्यास्य गतस्य भृत्यादेरिति। अणुओ०। ठा०। आव०म०। आचा०।
षष्ठी द्विविधा दृष्टाभेदषष्ठी, अभेदषष्ठी चेति। तत्र भेदषष्ठी, यथा-देवदत्तस्य गृहम्। अभेदषष्ठी, यथा तैलस्य धारा, शिलापुत्रकस्य शरीरकमिति। ओह०।

छड-धा० *[त्यज]*
'छडति' त्यजति। संथा०।
'सुविहिया सरीरं पि छडंति संथा०।'
न परिछड्डेज्जा सर्वं भुञ्जीत, न परित्यजेत्। आचा० २ श्रु० १ अ० ९ उ०।

छडा-स्त्री० *[छटा]*
'आसिक्त उदकच्छटया'। आव०म०।

छडिय-त्रि० *[छटित]*
कण्डिते, छडिकया छटितानां तण्डुल्लानाम् आव०म०।

छड्ड-१ धा० *[मुच]*
'छड्डेउं गामं पविट्ठिओ'। आव०म०।
'छड्डेउ कामाए सामी पविट्ठो'। आव०म०।

छड्ड-२ धा० *[छर्द]*
'छडिज्जा' छार्दं विदध्यात्। आचा०२ श्रु०१ अ०२ उ०।

छड्डुण-अव्य०अव्य० *[छर्दन]*
छर्दने, वातादिद्रव्यप्रयोगकृते, विपा० १ श्रु० ८ अ०।
उत्सर्गे, आव०५ अ०।
वमनम् ऊद्ध्वादिदोषः। *ओघ०* ।

छड्डाविय-न० *[मोचित]*
मोचनं प्रापिते, 'गहीया सा तं वेउं छड्डा विया' आव० म० ।

छड्डिकुमार-पु० *[छर्दिकुमार]*
अभुक्तभोगिनि, बृह०१ उ०।

छड्डिणिरोह-पु० *[छर्दिनिरोध]*
वमनाभिघाते, छर्दिनिरोधे कृच्छ्रोत्पत्तिः। पंच०चू०। ।

छड्डित्तु-कृ० *[छर्दयित्वा]*
परित्यज्येत्यर्थे, वव० २ उ०।

छड्डिय-न० *[छर्दित]*
परिसाटिमिति दशमे एषणादोषे, । गच्छा०। ठा०।
छर्दितं दीयमानस्यान्नादेः पृथ्वीकायादिसंसक्तादि छर्दितं सता दश एषणादोषाः। जीत०। पिंड०।

छड्डेउ-कृ० *[छर्दयित्वा]*
अपरिष्ठाप्येत्यर्थे, वव०१ उ०।

छण-पु० *[क्षण]*
क्षणोति दुःखम्। उत्सवे, इन्द्रोत्सवादिके, भग०९ श०३३ उ०।
'छणो जत्थ विसिट्ठं अन्नपाणं उवसाहिज्जति'। निसि०१६ उ०।
क्षणनं क्षणः हिंसनम्। यत् किमपि प्राण्युपघातकारि तस्मिन् कर्मणि, आचा०१ श्रु०२ अ०६ उ०।

छणंत-त्रि० *[क्षण्वत्]*
घ्नति, घ्नन्तमन्यन्न समनुजानीत। आचा०१ श्रु०३ अ०२ उ०।

छणण-न० *[क्षणन]*
हिंसने, आचा०१ श्रु०२ अ०६ उ०।

छणपय-अव्य० *[क्षणपद]* हिंसापदे प्राण्युपमर्दजनिते, आचा०१ श्रु० २ अ०६ उ०।

छणवय-न० *[क्षणपद]*
'छणपय' शब्दार्थे, आचा०१ श्रु०२ अ०६ उ०।

छण्ण-१ त्रि० *[छन्न]*
व्याप्ते, रा०।
अप्रकाशे, निसि० १ उ०।

छण्ण-२ त्रि० *[छन्न]*
दर्भादिभिराच्छादिते, आचा०१ श्रु०२ अ०२ उ०। कल्प०।
प्रच्छन्ने, अतिलज्जलुतयाऽव्यक्तवचने, भग०२५ श०६ उ०।

छण्ण-३ त्रि० *[छन्न]*
मायायाम्, तस्याः स्वाभिप्रायप्रच्छादनरूपत्वात्। सूय०१ श्रु० २ अ०२ उ०।

छण्ण-४ त्रि० *[छन्न]*
षष्ठे आलोचनादोषे, 'छण्णं तह आलोए, जह नवरं अप्पणा सुणइ।' इति। ठा० १० ठा०।
प्रच्छन्नम् आलोचयति। किमुक्तं भवति ? लज्जालुतामुपदर्श्या-पराधानल्पशब्देन तथाऽऽलोचयति यथा केवलमात्मैव श्रृणोति, न गुरुरित्येष षष्ठ आलोचनादोषः। वव०१ उ०।

छण्ण-५ त्रि० *[छन्न]*
हिंसा-प्रधाने, तद्यथा–वध्यतां चौरोऽयम्, लूयन्तां केदाराः, दम्यन्तां गोरथका इति। यदि वा (छन्नं ति) प्रच्छन्नं यल्लोकैरपि प्रच्छाद्यते तत्सत्यमपि न वक्तव्यम्, इति। सूय० १ श्रु० ९ अ०।

छण्णउइच्छेयणदायरासि-पु० *[षण्णवतिच्छेदनदायराशि]*
योराशिरर्द्धेनार्द्धेन विद्यमानः षण्णवतिवारान् छेदं सहते, पर्यन्ते सकलमेकस्वरूपं पर्यवसितं भवति। तस्मिन्, पन्न० १२ पद०।

छण्णंग-न० *[छन्नाङ्ग]*
स्त्रीणां कुक्षरकुचोरुभुतिषु गुप्ताङ्गेषु, बुह०१उ०

छण्णपय-न० *[छन्नपद]*
कपटे, मातृस्थाने, गुप्ताभिमाने, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०।

छण्णपयोपयजीवि-त्रि० *[छन्नपदोपजीविन्]*
मातृस्थानोपजीविनि, सूय०२ श्रु०६ अ०।

छण्णमाय-त्रि० *[छन्नमातृक]*
प्रच्छन्नमातृके, तं०।

छण्णय-पु० *[छन्नक]*
जन्मान्तरशकटजीवे, ठा० १० ठा०। वव०।

छण्णसामत्थ-अव्य० *[छन्नसामर्थ्य]*
परलिङ्गग्रहणेनाऽऽच्छादितस्वस्वरूपे, वव०१ उ०।

छण्णाम-न० *[षण्नामन्]*
षण्णामर्थानामभिधायके शब्दे, अणुओ०।

छण्णाल-न० *[षड्नाल]*
त्रिकाष्ठिकायाम्, उव०।

छण्णालिय-न० *[षड्नालिक]*
त्रिकाष्ठिकायाम्, भग० २ श० १ उ०,
षण्नालकानि त्रिकाष्ठिकाः। *उव० ९५*।
छण्णालकः-त्रिकाष्ठिका। *नाया० १०५*।

छत्त-१ न० *[छत्र]*
आतपं छादयति इति छत्रं प्रसिद्धम्। तदाकारो योगोऽपि छत्रम्। तस्मिन्, सूर० १२ पाहु०। । रा०। पण्हा०।

छत्त-२ न० *[छत्र]*
अष्टत्रिंशे ३८ द्वासप्ततिपुरुषकलाभेदे, जंबू०२ वक्ष०।

छत्तंतिया-स्त्री० *[छत्रान्तिका]*
छत्रवत्वाद् राजरूपे पर्षद्भेदे, बुह० १ उ०।

छत्तक-न० [*छत्रक*]
आतपवारणे, पण्हा०४ अ० ।
एतन्मदीयं तावच्छत्रकादि गृहाण। आचा०२ श्रु०३ अ०२ उ०२।

छत्तकार-पु० [*छत्रकार*]
छत्ररचनाशीले शिल्पिभेदे, अणुओ० ।

छत्तग्गा– स्त्री० [*छत्राग्रा*]
जितशत्रुराजधानी। *आव०* ।

छत्तधारपडिमा-स्त्री० [*छत्रधारप्रतिमा*]
जिनप्रतिमानामुपरि छत्रधारिणः प्रतिमायाम्, जीवा० ।

छत्तपडागा-स्त्री० [*छत्रपताका*]
छत्रेण सहिता पताका छत्रपताका, छत्रोपरि वा पताका छत्र-पताका। तस्याम्, उव० ।भग० ।नाया० ।

छत्तपलासय-न० [*छत्रपलाशय*]
कृताङ्गलानगर्यां स्वनामख्याते चैत्ये, भग०२ श०१ उ० ।

छत्तभंग-पु० [*छत्रभङ्ग*]
छत्रस्य भङ्गो यत्र। नृपनाशे, वैधव्ये, अस्वातन्त्र्ये च। ठा० ।

छत्तमग्ग-पु० [*छत्रमार्ग*]
छत्रमन्तरेण गन्तुं न शक्यते तस्मिन् मार्गे, सूय०१ श्रु०११ अ०

छत्तय-न० [*छत्रक*]
आतपत्रे, आचा०२ श्रु०६ अ०१ उ० । भग० । सूय० ।

छत्तरयण-न० [*छत्ररत्न*]
चक्रवर्तिनामत्युत्कृष्टे छत्रे, ठा०७ ठा० । सम० । जंबू० ।

छत्तल-न० [*षट्तल*]
षट् तलानि यत्र तत् षट्तलम्। मध्यखण्डषट्कयुक्ते, अणुओ० ।

छत्तलक्खण-न० [*छत्रलक्षण*]
षट्त्रिंशत्तमे अष्टत्रिंशत्तमे कलाभेदे, नाया० १ श्रु० १ अ० । सूय० । सम० । उव० ।

छत्तसंठिया-स्त्री० [*छत्रसंस्थिता*]
छत्रस्येव संस्थितं संस्थानं यस्याः सा। छत्राकारसंस्थिते पदार्थे, चंद० ४ पाहु० ।
छत्रसंस्थिताः। *जीवा०*।

छत्तहर-पु० [*छत्रधर*]
छत्रं धरति-धारयति वा ।छायाकरणाय नियुक्तदासभेदे। आव०

छत्तहार-पु० [*छत्रधार*]
'छत्तहर' शब्दार्थे, आव० म० ।

छत्ता-स्त्री० [*छत्रा*]
स्वनामख्यातायां नगर्याम्, यत्र पूर्वभवे श्रीमहावीरस्वामी जित-शत्रुनृपतेर्भद्रादेव्या नन्दनो नाम कुमार उत्पन्न इति। आव०म० ।

छत्ताइच्छत्त-१ न० [*छत्रातिच्छत्र*]
छत्रमतिक्रम्य छत्रं छत्रातिच्छत्रम् ।ठा०७ठा० ।सम० ।रा० ।सूर०
छत्राद् लोकप्रसिद्धाद् एकसंख्याकादतिशायीनि छत्राणि उपर्यधोभागेन द्विसंख्यानि त्रिसंख्यानि वा छत्रातिच्छत्राणि। रा० । जीवा० । आव०म० ।
छत्रं प्रसिद्धं, तदाकारो योगोऽपि छत्रं, छत्रात् सामान्यरूपात् उपर्यन्यान्यच्छत्रभावतोऽतिशायि छत्रं छत्रातिच्छत्रम्। सूर० १२ पाहु० । । रा० ।
उपर्युपरि स्थिते आतपत्रे, जीवा० ३ प्रति० । चंद० । रा० ।

छत्ताइच्छत्त-२ न० [*छत्रातिच्छत्र*]
चन्द्रेण युज्यमाने दशसु योगेषु षष्ठे योगे, सूर० १२ पाहु० । । रा० ।

छत्तागारुत्तमंगदेस-न० [*छत्राकारोत्तमाङ्गदेश*]
छत्राकार उत्तमाङ्गरूपो देशो येषां ते छत्राकारोत्तमाङ्गदेशाः। जीवा० ३ प्रति० ।
तथाविधशिरस्केषु युगलिकमनुष्येषु, छत्राकारोत्तमाङ्गदेशः, उन्नतत्वसाधर्म्यात्, उव० ।

छत्तातिच्छत्तसंठाणसंठिय-न० [*छत्रातिच्छत्रसंस्थानसंस्थित*]
छत्रमतिक्रम्य छत्रं छत्रातिच्छत्रं, तथासंस्थानमाकारोऽधस्तनं छत्रं महदुपरितनं लध्विति तेन संस्थितं छत्रातिच्छत्रसंस्थान-संस्थितम्। महदधस्तनोपरितनलघौ, ठा० ७ ठा० ।

छत्ताय-न० [*छत्राक*]
शिलीन्ध्रे, जालवर्वुरकक्षे। सम० ।

छत्तार-पु० [*छत्रकार*]
छत्रनिर्मापके शिल्पिभेदे, पन्न० १ पद।

छत्ति-त्रि० [*छत्रिन्*]
छत्रमस्यास्तीति छत्री। छत्रयुक्ते, अणुओ० ।
दोषाच्छादनम्। *आव० ७८२*।

छत्तिछकारपविभत्ति-न० [*छइतिछकारप्रविभक्ति*]
छकारवर्णस्वरूपवर्णाकृतिनाट्यभेदे, रा० ।

छत्तिया-स्त्री० [*छत्रिका*]
छत्रापुर्याम्, कल्प०२ क्षण० ।

छत्तीस-स्त्री० [*षट्त्रिंशत्*]
'छत्तीसा पट्ठाणेहिं, जो होति परिणिट्ठितो। अलमत्थो तारिसो होई, ववहारं ववहरित्तए' । वव०१० उ० ।
'एए खरपुढवीए, भेया छत्तीसमाहिया'। उत्त०१ अ० । पन्न० ।

छत्तोय-न० [*छत्रोकष्*]
कुहडभेदे, पन्न०१ पद।

छत्तोवग-पु० [*छत्रोपक*]
वृक्षभेदे, रा० ।

छत्तोह-पु० [*छत्रौघ*]
वृक्षभेदे, पन्न० १ पद। भग० ।

छद्दवण-न० *[छर्दापन]*
त्याजने, छर्दापनं नाम तद् छलादपि साधुपार्श्वादन्यत्र तं शवं परित्यजेयुः। बुह० ९ उ०।

छद्दोसविप्पमुक्क-न० *[षड्दोषविप्रमुक्त]*
षड्भिर्दोषैर्विप्रमुक्ते गेये, ते च षट् दोषा अमी-'भीयं दुयमुप्पि-च्छं' उत्तालककाकस्वरमनुनासं च। जीवा० ३ प्रति०। रा०।

छधणुसहस्स-न० *[षड्धनुःसहस्र]*
क्रोशत्रये, ठा०६ ठा०।

छन्नउइ-स्त्री० *[षण्णवति]*
षडधिकनवतिसंख्यायाम्, तत्संख्यान्विते च। ज्यो०।

छन्नपद– न० *[छद्मपद]*
कपटजालम्। *सूय०* ।
गुप्ताभिधानं वा। *सूय०*।

छप्पइया-स्त्री० *[षट्पदिका]*
यूकायाम्, आव०९ अ०। महानि०। आव०म०। निसि०।

छप्पएसिय-पु० *[षट्प्रदेशिक]*
प्रदेशषड्निष्पन्ने पुद्गलस्कन्धे। ठा०६ ठा०।

छप्पएसोगाढ-पु० *[षट्प्रदेशावगाढ]*
षट्सु आकाशप्रदेशेषु अवगाढे पुद्गले, ठा०६ ठा०

छप्पण्ण-त्रि० *[षट्पञ्चाशत्]*
षडधिकाः पञ्चाशत्। संख्या भेदे, 'छप्पन्नं गणहरा होत्था'। समo ५६ सम०।

छप्पतिगिल्ल-त्रि० *[षट्पदिकावत्]*
यस्य षट्पदिकाः प्राचुर्येण सम्मूर्च्छन्ति। तस्मिन् षट् पदिकाऽऽवृते, बुह० ३ उ०।

छप्पद-पु० *[षट्पद]*
भ्रमरे, षट्पदैः भ्रमरैः परिभुज्यमानानि कमलानि, उपलक्षणम् एतत्-कुमुदानि च, यासु ताः षट्पदपरिभुज्यमानकमलाः। जीवा०३ प्रति०। रा०। जंबू०। उव०। कल्प०। निसि०।

छप्पुरिमा-स्त्री० *[षट्पुरिमा]*
षड्वारप्रस्फोटनात्मिकायां प्रत्युपेक्षणायाम्, तत्र वस्त्रस्य चक्षुषा निरूप्यार्वाग्भागं त्रयः पुरिमाः कर्तव्याः। तथा परावर्त्यापरभागं निरूप्य पुनरपि त्रयः पुरिमाः कर्तव्याः। एवमेतेषु पुरिमाः षट्वाराः, प्रस्फोटनानीत्यर्थः। ओह०। निसि०। ठा०।

छम्माणि-पु० *[षण्मानि]*
स्वनामख्याते ग्रामे, यत्र गोपेन श्रीमहावीरस्वामिनः कर्णयोः कटकशलाके प्रवेशिते। कल्प०६ क्षण, आव०चू०। आव०म०।

छम्मास-पु० *[षण्मास]*
मासषट्कात्मके कालपरिमाणविशेषे, । भग०। सूर०।

छम्मासिय-न० *[षाण्मासिक]*
मृतस्य एकाहोनषष्ठमासे कर्तव्ये श्राद्धभेदे,
एकाहन्यूनषण्मासे तस्य विधानम्। आचा०। निसि०।

छम्मासियभिक्खुपडिमा-स्त्री० *[षाण्मासिकभिक्षुप्रतिमा]*
षण्मासपरिमाणे साधुप्रतिज्ञाविशेषे, तत्र हि षण्मासान् यावत् षट् दत्तयो भक्तस्य, षडेव च पानकस्येति। उव०।

छय-त्रि० *[क्षत]*
पीडिते, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०।

छरियगइ-त्रि० *[छटितगति]*
मायमा लोकावर्जनाय मन्दगामिषु, बुह०१ उ०।

छरु-पु० *[त्सरु]*
खड्गमुष्टौ, जंबू०२ वक्ष०। पण्हा०। उव० । जीवा०। तं०।

छरुप्पवाय-पु० *[त्सरुप्रवाद]*
एकषष्टिकलायाम् जंबू०२ वक्ष०। नाया०
क्षुरिकादिग्रहणोपायजाते, पण्हा०५ अ०।
त्सरुः खड्ग-मुष्टिः, तदवयवियोगात् त्सरुशब्देनाऽत्र खड्ग उच्यते। अवयवे समुदायोपचारः, तस्य प्रवादो यत्र शास्त्रे तत् त्सरुप्रवादम्।
खड्गशिक्षाशास्त्रे, जंबू०२ वक्ष०। उव०।

छरुय-पु० *[त्सरुक]*
मुष्टिग्रहणस्थाने, नाया०१ श्रु० १६ अ०।

छल-१ धा० *[छल]*
'छलिज्जति' निसि०१ उ०।
'अकाले पढमाणो पंतदेवयाए छलिज्जहिसि।' निसि०१ उ०।

छल-२ न० *[छल]*
तत् त्रिधा-वाक्छलए, सामान्यच्छलम्, उपचारच्छलं चेति।
ठा०। बुह०। आव०म०। विपा० । अणुओ०।

छलंस-न० *[षमस्र]*
षट्कोटिके, ठा० ८ ठा०।

छलण-न० *[छलन]*
प्रक्षेपणे, आचा०२ श्रु०३ अ०१ उ०।

छलणा-स्त्री० *[छलना]*
व्यापादने,
सा द्विधा-द्रव्यतो, भावतश्च द्रव्यतश्छलना खड्गादिभिः भावतः परीषहोपसर्गाद्यैः। वव० २ उ० ।आव०चू०। आव०

छलायतन-न० *[छलायतन]*
आयतनषट्कयुक्ते,षडायतनानि उपादानकारणानि आश्रवद्वा-राणि श्रोत्रेन्द्रियादीनि यस्य कर्मणस्तत् षडायतनं कर्मेत्येवम् आहुरिति। सूय०१ श्रु०१२ अ०।

छलिय-न० [छलित]
श्रृङ्गारकाव्ये, बुह०१ उ०।
व्यसितेऽनर्थं प्रापिते नाया०१ श्रु०९ अ०।
सिण्टिते, तस्करसंज्ञायाम्, तत्करणे साधोः प्रायश्चितं चतुर्थम्। जीत०। आव०।

छलुग– न० [षडुलुक]
षट्पदार्थप्रणयनाद् उलूकगौत्रत्वाच्च षडुलूकः। उत्त० । निसि० षडुलूकः-यस्मात्त्रैराशिका उत्पन्ना स आचार्यः। आव० ।

छल्ली-अव्य० [छल्ली]
अभ्यन्तरवल्कले, ठा० ४ठा० १उ०। आव०म०। जंबू०। नाया०

छवि-स्त्री० [छवि]
शोभायां, कान्तौ च। कल्प०।
शरीरे, । पण्हा०। आव०। ठा०। आचा०।
त्वचायाम्, जीवा०३ प्रति०। ठा०।
त्वग्योगादौदारिकशरीरं, तद्वती नारी, तिरश्ची वा, तद्वान्नरस्तिर्यङ् वा छविरित्युच्यते। ठा० ४ ठा० १ उ०।
वल्लचवलकादिफले, दश० ७ अ०।
अलङ्कारविशेषे, अणुओ०। आव०म०।

छविकर-पु० [छविकर]
षष्ठे प्रशस्तमनोविनयभेदे, ठा०७ ठा०।

छविच्छेय-पु० [छविच्छेद]
भरतचक्रवर्तिकाले प्रवर्तितायां चतुर्थ्यां दण्डनीतौ, सा च–छविच्छेदादिकाः, आदिशब्दाच्छिरः कर्तनादिपरिग्रहः। पलितो-पमऽट्ठभागे, सेसम्मि य कुलगरुप्पत्ती। वचनात् तत्र पल्योपमं किलासत्कल्पनया चत्वारिंशद्भागं परिकल्पते, तस्याऽष्टमो भागः पञ्च च विधिं परिभाव्य प्रवर्तिता, सा गुरुतरापराधाविषया चतुर्थी छविच्छेदादिका। आव०म०। आव०। ठा०। आव०चू०। । उत्त०। पण्हा०।

छविच्छेयण-न० [छविच्छेदन]
अवयवकर्तने, पण्हा०१ अ०।

छवित्ताण-न [छवित्राण]
देहचर्माच्छादने, उत्त०२ अ०।

छविदोस-पु० [छविदोष]
छविरलङ्कारविशेषस्तेजस्विता वा। तद्रहिते, विशे०। अणुओ०। आव०म०।

छविपत्र-त्रि० [छविप्राप्त]
छविं जाते, ठा०२ ठा०३ उ०।

छविपव्व-न० [छविपर्व]
छविसन्धिबन्धने, ठा०३ उ०।

छविमंत-त्रि० [छविमत्]
त्वग्वति, ठा० २ ठा० ३ उ०।

छवियत्त-पु० [छविकात्मन्]
छवियोगात् छविः, स एव लविकः, स चासौ आत्मा च शरीरम्। छवियुक्ते, ठा०२ ठा०३ उ०।

छवियद्द-न० [छविकार्द्र]
स्निग्धत्वग्द्रव्ये, मुक्ताफलरक्ताशोकादिके, सूय०२ श्रु०६ अ०।

छव्वग-न० [छव्वक]
पटलिकादिरूपे भाजने, पिंड०। आचा०।

छव्विहकालगुणकम्मजुत्त-त्रि० [षड्विधकालगुणकर्मयुक्त]
षड्विधस्य कालस्य ऋतुषट्करूपस्य कालस्य ये गुणाः कार्याणि तैः क्रमेण परिपाट्या संगतं यत्तत्तथा। षडर्तुकार्यपरिपाट्या युक्ते, पण्हा० ४ अ०।

छव्वीस-स्त्री० [षड्विंशति]
षडधिकायां विंशतौ, आव० ४ अ०।

छसमयट्ठिइय-पु० [षट्समयस्थितिक]
समयषट्कस्थायिनि पुद्गले, ठा० ६ ठा०।

छाउमत्थियसमुग्घाय-पु० [छाद्मस्थिकसमुद्घात]
समुद्घात भेदे, सम०

छागल-त्रि० [छागल]
अजासंबन्धिनि, कुतपश्छागलकिट्टजम्। ठा०५ ठा०२ उ०।

छागलतक्क-न० [छागलतक्र]
अजादधिनिष्पन्नतक्रे, तं०।

छाण-न० [छादन]
दर्भादिमये पटले, भग०८ श०६ उ०।
'सर्व्वश्वेते रजते रजमये पुञ्छनीनामुपरि कवेल्लुकानामध आच्छादने, जीवा० ३ प्रति०।

छाणविच्छुय-पु० [छगणवृश्चिक]
चतुरिन्द्रियभेदे, जीवा० १ प्रति०।

छाय-त्रि० [छात]
बुभुक्षिते, ओह०। नाया०। वव०।

छायण-न० [छादन]
दर्भादिना आच्छादने, गच्छा०१अधि० ।आचा० ।सूय०। पण्हा०।

छाया-स्त्री० [छाया]
छ्यति छिनत्ति वा-ऽऽतपमिति छाया। उत्त०१ अ०।
दीप्तौ, उव०। पन्न०। सम०। रा०।
प्रभायाम्, जंबू०२ वक्ष०। निसि०। सम०।
शोभायाम्, उव०।
शरीरशोभायाम्, 'छाउज्जोइयंगमंगा'। जंबू०३ वक्ष०।
छायया शरीरप्रभया उद्द्योतितमङ्गमङ्गम् अङ्गप्रत्यङ्गं येषां ते

तथा। जीवा०३ प्रति०।
शरीरप्रभायाम्, तं०।
प्रतिबिम्बे, उत्त० २ अ०। ठा०।
समुदायशोभायाम्, जीवा० ३ प्रति०।
आतपविरुद्धे पुद्गलपरिणामे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०। उत्त०।
छाया वृक्षादीनाम्। ठा०२ ठा०४ उ०। नाया०। उव०।
आदित्यकरावरणजनितायामदीप्तौ, नाया०१ श्रु०२ अ०।
प्रभया आतपाभावल-क्षणया युक्ता। *सम० १५५*।

छायागाइ-स्त्री० *[छायागति]*
छायामनुसृत्य तदुपष्टम्भेन वा समाश्रयितं गतौ, पन्न०।

छायाघाय-पु० *[छायाघात]*
प्रभापरिभ्रंशे, बुह०१ उ०।

छायातो-अव्य० *[छायातम्]*
छायाया इत्यर्थे, छायातः शीतकाले शीतमिति कृत्वा सीदन्ति। दशा० ७ अ०

छायालीस-स्त्री० *[षट्चत्वारिंशत्]*
षडधिकचत्वारिंशत् संख्यायां, तत्संख्याऽन्विते च। जीवा० ३ प्रति०। पन्न०।

छायासमणुबद्ध-पु० *[छायासमनुबद्ध]*
छायया युक्ते, रा०।

छायोवग-पु० *[छायोपग]*
छायामुपगच्छतीति छायोपगः।बहुलच्छाये वृक्षे, तद्वत् अनुवर्त-नापायसंरक्षणादिना सत्त्वोपेत सव्ये पुरुषजाते ।ठा०४ ठा०३ उ०

छायोवय-पु० *[छायोपग]*
'छायोवग' शब्दार्थे, ठा०४ ठा०३ उ०

छार-त्रि० *[क्षार]*
भूतौ, ओह०।
भस्मनि, आव०४ अ०। नाया०। आव०म०। बुह०।
परस्परमग्निपरिणामिते इन्धने, निसि० १ उ०।
'अभिणवड्ढं अपुंजकयं छारो भण्णति' निसि० ३ उ०।
मात्सर्ये, न०। जीवा०३ प्रति०।

छारिय-न० *[क्षारिक]*
भस्मनि, भग०५ श०२ उ०।

छावग-पु० *[शावक]*
शिशौ, सूय०१ श्रु०१४ अ०।

छावण-न० *[छादन]*
दर्भादिभिराच्छादने, बुह०१ उ०। आचा०। निसि०।

छावपोयग-पु० *[शावपोतक]*
शाव एव अतिलघुत्वात्पोतः पोतकः शावपोतकः। शिशौ, । वव० १ उ०।

छाहा-स्त्री० *[छाया]*
'छाया' शब्दार्थे, उत्त०१ अ०।

छिंडी-स्त्री० *[छिण्डी]*
वृत्तिछिद्ररूपायां छिण्डिकायाम्, नाया०१ श्रु०२ अ०।

छिंदित्ता-कृ० *[छित्त्वा]*
द्विधा कृत्वेत्यर्थे, ठा०३ ठा०२ उ०। आचा०।
क्षुरप्रादिना कूष्माण्डकमिव श्लक्ष्णखण्डीकृत्येत्यर्थे, भग० १४ श० ८ उ०।

छिंदिय-कृ० *[छित्त्वा]*
'छिंदित्ता' शब्दार्थे, ठा०३ ठा०२ उ०।

छिंदियव्व-कृ० *[छेत्तव्य]*
द्वैधीकरणे, पण्हा०३ अ०।

छिंपक-पु० *[छिम्पक]*
वस्त्रेषु नानाजातीयमुद्राकर्तरि जातिविशेषे, ठा० ८ ठा०।

छिक्का-स्त्री० *[छिक्का]*
छिक्कृते, आव० म० ।
रात्रौ छिक्कायां प्रायश्चित्तमुपस्थापनम्। महानि०७ अ०।

छिक्किय-न० *[छिक्कित]*
छीत्कृतौ, निसि० १ उ०।

छिच्छिक्कार-पु० *[धिक्धिक्कार]*
पुनःपुनर्धिक्कारे, ठा० ५ ठा० ३ उ०

छिज्ज-न० *[छेद्य]*
छेत्तुं योग्ये, सूय० २ श्रु०५ अ०।

छिज्जउं-कृ० *[छेत्तुं]*
द्विधा कर्तुमित्यर्थे, तं०।

छिज्जमाण-त्रि० *[छिद्यमान]*
खड्गादिभिः खण्ड्यमाने, उवा०७ अ०।
छिद्यमानं छिन्नम्। भग०१ श०१ उ०। पण्हा०। विपा० ।

छिड्ड-न० *[छिद्र]*
प्रवेशद्वारे, पण्हा०३ अ०। निसि०।
राजव्यापारविरलत्वे, विपा० १ श्रु०२ अ०।
अल्पपरिवारत्वे, विपा ०१ श्रु०१ अ०।
छिदश्छेदनस्यास्तित्वाच्छिद्रम्। भग० २ श० २ उ०।

छिड्डगुड-पु० *[छिद्रगुड]*
फाणिते, निसि०१३ उ०।

छिड्डघाति-पु० *[छिद्रघातिन्]*
छिद्रे अवसरे घ्नन्तीत्येवंशीला ये ते तथा। सत्यवसरे घातकारिषु, पण्हा०३ अ०।
'छिड्डे परिसेवति'। 'छिड्डाते पुणो लोए चोप्पालए भण्णंति' निसि०१ उ०।

छिड्डुपाणि-पु० *[छिद्रपाणि]*
सप्तविधपात्रनिर्योगसमन्विते जिनकल्पिके, । आचा० २ श्रु० १ अ० ३ उ० ।

छिण्ण-त्रि० *[छिन्न]*
त्रुटिते, आतु० ।
निराकृते, आव० म० । आचा० ।
अपनीते, सूय०१ श्रु०८ अ० ।
अपगते, उत्त०२ अ० ।
विभक्ते, नाया०१ श्रु०१८ अ० । विपा० ।
छिन्नाः कर्षितास्त्रुटिताः । सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ० ।
त्रोटिते, सूय०१ श्रु०११ अ० ।
छिद्यते इति छिन्नम् ।वस्त्रादीनां मूषकादिना दशने,उत्त०१५ अ० ।
द्विधा कृते, नं० । आचा० । उत्त० । पण्हा० । विपा० । उव० ।
निर्धारिते, बुह०१ उ० ।

छिण्णकहंकह-त्रि० *[छिन्नकथंकथ]*
छिन्ना अपनीता कथं कथमपि या कथा रागकथादिका विकथारूपा येन स छिन्नकथंकथः ।
यदि वा कथमिङ्गितमरणप्रतिज्ञां निर्वहिष्ये इत्येवंरूपा या कथा सा छिन्ना येन स छिन्नकथंकथः । दुष्करानुष्ठानविधायिनि, आचा०२ श्रु०८ अ०६ उ० ।

छिण्णगंथ-त्रि० *[छिन्नग्रन्थ]*
छिन्नो ग्रन्थो धनधान्यादिः, तत्प्रतिबद्धो वा येन सः । छिन्नस्त्यक्तो हिरण्यादिग्रन्थो येन स तथा । निर्ग्रन्थे, ठा० ९ ठा० । नाया० । कल्प० । पण्हा० ।

छिण्णच्छेय-त्रि० *[छिन्नच्छेद]*
छिन्नो द्विधाकृतः पृथक्कृतः छेदः पर्यन्तो येन स छिन्नच्छेदः । प्रत्येकं कल्पितपर्यन्ते, नं० ।

छिण्णच्छेयणअ-पु० *[छिन्नच्छेदनय]*
यो नयः सूत्रं छेदेन छिन्नमेबाभिप्रैति, न द्वितीयेन सूत्रेण सह संबन्धयति तस्मिन्नयविशेषे, यथा–'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं' इति श्लोकम् । तथा ह्ययं श्लोकः छिन्नच्छेदनयमतेन व्याख्यायमानो न द्वितीयादीन् श्लोकानपेक्षते, नापि द्वितीयादयः श्लोका अमुम् । स चासौ नयश्च छिन्नच्छेदनयः । नं० आव०म० । सम० ।
अनुप्रवादपूर्वे वक्तव्यताविशेषः । *उत्त०* ।

छिण्णच्छेयणइय-त्रि० *[छिन्नच्छेदनयिक]*
छिन्नच्छेदनयवति, तथा दृष्टिवादे ऋजुसूत्रादीनि द्वाविंशतिः सूत्राणि छिन्नच्छेदनविकानि । नं० । सम० ।

छिण्णऽद्धाणंतर-न० *[छिन्नाध्वान्तर]*
पथिभेदे, यत्र ग्रामनगरपल्लीव्रजिकानां किञ्चिदेकतरमपि नास्ति सर्वथैव शून्यत्वात् । बुह० १ उ० ।

छिण्णपुव्व-त्रि० *[छिन्नपूर्व]*
पूर्वं द्विधा कृते, उत्त०१६ अ० ।

छिण्णबंधण-पु० *[छिन्नबन्धन]*
छिन्नमपनीतं बन्धनं कषायात्मकं येन स छिन्नबन्धनः । ममत्वरहिते, सूय० २ श्रु० ८ अ० । वव० ।

छिण्णमडंब-न० *[छिन्नमडम्ब]*
अनासन्नवसत्यन्तरे, 'छिन्नमडंवं नाम जस्स गामस्स नगरस्स वा उग्गदे सव्वासु दिसासु अन्नो नामो नऽत्थि गोकुलं वा तच्छिन्नमडंवं, तं च अखेत्तं भवति' निसि० १० उ० ।

छिण्णरुह-पु० *[छिन्नरुह]*
छित्त्वा गृहाद्यानीतं शुष्कताद्यवस्थां प्राप्तमपि जलादिसामग्रीं प्राप्य गुडूच्यादिवत्पुनरपि यत्प्ररोहति तच्छिन्नरुहम् ।तदेतैर्लक्षणैः साधारणं शरीरं ज्ञेयमनन्तकायिकमित्यर्थः । पन्न०
साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । *पन्न०* ।

छिण्णसोय-त्रि० *[छिन्नशोक]*
नष्टशोके, ओह० । पण्हा० ।

छिण्णसोय-त्रि० *[छिन्नस्रोतस्]*
छिन्नान्यपनीतानि स्रोतांसि संसारावतरणद्वाराणि यथाविषयमिन्द्रियवर्तनानि प्राणातिपातादीनि वा आश्रवद्वाराणि येन सः । सूय० ९ श्रु० १५ अ० ।
स्तोत्रो द्विविधम्– द्रव्यस्रोतो, भावस्रोतश्च । तत्र द्रव्यस्रोतो नद्यादिप्रवाहः । भावस्रोतश्च संसारसमुद्रपात्यशुभो लोकव्यवहारः, स छिन्नो येन स तथा । त्रुटितद्रव्यभवप्रवाहे, पण्हा०५ अ० । उव० । सूय० । उत्त० ।
छिन्नश्रोतसो, छिन्नसंसारप्रवाहाः वा । *उव०*।

छिण्णाल-पु० *[छिन्नाल]*
तथाविधदुष्टजातौ, 'छिन्नाले छिंदई सेल्लिं' उत्त०२७अ० । बुह०

छिण्णावाय-त्रि० *[छिन्नापात]*
छिन्नोऽपगत आपातोन्योऽन्यत आगमनात्मकोऽर्थार्जनस्य येषु ते छिन्नापाताः । विविक्तेषु मार्गेषु, उत्त०२ अ० ।
व्यवच्छिन्नसमागमेषु, बुह० ४ उ० ।
छिन्ना आपाताः सार्थगोकुलादीनां यस्यां सा । ठा०४ ठा०२ उ० ।
व्यवच्छिन्नसार्थघोषाद्यापातायाम्, भग०१५ श०१ उ० ।

छित्त-न० *[क्षेत्र]*
स्थाने, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

छित्तर-न० *[छित्वर]*
वंशादिमये छादनाधारभूते किलिञ्जे, भग०८ श०९ उ० ।

छिद्द-न० *[छिद्र]*
रन्ध्रे, भग०१२ श०४ उ० । पन्न० । आव० । तं० ।
अल्पपरिवारत्वे, विपा० १ श्रु०६ अ० ।

छिद्दपेहि-पु० *[छिद्रपेक्षिन्]*
छिद्राणि प्रमत्ततादीनि प्रेक्षते इति। पाराञ्चितयोग्यप्रमत्ततादि-रूपप्रतिसेवनाकर्तरि, ठा० ५ ठा० १ उ०।

छिन्दवण-न० *[छेदन]*
वनस्पत्यादीनामन्यैश्छेदने, 'छपणं' प्रायश्चित्तं चतुर्थमाचाम्लम् एकाशनकं निर्विकृतिकं वा। महानि० ७अ०

छिप्प-न० *[देशी]*
भिक्षायां, पुच्छे च। विपा० ।

छिप्पंत-त्रि० *[क्षिप्यमाण]*
तूर्यभेदे, आव०चू० १ अ०।

छिप्पतूर-न० *[क्षिप्रतूर्य]*
द्रुतं वाद्यमाने तूर्ये, नाया०१ श्रु०१६ अ०।
'छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं' विपा० १ श्रु०३ अ०।

छिप्पोल्ली-स्त्री० *[छिप्पोल्ली]*
वर्करादिलेण्डे, निसि० १ उ०।

छिरा-स्त्री० *[शिरा]*
नाडीषु, शिरा नाड्यः। भग०९ श०३३ उ०।

छिलिय-न० *[सिण्टित]*
सीत्कारकरणे, पण्हा०३ अ०।

छिव-धा० *[स्पृश]*
श्लक्ष्णे, नाया०१ श्रु०२ अ०।
'छिवन्ति' छुवन्ति धारयन्ति, हस्ताञ्जलिभिरिति ।पण्हा०४ अ०।

छिवण-न० *[स्पर्शन]*
छुपने, जीवा०१७ अधि०।

छिवा-स्त्री० *[क्षिपा]*
श्लक्ष्णचर्मकशायाम्, विपा० १ श्रु० ६ अ०।

छिवाडिआ-स्त्री० *[छेदपाटी]*
वल्लादिफलिकायाम्, जंबू०१ वक्ष०।

छिवाडियपोत्थय-न० *[छेदपाटीपुस्तक]*
'छिवाडिए ताहे। तणुपब्भूसियरूवा, होइ छेवाडी वुहावेंति ।। दीहो वा हस्सो वा, जो पिहुलो होइ अप्पबाहल्लो। तं मुणिय समयसारा, छिवाडिपोत्थं भणंतीह।।'
(छिवाडिए त्ति) तनुभिः पत्रैरुच्छ्रितरूपः किञ्चिदुन्नतो भवति छेदपाटीपुस्तक इति। ठा०४

छिविऊण-कृ० *[स्पृष्ट्वा]*
स्पर्शं कृत्वेत्यर्थे, महानि०७ अ०।

छिहंड-१ स्त्री० *[छिहली]*
शिखायाम्, बुह०४ उ०। आव०।

छिहंड-२ न० *[शिखण्ड]*
मथूरशिखायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ०।

छिहंडि-पु० *[शिखण्डिन्]*
शिखावति, नाया०१ श्रु०१ अ०।

छीय-अव्य० *[क्षुत्]* छिक्कायाम्, निसि०१ उ०। ल०। आव०म०। आव०चू०। आव०। नं०। विशे०।

छीयमाण-पु० *[क्षुवत्]*
क्षुतं कुर्वति, आचा०२ श्रु०२ अ०३ उ०।

छीरविरालिया-स्त्री० *[क्षीरविडालिका-क्षीरविदारिका]*
क्षीरप्रधाना विदारी। शुक्लकृष्णयोर्भूमिकूष्माण्डयोः। जीवा०। भग०।

छीरुल-पु० *[क्षीरल]*
भुजपरिसर्पविशेषे, पण्हा०१ अ०।

छु-*[छु]*
अनुकरणशब्दः। दुष्टजीवनिवारणे, बुह०१ उ०।

छुक्कारण-न० *[धिक्कारण]*
धिक्कारे, पुनः पुनर्धिक्कारे च। बुह० २उ०

छुच्छुक्करंत-त्रि० *[छुच्छुकुर्वत्]*
छुच्छुगितिशब्देन कुक्कुरान् निवारयति, आव० म० । आचा०।

छुज्जमाण-त्रि० *[क्षुद्यमान]*
पीड्यमाने, संथा०।

छुड्ड-त्रि० *[छुटित]*
मुक्ते, आव०४ अ०।

छुड्डिया-स्त्री० *[क्षुद्रिका]*
आभरणाविशेषे, पण्हा० १० अ० ।

छुण्ण-त्रि० *[क्षुण्ण]*
पिष्टे, संथा०। आचा०।

छुण्णाछुण्ण-त्रि० *[क्षुण्णाक्षुण्ण]*
पिष्टापिष्टे, संथा०।

छुत्त-त्रि० *[छुप्त]*
स्पृष्टे, आचा०१ श्रु०१ अ०४ उ०। सूय०।

छुप्पंत-त्रि० *[क्षिपत्]*
प्रक्षिपति, निसि०१ उ०।
स्पृशन्त। *भग०* ।

छुरघरय-न० *[क्षुरगृहक]*
नापितस्य चर्मोर्णादिमये क्षुरकर्तर्याद्याधारे उपकरणे,निसि०१ उ०

छुरिया-स्त्री० *[छुरिका]*
स्वनामख्याते अस्त्रभेदे, । आचा०। आव०म०। उत्त०।
क्षुरिका। *आव०* ।
शस्त्रविशेषः। *निसि०*

छुह-धा० *[क्षिप]* 'छुहइति' प्रवेशयति। वव०१ उ०।
'छुहंति' प्रक्षिपन्ति। आव०म०।

छुहा-स्त्री० *[क्षुधा]*
बुभुक्षायाम्, सूय० । आव०म० । उत्त० ।
'क्षुधार्तः साधुरेषणां नातिलङ्घयेत् । यात्रामात्रोदिता विद्वानदीनो वल्कलश्चरेत् ।।' आव० म० ।

छुहिय– त्रि० *[क्षुधित]*
बुभुक्षितः । *नाया० १९२*।

छूढ-त्रि० *[क्षिप्त]*
प्रेरिते, त्यक्ते, विकीर्णे, अवज्ञाते, रागद्वेषादिवशाद्विषयाऽऽसक्तचित्ते, वायुरोगग्रस्ते च । निसि० । वव० । उत्त० ।

छेओवट्ठावण-न० *[छेदोपस्थापन]*
छेदेन पूर्वपर्यायनिरोधेन उपस्थापनमारोपणं महाव्रतानां यत्र तच्छेदोपस्थापनम् । संयमभेदे, अणुओ० ।
'छेत्तूण तु परियागं, पोराणं तो ठविति अप्पाणं। धम्मम्मि पंचजामे, छेओवेट्ठावणे स खलु' ।। पंच०भा० ।

छेओवट्ठावणिय-पु० *[छेदोपस्थापनीय]*
छेदस्य पूर्वपर्यायस्योपस्थापनं च व्रतेषु यत्र तच्छेदोपस्थापनम् । तदेव छेदोपस्थापनिकम् । ते वा विच्चेते यत्र तच्छेदोपस्थापनम् । अथवा–पूर्वपर्यायच्छेदेन उपस्थाप्यतेआरोप्यते यन्महाव्रतलक्षणं चारित्रं तच्छेदोपस्थापनीयम् ।
तदपि द्विधा- अनतिचारं, सातिचारं च । तत्रानतिचारम्–यदित्वर सामायिकस्य शिष्यकस्यारोप्यते पार्श्वनाथसाधोर्वा पञ्चयामधर्म प्रतिपत्तौ । सातिचारं-यन्मूलप्रायश्चि-त्तप्राप्तस्येति ।

छेओवट्ठावणियचरित्तलद्धि-स्त्री० *[छेदोपस्थापनिकचरित्रलब्धि]*
छेदे प्राक्तनसंयमस्य व्यवच्छेदे सति यदुपस्थापनीयं साधावारोपणीयं तच्छेदोपस्थापनीयम्, पूर्वपर्यायच्छेदेन महाव्रतानामारोपणमित्यर्थः । तच्च सातिचारमनतिचारं च ।
तत्रानतिचारं यदित्वरसामायिकस्य शिक्षकस्यारोप्यते, तीर्थान्तरसंक्रान्तौ वा यथा–पार्श्वनाथतीर्थाद्वर्द्धमानस्वामितीर्थं संक्रामतः पञ्चयामधर्मप्राप्तौ । सातिचारं तु-मूलगुणघातिनो यद् व्रतारोपणं तच्च तच्चरित्रं च छेदोपस्थापनीयचरित्रं, तस्य लब्धिः छेदोपस्थापनीयचरित्रलब्धिः । चरित्रलब्धिविशेषे, भग०८ श०२ उ० ।

छेज्ज-अव्य० *[छेद्य]*
पत्रछेद्यादौ ग्रथितभेदे, दश०२ अ० ।

छेत्त-अव्य० *[क्षेत्र]*
स्थाने, ओह० रा० ।

छेत्ता-अव्य० *[छेतृ]*
छेदकर्तरि, छेत्ता भवति कर्णनासाविकर्तनतः । आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।

छेत्तुमण-अव्य० *[छेत्तुमनस्]*
उन्मूलयिषौ, आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ०

छेय-१ त्रि० *[छेक]*
प्रयोगज्ञे, नाया०१ श्रु०१ अ० । अणुओ० भग० । उवा० ।
निपुणे, सूय०१ श्रु०१३अ० ।नाया० ।पण्हा० ।रा० ।उव० । जीवा०
दक्षे, आव०म० । विशे० । नाया० । जंबू० ।
छेका दक्षा लाघवप्रहारेण दक्षतायुक्तघातेन साधिता निर्मिता यैस्ते तथा । पण्हा०३ अ० ।
अवसरज्ञे, कल्प०३ क्षण० ।
विघ्नपरिहारदक्षे, कल्प०२ क्षण० । जीवा० । आव०म० ।
अवसरज्ञे सप्ततिकलापण्डिते, उव० ।
छेका इत्येवमुपलभ्यमानाद्भुतप्रकारेण, एवमन्यत्रापि छेकाः प्रशस्तकाः प्रस्तवज्ञाः कलापण्डिता इति वृद्धा व्याचक्षते। उवा०७ अ० ।

छेय-२ पु० *[छेद]*
पर्यन्ते, नं० । पण्हा० ।
विनाशे, आव० म० ।
करपत्रादिभिः पाटने, आव०६ अ० । आचा० ।
'माईसु पंचरायाइ पज्जायछेदणं छेदो' । गच्छा०१ अधि० ।
यस्मिन् पुनरापतिते प्रायश्चित्ते संदूषितपूर्वपर्यायदेशावच्छेदः शेषपर्यायरक्षानिमित्तं द्रव्यादिसंदूषितशरीरकैदेशच्छेदनमिवशेषशरीरावयवपरिपालनाय क्रियते भवे छेदार्हत्वाच्छेदः ।वव०१ उ०

छेयकर-पु० *[छेदकर]*
अप्रशस्तमनोविनये, उव० । आचा० ।

छेयगंथ-पु० *[छेदग्रन्थ]*
उत्सारकशास्त्रे, जीवा०११ अधि० ।
ते च षट्-निशीथं, दशाश्रुतस्कन्धो, बृहत्कल्पः व्यवहारः पञ्चकल्पश्चेति ।

छेयण-न० *[छेदन]*
द्विधा करणे, नाया०१ श्रु० १८ अ० । अणुओ० । उत्त० । पण्हा० ।
परिच्छेकारिवचसि, बुह०१ उ० ।
जीवत एव हृदयोत्कर्तने, दशा०६ अ०। बुह०। निसि० ।
उत्तरोत्तरशुभाध्यवसायारोहणात् स्थितिह्रासजनने, आचा०१ श्रु०८ अ०८ उ० ।
छदनं शरीरस्यान्यस्य वा खड्गादिना । ठा०१ ठा०१ उ० ।

छेयणग-न० *[छेदनक]*
शस्त्रादौ, सूय०२ श्रु०३ अ० ।
राशेरर्द्धीकरणे, अणुओ० ।
अवजीवभेदे, सूय०२ श्रु०३ अ० ।
सूक्ष्मावयवे बुह०१ उ० ।

छेयबुद्धि-स्त्री० *[छेकबुद्धि]*
निपुणबुद्धौ, सूय०१ श्रु०१३ अ० ।

छेयवाइ-पु० *[छेकवादिन्]*

निपुणोऽहमित्येवं वादिनि पण्डिताभिमानिनि, सूय०१श्रु०१३ अ०

छेयसुत्त-न० *[छेदसूत्र]*

कल्याऽऽदौ, आव० म० । महानि० ।

छेयस्सुय-न० *[छेदश्रुत]*

छेदश्रुतानि कल्पव्यवहाराऽऽदीनि। तेषु, वव०१ उ०।

छेयायरिय-पु० *[छेकाचार्य]*

शिल्पाऽऽचार्ये, भग०७ श०९ उ०। रा०।

आचार्यः शिल्पोपदेशदाना, तस्योपदेशाद् मतिर्बुद्धिः, तस्या या कल्पनाविकल्पाः क्लृप्तिभेदास्ते तथा तैः। भग०७ श०९ उ०।

छेयारिड-न० *[छेदाई]*

शेषाङ्गरक्षार्थं व्यधिदूषितमङ्ग छिद्यते, एवं व्रतशेषपर्यायरक्षार्थम् अतीचारानुमानेन दूषितः पर्यायो यत्र छिद्यते तच्छेदार्हः। जीत० पर्यायच्छेदयोग्ये सप्तमे प्रायश्चित्ते ठा० १० ठा०।

छेलावण-न० *[छेलापन]*

देशी-हर्षनादाऽऽदौ, आव०म०।

छेलिय-न० *[सेण्टित]*

सेण्टनेऽनक्षरश्रुतभेदे, आव०म०। नं०। बुह०। आव०चू०।

छेवग-त्रि० *[क्षेपक]*

मारौ, वव०५ उ०।

आशवे, निसि०१ उ०।

छेवट्टसंघयण-न० *[सेवार्तसंहनन]*

सेवामार्त्तं सेवामागतमिति सेवार्तम्। सेवया ऋतं व्याप्तं सेवार्तम् तच्च संहननं च सेवार्तसंहननम्। अस्थिद्वयपर्यन्तस्पर्शनलक्षणे षष्ठे संहनने, ठा०६ ठा०।

शक्तिविशेषपक्षै त्वेवंविधदार्वादेरिव दृढत्वं संहननम् ठा०६ ठा०।

छेवट्टिसंघयण-न० *[छेदवर्तिसंहनन]*

यत्रास्थीनि परस्परं छेदेन वर्तन्ते न कीलिकामात्रेणाऽपि बन्धः। षष्ठे संहनने, तच्च प्रायो मनुष्याऽऽदीना नित्यं स्नेहाभ्यङ्गाऽऽ-दिरूपां परिशीलनामपेक्षते। जीवा० १ प्रति०।

छोडिय-त्रि० *[छोटित]*

मुक्तबन्धने, तं०। आव०म०।

छादते, आव०१ अ०।

छोडिया-स्त्री० *[छोटिका]*

तर्जन्यङ्गुष्ठध्वनौ। आव०।

छीमुं-कृ० *[छुटित्वा]*

पिधायेत्यर्थे, निसि०१ उ०।

छोभ-पु० *[क्षोभ]*

निस्सहाये, क्षोभणीये च। पण्हा०३ अ०

अभ्याख्याने, बुह०१ उ०।

छोभग-न० *[छोभक]*

अभ्याख्याने, वव०२ उ०।

छोभगदिण्ण-त्रि० *[छोभकदत्त]*

छोभकमभ्याख्यानं दत्तं यस्मिन् स छोभकदत्तः।

अभ्याख्याते, वव०२ उ०।

छोभवंदण-न० *[क्षोभवन्दन]*

आरभट्या वन्दने, आव०२ अ०।

छोल्लण-न० *[तक्षण]*

निस्तुषीकरणे, नाया० १ श्रु०७ अ०।

छोह-पु० *[क्षोभ]*

संभ्रमे, स्तेनकेभ्यः क्षोभे, राजाऽऽदिक्षोभे वा, तत्रास्थानेऽपि उच्चारयतो न कायोत्सर्गभङ्गः। आव०५ अ०।

'जातो छोहो, न नज्जइ केन हरिय त्ति ?' आव०म०१ अ०१ खण्ड। निःसहाये, क्षोभणीये च। पण्हा०३ अ०।

अभ्याख्याने, बुह०१ उ०। जंबू०। रा०।

छ-कारादि शब्द-परिभाषाः समाप्ताः

ज-कारादि शब्द-परिभाषा:

ज- त्रि० *[यद्]*

अनिर्दिष्टनिर्देश्ये, नं० । आव०म० । निसि० ।

'जे त्ति वा से त्ति वा के त्ति वा एवमादिनिवेसवायगा होंति। जेकारस्स निद्देस-निदरिसणं, जे असंतएण अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाइ' इत्यादि। निसि० ।

'जेगारो पुण अणिद्दिट्ठवायगुद्देसे, जहा तेण च जंबू० च पडुच्चे-त्यादि। अहवा–जहा इमो चेव जेगारो उस्सग्गऽववायचिएण पडिसेवियं व त्ति न निद्दिट्ठं गुरुं लहुं वा जयणाए, जयणाहि वा, तेण जेगारेण निद्देसा कृतेत्यर्थः। अहवा–जेकारेण अनिद्दिट्ठ-भिक्खुस्स निद्देसो कतो'। निसि० २० उ० ।

यदित्युद्देशः। आव०४ अ० ।

जइ-१ पुं० *[यति]*

यतते चारित्रं प्रति प्रयतो भवतीति यतिः।चरणोद्यत साधु, उव० यतते उत्तरगुणेषु विशेषत इति यतिः। विचित्रद्रव्याऽऽद्यभि-ग्रहाऽऽद्युपेते साधौ, रा० ।

तपस्विनि साधौ, आव०१ अ० ।

'यती' प्रयत्ने, 'जयमाणो जई होइ' निसि० २० उ०। धर्मक्रियासु प्रयत(प्रवर्त)माने, भग० ९ श० ३३ उ०। ओह० ।

प्रव्रजिते, निसि० ।

संयते, दश ०३ अ० ।

जइ-२ पुं० *[यति]*

'ब्रह्मचारी गृहस्थश्च, वानप्रस्थो यतिस्तथा।' इति लोक प्रसिद्धचतुर्थाऽऽश्रमिणि, पुप्फि० ।

जइ-३ पुं० *[यतिन्]*

विच्छेदे, आव०म० ।

विरतौ, अणुओ० ।

जइ-४ त्रि० *[जयिन्]*

जयवति, उव० ।

जइ-५ त्रि० *[जविन्]*

वेगवति, उव० ।

जइ-६ अव्य० *[यदि]*

अभ्युपगमे, निसि०१ उ०। जीवा०। आव० ।आव०म०। विशे०। यदीति पराभ्युपगमसंसूचकः। दश०१ अ० ।

जइअव्य-न० *[यतितव्य]*

प्राप्तेषु संयमयोगेषु प्रयत्नः कार्यः। भग०९ श०३३ उ० ऐहिकाऽऽमुष्मिकफलप्राप्त्यर्थिना सत्त्वेन प्रवृत्यादिलक्षणः प्रय-त्नः कार्यः। प्रयतितव्ये, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।

घटितव्य, निसि० ११ उ० ।

जइकिच्च- न० *[यतिकृत्य]*

साध्वनुष्ठाने, जीवा०२५ अधि० ।

जइच्छा- स्त्री० *[यदृच्छा]*

अनभिसंधिपूर्विकार्थप्राप्तौ, । आचा० ।

यदृच्छा तोऽपि नास्तित्वमात्मनः, का पुनर्यदृच्छा ? अनभि-संधिपूर्विकाऽर्थप्राप्तिर्यदृच्छा। आचा०१ श्रु० १ अ० १ उ० ।

जइच्छावाइ- पुं० *[यदृच्छावादिन्]*

अकारणोत्पत्तिवादिनि, नं० ।

यदपि यदृच्छावादिनः प्रलपन्ति–न खलु प्रतिनियमो वस्तूनां कार्यकारणभाव इत्यादि। तदपि च कार्याकार्यविवेचनपपटीयः शेमुषीविकलतासूचकम्, कार्यकारणभावस्य प्रतिनियततया संभवात्। । नं० ।

जइजण- पुं० *[यतिजन]*

साधुलोके, आव०९ अ०। सूय० ।

'वज्जेयव्वो य सया, सुयप्पमाओ जइजणेणं'। सूय० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।

जइजीयकप्प- पुं० *[यतिजीतकल्प]*

श्रीसोमप्रभसूरिविरचिते यतिजीतकल्पनामके प्रकरणे, एतद्वृत्तिश्च श्रीसाधुरत्नसूरिकृताऽस्ति गच्छा० १ अधि० ।

जइण-१ त्रि० *[जैन]*

जिनः केवली, तस्यायं जैनः। जिनसंबन्धिनि, विशे०। सर्वज्ञसंबन्धिनि, निसि० १ उ० ।

'जइणसासणवइरित्ता परा'। निसि० १ उ० ।

अतिशीघ्रगतौ, 'लंघव-पवण-जइण-समत्थे' रा०। जीवा० ।

जइण-२ त्रि० *[जयिन्]*

जयवति, उव० ।

शीघ्रो वेगवतां मध्येऽतिशीघ्रः। *उव० ६८*।

जइण-३ त्रि० *[जविन्]*

वेगवति, 'लंघव-वग्गण-धावण-धोरण-तिवई-जइण-सिक्खिअ गईणं।' वृत्तिर्यथा-जयिनी गमनान्त-रजयवती, जविनी वा वेगवती। उव० ।

जविन् शब्दः शीघ्रवचनः। अणुओ० ।

शीघ्रे, 'उवइयउप्पइयतुरियचवलजइणसिग्घवेगाहिं' उव० ।

जइण-४ त्रि० *[जविन]*

अतिशीघ्रगतौ, 'लंघण-पवण-जइण-पमद्दण-समत्थे' रा० ।

जइणवायाम- पुं० *[जविनव्यायाम]*

शीघ्रव्यापारे, 'लंघणपवणजइणवायामसमत्थे' उत्त० ६ अ० ।

जविनशब्दः शीघ्रवचन। अणुओ० ।

जइणवेग- पुं० *[जयिवेग]*

शेषवेगवद्वेगजयिनि वेगे, भग० ३ श० २ उ०

जइणी- स्त्री० *[जयिनी]*
जयवत्याम्, उव० ।
जइणी- स्त्री० *[जविनी]*
वेगवत्याम्, उव० ।
जइत्ता- अव्य० *[जित्वा]*
जयं कृत्वेत्यर्थे, ठा० ६ ठा० २ उ० ।
जइत्ता- स्त्री० *[जेत्री]*
रिपुबलजयकर्त्र्याम्, ठा० ६ ठा० २ उ० ।
जइदोस- पुं० *[यतिदोष]*
छन्दःशास्त्रप्रसिद्धयतिभङ्गे, अस्थानविरतौ, सर्वथा विरतौ वा। विशे० । अणुओ० ।
अस्थानविच्छेदे, तदकरणे वा। आव०म० ।
तदात्मके सूत्रदोषभेदे, बुह० १ उ० ।
जइधम्म- पुं० *[यतिधर्म]*
क्षान्त्यादिके दशविधे यतिधर्मे, उत्त०५ अ० ।
'खंती अज्जव मद्दव, मुत्ती तव संजमे य बोधव्वे। सच्चं सोयं आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो। उत्त० ५ अ० ।
जइपरिसा- स्त्री० *[यतिपर्षत्]*
चरणोद्यतसाधूनां पर्षदि, उव० ।
विचित्रद्रव्याद्यभिग्रहाऽऽद्युपेतानां साधूनां पर्षदि, रा० ।
जइय- त्रि० *[जयिक]*
जयावहे, जयिकेषु जयावहेषु सर्वशकुनेषु वायसादिषु। नाया० १ श्रु० ८ अ० । कल्प०
राजादीनां विजयकारिः शकुनः। *नाया०* ।
जइवंस- पुं० *[यतिवंश]* यतीनामन्वये, समवायाङ्गनामकचतुर्थाङ्गे च। तद्वशस्य तत्र समतसरणाधिकारे प्रतिपादितत्वात्। सम० ।
जइवा- अव्य० *[यदिवा]* प्रकारान्तरे, अथ वेत्यर्थे, व्या०१ उ० ।
जउगोल- पुं० *[जतुगोल]* लाक्षागोलके, ठा०४ ठा०४ उ० ।
जउण- पुं० *[यमुन]* तन्नामकराजविशेषे, संथा० ।
जउणराय- पुं० *[यमुनराज]* यमुनाख्यराजविशेषे, आव०४ अ० ।
जउणा- स्त्री० *[यमुना]* सा च गङ्गां संगच्छते। ठा०१ ठा०२ उ० ।
यमुनानदीकूले पूर्वादिग्वधूकण्ठनिवेशितमुक्ताफलकण्ठिकेव कौशाम्बी नाम नगरी। विशे० ।
जउप्पल- न० *[जयोत्पल]* विंशतिव्याकरणेषु तन्नामके व्याकरणे० कल्प०१ क्षण० ।
जउव्वेय- पुं० *[यजुर्वेद]*
'रिउव्वेए जउव्वेए, समावेए अथव्वणे।' विपा० १ श्रु०५ अ० ।
'चत्तारि वेया।' अणुओ० ।
जओ- अव्य० *[यतः]*
यस्मादित्यर्थे, यत्रेत्यर्थे च। उत्त० १ अ० ।

जं- अव्य० *[यत्]*
यस्मादित्यर्थे, निसि०१५ अ० ।
'**जं** पि य मए इमस्स धम्मस्स' इत्यादिसूत्रे यमिति विभक्ति-व्यत्ययाद् यः प्राणातिपात इति योगः। भाषामात्रे वा यदिति पदं व्याख्येयम्। पा० ।
जंकिंचिमिच्छापडिक्कमण- न० *[यत्किञ्चिन्मिथ्याप्रतिक्रमण]*
षड्भेदे-प्रतिक्रमणस्य पञ्चमे भेदे, 'जं किंचि मिच्छ त्ति।' खेल-सिङ्घाणाविधिनिसर्गाभोगानाभोगसहसाकारद्य संयम स्वरूपं यत् किञ्चित् मिथ्या असम्यक् तद्विषयं मिथ्येदमित्येवं प्रतिपत्तिपूर्वकं मिथ्यादुष्कृतकरणं यत् किञ्चिन्मिथ्याप्रतिक्रमणमिति।ठा०६ ठा०
यत्किञ्चिन्मिथ्या-यत्किञ्चिदाश्रित्य मिथ्या, तद्विषयं प्रतिक्रमणम् । *आव० ४ अ०* ।
यत्किञ्चनानुचितं तन्मिथ्या-विपरीतं दुष्ठु मे-मम इत्येवं वासना-गर्भवचनरूपा एकाऽन्या गर्हा। *ठा०* ।
जंगम- त्रि० *[जङ्गम]*
द्वीन्द्रियादित्रसजन्तौ, ठा० ।
जंगमविस- न० *[जङ्गमविष]*
जङ्गमप्राणिनां नखदंष्ट्रादिगते विषे, दुष्टस्य प्राणिनो दंष्ट्रा-विषादिना यत् पीडाकारि तदपि जङ्गमविषम्। ठा०६ ठा० ।
जंगल- न० *[जङ्गल]*
निर्वारिदेशे, बुह० ।
देशो द्विधा-अनूपो, जङ्गलश्च। नद्यादिपानीयबहुलोऽनूपः तद्विप-रीतो जङ्गलः, निर्जल इत्यर्थः। बुह०१ उ० ।
अहिच्छत्राप्रतिबद्धे आर्यदेशे च। पन्न० । सूय० ।
जंगिय- न० *[जाङ्गमिक]*
जङ्गमजन्त्ववयवनिष्पन्ने कम्बलादौ वस्त्रभेदे, जङ्गमास्त्रसास्तदव-यवनिष्पन्नं जाङ्गमिकं कम्बलादि।
जंगोल- न० *[जाङ्गोल]*
विषविघातक्रियाविधायके गदतन्त्रे, तद्धि सर्पकीटलूतादष्टविष-विनाशार्थं विविधविषसंप्रयोगप्रशमनार्थं च। विपा० १ श्रु०७ अ० ।
जंगोली- स्त्री० *[जङ्गोली]*
विषविद्यातन्त्रे, ठा० ८ ठा० ।
जंघट्ठिया- स्त्री० *[जङ्घास्थिका]*
ऊर्वाः प्रतिष्ठानभूते जङ्घाया उपरिभागवर्तिनि अस्थिनि, जङ्घा-स्थितकयोरूरुप्रतिष्ठितौ, तं० ।
जंघा- स्त्री० *[जङ्घा]*
जङ्घे जान्वोरधोवर्तिन्यौ। उत्त०२ अ० । जंबू० ।
जंघाचर- पुं० *[जङ्घाचर]*
पादचारिणी, अणुओ० ।

जंघाचारण- पुं० *[जङ्घाचारण]*
चारणमुनिभेदे, ये चारित्रतपोविशेषप्रभावतः समुद्भूतगमनागमनविषयलब्धिसंपन्नास्ते जङ्घाचारणाः।आव०म०।पन्न०।रा०। नं० लूतातन्तुनिर्वर्तितपुटकतन्तून् रविकरान् वा निश्रां कृत्वा जङ्घाभ्यामाकाशेन चरतीति जङ्घाचारणः। अस्य च सातिश्याष्टमलक्षणेन विकृष्टतपसा सर्वदैव तपस्यतो जङ्घाचारणलब्धिरुपजायते। विशे०।
जङ्घाव्यापरोपकृताश्चारणाः जङ्घाचारणाः। भग०२० श०८ उ०।

जंघाबल- न० *[जङ्घाबल]*
जानुसामर्थ्ये, जीवा०१ प्रति०।

जंघासंतारिम- त्रि० *[जङ्घासंतार्य]*
जानुदध्नादिके उदकादौ, आचा० २ श्रु०३ अ०२ उ०।

जंणाम- त्रि० *[यन्नाम]*
यानि नामानि यस्येति यन्नामा। यदभिधाने पण्हा० १ अ०।

जंत- न० *[यन्त्र]*
संयमने, प्रपञ्चविशेषे, रा०। जीवा०।
'विज्जाहरजमलजुगलजंताणि' जीवा०३ प्रति०।
उच्चाटनाद्यर्थकरलेखनप्रकारके, पण्हा० २ अ०।
यन्त्राणि नानाप्रकाराणि। जीवा०३ प्रति०। पन्न०।
तद्यथा-जलयन्त्रमरघट्टकादि। ठा०९ ठा०। पण्हा०। संथा०।
तिलयन्त्रं प्राणकादि। पण्हा०२ अ०।
जलसंग्रामादियन्त्राणि। पण्हा०२ अ०।
पाषाणक्षेपयन्त्रम्। उव० । सम०।
रथोपकरणविशेषाः। नाया०१ श्रु०१ अ०।

जंतपासग- पुं० *[यन्त्रपाशक]*
द्यूते जयार्थं यन्त्रस्थापिते पाशके, आव०म०।

जंतपिल्लणकम्म- न० *[यन्त्रपीडनकर्मन्]*
उपभोगपरिभोगाख्यसप्तमव्रतस्य कर्मतोऽतिचारेष्वेकादशेऽतिचारे, यन्त्रेण तिलेक्षुप्रभृतीनां यत्पीडनरूपं कर्म तत् यन्त्रपीडन कर्म तस्मिन्, उत्त०१ अ०। भग०। आव०चू०। आव०।

जंतपीलणकम्म- न० *[यन्त्रपीडनकर्म]*
'जंतपिल्लणकम्म' शब्दार्थे उत्त०१ अ०।

जंतपुरिस- पुं० *[यन्त्रपुरुष]*
लोहमये यन्त्रेण च पुरुषचेष्टाकारके, पुत्तलके, आव०म०।

जंतलट्ठी- स्त्री० *[यन्त्रयष्टी]*
यन्त्रोपयोगिनि लकुटे, दश०७ अ०।

जंतवाडयचुल्ली-
यन्त्रपाटकचुल्ली-यन्त्रभिक्षुपीडनयन्त्रं तत्प्रधानः पाटका यन्त्रपाटकः, तत्र चुल्ली यन्त्रपाटकचुल्ली। इक्षुरसपाकाय कृतायां चुल्ल्याम्, जीवा० ३ प्रति०। ठा०।

जंतु- पुं० *[जन्तु]*
जायते इति जन्तुः। उत्त०३ अ०। भग०।
प्राणिनि, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०। आचा०। आव०म०। विशे०।
जीवद्रव्ये, उत्त०१३ अ०।

जंतुग- न० *[जन्तुक]*
वनस्पतिविशेषे, सूय०२ श्रु०२ अ०।
तृणविशेषोत्पन्ने संस्तारके, आचा०२ श्रु०२ अ०३ उ०।

जंपंत- त्रि० *[जल्पत्]*
ब्रुवाणे, पण्हा० ८ अ०। सूय०।

जंपग- त्रि० *[जल्पक]*
भाषके, वृत्तिः बहुविधालीकशतजल्पकानाम्। पण्हा० ८ अ०।

जंपमाण- त्रि० *[जल्पमान]*
ब्रुवाणे, पण्हा०१ अ०।

जंपाण- न० *[जम्पान]*
द्विहस्तप्रमाणे चतुरस्रे वेदिकोपशोभिते गोल्लदेशप्रसिद्धे युग्यनाम्नि वाहने, कूटाकारच्छादितायां शिबिकायाम्, पुरुषप्रमाणायां स्थन्दमानिकायां च। ठा०४ ठा०३ उ०। अणुओ०। उव०। जं। जीवा०। नाया०।
पर्यङ्कादौ, दशा०६ अ०।

जंबवइ- स्त्री० *[जाम्बवती]*
कृष्णाग्रमहिष्याम्, आव०चू० १ अ०। आव०म०। विशे०।
सा च अरिष्टनेमेरन्तिके प्रव्रज्य संलेखनां कृत्वा सिद्धेत्यन्तकृद्दशानां पञ्चमवर्गस्थ षष्ठेऽध्ययने सूचितम्। अंत० ४ वर्ग०। ठा०।

जंबाल- पुं० *[जम्बाल]*
कर्दमे, ठा०३ ठा०३ उ०।
जरायौ च। जरायुजा जम्बालवेष्टिताः समुत्पद्यन्ते, ते च गोमहिषाजाविकमनुष्यादयः। सूय०१ श्रु०७ अ०।

जंबु- न० *[जम्बु]*
जम्बूफले, 'जम्बु भक्खेमो' आव०४ अ०।
जम्बूफलादिषु कृष्णो वर्णः। जंबू० ३ वक्ष०। पन्न०।

जंबुद्दीव- न० *[जम्बूद्वीप]*
'जंबुदीव' शब्दार्थे, जंबू० १ वक्ष०।
नवमशतके जम्बूद्वीपवक्तव्यताविषयः प्रथमोद्देशकः। *भग०* ।

जंबू- स्त्री० *[जम्बू]*
जम्बूः, स्त्रीलिङ्गवृत्तिर्वनस्पतिविशेषः। अणुओ०। पन्न०।
त्रयोदशजिनस्य चैत्यवृक्षो जम्बूः। ठा० १ ठा०१ उ०।
पृथ्वी परिणामरूपायां । सम० ८ सम० ।
जम्बूवृक्षाकारायां सर्वरत्नमय्यां सुदर्शनानाम्न्यां शाश्वतायामनावृतदेवावासभूतायां जम्ब्वाम्, एतयैवायं जम्बूद्वीपोऽभिधीयते। । जंबू० १ वक्ष०।

जंबूणय- न० *[जाम्बूनद]*

सुवर्ण विशेषे, आव०म०। जीवा०। जंबू०।

जाम्बूनदाजाम्बूनदनामकसुमवर्णविशेषमया रक्तारक्तवर्णा मृदवो मनोज्ञाः सुकुमाराः सुकुमारस्पर्शा ये प्रवाला ईषदुन्मीलित-पत्रभावाः पल्लवाः संजातपरिपूर्णप्रथमपत्रभावरूपा अङ्कुराः प्रथममुद्भिद्यमाना अङ्कुरास्तान् धनन्तीति जाम्बूनदरक्त मृदुसुकुमार प्रवालपल्लबाङ्कुरधराः। तत्र जाम्बूनदानि रक्तानि मृदूनि अकठिनानि सुकुमाराणि अकर्कशस्पर्शानि कोमलानि मनोज्ञानि प्रवालपल्लवाङ्कुरा यथोदितस्वरूपा अग्रशिखराणि य येषां ते तथा। जीवा० ३ प्रति०।

अन्ये तु जाम्बूनदमया अग्रप्रवाला अङ्कुरापरपर्याया राजता इत्याहुः। जीवा०३ प्रति०।

जाम्बूनदमयौ कलापौ ग्रीवाभरणविशेषौ योक्त्रे च कण्ठबन्धन-रज्जू प्रतिविशिष्टे शोभने यस्य स तथा। उत्त०४ अ०।

जाम्बूनदमयानि गात्राणि। रा०।

ईषद्रक्तस्वर्णम्, सिरिनिलयम्। *जंबू०*।

जंबूदाडिम- पुं० *[जम्बूदाडिम]*

लक्ष्मणार्यायाः पितरि स्वनामके राजविशेषे, महानि० ६ अ०।

जंबूदीव- पुं० *[जम्बूद्वीप]* न०।

जम्बवा सुदर्शनापरनाम्न्याऽनादृतदेवावासभूतया उपलक्षितो द्वीपः तत्प्रधानो वा द्वीपो जम्बूद्वीपः आव० १ अ०।

सर्वद्वीपसमुद्राणामभ्यन्तरीभूते स्वनामके द्वीपे, जीवा०३ प्रति०।

। सम०। अणुओ०।

जम्बूवृक्षोपलक्षितो द्वीपो जम्बूद्वीपः। *अनुयो०*।

जंबूदीवग- त्रि० *[जम्बूद्वीपक]*

जम्बूद्वीपस्येदं जम्बूद्वीपकम्। तं वा गच्छतीति जम्बूद्वीपगम्।

जम्बूद्वीपसत्के, ठा०४ ठा०२ उ०।

जम्बूद्वीपोत्पन्नमनुष्ये, पुं०। ठा०६ ठा०।

जंबूदीवपण्णत्ति- स्त्री० *[जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति]*

जम्बूद्वीपस्य प्रकर्षेण निःशेषकुतीर्थिकसार्थागम्ययथावस्थित-स्वरूपनिरूपणलक्षणेन ज्ञप्तिर्ज्ञापनं यस्यां ग्रन्थपद्धतौ, ज्ञप्तिर्ज्ञानं वा यस्याः सकाशात् सा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिः।

अथवा–जम्बूद्वीपं प्रान्ति पूरयन्ति स्वस्थित्येति जम्बूद्वीपप्राः जगतविर्षवर्षधाराद्यस्तेषां ज्ञप्तिर्यस्याः सकाशात् सा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिः। जंबू० १ वक्ष०।

स्वनाम्ना प्रसिद्धे पञ्चमोपाङ्गे इदं च ज्ञाताधर्मकथाख्यषष्ठाङ्ग-स्योपाङ्गम्। जंबू० १ वक्ष०।

जंबूपल्लवपविभत्ति- स्त्री० *[जम्बूपल्लवप्रविभक्ति]*

द्वात्रिंशद्विधदिव्यनाट्यस्य विंशतितमविधौ, रा०।

जंबूपेढ- न० *[जम्बूपीठ]*

यन्नाम्ना इदं जम्बूद्वीपं ख्यातं तस्याः सुदर्शनानाम्न्या जम्ब्वा अधिष्ठाने, जंबू० ४ वक्ष०।

जम्बूपीठम्। *जंबू०*।

जंबूफल- न० *[जम्बूफल]*

जाम्बवे, रा०।

फलविशेषः। *पन्न०*।

जंबूफलकालिया- स्त्री० *[जम्बूफलकालिका]*

जम्बूफलवत्कृष्णवर्णायाम्, जीवा० ३ प्रति०।

जम्बूफलसत्ककार्ष्ण्ये, जीवा० ३ प्रति०

रिष्ठाभा या मदिरा सा। *जंबू०*।

जंबूलय- पुं० *[जम्बूलक]*

लोकरूढ्यवसेये चञ्चुनामके जलाधारे पात्रे, उवा० ७ अ०।

जंबूवणं– पुं० *[जम्बूवन]*

जम्बूवृक्षा एव समूहभावेन यत्र स्थिता-स्तत्। *जंबू०*।

जंबूसंड- पुं० *[जम्बूखण्ड]*

स्वनामके ग्रामे, आव०म०। आव०चू०

यत्र विहारक्रमेणागत्य वीरजिनः गोशालश्च क्षीरसंमिश्रकूरं लब्धवान्। आव०म०।

जंबूसामि- पुं० *[जम्बूस्वामिन्]*

सुधर्मगणधरशिष्ये, आव०म०। ठा०

जंबूसाला- स्त्री० *[जम्बूशाला]*

जम्बूवृक्षशाखायाम्, 'एगो परिवायगो पोट्टं लोहहपट्टेण बंधित्ता जंबूसाल च गहाय हिंडइ, पुच्छितो भणइ–नाणेन पोट्टं फुट्टइ, तो लोहपट्टेण बद्धं जंबूसालं, जहा एत्थ जंबूदीवे नत्थि मम पडिवादी'। आव०म०

जंभग-१ पुं० *[जृम्भक]*

जृम्भन्ते विजृम्भन्ते स्वच्छन्दचारितया चेष्टन्ते ये ते जृम्भकाः।

तिर्यग्लोकवासिव्यन्तरविशेषदेवेषु, । भग० १४ श० ८ उ०।

आव० म०। नाया०। आव०।

जंभग-२ पुं० *[जृम्भक]*

व्यन्तरः। *आव०*।

जंभणी- स्त्री० *[जृम्भणी]*

तन्त्रप्रसिद्धे विद्याविशेषे, सूय० २ श्रु० २ अ०

जंभाइय- न० *[जृम्भित]*

विवृतवदनस्य प्रबलपवननिर्गमे, आव०५ अ०। आव०चू०।

जंभायंत- त्रि० *[जृम्भमाण]*

विजृम्भमाणे, शरीरचेष्टाविशेषं विदधाने, नाया०१ श्रु०१ अ०।

जंभायमाण- त्रि० *[जृम्भमाण]*

'जंभायंत' शब्दार्थे नाया०१ श्रु०१ अ०।

जंभियगाम- पुं० *[जृम्भिकग्राम]*
स्वनामके मगधदेशान्तर्गते ग्रामे, आचा०३ चू०।
अत्र हि देवेन्द्रेण भगवतो महावीरस्यामुकेषु दिवसेषु गतेषु ज्ञानं समुत्पत्स्यते इति कथितं, तद्ग्रामस्य बहिस्ताच्च ऋजुपालिकाया नद्यास्तीरे शालवृक्षस्याधो भगवतः केवलज्ञानमुत्पन्नम्। आव०म०। आव०चू०। कल्प०।

जंभियग्गाम- पुं० *[जृम्भिकग्राम]*
'जंभियगाम' शब्दार्थे, आचा० ३ चू०।

जक्ख-१ पुं० *[यक्ष]*
व्यन्तरविशेषे, रा०। सूर०। जीवा०। उव०। सम०। नाया०। उत्त०। अणुओ०।
अष्टभेदव्यन्तराणां मध्ये तृतीयभेदे यक्षाः। ते च त्रयोदशविधाः। तद्यथा–पूर्णभद्राः, माणिभद्राः, श्वेतभद्राः, हरितभद्राः, सुमनोभद्राः, व्यतिपातिकभद्राः, सुभद्राः, सर्वतोभद्राः मनुष्ययक्षाः, वनाधिपतयो, वनाहाराः, रूपयक्षाः, यक्षोत्तमाः। पन्न०१ पद।
वृक्षवासिसुरे, उत्त०१६ अ०।
देवे च।यथा यक्षेण देवेन आविष्टो यक्षाविष्ट। ठा०५ ठा०१ उ०।

जक्ख-२ पुं० *[यक्ष]*
स्वनामख्याते द्वीपे, समुद्रे च। चंद० २० पाहु०।

जक्ख–२ पुं० *[जक्ष]*
श्वान। *निसि०* १९ अ।

जक्खकद्दम- पुं० *[यक्षकर्दम]*
यक्षप्रियः कर्दम इव इति द्वौ यक्षनामानौ वणिजौ। स्वनामख्याते द्वीपे, समुद्रे च। चंद० २० पाहु०। ।
यक्षेद्वीपे यक्षभद्रयक्षमहाभद्रौ, यक्षे समुद्रे यक्षवरयक्षमहावरौ। चंद० २० पाहु०।
कुङ्कमागुरुकर्पूरकस्तूरिकाच-न्दनमेलापकः। *जीवा०* ।

जक्खग्गह- पुं० *[यक्षग्रह]*
यक्षावेशे, जीवा०३ प्रति०।
उन्मत्तताहेतौ यक्षकृतोपद्रवे, जंबू०२ वक्ष०।

जक्खणायग- पुं० *[यक्षनामक]*
वैश्रमणे, अणुओ०।

जक्खदिन्ना- स्त्री० *[यक्षदत्ता]*
स्थूलभद्रस्य सप्तानां भगिनीनां मध्ये द्वितीयायां भगिन्याम्, आव०। आव०चू०। कल्प०।

जक्खपडिमा- स्त्री० *[यक्षप्रतिमा]*
यक्षप्रतिकृतौ, 'दो जक्खपडिमाओ'। जीवा०३ प्रति०।

जक्खभद्द- पुं० *[यक्षभद्र]*
यक्षद्वीपाधिपतौ देवे, सूर० २० पाहु०। । चंद०।

जक्खमंडलपविभत्ति- स्त्री० *[यक्षमण्डलप्रविभक्ति]*
द्वात्रिंशद्विधनाट्यस्य दशमभेदान्तर्गते नाट्ये, रा०।

जक्खमह- पुं० *[यक्षमह]*
यक्षार्थविहितमहोत्सवे, आचा०२ श्रु०१ अ०२ उ०।
यक्षमह-व्यन्तरविशेषस्य प्रतिनियत दिवसभावी उत्सवः। *जीवा०* । *आचा०* ।

जक्खमहाभद्द- पुं० *[यक्षमहाभद्र]*
यक्षद्वीपाधिपतौ देवे, सूर० २० पाहु०। । चंद०।

जक्खमहावरो– पुं० *[यक्षमहावर]*
यक्षे। समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः। *जीवा०* ।

जक्खवर- पुं० *[यक्षवर]*
यक्षसमुद्राधिपतौ देवे, सूर०१९ पाहु०। ।

जक्खसिरी- स्त्री० *[यक्षश्री]*
सोमभूतिब्राह्मणस्य स्वनाम्न्यां स्त्रियाम्, नाया०१ श्रु०१५ अ०।

जक्खा-स्त्री० *[यक्षा]*
स्थूलभद्रस्य सप्तानां भगिनीनां मध्ये प्रथमायां भगिन्याम्, आव०। आव०चू०।

जक्खाइट्ठ- त्रि० *[यक्षाविष्ट]*
देवाधिष्ठिते, ठा० ५ ठा० २ उ०। ओह०।
जक्खाइट्ठो, पीयमज्जो वा जातो कायविक्खेवकिरियाओ दंसेइ।' आव०म०।

जक्खादित्तय- न० *[यक्षादीप्तक]*
एकस्यां दिशि अन्तराऽन्तरा दृश्यमाने विद्युत्सदृशे प्रकाशे, वव०७ उ०।
आकाशे व्यन्तरकृतज्वलने, भग०३ श०६ उ०।
नभसि दृश्यमानेऽग्निसहिते पिशाचे, जीवा०३ प्रति०। अणुओ०
'जक्खालित्तं जक्खादित्तं आगासे भवइ' आव०चू०४अ०। ठा०।

जक्खालित्तय- न० *[यक्षादीप्तक]*
'जक्खादित्तय' शब्दार्थे, जीवा०३ प्रति०।

जक्खावेस- पुं० *[यक्षावेश]*
देवाधिष्ठितत्वरूपे उन्मादे, ठा० २ ठा० १ उ०। बुह०।

जक्खिंद- पुं० *[यक्षेन्द्र]*
यक्षाणामिन्द्रे, ठा०४ ठा०१ उ०।

जक्खिणी-१ स्त्री० *[यक्षिणी]*
यक्षयोनिकायां व्यन्तरदेव्याम्,। आव०म०।

जक्खिणी-२ स्त्री० *[यक्षिणी]*
अरिष्टनेमेः प्रथमप्रवर्तिन्याम्,आव०म०।सम०।आव०चू०।अंत०

जक्खुत्तम- पुं० *[यक्षोत्तम]*
यक्षाणां त्रयोदशभेदेष्वन्तिमे भेदे, पन्न० १ पद०।

जग- पुं० *[जग]*

जन्तुषु, सूय० १ श्रु० ७ अ०।

जगत्-१ न० *[जगत्]*

गच्छति ताँस्तान् नारकादिभावानिति जगत्। भग०१२श०६उ०

पञ्चास्तिकायरूपे चराचरे, नं०।

लोके, संथा०।

लोकालोके, नं०।

संसारे, सूय०१ श्रु०६ अ०।

चराचरभूतग्रामे, सूय०१ श्रु०१५ अ०।

जगत्-२ न० *[जगत्]*

सकलसत्त्वे, नं०। दश०।

प्राणिसमूहे, सूय०१ श्रु०१० अ०।

संज्ञिपञ्चेन्द्रियसमूहे, नं०।

पृथिव्याम्, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०।

जगई- स्त्री० *[जगती]*

'भूयाणं जगई जहा।' जगती पृथ्वी। उत्त० १ अ०।

द्वीपसमुद्रसीमाकारिणि महानगरप्राकार कल्पे वज्रमये जम्बूद्वीप प्राकारे, जंबू० १ वक्ष०। जीवा०।

जगती-प्राकारकल्पा। *जंबू०* ।

जगईपव्वयग- पुं० *[जगतीपर्वतक]*

सूर्याभविमानपरिसरवर्ति-वनखण्डगतक्षुद्रवापीप्रदेशवर्तिषुपर्वत-विशेषेषु, रा०।

जगच्चंद– पुं० *[जगच्चन्द्र]*

आचार्यविशेषाः। *जंबू० ५४३*।

जगजीवजोणीवियाणय- पुं० *[जगज्जीवयोनिविज्ञायक]*

जगद् 'धर्मा धर्माकाशपुद्गलास्तिकायरूपं जगत् सचराचरम्' इति वचनात् जीवा इति जीवन्ति प्राणान् धारयन्तीति जीवा योनय इति (नं०)

युवन्ति तैजसकार्मणशरीरवन्तः सन्त औदारिकशरीरेण वैक्रिय-शरीरेण वाऽऽस्विति योनयो जीवानामेवोत्पत्तिस्थानानि,

ताश्च सचित्तादिभेदभिन्ना अनेकप्रकाराः।

जगच्च जीवाश्च योनयश्च जगज्जीवयोनयः तासां विविधमनेक-प्रकारमुत्पाद्यानन्तधर्मात्मकतया जानातीति विज्ञायको जगज्जी-वयोनिविज्ञायकः। केवलज्ञानिनि, नं०।

जगजीवण- पुं० *[जगज्जीवन]*

जगन्ति जङ्गमानि अहिंसकत्वेन जीवयतीति जगज्जीवनः। जिनेश्वरे, सम० ३० सम०। दशा०।

जगजीवविायाणय- पुं० *[जगज्जीवविज्ञायक]*

सर्वज्ञे, वव०३ उ०।

जगट्ठभासि-१ पुं० *[जगदर्थभाषिन्]*

जगत्यर्था जगदर्था ये यथा व्यवस्थिताः पदार्थाः तानाभाषितुं शीलमस्य जगदर्थभाषी तद्यथा–ब्राह्मण डोडमिति ब्रूयात्, तथा वणिजं किराटमिति, शूद्रमाभीरमिति, श्वपाकं चाण्डालमि-त्यादि। तथा काणं काण मिति, तथा खञ्जं कुब्जं वडभमित्यादि, तथा कुष्ठिनं क्षयिणमित्यादि, यो यस्य दोषस्तं तेन खरं परुषं ब्रूयात्,स जगदर्थभाषी। अप्रियसत्यभाषिणि, सूय०१श्रु०१३ अ०

जगट्ठभासि-२ पुं० *[जयार्थभाषिन्]*

जयार्थभाषी यथैवात्मनो जयो भवति तथैवाविद्यमानमप्यर्थं भाषये तच्छीलश्च, येन केनचित्प्रकारेणासदर्थभाषणेनाप्यात्मनो जयमिच्छतीत्यर्थः। असदर्थभाषणेनापि आत्मनो जयमिच्छति, सूय० १ श्रु०१३ अ०।

जगडिज्जंत- त्रि० *[जागर्यमाण]*

उत्थाप्यमाने, 'धन्नाणं तु कसाया, जगडिज्जंता वि परकसाएहिं। निच्छंति समुट्ठित्ता, सुनिविट्ठो पंगुलो चेव।' भत्त०।

कदर्थ्यमाना। *गच्छा०*।

जगणाह- पुं० *[जगन्नाथ]*

जगतः सकलचराचररूपस्य यथावस्थितस्वरूपप्ररूपणद्वारेण वितथप्ररूपणापायेभ्यः पालनाच्च नाथ इव नाथो जगन्नाथः। जिनेश्वरे, नं०।

जगणिस्सिय- त्रि० *[जगन्निश्रित]*

जगल्लोकस्तत्र निश्रित आश्रितः। लोकस्थिते वस्तुनि, 'जगणिस्सिएहिं भूएहिं' उत्त० ८ अ०।

जगती- स्त्री० *[जगती]*

वेदिकाधारभूता पाली। *ठा०*।

जगपागड- त्रि० *[जगत्प्रकट]*

जङ्गमजन्तूनां प्रत्यक्षप्रमाण सिद्धतया प्रकटे, पण्हा०१ अ०।

जगपियामह- पुं० *[जगत्पितामह]*

जगतां सकलसत्त्वानां नारकादिकुगतिविनिपातभयापायरक्षणात् पितेव पिता सम्यग्दर्शनमूलोत्तरगुणसंहतिस्वरूपो धर्मस्तस्यापि च पिता भगवान्, अर्थतस्तत्प्रणीतत्वात्। नं०।

जिनेश्वरे, ब्रह्मणि च। सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ०।

जगबंधु- पुं० *[जगद्बन्धु]*

जगतः सकलप्राणि समुदायरूपस्याव्यापादनोपदेशप्रणयनेन मुखस्यापकत्वात् बन्धुरिय बन्धुः। जिनेश्वरे, नं०।

जगय- न० *[यकृत्]*

आसस्स णं धावमाणस्स हिययस्स य जगयस्स य अंतराले।' भग० १० श० ३ उ०।

जगसव्वदंसि- न० *[जगत्सर्वदर्शिन्]*

जगतः सर्वभावदर्शिनि ज्ञातपुत्रे महावीरे, सूय०१श्रु०२अ०२ उ०

जगसहाव- पुं० *[जगत्स्वभाव]*
जगतः चराचरस्य स्वो भावः। 'जन्म मरणं च नियतं, बन्धुर्दुःखाय धनमनिर्वृतये। तन्नास्ति यन्न विपदे, तथाऽपि लोको निरालोकः।। इत्यादिलक्षणे विश्वस्वभावे, आव०४ अ०।

जगहित- त्रि० *[जगद्धित]*
पुरुषार्थोपयोगितया विश्वहितावहे, सम० ३२ सम०।

जगहिय- त्रि० *[जगद्धित]*
'जगहित' शब्दार्थे, सम०३२ सम०।

जगाणंद- पुं० *[जगदानन्द]*
जगतां संज्ञिपञ्चेन्द्रियाणाममृतस्यन्दिमूर्तिदर्शनमात्रतो निःश्रेयसाभ्युदयसाधकधर्मोपदेशद्वारेण चानन्दहेतुत्वात् ऐहिकामुष्मिक प्रमोद कारणत्वात् जगदानन्दः। जिनेश्वरे, नं०।

जगार- पुं० *[जकार]*
जवर्णे, यवर्णे, यच्छब्दे च। 'जगारुद्दिट्ठाणं तगारेणं निद्देसो कीरति'। निसि० १ उ०।
जन्ममर्मकर्म। *गच्छा०* ।

जग्गण- न० *[जागरण]*
अनिद्रागमने, पण्हा०१ अ०।

जग्गह- पुं० *[यद्ग्रह]*
यत् प्राप्यते तद् गृह्यतामित्याकारिकायां राजा ज्ञायाम्, 'रण्णा जग्गहो घोसितो'। आव०म०।
'यद्गहो घोषितस्तत्र, शतानीकमही भुजा। तदनीकभटाश्चम्पां, स्वेच्छया मुमुषुस्ततः'।। आव०।

जघण- न० *[जघन]*
स्त्रिया अग्रेतनकट्यधोभागे, कल्प०२ क्षण०।
सुंदरथणजघनवयणकरचरणनयणलावण्णविलासकलिया उव० भगरूपे स्त्रीकटेरग्रभागे च। तं०।

जच्च- त्रि० *[जात्य]*
स्वाभाविके, तं०। भग०। पण्हा०।
सजातीये अविजातिमति, जीवा०३ प्रति०।

जच्चंजण- न० *[जात्याञ्जन]*
मर्दितेऽञ्जने, कल्प०२ क्षण०।
प्रधाने, सौवीरके च। नाया०१ श्रु०१ अ०।

जच्चकंचणुज्जलंतरूव- त्रि० *[जात्यकाञ्चनोज्ज्वलद्रूप]*
जात्यकाञ्चनवत् उत्तमसुवर्णवत् उत्प्राबल्येन दीप्यमानं रूपं यस्य। उत्तमसुवर्णवद् दीप्यमानरूपे, कल्प० ३ क्षण०।

जच्चकणग- न० *[जात्यकनक]*
उत्तमसुवर्णे, । कल्प०६ क्षण०। पण्हा०।

जच्चकमलकोमल- त्रि० *[जात्यकमलकोमल]*
उत्तमजातिसंभवकमलवत् कोमले, कल्प० २ क्षण०।

जच्चण्णिय- त्रि० *[जात्यान्वित]*
विशिष्टजातिसंभूते, बुह०३ उ०।
सुकुलोत्पन्ने, सूय०१ श्रु०१० अ०।

जच्चन्निय- त्रि० *[जात्यान्वित]*
विशिष्टजाति संभूते, बुह०३ उ०।

जच्चसुवण्ण- *[जात्यसुवर्ण]*
पारमार्थिके सुवर्णे, दश०१० अ०।

जच्चसुवन्न- *[जात्यसुवर्ण]*
'जच्चसुवण्ण' शब्दार्थे, दश०१ अ०।

जच्चिर- न० *[यच्चिर]*
यावत्काले, वव०७ उ०।

जजुव्वेय- पुं० *[यजुर्वेद]*
द्वितीयवेदे, भग०२ श०१ उ०। उव०।
यजुर्वेदाहिते निर्णये, व्यापारे च। ठा०३ ठा०३ उ०।

जज्जरिय- त्रि० *[जर्जरित]*
'कुंतग्गभिन्नजज्जरिय सव्वदेहा' पण्हा०१ अ०।
राजीयुक्ते, ठा०४ ठा०४ उ०।

जज्जरियसद्द- पुं० *[जर्जरित]*
तन्त्रीकरटिकादिवाद्यशब्दवद् झर्झर (जर्जर) ध्वनियुक्ते शब्दे, ठा० १० ठा०।

जट्ठ- न० *[इष्ट]*
कृतयजने, 'अहो जन्निएण जट्ठं' आव०म०।
यज्ञे च। उत्त०२५ अ०।

जट्ठि- स्त्री० *[यष्टि]*
'जट्ठिमुट्ठिकोप्परप्पहारेहिं हणामि त्ति'। निसि०१ उ०।

जड- त्रि० *[जड]*
अपगतकर्तव्याकर्तव्यविवेके, आचा०१ श्रु०२ अ० २ उ०।
'जडा खलु भो जडं पज्जुवासंति' जडमूढापण्डितनिर्विज्ञानशब्दा एकार्थकाः रा०।

जडाभार-पुं० *[जटाभार]*
जटासमूहे,'जडाभारेण सव्वं सरीरं पाणिएण उल्लेता सामिस्स उवरिं ठाउं धुणइ'। आव०म०।

जडाल- पुं० *[जटाल]*
स्वनामख्याते ग्रहविशेषे, कल्प०६ क्षण०। चंद०।

जडि- पुं० *[जटिन्]*
जटाधरे, भग०९ श०१३ उ०। जंबू०। उव०।

जडियाइलग- पुं० *[जटाल]*
अष्टाशीतिग्रहाणां त्रिपश्चाशत्तमे, स्वनामख्याते ग्रहे, । चंद० २० पाहु०। । सूर० २० पाहु०।
'दो जडियाइलगा' ठा० २ ठा०३ उ०।

जडिआइलय- पुं० *[जटाल]*
'जडियाइलग' शब्दार्थे, चंद०२० पाहु०। ।

जडिल- पुं० *[जटिल]*
जटिलः स्कन्धदेशे केसरिणामिवाहीनां केसरसद्भावात्। भग०१५ श०१ उ०। नाया०। उत्त०।
वलितोद्वलिते च। 'एगं महं कोसं व गंडियं सुक्कं जडिलं गंठिल्लं' भग० १६ श०३ उ०।

जडिलय- पुं० *[जटिलक]*
राहौ, सूर० २० पाहु०। । चंद०२० पाहु०। ।

जड्ड- पुं० *[जड्ड]*
भाषया शरीरेण क्रियया वा जडे, स्थूले, दीक्षाऽनर्हे। पंच०चू०।

जढ- त्रि० *[त्यक्त]*
परित्यक्ते, दश०६ अ०। बुह०। आचा० । निसि०। संथा०।

जण- पुं० *[जन]*
जायते इति जनः। आव०म०। नं०। आचा०। विशे०। सूय०।
लोके, उत्त०५ अ०। सूय०। आव०। आचा०। सम०।
नगरीवास्तव्वलोके, 'पमुइअजणजाणवया'। रा०। भग०। उव०। निर० । नाया०।
प्राकृतपुरुषे, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०। आव०म०। सम०।
प्राणिनिवहे, । आचा०।
मातापितृपुत्रकलत्रादौ, कौटुम्बिकजने । आचा० १ श्रु० ६ अ०४

जणइआ- पुं० *[जनयितृ]*
पितरि, आचा०१ श्रु०६ अ०४ उ०।
जनयिता मेघो यो वृष्ट्या धान्यमुद्गमयति। ठा०९ ठा०९ उ०।

जणइता- पुं०
'जणइआ' शब्दार्थे, ठा०९ ठा०९ उ०।

जणक्खय- पुं० *[जनक्षय]*
लोकमरणेषु, भग०३ श०६ उ०।

जणक्खयकर- त्रि० *[जनक्षयकर]*
लोकविघातकारके, 'बहुजणक्खयकरा संगामा' ।पण्हा०४ अ०।

जणकलकल- पुं० *[जनकलकल]*
जनानामुपलभ्यमानवर्णविभागे ध्वनौ, रा०।

जणग- पुं० *[जनक]*
पितरि। सूय०। नाया०।
मातापित्रादौ, 'माता पिआ अक्कंदकारी जणगा रुदंति' आचा०१ श्रु०८ अ०८ उ०।
मातापित्रोः आचा०२ श्रु०४ अ०१ उ०।
जना लोकास्त एव जनकाः। जने, । सूय०१ श्रु०९ अ०।
चरमजिनसमयवर्तिनि तत्पूजके मिथिलानृपे च। 'मिथिलायां जनकराजा धरणनागकुमारेन्द्रःभगवतः पूजां कृतवान् ।आव०म०

जणणिकुच्छिमज्झ- न० *[जननीकुक्षिमध्य]*
मातृजठरान्तरे, तं०।

जणणिवह- पुं० *[जननिवह]*
महति नगरभोजिकादि वृन्दे, बुह० ४ उ०

जणणी- स्त्री० *[जननी]*
जनयति प्रादुर्भावयत्यपत्यमिति जननी। उत्त०२ अ०।
मातरि, प्रव०१ द्वार। कल्प०। आव० सूय०।
'आ स्तन्यपानज्जननी पशूनामा दारलाभाच्च नराधमानाम्। आ गेहकृत्यावधि मध्यमानामा जीवितात्तीर्थमिवोत्तमानाम्'।। कल्प० ४ क्षण०।

जणद्दण- पुं० *[जनार्दन]*
'काले प्रसुप्तस्य जनार्दनस्य, मेघान्धकारासु च शर्वरीषु' जगत्पीडके, त्रि०। आव० १ अ०।

जणपिच्छणिज्जरूव- त्रि० *[जनप्रेक्षणीयरूप]*
जनानां प्रेक्षणीयंद्रष्टुं योग्यं रूपं स्वरूपं यस्य तत् तथा। दर्शनीयरूपकलिते, कल्प० ३ क्षण०।

जणपुज्ज- त्रि० *[जनपूज्य]*
लोकमान्येषु, जीवा०१३ अधि०।

जणप्पमद्द- पुं० *[जनप्रमर्द]*
लोकचूर्णने, भग०७ श०९ उ०।

जणवह- पुं० *[जणवध]*
लोकघाते, भग०७ श०९ उ०।

जणबोल- पुं० *[जनबोल]*
जनानामव्यक्तवर्णे ध्वनौ, विपा० १ श्रु० १ अ०। भग०।

जणवय- पुं० *[जनपद]*
देशे०। पण्हा०५ अ०। तं०। ठा०। कल्प०। आचा०। उत्त०। बुह०। आव०म०।
जनानां लोकानां पदान्यवस्थानानि येषु ते जनपदाः। साधु-विहरणयोग्येषु अवन्त्यादिषु अर्धषड्विंशतिदेशेषु, आचा०१ श्रु०६ अ०५ उ०। राष्ट्रे रा०।
मनुष्यलोके, भग०७ श०६ उ०।
तन्निवासिलोकेषु च। 'हरंति धणधणदव्वजायाणि जणवय-कुलाणं' जनपदकुलानां लोकगृहाणाम्। पण्हा०३ अ०।
'जणवयपरिवायाए' जनपदानां लोकानां परिवादाय। आचा०१ श्रु०३ अ०२ उ०।
'जानपद' इत्यनुवादे तु तत्र भवे, 'जणवयवहाए' जनपदे भवाः जानपदाः कालद्रष्ट्रादयो राजादयो वा तद्वधाय। आचा० १ श्रु०३ अ०२ उ०।
विशिष्टलोकसमुदायो वा ग्रामादिवास्तव्य जनसमुदायः। *बुह०*।
जनपदः-जनवृन्दम्। *उत्त० ११३*।

जणवयकहा- स्त्री० *[जनपदकथा]*
मालवकादिदेश प्रशंसानिन्दाऽत्मिकायां देशकथायाम्, उत्त०१२ अ० । उव० ।

जणवयपाल- पुं० *[जनपदपाल]*
जनपदं पालयति इति जनपदपालः । जनपदरक्षके, उव० ।

जणवयपिया- पुं० *[जनपदपितृ]*
जनपदानां हितत्वात् । उव० ।
लोकपितरि, ठा०९ ठा० । सूय० ।

जणवयपुरोहिय- पुं० *[जनपदपुरोहित]*
जनपदस्य शान्तिकारितया पुरोहित इव जनपदपुरोहितः। जनपदशान्तिकरे, रा० । उव० । सूय० ।

जणवयप्पहाण- त्रि० *[जनपदप्रधान]*
लोकोत्कृष्टे,'भज्जाहिं य जणवयप्पहाणाहिं लालियंता' । पण्हा० ४ अ० ।

जणवयवग्ग- पुं० *[जनपदवर्ग]*
देशसमूहे, भग० ३ श०६ उ० ।

जणवयसच्च- न० *[जनपदसत्य]*
जनपदेषु देशेषु यद् यदर्थवाचकतया रूढं देशान्तरेऽपि तत् तदर्थवाचकतया प्रयुज्यमानं सत्यमवितथमिति जनपदसत्यम्। सत्यत्वं चास्यादुष्टं विवक्षाहेतुत्वात्। नानाजनपदेष्विष्टार्थप्रति-पत्तिजनक तया व्यवहारप्रवृतेः। दशविधसत्यस्य प्रथमे भेदे, ठा० १० ठा० ।

जणवयसच्चा- स्त्री० *[जनपदसत्या]*
जनपदमधिकृत्येष्टार्थ प्रतिपत्तिजनकतया व्यवहारहेतुत्वात् सत्या जनपदसत्या। दशविधायाः सत्यभाषायाः प्रथमे भेदे। पन्न० १२

जणवहा- स्त्री० *[जनव्यथा]*
लोकपीडायाम्, भग०७ श०९ उ० ।

जणवाय- पुं० *[जनवाद]*
जनानां परस्परेण वस्तुविचारणे, उव० ।
स्वनामख्याते कलाभेदे, जंबू०२ वक्ष० । सम० ।

जणवूह- पुं० *[जनव्यूह]*
जनसमुदाये, भग०९ श०३४ उ० ।
चक्राद्याकारजनसमूहे, जनव्यूहस्य शब्दोऽपि तदभेदाज्जनव्यूह एवोच्यते। विपा० १ श्रु० १ अ० ।

जणव्वूह- *[जनव्यूह]*
'जणवूह' शब्दार्थे, विपा० १ श्रु०१ अ० ।

जणसद्द- पुं० *[जनशब्द]*
जनानां परस्परालापरूपे ध्वनौ, उव० । रा० । दशा० ।

जणसम्मद्द- पुं० *[जनसंमर्द]*
जनानां परस्परं संघर्षणे, ठा०४ ठा० १ उ० ।

जणसंवट्टकप्प- त्रि० *[जनसंवर्तकल्प]*
जनसंवर्त इव लोकसंहारसदृशे, भग०७ श०९ उ० ।

जणाउल- त्रि० *[जनाकुल]*
भोजिकादिभिरिति प्रभूतैर्जनैराकीर्णे, वव० ४ उ० ।

जणाकुल- त्रि० *[जनाकुल]*
'जणाउल' शब्दार्थे, वव०४ उ० ।

जणिअ- त्रि० *[जनित]*
उत्पादिते, निसि०१ उ० । आव० ।

जणिय- त्रि० *[जनित]*
'जणिभ्' शब्दार्थे, निसि०१ उ० ।

जणुम्मि- स्त्री० *[जनोर्मि]*
जनसंबाधे, रा० ।

जणुल्लाप- पुं० *[जनोल्लाप]*
जनानां काक्का वर्णने, उव० ।

जणेमाण- त्रि० *[जनयत्]*
उत्पादयति, तं० ।

जणोह- पुं० *[जनौघ]*
जनसमुदाये, बुह०३ उ० ।

जण्ण- पुं० *[यज्ञ]*
यागे। नागादिनां पूजायाम् । आव० म० ।
यज्ञः-प्रतिदिवसं स्वस्वेष्टदेवतापूजा। *जंबू०* सत्यो (शौचो)दाहरणे समुद्रविजयराज्ये उच्छवृत्तिस्तापसः। *आव०* ।

जण्णइज्ज- न० *[यज्ञीय]*
स्वनामख्याते(जयघोषविजयघोषमुनिवक्तव्यताप्रतिबद्धे) उत्तरा-ध्ययनसूत्रस्य पञ्चविंशतितमेऽध्ययने, सम०३३ सम० । उत्त० ।

जण्णग्गि- पुं० *[यज्ञाग्नि]*
अग्निष्टोमानले, दश०१ चू० ।

जण्णजस- पुं० *[यज्ञयशस्]*
स्वनामख्याते नारदपितामहे तापसे।

जण्णजाइ- पुं० *[यज्ञयाजिन्]*
यजनशील, निसि०१ उ० । उव०भग०

जण्णट्ठ- पुं० *[यज्ञार्थ]*
यज्ञैकप्रयोजने द्विजे, यज्ञनिमित्ते, उत्त०२५ अ० ।

जण्णदत्त-१ पुं० *[यज्ञदत्त]*
स्वनामख्याते नारदपितरि। आव० । आव० चू० ।

जण्णदत्त-२ पुं० *[यज्ञदत्त]*
स्वनामख्याते कौशाम्बीवास्तव्ये सोमदत्ते, सोमदेवपितरि च। उत्त०१ अ० ।

जण्णदत्त-३ पुं० *[यज्ञदत्त]*
भद्रबाहुस्वामितृतीयशिष्ये, कल्प० ८ क्षण० ।

जण्णदेव- पुं० *[यज्ञदेव]*
क्षितिप्रतिष्ठितनगरीये चिलातपुत्रपूर्वभविकजीवे स्वनामख्याते द्विजे, आव०१ अ० ।

जण्णमुह- न० *[यज्ञमुख]*
यज्ञोपाये, उत्त०२५ अ० ।

जण्णवक्क- पुं० *[याज्ञवल्क्य]*
अनार्यास्त् पश्चातु सुतसायाज्ञवल्क्यादिभिः कृताः। आव०म० । याज्ञवल्क्यप्रभृतिऋषिप्रणीतधर्मसंहिताभिश्चिन्तयन्ति ते धर्म-चिन्तकाः। अणुओ० ।

जण्णवाड- पुं० *[यज्ञवाट]*
यज्ञस्थाने, आव०म० । उत्त० । आव० ।

जण्णसेट्ठ- पुं० *[यज्ञश्रेष्ठ]*
यज्ञेषु श्रेष्ठो यज्ञश्रेष्ठः। अथवा-श्रेष्ठो यज्ञः श्रेष्ठयज्ञः। उत्त० । उत्तमयज्ञे, 'वोसट्ठ काया सुइचत्तदेहा, महाजयं जयइ जण्णसेट्ठं' उत्त० १२ अ० ।

जण्णोवईय- न० *[यज्ञोपवीत]*
ब्राह्मणकण्ठसूत्रे, उत्त०२ अ० ।

जण्णोववीय- न० *[यज्ञोपवीत]*
'जण्णोवईय' शब्दार्थे, आव०म०

जइ- अव्य० *[यदि]*
'जति णं चोरं लभसि ततो ते जीवितं नऽत्थि'। निसि०१ उ० ।

जतमाण- त्रि० *[यतमान]*
प्राणिविषये यत्नवति, आचा०१ श्रु०९ अ०२ उ० ।
यत्नवति च। आचा०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

जति- अव्य० *[यदि]*
'जइ' शब्दार्थे, निसि०१ उ० ।

जतिय- त्रि० *[यावत्]*
यत्परिमाणे, 'अण्णं पि जतियं जाणंति' निसि० १९ उ० ।

जतुकुंभ- पुं० *[जतुकुम्भ]*
जातेषु घटे, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

जतुगोलसमाण- त्रि० *[जतुगोलसमान]*
डिम्भरूपक्रीडनकजतुगोलकप्रमाणे अनति महति, भग० १९ श०३ उ० ।

जतुगोलासमाण- पुं० *[जतुगोलसमान]*
'जतुगोलसमाण' शब्दार्थे, भग० १९ श० ३ उ० ।

जत्ता- स्त्री० *[यात्रा]*
यानं यात्रा। तपोनियमसंयोगादिषु प्रवृत्तौ, भग० १८ श० १० उ० । आव० ।
यात्रा द्विधाद्रव्यतो, भावतश्च। द्रव्यतस्तापसादीनां स्वक्रियो-त्सर्पमाना, भावतः साधूनामिति। आव० ३ अ० ।

जत्ताभयग- पुं० *[यात्राभृतक]*
यात्रा देशान्तरगमनं, तस्यां सहाय इति भ्रियते यः स यात्रा-भृतकः। देशाटनसमयोपयोगिन्यनुचरे ठा० ४ ठा०१ उ० ।

जत्ताभिमुह- त्रि० *[यात्राऽभिमुख]*
गमनाभिमुखे, उव० ।

जत्तासिद्ध- पुं० *[यात्रासिद्ध]*
कृतसमुद्रयात्रे, यो द्वादशवारं समुद्रमवग्राह्य कृतकार्यः क्षेमेण आयाति स यात्रासिद्धः। अन्येऽपि पोतेन गन्तुकामा यात्रासिद्धाः प्रेक्ष्यन्ते। रा० । आव० ।

ज त्ति जगारपविभत्ति- न० *[ज इति जकारप्रविभक्ति]* द्वा त्रिंशद्विधनाट्यभेदे, रा० ।

जत्तिय- त्रि० *[यावत्]*
यत्परिमाणे, 'जत्तियं गहियं तत्तियं ठियं।' आव०म० ।

जत्थ- अव्य० *[जत्थ]*
यस्मिन् यस्मिन्नित्यर्थे, 'उवहाणं जत्थ जत्थ जंबू० सुत्ते, एसा सुत्त-वीप्सा, जत्थ उद्देसगे, जत्थ अज्झयणे, जत्थ सुयक्खंधे, जत्थं अंगे कालुक्कालिय अंगाणंगेसु नेया।' निसि० १ उ० ।

जदि- अव्य० *[यदि]*
अभ्युपगमे, निसि०२ उ० ।

जदिच्छा- स्त्री० *[यदृच्छा]*
अभिसंधिराहित्ये, बुह०३ उ० ।

जदुणंदण- पुं० *[यदुनन्दन]*
श्रीकृष्णे, ठा०८ ठा० ।

जप- पुं० *[जप]*
मन्त्राभ्यासे, अणुओ० ।

जप्प- पुं० *[जल्प]*
छलजातिनिग्रहस्थान साधनोपालम्भपरे भाषणे, ठा० ६ ठा० । निसि० । सम० ।

जप्पभिइ- अव्य० *[यतःप्रभृति]*
यस्मात्कालादारभ्येत्यर्थे, 'तप्पभिइं च णं अम्हं एस दारए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते तप्पभिइं च णं अम्हे हिरण्णेण, जाव पीइसक्कारेणं अईव अइव वड्ढामो'। कल्प०४ क्षण० ।

जम- धा० *[यम]*
उपरतौ, प्राणातिपातविरत्यादिरूपेषु पञ्चमहाव्रतेषु। उत्त०२५अ० 'दो यमा' ठा० २ ठा० ३ उ० । नाया० ।

जमईय- न० *[यमतीत]*
यमतीतेत्याद्यक्षरे, आदाननाम्नि सूत्रकृताङ्गस्य पञ्चदशेऽध्ययने, सूय०१ श्रु०१५ अ० । सम० । पण्हा०आव०

जमकाइय- पुं० *[यमकायिक]*
दक्षिणदिक्पालदेवनिकायाश्रितेष्वम्बाद्यसुरविशेषेषु,पण्हा०१अ०

जमग-१ पुं० *[यमक]*
शकुनिविशेषे, जीवा०३ प्रति०।

जमग-२ पुं० *[यमक]*
स्वनामख्याते पर्वतविशेषे, जीवा०३ ।

जमगसमग- अव्य० *[यमकसमक]*
युगपदित्यर्थे, जंबू० ३ वक्ष०। जीवा०। नाया०।

जमजन्न- पुं० *[यमयज्ञ]*
यमाः प्राणातिपातविरत्यादिरूपाः पञ्च, त एव यज्ञो भावपूजा-त्मकत्वात् विवक्षितपूज्यं प्रति इति यमयज्ञः। अहिंसादियम-पालनरूपे भावयज्ञे, उत्त०२५ अ०।
'यम इव प्राण्युपसंहारकारितया यमः, स चासौ यज्ञः यमयज्ञः। हिंसामये द्रव्ययज्ञे, उत्त० २५ अ०।

जमणिया- स्त्री० *[यमनिका]*
यमनिकाख्ये साधूपकरणविशेषे, ठा० ६ ठा०।

जमदग्गि- पुं० *[यमदग्नि]*
परशुरामपितरि तापसविशेषे। आव०।

जमदग्गिजडा- स्त्री० *[जमदग्निजटा]*
बालके, गन्धद्रव्यविशेषे च। उत्त० ३ अ०।

जमदग्गिपुत्त- पुं० *[जमदग्निपुत्र]*
परशुराम, जीवा०३ प्रति०।

जमपुरिससंकुल- त्रि० *[यमपुरुषसंकुल]*
यमस्य दक्षिणदिक्पालस्य पुरुषा अम्बादयोऽसुरविशेषास्तैः संकुला ये ते तथा। परमाधार्मिककलितेषु, पण्हा० १ अ०।

जमपुरिससंनिभ- त्रि० *[यमपुरुषसन्निभ]*
परमाधार्मिकतुल्ये क्रूरजने पण्हा० ३ अ०।

जमप्पभ- पुं० *[यमप्रभ]*
चमरेन्द्रस्य यममहाराजस्य स्वनामके उत्पातपर्वते, ठा० १० ठा०

जमल- न० *[यमल]*
समश्रेणीके, रा० ।जंबू० ।उत्त० ।जीवा० ।भग० ।अणुओ०। नाया०।
'विज्जाहरजमलजुअलजंबू०तजुत्तं।' भग०९ श०३१ उ०।
समसंस्थितद्वयरूपे, रा०। उव०।
समे, नाया०१ श्रु०८ अ०। उव०।
सहवर्तिनि, 'जमलजुअलचंचलचलंतजीहं।' यमलं सहवर्ति युगलं द्वयं चञ्चलं यथा भवत्येवं चलन्त्योरतिचपलयोर्जिह्वयो-र्यस्य स तथा तम्; । भग०१५ श०१ उ०।
समानजातीययोर्युग्मे, रा०।

जमलकोट्ठिया- स्त्री० *[यमलकोष्टिका]*
समतया व्यवस्थापितकुशलिकाद्वये, उत्त०२ अ०।
'जमलकोट्ठियासंठाणसंठिया'। उत्त० २ अ०।

जमलजुअल- न० *[यमलयुगल]*
समश्रेणीके युग्मे, रा०। जीवा०।
समनशीलेषु द्वन्द्वेषु, रा०। आव०म०।
'विज्जाहरजमलजुअलाइं।' आव०म०।

जमलजुगलजीहाल– न० *[यमलयुगलजिभाल]*
यमं लाति-आदत्त इति यमला, यमला युग्मजिह्वा यस्य सः यमलयुग्मजिह्वः। *आव०* ५६६।

जमलज्जुणभंजग- त्रि० *[यमलार्जुनभञ्जक]*
श्रीकृष्णे, स हि पितृवैरिणौ विद्याधरौ रथारूढस्य गच्छतो मारणार्थं पथि विकुर्वितयमलार्जुनवृक्षरूपौ सरथस्य मध्येन गच्छतः चूर्णनप्रवृत्तौ हतवान्। पण्हा० ४ अ०।

जमलपद- न० *[यमलपद]*
प्रायश्चित्तविशेषे, 'यमलपदं नामतवकाला तेहिं विसेसिया कज्जंति पढमपए दोहिं लघु, बितियपए कालगुरु, ततियपए तवगुरु, चउत्थपए दोहिं वि गुरु।' निसि० १ उ०।

जमलपय- न० *[यमलपद]*
'जमलपद' शब्दार्थे, निसि०१ उ०।
'जमलपया' इति तपःकालयोः संज्ञा। बुह०१ उ०।
समयपरिभाषयाऽष्टानामष्टानामङ्कस्थानानां यमलपदम् संज्ञाया०। पन्न०१२ पद०।

जमलपाणि- पुं० *[यमलपाणि]*
मुष्टौ, भग० १९ श० ३ उ०।

जमलिय- त्रि० *[यमलित]*
यमलं नाम सजातीययोर्युग्मं, तत् संजातमेषां ते यमलिताः। रा०। जंबू०। जीवा०।
युग्मीभूय व्यवस्थितेषु, समश्रेणितया व्यवस्थितेषु च। नाया०१ श्रु० १ अ०। उव०। भग०।

जमलोइय- पुं० *[यमलौकिक]*
अम्बादिषु परमाधार्मिकेषु, सूय० १ श्रु०१२ अ०।

जमा- स्त्री० *[याम्या]*
यमो देवता यस्याः सा याम्या। भग०१० श०१ उ०।
दक्षिणस्यां दिशि, ओह०।

जमालि-१ पुं० *[यमालि]*
महावीरजिनस्य जामातरि स्वनामख्याते प्रथमे निह्नवे, आव०। उत्त०। ठा०। कल्प०।

जमालि-२ पुं० *[जमालिन्]*
महावीरजिनप्रथमनिह्नवे, विशे०।

जमालिअज्झयण- न० *[जमाल्यध्ययन]*
वाचनान्तरापेक्षया अन्तकृद्दशाध्ययनानां षष्ठेऽध्ययने, इदानीं तं न अन्तकृद्दशासु तदनुपलब्धेः। ठा० १० ठा०।

जमालिपभव- पुं० *[जमालिप्रभव]*
जमालेः प्रभव एतत्तीर्थापेक्षया प्रथमा उपलब्धिरेषां न पुनः सर्वथोत्पत्तिरेव, प्रागप्येवंविधाभिप्रायसम्भवात् तेऽमी जमालि-प्रभवाः। जमालिमताभ्युपगन्तृबहुरतनिह्नवेषु, उत्त०३ अ०।

जमावण- न० *[जन्मापन]*
विषमाणां समीकरणे, निसि० १ उ०।

जम्म- पुं०न० *[जन्मन्]*
उत्पत्तौ, ठा०६ ठा०।
गर्भवासतो योनिद्वारान्निस्सरणे। कर्मकृतप्रसूतौ, उव०।
तत्र जन्म चतुर्विधम्–अण्डज, पोतज, जरायुजम्, औपपातिकं च। अण्डजाः हंसादयः, पोतजा हस्त्यादयः, जरायुजा मनुष्याः, औपपातिकाः देवनारकाः। विशे०। आव०चू०। आव०म०।

जम्मंकुर- न० *[जन्माङ्कुर]*
पुनरुत्पत्तिरूपे अङ्कुरे। 'अज्ञानपांशुपिहितं पुरातनं कर्मबीजमविनाशि। तृष्णाजलाभिषिक्तं मुञ्चति जन्माङ्कुरं जन्तोः। आव०म०।

जम्मंतर-न० *[जन्मान्तर]*
अन्यान्यजन्मनि, पुनर्जन्मनि च। आव०म०

जम्मकहा- स्त्री० *[जन्मकथा]*
जातो मृतो वेत्येवं रूपायां वार्तायां, जन्मचरित्रे च। सूय० १ श्रु० १ अ० २ उ०।

जम्मजरामरण- न० *[जन्मजरामरण]*
जन्म च जरा च मरणं चेति जन्मजामरणानि। स्वस्वशब्द-प्रदर्शितावस्थात्रये. जन्मजरामरणान्येव करणानि साधनानि यस्य तत्तथा, तच्च गभीरदुःखं तदेव प्रभुक्षितं संचलितं प्रचुरं सलिलं यत्र स तथा। पण्हा० ३ अ०।

जम्मजीवियफल- न० *[जन्मजीवितफल]*
जन्मनो जीवितस्य च फले, भग० १५ श० १ उ०।

जम्मण- न० *[जन्मन्]*
उत्पादे, भग०२५ श०६ उ०। पण्हा०।
जन्मजरामरणव्याधीनां याः परिवर्तनाः पुनः पुनर्भवनानि ताभिररघट्टो यासाम्। पण्हा० १ अ०।

जम्मणगर- न० *[जन्मनगर]*
'जम्मणयर' शब्दार्थे, जंबू०५ वक्ष०।

जम्मणचरियणिबद्ध- त्रि० *[जन्मचरितनिबद्ध]*
तीर्थकरजन्माऽभिषेकनिबद्धे नाट्यविधौ, रा०।

जम्मणमहिमा- पुं० *[जन्ममहिमन्]*
जन्मोत्सवे, भग० १४ श०२ उ०।

जम्मणयर- न० *[जन्मनगर]*
यस्मिन् नगरे यस्य जन्म भवति तत्तस्य जन्मनगरम्। उत्पत्तिपुरे, जंबू० ५ वक्ष०।

जम्मदंसि- त्रि० *[जन्मदर्शिन्]*
जन्मनः स्वरूपतो वेत्तरि, परिहरति, आचरति च। 'जे गब्भदंसी से जम्मदंसी, जे जम्मदंसी से मारदंसी'आचा० २श्रु०३अ०४उ०

जम्मदोस- पुं० *[जन्मदोष]*
जन्मदोषनिमित्तके तज्जातदोषविशेषे, स च–'कच्छोल्लुयाए घोडीए जाओ जो गद्दहेण छड्डेण। तस्स महायणमज्झे, आयारा पायडा हुंति।।१।।' इत्याद्यनेकविधः। जन्मसहभाविदोषे च। ठा० १० ठा०।

जम्मपक्ख- त्रि० *[जन्मपक्ष]*
स्वयमेव पक्षीभूते, विपा० १ श्रु० ८ अ०

जम्मपवाह- पुं० *[जन्मप्रवाह]*
भवपरंपरायाम्, आव० ३ अ०।

जम्मप्पबाह- पुं० *[जन्मप्रवाह]*
'जम्मपवाह' शब्दार्थे, आव० ३अ०

जम्मभूमि- स्त्री० *[जन्मभूमि]*
जन्मस्थाने, 'अवसेसा तित्थयरा, निक्खंता जम्मभूमीसु'। सम०

जम्मा- स्त्री० *[याम्या]*
दक्षिणस्यां दिशि, आव०म०। विशे०।

जम्माभाव- पुं० *[जन्माभाव]*
अनुत्पत्तौ, दश० ४ अ०।

जम्मावट्ट- पुं० *[जन्मावर्त]*
भवचक्रे, 'रागद्वेषरसाविद्धं, मिथ्यादर्शनदुस्तरम्। जन्मावर्ते जगत् क्षिप्तं, प्रमादाद् भ्राम्यते भृशम्' आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ०

जम्मुप्पत्ति- स्त्री० *[जन्मोत्पत्ति]*
जन्मना कर्मकृतप्रसूत्या उत्पत्तिर्या सा तथा। उव०।
प्रसवेनोत्पत्तौ, 'सिद्धाणं कम्मवीरा दच्छे पुणरवि जम्मुप्पत्ती न भवति' उव०।

जय-१ पुं० *[जय]*
परैरनभिभूयमानतायाम्, प्रतापवृद्धौ, रा०। नाया०।
'जएणं विजएणं बद्धावेंति।' रा०। विपा० । उव०। कल्प० निर० तत्र जयः परैरनभिभूयमानता, प्रतापवृद्धिश्च। विजयस्तु परेषाम् असहमानानामभिभवोत्पादः। रा०।
जयः सामान्यो विघ्नादिविषयः। विजयः स एव विशिष्टतरः प्रचण्डप्रतिपन्थादिविषयः उव०।
जयः स्वदेशे। विजयः परदेशे कल्प०१ क्षण०।
जयविजयेत्यादिभिर्मङ्गलाभिधायकवचनशतैरित्यर्थः। उव०।

जय-२ पुं० *[जय]*
स्वनामख्याते एकादशे चक्रवर्तिनि, । सम०।

जय-३ पुं० *[जय]*
विमलजिनप्रथमभिक्षादातरि, सम०। आव०म०।

जय-४ पुं० *[जय]*
तिथिशब्दस्य पुंसि निर्दिष्टतया तद्विशेषवाचकानां नन्दादिशब्दानामपि पुंसि प्रयोगे तु जय इति तृतीयाष्टमीत्रयोदशीषु तिथिषु, जंबू० १ वक्ष०।

जय-५ न० *[जगत्]*
अतिशयगमनात् जगत्। भग०२० श०२ उ०।

जय-६ न० *[जगत्]*
जीवे, पञ्चास्तिकायात्मके लोके, नं०।

जय-७ पुं० *[यत]*
यतमाने, त्रि०। सूय०।
उपयुक्ते, आव०४ अ०।

जयंत- न० *[जयन्त]*
द्वीपसमुद्राणां चतुर्षु द्वारेषु स्वनामख्याते पश्चिमदिग्वर्तिनि द्वारे, । जीवा०।

जयंती- स्त्री० *[जयन्ती]*
स्वनामख्यातायां वीरजिनपरमश्राविकायाम्, बुह० १ उ०।

जयघोस- पुं० *[जयघोष]*
स्वनामख्याते मुनौ, । उत्त० ।

जयजयसद्द- पुं० *[जयजयशब्द]*
जयजयारवे, उव०।

जयजयारव- पुं० *[जयजयारव]*
जय जयेत्याशीर्वादशब्दे, 'जय जय नंदा जय जय भद्दा जय जय खचियवरवसहा' संभ्रमे द्विर्वचनम्।अथवा–जयत्वं जगन्नन्द ! भुवनसमृद्धिकारक ! एवं जगद्भद्र ! जगत् कल्याणकर ! उव० 'जय जय नंदा धम्मेणं० जय जयेत्याशीर्वचनं भक्तिसंभ्रमे च द्विर्वचनं नन्द वर्द्धस्व धर्मेण एवं तपसाऽपि। जय जय विपक्षं, केन धर्मेण इह नन्देत्येवम क्षरघटना कार्या। भग०९ श०३३ उ०

जयट्ठभासि- पुं० *[जयार्थभाषिन्]*
यथैवात्मनो जयो भवति तथैवाविद्यमानमप्यर्थं भाषते तच्छीलः जयार्थभाषी। येन केन प्रकारेणासदर्थभाषणेनाप्यात्मनो जयमिच्छति जने, सूय० १ श्रु० १३ अ०।

जयण- न० *[यजन]*
यागे, पाठपूर्वकं विप्राणां संध्यार्चनरूपायां पूजायाम्, अणुओ०। अभयस्य दाने च, पण्हा० १ अ०।

जयण- न० *[यतन]*
प्राणिरक्षणे, पण्हा०१ अ०।
प्राप्तेषु योगेषु उद्यमकरणे। अनुत्त० ।
यतनं प्राप्तेषु योगेषु उद्यमकरणं घटनं चाप्राप्तानां तेषां प्राप्त्यर्थं यत्नः यतनघटनप्रधाना योगाः संयमव्यापाराः मनःप्रभृतयो वा चारित्रे तत्तथा। अनुत्त० ३ वर्ग०।

जयणा- स्त्री० *[यतना]*
यत्ने, निसि०१ उ०।
स्वशक्त्याअकल्पपरिहारे, आव०चू० ६ उ०।
पृथिव्यादिष्वारम्भपरिहाररूपे यत्ने, दश० ४ अ०।
अष्टादशानां शीलाङ्गसहस्राणां संपूर्णानाम् अखण्डिता विराधितानां यावज्जीवमहर्निशमनुसमयं धरणरूपायां कृत्स्नायां संयमक्रियायाम्, महानि० २ चू०।
उपयुक्तस्य युग्मात्रदृष्टत्वे च। आचा० २ श्रु०३ अ०१ उ०।
तिपरिखा अ लंभे पछा पणगहाणी। *बुह०* ।
तिपरियट्टं काऊण अप्पदुप्पणो पच्छा पणगादि पडिसेवणा पडिसेवति एस जयणा। *निसि०*।
जहा जीवोवघातो न भवतीत्यर्थः। *निसि०* ।
असङ्कभावस्स अववादपत्तस्स जो अकप्पपडिसेवणे जोगो तत्थिमं रागदोसवियुत्तत्तणं सा जयणा। *निसि०* ।
यतना-बहुदोषत्यागेनाल्पदोषाश्रयणम्। *उव०*। *उत्त०*।
प्रयत्नकरणलक्षणा। *दश० ७४*।

जयणा- स्त्री० *[जयना]*
जयनशीलायाम्, 'जयणाए गइए'। कल्प० २ क्षण०।
जयिन्या विपक्षजेतृत्वेन। *भग०* ।

जयणाजुत्त- त्रि० *[यतनायुक्त]*
यतनोपेते, निसि० १ उ०।

जयणाम- पुं० *[जयनामन्]*
जयाऽभिधाने एकादशे चक्रवर्तिनि, ठा० १० ठा०। आव०।

जयणावरणिज्ज- न० *[यतनावरणीय]*
चारित्रविशेषवीर्यान्तरायलक्षणे कर्मणि, भग० ९ श० ३१ उ०।

जयदेव- पुं० *[जयदेव]*
ऋषभदेवस्वामिनश्चतुरशीतितमे पुत्रे, कल्प० ७ क्षण०।

जयदेववागरण- न० *[जयदेवव्याकरण]*
जयदेवकृतव्याकरणे, कल्प ०१ क्षण०।

जयदेवसूरि- पुं० *[जयदेवसूरि]*
भक्तामरकर्तुर्मानतुङ्गसूरेः पट्टवर्तिनो वीरसूरेः शिष्ये,गच्छा० ४ ।

जयद्दह- पुं० *[जयद्रथ]*
सिन्धुदेशाधिपवृद्धक्षेत्रसुते राजभेदे,
स च धृतराष्ट्रकन्यां दुःशल्यामुपयेमे। 'गंगेनविदुरद्दोणजयद्दहं' नाया०१ श्रु०१६ अ०।

जयपुर- न० *[जयपुर]*
नगरविशेषे। वर्त्तमानकालवर्तिनि मरुधरमण्डलश्रृङ्गारे स्वनामाख्याते रम्यनगरे च। पिंड०।

जयप्प- पुं० *[यतात्मन्]*
ध्यानैकनिषण्णे, आव०म०।

जयमाण- त्रि० *[यतमान]*
क्रियायां यत्नपरे, दश०९ अ०१ उ०। ओह०।
संयमानुष्ठाने परिसमन्तान्मूलोत्तरगुणेषु उद्यमं कुर्वति, सूय०१ श्रु०९ अ०। आचा०। संविग्ने, वव०१ उ०।
'जतमाणा तत्थ तिहा, नाणत्था दंसणचरित्ते।' आव०म०।

जयसंध- पुं० *[जयसन्ध]*
पुण्डरीकनृपस्यामात्ये, 'जयसंधो अमच्चो' आव०चू० ४ अ०।

जयसंधि- पुं० *[जयसन्धि]*
पुण्डरीकनृपस्यामात्ये, 'जयसंधिणा अमच्चेण' आव० ४ अ०।

जयसद्द- पुं० *[जयशब्द]*
मंगलाय जयशब्दः कृतो जनेनालोके यस्य स तथा। उव०।
'जयसद्दघोसएणं' जयेतिशब्दस्य य उद्घोषः उद्घोषणं तेन मिश्रो यः स तथा तेन। भग०९ श०३३ उ०।

जया-१ स्त्री० *[जया]*
वासुपूज्यजिनमातरि, । आव०।

जया-२ स्त्री० *[जया]*
तृतीयाऽष्टमीत्रयोदशीरूपासु तिथिषु, सूर० १० पाहु०। । जीवा० गणि०। चंद०१० पाहु०।

जया-३ स्त्री० *[जया]*
मघवन्नाम्नस्तृतीयचक्रवर्तिनः स्त्रीरत्ने, । सम० ।

जया-४ स्त्री० *[जया]*
गुच्छास्तु वृन्ताकीकर्पासीजयाऽऽढकीतुलसीकुस्तुम्भरीपिप्पली-नीलादयः। आचा० १ श्रु०१ अ०५ उ०।

जयाणंद- पुं० *[जयानन्द]*
विबुधप्रभसूरिशिष्ये, 'हरिभद्रमित्रो ह्यभवत्, सूरिः पुनरेव मान-देवगुरुः। विबुधप्रभश्चसूरिः, तस्मात्सूरिर्जयानन्दः'। सोमतिलक सूरिशिष्ये च। गच्छा० ४ अधि०।

जर- पुं० *[ज्वर]*
स्वनामख्याते रोगभेदे,। विपा० । नाया०।

जरकुमार- पुं० *[जराकुमार]*
श्रीकृष्णज्येष्ठभ्रातरि, गच्छा० २ अधि०।

जरग्ग- त्रि० *[जरत्क]*
जीर्णे, 'जरग्गओवाणहे त्ति वा' जरत्का जरती जीर्णेत्यर्थः सा चासौ उपानच्च जरत्कोपानत्। अनुत्त० ३ वर्ग०।

जरग्गव- पुं० *[जरद्गव]*
जीर्णबलीवर्दे, बुह०१ उ०। सूय०।
'जरग्गवपाए' जरद्गवपादः। अनुत्त० ३ वर्ग०।

जरठ- त्रि० *[जरठ]*
निर्धूतानि अपनीतानि जरठानि पाण्डुपुत्राणि येभ्यस्ते निर्धूतजरठ पाण्डुपत्राः। रा०। उव०।

जरपाग- पुं० *[जरापाक]*
षष्टिवर्षपर्याये सप्ततिवर्षजन्मके मानुषे, वव० ७ उ०।

जरय- न० *[ज्वरक]*
गावलीगतमहानरकविशेषे, ठा० ६ ठा०।

जरयमज्झ- पुं० *[जरकमध्य]*
उत्तरदिगावलीगतमहानरकविशेषे, ठा० ६ ठा०।

जरयावत्त- न० *[जरकावर्त]*
पश्चिमदिगावलीगतमहानरकविशेषे, ठा० ६ ठा०।

जरयावसिट्ठ- न० *[जरकावशिष्ट]*
दक्षिणदिगावलीगतमहानरकविशेषे, ठा० ६ ठा०।

जरला– स्त्री० *[जरला]*
चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषाः। *जीवा० ३२*।

जरा- स्त्री० *[जरा]*
जरणं जरा। वयोहानौ, भग०१६ श०२उ०। आव०म०। उत्त०। आव०। पन्न०। सूर०
वृद्धत्वे, संथा०। तं०। ठा०। उत्त०।

जल-१ न० *[जल]*
उदक, सूय० १ श्रु०५ अ०२ उ०।
पानीय, उत्त० ३५ अ०।

जल-२ पु० *[जल]*
जलकान्तेन्द्रस्य प्रथमे लोकपाले, ठा० ४ ठा०१ उ०। भग०।

जल-३ त्रि० *[जल]*
अप्कायजीवे, पण्हा०।

जल-४ धा० *[ज्वल्]*
देदीप्यति, सूय० १ श्रु०५ अ०१ उ०। रा०।

जलंत- त्रि० *[ज्वलत्]*
देदीप्यमान, सूय०१ श्रु०२ अ०। ठा०। उत्त०।
ज्वालां मुञ्चति, उत्त०११ अ०। महानि०।
जाज्वल्यमाने उत्त०१९ अ०। कल्प०।

जलकंत-१ पुं० *[जलकान्त]*
मणिविशेषे, उत्त०३६ अ०। पन्न० सूय०। आव०म०।

जलकंत-२ पुं० *[जलकान्त]*
उदधिकुमाराणां दक्षिणेन्द्रे,भग०३ श०८ उ०।ठा०।पन्न०। सम०

जलकंत-३ पुं० *[जलकान्त]*
जलकान्तेन्द्रस्य तृतीये लोकपाले ठा० ४ ठा० १ उ०।

जलकीडा- स्त्री० *[जलक्रीडा]*
देहशुद्धावपि जलेनाभिरतौ, भग० ११ श०९ उ०।

जलकीला- स्त्री० *[जलक्रीडा]*
'जलकीडा' शब्दार्थे, भग०११ श०९ उ०।

जलग- पुं० *[ज्वलक]*
वैश्वानरे, पिंड० ।
जलगय- पुं० *[जलगत]*
पूतरकादित्रसेषु, शेवालादिवनस्पतिकायिकजीवेषु, पण्हा०१अ०
जलचक्कवाल- न० *[जलचक्रवाल]*
तोयमण्डले, पण्हा० ३ अ०
जलचार- पुं० *[जलचार]*
नावादिना संचरणे, आचा० २ श्रु०५ अ० १ उ० ।
जलचारण- पुं० *[जलचारण]*
जलपरिणामकुशलेषु, जलमुपेत्य वापीनिम्नगासमुद्रादिष्वप् कायिकजीवानविराधयत्सु, जले भूमाविव पादोत्क्षेपकुशकेषु, गच्छा० २ अधि० ।
जलचारिया- स्त्री० *[जलचारिका]*
चतुरिन्द्रियजीवभेदे, पन्न० १ पद
जलजलित- त्रि० *[जाज्वल्यमान]*
देदीप्यमाने, कल्प०२ क्षण० ।
जलट्ठाण- न० *[जलस्थान]*
जलाशयेषु, पन्न०२ पद० ।
जलण-१ त्रि० *[ज्वलन]*
अग्नौ, सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ० । आव० ।
वैश्वानरे, आव०म० ।
आत्मानं चारित्रं वा ज्वालयति दहतीति ज्वलनः । क्रोधे, सूय० १ श्रु०१ अ०४ उ० ।
अग्नेरुद्दीपने, पण्हा०१ अ० ।
शैत्यापनोदनाय शोधनार्थं वा वैश्वानरस्य ज्वलने, प्रकाशकरणाय दीपप्रबोधने, पण्हा० ३ अ० ।
भस्मीकरणे च । गच्छा०२ अधि० ।
जलण-२ त्रि० *[ज्वलन]*
पाटलिपुत्रे हुताशनब्राह्मणभार्यायां ज्वलनशिखायां जाते स्वनाम ख्याते पुत्रे, आव०चू०४ अ० । आव० ।
जलण-३ त्रि० *[ज्वलन]*
ज्ञानादिगुणोद्भासने, । निसि० ।
जलणप्पवेस- न० *[ज्वलनप्रवेश]*
बालमरणभेदे, निसि०११ उ० । भग० ।
जलणसिहर- पुं० *[ज्वलनशिखर]*
वैताढ्यगिरेर्दक्षिणे शिवमन्दरे नगरे स्वनामख्याते, राज्ञि, । उत्त० १३ अ० ।
जलणसिहा-१ स्त्री० *[ज्वलनशिखा]*
स्वनामख्यातायां पाटलिपुत्रनगरवास्तव्यहुताशनब्राह्मणभार्या-याम्, आव०४ अ० । आव०चू० ।
जलणसिहा-२ स्त्री० *[ज्वलनशिखा]*
विजयपुरनगरवास्तव्यरुद्रसोमद्विजभार्यायां च । आव० ।
जलदिट्ठि- स्त्री० *[जलदृष्टि]*
उदक-विषये लोचनप्रसरलक्षणयोर्मिलितयोरर्थयोः,आव०३ अ०
जलपक्खंदण- न० *[जलप्रस्कन्दन]*
बालमरणभेदे निसि० ११ उ० ।
जलपट्टण– न० *[जलपत्तन]*
जलेण जस्स भंडं आगच्छति । *निसि०* ।
जलपट्टणं पुरिमाती । *निसि०* ।
जलपत्तनं –यत्र जलपथेन भाण्डानामागमस्तदाद्यम् । *पण्हा०*
जलप्पभ- पुं० *[जलप्रभ]*
उदधिकुमाराणां स्वनामख्याते उत्तरेन्द्रे, ठा०२ठा०३उ० । भग० ।
जलकान्तेन्द्रस्य स्वनामख्याते चतुर्थे लोकपाले, ठा० ४ ठा०१ उ० । भग० ।
जलप्पवेस- पुं० *[जलप्रवेश]*
जले प्रविश्य म्रियते । बालमरणभेदे, ठा० २ ठा०४ उ० । भग० । निसि० ।
जलबुब्बुअ- न० *[जलबुद्बुद]*
जलस्य गोलाकारे विकारभेदे, 'विसयसुहं जलबुब्बुअसमाणं' उव० ।
जलभूमिआ- स्त्री० *[जलभूमिका]*
जलाधारभूमौ, पन्न० २ पद० ।
जलमग्ग- पुं० *[जलमार्ग]*
नावादिगम्ये पथि, सूय० २ श्रु०१ अ० ।
जलस्य तद्वाहस्य मार्गप्रणाल्याम्, वाच० ।
जलमज्जण- न० *[जलमज्जन]*
जलेन देहशुद्धिमात्रे, भग० ११ श०९ उ० ।
जलमंडूअ- पुं० *[जलमण्डूक]*
कुडुण्डुभे जलव्याले, निसि० १ उ० ।
जलमय- त्रि० *[जलमय]*
अप्कायिकेषु जीवेषु, पण्हा० १ अ०
जलमाला- स्त्री० *[जलमाला]*
प्रचुरजले, सूय०२ श्रु०१ अ० ।
जलमूअ- पुं० *[जलमूक]*
मूकभेदे, आव० ४ अ० । गच्छा० । निसि० ।
जलय- न० *[जलज]*
सहस्रपत्रादिषु, पन्न०१ पद । आव०म० । रा० ।
जलयर- पुं० *[जलचर]*
पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्च जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः । पन्न० ।

जलयरी- स्त्री० *[जलचरी]*
जलचरतिर्यग्योनिस्त्रियाम्, । जीवा० ।

जलयामलगंधिय- पुं० *[जलजामलगन्धिक]*
जलजानामिवजलज- कुसुमानामिव मलो न कुद्रव्यसम्मिश्रो यो गन्धः स विद्यते येषां ते जलजामलगन्धिकाः। पद्मैकगन्धिनी, जीवा० ३ प्रति०। रा०।

जलरक्खस- पुं० *[जलराक्षस]*
पञ्चमे राक्षसभेदे, पन्न० १ पद।

जलमरण- न० *[जलमरण]*
जलक्रीडायाम्, नाया० १ श्रु०१३ अ०।

जलरुह- पुं० *[जलरुह]*
जले रुहन्तीति जलरुहाः। उदकावकपनकादिके वनस्पति-कायभेदे, जीवा०१ प्रति०। भग०।
जलरुहा उदकावकपनकशैवलकलम्बुकापावककशेरुकोत्पल पद्मकुमुदनलिनपुण्डरीकादयः। आचा० १ श्रु०१ अ०५ उ०।

जलरूव- पुं० *[जलरूप]*
उदधिकुमारेन्द्रस्य जलकान्तस्य स्वनामख्याते द्वितीये लोक-पाले। भग० ३ श०८ उ०।

जलवासि- पुं० *[जलवासिन्]*
परतीर्थिक तापसभेदे, 'जलवासिणी त्ति' ये जलनिमग्ना एवासते। भग० ११ श०९ उ०। निर० । उव०

जलविच्छुय- पुं० *[जलवृश्चिक]*
चतुरिन्द्रियजीवभेदे, पन्न०१ पद।

जलवीरिय-१ पुं० *[जलवीर्य]*
चतुरिन्द्रियजीवभेदे, जीवा०१ प्रति०।

जलवीरिय-२ पुं० *[जलवीर्य]*
ऋषभस्वामिः सप्तमे तद्वंश्ये नृपे, ठा० ८ ठा०। आव०।

जलसिद्धि- स्त्री० *[जलसिद्धि]*
जलावगाहनात् सिद्धौ, जलावगाहनात् सिद्धिमाहुस्ते मृषा वदन्तीति । सूय० १ श्रु०७ अ०।

जलसूग- न० *[जलशूक]*
इन्द्रस्य जलक्रान्तस्य स्वनामख्याते द्वितीये लोकपाले, ठा० ४ ठा० १ उ०।

जलसोयवाइ- पुं० *[जलशौचवादिन्]*
परतीर्थिकभेदे, 'जलसोयं जे अ इच्छंति' ये चान्ये जल-शौचमिच्छन्ति भागवतादयस्ते सर्वेऽप्यप्राशुकाहारभोजित्वात् कुशीला इति। सूय० १ श्रु०७ अ०।

जलावण- न० *[ज्वालन]*
उद्दीपने, 'जलणजलावणविदंसणेहिं' (जलावणं ति) स्वतः परतो वाऽग्नेरुद्दीपनमिति। पण्हा० १ अ०।

जलाभिसेयकढिणगाय- पुं० *[जलाभिषेककठिनगात्र]*
वानप्रस्थ तापसभेदे, ये अस्नात्वा न भुञ्जते स्नानाद्वा पाण्डुरीभूतगात्राः 'इति वृद्धाः'। भग० ११ श०१ उ०। निर० ।

जलाभिसेयकढिणगायभूय- पुं० *[जलाभिषेककठिनगात्रभूत]*
वानप्रस्थतापसभेदे। दृश्यते तत्र जलाभिषेक कठिनं गात्रं भूताः प्राप्ता ये ते तथा। भग० ११ श०१ उ०। निर० ।

जलासय- पुं० *[जलाशय]*
सरःप्रभृतौ जलस्थाने, (पन्न०)

जलिंत- त्रि० *[ज्वालयत्]*
दीपयति, महानि०७ अ०।

जलिय- त्रि० *[ज्वलित]*
ज्वालाकुले, सूय० १ श्रु०५ अ०१ उ०। पण्हा०।
ज्वलितं ज्वालामालाकुलं मुर्मुरादि-रूपम्। दश०२ अ०। उत्त०।
'जलियहुआसणो वि व तेजसा जलंते' पण्हा० ५ अ०।

जलियचुडिली- स्त्री० *[ज्वलितचुडिली]*
प्रदीप्ततृणपूलिकायाम्, 'जलियचुडिलीविव अमुच्चमाणमहण-सीलाओ' प्रदीप्ततृणपूलिकेव दहनशीला ज्वलनस्वभावा । तं०।

जलूया- स्त्री० *[जलौकस्]*
जलमोको वसतिरस्याः। जलजे द्वीन्द्रियजीवविशेषे, अनुत्त०३ ।
जलौका जलजो द्वीन्द्रियजीवविशेषः। भग० १३ श०९ उ०।
जलौकसो दुष्टरक्ताऽकर्षिण्यः। उत्त०३६ अ०। आव०। पन्न०। जीवा०। बुह०। आव०। आचा दश०। आव०म०। निसि०।
खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकचर्मपक्षिभेदे, जीवा० १ प्रति०। पन्न०

जलूया- स्त्री० *[जलूका]*
जलूकेति अनेषणाप्रवृत्तदायकस्य मृदुभावनिवारणार्थसूचक-त्वात्। द्रुमपुष्पिकाध्ययने, दश० १ अ०।

जलोयर- न० *[जलोदर]*
'पृथक् समस्तैरपि चानिलाद्यैः, प्लीहोदरं बद्धगुदं तथैव। आगन्तुकं सप्तममष्टमं तु, जलोदरं वेति भवन्ति तानि।।१।।'
आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ०।

जलोयारि- पुं० *[जलोदरिन्]*
वातपित्तादिसमुत्थमष्टधोदरं तदस्यास्त्युदरी तत्र जलोदर्यसाध्यः शेषाः स्थविरोत्थिताः साध्या इति। आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ०

जलोया- पुं० *[जलौकस्]*
'जलूया' शब्दार्थे, अनुत्त०३ वर्ग०।

जल्ल- पुं० *[यल्ल]*
याति च लगति चेति यल्लः। रजोमात्रे, संथा भग०। उव०।
शरीरादिमले, सम० २२।पण्हा०।जंबू०।विशे०।ठा०। आव०
यल्लो मलविशेष इति। पण्हा०५ अ०।
यल्लः शरीरवस्त्रादिकमलम्। सम०२२ सम०।

जल्ल- पुं० *[जल्ल]*
जल्लोऽस्थिरो मालिन्यहेतुरिति। नाया०१ श्रु०१३ अ०।
जल्लः शुष्कः प्रस्वेद इति। सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ०।
याति च लगति चेति जल्लः पृषोदरादित्वान्निष्पत्तिः। स्वल्प-प्रयत्नापनेयः। जीवा०३ प्रति०। तं०। उव०।
जल्लं कठिनतापन्नं मलमिति। उत्त०३ अ०।
जल्लो नाम मलः कठिनीभूत इति। दशा०७ अ०।
'जल्लो उ होइ कमठं' निसि०३ उ०।
'मलथिग्गलं जल्लो भणति' निसि०३ उ०।
वरत्राखेलके, राज्ञः स्तोत्रपाठके च। जल्लाः वरत्राखेलका राज्ञः। स्तोत्रपाठका इत्यन्ये। नाया०१ श्रु०१ अ०। उव०। अनुत्त० । कल्प०। जीवा०। दशा०। जंबू०। पण्हा०। रा०।
म्लेच्छभेदे च। पण्हा०१ अ०।

जल्लपरीसह- पुं० *[यल्लपरीषह]*
यल्ल इति मलः स एव परीषहो यल्लपरीषहः। अष्टादशे मलपरीषहे, उत्त०६ अ०। सम०।
जल्लो मलस्तत्परिषहणं च देशतः सर्वतो वा स्नानोद्वर्तनादि-वर्जनम्। भग० ८ श०८ उ०।

जल्लपेहा- स्त्री० *[जल्लप्रेक्षा]*
जल्ला वरत्राखेलकाराः स्तोत्रपाठका इत्यपरे, तेषां प्रेक्षा जल्लप्रेक्षा। जल्लप्रेक्षणे, जीवा० ३ प्रति०।

जल्लमल- पुं० *[यल्लमल]*
याति च लगति चेति जल्लः। पृषोदरादित्वान्निष्पत्तिः। स चासौ मलश्च यल्लमलः। यल्लरूपे मले 'जल्लमलकलंकसेयरय-दोसवज्जियसरीरनिरुवलेवा'। तं०। उव०।

जल्लमलपंकिय- त्रि० *[यल्लमलपङ्कित]*
'जल्लो कमढीभूतो मलो उव्वट्टितो फिट्टुत्ति पंकिता नाम जलमल्लेन ग्रस्ता इति'। निसि० १ उ०।

जल्लिय- न० *[जल्लक]*
शरीरमले, आर्षत्वात् जल्लो मलः। उत्त० २४ अ०।

जल्लिय- त्रि० *[यल्लित]*
यानलगनधर्मोपेतमलयुक्ते, भग०६ श०३ उ०।

जल्लेस- त्रि० *[यल्लेश्य]*
यस्याः लेश्यायाः संबन्धिनि द्रव्यादौ, 'जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जइ'। या लेश्या येषां द्रव्याणां तानि यल्लेश्यानि यस्या लेश्यायाः संबन्धिनीत्यर्थः। भग० ३ श०४ उ०।

जल्लोसहि- स्त्री० *[जल्लौषधि]*
लब्धिलब्धिमतोरभेदोपचारात्। यल्लौषधिलब्धिविशेषसंपन्ने साधौ च। आव०चू० १ अ०। गच्छा०। आव०म०। ठा०।

जल्लोसहिपत्त- त्रि० *[यल्लौषधिप्राप्त]*
यल्लो मलं, स एवौषधिर्यल्लौषधिस्तां प्राप्तो यल्लौषधिप्राप्तः। यल्लौषधिं लब्धिविशेषं प्राप्ते, उव०।

जव- पुं० *[यव]*
स्वनामख्याते शूकधान्यभेदे '। जंबू० २ वक्ष०।
ओषधिभेदे, पन्न० १ पद। आचा०।
यवाः-धान्यविशेषः। *दश०* ।
यवैरङ्गुष्ठम ध्यस्थैर्विद्याख्यातिविभूतयः। शुक्लपक्षे तथा जन्म, दक्षिणाङ्गुष्ठगैश्च तै'।। कल्प०१ क्षण।
यूकाष्टकमिते परिमाणभेदे च। 'परमाणू तसरेणू, रहरेणू अग्गयं च बालस्स।। लिक्खा जूया य यवो, अट्ठगुणविवड्ढिया कमसो।' ठा० ८ ठा०। ज्यो०। नं०।
यवराजर्षिः-खंडश्लोकाध्येता। *भत्त०* ।

जवजव- पुं० *[यवयव]*
यवविशेषे, भग० ६ श०६ उ०। बुह०। जंबू०। ठा०। आचा०।

जवण-१ पुं० *[जवन]*
वेगे, आव०म०।
शीघ्रे, जवनशब्दः शीघ्रवचनः। भग० १४ श०१ उ०।
परमोत्कृष्टवेगपरिणामोपेता जवनाः। आव०म०।

जवण-२ पुं० *[यवन]*
म्लेच्छजातिभेदे, सूर० २० पाहु०। । सूय०।

जवण-३ न० *[यापन]*
संयमभारोद्वादिदेहपालने, 'यवणट्ठया समुयाणं च निच्चं' संयमभारोद्वाहिदेहपालनाय। दश०९ अ०३ उ०।
यापनार्थं शरीरनिर्वाहारार्थमिति। उत्त०८ अ०।

जवणद्दीव- पुं० *[यवनद्वीप]*
यवनानां निवासभूते द्वीपभेदे, आव० चू० १ अ०।

जवणा- स्त्री० *[यापना]*
शरीरनिर्वाहे, उत्त० ८ अ०।
यापनाऽपि द्विविधा– द्रव्यतो भावतश्च। द्रव्यतः राद्राक्षादि-सदषौषधैः कायस्य समाहितत्वात्। भावतश्च इन्द्रियनोइन्द्रियो-पशान्तत्वेन शरीरस्य समाहितत्वम्।

जवणाणिया- स्त्री० *[यवनानिका]*
बाह्यया लिपेर्लेख्यविधानभेदे, पन्न० १ पाद।

जवणालिया-स्त्री० *[यवनालिका]*
कन्याचोलके, आव०म०।
यवनालको नाम कन्याचोलकः। स च मरुमण्डलादिप्रसिद्धः चरणकरूपेण कन्यापरिधानेन सह सेवितो भवति येन परिधानं न खसति कन्यानां चैष मस्तकप्रदेशेन प्रक्षिप्यते अत एवायमूर्द्धः सरकञ्चुक इति व्यपदिश्यते। आव० म०। विशे०। पन्न०। नं०।

जवणाली- स्त्री० *[यवनाली]*
यस्यां नालिकायां यवा उप्यन्ते। तस्याम्, 'जवणाली नाम जाए नालीए जवा उप्पंते तस्याम् वाविज्जंति सा जवनाली भण्णति' आव० चू० १ अ०।

जवणिज्ज- त्रि० *[यापनीय]*
वंश्ये, 'जत्ता भे भंते ! जवणिज्जं अव्वावाहं फासुयविहारं' (जवणिज्जं ति) यापनीयं मोक्षाध्वनि गच्छतां प्रयोजक इन्द्रियादिवश्यतारूपो धर्मः। भग० १ श० १० उ०।

जवणिया- स्त्री०पुं० *[यवनिका]*
'अब्भिंतरियं जवणियं अच्छावेइत्ता'। आभ्यन्तरिकीमास्थान-शालाम् अभ्यन्तरभागवर्तिनी यवनिकां काण्डपटम्' अच्छावेइ त्ति आयतां कारयतीति। नाया० १ श्रु०१ अ०। विशे०।

जवण्ण- न० *[जवान्न]*
व्यञ्जनभेदे, सूर०२० पाहु०। । ठा०।

जवपाणियै- न० *[यवपानीय]*
यवोदके, 'जवपाणियं अपेयं'। सम० । निर० ।

जवमज्झ-१ त्रि० *[यवमध्य]*
यवस्येव मध्यं मध्यभागो यस्य विपुलत्वसाधर्म्यात् तद्यव-मध्यम्। यवाकारे, भग० २५ श०३ उ०।

जवमज्झ-२ त्रि० *[यवमध्य]*
अष्टाभिर्यूकाभिः परिमिते प्रमाणभेदे च। न०। ज्यो०। नं०।

जवमज्झचंदपडिमा- स्त्री० *[यवमध्यचन्द्रप्रतिमा]*
यवस्येव मध्यं यस्याः सा यवमध्या चन्द्र इव कला वृद्धिहानिभ्यां या प्रतिमा सा चन्द्रप्रतिमेति यवमध्यचन्द्रप्रतिमा। ठा० ३ ठा० ३ उ०।
प्रतिमाभेदे, 'उवमा जवेण चंदेण वा वि जवमज्झचंदपडि-माए'–जवमध्यचन्द्रप्रतिमायाम्, यवेनोपमाचन्द्रेण च यवस्येव मध्ये यस्याः सा यवमध्या चन्द्राकारा प्रतिमा चन्द्रप्रतिमेति व्युत्पत्तेः। वव०२ उ०।
शुक्लप्रतिपदि एकं कवलमभ्यवहृत्य ततः प्रतिदिनं कवलवृद्ध्या पञ्चदश पूर्णमास्याम्, कृष्ण प्रतिपदि च पञ्चदश भुक्त्वा प्रति-दिनमेकहान्या अमावस्यायामेकमेव यस्यां भुङ्के सा यवमध्या चन्द्रप्रतिमेति। ठा० २ ठा० ३ उ०।

जवमज्झा- स्त्री० *[यवमध्या]*
प्रतिमाभेदे, यवमध्या या यववदत्ति कवलादिभिराद्यन्तयोर्हीना मध्ये च वृद्धेति। ठा० ४ ठा० १ उ०।

जवराज- पुं० *[यवराज]*
अनिलनरेन्द्रसुते स्वनामख्याते राजनि ।बुह०।

जवल- न० *[जवर]*
उदरे, ठा०।

जवस- न० *[यवस]*
गोधूमादिधान्ये, 'जवसाणि वा' यवसं गोधूमादिधान्यमिति। आचा० २ श्रु० ३ अ० २ उ०।

जवा- स्त्री० *[जपा]*
वनस्पतिविशेषे, नाया० १ श्रु० १ अ०।

जवासय- पुं० *[यवासक]*
वनस्पतिभेदे, पन्न० १ पद०।

जवासा- स्त्री० *[यवासा]*
रक्तपुष्पे वृक्षभेदे, 'यवासाकुसुमेइ वा' पन्न० १७ पद०।

जवित्तए- अव्य० *[यापयितुम्]*
वर्तयितुमित्यर्थे, व्यवस्थापयितुमित्यर्थे ।सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ०

जवोदग- न० *[यवोदक]*
यवोदकं यवप्रक्षालनजलम्। उत्त०१५ अ०। ठा०।

जवोदण- न० *[यवौदन]*
यवभक्ते, यवौदनं यवभक्तम्। उत्त० १५ अ०।

जस-१ पुं०न० *[यशस्]*
यशः पराक्रमकृता ख्यातिर्यश । ठा० ३ ठा० ४ उ०। पण्हा०। उव०। नाया०।
सर्वदिग्गामिनीप्रख्यातिर्यश इति। भग०१४ श०५ उ०।
कीर्त्याम्, दशा०९ अ०। सम०। आचा०।
श्लाघायाम्, चंद० १७ पाहु०। । सूय०।
संयमे, यशो वर्णः संयम इत्येकार्थाः। 'जसो त्ति वा संजमो त्ति वा वण्णो त्ति वा एगट्ठं' इति वचनात्। वव० १ उ०।
यशः संरक्षन्नात्मनो यशः शब्देन संयमोऽभिधीयते। दश० ५ अ० २ उ०।
विनये च। यशः संयमं विनयं वा संचिनु। उत्त० ३ अ०।

जस-२ पुं०न० *[यशस्]*
स्वनामख्यातेऽनन्तजिनस्य प्रथमशिष्ये, सम०।

जस-३ पुं०न० *[यशस्]*
पार्श्वनाथस्य स्वनामख्याते अष्टमे गणधरे ।कल्प०७क्षण०। सम०

जसंसि-१ पुं० *[यशस्विन्]*
ख्यातिमति, । निर० १ वर्ग०। नाया०। भग०। आचा०।
यशस्विनः पराक्रमं प्राप्य प्रसिद्धिं प्राप्तत्वात्। सम०।
श्लाघान्विते, उत्त० ५ अ०।
कीर्तिमति, आचा०२ श्रु०२ अ०१ उ०।
'जसस्सिणो चक्खुपहट्ठियस्स' सूय०१ श्रु०१६ अ०।
'अणुत्तरे णाणाधरे जसंसी' उत्त ०३१ अ०।

जसंसि-२ पुं० *[यशस्विन्]*
श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य सिद्धार्थापरनामध्येये पितरि च। आचा०३ चू०। कल्प०।

जसकर-१ त्रि० *[यशस्कर]*
यशः सर्वादिग्गामिप्रसिद्धिविशेषः। तत्करो यशस्करः। नाया०१ श्रु० १ अ०।
सर्वदिग् व्यापिकीर्तिकरे, तं०। आव०म०।

जसकर-२ पुं० *[यशस्कर]*
भगवत ऋषभस्य स्वनामख्याते एकोनचत्वारिंशत्तमे पुत्रे, कल्प०७ क्षण०।

जसकित्ति-१ स्त्री० *[यशःकर्ति]*
यशः कीर्त्योश्चायं विशेषः–कीर्तिर्दानपुण्यफला, यशः पराक्रमकृतम्। आव०म०।
'अविसेसितो जसो। विसेसिता कित्ती' आव०चू० १ अ०।
दानपुण्यफला कीर्तिः। पराक्रमकृतं यशः। आव०म०।
बहुसमरसंघट्टनिवर्हणशौर्यलक्षणम् यशः दानसाध्या कीर्तिरिति। सूय० १ श्रु० ९ अ०।
एकदिग्गामिनी कीर्तिः। सर्वदिग् व्यापकं यशः इति प्रसिद्धिः। उत्त०१ अ०।
कीर्तिरेकदिग्गामिनी प्रसिद्धिः सर्वदिग्गामिनी सैव वर्णो यशः पर्यायत्वादस्य। अथवा–दानपुण्यफला कीर्तिः पराक्रमकृतं यशः। ठा० ३ ठा० ३ उ०।

जसकित्ति-२ स्त्री० *[यशःकर्ति]*
भगवत ऋषभस्य स्वनामख्यातेऽष्टत्रिंशत्तमे पुत्रे च। पुं०। कल्प० ७ क्षण०।

जसकित्तिणाम- न० *[यशःकीर्तिनामन्]*
यशः सामान्येन ख्यातिः कीर्तिर्गुणोत्कीर्तनरूपा प्रशंसा।अथवा–सर्वदिग्गामिनी पराक्रमकृता वा सर्वजनोत्कीर्तनीयगुणता यशः एगदिग्गामिनी दानपुण्यकृता वा कीर्तिस्ते यदुदयाद् भवतस्तद्यशःकीर्तिनाम। शुभनामकर्मभेदे। सम०।
यशःकीर्तिनामोदयाद् यशः कीर्तिर्भवति। उत्त०।

जसघाइ- त्रि० *[यशोघातिन्]*
यशोनाशके, 'दंसणनाणचरित्ते, तवविनए निच्चकालपासत्था। एए अवंदणिज्जा, जे जसघाई पवयणस्स' आव०३ अ०।
'पुव्वं समणगुणेहिं अहिज्जतेहिं जसो आसी इमेहिं सेवंतेहिं ताणि ठाणाणि जसोघाति तेणं ते जसघाती एए पवयणस्स' आव०चू० ३ अ०।
यशोघातिनः-यशोऽभिनाशकाः। आव०३ अ०।

जसचंद- पुं० *[यशश्चन्द्र]*
स्वनामख्याते गणिनि । भग० ।

जसजीविय- न० *[यशोजीवित]*
जीवितभेदे, तच्च भगवतो वर्द्धमानस्वामिनः 'जसकित्ती य भयवतो' आव०म०।

जसद- पुं० *[जसद]*
धातुविशेषे, उव०।

जसदपाय- न० *[जसदपात्र]*
जसदधातुविशेषनिर्मिते पात्रे, 'जसदपायाणि वा' उव०।

जसदेव- पुं० *[यशोदेव]*
स्वनामख्याते आचार्ये, गच्छा०४ अधि०।
स्थानाङ्गवृत्तावभयदेवसूरिः–श्रीमज्जिनचन्द्राचार्यान्तेवासियशोदेवगणिसाधोरुत्तरसाधकस्येव विद्याक्रियाप्रधानस्य साहाय्येन समर्थितम्। ठा० १० ठा०।

जसधण- न० *[यशोधन]*
स्वनामख्याते नृपे, तं०।

जसभद्द-१ पुं० *[यशोभद्र]*
गुरुचन्द्रसूरेः शिष्ये स्वनामख्याते आचार्ये, 'जातौ तस्य विनेयौ, सूरी यशोभद्रनेमिचन्द्राह्वौ'। गच्छा०४ अधि०।
आचार्यशय्यंभवस्य शिष्ये स्वनामख्याते आचार्ये, निसि०५ उ०।
'जसभद्दं तुंगियं वंदे' शय्यंभवशिष्यं यशोभद्रं तुङ्गिकं तुङ्गिब्डगणं व्याघ्रापत्यगोत्रं वन्दे। नं०।
श्रीयशोभद्रं स्वपदे संस्थाप्य श्रीवीरादष्टनवतिवर्षैः स्व र्जगाम इति श्रीयशोभद्रसूरिरपि श्रीभद्रबाहुसंभूतविजयाख्यौ शिष्यौ स्वपदेन्यस्य स्वर्लोकमलं चक्रे। कल्प०८ क्षण०।
आर्यसंभूतिविजयस्य माढरसगोत्रस्य शिष्ये स्वनामख्यात आचार्ये, कल्प०८ क्षण०।
यशोभद्रः-शय्यम्भवप्रधानशिष्यः। *दश०*।

जसभद्द-२ पुं० *[यशोभद्र]*
साकेतनगरवास्तव्यस्य पुण्डरीकराजस्य स्वनामख्याते युवराजे, आव०चू० ४ अ०। आव०।

जसभद्द-३ पुं० *[यशोभद्र]*
पक्षस्य पञ्चदशसु दिवसेषु चतुर्थे दिवसे, ज्यो०४ पाहु०। । जंबू० चंद०। कल्प०।

जसभद्द-४ न० *[यशोभद्र]*
यशोभद्रात् भारद्वाजसगोत्रात् निर्गतस्य उरूपपाटिकगणस्य स्वनामख्याते कुलभेदे, । कल्प० ८ क्षण०।

जसभद्द-५ न० *[यशोभद्र]*
साकेतनगरस्य पौण्डरीकनृपतेर्युवराजस्य कण्डरीकस्य स्वनामख्यातायां भार्यायाम्, स्त्री०। आव०चू०१ अ०। आव०।

जसभद्दा– स्त्री० *[यशोभद्रा]*
अलोभोदाहरणे कण्डरीकयुवराजपत्नी। *आव० ७०१*।

जसमंत- त्रि० *[यशस्वत्]*
भरतवर्षभवे स्वनामख्याते कुल करे, पुं०। ठा०७ ठा०। जंबू०। आव०म०। कल्प०। आव०चू०।

जसवई-१ स्त्री० *[यशोमती]*
वर्तमानावसर्पिण्या द्वितीयचक्रवर्तिनः सगरस्य मातरि, सम०। आव०।
पृष्ठिचम्पापुरस्थशालमहाशालयोर्भगिन्यां पिढरभार्यायां काम्पिल्यपुरस्थायां गागलीमातरि, आव०चू०१ अ०। आव०म०।
यशोमती-शालमहाशालभगिनी। *उत्त०* ।
सगरचक्रवर्त्तिनो माता। *सम०* ।

जसवई-२ स्त्री० *[यशोमती]*
श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य नपत्र्यां प्रियदर्शनायाः पुत्र्याम्, आचा०३ चू०। कल्प०।

जसवई-३ स्त्री० *[यशोमती]*
पक्षस्य तृतीयायामष्टम्याञ्च त्रयोदश्यां च रात्रितिथी, चंद० १० पाहु०। । जंबू०। सूर०। ज्यो०।
तृतीया रात्रितिथिनाम। *सूर०*। चंद० ।

जसवई-४ स्त्री० *[यशोमती]*
दशपुरनगरस्थस्य शाण्डिल्यस्य ब्राह्मणस्य दास्यां । उत्त०१३ अ०

जसवई-५ स्त्री० *[यशोमती]*
कम्पिल्यनगरस्थस्य ब्रह्मदत्तस्यान्तः पुरप्रधानायां भार्यायां पक्षरहितपुत्र्याम्, उत्त० १३ अ०।

जसवंस- पुं० *[यशोवंश]*
मूर्तो यशसां वंश इव पर्वप्रवाह इव यशोवंशः। यशसां पर्वप्रवाहभूते, 'जसवंसो नागहत्थीणं' नं०।

जसवाय- पुं० *[यशोवाद]*
साधुवादे, 'जसवएणं वड्ढित्ता' कल्प० ४ क्षण०।

जसहर-१ पुं० *[यशोधर]*
भगवत ऋषभस्य द्वादशे पुत्रे, कल्प०७ क्षण०।

जसहर-२ पुं० *[यशोधर]*
धरणस्य नागकुमारेन्द्रस्य पीठानीकाधिपतौ, 'जसोधरे आस राया पीढानीयाहिवई' ठा० ५ ठा०१ उ०।

जसहर-३ पुं० *[यशोधर]*
पक्षस्य पञ्चदशदिवसेषु पञ्चमे दिवसे,जंबू०७वक्ष० ।चंद०। कल्प
पक्षस्य पञ्चदशरात्रिषु चतुर्थरात्रौ, ज्यो०४पाहु० ।जंबू०। कल्प०

जसहर-४ पुं० *[यशोधर]*
ग्रैवेयकविमानप्रस्तटे च। ठा० ९ ठा०।

जसहर-५ पुं० *[यशोधर]*
साकेतनगरस्थस्य विनयन्धरनृपस्यात्मजे स्वनामख्याते कुमारे। दश०।

जसहर-६ पुं० *[यशोधर]*
दक्षिणरुचकवास्तव्यास्वष्टसु दिशाकुमारीषु चतुर्थदिशाकुमार्याम् ठा० ८ ठा०। आव०चू०। आव०। आव०म०। जंबू०।

जसहर-७ पुं० *[यशोधर]*
सकलभुवनव्यापियशो धरतीति यशोधरा। जम्बूसुदर्शनायाम्, जम्बूद्वीपो हि विदितमहिमा भुवनत्रयेऽप्यनया जम्ब्वोपलक्षितस्ततो भवति यथोक्तम्। यशोधारित्वमस्या इति। जीवा०३ प्रति०। जंबू०।

जसोहरा– पुं० *[यशोधरा]*
चतुर्थी रात्रिनाम। *जंबू० ४९१*।
दक्षिणरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। *आव०* ।

जसा- स्त्री० *[यशा]*
कौशाम्बीवास्तव्यस्य काश्यपस्य भार्यायां, कपिलमातरि, उत्त० ८ अ०।

जसोकामि- पुं० *[यशस्कामिन्]*
कीर्तिकामिनि, 'धिगत्थु ते जसोकामी' दश० २ अ०।

जसोकित्ति- स्त्री० *[यशःकीर्ति]*
'जसकित्ति' शब्दार्थे, आव०चू० १अ०

जसोचंद- पुं० *[यशश्चन्द्र]*
'जसचंद' शब्दार्थे, भग० ४२ श० १ उ०।

जसोजीविय- न० *[यशोजीवित]*
'जसजीविय' शब्दार्थे, आव०म०

जसोद- पुं० *[जसद]*
'जसद' शब्दार्थे, उव०।

जसोदपाय- न० *[जसदपात्र]*
'जसदपाय' शब्दार्थे, उव०।

जसोदेव- पुं० *[यशोदेव]*
'जसदेव' शब्दार्थे, गच्छा०४ अधि०।

जसोधण- न० *[यशोधन]*
'जसधण' शब्दार्थे, तं०।

जसोभद्द- पुं० *[यशोभद्र]*
'जसभद्द' शब्दार्थे, गच्छा०४ अधि०।

जसोमंत- त्रि० *[यशस्वत्]*
'जसमंत' शब्दार्थे, ठा०७ ठा०।

जसोय- पुं० *[यशोद]*
भगवतो महावीरस्य भार्यायां च। आव०चू०३ अ०।
'समणस्स णं भगवओ महावीरस्स भज्जा जसोया गोत्तेण कोडिण्णा'। आचा०३ चू०।

जसोवई- स्त्री० *[यशोमती]*
'जसवई' शब्दार्थे, सम०।

जसोवंस- पुं० *[यशोवंश]*
'जसवंश' शब्दार्थे, नं०।

जसोवाय- पुं० *[यशोवाद]*
'जसवाय' शब्दार्थे, कल्प०४ क्षण०।

जह- अव्य० *[यथा]*
येन प्रकारेणेत्यर्थे, आचा० १ श्रु०६ अ०३ उ०।
यथा येन प्रकारेण यथापद्धत्या सूत्रं व्यवस्थितं तथा तेनैव प्रकारेणाऽर्थो व्याख्येयः। सूय०१ श्रु०१३ अ०। अणुओ०। आचा०।
उपप्रदर्शने, सूय०। अणुओ०। आव०म०।
उदाहरणोपन्यासे, पिण्ड०। आव०। सूय०। उत्त०। आव०म०।
यथेत्युदाहरणोपन्यासार्थः। यथैतत्तथान्यदप्यनया दिशा द्रष्टव्यम्। आचा०१ श्रु०८ अ०१ उ०।
दृष्टान्तोपदर्शने, जीवा० ३ प्रति० । तं०। सूय०। नाया०। ठा०। जंबू०।

जहंत- त्रि० *[जहत्]*
त्यजति, 'जिणवयणं भावतो जहंतस्स' वव० ३ उ०।

जहक्कम- अव्य० *[यथाक्रम]*
यथाक्रमं परिपाट्येति। दश० ५ अ०।
'अट्ठ कम्माइं वोच्छामि, आणुपुव्विं जहक्कमं' उत्त०३२ अ०
विहरामि यथाक्रमं साध्वाचारानुक्रमेण। उत्त० २३ अ०।
यथाक्रमं यथावसरमिति। उत्त० १४ अ०।

जहक्खाय- न० *[यथाख्यात]*
अथाख्यातापरनामधेये चारित्रभेदे, । आव०म० ।

जहण- न० *[जघन]*
जघनं पूर्वः कटिभाग इति विपा० १ श्रु० २ अ०।

जहणवर- न० *[जघनवर]*
श्रेष्ठजघने, वरशब्दस्य विशेषणस्याऽपि सतः परनिपातः । जीवा० ३ प्रति०।

जहणिज्ज- त्रि० *[हेय]*
त्याज्ये, नाया० १ श्रु० १ अ०।

जहण्ण- त्रि० *[जघन्य]*
जघनमिव इवार्थे यत् वा। अधमे, । आव०।
निकृष्टे, भग०२ श०१ उ०।
सर्व हीने, ठा० ४ ठा० २ उ०।
सर्वाल्ये, ठा० १० ठा० १ उ०।

जहण्णगुणकालग- पुं० *[जघन्यगुणकालक]*
जघन्येन जघन्यसंख्याविशेषेणैकेनेत्यर्थः गुणो गुणनं ताडनं यस्य स तथाविधः कालो वर्णो येषां ते जघन्यगुणकालकाः। तेषु०। ठा० १ ठा० १ उ०।

जहण्णट्ठिइय- त्रि० *[जघन्यस्थितिक]*
जघन्या जघन्यसंख्या समयापेक्षया स्थितिर्येषां ते जघन्यस्थितिकाः एकसमयस्थितिके, ठा० १ ठा० १ उ०।

जहण्णपएसिय- पुं० *[जघन्यप्रदेशिक]*
जघन्याः सर्वाल्याः प्रदेशाः परमाणवस्ते सन्ति येषां ते जघन्यप्रदेशिकाः। द्व्यणुकादिके, ठा० १ ठा० १ उ०।

जहण्णपय- न० *[जघन्यपद]*
पद्यते गम्यते इति पदं पदसंख्यास्थानं तच्चानेकधेति जघन्यं सर्वहीनं पदं जघन्यपदम्। सर्वहीने संख्यास्थाने, । ठा० ४ ठा० २ उ०।

जहण्णपुरिस- पुं० *[जघन्यपुरुष]*
पुरुषविशेषे, ठा० ३ ठा० १ उ०।

जहण्णुक्कोसग- त्रि० *[जघन्योत्कर्षक]*
जघन्यो निकृष्टः काञ्चिद् व्यक्तिमाश्रित्य स एव च व्यक्त्यन्तरापेक्षयोत्कर्ष उत्कृष्टो जघन्योत्कर्षः। काञ्चिद् व्यक्तिमाश्रित्य निकृष्टे, व्यक्त्यन्तरापेक्षयोत्कृष्टे च। भग० २५ श० १ उ०।

जहण्णोगाहणग- त्रि० *[जघन्यावगाहनक]*
अवगाहन्ते आसते यस्यां साऽवगाहना क्षेत्रप्रदेशरूपा सा जघन्या येषां ते। एकप्रदेशावगाढे, ठा०१ ठा०१ उ०।

जहत्थ- अव्य० *[यथार्थ]*
यथार्थं प्रतिपादि। ठा० १ ठा० १ उ०।

जहत्थणियय- न० *[यथार्थनियत]*
व्यञ्जनाक्षरभेदे, 'तत्थजहत्थ नियय, तं जहा–दहतीति दहणो तवतीति तवणो एवमादि'। आव०चू० १ अ०।

जहप्प- न० *[याथात्म्य]*
यथातत्त्वे, ठा०५ ठा०१ उ०।

जहाइत्ता- अव्य० *[हित्वा]*
त्यक्त्वेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०।
'तयसं च जहाइसेरयं' सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०।

जहाकाल- अव्य० *[यथाकाल]*
यथावसरमित्यर्थे, आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ०।
'वोसिरइ मुणी जहाकालं'। यथाकालं यथावसरम्। संथा०।

जहाच्छन्द- पुं० *[यथाच्छन्द]*
स्वच्छन्दे, ठा० ९ ठा० ३ उ०।

जहाजाय- त्रि० *[यथाजात]*
यथाजातपशुभूताः शिक्षामरणादिवर्जित-बलीवर्दादिसदृशाः निर्विज्ञानत्वादिसाधर्म्यात्। पण्हा०३ अ०।
यथाजातं श्रमणत्वभवनलक्षणं जन्माश्रित्य, योनिनिष्क्रमणलक्षणं च। तत्र रजोहरणमुखवस्त्रिकाचोलपट्टमात्रया श्रमणोजातो, रचितकरपुटस्तु योन्या निर्गत एवंभूत एवं वन्दते। तदव्यतिरेकाद् वा यथाजातम्। कृतिकर्मणि, । सम०१२ सम०।

जहाजेट्ठ- अव्य० *[यथाज्येष्ठ]*
ज्येष्ठस्यानतिक्रमेणेत्यर्थे, अणुओ०।

जहाणामय- पुं० *[यथानामक]*
अनिर्दिष्टनामके, कस्मिश्चित्, जीवा० ३ प्रति० ।
यथानामकः कश्चित् म्लेच्छः । आव०म० ।
'स यथा नामको यत्प्रकारनामा देवदत्तादिनमित्यर्थः । अथवा– (से) इति यथेति दृष्टान्तार्थः नामेति संभावनायाम् । ए इति वाक्यालङ्कारे । तं० । अणुओ० । जीवा० । नाया० । ठा० ।

जहातच्च- अव्य० *[यथातथ्य]*
यथासत्यमित्यर्थे, यथासत्यं यथातथ्यमित्यर्थे । आचा० १ श्रु० ४ अ० २ उ०
यथातथ्यं यथाव्यवस्थितम् । सूय० १ श्रु०९ अ० ।
यथातथ्येनावितथं प्रतिपादयामीति । सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।
यथातथ्येन यथाव्यवस्थितं तथैव कथयामीति । सूय० १ श्रु० ५ अ० २ उ० ।

जहातह- अव्य० *[याथातथ्य]*
सूत्रकृताङ्गस्य त्रयोदशेऽध्ययने, धर्मसमाधिमार्गसमवरणाख्येषु यदवितथं याथातथ्येन व्यवस्थितम् यच्च विपरीतं वितथं तदपि लेशतोऽत्र, प्रतिपादयिष्यत इति । नामनिष्पन्ने तु निक्षेपे याथातथ्यमिति नाम । अस्याध्ययनस्य याथातथ्यमिति नाम । सूय० १ श्रु० १३ अ० ।
याथातथ्येन त्वं जानासि सम्यगवगच्छसीति । सूय०१ श्रु०६ अ० ।

जहातहज्झयण- न० *[याथातथ्याध्ययन]*
सूत्रकृताङ्गस्य त्रयो दशेऽध्ययने । सूय० ।

जहापवट्टकरण- न० *[यथाप्रवृत्तकरण]*
करणभेदे, आचा० १ श्रु० ९ अ० १ उ० ।

जहाभूय- त्रि० *[यथाभूत]*
यथावृत्ते । यथाभूतं यथावृत्तम् । नाया०१ श्रु०१ अ० । निसि० ।
यथावृत्तं अवितथं नत्वन्यथाभूतम् । *नाया०* ।

जहामालिय- अव्य० *[यथामालित्]*
यथाधारितमित्यर्थे, 'जहामालियं ओमोघं दलइ' । यथामालितं यथाधारितं, यथापरिहितमित्यर्थः । भग० ११ श० ११ उ० ।

जहारिह- अव्य० *[यथार्ह]*
यथार्हं यथायोग्यम् । दश०७ अ० ।
यथार्हं यथोचितम् । नाया० १ श्रु० १ अ० ।
यथायोग्यम् । आव०९ अ० ।

जहारूव- अव्य० *[यथारूप]*
रूपानतिक्रमे, 'यथा नेत्रं तथा शीलं, यथा नासा तथाऽऽर्जवम् । यथा रूपं तथा वित्तं, यथा शीलं तथा गुणाः ।।' आव० ४ अ० ।

जहावाइ- पुं० *[यथावादिन्]*
येन प्रकारेण वादिनि, 'नो जहावाई तहाकारी याऽवि भवइ' सामान्यतो नो यथावादी तथाकारी । ठा० ७ ठा० ।

जहासत्ति- अव्य० *[यथाशक्ति]*
'सेसा उ जहासत्तिं, आपुच्छित्ता ठवंति सट्ठाणे' यथाशक्ति- शक्त्यनुरूपम् । आव० ५ अ० ।

जहासुय- अव्य० *[यथाश्रुत]*
श्रुतानतिक्रमे, 'अहसुयं वदिस्सामि' यथाश्रुतं यथासूत्रं वा वदिष्यामि । आचा० १ श्रु०९ अ० १ उ०

जहासुय- अव्य० *[यथासूत्र]*
सूत्रानतिक्रमे, आचा० १ श्रु० ९ अ० १ उ० ।

जहिच्छियकामकामिन्- पुं० *[यथेप्सितकामकामिन्]*
यथेप्सितान् मनोवाञ्छितान् कामान् शब्दादीन् कामयन्त इत्येवं- शीला यथेप्सितकामकामिनः । जीवा० ३ प्रति० ।
मनोवाञ्छितकामभोजिनि, यथेप्सितान् कामान् शब्ददीन् काम- यन्ते अर्थाद् भुञ्जन्ते इत्येवं शीला ये देतथेति । जंबू० २ वक्ष० ।

जहुत्त- त्रि० *[यथोक्त]*
येन प्रकारेणोक्ते, यथा उक्तं यथोक्तमिति । निसि०१ उ० ।

जहुत्तकारिन्- पुं० *[यथोक्तकारिन्]*
यथोक्तं क्रियाकलापं कर्तुं शीलमस्येति यथोक्तकारी ।आव०३ भगवदाज्ञाराधके, बुह० १ उ० ।

जहुत्तर- अव्य० *[यथोत्तर]*
उत्तरस्यानतिक्रमे, सूय० १ श्रु० ३ अ० ३ उ० ।

जहोवइट्ठ- अव्य० *[यथोपदिष्ट]*
यथोक्तमित्यर्थे, यथोपदिष्टं यथोक्तमेव । दश० ९ अ०२ उ० ।

जहोवएसकारि- पुं० *[यथोपदेशकारिन्]*
उपदेशः सदसत्कर्तव्यादेशः तस्यानतिक्रमेण कारिणि, आचा० १ श्रु०२ अ०३ उ० ।

जाइ- स्त्री० *[जाति]*
जनवं जातिः । उत्त०३ अ० । आचा० ।
जन्मनि, 'जाईजरामरणबंधणविप्पमुक्का' पन्न०२ पद । आचा० । आव० । सूय० । ठा० ।
'जाइं च मरणं च जणोववायं ।' जातिमुत्पत्तिं नारक-तिर्यङ्ग- नुष्यामरजन्मलक्षणां च । सूय०१ श्रु०१२ अ० ।
जातिर्वारकादिषु प्रसूतिरिति । विशे० ।
जायन्ते जन्तवोऽस्यामिति जातिः । उत्त०३ अ० ।
जातिरेकेन्द्रियादिः । ठा० ६ ठा० । आचा० ।
एकेन्द्रियद्वीन्द्रियत्वादिकाजातिरिति । आचा०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।
जातिर्गुणवन्मातृकत्वम् । ठा० ४ ठा० २ उ० ।
मातृसमुत्था जातिरिति । सूय० ९ श्रु० १३ अ० । उत्त० । पंच० चू० । कल्प० । उव० । आचा० । ठा० ।
जातिर्मातृपक्षः ब्राह्मणादिका वा । तं० ।
जातयः क्षत्रियाद्याः इति । उत्त० ३ अ० ।

जाइअंतर- न० *[जात्यन्तर]*
नरसिंहत्वादिके विलक्षणजातौ, 'नरस्य सिंहरूपत्वा असिंहो नररुपतः। शब्दविज्ञानकार्याणां, भेदाज्जात्यन्तरं हि सः।। सूय० १ श्रु० १२ अ०।

जाइअंध- पुं० *[जात्यन्ध]*
जन्मकावादारभ्यान्धे, 'केइ पुरिसे जाइअंधे जाइअंधारुवे' जातेरारभ्यान्धो जात्यन्धः। विपा० १ श्रु० १ अ०।

जाइआजीवणा- स्त्री० *[जात्याजीवना]*
आजीवनाभेदे, पिंड०।

जाइआजीवय- पुं० *[जात्याजीवक]*
जातिब्रह्मणादिकामा जीवति उपजीवति तज्जातीयमात्मानं सूचादिनोपदर्श्य ततो भक्तादिकं गृहातीति जात्याजीवकः। आजीवक भेदे, ठा० ५ गच्छा० १ उ०।

जाइआरिय- पुं० *[जात्यार्य]*
जातिर्मातृकः पक्षः तया आर्या अपापा निर्दोषा जात्यार्या। विगुरुमातृके, । ठा०।

जाइआसीविस- पुं० *[जात्याशीविष]*
आइयो दंष्ट्राः तासु विषं येषां ते आशीविषाः।
जातित आशीविषा जात्याशीविषाः। वृश्चिकादिके, ठा० ४ ठा० ४ उ०।

जाइकहा- स्त्री० *[जातिकथा]*
विकथाभेदे, निसि० १ उ०।

जाइकुल- न० *[जातिकुल]*
जातिसंबन्धिनि कुले, जातिरिति किल तिर्यग् जातिस्तस्याः कुलानि कृमिकीटवृश्चिकादीनि। जीवा० ३ प्रति०।

जाइच्छिय- त्रि० *[याद्दच्छिक]*
अतर्कितोपस्थिते काकतालीयादिकल्पे वस्तुनि, तथा च यद्दच्छावादिनः। आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ०।
अनर्थके डित्थादिनाम्नि, । ठा० २ ठा० ४ उ०।

जाइणाम- न० *[जातिनामन्]*
नामकर्मभेदे, । पन्न०।

जाइणामगोयनिउत्त- त्रि० *[जातिनामगोत्रनियुक्त]*
जातिनाम गोत्रं च नियुक्तं यैस्ते तथा। नियुक्तजातिनामगोत्रे नारकादौ, भग० ६ श० ८ उ०।

जाइणामगोयनिउत्ताउय- त्रि० *[जातिनामगोत्रनियुक्तायुष्]*
जातिनाम्ना गोत्रेण च सह नियुक्तमायुर्यैस्ते तथा। जातिनाम्ना गोत्रेण च सह नियुक्तायुषि, भग० ६ श० ८ उ०।

जाइणामगोयनिहत्त- त्रि० *[जातिनामगोत्रनिधत्त]*
जातिनाम गोत्रं च निधत्तं यैस्ते तथा। निधत्तजातिनामगोत्रे, भग० ६ श० ८ उ०।

जाइणामगोयनिहत्ताउय- त्रि० *[जातिनामगोत्रनिधत्तायुष्]*
जातिनाम्नो गोत्रेण च सह निधत्तमायुर्यैस्ते तथा। जातिनाम्ना गोत्रेण च सह निधत्तायुषि, भग० ६ श० ७ उ०।

जाइणामनिउत्त- त्रि० *[जातिनामनियुक्त]*
जातिनाम नियुक्तं नितरां युक्तं संबद्धं निकाचितं बेदने वा नियुक्तं यैस्ते तथा। नियुक्तजातिनामकर्मणि जीवे, भग० ६ श०८ उ०।

जाइणामिनिउत्ताउय- त्रि० *[जातिनावनियुक्तयुष्]*
जातिनाम्ना सह नियुक्तं निकाचितं वेदयितुमारब्धं वाऽऽयुर्यैस्ते तथा। जाति नाम्ना सह नियुक्तायुषि, भग० ६ श० ८ उ०।

जाइणामनिइत्ताउय- न० *[जातिनामनिधत्तायुष]*
जातिरेकेन्द्रिय जात्यादिः पञ्चधा सैव नाम इति नामकर्मण उत्तरप्रकृतिविशेषो जीवपरिणामो वा तेन सह निधत्तं निषिक्तं यदायुस्तजातिनामनिधत्तायुः। जातिनाम्ना निधत्ते आयुषि, भग०६ श०८ उ०।
जातिनाम्ना सह निधत्तमायुर्यैस्ते तथा। जातिनाम्ना सह निधत्तायुषि जीवे, भग० ६ श० ८ उ०। ठा०।

जाइणिवद्धं- न० *[जातिनिबद्ध]*
भावसूत्रस्य श्रुतस्य भेदे । सूय०।

जाइथेर- पुं० *[जातिस्थविर]*
जातिर्जन्म तथा स्थविरः जाति स्थविरः स्थविरभेदे, 'सद्विवासजाए समणे णिग्गंथे जाइथेरे' ठा० ३ ठा० ३ उ०।

जाइदोस- पुं० *[जातिदोष]*
जातिनिष्ठे दोषे, 'स्त्रीजातौ दाम्भिकता, भीलुकता भूयसी वणिसजातौ। रोषः क्षत्रियजातौ, द्विजातिजातौ पुनर्लोभः। तं०।

जाइधम्मय- त्रि० *[जातिधर्मक]*
उत्पत्तिधर्मके, 'इमं पि जाइधम्मं' जननं जातिरुपत्तिस्तकर्मकम्। आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ०।

जाइपह- पुं० *[जातिपथ]*
जातीनामेकेन्द्रियादीनां पन्थाः जातिपथः जातिमार्गे, 'जाईपइं अणुपरिवट्टमाणे' सूय०१ श्रु०९ अ०।
पाशा अत्यन्तपारवश्यहेतवः। कलत्रादिसंबन्धास्त एव तीव्रहोदयादिहेतुतवा जातीणां पन्थानस्तत्प्रापकत्वान्मार्गाः।उत्त०६ अ० संसारे, 'अरक्खिओ जाइपइं उवेइ' जातिपन्थानं जन्ममार्गे संसारमुपैति। दश० २ चू०
द्वीन्द्रियादिजातिमार्गः। दश० २४४।

जाइपुम- न० *[जातिपुट]*
जातिः पुष्पजातिविशेषः पुटं पत्रादि मयं तद्भाजनं जातिपुटम्। जातिपुष्पस्य पत्रादिमये भाजने, नाया० १ श्रु० १९ अ०।

जाइप्पसण्णा- स्त्री० *[जातिप्रसन्ना]*
जातिपुष्पवासिता प्रसन्ना जातिप्रसन्ना। सुराभेदे,जीवा०३ प्रति०।

जाइबंझा- स्त्री० *[जातिबन्ध्या]*
जातेर्जन्मत, आरभ्य बन्ध्या निर्वीजा जातिबन्ध्या। जन्मत आरभ्य निर्वीजायाम्, ठा० ५ गच्छा० २ उ०

जाइमंडग- पुं० *[जातिमण्डपक]*
जातिर्मालती तन्मयो मण्डपको जातीमण्डकपकः। जातीमये मण्डपके जंबू० १ वक्ष०। जीवा०।

जाइमंत- त्रि० *[जातिमत्]*
सुजातौ, 'जाइमंता ति वा' आचा० २ श्रु०४ अ०२ उ०।

जाइमय- पुं० *[जातिमद]*
जात्या मदो जातिमदः। मदस्यानभेदे, सम०७ सम०।
'जाइमएण वा' ठा० १ ठा०। पण्हा०।
जात्या ब्राह्मणब्राह्मण्युद्भवत्वेन मदोऽहंकारो जातिमदः। जात्य-हंकारे, उत्त० ३ अ०।

जाइमयपडिबद्धा- पुं० *[जातिमदप्रतिबद्ध]*
जात्यहंकारेणानम्रे, जात्या ब्राह्मणब्राह्मण्युद्भवत्वेन यो मदोऽहं कारस्तेन प्रतिस्तब्धाः अनम्राः जाति मदप्रतिस्तब्धाः। उत्त०१२

जाइय- न० *[जाचिन]*
प्रार्थिते, । उत्त०।
'सव्वं से जाइयं होइ, नत्थि किं वि अजाइयं' आव०म०।

जाइवर- पुं० *[जातिवर]*
जात्युत्तमे, 'जाइवरसाररक्खियं' पण्हा० ४ अ०।

जाइसंपण्ण- पुं० *[जातिसंपन्न]*
उत्तममातृकपक्षयुते, उव०। ठा०। रा०। निर०। नाया०। यदाह–'जाइकुलसंपन्नो पावमकिञ्चं ने सेवइ किंचि आसेविउं च पच्छा तग्गुणओ सम्ममालोए' त्ति गुणवन्मातृत्वे, ठा० ९ ठा०।

जाइसर- त्रि० *[जातिस्मर]*
जातिं स्मरतीति जातिस्मरो भगवान्। आव० म०।

जाइसरण- न० *[जातिस्मरण]*
आभिजिवोधिकज्ञानविशेषे, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ०।
प्राग्भवे ज्ञानमति, जातिस्मरणम्। उत्त०९ अ०। दश०। तं०।
जातिस्मरणं द्विविधम्–सनिमित्तकम् अनिमित्तकं ।बुह०१ उ०।
जातिस्मरणं च संज्ञिजातिविषयकमेव यत्स्मरणं तत्संज्ञिपूर्व-जातिस्मरणम्।
व्यस्तनिर्देशे तु संज्ञी पूर्वो भवो यत्र तत्संज्ञिपूर्वी संज्ञीति च विशेषणं स्वरुपज्ञापनार्थं न ह्यसंज्ञिजाति विषयं स्मरणमुत्पद्यत इति। नाया० १ श्रु० १ अ०।

जाइसरणवरणिज्ज- न० *[जातिस्मरणावरणीय]*
मतिज्ञानावरणायकर्मभेदे, जातिस्मरणावरणीयानि च कर्माणि मतिज्ञानावरणभेदाः। क्षयोपशम चदितानां क्षयोऽनुदितानां विष्कम्भितोदयत्वमिति। नाया० १ श्रु० १ अ०।

जाई– स्त्री० *[जाति]*
मत्स्यकच्छपविशेषः। *जीवा०* ।
गुल्मविशेषः। *पन्न०* ।
जातिमदः-यज्जातेर्मानम्। *आव०* ।
जातिः-क्षत्रियाद्या, जननं वा क्षत्रियादिजन्म। *उत्त०* ।
जातिभेदः। *जीवा०* ।
मातृसमुत्था। *आव०* । *पिण्ड०* । *उत्त०* । *सूय०*।
जातिकुसुमवर्ण मद्यम्। *विपा०* ।
मातृकः पक्षः। *पण्हा०* ।
ज्ञातिः-लोकैषणाबुद्धिः। *आचा०* ।

जाईहिंगुलुय- पुं० *[जातिहिङ्गुलुक]*
रक्तवर्णे वर्णकद्रव्यभेदे, जातिहिङ्गुमुकेन वर्णकद्रव्येण स कृत्रिमोऽपि भवतीति जात्याविशेषितः। नाया० १ श्रु० १ अ०।
जात्यः प्रधानो हिङ्गुलुको जात्यहिङ्गुसुकः। पन्न०१ पद०।

जाईफल- न० *[जातीफल]*
गन्धप्रधाने वस्तुनि, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ०।

जाईमंडवग- पुं० *[जातीमण्डपक]*
'जाइमंडवग' शब्दार्थे, जंबू०१ वक्ष०।

जाईय- त्रि० *[जातीय]*
'एकग्रहणे, तज्जातीयग्रहणम्' इति न्यायः। आव०म०।

जाईसर- त्रि० *[जातिस्मर]*
'जाइसर' शब्दार्थे, आव०म०।

जाईसरण- न० *[जातिस्मरण]*
'जाइसरण' शब्दार्थे, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ०।

जाईसरणावरणिज्ज- न० *[जातिस्मरणावरणीय]*
'जाईसरणवरणिज्ज' शब्दार्थे, नाया० १ श्रु०१ अ०।

जाईहिंगुलुय- पुं० *[जातिहिङ्गुलुक]*
'जाइहिंगुसुय' शब्दार्थे, का०१ श्रु०१ अ०।

जाउया- स्त्री० *[यातृ]*
'जाउयाओ त्ति' देवराणां जायाः। नाया० १ श्रु०१६ अ०।
'जाउग त्ति' यातरो ज्येष्ठदेवरजायाः। बुह० १ उ०।

जाउल- पुं० *[जातुल्ल]*
गुच्छात्मके वनस्पतिभेदे, पन्न० १ पद०।

जाऊकण्ण- पुं० *[जातृकर्ण]*
गोत्रभेदे, जंबू० ७ वक्ष०।

जाऊकण्णीय- न० *[जातृकर्णीय]*
गोत्रभेदे, सूर० १० पाहु०। । चंद०१० पाहु०। ।

जाओगण- पुं० *[यादोगण]*
नानाविधाँस्तु यादसां गणान् संरक्षद् सह वा यादोगणै-रात्मानमारक्षन्। आचा० १ श्रु०५ अ०५ उ०।

जांबूणय- न० *[जाम्बूनद]*
स्वर्णे, तीरमृत तदूसं सुखवायुविशोषिता जाम्बूनदाख्यं भवति सुवर्णे सिद्धभूषणम् सुवर्णभेदे, तद्रसं जम्बूरसम्। जंबू०।

जाग- पुं० *[याग]*
यजनं यागः। पूजने, यागो यजनं पूजनं तत्परः तत्प्रधानः। । आचा०। नाया०।
देवपूजायाम्, नाया० १ श्रु० १ अ०।
देवतापूजावसरभाविनि ब्राह्मणप्रसिद्ध पूजा, अणुओ०। नाया०।
अश्वमेधादिके च। पिंड०।

जागभागदायसहस्सपडिच्छय- त्रि० *[यागभागदायसहस्रयतीच्छक]*
यागा पूजाविशेषाः भागा विंशतिभागादयो दायाः सामान्यदानान्येतेषां सहस्राणि प्रतीच्छतीति। तथाभृते, उव०।

जागर- पुं० *[जागर]*
जागर्तीति जागरः। अपगतनिद्रे, असंयमनिद्रापगमाज्जागर्तीति जागरः। आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ०।
'सुत्ता अमुणी उ सया, मुणी अ सुत्ता वि जागरा होंति' आचा० १ श्रु० ३ अ० १ उ०।
द्रव्यजागरो निद्रारहितः। भाव जागरः सम्यजागरः सम्यग्दृष्टिः। आव०म०। विशे०।

जागरण- न० *[जागरण]*
निद्राक्षये नाया० १ श्रु०२ अ०।

जागरमाण- न० *[जाग्रत्]*
जागरणं कुर्वत्यां जागर्ति निद्रानाशं कुरुत इति। नं०।
'निदाए भावतोवि य जागरमाणं चउण्हमण्णयरं'। निद्रारहिते, आव०म०।

जागरिता- त्रि० *[जागरिह]*
जागरके, ठा० ४ ठा० २ उ०।

जागरिय- पुं० *[जागरिक]*
जागरणं जागरः। सोऽस्यास्तीति जागरिकः।भग०१२ श०२ उ०।
निद्रारहिते, आव०म०।

जागरिया- स्त्री० *[जागरिका]*
जागरणे, आचा० १ श्रु०१ अ०।
जागृतं षष्ठीरात्रिजागरणप्रधानमुत्सवम्। *विपा०*।
रात्रिजागरिका। *उव०* ।

जागसहस्सभागपडिच्छय- त्रि० *[यागसहस्रभागप्रतीच्छक]*
यागाः पूजाविशेषाः ब्राह्मणप्रसिद्धाः तत्सहस्राणां भागमंशं प्रतीच्छति अभव्यत्वात् यत्। तथाभूते, उव०।

जागिणी- स्त्री० *[जागिणी]*
हरिभद्रसूरेः प्रतिबोधिकायां निर्ग्रन्थ्याम्, आचार्यहरिभद्रेण, टीकेयं शिष्याबोधिनी। दश० २ चू०।

जाण-१ न० *[यान]*
गमने, ठा०। सूय०।
यायतेऽनेनेति यानम्। सम०१ सम०।
यानानि सामान्यतः। शेषाणि वाहनानीति। रा०। जीवा०।
यानानि नौकादीनि। वाहनानि वेसरादीनि। दशा० ६ अ०।
यानं यानमात्रं सुत्तममतिप्रधानमच्छिरुमित्यर्थः।गच्छा०१ अधि०
यानं वाहनमिति। रा०।
यानं रथादिकमिति। पण्हा०५ अ०। रा०। उव०। ठा०।
याननि शकटादीनि। रा०। उव०। नाया०। ठा०।
वत्त यानं गन्त्र्यादि। अणुओ०। जीवा०।
यानं गन्त्रीविशेष इति। पण्हा० ५ अ०।
यानं लघुगन्त्रीति। भग०८ श०९ त्त०।
यानं शिबिकादीति। ठा० १० ठा०। आचा०।
यानं इस्त्यादीति । आव०म०। उत्त०।
'जाणं तु आसमाई' यानानि पुनरश्वादीनि, आदिशब्दात्, गजवृषभरथशिविकादीनि। बुह० १ उ०।
यानं-गन्त्रीविशेषः। *पण्हा०* ।

जाण-२ न० *[यान]*
'चत्तारि जाणा पन्नत्ता। तं जहा–जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्ते नाममेगे अजुत्ते, अजुत्ते णाममेगे जुत्ते अजुत्ते। ठा०।
चत्तारि जाणा पन्नत्ता। तं जहा–जुत्ते नाममेगे जुत्तपरिणए जुत्ते नाममेगे अजुत्तपरिणए ४ । ठा०।
चत्तारि जाणा पण्णत्ता। तं जहा–जुत्ते णाममेगे जुत्तरुवे जुत्ते णाममेगे अजुत्तरूवे ४ । ठा०।
चत्तारि जाणा पण्णत्ता। तं जहा–जुत्ते णाम मेगे जुत्तसोमे ४' ठा० ४ उ०।

जाण-३ न० *[यान]*
यान्त्यनेन मोक्षमिति यानम्। चारित्रे, आचा०१ श्रु०३ अ०९ उ०।

जाणं- त्रि० *[जानत्]*
अवगच्छति 'अजाणओ मे मुणि वूहिजाणं' जानन्नवगच्छन्। सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०। ठा०। वृ०।
'अजाणंता विउस्सित्ता' सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०।
जानन्नववुव्यमानः। विशे०। उत्त०।
जानता ज्ञानोपयुक्तेना। आचा०१ श्रु०८ अ०१ उ०।

जाणंत-१ त्रि० *[जानत्]*
'जाणं' शब्दार्थे, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०।

जाणंत-२ त्रि० *[जानान्]*
'जाणंत' शब्दार्थे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०

जाणग-१ पुं० *[[ज्ञक]*
पण्डिते, सोमपुत्रे, बुधे च। अणुओ०। उत्त०।

जाणग-२ त्रि० *[ज्ञक]*
ज्ञानिनि, सूय० १ श्रु०१ अ०१ उ०।
ज्ञापकः-तीर्थकृत्। *आचा०* ।

जाणग-३ त्रि० *[ज्ञायक]*
ज्ञातरि, विज्ञे। नं०
'जाणयति' ज्ञायको ज्ञातेति। उव०।

जाणगय- त्रि० *[यानगत]*
यानानि शकटादीनि। तत्र गते, उव०।

जाणगसरीर- न० *[ज्ञशरीर]*
'जाणगत्ति' ज्ञायको, ज्ञो वा तस्य शरीरं ज्ञशरीरम्। जीवरहिते जानतः शरीरे, उत्त० १ अ०। निसि० ।
ज्ञातवान् इति ज्ञः। प्रतिक्षणं शीर्यत इति शरीरम्। ज्ञस्य शरीरम् ज्ञशरीरम्। अणुओ०।

जाणगिह- न० *[यानगृह]*
यत्र यानानि तिष्ठन्ति। तस्मिन् गृहे, आचा०२ श्रु०२ अ०२ उ०।

जाणण- न० *[ज्ञान]*
अवगमने, आव०६ अ०।

जाणणा- स्त्री० *[ज्ञा]*
ज्ञानं ज्ञा संवित्तौ, आव०म०। अणुओ०।

जाणणाणय- पुं० *[ज्ञाननय]*
नयभेदे, ज्ञानोपलब्धिमात्रः। अविशेषितं द्रव्यास्तिक इत्यर्थः। आव०चू०३ अ०।

जाणणासंखा- स्त्री० *[ज्ञानसंख्या]*
'जाणणा' ज्ञानं संख्यायते निश्चीयते वस्त्वनयेति संख्या, ज्ञानरूपा संख्या ज्ञानसंख्या। संख्याभेदे, अणुओ०।

जाणणासुद्ध- न० *[ज्ञानशुद्ध]*
'पच्चक्खाणं जाणइ, कप्पे जंबू०
जम्मि होइ कायव्वं। मूलगुणत्तरगुणे तं जाणसु जाणणासुद्धं' इत्युक्तलक्षणे प्रत्याख्यानभेदे, आव० ६ अ०। आव०चू०।

जाणय- पुं० *[ज्ञ]*
'जाणग' शब्दार्थे, अणुओ०।

जाणयसरीर- न० *[ज्ञशरीर]*
'जाणगसरीर' शब्दार्थे, उत्त०१ अ०।

जाणरह- पुं० *[यानरथ]*
रथविशेष, रथा द्विविधाः–यानरथाः, संग्रामरथाश्च। तत्र संग्राम रथस्य प्राकारानुकारिणी फलकमय। वेदिका, अपरस्य तु न भवतीति विशेषः। जीवा० ३ प्रति०।

जाणरूव- त्रि० *[यानरूप]*
शिवकाद्याकारवति, यानप्रकारेण शिविकाद्याकारवतेति। भग० ३ श० ४ उ०।

जाणवय- त्रि० *[जानपद]*
जनपदे भवः, रा०। उव०। आचा०। सूर०।
जन पदे भवाः जानपदा विशिष्टार्यदेशोत्पन्नाः। सूय०२ श्रु०१ अ०
'बहवे जाणवया लुंसिसु' आचा० १ श्रु० ९ अ० ३ उ०।
जनपदभवास्तत्रायाताः सन्तो यत्र तत्। *भग० ७*।
जनपदभवास्तत्र प्रयोजनवशादायाताः सन्तो यत्र स । *सूर०* ।

जाणविमाण- त्रि० *[यानविमान]*
यानञ्च तद्विमानं च। यानाथवा गमनाय विमानं यानविमानम्। ठा०४ ठा०३ उ०।
यानं गमनं तदर्थे विमानम्। यायतेऽनेनेति यानम् तदेव विमानं यानविमानम्। ठा०१ ठा०१ उ०।
यानरूपं वाहनरूपं विमानं यानविमानम्। रा०।
देवानां गमनसाधने नगराकारे वाहने, 'दसण्हं इंदाणं दस परियाणिया जाणविमाणा पण्णत्ता। तं जहा–पालए पुप्फए जाव विमलबरे सव्वओभद्दे' यानं शिविकादि तदाकाराणि विमानानि देवाश्रयाणि यानविमानानि न तु शाश्वतानि नगराकाराणीत्यर्थः। ठा० १० ठा०।
यानानि-शकटविशेषाःविमानानिज्योतिष्कवैमानिकदेवसम्बन्धि गृहाणि। यानविमानानिपुष्पकपालकादीनि। *पण्हा० ९५*।

जाणसाला- स्त्री० *[यानशाला]*
यत्र यानानि निष्पाद्यन्ते तस्यां शालायाम्। 'जाणसालाओ वा'। आचा० २ श्रु० २ अ० २ उ०। आव०म०। दशा०।

जाणाविय- त्रि० *[ज्ञापित]*
बोधिते, 'अभयकुमारेण जाणावितो' आव०म०।

जाणिअ- त्रि० *[ज्ञात]*
आत्मनो बलाबलं ज्ञात्वा परीषहादि सहनसामर्थ्यं विचार्य। उत्त० २१ अ०।
'निरओवमं जाणिव दुक्खमुत्तमं' ज्ञात्वा विज्ञायेति।दश०१ चू०।
ज्ञात्वा स्वरूपतस्तद्विपाकतो वा परिच्छिया सूय०१श्रु०२अ०२ उ०

जाणिऊण- अव्य० *[ज्ञात्वा]*
विज्ञायेत्यर्थे, आचा०।

जाणित्तु- अव्य० *[ज्ञात्वा]*
विज्ञायेत्यर्थे, 'जाणित्तु धम्मं अहा तहा'आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ०

जाणियव्वंगसामत्थजुत्त- त्रि० *[ज्ञातव्यसामर्थ्ययुक्त]*
विज्ञप्तिकरणे, 'जाणितव्वगतामत्थजुत्तंति वा विणात्तिहेउभूयंति वा एगट्ठा' आव०चू० १ अ०।

जाणु- न० *[जानु]*
ऊरुजङ्घयोर्मध्यभागे, पन्न०। उत्त०।
समुग्गनिमग्गगूढजाणू' तं०।
जाणुस्सेहपमाणमित्ते। सम० ३४ सम०।

जाणुकोप्परमाया- स्त्री० *[जानुकूर्परमात्रा]*
जानुकूर्पराणामेव माता जननी जानुकूर्परमाता एतान्येव शरीरां शभूतानि तस्यास्तवौ स्पृशन्ति नापत्यम्। अथवा–
जानुकूर्पराण्येव मात्रा परप्राणादेः साहाय्यसमर्थः उत्संगनिवेश-नीयो वा परिकरो यस्याः, न पुत्रलक्षणः सा जानुकूर्परमात्रा। अपत्थरहितायाम्, पुष्फि० वर्ग०। नाया०।

जाणय- त्रि० *[ज्ञापक]*
वेदिनि, 'जाणुयाय जाणुयपुत्ताय' नाया०१श्रु०१३अ०। विपा० ।

जाण- स्त्री० *[ज्ञा]*
व्यावृत्तिभेदे, यज्ञस्य हिंसादेर्देतुस्वरूपक लविदुषो ज्ञानपूर्विका व्यावृत्तिः सा तदभेदात् 'जाणुत्ति गदिता' ठा०३ ठा०४ उ०।

जाणहई- स्त्री० *[जान्हवी]*
गङ्गायाम्, जाह्नव्या गङ्गाया मुखे, ठा० ६ ठा०। विशे०।

जाम- पुं० *[याम]*
स च रात्रेर्दिनस्य च चतुर्थभागः। ठा०३ ठा०२ उ०।

जामद्ध- न० *[यामार्द्ध]*
यामं प्रहरं तस्यार्द्धम् यामार्द्धम्। चतुर्घटिके समयविशेषे, गच्छा०१ अधि०।

जामाउय- पुं० *[जामातृक]*
दुहितभर्तरि, विपा० १ श्रु०३ अ०।

जामि- स्त्री० *[जामि]*
'जामी एगे' गत्वेत्यर्थे, ठा०१ ठा०।

जामुणकुसुम- न० *[जपाकुसुम]*
रक्तपुष्पस्य वृक्षभेदस्य पुष्पे, 'जामुणकुसुमोई वा' रा०।

जाय- न० *[जात]*
जातौ, प्रकारे च। ठा०१० ठा०।
जातमुत्पत्तिधार्मेकम्। तच्च व्यक्ति वस्तु। अतो भाषायाः जातनि व्यक्तिवस्तूनि भेदाः प्रकाराः। जातं प्रकारः। ठा०४ ठा०१ उ०।
'अट्ठजाए वि दट्ठव्वं' जातशब्दो भेदवाचकः। निसि०१ उ०
'जाय' सद्दो प्रकारवाची। निसि०१६ उ०। आव०म०। बुह०।
उत्पन्ने, । ठा०९ ठा०। सूय०। उत्त०। बुह०।
नानादेशजविनेयानुग्रहार्थमेकार्थिकान्येवैतानि। आचा०२ श्रु०१ अ०८ उ०।
प्रवृत्ते, रा०। उव०।
विद्यमाने च। विशे०।
पुत्रे, सरपायं च जायाए' सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०।
'जाए फले समुपण्णे' सूय०१ श्रु०४ अ० २ उ०।
'धण्णो सि णं तुमं जाया' हे पुत्र ! भग० ९ श०३३ उ०। बुह०।

जायंत- त्रि० *[याचमान]*
याचनं कुर्वति, याचमानः पानीयम्। पण्हा०३ अ०

जायअंधारूवग- पुं० *[जातान्धरूपक]*
जातमुत्पन्नमन्धकनयनयोरा-दित एवानिष्पत्तेः कुत्सितमङ्गरूपं यस्यासौ। जातान्धरूपके, विपा० १ श्रु०१ अ०।

जायकम्म- न० *[जातकर्मन्]*
नालच्छेदादिके प्रसवकर्मणि च। 'पढमे दिवसे जायकम्मं करेंति' जातकर्म प्रसवकर्म नालच्छेदननि-खननादिकम्। नाया०१ श्रु०१ अ०।
'णिव्वत्ते असुइं जायकम्मकरणे' जातकर्मणां प्रसवव्यापाराणां कारणं विधानम्। तस्मिन्, ठा० ९ ठा०। उव०।

जायकोऊहल- त्रि० *[जातकुतूहल]*
जातं कुतूहलं यस्य स जात-कुतूहलः। जातौत्सुक्ये, रा०। सूर०।

जायक्खंधे– न० *[जातस्कन्ध]*
अत्यन्तोपचितीभूतः स्कन्ध एवास्येति जातस्कन्धः। *उत्त०*।

जायग-१ त्रि० *[याचक]*
देवैर्भगवत्स कथादौ गृहीते सति श्रावका देवानतिशय भक्तया याचितवन्तः देवा अपि तेषां प्रचुरत्वान्महता यत्रेन याचनाऽभिहता आहुः–'अहो याचकाः' इति। तत एव याचका रूढाः। आव०म०।
'ते च सढा अग्गिसकदधादीणि जायंति ताहे देवेहिं भणितं–इमे केरिसगा, 'जायगा' ततो जायगसद्दो जातो। ताहे अग्गिं घेत्तुं ते सएसु सएसु गेहेसु ठवेंति। आव०चू०१ अ०।

जायग-२ पुं० *[याजक]* .
'सो तत्थ एव पडिसिद्धो, जायगेण महामुनी' याजकेन यज्ञकारकेण। उत्त० २६ अ०।

जायण-१ न० *[याचन]*
द्वारा मार्गणे च। आव०४ अ०।

जायण-२ न० *[यात्रन]*
कदर्थने, पण्हा०२ अ०।

जायणजीवण-१ त्रि० *[याचनजीवन]*
याचनेन जीवनं प्राणधारणसस्येति याचनजीविनः। उत्त०१२ अ०

जायणजीवण-२ त्रि० *[याचनजीविन्]*
याचनेन जीवनशीले च। उत्त०१२ अ०।

जायणा-१ स्त्री० *[याञ्चा]*
प्रार्थनायाम्। नाया०। उत्त०।
मार्गणे च। आव०४ अ०।

जायणा-२ स्त्री० *[यातना]*
कदर्थनायाम्, पण्हा०१ अ०।
दण्डो निग्रहो यातना विनाश इति पर्यायः। आव०६ अ०।
'जायणा करणसयाणि' कदर्थनहेतु शतानि। पण्हा०३ अ०।

जायणापरीसह- पुं० *[याञ्चापरीषह]*
याचनं याञ्चा प्राथनेत्यर्थः। सैव परीषहो याञ्चापरीषहः। उत्त०। परीषहभेदे, । आव० ।
भिक्षोर्हि वस्त्रपात्रान्नपानप्रतिश्रयादिपरतो लब्धव्यं सर्वमेव शालीनतया च न याञ्चा प्रत्याद्रियते। साधुना तु प्रागल्भ्यभाजा सा जाते कार्ये स्वधर्मकाय परिपालनाय याचनमश्वयं कार्यमित्येवमनुतिष्ठता याञ्चापरीषहविजयः कृतो भवति। आव०४ अ०। आव०चू०।

जायणी- स्त्री० *[याचनी]*
याच्यतेऽनयेति याचनी। भाषाभेदे, ठा० ४ ठा०१ उ०।
याचनां कस्यापि वस्तुविशेषस्य देहीति मार्गणरूपे भाषाभेदे, पन्न०११ पद। भग०। दश०। संथा०।
असत्यामृषाभाषाभेदः। *दश०* ।

जायतेय- पुं० *[जाततेजस्]*
अग्नौ, 'जायतेयं न इच्छंति' दश०६ अ०।
'जायतेयं समारम्भ, बहुओ रुंभिया जणा। अंतो धूमेण मारेइ, महामोहं पकुव्वइ' सम० ३० सम०।

जायथाम- त्रि० *[जातस्थामन्]*
उत्पन्नबले,'वसभो इव जायथामे'गौरिवोत्पन्नबलः। ठा०९ ठा०।

जायपक्ख- पुं० *[जातपक्ष]*
जाततन्तुरुहे, 'जायपक्खा जहा हंसा' उत्त०२३ अ०।

जायपुंखाइ- पुं० *[जातपुंख्याति]*
उत्पन्नगुणपुरुषविवेक प्रख्यातौ, तत्परं जातपुंख्याते, ठा०१ ठा०।

जायफल- न० *[जातफल]*
पुत्ररूपे फले, जातः पुत्रः स एव फलं गृहस्थानां तथाहि पुरूषाणां कामभोगः फलम् तेषामपि प्रधानकार्यं पुत्रजन्मेति। सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०।

जायमजायकप्प- पुं० *[जाताऽजातकल्प]*
कल्पभेदे, (पंच०चू०।)

जायमूक- पुं० *[जातमूक्]*
जन्मतो मूके, विपा० १ श्रु०१ अ०।

जायरूव- न० *[जातरूप]*
सुवर्णे रा०। पण्हा०। नाया०। ठा०।
जातं लब्धं रूपं स्वरूपं रागदिकुद्रव्यविरहादुयेन स । ठा०९ ठा०
सुवर्णविशेषे, रा०। जंबू०।
जातरूपं सुवर्णविशेषः जीवा०३ प्रति०।
'अहवा–जायरूवे च प्रवालगवत् जानंतं जायरूवं भण्णति' निसि०१ उ०।
रूप्ये च, 'हिरण्णं जायरूव च, मणसा वि न चिंतए' जातरूपं रूप्यम्। उत्त०३५ अ०।

जायरूवकंड- न० *[जातरूपकाण्ड]*
रत्नप्रभापृथिव्याः वोडशसु काण्डेषु त्रयोदशे काण्डे, ठा० १०ठा०

जायव- पुं० *[यादव]*
यदोरपत्यम्। यदुवंशजे, प्रद्युम्नप्रतीपशाम्बानिरुद्धनिषधोल्मुक सारणगजसुमुखदुर्मुखादीनां यदोरपत्यानाम्। पण्हा० ४ अ०।

जायसंसय- त्रि० *[जातसंशय]*
जातः संशयो यस्य स जात संशयः। उत्पन्नसंशये, सूर०१ पाहु०। । उव०। नाया०। चंद०। जंबू०। रा०।

जायसड्ढ- त्रि० *[जातश्राद्ध]*
जाता प्रवृत्ता श्रद्धा इच्छा विशेषो यस्यासौ जातश्राद्धः। प्रवृत्तेच्छाविशेषे, नाया०१ श्रु०१ अ०। चंद०। सूर०। रा०। जंबू०। निर० । उव०।

जाया-१ स्त्री० *[यात्रा]*
निर्वाहे च। यात्रार्थं पञ्चमहाव्रत भारनिर्वाहणार्थम्। सूय० १ श्रु० ७ अ०। भग०।

जाया-२ स्त्री० *[जाया]*
भार्यायाम्, (भग०)।
स्त्रीत्वेन जायाम्बयोः। कान्ताजनन्योः । भग०।

जाया-३ स्त्री० *[जाता]*
प्रकृतिमहत्ववर्जितत्वेनास्थानाकोपादीनां जातत्वाज्जाता। चमरादिदेवेन्द्राणां बाह्यपर्षदि, भग०१ श०१ उ०।

जायाइ- पुं० *[यायाजिन्]*
यायजतीत्येवंशीलो यायाजी। वजनशीले, 'जायाई जम जन्नम्मि' यमयज्ञे यायाजी। उत्त०२५ अ०।

जायमाया- स्त्री० *[जात्रामात्रा]*
यात्रा संयमयात्रा तस्या मात्रा यात्रामात्र 'आयागुत्ते णयाधीरे जायामाथाए'। आचा०१ श्रु०३ अ०३ उ०।
संयमार्थ परिमिताहारग्रहणे, नं०।

जायामायावित्ति- स्त्री० *[जावामात्रावृत्ति]*
संयमयात्राप्रमाणायां जीविकायाम्, संयमयात्राप्रमाणा जीविकाऽभवत्। सूय०२ श्रु०२ अ०
यात्रा संयमयात्रा मात्रा तदर्थमेव परिमिताहारग्रहणम्, वृत्तिर्विविधैरभिग्रहविशेषैर्वर्तनम्। भग० २५ श०३ उ०। नं०।

जार- पुं० *[जार]*
मणिलक्षणविशेषे च। जारमारेति लक्षणविशेषौ सम्यग्मणि लक्षणवेदिनौ लोकाद्धेदितव्यौ। जीवा०३ प्रति०। रा०। जंबू०। आव०म०।

जारिश- त्रि० *[यादृश]*
यत्सदृशे, यथाविधे, आव०म०।
यादृशको यत्स्वरूपकः यादृशं यद्रूपम्। पण्हा०१ अ०। 'जंबू०

जारिसं पुव्वमकारि कम्मं, तमेव आगच्छति संपराए। यत्कर्म याद्दशं यदनुभावं याद्दकस्थितिकं वा। सूय०१ श्रु०५ भग०२ उ०।

जारूकण्हं-पुं० *[जारूकृष्ण]*

वशिष्ठगोत्रान्तर्गते गोत्रभेदे, ठा० ७ठा

जाल-पुं० *[जाल]*

कदम्बवृक्षे, गवाक्षे, रा०। जंबू०।

सच्छिद्रे गवाक्षविशेषे च। जालं सच्छिद्रो गवाक्षविशेषः। नाया०१ श्रु०१ अ०।

जालकं विद्रान्वितो गृहावयवविशेषः। पण्हा०१ अ०। उव०।

'जालानि जालकाभवनभित्तिषु लोके प्रतीतानि रा०। जीवा०। सूर०। चंद०। सम०। जीवा०।

अपवरकजालका-न्तरस्थप्रदीपप्रभोपमः। विशे०।

जालेन वाऽऽनायेनोत्क्षेपणानि। पण्हा०१ अ०।

मत्स्यबन्धनविशेषे, पण्हा० ४ अ०। विपा० ।

'तहेव कोंचा समइक्कमंता, तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा'। जालानि बन्धनविशेषरूपाणि उत्त० १४ अ०।

अस्फुटकलिकायाम्, क्षुद्रफले, मृगपक्ष्यादिधारणार्थे पाशे, शाठ्ये, दम्भे, समूहे च, । जंबू०। आव०म०।

सन्ताने, आव०४ अ०।

चरणामरणविशेषे च। उव०।

जालंतररयण- त्रि० *[जालान्तररत्न]*

जालान्तरेषु जालक मध्यभागेषु रत्नानि वस्थ। तस्मिन्, जालकानि च भवनभित्तिषु लोके प्रती तान्येव तदन्तरेषु च शोभार्थं रत्नानि संभवन्त्येव।सम०।रा०।चंद०। जीवा०। सूर०।

जालंधर- पुं० *[जालन्धर]*

गोत्रभेदे च। 'देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगुत्ताए'। कल्प०१ क्षण०। आव०चू०

जालंधरायण- पुं० *[जालन्धरायण]*

गोत्रभेदे, 'देवाणंदाए जालंधरायणसगुसत्ताए'। आचा० ३ चू०।

जालकडग- पुं० *[जालकटक]*

जालानि जालकानि भवनभित्तिषु लोकेऽपि प्रसिद्धानि तेषां कटकः समूहो जालकटकः। जीवा०३ प्रति०।

जालकटकाकीर्णे रम्यसंस्थाने प्रदेशविशेषे, जीवा० ३ प्रति०।

'विजवस्स णं दारस्स उभओ पासिं दुहओ णिसिहियाए जो दो जालकण्गा पन्नत्ता'। जालकटकौ जालकटकाकीर्णौ प्रदेश-विशेषौ। जंबू०१ वक्ष०।

'सा णं जगतीए केणं जालकडएणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता' जीवा०३ प्रति०।

जालकटकाकीर्णा रम्यसंस्थानप्रदेशयिविशेषपङ्क्तिरिति भावः। जीवा०३ प्रति०।

जालग- पुं० *[जालक]*

छिद्रान्विते गृहावयवविशेषे, पण्हा०१ अ०।

जालकं विच्छित्तिठिद्रवत् गृहावयवविशेषः।नाया०१ श्रु०१ अ०।

जालकानि भवनभित्तिषु लोके प्रतीतानि। रा०। जीवा०। सम०। सूर०। चंद०। जीवा०।

चरणाभरण विशेषे च। उव०।

सह किङ्किणिकाभिः क्षुद्रघण्टिकाभिः यज्जालं जालकं तदाभरण विशेषस्तेन परिक्षिप्ताः परिकरिताः ये ते तथा तेषाम्। उव०।

जालगंठिया- स्त्री० *[जालग्रन्थिका]*

जालं मत्स्यबन्धनं, तस्येव ग्रन्थयो यस्यां सा जालग्रन्थिका। जालवद् ग्रन्थियुतायाम्, किं स्वरूपा सा ? *भग०* ।

सङ्कलिका-मात्रम्। *भग०* ।

जालधरग- न० *[जालगृहक]*

जालकान्विते गृहे, नाया०१ श्रु०३ अ०।

जालगृहकाणि गवाक्षयुतानि गृहकाणि। रा०। जीवा०।

दार्वादिमयजालकप्रायकुडयं यत्र मध्यव्यवस्थितं वस्तु बहिः– स्थितैर्न द्दश्यते। नाया० १ श्रु०२ अ०। उव०।

जालपंजर- न० *[जालपञ्जर]*

गवाक्षे, जालपञ्जरणि गवाक्षापर पर्यायाणि। जीवा०३ प्रति०। रा०। जंबू०।

जालपगट- पुं० *[जालप्रकट]*

ज्वालासमूहे, कल्प०३ क्षण०।

जालविंद- न० *[जालवृन्द]*

गवाक्षसमूहे, जीवा०३ प्रति०।

जाला-१ स्त्री० *[ज्वाला]*

बादरतेजस्कायभेदे, पन्न०१ पद०।

'जालाए त्ति वा' ज्वाला अनलसंबद्धेति। जीवा०३ प्रति०।

ज्वाला अनलसंबद्धा दीपशिखेत्यन्ये। जीवा०१ प्रति०।

ज्वालानाम् अनलसंबद्धस्वरूपाणाम्। भग०१४ श०७ उ०।

ज्वालाग्निशिखा ठिन्नमूला। ठा० ५ ठा०३ उ०।

ज्वालाछिन्नमूलानङ्गार प्रतिबद्धेति। आचा०१ श्रु०१ अ०४ उ०।

ज्वाला ठिन्नमूला ज्वलनशिखैव। उत्त०३६ अ०।

जाला-२ स्त्री० *[ज्वाला]*

हस्तिनापुरवास्तव्यस्य पद्मोत्तर नृपतेर्भार्यायाम्, 'हत्थिणाउरे तत्थ य पउमुत्तरो राया जाला तस्स देवी' महापद्मचक्रवर्तिनो मातरि, सम०। आव०।

जालाउ- पुं० *[जालायुष]*

द्वीन्द्रियजीवभेदे, पन्न०१ पद। जीवा०।

जालाउय- पुं० *[जालायुष्क]*

'जालाउ' शब्दार्थे, पन्न०१ पद०।

जालि- पुं० *[जालि]*
अनुत्तरोपपातिकदशाप्रथमवर्गाद्याध्ययन प्रतिवद्धवक्तव्यताकेऽ-नगारे । अनुत्त० ।
अन्तकृद्दशानां चतुर्थवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। *अन्त०* ।

जालिय- त्रि० *[ज्वालित]*
दीपिते, आव०म०। जीवा०।

जालिया- स्त्री० *[जालिका]*
वृन्ते, एकार्थिकानधिकृत्य जालकं, जालिका, वृन्तम्, । विशे०।
लोह कञ्चुके च। पण्हा०३ अ०।

जालुज्जल- त्रि० *[ज्वालोज्जवल]*
प्रभोज्जवले, उव०।

जालुज्जलपहसियाभिराम- त्रि० *[ज्वालोज्जवलप्रहसिताभिराम]*
ज्वाला एव यत् उज्जवलं प्रहसितमिव प्रहसितं तेनाऽभिरामो ज्वालोज्जवलप्रहसिताऽभिरामः। ज्वालात्मकोज्जवलप्रहसिते-नाऽभिरमणीये, जीवा०३ प्रति०।

जाव- त्रि० *[यावत्]*
परिमाणे, मर्यादायाम्, अवधारणे च।कल्प०।आव०चू०। उत्त०

जावई- स्त्री० *[यावती]*
गुच्छात्मके वनस्पतिभेदे, पन्न० १ पद०।

जावं च णं- अव्य० *[यावच्च णम्]*
यावति काले, 'जावंचणं ति' यावन्तं कालमित्यर्थः। भग० १ श०८ उ०।

जावंत- पुं० *[यावत्]*
भगवत्याः प्रथमशतकस्य षष्ठे उद्देशे, 'जावंते त्ति' यावच्छ-शब्दोपलक्षितः षष्ठः, यावतो भदन्तावकाशान्तरासूर्य इत्यादिसूत्रश्चासौ। भग० १ श० १ उ०।

जावंताव- अव्य० *[यावत्तावत्]*
बीजगणितप्रसिद्धे अव्यक्तमानानयनाय कल्प्ये प्रथमे राशौ। ठा० 'जावंताव त्ति वा गुणकारो त्ति वा एगट्ठ' इति वचनात्। गुणकारस्तेन यत्संख्यानं तत्तथैवोच्यते तच्च प्रत्युत्पन्नामिति लोकरूढम्। अथवा–यावतः कुतोऽपि तावत एव गुणकाराद्य-द्दृष्टिकादित्यर्थः। यत्रं विवक्षितं संकलनादिकमानीयते तत् यावत्तावत्संख्यानमिति। संख्यानभेदे, ठा०१० ठा०
गणितभेदे, सूय०२ श्रु०१ अ०।

जावग- पुं० *[यापक]*
यापयतीति यापकः। जीवा० ३ प्रति०।
उपदेशदानादिना भव्यसरस्वैरागादियापके जिने,कल्प०२ क्षण०
जिणाणं जावयाणं। रा०।

जावगहेउ- पुं० *[यापकहेतु]*
यापयतीति यापकः यापकश्चासौ हेतुश्च, हेतुभेदे । दश० ।

जावजीव- अव्य० *[यावज्जीव]*
यावदिति अयं शब्दोऽवधारणे वर्तते । आव०म० ।
जीवनं जीवः, इति क्रियाशब्दः। आव०म०।
यावज्जीवो जीवनं प्राणधारणं यावज्जीवम्। आव०म०।
यावत् प्राणधारिणमित्यर्थः, ठा० ३ ठा० १ उ०। सम०।
'जावजीवं परिसहा उवसग्गा य संखया'। 'यावज्जीवं' यावत् प्राणधारणम्। आचा०१ श्रु०९ भग०८ उ०।
आजन्मेत्यर्थे च। आजन्माप्यनुद्धारणीयानि। पण्हा०२ अ०।
आप्राणोपरमादित्यर्थः। *दश०* ।

जावजीवा- स्त्री० *[यावज्जीव]* अव्य०।
जीवनं जीवः प्राणधारणं यावज्जीवो यावज्जीवनं 'जावजीवाए अणिस्सिओ' यावज्जीवं प्राणधारणं यावतु। आव०म०।
'करेमि भंते ! सामाइयं सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावजीवाए' यावच्छब्दः परिमाणमर्यादावधारणवचनः। तत्र परिमाणे–यावन्मम जीवनपरिमाणं तावत्प्रत्याख्यातमिति। मर्या-दायाम्–यावज्जीवनमिति प्राणधारणं मर्यादीकृत्य, अवधारणे यावज्जीवनमेव प्रत्याख्यामिः, न तस्मात् परत इत्यर्थः। जीवनं जीवेत्ययं क्रियाशब्दः परिगृह्यते तया। अथवा प्रत्याख्यानक्रिया परिगृ-हते यावज्जीवो यस्यां सा यावज्जीवा। आव०म०।

जावजीवा- स्त्री० *[यावज्जीवता]*
यावज्जीवं भावो यावज्जीवता प्राकृतेऽन्यतकारस्यालाक्षणिको लोप इति 'जावजीवाए' इति सिद्धम्। आव०म०।

जावजीवा- स्त्री० *[यावज्जीवा]*
यावज्जीवो यस्यां सा यावज्जीवा, जीवित परिमाणवत्यां प्रत्याख्यानादिक्रियायाम् । आव०म०।

जावज्जीवा- स्त्री० *[यावज्जीवा]*
'जावजीवा' शब्दार्थे, विशे०।

जावण- न० *[यापन]*
वर्तने, यापयेदात्मानं वर्तयेत्। सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ०।
अट्ठमासे अजावए।अजापयद्वर्तितवान्।आचा०१ श्रु०९ अ०४ उ०
देह प्रतिपालने च। 'अह जावइ त्थ लूहेणं' धर्माधारं देहं यापसतिस्म। आचा० १ श्रु०९ अ०४ उ०।
यापना द्विविधा द्रव्यतो भावतश्च। द्रव्यत औषधादिना कायस्य।
भावतस्तु इन्द्रियनोइन्द्रियोपशमेन शरीरस्य क्षामणा।आव०३अ०

जावणिज्ज- त्रि० *[यापनीय]*
यापयतीति यापनीयः आव०३ अ०।
शक्तिसमन्विते, 'जावणिज्जाए णिसीहियाए' अत्र नैषेधिक्येति विशेष्यम्, यापनीयेति विशेषणम्। 'या' प्रापणे। आव०३ अ०।

जावय- पुं० *[यापक]*
'जावग' शब्दार्थे, जीवा०३ प्रति०।

जावयहेउ- पुं० *[यापकहेतु]*
'जावगहेउ' शब्दार्थे, दश० १ अ० ।

जावसिय- पुं० *[जावसिक]*
जवसं मुद्गभाषादिद्रव्यं, तेन चरन्तीति जावसिकाः। बुह०१ उ० ।
यासवाहिके, ओह० ।

जाविय- त्रि० *[यापित]*
कालान्तरं प्राप्ते, 'जंबू०
पिय तिलकीडगाय त्ति' यापिताः कालान्तरं प्राप्ताः। नाया०१ श्रु०१७ अ० ।

जास- पुं० *[जाष]*
पिशाचभेदे, पन्न०१ पद ।

जासुमण- पुं०न० *[जपासुमनस्]*
जपा वनस्पतिविशेषः। तस्याः सुमनसः पुष्पाणि। जपापुष्पे, अंत०४ वर्ग० ।
'जासुमण कुसुमेइ वा' पन्न०१७ पद ।
जपा कुसुमपुष्पस्य जा इति लोकप्रसिद्धस्य यो राशिः। कल्प०३
वृक्षविशेषे च। जपासुमनसश्च वृक्षविशेषः। नाया०१ श्रु०१ अ० ।

जाहग- पुं० *[जाहक]*
सेहके, आव०म० ।
तिर्यगविशेषे, आव०म० । नं० ।
कण्टकावृतशरीराः। *पण्हा० ८*।

जाहे- अव्य० *[यदा]*
यस्मिनकाले इत्यर्थे, 'जाहे णं सक्के देविंदे देवे राया' (जाहेणं ति) यदा। भग० १ श० ९ उ० ।

जिइंदिय- पुं० *[जितेन्द्रिय]*
इन्द्रियविकाराभावात्। भग०२ श०१ उ०
जितानि स्वविषयप्रवृत्तिनिषेधेन इन्द्रियाणि येन स जितेन्द्रियः सूय०२ श्रु०६ अ० ।
जितानि वशीकृतानि इन्द्रियाणि स्पर्शनादीन्यनेनेति जितेन्द्रियः। उत्त०१२ अ० ।
वश्येन्द्रिय सूय०१ श्रु०११ अ० ।
वशीकृतस्पर्शनादीन्द्रियकलापः। दश०२ चू० ।
विषयेषु रागादिनिरोद्धा। नाया०१ श्रु०१३ अ० ।
जितानि वशीकृतानि इन्द्रियाणि श्रोत्रादीनि यैस्ते तथा। एवं भूताः पापकर्म नाऽनुजानन्ति इति सूय०१ श्रु०८ अ० ।
जितानि वशीकृतानि स्वविषयरागद्वेष विजयंनेन्द्रियाणि यैस्ते जितेन्द्रियाः। सूय०१ श्रु०९ अ० ।
जितेन्द्रियाः शब्दादिषु रागद्वेषरहितः। दश०३ अ० । उव० ।

जिंध- न० *[जाण]*
नासिकायाम्, गन्धग्रहणे, निसि० ।

जिट्ठकप्प- न० *[ज्येष्ठकल्प]*
ज्येष्ठो रत्नाधिकः स एव कल्पो वृद्धलघुत्वव्यवहारो ज्येष्ठकल्पः।
कल्पभेदे (कल्प०) ।

जिट्ठा-स्त्री० *[ज्येष्ठा]*
ज्येष्ठभगिन्यास, वयोज्येष्ठायाम्, ज्येष्ठस्य पत्न्याम्, गङ्गायाम्,अलक्ष्याम्,अश्विन्यबधिके अष्टादशे नक्षत्रे च। जंबू०
ज्येष्ठा-सुदर्शना, अनवद्याङ्गी। *निसि०*।

जिण- पुं० *[जिन]*
जयति निराकरेति रागद्वेषादिरूपानरातीनितिजिनः। सम०१ सम
जयति रागद्वेषमोहरूपानन्तरङ्गान् रिप-निति जिनः। रागद्वेष कषायेन्द्रियपरीषहोपसर्गाष्टप्रकाराकर्मजेतृत्वात् जिनः।आव०म० । दश० । उव० ।
जिनाः सामान्यकेवलिनः। पन्न०१ पद ।
चतुर्दशपूर्विणि, जिनाश्च केवलिनः चतुर्दशपूर्विणश्च। उत्त०५अ०
गच्छतिर्यगसाधुविशेषे च। ठा०३ ठा० ।
ऋषभादिके चतुर्विंशतिसंख्याके तीर्थकरे च। सूय०१ श्रु०६ अ०

जिणंत- त्रि० *[जयत्]*
अभिभवति, दश०४ अ० ।

जिणंतर- न० *[जिनान्तर]*
जिनयोर्व्यवधाने, 'एएसि णं भंते ! चउव्वीसए तित्थगराणे कइ जिणंतरा पण्णत्ता ? गोयमा ! तेवीसं जिणंतरा पण्णत्ता। भग० ३ श०२ उ० ।

जिणकप्प-पुं० *[जिनकप्प]*
जिनानां कल्पो जिन कल्पः। कल्पो नीतिर्मर्यादा समाचारी। पंच०चू० ।
जिनानामिव कल्पो जिनकल्पः। उग्रविहारविशेषे, अभ्युद्यत विहारे, बुह० १ उ० ।

जिणकप्पट्ठिइ- स्त्री० *[जिनकल्पस्थिति]*
जिनाः गच्छनिर्गत साधुविशेषाः, तेषां साधुविशेषाणां कल्पस्थितिर्जिनकल्पस्थितिः। ठा०३ ठा०४ उ० ।
कल्पस्थिति भेदे, बुह०३ उ० ।
सा चैवम् जिनकल्पं हि प्रतिपद्यते जघन्येनापि नवमपूर्वस्य तृतीयवस्तुनि सति उत्कृष्टस्तु दशसु भिन्नेषु प्रथमे संहनने दिव्याद्युपसर्गरोगवेदनाश्चासौ सहते, एकाक्येव भवति, दशगुणोपेतस्थण्डिलं एवोच्चारादि, जीर्णवस्त्राणि च त्यजति। सर्वोपधि विशुद्धा अस्य भिक्षाचार्य तृतीयपौरुष्यां पिण्डैषणोत्तरा, सा पञ्चानामेकतरैव, विहारो मासकल्पेन, तस्यामेव वीथ्यां षष्ठदिने भिक्षाऽटनमिति, ठा०३ ठा०४ उ० ।

जिणकप्पपडिमा- स्त्री० *[जिनकल्पप्रतिमा]*
प्रतिमाभेदे, 'सो य जिणकप्पडिअं करेइ' आव०म० ।

जिणकेसरि- पुं० *[जिनकेशरिन्]*
जिनसिंहे, 'एक्को परिभमउ जए, विअडं जिणकेसरी सलीलाए। कंदप्पदुट्ठदाढो, मयणो विड्डारिओ जेण। सूय० १ श्रु०६ अ०।

जिणक्खाय- न० *[जिनाख्यात]*
जिनेन कथिते, जीवा०१ प्रति०।
'दुवालसंगं जिणक्खायं' उत्त० १३ अ०।

जिणगोयमसीइआहरण- न० *[जिनगौतमसिंहाहरण]*
जिन गौतम-सिंहदृष्टान्ते, जीवा०।

जिणदत्त- पुं० *[जिनदत्त]*
'बसंतपुरे नगरे जियसत्तू राया, जिणदत्तो सेट्ठी' आव०५ अ०। आव०चू०।
संकुलग्रामवास्तव्ये स्वनामख्याते श्रावके, पिंड०।
श्रावस्तीवास्तव्ये श्रावके, तं०।
पाटलिपुत्रनगरस्थे स्वनामख्याते श्रावके, आव०म०।
स्वनामख्याते श्राद्धे, यस्य पत्नी ईश्वरी श्राविका। कल्प०८ ।
स्वनामख्याते श्रावके, यस्य पत्नी फल्गुश्रीः, 'जिणदत्तफगुसिरी नाम सावगमिहुणं।' महानि०५ अ०।

जिणदत्तपुत्त- पुं० *[जिनदत्तपुत्र]*
खम्पानगरीवास्तव्ये सार्थवाहदारके नाया०१ श्रु०३ अ०।

जिणदास- पुं० *[जिनदास]*
पाटलिपुत्रवास्तव्ये श्रावके, आव०चू०६ अ०।
मथुरावास्तव्ये श्रावके, यस्य भार्या जिनदासी। 'जिन-दासो, वणिक् तत्र, श्रावकः परमाऽऽर्हतः। जिनदासी प्रिया तस्य, प्रियंकरणदर्शना। आव०। आव०म०।
राजपुरस्थे श्रावके च। 'रायपुरे नयरे एगो कुलपुत्तगजातीओ, तस्स जिणदासो मित्तो' आव०६ अ०।

जिणदासगणिमहत्तर- पुं० *[जिनदासगणिमहत्तर]*
निशीथचूर्णि कारके आचार्ये, 'गुरूदिएणं व गणितं, महत्तरत्तं च तस्स तुट्ठेहिं। तेण कएसा चुण्णी, विसेसनामा निसीहस्स।। निसि० २० उ०।

जिणदिट्ठ- त्रि० *[जिनदृष्ट]*
तीर्थकराभिमते, अणुओ०।

जिणदेव- पुं० *[जिनदेव]*
भरूकच्छस्थे आचार्ये, 'भरूकच्छे जिणदेवो'।। आचार्ये जिनदेवोऽभूदत्रैव भृगुपत्तने।' आव०।
द्वारवतीवास्तव्ये अर्हन्मित्रश्रेष्ठिनः पुत्रे, 'द्वारवत्यां महापुर्या-मर्हन्मित्रो ।अनुद्धरी प्रिया तस्य, जिनदेवस्तु तत्सुतः। आव०।
साकेतनगरवास्तव्ये श्रावके, 'साएए सत्तुंजयो राया, जिणदेवो सावओ।।' आव० चू० ४ ।
चम्पानगरीवास्तव्ये श्रावके, आव०चू०४ अ०।

जिणदेसिय- त्रि० *[जिनदेशित]*
जिना इह हितप्रवृत्तगोत्रविशुद्धोपायाभिमुखपायाविमुखादयः परिगृहन्ते, तथा मूलटीकाकृता व्याख्यानात्, जिनेभ्यो हिंतप्रवृत्ताऽऽदिरूपेभ्यः शुश्रूषाऽऽदिभिर्व्यक्तभावेभ्यो देशितं कथितं गणधरैरपि जिनदेशितम्। तथा जम्बूस्वामिप्रभृतय एवं विधा एवेति निरूपणीयमेतत्। जीवा०१ प्रति०।
'धम्मो य जिणदेसिओ' जिनदेशितः केवलिभाषितः।तं०। उत्त०

जिणधम्म-१ पुं० *[जिनधर्म]*
भरतवर्षस्थपद्मिनीखण्डनगरे स्वनामख्यातश्रावके, कल्प०

जिणधम्म-२ पुं० *[जिनधर्म]*
जिनसंबन्धिनि धर्मे, अनुत्तरं धर्मं जिनानामृषभादितीर्थकृतां संबन्धिनम्। सूय०१ श्रु०६ अ०। नं०।

जिणपडिमा- स्त्री० *[जिनप्रतिमा]*
जिनबिम्बे, 'जिणपडिमादंसमेष पडिबुद्धं।' दश०२ चू०।
जिनप्रतिमा सद्भावस्थापनरूपेति। रा०। दश०। जीवा०।

जिणपण्णत्त- त्रि० *[जिनप्रज्ञप्त]*
जिनैर्हिताऽऽप्रयनिवर्तकयोगिनिः प्रज्ञप्तं तदन्यसत्वानुग्रहाय सूत्रत् आचाराऽऽद्यङ्गोपाङ्गादिभेदेन, रचितं जिनप्रज्ञप्तम्। उक्तं च– 'अत्थं भासइ अरिहा, सुत्तं गंथिति गणहरा णिउणं। सासणस्स हियट्ठाए, तभी सुत्तं पवत्तइ। त्ति। जीवा०१ प्रति०।

जिणपरियाय- पुं० *[जिनपर्याय]*
केवलिपर्याये, भग०२० श०८ उ०।

जिणपवयण- न० *[जिनप्रवचन]*
जैनाऽऽगमे, । आव०म०।

जिणपसत्थ- त्रि० *[जिनप्रशस्त]*
जिनभाषिते, 'बहुसु ठाणेसु जिन पसत्थेसु' जिनप्रशस्तेषु जिन-भाषितेषु। पण्हा०५ अ०।
जिनाना दोषशुद्धोपायभिमुखापाश्रविमुखहित प्रवृत्तादिभेदानां प्रशस्तं निरूपमं पथ्यान्नवत् उचितसेवनया हितं जिनप्रशस्तम् जिनहिते च। जीवा० १ प्रति०।

जिणपालिय- पुं० *[जिनपालित]*
चम्पानगरीवास्तव्ये स्वनामख्याते माकन्दिसार्थवाहपुत्रे, नाया०।

जिणपूयट्ठि- पुं० *[जिनपूजार्थिन्]*
जिनस्येव पूजामर्थयते यः स जिन पूजार्थी। गोशालकादौ, जिनपूजार्थिता च त्रिंशत्तमं मोहनीयस्थानमिति।सम०३० सम०

जिणप्पणीय- त्रि० *[जिनप्रणीत]*
जिनोक्ते, जिनेन भगवता वर्द्धमानस्वामिना प्रणीतं समस्तार्थ संग्रहात्मकमातृकापदत्रयप्रणयनाद्जिनप्रणीतम्।वर्द्धमानस्वामी केवलज्ञानावाप्तावादौ बीजबुद्धिपरम गुणकलितान् गौतमादीन् गणधारिणः प्रत्येतद् मातृकापदत्रय मुक्तवान्। 'उप्पन्नेइ वा०

एतश्च पदत्रयमुपजीव्य गौतमादयो द्वादशाङ्गं विरचितवन्तः, ततो भवत्येतद् जिनमतं जिनप्रणीतमिति। जीवा०१ प्रति०।

जिणप्परूविय- त्रि० *[जिनप्ररूपित]*
जिनेन भगवता वर्द्धमान स्वामिना यथा श्रोतृणामधिगमो भवति तथा सम्यक् प्रणयनक्रियाप्रवर्तनेन प्ररूपितं जिन प्ररूपितं जिनेन सम्यक् प्रणीते, जीवा० १ प्रति०।

जिणप्पलावि- पुं० *[जिनप्रलापिन्]*
जिनमात्मानं प्रकर्षेण लपतीत्येवंशीलो जिनप्रलापी। आत्मानं जिनं मन्यमाने गोशालकादौ भगवत्यां गोशालकमतमधिकृत्य–'अजिणे जिणप्पलावी' भग०१५ श०१ उ०।
'एवं सो अजिणो जिणप्पलावी विरहइ' आव०म०।

जिणप्पवयण- न० *[जिनप्रवचन]*
जिनाऽऽगमे, जीत०।

जिणभत्त- पुं० *[जिनभक्त]*
मथुरानगरवास्तव्ये स्वनामख्याते श्रावके आव०म०।

जिणभत्ति- स्त्री० *[जिनभक्ति]*
जिनसेवायाम्, 'भत्तीइ जिनवराणं' आव०२ अ०।

जिणभत्तिदंसणाणुराग- पुं० *[जिनभक्तिदर्शनानुराग]*
जिनं प्रति भक्तया कृत्वा यो दर्शनानुरागो दर्शनेच्छा स तथा। जिनं प्रति भक्तया कृतायां दर्शनेच्छायाम्, 'जिणभत्तिदंसणाणुरागेणं हरिसियाओ।' उव०।

जिणभत्तिराग- पुं० *[जिनभक्तिराग]*
जिनविषयके भक्तिपूर्वकंऽनुरागे 'अप्पेगइया जिनभत्तिरागेणं' जिने भगवति वर्द्धमानस्वामिनि भक्तिरागो भक्तिपूर्वकोऽनुरागस्तेनेति। रा०।

जिणभासिय- त्रि० *[जिनभाषितः]*
जिनोक्ते, 'सुणेह जिणभासियं।' जिनभाषितं जिनोक्तम्। उत्त० २७ अ०।

जिणमय- न० *[जिनमत]*
रागाऽऽदिशत्रून् जयति स्म जिनः। स च यद्यपि छद्मस्थ वीतरागोऽपि भवति, तथापि तस्य तीर्थ प्रवर्तकत्वायोगात् उत्पन्नकेवलज्ञानास्तीर्थकृदादिर्गृह्यते। सोऽपि च वर्द्धमानस्वामी, तस्य वर्तमानतीर्थाधिपतित्वात्। तस्य जिनस्य वर्द्धमानस्वामिनो मतम्, अर्थतस्तेनैव प्रणीतत्वात्। आचाराऽऽदिदृष्टिवादपर्यन्ते द्वादशाङ्गे गणिपिटके, जीवा०१ प्रति०। आव०चू०। ज्यो०।
'तित्थयरसमोसूरी, सम्मं जो जिणमयं पयासेइ।' जिनमतं जगत्प्रभुदर्शनम्। गच्छा०१ अधि०।
जिनास्तीर्थकराः तेषां मतमागमरूपं प्रवचनम्। आव०४ अ०।
तीर्थकराभिप्राये च। जिनवराणां तीर्थकराणां मतमभिप्रायम्। सूय० १ श्रु०१ अ०१ उ०।

जिणमयट्ठिय- त्रि० *[जिनपतस्थित]*
सर्वज्ञाऽऽगमस्थिते,विसेसओ जिणमयठिआणं।'जीवा० ८ प्रति०

जिणमयनिउण- त्रि० *[जिनमतनिपुण]*
आगमप्रवीणे, दश०९ अ० ३ उ०।

जिणमाया- स्त्री० *[जिनमातृ]*
मरुदेव्यादिकायां जिनजनन्याम्, सम०

जिणरक्खिय- पुं० *[जिनरक्षित]*
चम्पानगरीवास्तव्यस्य माकन्दिसार्थवाहस्य पुत्रे स्वनामख्याते सार्थवाहे, नाया०।
'भोगे अवयक्खंता, पडंति संसारसागरे घोरे।' चारित्रं प्रतिपद्यापि भोगानभिकाङ्क्षन्तः पतन्ति संसारसागरे घोरे, जिनरक्षितवत्। नाया० १ श्रु०९ अ०।
चंपायां माकन्दीभद्रायाः पुत्रः। *नाया०* ।

जिणवई- स्त्री० *[जिनवाक्]*
जिनवचने, 'जे कोविज्जा जिणवइं पि।' ये जिनवाचमपि कोपयेयुरन्यथा कुर्युः। बुह० १ उ०।

जिणवंस- पुं० *[जिनवंश]*
जिनान्वये, 'वंसाणं जिणवंसो'। वंशानामन्वयानां मध्ये यथा जिनवंशः प्रधानम्। संथा०।

जिणवयण-१ न० *[जिनवचन]*
जिनान्तीर्थकराः, तेषां वचनमागमो जिनवचनम्। दश०१ अ०।
जिनानां सर्वज्ञानां वचनं जिनवचनम्। द्वादशाङ्गे, वव० १ उ०।
जिनवचनाचारादि। सम०।
जिनवचनं-वाच्यवाचकयोरभेदोपचाराज्जिनवचनाभिहितमनुष्ठानम्। *उत्त० ७०८*।

जिणवयण-२ न० *[जिनवदन]*
जिनमुख, उव०।

जिणवयणकप्परुक्ख- पुं० *[जिनवचनकल्पवृक्ष]*
जिनाऽऽगमरूपे कल्पवृक्षे,
'जिणवयणकप्परुक्खो, अणेगसुत्तत्थसालविच्थिणो तवनियम कुसुमगुच्छो, सुग्गइफलबंधणो जयइ।आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ०

जिणवयणधम्माणुरागरत्तमण- त्रि० *[जिनवचनधर्मानुरागरक्तमनस्]*
जिनवचने जिनवदने वा धर्मानुरागेण रक्तं मनो यस्य स तथा। तस्मिन्, उव०।

जिणवयणपदुट्ठ- त्रि० *[जिनवचनप्रद्विष्ट]*
जिनाऽऽगमप्रद्विष्टे, 'जिण वयणपदुट्ठे' जिनास्तीर्थकराः, तेषां वचनमागमलक्षणं तस्मिन् प्रद्विष्टा अप्रीता इति। दश०१ अ०।

जिणवयणबाहिर– त्रि० *[जिनवचनबाह्य]*
यथावस्थितागमपरिज्ञानरहितः। *आव० ५३३*।

जिणवयणबाहिरमइ- त्रि० *[जिनवचनाबाह्यमति]*
सर्वज्ञशासनबहिर्मुखशेमुषीके, बुह०१ उ०।

जिणवयणमणुगइसुभासिय- त्रि० *[जिनवचनानुगतिसुभाषित]*
जिन वचनमनुगत्याऽऽनुकूल्येन सुष्ठ भाषितं ये न स तथा। तस्मिन् । सम०।

जिणवयणमणुगयमहियभासिय-त्रि० *[जिनवचनानुगतमहितभाषित]*
जिनवचनमाचारादि, अनुगतं संबद्धं, नार्दवितर्दमित्यर्थः महितं पूजितमधिकं वा भाषितं येनाध्यापनाऽऽदिना स तथा। तस्मिन्, सम०।

जिणवयणसुइ- स्त्री० *[जिनवचनश्रुति]*
जिनाऽऽगमश्रवणे,
'सुलहा सुरलोयसिरी, रयणायरमेहला मही सुलहा । निव्वुइ सुहजणियरुई,जिणवयणसुई जए दुलहा । ठा० ६ ।

जिणवर- पुं० *[जिनवर]*
जिनाः छद्मस्थवीतरागाः, तेषां वराः। पण्हा०।
रागाऽऽदिजयाज्जिनाः, अवधिमनःपर्यवोपशान्तमोहक्षीणमोहाः, तेषां मध्ये वराः सामान्यकेवलिनो जिनवराः। संथा०।
जिनानां वरा उत्तमाः, भूतभवद्भाविभावस्वभावावभासिकेवल-ज्ञानकलितत्वात्। पन्न०१ पद०।
श्रुताऽऽदिजिनप्रधाने केवलिनि, आव०२ अ०। उत्त०।
जिना रागद्वेषाऽऽदिजयनशीलाः सामान्यकेवलिनः, तेषु तेभ्यो वा वरः प्रधानोऽतिशयापेक्षया श्रेष्ठो जिनवरः। तं०।
तीर्थकरे, आव०२ अ०।
'तित्थयरे जिणवरे' रागद्वेषमोहजितो जिनाः, ...
एवंभूताश्च सामान्यकेवलिनोऽपि भवन्तीति तद्व्यवच्छेदार्थमाह वराः प्रधानाः चतुस्त्रिंशदतिशयसमन्वितत्वेन। सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०
जिनवराणां तीर्थकराणां मतमभिप्रायम्। सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०

जिणवरिंद- पुं० *[जिनवरेन्द्र]*
'वंदामि जिणवरिंदं'। पन्न०१ पद।
जयन्ति रागाऽऽदिशत्रूनाभिभवन्ति ये ते जिनाः, ते च चतुर्विधाः।तद्यथा–श्रुतजिनाः, अवधिजिनाः, मनःपर्यायजिनाः केवलिजिनाः। तत्र केवलिजिनत्वप्रतिपत्तये वरग्रहणं, जिनानां वरा उत्तमाः–भूतभवद्भाविभावस्वभावभासिकेवलज्ञानकलित-त्वाद् जिनवराः, ते चातीर्थकरा अपि सन्तः सामान्यकेवलिनो भवन्ति, ततस्तीर्थकरत्वप्रतिपत्त्यर्थमिन्द्रग्रहणम्, जिनवराणाम् इन्द्रो जिनवरेन्द्रः, प्रकृष्टपुण्यस्कन्ध रूपतीर्थकरनामकर्मोदयात् तीर्थकर इत्यर्थः। पन्न०१ पद०।

जिणवसह- पुं० *[जिनवृषभ]*
जिनश्रेष्ठे, असंज्वलनं जिनवृषभम्। सम०।

जिणवाणी- स्त्री० *[जिनवाणी]*
अर्हद्वचने, 'विलसतु मनसि सदा मे, जिनवाणी परमकल्पलतिकेव। कल्पितसकलनरामरशिवसुखफलदा न दुर्ललिता'। चंद० १ पाहु०।
'देवा देवी नरा नारीं, शाबराइचापि शाबरीम्। तिर्यञ्चोऽपि हि तैरश्चीं मेनिरे भगवद्गिरम्'। दशा०१ अ०।

जिणविज्ज- पुं० *[जिणवैद्य]*
जिनभिषग्वरे, आव०।

जिणसंकास- पुं० *[जिनसङ्काश]*
सर्वज्ञसदृशे, कल्प०६ क्षण०।
सकलसंशयच्छेदकत्वे, ठा०३ ठा०२ उ०।
अजिनानामसर्वज्ञत्वाद् जिनसंकाशानामविसंवादिवचनत्वाद् यथापृष्टनिर्वचनत्वाच्च। ठा० ४ ठा० ४ उ०।

जिणसंथव- पुं० *[जिनसंस्तव]*
'लोगस्सुज्जोयगरे' इत्यादिरूपायां जिनस्तुतौ, दश०५ अ०१ उ०।

जिणसकहा-स्त्री० *[जिनसक्थि]*
जिनास्थिनि, भग०।
जिनसक्थीनि। *जंबू०* ।

जिणसासण- न० *[जिनशासन]*
जिनप्रवचने, दश०१ अ०।
वीतरागवचने, 'सुच्चाणं जिणसासणं।' दश०८ अ०
जिनाऽऽज्ञायां च, 'निक्खंता जिणसासणे।' जिनशासने जिनाऽऽज्ञायाम्। उत्त० १८ अ०। सूय०।
जिनशासनं। क्रोधविपाकप्रतिपादकं वीतरागवचनम्। *दश०*

जिणसासणपरंमुह- त्रि० *[जिनशासनपराङ्मुख]*
जैनमार्गविद्वेविणि, सूय०
'इत्थी व संगया बाला, जिणसासण परम्मुहा।' रागद्वेषजितो जिनाः, तेषां शासनमाज्ञा कषायमोहो पशमहेतुभूता तत्परा-ङ्मुखाः संसाराभिष्वङ्गिणो जैनमार्ग विद्वेषिणः। सूय० १ अ० ३ अ० ४ उ०।

जिणसीस- पुं० *[जिनशिष्य]*
गणधराऽऽदिके, सम०।

जिणाणुचिण्ण- त्रि० *[जिनानुचीर्ण]*
जिनैर्हिताऽऽप्त्यनिवर्तकयोगसिद्धैर्गणधारिभिरनुचीर्णं जिनानुची-र्णम्। गणधरैः सम्यक्तदर्थावगमाऽऽसङ्गशक्तिगर्भानिवर्तकसम-भावप्राप्त्या धर्ममेघनानामकसमाधिरूपेण परिणमिते, जीवा०।
'जिणाणुचिण्णं जिणपन्नत्तं।' जिना इह हिताऽऽप्त्यनिवर्तक-योगासिद्धा गणधारिणः परिगृह्यन्ते विचित्रार्थत्वात् सूत्राणाम्। जीवा० १ प्रति०।

जिणाणुमय- त्रि० *[जिनानुमत]* जि

नानामतीतानागतवर्तमानानामृषभपद्मनाभसीमन्धरस्वामिप्रभृती नामनुमत्तं जिनानुमतम्। जिनानामानुकूल्येन सम्मते, 'जिणमयं जिणाणुमयं' वस्तुतत्त्वमपवर्गमार्गं प्रति मनागपि विसंवादाभावादिति जिनानुमतम्। जीवा० १ प्रति०।

जिणाणुलोम- त्रि० *[जिनानुलोम]*
जिनानामवध्यादिजिनानामनुलोममनुगुणं जिनानुलोमम्।जिनानामनुगुणे, 'जिणमयं जिणाणुमयं जिणाणुलोमं' एतद्वशादवध्यादिजिनत्वप्राप्तेः। तथाहि यथोक्तमिदं जिनमतमासेवमानाः साधवोऽवधिमनःपर्यायकेवललाभमासादयन्त्येव।जीवा०१प्रति०

जिणाहिय- त्रि० *[जिनाऽऽहित]*
जिनैराहितः जिनानां वा संबन्धी आहितो जिनाहितः। जिनप्रतिपादिते, जिनानुष्ठेति च। सूय०
'चरे भिक्खू जिणाहियं।' जिनैराहितः प्रतिपादितोऽनुष्ठितो यो मार्गो जिनानां वा संबन्धी योऽभिहितो मार्गस्तं चरेदनुतिष्ठेत्। सूय० १ श्रु० ९ अ०।

जिणिंद- पुं० *[जिनेन्द्र]*
जिननायके तीर्थकरे, 'एत्थ इमं वणिणअं जिणिंदेहिं।' जिनेन्द्रैः जिननायकैः। उव०। रा०।

जिणुज्जाण- न० *[जिनोद्यान]*
अवन्तीजनपदस्थोज्जयिनी-नगरोत्तरपार्श्ववर्तिनि स्वनामख्याते उद्याने, गच्छा० ५ अधि०। निसि०।

जिणुत्तम- पुं० *[जिनोत्तम]*
तीर्थकरे, जिनोत्तमानं तीर्थकराणाम्। उत्त०२० अ०।

जिण्ण- त्रि० *[जीर्ण]*
हानियुक्ते, भग० १ श०१ उ०।
'जुण्णे जराजज्जरियदेहे'। जीर्णो हानिगतदेहः। भग०१६ श०४ उ०। उत्त०। अणुओ०।
निःसारे, 'जहा जुण्णाह कट्ठाइ, हव्ववाहो पमत्थति।' यथा जीर्णानि निःसाराणि काष्ठानि हव्यवाहोहुतभुक् प्रमश्नाति शीघ्रं भस्मसात् करोति। आचा०१ श्रु०४ अ०३ उ०।
'अप्पेगइया दावदवरुक्खा जुण्णा। नाया०१ श्रु०१० अ०।
परिणतवयसि, बुह० १ उ०।

जिण्णकुमरी- स्त्री० *[जीर्णकुमारी]*
वृद्धायामपरिणीतायां स्त्रियास्, जीर्णा जीर्णशरीरा, जरणाद् वृद्धेत्यर्थः। सैव जीर्णत्वापरिणीतत्वाभ्यां जीर्णकुमारी। नाया० २ श्रु० १ वर्ग०१ अ०। निर० ।

जिण्णगुल- पुं० *[जीर्णगुड]*
निस्सारगुडे, जीर्णगुडस्य पिण्डीभवनलक्षणो बन्ध इति। भग० ८ श० ९ उ०। अणुओ०।

जिण्णघय- न० *[जीर्णघृत]*
निस्सारघृते, अणुओ०।

जिण्णतंदुल- पुं० *[जीर्णताण्डुल]*
निस्सारतण्डुलस्य पिण्डीभवनलक्षणो बन्धः। भग० ८ श० ९ उ०। अणुओ०।

जिण्णतया- स्त्री० *[जीर्णत्वक्]*
सर्पकञ्चुके, यथा सर्पः कञ्चुकं त्यक्त्वा निर्मलो भवत्येवं मुनिरपि दुःखशय्यातो नरकाऽऽदिभवाद्विमुच्यत । आचा० २ श्रु०४ चू०।

जिण्णसुरा- स्त्री० *[जीर्णसुरा]*
निःसारसुरायाम्, जीर्णसुरायाः स्त्यानीभवनलक्षणो बन्धः। भग० ८ श० ९ उ०। अणुओ०।

जिण्णजिण्णा- त्रि० *[जीर्णाजीर्ण]*
अर्द्धजीर्णे, तच्चायुःक्षयनिमित्तम् आव०म०। आव०क०।

जिण्णुज्जाण- न० *[जीर्णोद्यान]*
राजगृहनगरस्योत्तर पश्चिमदिशि स्थिते स्वनामख्याते उद्याने, नाया० १ श्रु० १ अ०।

जिब्भगार- पुं० *[जिह्वाकार]*
जिह्वाकारके शिल्पिभेदे, पन्न०१ पद

जिब्भा- स्त्री० *[जिह्वा]*
रसज्ञानेन्द्रिये, रसनायां च। पण्हा०। जंबू०। उव०। पन्न०।
जिह्वा मुखाभ्यन्तरवर्तिमांसखण्डरूपा दैर्घ्येणाऽऽत्माङ्गुलतः सप्ताङ्गुला। तं०।
'जिब्भं विणिक्कस्स विहत्थिमित्तं।' मद्यमांसरसाभिलिप्सोर्मृषाभाषिणो जिह्वां वितस्तिमात्रामाक्षिप्य तीक्ष्णाभिः शूलाभिरभितापयन्ति। सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०। उत्त०। उवा०।

जिब्भादुट्ठ- पुं० *[जिह्वादुष्ट]*
जिह्वया दुष्टे, आव० ४ अ०। उत्त०।

जिब्भादोस- पुं० *[जिह्वादोष]*
जिह्वाविकारे, आव०४ अ०।

जिब्भामय- पुं० *[जिह्वामय]*
जिह्वेन्द्रियहानौ, ठा०६ ठा०।

जिब्भामयदुक्ख- न० *[जिह्वामयदुःख]*
जिह्वेन्द्रियहानिरूपे दुःखे, जिह्वामयं जिह्वेन्द्रियमहानिरूपं यद् दुःखं, तेन संयोजयिता भवति। ठा० ४ ठा० ४ उ०।

जिब्भामयसोक्ख- न० *[जिह्वामयसौख्य]*
जिह्वाया विकारो जिह्वामयं सौख्यं रसोपलम्भाऽऽन्नदरूपं जिह्वामयसौख्यम्। रसोपलम्भाऽऽनन्दरूपे जिह्वेन्द्रियसुखे, 'जिब्भामयाओ सोक्खाओ वव-रोवित्ता भवइ।' ठा०४ ठा०४ उ०।

जिब्भिंदिय- न० *[जिह्वेन्द्रिय]*
रसनेन्द्रिये, पण्हा०१ अ०।

जिब्भिंदियनिग्गह- पुं० *[जिह्वेन्द्रियनिग्रह]*

जिह्वेन्द्रियस्यनिग्रहे, जिह्वेन्द्रियस्य स्वविषयाभिमुखमनुधावतो नियमने, उत्त०।

जिब्भिंदियपडिसंलीणया- स्त्री० *[जिह्वेन्द्रियप्रतिसंलीनता]*

मनोज्ञामनोज्ञेष्वाहारेषु रागद्वेषपरिहाराऽऽत्मक आजीविकानां तपोभेदे, ठा० ४ ठा० २ उ०।

जिब्भिंदियबल- न० *[जिह्वेन्द्रियबल]*

बलभेदे, ठा०१० ठा०।

जिब्भिंदियमुंड- पुं० *[जिह्वेन्द्रियमुण्ड]*

मुण्डभेदे, ठा०१० ठा०।

जिब्भिंदियसंवर- पुं० *[जिह्वेन्द्रियसंवर]*

रसनेन्द्रियसंवरणे, ठा०।

जिब्भिया- स्त्री० *[जिह्विका]*

कृत्रिम जिह्वायाम्, सम०।

शीतोदाया महानद्याः प्रपातमधिकृत्य वज्रमय्या जिह्विकया प्रणालस्थमकरमुखजिह्विकया। सम०।

'रोहियंसा णामं महाणई जओ पवडइ, एत्थ णं महं एगा जिव्हिया पन्नत्ता।' जंबू० ४ वक्ष०।

जिमिय- त्रि० *[जिमित]*

कृतभोजने, विपा० ३ अ०।

जिमितो भुक्तवान्। भग० ३ श०१ उ०। नाया०।

जिम्म- त्रि० *[जिह्व]*

अजिह्वे अमन्दे भद्रभावतया निर्विकारचपले कान्ते नयने यासां तास्तथा। जंबू० २ वक्ष०। सम०।

कौटिल्ये, तदात्मके मायाकषायान्तर्गते मोहनीयकर्मभेदे च। सम० ७४ सम०।

जिम्मजढ- त्रि० *[जिह्मसड]*

मायारहिते, जिह्मजडानि जिह्वेन मायया रहितानि। वव०३ उ०।

जिम्मय- पुं० *[जिह्मक]*

मेघभेदे, ठा०५ ठा०।

जिह्मस्तु बहुभिर्वर्षणैरेकमेव वर्षमब्दं यावद् भुवं भावयति, नैव वा भावयति, रुक्षत्वात्तज्जलस्येति। ठा० ४ ठा० ४ उ०।

जिम्भजढ- त्रि० *[जिह्मजढ]*

'जिम्मजढ' शब्दार्थे, वव०३ उ०।

जिम्भय- पुं० *[जिह्मक]*

'जिम्भय' शब्दार्थे, ठा०५ ठा०।

जिम्हजढ- त्रि० *[जिह्मजड]*

'जिम्मजढ' शब्दार्थे, वव० ३ उ०।

जिम्हय- पुं० *[जिह्मक]*

'जिम्मय' शब्दार्थे, ठा० ४ ठा०४ उ०।

जिय- न० *[जित]*

अभिभूते, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ०।

पराजिते, गच्छा०२ अधि०।

जयलब्धे, वशीकृते, आयत्तीकृते च। बुह०। सूय०। उत्त०।

परावर्तनकाले, प्रश्नोत्तरकाले, शीघ्रमागच्छति, अणुओ०।

सूत्राऽऽदौ परावर्तनं कुर्वतः परेण वा क्वचित्पृष्टस्य सतः यत् शीघ्रमाभणति तज्जितम्। अणुओ०। विशे०। गच्छा०।

जियंतय- न० *[जीवत्]*

हरितवनस्पतिकायभेदे, पन्न० १ पद०।

जियंती- स्त्री० *[जीवन्ती]*

वल्लीभेदे, पन्न० १ पद०।

जियकरण- पुं० *[जितकरण]*

करणदक्षे, 'जियकरणविणीए एगत्थे।' जितकरणो विनीत इति द्वावप्येकार्थौ तात्पर्यविश्रान्त्याः शब्दार्थस्तु परस्परं भिन्नो, जितकरणो नामकरणदक्ष उच्यते, विनीत इति विनयकरण-शीलः। वव० ३ उ०।

जियणिद्द- त्रि० *[जितनिद्र]*

जिता निद्रा आलस्यं येन य जितनिद्रः। त्यक्ताऽऽलस्ये, जंबू०३ वक्ष०। उव०।

अल्पनिद्रे, गच्छा०१ अधि०

अप्रमत्ते, आचा० १ श्रु० १ अ०१ उ०।

जियणिद्दिंदिय- त्रि० *[जितनिद्रेन्द्रिय]*

जितानि वशीकृतानि निद्रा इन्द्रियाणि यैस्ते जितनिद्रेन्द्रियाः। वशीकृतनिद्रेन्द्रिये, बुह० १ उ०

जियपरिसा- त्रि० *[जितपरिषत्]*

महत्यामपि परिषदि क्षोभमनुपयाते आचा०। सम०।

जियपरीसम- त्रि० *[जितपरिश्रम]*

परिश्रमरहिते, कल्प०१ क्षण०।

जियपरीसह- त्रि० *[जियपरीषह]*

जिताः पराजिताः परिषहाः शीतोष्णरूपा येन स जितपरिषहः। गच्छा०३ अधि०। उव०।

शीताऽऽतपाऽऽद्यातुरत्वेऽप्यखिन्ने, जंबू०३ वक्ष०।

जियप्पा- पुं० *[जिताऽऽत्मन्]*

आत्मनो जेतारि, सूय०।

जियमाण- त्रि० *[जितमान]*

विफलीकृतमाने, उव०।

जियलोह- त्रि० *[जितलोभ]*

विफलीकृतलोभे, उव०।

जियवं- त्रि० *[जितवत्]*

प्राप्तजये, पण्हा०१ अ०।

जियसत्तु-१ पुं० *[जितशत्रु]*

पराजितशत्रौ, 'जितसत्तू पवररायसीहा।' पण्हा०४ अ०।

जियसत्तु-२ पुं० *[जितशत्रु]*

अजितजिनस्य पितरि, । आव०। सम०।

द्वितीयतीर्थङ्करस्य पितृनाम। *सम०* ।

जियसत्तु-३ पुं० *[जितशत्रु]*

वाणिज्यग्रामवास्तव्ये नृपे, । उवा०१ अ०।

चम्पानगरीवास्तव्ये नृपे, । उवा०१ अ०।

छत्रानगरी वास्तव्ये नृपे, आव०म०।

वसन्तपुरस्थे नृपे, इहलोके कायोत्सर्गफलमितिदृष्टान्ते वसन्तपुरेऽधिपतिः। 'वसंतपुरे नयरे जियसत्तू राया।' आव०म०।

वीतशोकानगरी वास्तव्ये नृपे, 'वीयसोगा नगरी, जियसत्तू नाम राया।' आव०चू०२ अ०। आव०म०।

उज्जयिनीनगरीवास्तव्ये नृपे, उत्त०२ अ०।

सर्वतोभद्रनगरस्थे नृपे, 'सव्वओभद्दे नयरे जियसत्तूणामं राया होत्था।' विपा० १ श्रु०५ अ०।

मथुरानगरीवास्तव्ये स्वनामख्याते नृपे, आव०म०।

मिथिलानगरीवास्तव्ये स्वनामख्याते नृपे, जंबू० १ वक्ष०।

मिथिलायां नगर्यां जितशत्रुर्नाम राजा। सूर०१ पाहु०।

क्षितप्रतिष्ठितनगरस्य राजा। *पिण्ड० ३०*।

द्रव्यातङ्कोदा-हरणे राजगृहे राजा। *आचा० ७५*।

जियसत्तु-४ पुं० *[जितशत्रु]*

मल्लिजिनेन सह प्रव्रजिते पाञ्चालदेशस्थे काम्पिल्यनगरनायके राजनि, ठा०।

जितशत्रुर्नाम पाञ्चालजनपदराजः काम्पिल्य-नगरनायकः। ठा० ६ ठा०। नाया०।

जियसत्तु-५ पुं० *[जितशत्रु]*

शिक्षायोगदृष्टान्ते प्रत्यन्तनगराधिपतिः। *आव०*।

जियसेण-१ पुं० *[जितसेन]*

श्रावस्तीवास्तव्ये स्वनामख्याते आचार्ये, आव० ४ अ०।

जियसेण-२ पुं० *[जितसेन]*

भरतवर्षस्थे अतीतायामुत्सर्पिण्यां स्वनामख्याते कुलकरे, सम०।

जियसेलेस- पुं० *[जितशैलेश]*

मेरोरपि निष्प्रकम्पतरे, आव०१ अ०

जियारि- पुं० *[जितारि]*

संभवजिनस्य पितरि, आव० १ अ०। सम०।

जिमूय- पुं० *[जिमूत]*

जयति नभः, जीयते वायुना वा। मेघे, रा० ।जंबू० ।ठा०। जीवा० मेघविशेषे च। 'जीमूएणं महामेहे एगेणं वासेणं दसवासाइं भावेइ।' ठा० ४ ठा० ४ उ०।

जीय-१ न० *[जीत]*

आचरिते, 'जीयमिणं आणाओ।' ठा०। जीत०। आव०म०।

आचारे, कल्प० ७ क्षण०।

अप्पेगइया जीयमेयं ति। जीतमेतत् कल्प एव इति कृत्वा। रा०।

'कुच्छिंसी गब्भत्ताएऽवक्कंते तं जीयमेयं तीअपच्चुप्पण्णमणागयाणं'। जीतमेतत् आचार एष इत्यर्थः। कल्प० २ क्षण०।

सर्वानुचीर्णे, विशे०।

अथ जीतमिति कोऽर्थ इत्यत आह–'बहुजणमाइण्णं पुण, जीयं उचियं ति एगट्ठं।' बहुभिर्जनैर्गीतार्थैराचीर्णं बहुजनाऽऽचीर्णमिति वा, उचितामिति वा एकार्थम्। किमुक्तं भवति ? बहुजनाऽऽचीर्णं नाम जीतमिति। वव० १ उ०।

जीय-२ न० *[जीत]*

प्रभूतानेकगीतार्थवृत्तायां मर्यादायाम्, उपचारात्तत्प्रतिपादके ग्रन्थे च। जीतं नामप्रभूतानेकगीतार्थ कृता मर्यादा, तत्प्रतिपादको ग्रन्थोऽप्युपचाराज्जीतम्। वव०१ उ०।

जीय-३ न० *[जीत]*

जीतमिति सूत्रमुच्यते, जीतं स्थितिः, कल्पो मर्यादा, व्यवस्थिते हि पर्यायाः। मर्यादाकारणं च सूत्र-मुच्यते। नं०।

जीय-४ पुं० *[जीव]*

प्राणधारणे, प्राणिनि च। जीवा०।

'जीयस्स विसो हणं परमं।' 'जीव' प्राणधारणे, जीवति, जिजीव, जीविष्यतीत्युपयोगलक्षणत्वेन त्रिकालमपि जीवनात् जीवस्तस्य विशेषण शोधनम्। जीवा०१ प्रति०।

जीय-५ न० *[जीवित]*

जीविते, 'जीयकामत्थधम्महेउं' जीवश्च जीवितं जीतं वा। पण्हा०१ द्वार।

जीवितमिव जीवितम्। श्रुते, मर्यादायां च। विशे०।

जीयकप्प-१ पुं० *[जीतकल्प]*

जीतेनावश्यंभावेन कल्प आचारो जीत कल्पः। कल्प०५ क्षण०।

तदात्मके कल्पभेदे, पंच०भा०।

स चानुज्ञाकल्पस्य गौणं नामान्तरं, तथा च पञ्चकल्पभाष्येऽनुज्ञाकल्पस्य विंशतिनामधेयान्यधिकृत्य–'तित्थकरेहिं कयमिणं गणधारीणं तु तेहि सीसाणु। ततो परंपरेणं, आइण्णं तेण जीयं तु। पंच०भा०।

जीयकप्प-२ पुं० *[जीतकल्प]*

जीतकल्प आचरितकल्पो जिनप्रतिबोधनलक्षणः। ठा०१० ठा०।

जीयकप्प-३ पुं० *[जीतकल्प]*

जीतमाचरितं, तस्य कल्पो वर्णना प्ररूपणा जीतकल्पः। आचार-वर्णने, तत्प्रतिपादके जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणरचिते छेदश्रुत-विशेषे च। जीत०।

जीयकप्पिय- पुं० *[जीतकल्पिक]*
जीतेनावश्यंभावेन कल्प आचारो जीतकल्पः, सोऽस्ति यस्य स जीतकल्पिकः। कल्प०५ क्षण०
जीतकल्प आचरितकल्पो जिनप्रतिबोधनलक्षणो विद्यते यस्य स जीतकल्पिकः। जीतकल्पवति, ठा० १ ठा०।

जीयधर- त्रि० *[जीतधर]*
सूत्रधर, आर्यगोत्रोत्पन्ने शाण्डिल्यशिष्ये स्वनामख्याते आचार्ये च। जीवा०।
'संडिल्लं अज्जजीयधरं। आरात्सर्वहेयधर्मेभ्योऽर्वाग् यातमार्यम् जीतमिति सूत्रमुच्यते जीतं, स्थितिः, कल्पो, मर्यादा, व्यवस्था इति हि पर्यायाः। मर्यादाकारणं च सूत्रमुच्यते। आर्यजीतस्य धर आर्यजीतधरः, अन्ये तु व्याचक्षतेशाण्डिल्यस्यापि शिष्य आर्य-गोत्रो जीतधरनामा सूरिरासीत्, तं वन्दे इति। नं०।

जीयवं- त्रि० *[जीवितवत्]*
प्राणिनी, 'वप्प ! ताय ! जीयवं' जीवितवन् ! पण्हा० १ अ०।

जीयववहार- पुं० *[जीतव्यवहार]*
द्रव्यक्षेत्रकालभाव-पुरुषप्रतिसेवाऽनुवृत्त्या संहननवृत्त्यादिपरि-हाणि मवेक्ष्य यत्प्रायश्चित्तदानं, यो वा यत्र गच्छे सूत्रातिरिक्त कारणतः प्रायश्चित्तव्यवहारप्रवर्तितो बहुभिरन्यैश्चानुवर्तितं तज्जी-तम्। ठा० ५ ठा० २ उ०। भग०।

जीव- पुं० *[जीव]*
जीवनं जीवः। प्राणधारणे, आव०म०। विशे०।
'इहसंति गया दविया, नावकंखंति जीवितुं।' जीवितुं प्राणान् धारयितम्। आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ०।
'जीवो त्ति जीवणं पाणधारणं जीवियं ति पज्जायां।विशे०।
जीवितवान्, जीवति, जीविष्यतीति जीवः। आचा० १ श्रु० ८ अ० २ उ०। आव०।
उपयोगलक्षणे जीवद्रव्ये, सूय०२ श्रु०१ अ०।
उपयोग लक्षणो हि जीवः। स चोपयोगो रागद्वेषकषायविषयाध्य वसायाऽऽदिभिर्भिद्यमान उपाधिभेदादनन्त्यं प्रतिपद्यत इत्यनन्ता जीवाः, लक्षणभेदाद्, घटाऽऽदिवदिति। विशे०।
आयुःप्राणादिमान्। *अनुयो०*।

जीवआरंभिया- स्त्री० *[जीवारम्भिका]*
यज्जीवानारभमाण स्योपमृद्यतः कर्मबन्धनं सा जीवारम्भिका। क्रियाभेदे, 'आरंभिया किरिया दुविहा पन्नत्ता। तं जहा जीवा-रंभिया चेव, अजीवारंभिया चेव'। ठा० २ ठा० १ उ०।

जीवंजीव- पुं० *[जीवजीव]*
जीवबले, 'सं नूनं जीवंजीवेणं गच्छइ जीवंजीवेणं चिट्ठइ।' अनुस्वारस्यागमिकत्वाज्जीवजीवेन जीव बलेन गच्छति, न शरीरबलेन। भग०२ श०१ उ०। नाया०। अंत०।

जीवंजीवग- पुं० *[जीवञ्जीवक]*
चकोरे, चर्मपक्षिभेदे, । पन्न०। जीवा०। उव०। पण्हा०।

जीवंत- त्रि० *[जीवत्]*
प्राणान् धारयति, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।

जीवअपच्चक्खाणकिरिया– स्त्री० *[जीवाअप्रत्याखयान क्रिया]*
जीवविषये प्रत्याख्यानाभावेन यो बन्धादि-र्व्यापारः सा जीवा प्रत्याख्यानक्रिया। *ठा०*।

जीवकप्प- पुं० *[जीवकल्प]*
द्रव्यकल्पभेदे, 'तिविहो य जीवकप्पो, दुपयचउप्पयअपय-भेएहिं।' पंच०भा०। पंच०चू०। ।

जीवकाय- पुं० *[जीवकाय]*
जीवनं जीवो ज्ञानाऽऽद्युपयोगस्तत्प्रधानः कायो जीवकायाः। भग० ७ श० १ उ०।
जीवराशौ, सूय०।

जीवकिरिया- स्त्री० *[जीवक्रिया]*
जीवस्य क्रिया व्यापारो जीवक्रिया सामान्यक्रियायाम्, ठा०। 'जीवकिरिया दुविहा पन्नत्ता। तं जहा–सम्मत्तकिरिया चेव, मिच्छत्तकिरिया चेव।' ठा० २ ठा० २ उ०।

जीवग्गाह- अव्य० *[जीवग्राह]*
जीवतो ग्रहणे, 'जीवग्गाहं गिण्हंति' जीवतीति जीवस्तं जीवं जीवन्तं गृह्णाति। नाया० १ श्रु० २ अ०।

जीवघण- पुं० *[जीवघन]*
जीवाश्च ते घनाश्च शुषिराऽऽपूरणाद् जीवघनाः। आव०म०।
अन्तररहितत्वेन जीवप्रदेशमयेषु, सिद्धलक्षणमधिकृत्य–'अरू-विणे जीवघणा' जीवाश्च ते घना अन्तररहितत्वेन जीवप्रदेश-मयाः। उत्त०३६ अ०।

जीवघाय- पुं० *[जीवघात]*
प्राणातिपाते, आव०६ अ०।

जीवजढ- त्रि० *[जीवजह]*
जीववर्जिते, निसि०१ उ०।

जीवण- न० *[जीवन]*
प्राणधारणे, जीवनमपि प्राणधारणे भणितम्, 'जीवप्राणधारणे' इति वचनात्। आव०म०। विशे०।
'जीविज्ज य आदिमोक्खं' जीव्यात्प्राणधारणं कुर्यात्। सूय०१ श्रु०७ अ० आव०चू०।
जीवयतीति जीवनः। जीवनकारके, । सम०३० सम०।

जीवणास- पुं० *[जीवनाश]*
जीवितनाशे, मृत्यो, किं जीवितनाशान्मृत्योः परं कुर्यात्, न किञ्चिदपीत्यर्थः। दश०९ अ०१ उ०।

जीवणिकाय- पुं० *[जीवनिकाय]*
जीवानां निकायो राशिर्जीवनिकायः। जीवराशौ, ठा० ६ ठा०। जीवनिकायाश्च पृथिव्यादयः षट्। पण्हा० ५ अ०। आव०।

जीवणिज्ज- त्रि० *[जीवनीय]*
उपजीव्ये, 'देवसिणाए खलु अयं पुरिसे देवजीवणिज्जे।' सूय० १ श्रु० ७ अ०।

जीवणिव्वत्ति- स्त्री० *[जीवनिर्वृत्ति]*
निर्वर्त्तनं निर्वृत्तिः निष्पत्तिः जीवस्यैकेन्द्रियाऽऽदितया निर्वृत्तिर्जीवनिर्वृत्तिः। जीवस्यैकेन्द्रियाऽऽदितया निष्पादने, भग०।

जीवणिज्जाणमग्ग- पुं० *[जीवनिर्याणमार्ग]*
जीवस्य निर्याणं मरणकाले शारीरिणः शरीरान्निर्गमः, तस्य मार्गो जीवनिर्याणमार्गः। जीवनिर्गममार्गे, ठा०।

जीवणिस्सिय- त्रि० *[जीवनिश्रित]*
जीवाऽऽश्रिते, ठा०७ ठा०।

जीवनिःसृत- त्रि०।
जीवेभ्यो निःसृतो निर्गतो जीवनिःसृतः।जीवनिर्गते, ठा०७ ठा०

जीवत्थिकाय- पुं० *[जीवास्तिकाय]*
जीवन्ति, जीविष्यन्ति, जीवितवन्त इति जीवाः, ते च तेऽस्तिकायाश्चेति। प्रत्येकासंख्येयप्रदेशाऽऽत्मकसकललोकभाविनानाजीवद्रव्यसमूहाऽऽत्मकेऽस्तिकायभेदे, अणुओ०। आव०। सम०।

जीवदय- पुं० *[जीवदय]*
जीवनं जीवः भावप्राणधोरणममरणधर्मत्वमित्यर्थः तं दयत इति जीवदयः।
जीवेषु वा दया यस्य स जीवदयः। जीवदयोपेते, सम० १ सम०। उव०। कल्प०।

जीवदया- स्त्री० *[जीवदया]*
अंधाणं विगलाणं अयंगमाणं अणाहाणं बहुवाहिवेयणापरिगयसरीराणं सव्वलोयपरिभूयाणं दारिद्दुक्खदोहग्गकलंकियाणं जम्मदारिद्दाणं समणाणं विहलियाणं च संबंधिबंधवाणं जंबू० जस्स इट्ठं भत्तं वा पाणं वा० जाव णं धणधन्नसुवन्नहिरण्णं वा कुणसु य सयलसोक्खदायगं संपुण्णं जीवदयं। महानि० २ चू०

जीवदव्वप्पकप्प- पुं० *[जीवद्रव्यप्रकल्प]*
'जीवस्स दव्वस्स जहा देवदत्तस्स अग्गकेसहत्थाणं कप्पणं' जीवद्रव्यकल्पः। द्रव्यप्रकल्पभेदे, निसि० १ उ०।

जीवदिट्ठिया- स्त्री० *[जीवदृष्टिका]*
या अश्वाऽऽदिदर्शनार्थं गच्छति, तस्याम्, ठा० २ ठा० १ उ०।

जीवधम्म- पुं० *[जीवधर्म]*
जीवानां जन्मजरामरणव्याधिरोग शोकसुखदुःखजीवनाऽऽदिके धर्मे, सूय० २ श्रु० १ अ०।

जीवपइट्ठिय- त्रि० *[जीवप्रतिष्ठित]*
जीवेषु स्थिते, 'अजीवा जीवपइट्ठिआ' अजीवाः शरीराऽऽदिपुद्गलरूपा जीवप्रतिष्ठिताः, जीवेषु तेषां स्थितत्वात्। भग० १ श० ६ उ०। ठा०।

जीवपएस- पुं० *[जीवप्रदेश]*
जीवानामवयवे, भग०।

जीवपएस- पुं० *[प्रदेशजीव]*
प्रदेश इत्यन्त्यप्रदेशः जीवो येषां ते प्रदेशजीवाः। अन्त्यप्रदेश एव जीव इत्यभ्युपगतेऽन्त्यप्रदेशजीववादिनि। द्वितीयानिह्नवे। उत्त० ३ अ०

जीवपएसिय- पुं० *[जीवप्रादेशिक]*
जीवप्रदेशा एव जीव प्रदिशिकाः। अथवा जीवप्रदेशो जीवाभ्युपगमतो विद्यते येषां ते तथा। चरमप्रदेशजीवप्ररूपिणः। ठा० ७ ठा०।
एकेनाऽपि प्रदेशेन न्यूनो जीवो न भवत्यतो येनैकेन प्रदेशेन पूर्णः स जीवो भवति। स एवैकः प्रदेशो जीवो भवतीत्येवंविधवादिनि तिष्यगुप्ताऽऽचार्यमताविसंवादिनि द्वितीयनिह्नवे, उव०।

जीवपण्णवणा- स्त्री० *[जीवपन्नवणा]* प्रज्ञाप्यन्ते जीवाऽऽदयो भावा अनया शब्दसंहत्येति प्रज्ञापना। पन्न०१ पद०।
जीवानां प्रज्ञापना जीवप्रज्ञापना। प्रज्ञापनोपाङ्गस्य जीवप्रज्ञपिकायां शब्दसंहतौ, पन्न० १ पद०।

जीवपरिणाम- पुं० *[जीवपरिणाम]*
परिणमनं परिणामः, तत्तद्भावगमनमित्यर्थः। यदाह-'परिणामो ह्यर्थान्तरगमनं न च सर्वथा व्यवयस्थानम्। न च सर्वथा विनाशः, परिणामस्तद्विदा मिष्टाः। द्रव्यार्थनयस्येति सत्पर्यये़ण नाशः प्रादुर्भावोऽसता व पर्ययतो द्रव्याणां परिणामः प्रोक्तः। खलु पर्ययनयस्येति जीवस्य परिणाम इति विग्रहः। जीवस्य तत्तद्भावगमने। ठा०।

जीवपच्चक्खाणकिरिया- स्त्री० *[जीवप्रत्याख्यानक्रिया]*
जीवविषये प्रत्याख्यानाभावेन बन्धाऽऽदिव्यापारे,ठा०२ठा०१ उ०

जीवपाओसिया- स्त्री० *[जीवप्राद्वेषिकी]*
जीवस्याऽऽत्मपरतदुभयरूपस्योपरि प्रद्वेषाऽऽद्या क्रियाप्रद्वेषकारणमेव वा जीवप्राद्वेषिकी प्राद्वेषिक्याः क्रियाया भेदे, भग० ३ श०३ उ०। ठा०।

जीवपाडुच्चिया- स्त्री० *[जीवप्रातीतिका]*
जीवं प्रतीत्य यः कर्मबन्धः सा तथा। क्रियाभेदे,ठा०२ठा०१उ०

जीवभाव- पुं० *[जीवभाव]*
जीवत्वे, भग०।

जीवमजीव- पुं० *[जीवाजीव]*
जीवद्रव्याजीवद्रव्ययोः आव०म० २ अ०

जीवमिस्सिया- स्त्री० *[जीवमिश्रिता]*

प्रभूतानां जीवानां स्तोकानां च मृतानां च शङ्खशफनखाऽऽदीनामेकत्र राशौ दृष्टं यदा कश्चिदेवं पदति– अहो ! महान् जीवराशिरयामिति, तदा सा जीवमिश्रिता। सत्यामृषाभाषाभेदे, सत्यामृषात्वं चास्या जीवत्सु सत्यत्वात्, मृतेषु मृषात्वात्। पन्न० ११ पद०

जीवरासि- पुं० *[जीवराशि]*

राशिभेदे, जीवराशिर्द्विविधः -संसारसमापन्नोऽसंसारसमापन्नश्च। सम०।

जीवरूय- न० *[जीवरुत]*

मयूरमार्जारशुकसारिकाऽऽदिलपिते, जीत०

जीवलिंग- न० *[जीवलिङ्ग]*

चलनस्पन्दभाङ्कुरोद्धवस्वेदम्ला नाऽऽदिके, 'विन्नाय लिंग तसथावराणं।' सूय० २ श्रु० ६ अ०।

जीवलोय- पुं० *[जीवलोक]*

जीवद्रव्ये, नाया० १ श्रु०१ अ०।

जीवविजय- पुं० *[जीवविचय]*

जीवद्रव्ये, नाया०१ श्रु०१ अ०।

जीवविप्पजढ- त्रि० *[जीवविप्रजह]*

प्रासुके, भग०९ श०१ उ०।

'देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरं निप्पाणं निच्चिट्ठं जीवविप्पजढं कूबए पक्खवेति।' आत्मना विप्रमुक्तः। नाया० १ श्रु० २ अ०।

जीवविभत्ति- स्त्री० *[जीवविभक्ति]*

द्रव्यविभक्तिभेदे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।

जीवविभक्तिः सांसारिकेतरभेदाद्, द्वेधा। तत्राप्य-सांसारिक जीवविभक्तिर्द्रव्यकालभेदाद् द्वेधा। तत्र द्रव्यतस्तीर्थातीर्थसिद्धाऽऽदिभेदात्पञ्चदशधा। कालतस्तु तत्प्रथम समयसिद्धाऽऽदिभेदादनेकधा। सांसारिकजीवविभक्तिरिन्द्रिय जातिभवभेदात्रिधा तत्रेन्द्रियविभक्तिरेकेन्द्रियविकलेन्द्रिय पञ्चेन्द्रियभेदात्पञ्चधा। जीवानां विभागेनावस्थापने, उत्त०।

'इत्तो जीवविभत्तिं तु, वोच्छामि अणुपुव्वसो'। उत्त० ३६ अ०।

जीववुड्डिय- न० *[जीववृद्धिक]*

अनुज्ञायाम्, एतच्चानुज्ञाया गौणं नाम। नं०।

जीवसंगहिय- त्रि० *[जीवसंगृहीत]*

जीवैः संगृहीतः स्वीकृतो जीवसंगृहीतः। जीवैः स्वीकृते, ठा०। अजीवाः पुद्गलाऽऽकाशाऽऽदयो जीवैः संगृहीताः स्वीकृताः। अजीवान्तिनामजीवानां सर्वव्यवहारा भावात्। ठा० २ ठा० १ उ०। भग०।

जीवसंजम- पुं० *[जीवसंयम]*

जीवेषु संयमो जीवसंयमः। जीवेषु हिंसाऽऽदिपरिहारे, आचा० १ श्रु०१ अ०१ उ०।

जीवसाहत्थिया- स्त्री० *[जीवस्वाहस्तिका]*

यत्स्वहस्तेन गृहीतेन जीवं मारयति सा जीवस्वाहस्तिका। क्रियाभेदे, ठा० २ ठा० १ उ०

जीवा- स्त्री० *[जीवा]*

जीवनं जीवा। प्राणधारणे, आव०चू०१ अ०।

जीवनं जीवा इति स्त्रीलिङ्गाभिधायक एवायं शब्दः साध्यते, न तु जीव इति पुल्लिङ्गाभिधायकः शब्दः। विशे०।

प्रत्यञ्चायाम्, सूर० १३ पाहु०।

जीविता इत्यर्थः। *वव०* ।

जीवाः-जीवन्ति जीविष्यन्ति जीवितवन्त इति। *अनुयो०* ।

सजीवैः कोट्यारोपितप्रत्यञ्चैः। नाया०१ श्रु०८ अ०।

जीवेव जीवा, जम्बू द्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य हैमवतैरण्यवताभ्यां द्वितीयषष्ठ वर्षाभ्यामवच्छिन्नस्याऽऽरोपितज्याधनुः पृष्ठाकारयोः परिधिखण्डयोः, धनुःपृष्ठसंज्ञकयोः पर्यन्तभूतसरलप्रदेशपङ्क्तौ, सम०।

जीवाजीव- पुं० *[जीवाजीव]*

जीवद्रव्याजीवद्रव्ययोः, ठा०।

जीवाजीवविभत्ति- स्त्री० *[जीवाजीवविभक्ति]*

जीवानामजीवानां च विभक्तिर्विभागेनावस्थापना जीवाजीवविभक्तिः। जीवानाम जीवानां च विभागेनावस्थापनायाम्, उत्त०

जीवाजीवसमाउत्त- त्रि० *[जीवाजीवसमायुक्त]*

जीवैरुपयोगलक्षणैस्तथाऽजीवैः धर्माधर्माऽऽकाशपुद्गलाऽऽदिकैः समन्वितो जीवाजीवसमायुक्तः। जीवाजीवसमन्विते, तथा च लोकमधिकृत्य- 'जीवाजीवसमाउत्ते, सुहदुक्खसमिण्णए'। सूय० १ श्रु० १ अ० ३ उ०।

जीवाजीवाहिगम- पुं० *[जीवाजीवाभिगम]*

जीवानामेकेन्द्रियाऽऽदीनामजीवानां धर्मास्तिकायाऽऽदीनामाभिगमः परिच्छेदो जीवाजीवाभिगमः।जीवाजीवपरिच्छेदे, जीवा०।

जीवाभिगम- पुं० *[जीवाभिगम]*

जीवानां ज्ञेयानामवध्यादिनैवाभिगमो जीवाभिगमः। गुणप्रत्ययावध्यादिप्रत्यक्षतः सत्त्वाभिगमे, ठा० ३ ठा० २ उ०।

जीवि- पुं० *[जीविन्]*

प्राणधारके, य एते यतय एवं जीवन्ति परगृहाण्यटन्तोऽन्तप्रान्तभोजिनो दत्ताऽदाना लुञ्चितशिरसः सर्वभोगवञ्चिता दुःखितं जीवन्तीति। सूय० श्रु०३ अ०१ उ०।

जीविउकाम- त्रि० *[जीवितुकाम]*

दीर्घकालमायुष्काभिलाषिणि, यत् एव प्रियजीविनोऽत एव दीर्घकालं जीवितुकामाः दीर्घकालमायुष्काभिलाषिणः।आचा० जीवितुकाम आयुष्कानुभवनमभिलषमाणः। आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ०

जीविओसविय- त्रि० *[जीवितोत्सविक]*

जीवितस्योत्सव इव जीवितोत्सवः, स एव जीवितोत्सविकः। रा०। नाया०।

जीवितविषये वा उत्सवो महः, य इव यः स जीवितोत्सविकः। 'जीविओसविए'। भग०९ श०३३ उ०। रा०। नाया०। रा०।

जीविओसासिय- त्रि० *[जीवितोछ्वासिक]*

जीवितमुच्छवासयति वर्द्धयतीति जीवितोच्छवासः, स एव जीवितोच्छवासिकः।जीवितवर्द्धके, भग०९ श०३३ उ०। नाया०

जीविय- न० *[जीवित]*

प्राणधारणे,रा० ।पण्हा० ।विशे० ।नाया० ।आव० ।अणुओ० ।निर०

जीवितं प्राणधारणलक्षणं नाभिकाङ्क्षेत।आचा०१ श्रु०८अ०८ उ०

'ते वीरा बंधणोमुक्का, नावकंखंति जीवियं।' जीवितमसंयमजीवितं प्राणधारणं वा। सूय०१ श्रु०९ अ०।

जीवितम्-कर्मणो दीर्घा स्थितिः। *भग० २८९*।

'जीवितं दुविहंसंजमजीवियं, असंजमजीवियं च'।निसि०१ उ०।

जीवियंतकरण- पुं० *[जीवितान्तकरण]*

प्राणवधे, प्राणवधस्य चैतद् गौणं नाम। पण्हा०१ अ०।

जीवियट्ठि- पुं० *[जीवितार्थिन्]*

जीवितुकामे, 'जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी।' दश०९ अ०१ उ०। आचा०। सूय०।

इहासंयमजीवितार्थी प्रभूतकालं सुखेन जीविष्यामीत्येतदध्यवसायी आयं कर्माऽऽश्रवलक्षणं न कुर्यात्। सूय० १ श्रु०१० अ०।

जीवियणाम- न० *[जीवितनामन्]*

जीविकाहेतौ नामनि, अणुओ०।

'से किं तं जीवियणामे ? जीवियणामे अवकरए उक्कुरुडिए उंभिअए कज्जवए सुप्पए। सेत्तं जीवियणामे।' इह यस्या जातमात्रमपत्यं म्रियते सा लोकस्थितिवैचित्र्याज्जातमात्रमपि किञ्चिदपत्यं जीवननिमित्तमवकराऽऽदिष्वस्यति तस्य चावकरक उत्कुरुटक इत्यादि यन्नाम क्रियते तज्जीविकाहेतोः स्थापनानामाऽऽख्यायते। सूर्पे कृत्वा त्यज्यते, तस्य सूर्पक एव नाम स्थाप्यते, शेषं प्रतीतम्। अणुओ०।

जीवियभावणा- स्त्री० *[जीवितभावना]*

जीवसमाधानकारिण्यां भावनायाम्, सूय०।

जीवियमरणनिरवकंख- त्रि० *[जीवितमरणनिरवकाङ्क्ष]*

जीवितमरणयोर्विषये निरवकाङ्क्षो जीवितमरणानिरवकाङ्क्ष। जीवितमरणयोर्विषये वाच्छारहिते, कल्प० ६ क्षण०।

जीवियरसभ- पुं० *[जीविकरसभ]*

साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकाभेदे, पन्न०१ पद०।

जीवियरेहा- स्त्री० *[जीवितरेखा]*

मणिबन्धादुत्थाय तर्जन्यङ्गुष्ठकान्तर्गतायां रेखायाम्, कल्प०।

जीविया- स्त्री० *[जीविका]*

आजन्मनिर्वाहे, नाया०१ श्रु०१ अ०। कल्प०।

'सा जीविया पट्ठविया चिरेण।' सूय० २ श्रु०६ अ०।

जीवियारिह- त्रि० *[जीविकाऽर्ह]*

जीविकोचिते, भग०११ श०११ उ०

आजन्मनिर्वाहयोग्ये, 'विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइ।' नाया०१ श्रु०१ अ०। कल्प०। उव०।

जीवियासंसप्पओग- पुं० *[जीविताऽऽशंमाप्रयोग]*

जीवितं प्रत्याशंसा चिरं मे जीवितं भवन्विति जीविताऽऽशंसाप्रयोगः। आशंसाप्रयोगभेदे, ठा०१० ठा०।

जीवितं प्राणधारणं, तदाशंसायास्तभिलाषस्य प्रयोगः, यदि बहुकालमहं जीवेयमिति।संलेखनायास्तृतीयेऽतिचारे, उवा० १ अ० तथा कश्चित्कृतानशनः प्रभूतपौरजनव्रातविहितमहामहः सततावलोकनात्प्रचुरवन्दारुवृन्दवन्दनसंमर्ददर्शनात् अस्तोकविवेकिलोकसत्कृतश्लोकसमाकर्णनात् पुरतः संभूय भूयो भूयः सद्धार्मिकजनविधीयमानोपवृंहणश्रवणात् अनघसमस्तसङ्घजनमध्यसमारब्धपुस्तकवाचनवस्त्रमाल्याऽऽदिसत्कारनिरीक्षणाश्चैवं मन्यते–प्रतिपन्नानशनस्यापि मम जीवितमेव सुचिरं श्रेय, यत एवंविधा मदुद्देशेन विभूतिर्वर्तत इति जीविताऽऽशंसाप्रयोगः। आव०चू०।

जीवितं-प्राणधारणं तत्राभिलाषप्रयोगः । *आव०*।

जीवियासंसा- स्त्री० *[जीविताऽऽशंसा]*

प्राणधारणाभिलाषायाम्, उवा०१ अ०।

जीवियासा- स्त्री० *[जीविताऽऽशा]*

जीवितप्राप्तिसंभावनायाम्, भग० १२ श०५ उ०।

जीवितस्य प्राणधारणस्याऽऽशा वाञ्छा जीविताऽऽशा। प्राणधारणवाच्छायाम्, रा०। निर० । नाया०।

लोभकषायभेदे, सम०५२।

जीवियासामरणभयविप्पमुक्क-त्रि० *[जीविताऽऽशामरणभयविप्रमुक्त]*

जीवितस्य प्राणधारणस्याऽऽशा वाञ्छा मरणाश्च यद्भयं, ताभ्यां विप्रमुक्तो जीविताऽऽशामरणभयविप्रमुक्तः।जीविताऽऽशामरणभयोपेक्षके, निर० १ वर्ग० १ अ०। नाया०। रा०।

जीवोद्धरण- न० *[जीवोद्धरण]*

मन्त्रशास्त्रभेदे, ठा०६ ठा०।

जीहगार- पुं० *[जिहाकार]*

'जिब्भगार' शब्दार्थे, पन्न० १ पद०।

जीहा- स्त्री० *[जिह्वा]*

'जिब्भा' शब्दार्थे । रसनेन्द्रिये, बुह०१ उ०।

जीहादुट्ठ- पुं० *[जिह्वादुष्ट]*

'जिब्भादुट्ठ' शब्दार्थे, आव० ४ अ०।

जीहादोस- पुं० *[जिह्वादोष]*
'जिब्भादोस' शब्दार्थे, आव० ४ अ०।

जीहादोसणिवुत्त- त्रि० *[जिह्वादोषनिवृत्त]*
रसगृद्धिरहिते, बुह० १ उ०।

जीहामयदुक्ख- न० *[जिह्वामयदुःख]*
'जिब्भामयदुक्ख' शब्दार्थे, ठा०५ ठा०२ उ०।

जीहामयसोक्ख- न० *[जिह्वामयसौख्य]*
'जिब्भामयसोक्ख' शब्दार्थे ठा०५ ठा०२ उ०।

जीहिंदिय- न० *[जिह्वेन्द्रिय]*
'जिब्भिंदिय' शब्दार्थे, पण्हा०१ अ०।

जीहिंदियनिग्गह- पुं० *[जिह्वेन्द्रियनिग्रह]*
'जिब्भिंदियनिग्गह' शब्दार्थे, उत्त०२९ अ०।

जीहिंदियसंबर- पुं० *[जिह्वेन्द्रियसंबर]*
'जिब्भिंदियसंवर' शब्दार्थे, पण्हा० ५ अ०।

जुइ- त्रि० *[द्युति]* स्त्री०
स्फुरणे, नाया०१ श्रु०९ अ०।
शरीराऽऽभरणाऽऽदिदीप्तौ, सम०३० सम०। उव०। सूय०। द्युतिवक्तव्यताप्रतिबद्धे निरयाऽऽवलिकोपाङ्गस्य वृष्णिदशानामक पञ्चमवर्गस्य षष्ठेऽध्ययने, निर० १ वर्ग०।
आन्तरे तेजसि, नाया०१ श्रु०८ अ०।
तपोदीप्तौ, तेजोलेश्यायाम्, उत्त० १ अ०।
माहात्म्ये च, द्युतिः प्रेमा माहात्म्यमित्यर्थः। ठा० ६ ठा०।
इष्टार्थसम्प्रयोगे च, 'जु' अभिगमने इति वचनात्। जीवा०३ प्रति०। पन्न०।

जुइ- स्त्री० *[युति]* पुं०।
युक्तौ, इष्टपरिवाराऽऽदिसंयोगे, ठा०।
द्युतिर्दीप्तिः शरीराऽऽभरणाऽऽदिसंभवा, युतिर्वा युक्तिरिष्टपरिवाराऽऽदिसंयोगलक्षणेति। ठा० ३ ठा०३ उ०।
वस्तुघटनायां च, सर्वद्युत्याऽऽभरणाऽऽदिसंबन्धिन्या सर्वयुक्त्या वा उचितेषु वस्तु घटना लक्षणयेति। नाया०१ श्रु०१ अ०। ठा०।
द्युत्या यथाशक्ति विस्फारितेन शरीराऽऽभरणतेजसेंति। आव०म० १ अ० १ ।

जुइमं- त्रि० *[द्युतिमत]*
द्युतिर्दीप्तिरतिशायिनी विद्यते यस्य सः। उत्त० ५ अ०।
दीप्तिमति, सूय० १ श्रु०६ अ०।
तेजस्विनि, उत्त० १८ अ०। आचा०।

जुई- स्त्री० *[द्युति]*
'जुइ' शब्दार्थे।

जुउंछिय- त्रि० *[जुगुप्सित]*
निन्दिते, निसि० ४ उ०।

जुंगिय- पुं० *[जुङ्गिक]*
जातिकर्मशरीराऽऽदिभिर्दूषते, गच्छा०।
जातिकर्मशरीराऽऽदिभिर्दूषितो जुङ्गितः। तत्र मातङ्गकौलिकवरुटसूचिकछिम्पकाऽऽदयोऽस्पृश्या जातिजुङ्गिता स्पृश्या अपि, स्त्रीमयूरकुक्कुटाऽऽदिपोषकाः वंशवस्त्राऽऽरोहणा नापितसौकरिक वागुरिकत्वाऽऽदिनिन्दितकर्मकारिणः कर्मजुङ्गिताः, करचरणकर्णाऽऽदिवर्जिताः पङ्गुकुब्जवामनककाणप्रभृतयः शरीरजुङ्गिता। गच्छा०१ अधि०। वव०। निसि०।

जुंगिय- पुं० *[जुङ्गित]*
जातिकर्मशरीराऽऽदिभिर्दूषिते, गच्छा०१ अधि०।
खण्डीकृते, वव०३ उ०। पिंड०।

जुंगियंग- त्रि० *[जुङ्गिताङ्ग]*
व्यङ्गिते, ठा० ५ ठा०३ उ०।
कर्त्तितहस्तपादाऽऽद्यवयवे, पिंड०।

जुंज- धा० *[युज्]*
योगे, समाधौ, 'जुंजइ य जहत्थामं।' 'युजिर्' योगे, योजयति च। निसि० १ उ०।

जुंजण- न० *[योजन]*
व्यापारणे, 'इंदियाण य जुंजणे' श्रोत्रनेत्ररसनानासात्वगादीनामिन्द्रियाणां शब्दरूपरसगन्धरूपर्शाऽऽदिविषयेषु व्यापारणे, उत्त० २४ अ०।
'सव्विंदियजोगजुंजणया।' ठा० ७ ठा०।

जुंजणा- स्त्री० *[योजना]*
व्यापारणे, आव०म० १ अ०।

जुंजणाकरण- न० *[योजनाकरण]*
मनःप्रभृतीनां व्यापारकरणे, नो-श्रुतकरणभेदे च। नोश्रुतकरण भेदमधिकृत्य–'तह य जुंजणाकरणं।' योजनाकरणं च मनःप्रभृतीनां व्यापारणम्।' । आव०म०।

जुग- *[युग]*
चतुर्हस्त प्रमाणे यूपे। पण्हा०। ठा०। भग०। तं०। जीवा०।
शकटाङ्गविशेषे, जंबू०३ वक्ष०।
'दुद्दंते भंजए जुगं।' युगं जुसरम्। उत्त० २ अ०।
'उसु चोइया तत्तजुगेसु जुत्ता।' सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ०।
शकटाङ्गविशेषाऽऽत्मके करचरणस्थे पुरुष लक्षणाविशेषे, जंबू०३ वक्ष०।
चतुर्विंशत्यङ्गुलमानैश्चतुर्भिर्हस्तैर्निष्पन्नेऽवमानप्रमाणसाधनेऽवमानविशेषे, अणुओ०।
यदवमीयते खाताऽऽदि तदवमानम्। केनावमीयते ? इत्याह– 'हत्थेण वा दंडेण वा धणुक्केण वा जुगेण वा अवमानविशेषा दण्डधनुर्युगनालिकाक्षमुशलरूपाः षट् संज्ञाः लभन्ते अत एवा

ऽऽह–'दंड धणू जुगनालिया य अक्खं मुसलं च चउहत्थं।' अणुओ०। जंबू०। ज्यो०। सम०।
लोकप्रसिद्धे कृतयुगाऽऽदिके सत्यत्रेताद्वा परकलिरूपे काल-विशेषे, ठा०।
पञ्चवर्षाऽऽत्मके सुषमदुषमाऽऽदिके कालमानविशेषे च। ठा०३ ठा०४ उ०।
'पंचसंवच्छरिए जुगे' जंबू०२ वक्ष०। विशे०। ठा०। अणुओ०। आव०म०। तं०। भग०। कल्प० । नाया०।

जुंगतकडभूमि- स्त्री० *[युगान्तकृद्भूमि]*
युगानि कालमानविशेषाः, तानि च क्रमवर्त्तीनि, तत्साधर्म्याद्ये क्रमवर्त्तिनो गुरुशिष्यप्रशिष्याऽऽदिरूपाः पुरुषास्तेऽपि युगानि, तैः प्रमितान्तकरभूमिर्युगान्तकरभूमिः।नाया०१श्रु०८अ०।कल्प०
पुरुषलक्षणयुगापेक्षयाऽन्तकराणां भवक्षयकारिणां भूमिः कालो युगान्तरकरभूमिः। ठा०८ ठा०।
अन्तकर भूमिभेदे, पुरुषौ युगामिव पुरुषयुगं, तदपेक्षयाऽन्त कराणां भवान्तकराणां, निर्वाणगामिनामित्यर्थः। भूमिः कालो युगान्तकरभूमिः। इदमुक्तं भवति–भगवतो वर्द्धमानस्वामिनः तीर्थे तस्मादेवावधेः तृतीयं पुरुषं जम्बूस्वामिनं यावन्निर्वाणमभूत्, तत उत्तरं तद्व्यवच्छेद इति। ठा० ३ ठा० ४ उ०।

जुंगतकरभूमि- स्त्री० *[युगान्तकृद्भूमि]*
'जुंगतकडभूमि' शब्दार्थे, नाया० १ श्रु०८ अ०।

जुंगतरपलोयणा- स्त्री० *[युगान्तरप्रलोकना]*
युगं यूपः, तत्प्रमाणमन्तरं व्यवधानं प्रलोकयति या सा । भग०।
युगं यूपः, तत्प्रमाणो भूभागोऽपि युगः, तस्यान्तरे मध्ये प्रलोकनं यस्याः सा । युगप्रमाणभूभागव्यवधानेन प्रलोकयन्त्याम्,भग०।
'जुगमंतरपलोयणाए दिट्ठीए' युगं यूपः, तत्प्रमाणानन्तरं स्वदेह-देशस्य दृष्टिपातदेशस्य च व्यवधानं, प्रलोकयति या सा युगान्तरप्रलोकना, तया, दृष्ट्येति। भग० २ श० १ उ०।

जुंगधर- पुं० *[युगन्धर]*
युगं रथस्य युगकाष्ठं धरति । रथस्य युगकाष्ठसञ्ज्ञे कूवराख्ये काष्ठभेदे, जंबू० १ वक्ष०।
अम्बरतिलकपर्वतस्थे स्वनामख्याते आचार्ये, आव० म०।
'जुंगधरा नाम आयरिया विविहनियमधर चउद्दसपुव्विचउण्णा-णोवगया।' आव०म० १ अ० १ ।
अम्बरतिलकपर्वतमधिकृत्य–'युगन्धरमुनिस्तत्र, तदा केवलमा-सदत्।' आव०।
अपरविदेहस्थे महाबाहुवासुदेवस्य समकालिके तीर्थकरे, आव०चू० १ अ०। आव०।

जुगच्छिड्ड- न० *[युगच्छिद्र]*
युगरन्ध्रे।

जुगणद्ध- पुं० *[युगनद्ध]*
युगमिन नद्धो युगनद्धः। यथा युगं वृषभ-स्कन्धयोरारोपितं वर्तते तद्वद् योगोऽपि यः प्रतिभाति स युगनद्ध इत्युच्यते। एतदाकारं योगभेदे, सूर० १२ पाहु०। ।

जुगप्पहाण- पुं० *[युगप्रधान]*
युगश्रेष्ठे, निसि०१ उ०।
'तत्थ अज्ज वइरा सुच्चंति जुगप्पहाणा।' आव०म० १ अ०२ ।
युगप्रधानः। *आव०* । *निसि०* ।

जुगबाहु– पुं० *[युगबाहु]*
सुविधिनाथस्य पूर्वभवनाम। *सम० १५१*।

जुगमच्छ- पुं० *[जुगमत्स्य]*
मत्स्यभेदे, विपा० १ श्रु०८ अ०। जीवा०। पन्न०।

जुगमत्त- त्रि० *[युगमात्र]*
युगं यूपं चतुर्हस्तं, तत्प्रमाणं युगमात्रम्। चतुर्हस्तप्रमाणे।
'पुरओ जुगमत्ताए, पेहमाणो महिं चर।' पुरताऽग्रतो युगमात्रया शरीरप्रमाणया शकटोद्धर्वसंस्थितया दृष्ट्येति।दश०५ अ०१ उ०।

जुगमाय- त्रि० *[युगमात्र]*
'पुरओ जुगमायं पेहमाणे।' युगमात्रं चतुर्हस्तप्रमाणं शक-टोद्धर्वसंस्थितं भूभागं पश्यन्। आचा० २ श्रु०३ अ० १ उ०।

जुगल- न० *[युगल]*
युगलं द्वयमिति। अणुओ०। तं०। उत्त०। नाया०। रा०। भग०। सम०। उव०।
सजातीयविजातीययोर्द्वन्द्वे, रा०। जीवा०। जंबू०।
आमेलगजमलजुगलवट्टियअब्भुण्णयपीणरइयसंठियपओहरा ।
युगलौ युगलरूपौ, द्वावित्यर्थः। नाया० १ श्रु० १ अ०।

जुगलधम्म- पुं० *[युगलधर्म]*
स्त्रीपुरुषद्वन्द्वधर्मे, आव०म० १ अ० १ । तं०। ज्यो०।

जुगलधम्मिय- पुं० *[युगलधर्मिक]*
स्त्रीपुरुषद्वन्द्वधर्मवति, तं०।

जुगलयमणुय- पुं० *[युगलकमनुज]*
युगलधर्मिणि मनुष्ये, ज्यो० १ पाहु०। ।

जुगलि- त्रि० *[युगलिन्]*
सजातीयविजातीयद्वन्द्वोपेते, उत्तरकुरौ भगवान् युगलिकोऽहं युगलिनीति, कल्प० ७ क्षण०।

जुगलिय- त्रि० *[युगलिक]*
स्त्रीपुरुषद्वन्द्वोपेते, कल्प०७ क्षण०।

जुगलिय- त्रि० *[युगलित]*
युगलं सजातीयविज्जातीययोर्द्वन्द्वं, तत्संजातमस्त्यस्य युगलितः।
सजातीयविजातीयद्वन्द्वोपेते, जीवा०३ प्रति०। जंबू०। जीवा०।
'निच्चं जुगलिया' युगलतया स्थिताः। नाया०१ श्रु०१ अ०।

जुगवं-१ त्रि० *[युगवत्]*

युगं सुषमदुष्षमाऽऽदिः कालः, सोऽदुष्टो निरुपद्रवो विशिष्टबल-हेतुर्यस्यास्त्यसौ युगवान्। कालोपद्रवरहिते, अणुओ०।

कालोपद्रवोऽपि सामर्थ्यविघ्नहेतुः, स चास्य नास्तीति। अणुओ०। भग०। रा०। आव०म०।

जुगवं-२ अव्य० *[युगपत्]*

युगमिव पद्यते, एकस्मिन् काल इत्यर्थे, नं०।

'चत्तारि कम्मं से जुगवं खवेइ'। यौगपद्येन निर्जरयति। उव०। आव०म०। उत्त०। विशे०।

जुगवाहु- पुं० *[युगबाहु]*

युगो यूपस्तदाकारा वृत्तत्वाद्दीर्घत्वाच्च बाहवो यस्य सः। युगवद्दीर्घबाहौ, ठा० ९ ठा०।

सुविधिजिने सुविधिजिनस्य चैतत्पूर्वभवनामधेयम्। सम०। पूर्वविदेहस्थे सीमन्धरतीर्थकरसमकालिके वासुदेवे, आव०चू०४ अ०। आव०।

मालवदेशस्थस्य सुदर्शनपुरनृपतेर्मणिरथस्य स्वनामख्याते भ्रातरि, उत्त०९ अ०।

जुगसंवच्छर- पुं० *[युगसंवत्सर]*

युगं पञ्चवर्षाऽऽत्मकं तत् पूरकः संवत्सरो युगसंवत्सरः। सम० प्र० १० । चंद०।

पञ्चसंवत्सराऽऽत्मकं युगं, तदेकदेशभूतो वक्ष्यमाणलक्षणश्चन्द्रा-दिर्युगपूरकत्वाद्युगसंवत्सरः।संवत्सरविशेषे।जंबू०७वक्ष०, ठा०।

जुगसंनिभ- त्रि० *[युगसन्निभ]*

वृत्ततया आयततया च यूपतुल्ये, । जीवा० ३ प्रति०। तं०। पण्हा०।

जुगाइ- पुं० *[युगाऽऽदि]*

युगाऽऽरम्भे युगाऽऽरम्भकाले प्रथमतः प्रवृत्ते मासतिथिमुहूर्त्तादौ च। जंबू०।

जुग्ग- न० *[युग्य]*

अश्वाऽऽदिके वाहने, ठा०४ ठा०३ उ०। पण्हा०।

युग्यमिव युग्यम्। संयमभार वोढरि साधौ, । ठा०।

जुग्गगय- त्रि० *[युग्यगत]*

वाहनोपरि स्थिते, उव०।

जुग्गय- त्रि० *[युग्यक]*

'जुग्ग' शब्दार्थे, ठा० ४ ठा० ३ उ०।

जुग्गायरिया- स्त्री० *[युग्याचर्या]*

युग्यस्याऽऽचर्या वहनं गमनं युग्याचर्या। युग्यस्य गमने, ठा० ४ ठा० ३ उ०।

जुग्गारिया- स्त्री० *[युग्याचर्या]*

'जुग्गायरिया' शब्दार्थे, ठा० ४ ठा० ३ उ०।

जुज्झ- धा० *[युध]*

'संपलग्गो उ जुज्झिउं'। आव०म०१ अ०१ ।

मुष्ट्याऽऽदिना परस्परताडने, तं०।

'जुज्झाइं बाहुजुज्झाइयाइं वट्टाइयाणं च' युद्धानि नाम–बाहु-युद्धाऽऽदीनि, यदि वा वर्त्तकाऽऽदीनां च। आव०म०१ अ०।

युद्धं कुक्कुटाऽऽदीनामिव मुण्डामुण्डि, शृङ्गिणामिव शृङ्गाशृङ्गि युयुत्सया योधयोर्वल्गमन्। जंबू०२ वक्ष०।

आयुधयुद्धे, नाया० १ श्रु०१ अ०।

वैरिणां परप्राणव्यरोपणाध्यवसाये, आतु०।

संग्रामे, 'अप्पाणमेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ।' उत्त० ८ अ०। निर० । पण्हा०।

द्रव्यतः संग्रामयुद्धं, भावतः परीषहाऽऽदियुद्धं, तद् द्विविधम्, आर्यानार्यभेदात्। तत्रानार्यं संग्रामयुद्धं, परीषहाऽऽदिरिपुयुद्धं त्वार्यम्। आचा० १ अ० ५ अ० ३ उ०।

तदात्मके द्वासप्ततिकलाऽन्तर्गते कलाभेदे, नाया०१ श्रु०१ अ०। आव०। जंबू०।

जुज्झंग- न० *[युद्धाङ्ग]*

संग्रामाङ्गे, उत्त०।

जुज्झंझाण- न० *[युद्धध्यान]*

युद्धं वैरिणां परप्राणव्यपरोपणाध्यवसायः, तस्य ध्यानं युद्ध-ध्यानम्। ध्यानभेदे, भ्रातृणां विनाशे, चेटकेन सह कोणिक-नृपस्येव, अङ्गारवत्यादिग्रहणे चण्डप्रद्योतस्येव वा। आतु०।

जुज्झंत- त्रि० *[युध्यत्]*

युद्धं कुर्वति, निसि० १ उ०।

'महया रिवुबलेण जुज्झंतो दिट्ठो'। आव०म० १ अ०१ ।

जुज्झंत- त्रि० *[युध्यमान]*

शस्त्राणि व्यापारयति,'जुज्झंतदढधम्माणं। सूय०१श्रु०३अ०१ उ०

जुज्झकित्तिपुरिस- पुं० *[युद्धकीर्तिपुरुष]*

युद्धजनिता या कीर्त्तिः, तत्प्रधानः पुरुषो युद्धकीर्तिपुरुषः। युद्धजनितकीर्तिमति पुरुषे, सम०।

जुज्झकुसल- पुं० *[युद्धकुशल]*

युद्धप्रवीणे, उत्त०३ अ०।

युद्धक्रियाज्ञानवति, आव०।

जुज्झणीइ- स्त्री० *[युद्धनीति]*

व्यूहरचनाऽऽदिके, ठा०९ ठा०।

संग्रामनिर्गमप्रवेशे च। आव० । उत्त०।

जुज्झदक्ख- पुं० *[युद्धदक्ष]*

युद्धे आशुकारिणि, उत्त० ३ अ०।

जुज्झववसाय- पुं० *[युद्धव्यवसाय]*

युद्धव्यापारे, उत्त० ३ अ०।

जुज्झसज्ज- पुं० *[युद्धसज्ज]*
युद्धनिमित्तं सज्जः प्रगुणीभूतो युद्धसज्जः। रा०।
युद्धगुणे, भग० ७ श० ९ उ०।
युद्धसज्जो रणप्रह्व इति। उव०।

जुज्झसड्ड- त्रि० *[युद्धश्रद्ध]*
युद्धं संग्रामस्तत्र संजाता श्रद्धा यस्य सः युद्धश्रद्धावति, । पण्हा० ३ अ०।

जुज्झसूर- पुं० *[युद्धशूर]*
युद्धे शूरः सुभटः। रणदीक्षाबद्धकक्षे, संथा०
शूरविशेषे, युद्धशूरो वासुदेवः। कृष्णवत्तस्य षष्ट्यधिकेषु त्रिषु संग्रामशतेषु लब्धजयत्वात्। ठा० ४ ठा० ३ उ०।

जुज्झाइजुज्झ- न० *[युद्धातियुद्ध]*
यत्र प्रतिद्वन्द्विहतानां पुरुषाणां पातः स्यादित्येवम्भूते खङ्गाऽऽदि-प्रक्षेपपूर्वके महायुद्धे, तदात्मके द्वासप्ततिकलाऽन्तर्गते कलाभेदे च। जंबू० २ वक्ष०। सम०। उव०। नाया०।

जुज्झारिय- न० *[युद्धार्य्य]*
युद्धभेदे, युद्धं द्विविधम्, आर्याऽनार्यभेदात्। अनार्य्यं संग्राम-युद्धम्, परिषहाऽऽदिरिपुयुद्धं त्वार्य्यम्। आचा०१ श्रु०५ अ०३ उ०

जुज्झारिह- त्रि० *[युद्धार्ह]*
युद्धोचिते, 'इमेणं चेव जुज्झाहि किं ते जुज्झेण बज्झओ। जुद्धा-रिहं तु खलु दुल्लहं जहेत्थ कुसलेहिं ।आचा० १श्रु०५ अ०३ उ०

जुज्झित्ता- त्रि० *[युद्धा]*
युद्धं कृत्वेत्यर्थे, ठा० ३ ठा०२ उ०।

जुण्णकुमारी- स्त्री० *[जीर्णकुमारी]*
'जिण्णकुमारी' शरीरजरणाद् वृद्धा सैव जीर्णत्वापरिणत्वाभ्यां जीर्णकुमारी। नाया०२ श्रु० १ वर्ग०१ अ०।

जुण्णगुल- पुं० *[जीर्णगुड]*
'जिण्णगुल' शब्दार्थे, भग०८ श०९ उ०

जुण्णघय- न० *[जीर्णघृत]*
'जिण्णघय' शब्दार्थे, अणुओ०।

जुण्णतंदुल- पुं० *[जीर्णतण्डुल]*
'जिण्णतंदुल' शब्दार्थे, भग०८ श०९ उ०।

जुण्णतया- स्त्री० *[जीर्णत्वक्]*
'जिण्णतया' शब्दार्थे, आचा०२ श्रु०४ चू०।

जुण्णसुरा- स्त्री० *[जीर्णसुरा]*
'जिण्णसुरा' शब्दार्थे, भग० ८श० ९उ०।

जुण्णसेट्ठि- पुं० *[जीर्णश्रेष्ठिन्]*
'जिण्णसेट्ठि' शब्दार्थे, ।

जुण्णाजुण्ण- त्रि० *[जीर्णाजीर्ण]*
'जिण्णाजिण्ण' शब्दार्थे, आव०म० १ अ० १ ।

जुण्णुज्जाण- न० *[जीर्णोद्यान]*
'जिण्णुज्जाण' शब्दार्थे, नाया० १ श्रु०१ अ०।

जुति- स्त्री० *[द्युति]*
द्युतौ, 'सव्वजुईए' सर्वद्युत्याऽऽभरणादि संबन्धित्या। नाया० १ श्रु० ७ अ०।

जुत्त- त्रि० *[युक्त]*
'जुत्तानि बलीवदाऽऽदियुतानि।' उव०।
'गुत्ते जुत्ते तदा जए।'युक्तो ज्ञानाऽऽदिभिः।सूय०१श्रु०२अ०३उ०
श्लिष्टे, आव०चू०।
युक्तं श्लिष्टमित्यर्थान्तरम्। आव०चू० १ अ०।
समन्विते, आचा०१ श्रु०५ अ०१ उ०।
परस्परसंबद्धे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०। विशे०। नाया०। रा०।
ऊचिते, अणुओ०। ठा०। जंबू०। रा०। जीवा०।
योग्ये, निसि० १० उ०।
युक्तं योग्यं घटमानमिति। निसि०१ उ०।
'जुत्तो' युज्यते, घटत इत्यर्थः। निसि०१ उ०।
उपपन्ने, चंद०२० पाहु०। । सूय०। सूर०।
संगते, नाया०१ श्रु०१६ अ०। ठा०। विपा० । जंबू०। उवा०।
युक्तियुक्ते, सूय० १ श्रु०५ अ०२ उ०।

जुत्तिगइ- स्त्री० *[युक्तगति]*
मृदुगतौ, 'जुत्तगती णामं मिदुगती।' न शीघ्रं गच्छतीत्यर्थः। निसि० १६ उ०।

जुत्तपरिणय- त्रि० *[युक्तपरिणत]*
सत्सामग्र्या युक्ततया परिणते यानाऽऽदौ, ठा०४ ठा०३ उ०।

जुत्तपालिय- त्रि० *[युक्तपालिक]*
युक्तापरस्परं संबद्धा न तु बृहदन्तराला पालिः सेतुर्यस्य य युक्तपालिकः। परस्परसंबद्धसेतुके, रा०। जीवा०।

जुत्तफुसिय- न० *[युक्तस्पृष्ट]*
उचितबिन्दुनिपाते, 'जुत्तफुसियनिहयरेणुयं।' सम०३४ सम०।

जुत्तरूव- त्रि० *[युक्तरूप]*
संगतस्वभावे, प्रशस्तस्वभावे, उचितवेषे, सुविहितनेपथ्ये च। ठा० ४ ठा० ३ उ०।

जुत्तसोह- त्रि० *[युक्तशोभ]*
युक्तं शोभते युक्तस्य वा शोभा यस्य तद्युक्तशोभम्। गवाऽऽ-दिसत्सामग्रीयुक्ततया शोभमाने यानाऽऽदौ, ठा०४ ठा०३ उ०।
युक्ता उचिता शोभा यस्य सः।युक्तशोभोपेते, ठा०४ ठा०३ उ०।

जुत्ति- स्त्री० *[युक्ति]*
योजनं युक्तिः, । विशे०।
योगे, 'दिव्वाए जुत्तीए' युत्त्या विवक्षितार्थयोगेन। उव०।
भक्तौ, ठा०८ ठा०।

द्रव्याऽऽदिसंयोगे, सम०५ अङ्ग। आचा०। नाया०

युक्त्याऽन्यान्यभक्तिभिस्तथाविधद्रव्ययोजनेनेति। ठा०८ ठा०

लोकन्याये, । विशे०।

हेतौ, सम० ५

सर्वैव हेतदृष्टान्तैः प्रमाणीभूतैः। सूय०१ श्रु० ११ अ०।

युक्तयः साधनानि, असिद्धविरुद्धानैकान्तिकपरिहारेण पक्षधर्मत्व सपक्षत्वविपक्षत्वव्यावृत्तिरूपतया युक्तिसङ्गता युक्तयः। सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ०।

योजनं युक्तिः। अर्थघटनायाम्, सम०५ । सूय०।

'सव्वजुईए' सर्वयुक्त्या उचितेषु वस्तुघटनालक्षणयेति। नाया० १ श्रु०७ अ०।

विधौ, बुह० १ उ०।

जुत्तिक्खम- त्रि० *[युक्तिक्षम]*

उपपत्तिसहे। आव०म०।

जुत्तिण्ण- त्रि० *[युक्तिज्ञ]*

युक्तिज्ञानवतिं, 'गंधारे गीयजुत्तिण्णा।' ठा०७ ठा०।

जुत्तिसुवण्ण- पुं० *[युक्तिसुवर्ण]*

कृत्रिमसुवर्णे, दश०१० अ०।

जुद्धकित्तिपुरिस- पुं० *[युद्धकीर्तिपुरुष]*

'जुज्झकित्तिपुरिस' शब्दार्थे, सम०।

जुद्धदक्ख- पुं० *[युद्धदक्ष]*

'जुज्झदक्ख' शब्दार्थे, उत्त०३ अ०।

जुद्धववसाय- पुं० *[युद्धव्यवसाय]*

'जुज्झववसाय' शब्दार्थे, उत्त०३ अ०।

जुद्धसज्झ- पुं० *[युद्धसज्ज]*

'जुज्झसज्ज' शब्दार्थे, रा०।

जुद्धसड्ढ- त्रि० *[युद्धश्रद्ध]*

'जुज्झसड्ढ' शब्दार्थे, पण्हा०३ अ०।

जुम्म- न० *[युग्म]*

द्वित्वसंख्याऽन्विते पदार्थद्वयसंघाते, पिंड०। ओह०।

गणपरिभाषया समराश्यात्मके राशिविशेषे च। ठा० ४ ठा०३ उ०

जुम्मपएसिय- त्रि० *[युग्मप्रादेशिक]*

समसंख्यप्रदेशनिष्पन्ने, तदात्मके प्रतरवृत्तभेदे च। भग०२५ श० ४ उ०।

जुयल- न० *[युगल]*

'जुगल' शब्दार्थे, अणुओ०।

जुयलधम्म- न० *[युगलधर्म]*

'जुगलधम्म' शब्दार्थे, आव०म०१ अ० १।

जुयलधम्मिय- पुं० *[युगलधर्मिक]*

'जुगलधम्मिय' शब्दार्थे, तं०।

जुयलयमणुय- पुं० *[युगलकमनुज]*

'जुगलयमणुय' शब्दार्थे, ज्यो० १ पाहु०। ।

जुव- त्रि० *[युवन्]*

यौवनस्थे, जीवा०३ प्रति०। रा०।

युवा वयः प्राप्त इति। उवा०९ अ०। भग०।

'आषोडशाद्भवेद् बालः तरुणस्तत उच्यते।' इत्युक्तवयस्के तरुणे। आचा०। नाया०। आव०।

जुवइ- स्त्री० *[युवति]*

तरुण्याम्, नाया०१ श्रु०१ अ०। आव०। उव०। रा०।

'जुवई समणं बूया।' युवतिरभिनवयौवना स्त्री। सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०।

जुवंगव- पुं० *[युवगव]*

युवाऽयं गौः युवगवः।जुवंगवे त्ति वा। आचा०२ श्रु०४ अ०२ उ०

जुवरज्ज- न० *[यौवराज्य]*

प्राचीननृपतिना यो यौवराज्याभिषिक्त आसीत्तेनाधिष्ठितं राज्यं परमनेन यावन्नाद्यापि द्वितीयो युवराजोऽभिषिक्तस्तावद्यौव-राज्यमुच्यते। इत्युक्तलक्षणे राज्ये, बुह०१ उ०। निसि०।

यत्र नाद्यापि राजाभिषेको भवति। इत्युक्त लक्षणे यौवराज्ये, आचा०२ श्रु०३ अ०१ उ०। बुह०।

जुवरायाणं णाभिसिंचति ताव तं। *निसि०*।

जुवराय- पुं० *[युवराज]*

युवा चाऽसौ राजा च युवराजः। पितरि जीवति सति राजयोग्यः कुमारो युवराज उच्यते। इत्युक्त लक्षणे कुमारपदधारके, उत्त०१९ अ०।

राज्ञो द्वितीयस्थानवर्त्तिनि, वव०१ उ०।

युवराज उत्थिताऽऽसन इति। जीवा०३ प्रति०। आव०। वव०। उव०। आचा०। बुह०।

अनभिषिक्तयुवराजपदं राज्यम्। नाभिषिक्तो राजा। *बुह० ८२*

जुवाण- पुं० *[युवाण-युवन्]*

युवा यौवनस्थस्तु प्राप्तवया एष इत्येवमणति व्यपदिशति लोको यमसौ निरुक्तिवशाद् युवाणः। बाल्याऽऽदिकालेऽपि दारकोऽ-भिधीयतेऽतो विशिष्टवयोऽवस्थापरिग्रहार्थम् एतद्विशेषणम्। यौवनस्य इत्येवं लोकेन व्यपदिश्यमाने प्राप्तविशिष्टवयोऽवस्थे, अणुओ०।

जुव्वणत्थी- स्त्री० *[यौवनस्त्री]*

तरुण्याम्, 'पिच्छसि मुहं सतिलयं, सविसेसं सरायएण अहरेणं। सकडक्खं सवियारं, तरलच्छिं जुव्वणत्थीए । तं०।

जुसिय- त्रि० *[जुष्ट]*

प्रीते, 'पाएण देइ लोगो, उपगारिसु परिचिए च जुसिए वा।' ठा० ४ ठा०४ उ०।

जुहिट्ठिल- पुं० *[युधिष्ठिर]*
हस्तिनापुरस्थे पाण्डुराजस्य ज्येष्ठपुत्रे, नाया०१ श्रु०१६ अ०। 'जुहिट्ठिलपामोक्खाणं पंचण्हं पंडवाणं।' अंत० १ वर्ग० १ अ०।

जुय- पुं० *[यूप]*
युगे, यूपा युगास्तेषां सहस्रम्। कल्प० ५ क्षण०। पण्हा०।
स्तम्भविशेषे, जंबू० २ वक्ष०।
यज्ञस्तम्भे, जंबू०३ वक्ष०। उत्त०।
सामुद्रिकशास्त्रोक्ते पुरुषस्य करचरणस्थे प्रशस्तलक्षणभेदे, । जंबू० २ वक्ष०।

जुय- न० *[द्यूत]*
क्रीडाविशेषे, उव०। ठा०। उत्त०।
'अणुक्कमं सो जूयं खेल्लउ।' आव०म० १ अ०। उत्त०।
तदात्मके द्वासप्ततिकलाऽन्तर्गते कलाभेदे, नाया०१ श्रु०१ अ०। जंबू०। सम०।

जूयखलय- न० *[द्युतखलक]*
द्यूतस्थण्डिले, नाया०१ श्रु०२ अ०।

जूयग- पुं० *[यूपक]*
सन्ध्याप्रभा चन्द्रप्रभा च यद्युगपद् भवतस्तद् 'जूयगो त्ति' भणितम्। सन्ध्याप्रभाचन्द्रप्रभयोर्मिश्रत्वे, तदात्मके आन्तरिक्षेऽस्वाध्यायभेदे च। 'दसविहे अंतलिक्खए असज्झाइए पण्णत्ते। तं जहा–उक्कावाए, दिसिदाहे, गज्जिए, विज्जुए, निग्घाए, जूयए, जक्खालित्तए, धूमिए, महिए, रज्जु-ग्घाए।' ठा०१० ठा०।
शुक्लपक्षप्रतिपदाऽऽदिदिनत्रयं यावद्यैः सन्ध्याच्छेदा आव्रियन्ते ते यूपका इति। भग०७ श०३ उ०। आव०।
पश्चिमस्यां दिशि स्थिते स्वनामख्याते महापाताले, । ठा० ४ ठा० २ उ०।

जूयगर- त्रि० *[द्यूतकर]*
पाशकाऽऽदिक्रीडाकारके। पण्हा०।

जूयगार- त्रि० *[द्यूतकार]*
द्यूतं करोति। पाशकाऽऽदिक्रीडाकारके। पण्हा०।

जूयचिइ- स्त्री० *[यूचपिति]*
यज्ञेषु यूपचयने, उव०।

जूयचिइ- स्त्री० *[द्यूतचिति]*
द्यूतानि क्रीडाविशेषास्तेषां चितिः। द्यूत वचने, उव०।

जूयप्पमाय- पुं० *[द्यूतप्रमाद]*
द्यूतं प्रतीतं, तदपि प्रमाद एव द्यूतप्रमादः। प्रमादभेदे, ।ठा०। 'द्यूताऽऽसक्तस्य सच्चित्तं, धनं कामाः सुचेष्टितम्। नइयन्त्येव परं शीर्षं, नामापि च विनश्यति'। ठा० ६ ठा०।

जूयप्पसंगि- त्रि० *[द्यूतप्रसङ्गिन्]*
द्यूताऽऽसक्ते, नाया०१ श्रु०२ अ०। आव०म०।

जूया- स्त्री० *[यूका]*
संस्वेदजे त्रीन्द्रियजीवविशेषे, आचा०१ श्रु०१ अ०६ उ०। पन्न०।
'लिक्खं वा जूयं वा'। आचा०२ श्रु०२ चू०।
अष्टलिक्षाऽऽत्मके प्रमाणभेदे, ठा०६ ठा०। अणुओ०।
'अट्ठलिक्खाओ सा एगा जूया।' भग० ६ श० ७ उ०। जंबू०। उत्त०। ज्यो०। नं०।

जूयासेज्जायरय- पुं० *[यूकाशय्यातरक]*
यूकानां स्थानदातरि, भग० १५ श०१ उ०।

जूर- धा० *[जूर]*
वयोहानौ, पश्चात्तापे, यथा वाऽयसो लोहस्याऽऽहर्त्ता अपान्तराले रूप्यादिलाभे सत्यपि दूरमानीतमिति कृत्वा नोज्झितवान्, पश्चात्स्वावस्थानाऽवाप्तावल्पलाभे सति जूरितवान्, पश्चात्तापं कृतवान्, एवं भवन्तोऽपि जूरयिष्यन्तीति।सूय०१ श्रु०३अ०४ उ०

जूरण-१ न० *[जूरण]*
वयोहानौ, सूय०२ श्रु०४ अ०।

जूरण-२ न० *[जूरण]*
गर्हणे, सूय०१ श्रु०१६ अ०।
पश्चात्तापे, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ०।

जूरावण- न० *[जूरण]*
शोकातिरेकाच्छरीरजीर्णताप्रापणायाम्, भग० ३ श० २ उ०।

जूवग- पुं० *[यूपक]*
'जूयग' शब्दार्थे, ठा० १० ठा०।

जूवचिइ- स्त्री० *[यूपचिति]*
'जूयचिइ' शब्दार्थे, उव०।

जूस- पुं० *[जूष]* न०।
मुद्गतण्डूलजीरककटुभाण्डाऽऽदिरसाऽऽत्मकेव्यञ्जनभेदे, ठा० ३ ठा० १ उ०। सूर०। चंद०। भग० । पण्हा० जूषः। औघ० ।

जूसणा- स्त्री० *[जूषणा]*
सेवायाम्, उव०।

जूसणा- स्त्री० *[जोषणा]*
सेवनायाम्, ठा०४ ठा०३ उ०। सूय०।

जूसिय- त्रि० *[जुष्ट]*
सेविते, ठा०४ ठा०३ उ०।

जूसिय- त्रि० *[जोषित]*
सेविते, सूय०२ श्रु०७ अ०।

जूह- न० *[यूथ]*
यूथं समूह इति। ठा० १० ठा०। उत्त०।

जूहमल्लवाइ- पुं० *[यूथमल्लवादिन्]*
वादिविशेषे, कल्प०६ क्षण।

जूहवइ- पुं० *[यूथपति]*
यूथस्वामिनि, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

जूहाहिव- पुं० *[यूथाधिप]*
यूथस्वामिनि, आव०म०१ अ० ।

जूहाहिवइ- पुं० *[यूथाधिपति]*
यूथस्य चतुर्विधसंघस्याधिपतिः । यूथस्वामिनि, उत्त०११ अ० ।

जूहिय- त्रि० *[यूथिक]*
'यूथभवे, पुव्वजूहियट्ठाणाणि वा हयजूहियट्ठाणाणि वा गय-जूहियट्ठाणाणि वा ।' आचा० २ श्रु०२ चू०

जूहिया- स्त्री० *[यूथिका]*
पुष्प-प्रधाने गुल्माऽऽत्मके वनस्पतिविशेषे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० । पन्न० । रा० । जंबू० ।
'जूहियाकुसुमेइ वा ।' आव०म० १ अ० ।

जूहियापुड- न० *[यूथिकापुट]*
यूथिकायाः पुटं पत्राऽऽदिभयं तद्भाजनं यूथिकापुटम् । यूथिका पुष्पस्य पत्राऽऽदिभये भाजने, नाया०१ श्रु०१७ अ० । आव०म० ।

जूहियामंडवग- पुं० *[यूथिकामण्डपक]*
यूथिका वनस्पतिविशेषः, तन्मयो मण्डपकः यूथिकामण्डपकः । यूथिकामये मण्डपे, जीवा० ३ प्रति० । जंबू० ।

जे- अव्य० *[जे]*
पादपूरणे, बुह०१ उ० । वव० । तं० ।
'जे' इति निपातः पादपूरणार्थः । एते पादपूरणे प्रयोक्तव्या इति वृत्तिः । आव०म०१ पण्हा० । नाया० ।
वाक्यालङ्कारे, जे इति निपातो वाक्यालङ्कारार्थ इति । विशे० ।
'जे त्ति खलु णिद्देसे' जे इति । निसि० १ उ० ।
य इत्यस्य स्थानेऽपि 'जे' इति । कल्प० १ क्षण० ।

जेट्ठ- त्रि० *[ज्येष्ठ]*
वृद्ध–इष्टनिज्यादेशः । भग०१ श०१ उ० । जंबू० । सूर० । उत्त० । चंद० । अणुओ० ।
यो यस्याऽऽदौ स तस्य ज्येष्ठः । यथा–द्विकस्यैको ज्येष्ठः, त्रिकस्य त्वेककोऽनुज्येष्ठः, चतुष्काऽऽदीनां तु स एव ज्येष्ठनुज्येष्ठः । एवं त्रिकस्य द्विको ज्येष्ठः, स एव चतुष्कस्यानुज्येष्ठः, पञ्चकाऽऽदीनां तु स एव ज्येष्ठाऽनुज्येष्ठ इति । अणुओ० । विशे० । आव०म० ।
अतिवृद्धे, 'कणिट्ठ मज्झिमजेट्ठा धितिसंघयणेण उवसिट्ठा ।' ज्येष्ठमतिशयवृद्धम्, उत्कृष्टमित्यर्थः । उत्त० ५ अ० ।

जेट्ठकप्प- *[ज्येष्ठकल्प]*
कल्पभेदे, ज्येष्ठो रत्नाधिकः, स एव कल्पो वृद्धलघुत्वव्यवहारो यत्र स ज्येष्ठ कल्पः । कल्पभेदे, कल्प०१ क्षण० ।

जेट्ठज्ज- पुं० *[ज्येष्ठार्य]*
प्रथमे आर्ये, निसि०१ उ० ।

जेट्ठमहाजण- पुं० *[ज्येष्ठमहाजन]*
ज्येष्ठार्यसाधुसमुदाये, बुह०१ उ० ।

जेट्ठा-१ स्त्री० *[ज्येष्ठा]*
ज्येष्ठभगिन्याम्, वयोज्येष्ठायाम्, ज्येष्ठस्य पत्न्याम्, गङ्गायाम्, अलक्ष्याम्, अश्वन्यवधिकेऽष्टादशे इन्द्रदेवताके नक्षत्रे, चंद० । ज्यो० । ठा० । अणुओ० । आव० ।

जेट्ठा-२ स्त्री० *[ज्येष्ठा]*
'जेट्ठाणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते ।' सम०१ सम० । ठा० ।

जेट्ठा-३ स्त्री० *[ज्येष्ठा]*
भगवतो महावीरस्य स्वनामख्यातायां दुहितारि, तस्याश्च ज्येष्ठिति वा सुदर्शनेति वाऽनवद्याङ्गीति वा नामेति । विशे०

जेट्ठा-४ स्त्री० *[ज्येष्ठा]*
वैशालीनगरनृपतेश्चेटकस्य स्वनामख्यातायां दुहितरि, सा च 'जेट्ठा कुंडग्गामे वद्धमाणसामिणो नंदिवद्धणस्स दिण्ण त्ति' । आव०चू० ४ अ० ।
शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकुलसम्भूतवैशालिकचेटक पुत्री । *आव०*

जेट्ठाणुजेट्ठ- त्रि० *[ज्येष्ठानुज्येष्ठ]*
चतुष्काद्यपेक्षया प्रथमे, आव०म०१ अ० । अणुओ० । विशे० ।

जेट्ठामूल- पुं० *[ज्येष्ठामूल]*
ज्येष्ठा, मूलं वा पौर्णमास्यां यत्र स्यात्स ज्येष्ठामूलो मासः । ज्येष्ठ-मासे, 'गिम्हकालसमयम्मि जेट्ठामूलम्मि मासम्मि ।उव० । ओह०

जेट्ठामूली- स्त्री० *[ज्येष्ठामूली]*
ज्येष्ठपूर्णमास्याम्, सूर० १० पाहु० ।जंबू० । चंद० ।

जेट्ठोवग्गह- पुं० *[ज्येष्ठावग्रह]*
पर्युषणायाम्, निसि०१० उ० ।

जेण- अव्य० *[यत्र]*
यस्मिन्नित्यर्थे, 'जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता ।' यत्र कामदेवः श्रमणोपासकस्तत्रोपागच्छति स्म । उवा० २ अ० ।

जेणसासण- न० *[जैनशासन]*
जिनोदिते शास्त्रे, 'समस्तवस्तुविस्तारे, विसर्पत्तैलवज्जले । जीयाच्छ्रीशासनं जैनं, धीदीपोहीप्तिवर्द्धनम् ।। उत्त०१ अ० ।

जेणिंदवागरण- न० *[जैनेन्द्रव्याकरण]*
व्याकरणभेदे, कल्प०१ क्षण० ।

जेमावण- न० *[जेमापन]* भो
जनकारणे, भग०११ श०११ उ० ।

जेमिणि- पुं० *[जैमिनि]*
अन्यतीर्थिके मुनिभेदे, विशे० । सूय० ।
जैमिनिश्चिरतरकालभावी पटुप्रज्ञः सम्यग्वेदार्थस्य परिज्ञाताऽ-ऽसीत् । नं० ।

जेय- त्रि० *[जेय]*
जेतव्ये, 'कहं णु जिच्चमेलिक्खं, जिच्चमाणा न संविदे। आर्षत्वाद् जीयते हार्यते अतिरौद्रेरिन्द्रियाऽऽदिभिरात्मा तदिति जेयं, तच्चेह प्रक्रमान्मानुष्यगतिलक्षणम्। उत्त०७ अ०।

जेया- त्रि० *[जेतृ]*
जयकर्तरि, जेता कर्मरिपूणामा भग०२० श०२ उ०।
सूरं भण्णइ अप्पाणं, जाव जेयं न पस्सइ। सूय०१श्रु०३अ०१ उ०

जेहिल- पुं० *[जेहिल]*
वसिष्ठगोत्रोत्पन्ने आर्यनागस्य शिष्ये स्वनामख्याते स्थविरे, 'जेहिलं च वासिट्ठं।' कल्प०८ क्षण०।
'थेरस्स णं अज्जनागस्स गोयमसगुत्तस्स अज्जजेहिले थेरे अंते वासी वासिट्ठसगुत्ते।' कल्प०८ क्षण०।

जोइ-१ पुं० *[ज्योतिस्]*
सूर्ये, अग्नौ, आच०।
ज्योतिषाऽग्निना। आचा०२श्रु०१६अ० ।दश० ।ठा० ।भग० ।सूय०
'सप्पी जहा पडियं जोइमज्झे।' सूय०१ श्रु०१३ अ०। ठा०
'किं माहणा जोइसमारभंता।' उत्त०१६ अ०।
ज्वलदग्नौ, ज्योतिष एवाऽऽद्याधारो ज्वलदग्निः। आह च चूर्णि-कृत्–'जोइ त्ति मल्लगाइट्ठिओ अगणी जलंतो त्ति।' नं०।
ज्योतिषा प्रदीपाऽऽदिनाऽपि सह वर्तमानो न पश्यति। सूय० १ श्रु०१२ अ०।
'दुविहो य होइ जोई, असव्वराई य सव्वराई य। निसि०१६ उ०।
ज्योतिरग्निकयोद्दीप्तं, तद् द्विविधम्, असार्वरात्रिकम्- कियता-मपि रात्रिं यत् प्रज्वलित। तद्विपरितं सार्वरात्रिकम्। उभयोरपि तिष्ठतां चतुर्लघुकाः। बुह० २ उ०।

जोइ-२ पुं० *[ज्योतिस्]*
स्वर्गे, विशे०। आव०म०।

जोइ-३ पुं० *[ज्योतिस्]*
ज्योतिरग्निः, तत्कार्यकारिणी कल्पवृक्षभेदे, सम०१० सम०।

जोइ-४ पुं० *[ज्योतिस्]*
ज्योतिरिव ज्योतिः। सम्यग्ज्ञाने, आदित्याऽऽदिप्रकाशे, ठा०४ ठा०३ उ०। सूय०।
ज्योतिरेव ज्योतिः ।उपार्जितज्ञाने, प्रसिद्धिं प्राप्ते, ठा०४ ठा०३ उ०

जोइ-५ पुं० *[ज्योतिस्]*
ग्रहनक्षत्रतारकाऽऽदिके, चंद०।
ज्योतीषिं ग्रहनक्षत्रतारका इति। चंद०१ पाहु०। आव०। पण्हा०
ग्रहचन्द्रनक्षत्रतारकाणां ज्योतिषां ज्योतिष्कलक्षणे विमान-विशेषे, सम०।

जोइ-६ पुं० *[ज्योतिस्]*
तत्प्रतिपादके ज्योतिषामयने शास्त्रभेदे, निर० ३ वर्ग०३ अ०।

जोइ-७ पुं० *[ज्योतिस्]*
तद्रूपे द्वासप्ततिकलाऽन्तर्गतै कलाभेदे च। कल्प०७ क्षण०।

जोइ-८ पुं० *[ज्योतिस्]*
सत्कर्मकारितयोज्वलस्वभावे च। त्रि०। ठा०४ ठा०३ उ०।

जोइ-९ पुं० *[योगिन्]*
योगोऽस्य विद्यते इति योगीः। नं०।
योगो धर्मः शुक्लध्यानलक्षणः स येषां विद्यते इति योगिनः। साधौ आव० ४ अ०।

जोइअंग- पुं० *[ज्योतिरङ्ग]*
ज्योतिरग्निः तत्र च सुषमसुषमायामग्नेरभावाद् ज्योतिरवयवस्तु सौम्यप्रकाशमिमिति भावः। तत्कारणत्वाज्ज्योतिरङ्ग। सुषमसुषमा-भवे ज्योतिषिके कल्पवृक्षभेदे, ठा० १० ठा०।
ज्योतिषिकाः सूर्यमण्डलमिव स्वतेजसा सर्वमप्यभासयन्तः सन्तीति। तं०।

जोइउवगूढ- त्रि० *[ज्योतिरूपगूढ]*
ज्योतिषाऽग्निनोपगूढः समालिङ्गितः। अग्निनोपगूढे जतुकुम्भे, 'जोइउवगूढे।' सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ०।

जोइक्ख- पुं० *[देशी]*
दीपे, 'जोइक्ख' शब्दश्च देश्यो दीपे वर्त्तते। दे०ना०।
'जोइक्खो' नाम दीपः। 'जोइक्खं तह च्छाइल्लयं च दीवं मुणेज्जाहि।' वव० ७ उ०।

जोइजसा- स्त्री० *[ज्योतिर्यशस]*
कौशाम्बीनगरस्थायां स्वनामख्यातायां वत्सपालिकायाम्, आव०४ अ०।

जोइट्ठाण- न० *[ज्योतिःस्थान]*
अग्निस्थाने, नं०।
'के ते जोई के य ते जोइट्ठाणा।' उत्त०।
ज्योतिःस्थानं यत्र ज्योतिर्निधीयते। उत्त० १२ अ०।

जोइबल- त्रि० *[ज्योतिर्बल]*
ज्योतिर्ज्ञानं बलं यस्य, आदित्याऽऽदिप्रकाशो वा ज्योतिः, तदेव तत्र वा बलं यस्य स तथा। सदाचारवति ज्ञानवति, दिनचारिणि च। ठा० ४ ठा० ३ उ०।

जोइबलपज्जण- त्रि० *[ज्योतिर्बलप्रज्वलन]*
ज्योतिर्बलेन ज्ञानबलेन प्रकाशबलेन वा प्रज्वलित दर्पितो भवत्यवष्टम्भं करोति यः स तथा। ज्ञानवति, प्रकाशचारिणि च। ठा० ४ ठा० ३ उ०।

जोइबलपरजण- त्रि० *[ज्योतिर्बलप्ररजन]*
ज्योतिः सम्यग् ज्ञानम्, आदित्याऽऽदिप्रकाशो वा ज्योतिः, तदेव तत्र वा बलं यस्य स तथा। सदाचारवृत्ति, दिनचारिणि च। ठा० ४ ठा० ३ उ०।

जोइबलपलज्जण- त्रि० *[ज्योतिर्बलप्रलज्जन]*
ज्योतिर्बलेन ज्ञानबलेन प्रकाशबलेन वा संचरन् प्रलज्जते इति ज्योतिर्बलप्रलज्जनः। मिथ्याज्ञानिनि, अन्धकारचारिणि च। ठा० ४ ठा० ३ उ०।

जोइभंड- न० *[ज्योतिर्भाण्ड]*
अग्निभाजने, 'जोइभंडोवरागोविव मुहरागविरागाओ'। तं०।

जोइभूय- त्रि० *[ज्योतिर्भूत]*
ज्योतिर्मये जाते, 'तत्तं समजोइभूयं' समा तुल्या ज्योतिषा बह्निना भूता जाता या सा तथा। विपा० १ श्रु०४ अ०। ठा०। ज्योतिर्भूतं यदर्थप्रकाशकतया चन्द्राऽऽदित्यप्रदीपकल्पम्। सूय०१ श्रु०१२ अ०।

जोइमंत- पुं० *[ज्योतिष्मत्]*
तैलविधानं तिलाऽतसीसर्षपेङ्गु दीपज्योतिष्मतीकरञ्जाऽऽदिभिः इति। आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ०।

जोइय- त्रि० *[यौगिक]*
शब्दभेदे, पण्हा०।
यौगिकं यदेतेषामेव नामाऽऽख्यातोपसर्गतद्धितसमाससन्धिपदा-नामेव द्व्यादिसंयोगवद् यथोपकरोति सेनयाऽभियात्यभिषेणय-तीति। पण्हा०२ अ०।

जोइय- त्रि० *[योजित]*
संबन्धिते, उव०। वव०।

जोइस-१ त्रि० *[ज्योतिष]*
ज्योतिराधिकृत्य कृतो ग्रन्थः, निर०
ज्योतिः शास्त्राऽऽत्मके वेदाङ्गभेदे, आव० ३ अ०। उत्त०।

जोइस-२ त्रि० *[ज्योतिष]*
ज्योतिश्चक्रे, कल्प० १ क्षण०।
'जे गहा जोइसम्मि चारं चरंति।' पन्न०३ पद।

जोइस-३ त्रि० *[ज्योतिष]*
ज्योतिष्कलक्षणे विमानविशेषे, सम०।
नक्षत्रे, दे०ना०३ वर्ग।

जोइस-४ पुं० *[ज्यौतिष]*
ज्योतिश्चक्रे भवा ज्यौतिषाः। ज्योतिश्चक्रस्थिते सूर्याऽऽदिके देवभेदे, पुं०। नाया०।

जोइसंगविउ- त्रि० *[ज्योतिषाङ्गविद्]*
ज्योतिषं ज्योतिष्कं ज्योतिः शास्त्रमङ्गानि च विदन्ति ये ते ज्योतिषाङ्गविदः। ज्योतिःशास्त्रस्य, शिक्षाऽऽद्यङ्गानां च वेत्तरि, उत्त० २ अ०।

जोइसंचाल- पुं० *[ज्योतिःसंचाल]*
ज्योतिषः तारकरूपस्य संचालः। 'तारकाणं तिहिं ठाणेहिं तारा-रूवे चरेज्जा।' इत्यादिनां सूत्रेण प्रतिपादिते संचालने, सम०३।

जोइसंत- पुं० *[ज्योतिषान्त]*
ज्योतिश्चक्रस्य पर्यन्ते, सम०।

जोइसकरंडय- न० *[ज्योतिष्करण्डक]*
सूर्यप्रज्ञप्ति उद्धृते ज्योतिषां प्रतिपादके प्रकरणग्रन्थभेदे, ज्यो०।

जोइसगणराय- पुं० *[ज्योतिर्गणराज]*
ज्योतीषि ग्रहनक्षत्रतारकाणि तेषां गणः समूहस्तस्य राजाऽ-धिपतिर्ज्योतिर्गणराजः। चन्द्रे, सूर्ये च। चंद० १ पाहु०। ।

जोइसचक्क- न० *[ज्योतिश्चक्र]*
चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्राऽऽत्मके ज्योतिषां चक्रे, ज्यो० १ पाहु०।
'एक्कार एक्कवीसा, सयएक्कारा हिया य एक्कारा। मेरु अलोगा-वाहे, जोइसचक्कं चरइ ठाइ'। सम० ११ सम०।

जोइसपह-१ पुं० *[ज्योतिष्पथ]*
ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणां ज्योतिषां ज्योतिष्कलक्षणविमानविशे-षाणां, ज्योतिषो वा दीपाऽऽद्यग्रेः पन्था ज्योतिष्पथः। ज्योतिष्क देवानां मार्गे, अग्नेमार्गे च०। सम०

जोइसपह-२ त्रि० *[ज्योतिष्प्रभ]*
ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणां ज्योतिषां ज्योतिष्कलक्षणविमाना विशेषाणां, ज्योतिषो वा दीपाऽऽद्यग्रेः प्रभा प्रकाशो यस्मिन्। ज्योतिष्कदेवसदृशप्रभे, अग्निसदृशप्रभे च०। सम०।

जोइसमुहमंडग- पुं० *[ज्योतिषमुखमण्डक]*
सूर्ये, कल्प० १ क्षण०।

जोइसराय- पुं० *[ज्योतिष्कराज]*
ज्योतीषिं ग्रहनक्षत्रतारकाणि तेषां राजाऽधिपतिर्ज्योतिष्कराजः। चन्द्रे, सूर्ये च। चंद०।
ज्योतिष्कराजस्य चन्द्रमसः। चंद०१ पाहु०। । ठा०। सूर०।

जोइसामयण- न० *[ज्योतिषामयन]*
ज्योतिःशास्त्राऽऽत्मके वेदाङ्गभेदे उव०। आव०चू०। कल्प०। अणुओ०।
ज्योतिषामयनंज्योतिः शास्त्रम्। *उव०*।

जोइसालय- पुं० *[ज्योतिरालय]*
ज्योतिरालयो गृहं येषां ते ज्योतिरालयाः। ज्योतिष्कदेवेषु, 'पंचहा जोइसालया।' उत्त० ३६ अ०।

जोइसिंद- पुं० *[ज्योतिष्केन्द्र]*
सूर्ये, चन्द्रे च। ठा० ६ ठा०।
'चंदिमसूरिया य एत्थ दुवे जोइसिंदा जोइसियरायाणो परिवसंति।' चंद० १ पाहु०। ।

जोइसिण- पुं० *[ज्योत्स्न]*
ज्योत्स्नाऽन्विते शुक्ले पक्षे, ज्यो० ४ पाहु०।

जोइसिणा- स्त्री० *[ज्योत्स्ना]*
कौमुद्यां, चन्द्रकिरणे च। ठा० २ ठा० ४ उ०।

जोइसिणापक्ख- पुं० *[ज्योत्स्नापक्ष]*
ज्योत्स्नाप्रधानः पक्षो ज्योत्स्नापक्षः। शुक्लपक्षे, चंद० १५ पाहु०। । सूर० १५ पाहु०।

जोइसिणाभा- स्त्री० *[ज्योत्स्नाभा]*
चन्द्रस्य स्वनामख्यातायामग्रमहिष्याम्, भग० १० श० ५ उ०। ज्यो०। ठा०। सूर०। चंद०।

जोइसिय- पुं० *[ज्योतिषिक]*
सूर्याऽऽदिके ज्योतिश्चक्रस्थिते देवभेदे, पन्न०२ पद०।
उत्तरकुरुषु भवे स्वनामख्याते द्रुमगणे, तत्र प्रदेशे बहवो ज्योतिषिका नाम द्रुमगणाः। जीवा०३ प्रति०।

जोइसिय- पुं० *[ज्योतिष्क]*
द्योतन्ते इति ज्योतीषि विमानानि, तन्निवासिनो ज्योतिष्काः। उत्त०२ अ०।
ज्योतिषु नक्षत्रेषु भवा ज्योतिष्काः, शब्दव्युत्पत्तिरेवेयं, प्रवृत्ति-निमित्ताऽऽश्रवणात्तु चन्द्राऽऽदयो ज्योतिष्का इति। ठा०२ ठा०३ उ०। सूय० । नाया०। चंद०।
गणितप्रतिपादके ज्योतिःशास्त्रे च। सूय०१ श्रु० १ अ०४ उ०।

जोइसिय- पुं० *[ज्यौतिष्क]*
ज्योतिष्कदेवानां निवासभूते देवलोकभेदे, भग० ५ श० १० उ०। ज्योतीषि विमानविशेषाः, तेषु भवा ज्यौतिष्काः। ज्योतिश्चक्रभवे देवभेदे, ठा०५ ठा०१ उ०।

जोइसियदेवित्थी- स्त्री० *[ज्योतिष्कदेवस्त्री]*
चन्द्राऽऽदिज्योतिष्कदेवानामग्रमहिष्याम्, जीवा०।

जोइसियमंडल- न० *[ज्योतिष्कमण्डल]*
चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रताराणां मण्डले, जंबू०७ वक्ष०।

जोइसियराय- पुं० *[ज्योतिष्कराज]*
चन्द्रे, सूर्ये च। 'चंदसूरिया य एत्थ दुवे जोइसिंदा जोइसिय-रायाणो परिवसंति।' पन्न०२ पद०। ठा०। सूर०।

जोइसियविमाण- न० *[ज्योतिष्कविमान]*
चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रताराणां विमाने, 'एत्थ णं जोइसियाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा हवंति।' पन्न० २ पद०।

जोइस्सर-१ पुं० *[योगीश्वर]*
योगो धर्मः शुक्लध्यानलक्षणः, स येषां विद्यते इति योगिनः साधवः, तैरीश्वरः सदुपदेशेन तेषां प्रवृत्तेस्तत्संबन्धाऽऽदिति, तेषां वा ईश्वरो योगीश्वरः। प्रभुरित्यनर्थान्तरम्। योगिनां प्रभौ, आव०४ अ०।

जोइस्सर-२ पुं० *[योगेश्वर]*
युज्यन्त इति योगा मनोवाक्कायव्यापारलक्षणाः, तैरीश्वरः प्रधानो योगेश्वरः। योगप्रधाने, आव० ४ अ०

जोइस्सर-३ त्रि० *[योगिस्मर्य]*
योगिनां चिन्तनीये, आव० ४ अ०।

जोईरस- न० *[ज्योतिरस]*
रत्नभेदे, रा०। नाया०। आव०म०। ठा०।
ज्योतीरसं नाम रत्नम्। जीवा०३ प्रति०।

जोईरसमय- त्रि० *[ज्योतीरसमय]*
ज्योतीरसाऽऽख्यरत्नाऽऽत्मके, 'जोईरसमया वंसा'। 'ज्योतीरसं नाम रत्नं तन्मया वंशाः। रा०।

जोग- पुं० *[योग]*
योजनं योगः। बन्धे, संबन्धे, बुह० ६ उ०। आतु० । ठा०। पण्हा०। विशे०।
अप्राप्तज्ञानाऽऽदिप्रापणे, कल्प०१ क्षण०।
उपायोपेयभावलक्षणः। अवसरलक्षणः। योग्यः। *ठा० १*।
योगो-लब्धस्य परिपालनम्। *नाया०*
आकाशगमनादिफलो द्रव्यसङ्घातः। *पिण्ड०*।
मनोवाक्कायव्यापारलक्षणः धर्मशुक्लध्यानलक्षणो वा। *आव०* ।

जोगंधरायण- पुं० *[यौगन्धरायण]*
उदायननृपतेः स्वनामख्यातेऽमात्ये, 'न हरामि नृपन्यार्थे, नाहं यौगन्धरायणः।' आव० ४ अ०। आव०चू०।

जोगक्खेम- न० *[योगक्षेम]*
अलभ्यलाभचिन्तासहिते लब्धपरिरक्षणे जोगक्खेमं वट्टमाणा पडिवहंति।' नाया०१ श्रु०५ अ०। रा०।

जोगक्खेमपय- न० *[योगक्षेमपद]*
योगक्षेमाय पद्यते गम्यते येनार्थस्तत् पदं योगक्षेमपदम्। योगक्षेमार्थके पदे, 'अणुत्तरं जोगक्खेमपयं लंभिए समाणे।' सूय० २ श्रु० ७ अ०।

जोगचलणा- स्त्री० *[योगचलना]*
चलनाभेदे, भग०१७ श०३ उ०।

जोगजुत्तया- स्त्री० *[योगयुक्तता]*
अनगारगुणभेदे, 'जोगम्मि जुत्तता आव० ४ अ०। पण्हा०।

जोगणिओग- पुं० *[योगनियोग]*
कार्मणवशीकरणाऽऽदिप्रकारे, योग नियोगैः कार्मणवशीकरणा-ऽऽदिप्रकारैरिति। तं०।

जोगणिग्गह- पुं० *[योगनिग्रह]*
कायोत्सर्गे, उस्सग्गो त्ति वा जोगनिग्गहो त्ति वा। आव०चू०५अ०

जोगणिरोह- पुं० *[योगनिरोध]*
योगाश्चौदारिकाऽऽदिशरीरसंयोगसमुत्था आत्मपरिणामविशेव्या-पारा एव, तेषां निरोधनं निरोधः प्रलयकरणम्, योगनिरोधः। मनोवाक्कायव्यापारप्रलयकरणे, स एव च जिनानां ध्यानम्।' जोगणिरोहो जिणाणं तु। आव० ४ अ०। आव०म०।

जोगणिव्वत्ति- स्त्री० *[योगनिर्वृति]*

योगनिष्पत्तौ, भग०१ श०१ उ०।

कइविहा णं भंते ! जोगणिव्वत्ती पण्णत्ता। गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता। तं जहा-मणजोगणिव्वत्ती, वइजोगणिव्वत्ती, काय-जोगनिव्वत्ती, एवं० जाव वेमाणिया जस्स जइविहो जोगो। भग० १९ श०८ उ०।

जोगत्तिय- न० *[योगत्रिक]*

कृतकारितानुमतिरूपे व्यापारत्रिके, दश ०१० अ०।

जोगपच्चक्खाण- न० *[योगप्रत्याख्यान]*

मनोवाक्कायानां व्यापारो योगः, तस्य प्रत्याख्यानं परिहारो योगप्रत्याख्यानम्। उत्त०२९ अ०।

प्राणातिपाताऽऽदिषु कृतकारितानुमतिलक्षणानां मनःप्रभृति-व्यापाराणां निरोधप्रतिज्ञाने, भग० १५ श० १ उ०।

जोगपडिक्कमण- न० *[योगप्रतिक्रमण]*

मनोवचनकायव्यापाराणामशोभनानां व्यावर्तनरूपे प्रतिक्रमण-भेदे , ठा० ५ ठा० ३ उ०।

जोगपरिणाम- पुं० *[योगपरिणाम]*

योग एव परिणामो योगपरिणामः। जीवपरिणामभेदे, स च मनोवाक्कायभेदात्त्रिधेति। ठा० ८ ठा०।

जोगपरिवुड्ढी– पुं० *[योगपरिवृद्धि]*

अभिगृहीतेतरतपसोर्वृद्धिः। *बृह०* ।

जोगपिंड- पुं० *[योगपिण्ड]*

योगादञ्जनाऽऽदेरवाप्तः पिण्डो योगपिण्डः। आचा० २ श्रु० १ अ० ९ उ०।

योगः पादप्रलेपनाऽऽदि तत्प्रयोगेण लब्धः पिण्डो । जीत०।

यदा मुग्धलोकान् सौभाग्याऽऽविलेपनराजवशीकरणाऽऽदितिल-केन जलस्थलमार्गोल्लङ्घन-सुभगदुर्भग-विधिमुपदिश्याऽऽहारं गृह्णाति, तदा योगपिण्डदोषः। इत्युक्तलक्षणे पञ्चदशे उत्पादना-दोषे, उत्त० २६ अ०। पिंड०। गच्छा०। ठा०।

जोगभंग- पुं० *[योगभङ्ग]*

श्रुतोपधानभङ्गे, स च द्विविधः सर्वभङ्गो, देशभङ्गश्च। वव०४ उ० निर० ।

जोगवं- त्रि० *[योगवत्]*

योजनं योगो व्यापारः तद्वान्, व्यापारवति, योगः समाधिः, सोऽस्यास्तीति योगवान्, समाधिमति, उत्त०११ अ०।

संयमाऽऽदियोगवति च। सूय० १ श्रु० २ अ०१ उ०।

जोगवाहि- पुं० *[योगवाहिन्]*

श्रुतोपधानकारिणि, ठा० १० ठा०।

योगेन समाधिना सर्वत्रानुत्सुकत्वलक्षणेन वहतीत्येवंशीलो योगवाही समाधिस्थायितरि, ठा० १० ठा०।

जोगसंगह– पुं० *[योगसंग्रह]*

युज्यन्त इति योगाः-मनोवाक्कायव्यापाराः, ते चाशुभ प्रतिक्रम-णात्प्रशस्ता एव गृह्यन्ते, तेषां शिष्याचार्यगतानामालोचना निर-पलापादिना प्रकारेण सङ्ग्रहणानि योगसङ्ग्रह। *आव०* ।

योगानां प्रशस्तव्यापाराणां सङ्ग्रहाः योगसङ्ग्रहाः। *पण्हा०* ।

योगसङ्ग्रहः-मनोवाक्कायव्यापारसङ्ग्रहः। *आव० ६६३*।

जोगसच्च- न० *[योगसत्य]*

मनोवाक्काययोगेषु सत्यं योगसत्यम्। उत्त० २९ अ०।

योगा मनोवाक्कायाः, तेषां सत्यमवितथत्वं योगसत्यम्। भग०१७ श०३ उ०।

मनःप्रभृतीनामवितथत्वरूपे सत्यभेदे, पण्हा०५ अ०।

योगतः संबन्धतः सत्यं योगसत्यम्। तथा दण्डयोगाद् दण्डः, छत्रयोगाच्छत्र एव उच्यते, इत्येवंरूपे सत्यभेदे । ठा०१० ठा०।

जोगसिद्ध- पुं० *[योगसिद्ध]*

योगेषु योगे वा सिद्धो योगसिद्धः। योगातिशयवति सिद्धभेदे, आव०म०।

जोगहाणि- त्रि० *[योगहानि]*

योगानां संयमव्यापाररूपाणां हानिः। संयमव्यापारहानौ, 'संवच्छरेणावि न तेसि आसी, जोगाण हाणी दुविहे वलम्मि।' वव० १ उ०।

जोगहीण- न० *[योगहीन]*

असम्यक्‌तपउपचारे श्रुतदोषभेदे, आव० ४ उ०।

जोगिय- त्रि० *[यौगिक]*

'जोइय' शब्दार्थे, पण्हा०२ अ०।

जोगिवुड्ढि- स्त्री० *[योगिवृद्धि]*

'जोइवुड्ढि' शब्दार्थे, तं०।

जोग्ग-१ त्रि० *[योग्य]*

अर्हे, 'अरिहो त्ति वा, जोग्गो त्ति वा एगट्ठं।' आव० चू०१ अ०।

योग्यमर्हमित्यनर्थान्तरम्। विशे०। आव०म०।

प्रभौ, 'पभु त्ति वा जोग्गो त्ति वा एगट्ठं।' निसि० २० उ०।

जोग्ग-२ त्रि० *[योग्य]*

उचिते, दश०१ अ०।

जोग्ग-३ त्रि० *[योग्य]*

घटमानके, अयोग्यरूपमघटमानकम्। सूय०२ श्रु०६ अ०।

जोग्गा- स्त्री० *[योग्या]*

योगमर्हति, गुणनिकायाम्, भग०११ श०११ उ०। उव०।

अभ्यासे, जंबू०३ वक्ष०।

'खुरली तु श्रमो योग्याऽभ्यासः' इति वचनात्। कल्प०३ क्षण०।

गर्भधारणसमर्थायां योनौ, तं०।

जोण- पुं० *[योन]*
अनार्यप्राये देशभेदे, नाया०।

जोणि-१ पुं०स्त्री० *[योनि]*
उत्पत्तिस्थाने, उत्त०३ अ०। सूय०।
उत्पत्तिहेतौ, पण्हा०१ अ०।

जोणि-२ पुं०स्त्री० *[योनि]*
युवन्ति तैजसकार्मणशरीरवन्तः सन्त औदारिकाऽऽदिशरीरयोग्य स्कन्धसमुदायेन मिश्रीभवन्ति जीवा यस्यां सा योनिः। भग०१० श०२ उ०।
जीवानामुत्पत्तिस्थानविशेषे, ठा० ७ ठा०। आचा०। पन्न०। नं०। सम०। पण्हा०।
असुमतामुत्पत्तिस्थानं योनिर्भणनीयेति। सूय०१ श्रु०१२ अ०।

जोणि-३ पुं०स्त्री० *[योनि]*
योषिदवाच्यदेशे, सा च स्मरकूपिका। अणुओ०।

जोणि-४ पुं०स्त्री० *[योनि]*
उपाये, ठा०३ ठा०३ उ०

जोणिघात- पुं० *[योनिघात]*
योनिविर्ध्वसे, निसि०४ उ०।

जोणिजम्मणणिक्खमण- न० *[योनिजन्मनिष्क्रमण]*
योग्या जन्मार्थान्निष्क्रमणे, कल्प० २ क्षण०।

जोणिपाहुड- न० *[योनिप्राभृत]*
जीवयोनिभेदस्वरूपप्रतिपादकेपूर्वगताऽधिकारविशेषे,बुह०१ उ०

जोणिप्पमुह- त्रि० *[योनिप्रमुख]*
योनिद्वारके, विपा० १ श्रु०१ अ०।
चउरासीइजोणिप्पमुहसयसहस्सा। सम० ८४ सम०।
योनिप्रमुखानि योनिप्रवाहाणि एकस्यामेव योनावनेकजातिकुल-संभवादिति। जीवा० ३ प्रति०।

जोणिभूय- त्रि० *[योनिभूत]*
योन्यवस्थे बीजाऽऽदौ, 'जोणिब्भुए बीए, जीवोऽवक्कमइ सो व अण्णो वा। आचा० । निर० १ अ० ५ ।
अत्र भूतशब्दोऽवस्थावचनः, योन्यवस्थे बीजे योनिपरिणाम-मजहतीत्यर्थः। आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ०।
बीजे योनिभूते योन्यवस्थां प्राप्ते योनिपरिणाममजहतीति भावः। बीजस्य हि द्विविधाऽवस्था। तद्यथा–योन्यवस्था, अयोन्यवस्था च। तत्र यदा बीजं योन्यवस्थां न जहाति, अथ चोज्झितं जन्तुना, तदा तद् योनिभूतमित्यभिधीयते। पन्न० १ पद। निसि०।

जोणिमुहणिप्फडिय- त्रि० *[योनिमुखनिस्फटित]*
स्मरमन्दिरतुण्डनिर्गते, तं०।

जोणिय- त्रि० *[योनिक]*
योनदेशोद्भवे, नाया० १ श्रु० १ अ०।

जोणिविहाण- न० *[योनिविधान]*
योनिभेदे, विपा० १ श्रु० १ अ०।

जोणिसंगह- पुं० *[योनिसंग्रह]*
योनिरुत्पत्तिहेतुर्जीवस्य तया संग्रहोऽनेके षामेकशब्दाभिलाप्यत्वं योनिसंग्रहः। भग०७ श०५ उ०
योनिभिरुत्पत्तिस्थानविशेषैर्जीवानां संग्रहो योनिसंग्रहः। योनि-प्रतिपादनद्वाराऽनेकेषां जीवानामेकशब्देन प्रतिपादने, ठा०।

जोणिसमुच्छेय- पुं० *[योनिसमुच्छेद]*
योनिविध्वंसे, 'एस जोणी जगाणं दिट्ठा न कप्पइ जोणिसमु-च्छेओ।' पण्हा० ५ अ०

जोण्ह- पुं० *[ज्योत्स्न]*
ज्योत्स्नाऽन्विते शुक्लपक्षे, ज्यो० ४ पाहु०। ।

जोत्त- न० *[योक्त्र]*
'सुकिरणतवणिज्जजोत्तकलियं' जंबू०३ वक्ष०।
'जोत्तलयकसप्पहारपादपण्हिजाणुं।' योक्त्रं यूपे वृषभसंयमन-मिति। पण्हा० ५ अ० । नाया०।

जोय- न० *[योक्त्र]*
'जोत्त' शब्दार्थे, जंबू० ३ वक्ष०।

जोयण- न० *[योजन]*
संबन्धने, पण्हा०१ अ०। उत्त०।
चतुर्गव्यूताऽऽत्मके अध्वमानविशेषे, जंबू०२ वक्ष०। ठा०।
'चउगाउए जोयणे पन्नत्ते।सम०१सम०।भग०।आव०म०। पन्न० अट्ठेव धणुसहस्सा, जोयणमाणं पमाणेणं।' ज्यो० २ पाहु०।

जोयणनीहारि- त्रि० *[योजननीहारिन्]*
योजनातिक्रामिणि, जोयणनीहारिणा सरेणं। योजनातिक्रामिणा शब्देन। उवा० २ अ०।
तीर्थकृतामेकविंशतितम अतिशयः। सम० ३४ सम०।

जोयणपरिमंडल- त्रि० *[योजनपरिमण्डल]*
योजनं योजनप्रमाणं परिमण्डलं, गुणप्रधानोऽयं निर्देशः, पारि-माण्डल्यं यस्य स योजनपरिमण्डलः। योजनप्रमाणपरि-माण्डल्योपेते, जोयणपरिमंडलं सुस्सरं घंटं तिक्खुत्तो उल्ला-लेमाणे। रा०।

जोयणा- स्त्री० *[योजना]*
संयोगकरणे, निसि०२ उ०।
'उत्तमं प्रणिपातेन, शूरं भेदेन योजयेत्। नीचमल्पप्रदानेन, सदृशं च पराक्रमैः'।। दश० ३ अ०।

जोयणिज्ज- त्रि० *[योजनीय]*
संबन्धनीये, निसि०१ उ०।

जोयत्तिय- न० *[जोगत्रिक]*
'जोगत्तिय' शब्दार्थे, दश० १० अ०।

जोव्वण- न० *[यौवन]*

'निरुवहयसरसजोव्वणकक्कसतरुणवयभावमुवगयाओ। निरुपहंत रोगाऽऽदिना अवाधितं सरसं च शृङ्गाररसोपेतं निरुपहतो वा स्वो रसो यत्र तत्तथाविधं यौवनं, तथा कर्कशोऽश्लयाङ्गतया यस्तरुणवयोभावस्तारुण्यं, तं चोपगता यास्तास्तथा।

इह च यौवनतरुणभावयोर्यद्यप्येकार्थता, तथापि सरसत्वाश्ल थाङ्गत्वलक्षणयोर्मनःशरीराश्रितयोः प्रधानतया विवक्षितयोर्धर्म- योराधारतया भेदेन विवक्षणाद् न पौनरुक्त्यमिति। उव०।

'जोव्वणेण य संपण्णे।' उत्त०२१ अ०।

यौवनं परमस्तरुणिमेति। पन्न० ३५ पद०।

'आषोडशाद् भवेद् बालस्ततस्तरुण उच्यते।

वृद्धः स्यात्सप्त-तेरुर्द्धम्, 'इत्युक्तलक्षणेऽवस्थाभेदे,'

अह जोव्वणं समणुपतो। यौवनं वयोविशेषलक्षणमिति। आव०म० १ अ०

'यौवनमुदग्रकाले, विदधाति विरूपकेऽपि लावण्यम्। दर्शयति पाक समये, निम्बफलस्यापि माधुर्यम्। दश०३ अ०।

वयोग्रहणेनैव यौवन्यगतत्वात्तदुपादानं प्राधान्यख्यापनार्थं, धर्मार्थकामानां तन्निबन्धनत्वात्सर्ववयसां यौवनं साधीयस्तदपि त्वरितंचातीति। उक्तं च–

'नइ वेगसमं चंचलं, च जीवियं जोव्वणं च कुसुमसमं।

सोक्खं च जंबू०

अणिच्चं, तिण्णि वि तुरमाणभोज्जाइं । आचा० १ श्रु० २ अ० १ उ० ।

जोव्वणकरण- न० *[यौवनकरण]*

कालकृतवयोऽवस्थाविशेषाऽऽत्मके रसायनाऽऽद्यापादितवयोऽ- वस्था विशेषाऽऽत्मके च करणभेदे, । सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ०।

जोव्वणकिड्डग- त्रि० *[यौवनक्रीडक]*

तारुण्यावस्थायां क्रीडाकर्तरि, तथा चोक्तम्–'पियपुत्तभाइ- किडगा, नत्तू किडगा य सयणकिडगा य। एते जोव्वणकिडगा, पच्छन्नपई महिलियाणं । सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ०।

जोव्वणग- न० *[यौवनक]*

यौवनमेव यौवनकम्। दशा० १० अ०।

यौवने, 'जोव्वणगमणुप्पत्ते।' आव०म० १ अ०।

जोव्वणगुण- पुं० *[यौवनगुण]*

युवतीनां प्रियभाषित्वाऽऽदिके गुणे, नाया० १ श्रु०१ अ०।

जोव्वणमद- पुं० *[यौवनमद]*

तारुण्यगर्वे, 'विहवावलेवनडिएहिं जाइं कीरंति जोव्वणमएण। वयपरिणामे सरियाइं ताइं हिअए खडुक्कंति।। सूय० १ श्रु० ३ अ० ४ उ०।

जोव्वणिया- स्त्री० *[यौवनिका]*

यौवने, रा०।

जोसंत- त्रि० *[जुषत्]*

सेवमाने, आचा० १ श्रु० ६ अ० ४ उ०।

जोसण- न० *[जोषण]*

सेवने, आचा० १ श्रु० ६ अ० ४ उ०। आव०।

जोसणा- स्त्री० *[जोषणा]*

प्रीतौ, सेवायां च। 'जुषी' प्रीतिसेवनयोरिति वचनात्। उव०। सम०।

जोसिय- त्रि० *[जुष्ट]*

सेविते, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

जोसियंग- न० *[योषदङ्ग]*

स्त्रीणासङ्गे, तथा चोक्तम्–

'कार्य्येऽपीषन्मतिमान्निरीक्षते योषिदङ्गमस्थिरया।

अस्निग्धया दृशाऽवज्ञया ह्यकुपितोऽपि कुपित इव।

सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ०।

जोसियाण- अव्य० *[जोषित्वा]*

प्रीतयित्वेत्यर्थे, वव० ७ उ०।

जोह- पुं० *[योध]*

युध्यति शत्रून् प्रतिसंहरतीति योधः। युद्धं कृत्वा शत्रूणां जेतरि, उत्त० १४ अ०।

शूरपुरुषे, योधानां शूरपुरुषाणाम्। ठा० १० ठा०।

ते च भटेभ्यो विशिष्टतराः सहस्रयोधाऽऽदयः। उव०। भग०। रा०। नाया०। सूय०।

अतिशयशौर्यवान्। *भग० ११५*।

जोहजुज्झसज्ज- त्रि० *[योधयुद्धसज्ज]*

योधानां युद्ध तन्निमित्तं सज्जः प्रगुणीभूतो यः स योधसज्जः। योधानां युद्धार्थं प्रगुणीभूते, जीवा० ३ प्रति०।

जोहट्ठाण- न० *[योधस्थान]*

आलीढाऽऽदिके युद्धकालभवे योधानामङ्गिविन्यासविशेषे, । ठा० १ ठा०।

तानि च–'लोयप्पवाए पंच ठाणाणि। तं जहा– आलीढं, पच्चालीढं, वइसाहं, मंडलं, समपादं।' आव०म०१ ।

'एयाणि पंच ठाणाणि लोयप्पवाएण सयणकरणछट्ठाणि त्ति।' आव०म० १ अ० । आव०चू०। उत्त०।

तथा च योधाऽऽदिस्थानप्रतिपादनार्थमाह–

आलीढेंपच्चलीढे, वेसाहे मंडले य समपाए । योधानां स्थानं पञ्चविधम्। तद्यथा–

आलीढं, प्रत्यालीढं, वैशाखं, मण्डलं, समपादं च।

एतैर्हिं पञ्चभिरपि स्थानैयोधा यथायोगं युध्यन्ते, तत एतानि

योधस्थानानीति। ववo १ उo।

‘अन्ने भणंति–एतेसिं चेव ठाणाणं जहासंभवं चलिय ठितो पासतो पिट्ठतो वा जुज्झति, तं छट्ठं चलियणामट्ठाणं ति।’ निसिo २o उo।

जोहा– पुंo *[योधा]*

भटेभ्यो विशिष्टतराः। सहस्रयोधादयः। *उवo २७*।

जोहिया- स्त्रीo *[योधिका]*

भुजपरिसर्प्पिणीभेदे, जीवाo २ प्रतिo।

ज-कारादि शब्द-परिभाषाः समाप्ताः

झ-कारादि शब्द-परिभाषाः

झ- पुंo *[झ]*

‘झ त्ति झाणस्स होइ निद्देसे।’ ध्यानस्य निर्देशे,आवoमo१ अo।

झंझ- पुंo *[झञ्झ]*

कलहविशेषे, उवo।

वारंवारं जल्प। *पिण्डo ९२*।

झंझकर- पुंo *[झञ्झकर]*

येन येन गणस्य भेदो भवति तत्कारिणि, येन गणस्य मनोदुःख-मुत्पद्यते तद्भाषिणि च। पण्हाo ८ अo। आवoचूo।

येन तेन गणस्य भेदो भवति तत्तत्करो, येन वा गणस्य मनोदुःख समुत्पद्यते तद्भाषी, अष्टादशमसमाधि-स्थानम्। *समo ३७*।

झंझकारीय- पुंo *[झञ्झकारीय]*

झञ्झकरे, ‘जेण गणस्स भेदो भवति, सव्वो वा गणो झंझविओ अत्थति, तारिसं भासइ, करेइ वा।’ आवo४ अo।

झंझपत्त- पुंo *[झञ्झप्राप्त]*

कलहं क्रोधं मायां वा प्राप्ते, सूयo १ श्रुo१३ अo।

झंझा-१ स्त्रीo *[झञ्झा]*

कलहे, बुहo३ उo।

क्रोधे, मायायाम्, सूत्र o१ श्रुo१३ उo।

झंझा-२ स्त्रीo *[झञ्झा]*

तृष्णायाम्, सूयo२ श्रुo२ अo२ उo।

लोभेच्छायाम्, आचाo१ श्रुo५ अo३ उo।

झंझा-३ स्त्रीo *[झञ्झा]*

विप्रकीर्णवचने, ठाo८ ठाo।

विप्रकीर्णा कोपविशेषाद्वचनपद्धतिः अणत्थ बहुप्पलावित्तं। *भगo ९२४*।

व्याकुलतायां च। इष्टविषयावाप्तौ रागझञ्झा। अनिष्टावाप्तौ च द्वेषझञ्झा। आचाo१ श्रुo ३ अo३ उo।

झंझाउर- त्रिo *[झञ्झाऽऽतुर]*

तृष्णाऽऽतुरे, सूयo२ श्रुo२ अo।

झंझावाय- पुंo *[झञ्झावात]*

अशुभे निष्ठुरे सवृष्टिके च वायौ, पन्नo o१ पादo। भगo।

यः सवृष्टिको वातः, अशुभनिष्ठुरो वा। *जीवाo* ।

झंझिय- त्रिo *[झञ्झित]*

बुभुक्षिते, नायाo१ श्रुo१ अo।

झज्झरिय- त्रिo *[झर्झरित]*

सतन्त्रीककरटिकाऽऽदिवाद्यशब्दवाते, ठाo१o ठाo।

झडिज्जंत- त्रिo *[झीर्य्यमाण]*

हीयमाने, ‘वासासु सीतवातेहिं झडिज्जंतो।’ आवo१ अo।

झय- पुं० *[ध्वज]*
चक्रसिंहाऽऽदिलाञ्छनोपेते, भग०९ श०३३ उ०।
चतुष्कोणाऽऽकारे वंशदण्डोपरिस्थिते वस्त्रखण्डे, उव०
चतुर्दशानामष्टमे स्वप्नभेदे, कल्प०।
सिंहगरुडादिरूपकोपलक्षिता बृहत्पट्टरूपा। *जंबू०* । *नाया०*।

झरग- पुं० *[ध्यातृ]*
ध्यायतीति ध्याता। ध्यानकर्त्तरि, 'भगणं करगं झरगं, पभावगं नाणदंसणगुणाणं।' तं०।

झरण- स्त्री० *[झरण]*
क्षरणे, वव०१ उ०।

झरणा- स्त्री० *[झरणा]*
क्षरणे, आव०म०१ अ०२ ।

झरेयव्व- त्रि० *[स्मर्त्तव्य]*
परिचेतव्ये, बुह०५ उ०।

झल्लरी-स्त्री० *[झल्लरी]*
उभयतो विस्तीर्णे चर्म्मावनद्धमुखे मध्ये सङ्क्षिप्ते ढक्काकारे वाद्यभेदे, आव०म० १ अ०१ । पन्न०। जीवा०।
अल्पोच्छ्रये महामुखे, । भग०९ श०३३ उ० । चतुरङ्गुलनालिके करटिसदृशे वलयाकारे आतोद्यविशेषे च। आचा० १ श्रु० १ अ० ५ उ०। आव०म०। कल्प०। रा०। उव०। नाया०। विशे०।

झल्लरीसंठिय- त्रि० *[झल्लरीसंस्थित]*
झल्लरीसंस्थानवति, अल्पोच्छ्रायत्वान्महाविस्तारत्वाच्च। तिर्यग् लोकक्षेत्रलोको झल्लरीसंस्थितः। भग०११ श०१० उ०। ठा०।

झवण- न० *[ध्यापन]*
उपशमश्रेण्यां कर्मानुदयलक्षणे विध्यापने, । आचा० १ श्रु०१ अ० १ उ०।

झवणा- स्त्री० *[क्षपणा]*
क्षपणाऽपचयो निर्जरा पापकर्मणामस्मादिति क्षपणा। विशे० 'पावाण खण त्ति' पाप कर्मक्षपणहेतुत्वात्क्षपणा। भावाध्ययने सामायिकाऽऽदिश्रुतविशेषे, अणुओ०। ठा०।

झस- पुं० *[झष]*
मत्स्ये, जीवा०३ प्रति०। तं०। जंबू०। पण्हा०। विशे०। नाया०।
मीनराशौ च। तापे, नं०।
'झसविहगसुजायपीणकुच्छी। जीवा०३ प्रति०। जंबू०।

झाअइ- स्त्री० *[ध्याति]*
ध्याने, ठा०६ ठा०। आव०।

झाइय- त्रि० *[ध्यात]*
अनुप्रेक्षिते, ठा०३ ठा०४ उ०।

झाइयव्व- त्रि० *[ध्यातव्य]*
ध्येये, आव०४ अ०।

झाडन- न० *[झाटन]*
झोषे, ठा०५ ठा०२ उ०।
प्रस्फोटने, ठा० ५ ठा०२ उ०।

झाण- न० *[ध्यान]*
'ध्यै' चिन्तायाम्। आव०चू०४ अ०।
चिन्तायाम् आव०चू०४ अ०।
परिणामस्थिरतायाम्, एकावलम्बनेन मनः स्थैर्ये,विशे०। सूय०।
योगनिरोधे, सम०१ सम०। पण्हा०। ठा०। गच्छा०। सूय०।
अभ्यन्तरतपभेदः। *भग०* ।
दृढमध्यवसानं, एकाग्रस्य चिन्तानिरोधश्च। *दश०* ।
चित्त-निरोधलक्षणं धर्मध्यानाधिकम्। *सूय०* ।
एकाग्रतालक्षणम्। आर्त्तरौद्रधर्म्मशुक्लाभिधानकम्। *पण्हा०*।

झाणंतर- न० *[ध्यानान्तर]*
अदृढाध्यवसायध्यानस्य चान्तरिकायाम्, बुह०१ उ०।

झाणंतरिया- स्त्री० *[ध्यानान्तरिका]*
ध्यानयोः शुक्लध्यानद्वितीयतृतीयभेदलक्षणयोरन्तरं मध्यं ध्यानान्तरम्, तदेव ध्यानान्तरिका ठा०९ ठा०।
अन्तरस्य विच्छेदस्य करणमन्तरिका, ध्यानस्यान्तरिका ध्यानान्तरिका। भग०५ श०४ उ०।
ध्यानस्य मध्य भागे, कल्प०६ क्षण०।
आरब्धध्यानस्य समाप्तावपूर्वस्यानारम्भणे, भग०५ श०४ उ०।
द्रव्याऽऽदीनामन्यतमध्यानवतो यदा चित्तमुत्पद्यतेसम्प्रति शेषाणां ध्यातव्यानां कतरद् ध्यायामीत्येवंविधे विमर्शे, बुह०।
अन्तरस्य-विच्छेदस्य करणमन्तरिका, अथवा अन्तरमेवान्तर्यं, ध्यानस्यान्तरिका ध्यानान्तरिकाआरब्धध्यानस्य समाप्तिरपूर्वस्यानारम्भणम्। *जंबू० १५०*।

झाणकोट्ठोवगय- पुं० *[ध्यानकोष्ठोपगत]*
ध्यानं-धर्मध्यानं, शुक्ल-ध्यानं च। तदेव कोष्ठः कुशूलो ध्यानकोष्ठः, तमुपगतो ध्यानकोष्ठोपगतः। यथा हि कोष्ठके धान्यं प्रक्षिप्तं विप्रसृतं भवति, एवं ध्यानतोऽविप्रकीर्णेन्द्रियान्तःकरणवृत्तौ, रा०। चंद०। भग०। जंबू०। सूर०। विपा० । उव०।
धर्मध्यानकोष्ठमनुप्रविश्येन्द्रियमनांस्यधिकृत्य संवृताऽऽत्मनि, नाया०१ श्रु०१ अ०। निर० । उव०।

झाणजुत्त- त्रि० *[ध्यानयुक्त]*
ध्यानं चित्तनिरोधः, तेन युक्तो यः स तथा। चित्तनिरोधवति, पण्हा०३ अ०।

झाणजोग- पुं० *[ध्यानयोग]*
चित्तनिरोधलक्षणे धर्मध्यानाऽऽदौ विशिष्टमनोवाक्कायव्यापारे, सूय०१ श्रु०८ अ०।

झाणज्झयण- न० *[ध्यानाध्ययन]*
ध्यानप्रतिपादके आवश्यकाध्ययने, आव०४ अ० ।
झाणवर- न० *[ध्यानवर]*
ध्यानश्रेष्ठे, सूय०१ श्रु०६ अ० ।
प्रधान-ध्याने, आव०४ अ० । पण्हा० ।
धर्मध्याने, आव०४ अ० ।
झाणविभत्ति- स्त्री० *[ध्यानविभक्ति]*
ध्यानान्यार्त्तध्यानऽऽदीनि, तेषां विभजनं विभक्तिर्यस्यां ग्रन्थ-पद्धतौ सा। उत्कालिकश्रुतविशेषे, नं० । पा० ।
झाणसंवरजोग- पुं० *[ध्यानसंवरयोग]*
ध्यानमेव संवरयोगो ध्यानसंवरयोगः। सम०३२ सम० ।
झाणसयग- न० *[ध्यानशतक]*
ध्यानप्रतिपादके गाथाशतके, 'पंचुत्तरेण गाहासएण झाणसयगं समुद्दिट्ठं'। आव० ४ अ० ।
झाणोवओगचित्त- त्रि० *[ध्यानोपयोगचित्त]*
ध्यानोपयोगे विशिष्टध्यानान्यासे चित्तं यस्य सः। विशिष्ट-ध्यानाभ्यासचित्ते, संथा० ।
झाम- त्रि० *[ध्यात]*
दग्धे, आचा०२ श्रु० १ अ०१ उ० । आव०चू० ।
झाम- त्रि० *[ध्याम]*
अनुज्ज्वले, पण्हा०२ अ० ।
झामण- न० *[ध्मापन]*
प्रदीपनके, वव०२ उ० । सूय० ।
झामथंडिल- न० *[ध्मातस्थण्डिल]*
दग्धभूमौ, आचा०२ श्रु०१ अ०१ उ० ।
झामिय- त्रि० *[ध्यामित]*
अग्निना दग्धे, वव०७ उ० । बुह० ।
झाय- त्रि० *[ध्यात]*
भस्मीकृते, नं० ।
झायव्व- त्रि० *[ध्यातव्य]*
ध्येये, आव०४ अ० ।
झाया- त्रि० *[ध्यातृ]*
चिन्तके, आव०४ अ० ।
झावण- *[ध्मापन]*
भस्मसात्करणे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० ।
झावणा- स्त्री० *[ध्मापना]*
अग्निसंस्कारे, आव०म०१अ०१ ।
स च भगवतो निर्वाणप्राप्तस्यान्येषां च साधूनामिक्ष्वाकूणामि-तरेषां च प्रथमं त्रिदशैः कृतः, पश्चाल्लोकेऽपि संजातः। आव० म०१ अ०१ ।

झिंगिर- पुं० *[झिङ्गिर]*
त्रीन्द्रियजीवभेदे, जीवा०१ प्रति० ।
झिंगिरड- पुं० *[झिङ्गिरड]*
त्रीन्द्रियजीवभेदे, जीवा०१ प्रति० ।
झिंझिय- त्रि० *[झिञ्झित]*
बुभुक्षाऽऽर्ते, बुह०६ अ० ।
झिंझिरी- स्त्री० *[झिञ्झिरी]*
वल्लीभेदे, झझिरीवल्लीए सालगो त्ति ।आचा०२ श्रु०१ अ०१ उ०
वल्लीपलाशके, बुह०१ उ० ।
झिम्म- न० *[जैह्मय]*
येन परवञ्चनापि प्रायेण जैह्वयं क्रियासु मान्द्यमालम्बते तस्मिन्भावे, भग० १२ श० ५ उ० ।
झियायंत- त्रि० *[ध्यायत्]*
चिन्तयति, विपा० १ श्रु०२ अ० ।
झियायमाण- त्रि० *[ध्मायमान]*
जाज्वल्यमाने, दशा०१ अ० ।
ज्वलति, भग०८ श०६ उ० । सूय० ।
दह्यमाने, नाया०१ श्रु०१ अ० ।
झियायमाण- त्रि० *[ध्यायमान]*
चिन्त्यमाने, दशा०५ अ० । भग० ।
झिरिंड- न० *[देशी]*
जीर्णकूपे, दे०ना०३ वर्ग० ।
झिल्लिया- स्त्री० *[झिल्लिका]*
त्रीन्द्रियजीवभेदे, पन्न०१ पद० ।
झिल्ली- स्त्री० *[झिल्ली]*
कन्द भेदे, पन्न०१ पद० ।
झीण- त्रि० *[क्षीण]*
अङ्गे, कीटे च। दे०ना०३ वर्ग० ।
झीर- स्त्री० *[देशी]*
लज्जायाम्, दे०ना०३ वर्ग० ।
झुंख- पुं० *[देशी]*
तुणपाऽऽख्ये वाद्यविशेषे, दे०ना०३ वर्ग० ।
झुंझिय- त्रि० *[झुञ्झित]*
बुभुक्षिते, झुरितके च। भग०१६ श०४उ० ।
झुंझुंमुसयय- न० *[देशी]*
मनोदुःखे, दे०ना०३ वर्ग० ।
झुंटण- *[देशी]*
प्रवाहे, दे०ना०३ वर्ग० ।
झुंवणग- न० *[झुम्वनक]*
प्रालम्बे कर्णाऽऽभरणविशेषे, नाया०१ श्रु० १ अ० ।

झुठ- न० *[देशी]*
अलीके, दे०ना०३ वर्ग०।

झुसण- न० *[जोषण]*
सेवायाम्, ठा०२ ठा०१ उ०। कल्प०। नाया०।

झुसणा- स्त्री० *[जोषणा]*
सेवायाम्, ठा०५ ठा०१ उ०।

झुसिय- न० *[जुषित]*
सेविते, बुह०२ उ०।

झुषिर-१ न० *[शुषिर]*
शुषेः शोषस्य दानाच्छुषिरम्। आकाशे, भग० २० श०२ उ०।
रन्ध्रे, नाया०१ श्रु०८ अ०।
पोल्ले, निसि०१२ उ०।
सच्छिद्रे, गच्छा०२ अधि०।
अन्तःसाररहिते, दश०१० अ०
असारकाये, पण्हा०२ अ०।

झुषिर-२ न० *[शुषिर]*
शङ्खाऽऽदौ, रा०।
काहसाऽदौ, रा०। आव०म०। जीवा०। आव०चू०।
वंशाऽऽदौ वाद्ये, भग० ५ श०४ उ०। जंबू०।
चतुर्विधे आतोद्यशब्दे, आचा०२ श्रु०२ चू०१२ अ०।
'झुसिरा जमलचुल्लीसंठाणसंठिया।' उवा० २ अ०।

झुसिरगोलसंठिय- त्रि० *[शुषिरगोलसंस्थित]*
अन्तःशुषिरगोलकाऽऽकारे, भग०११ श०१० उ०।

झूर- धा० *[स्मर]*
हृदयेन खिद्यते। आचा०१ श्रु०२ अ०५ उ०।
कुटिले, दे०ना०३ वर्ग०।

झूसण- न० *[जोषण]*
प्रीतौ, सेवायां च।उव०। ठा०२ ठा०२ उ०। आव०चू०। सम०।

झूसिय- त्रि० *[जुष्ट]*
सेविते, ठा०२ ठा०२ उ०। उव०। नाया०।

झूसिय- त्रि० *[झूषित]*
क्षपिते, ठा०२ ठा०२ उ०। कल्प०।

झेय- न० *[ध्येय]*
चिन्तनीये, आव०४ अ०।

झोल्लिआ- स्त्री० *[झोल्लिका]*
पुरुषद्वयोत्क्षिप्ते 'झोली' इति ख्याते पदार्थे, सूय०२ श्रु०४ अ०।

झोस- पुं० *[झोष]*
यथेह तीर्थे षड्मासान्तमेव तपः, ततः षण्णां मासानामुपरि यान् मासानापन्नोऽपराधी, तेषां क्षपणमनारोपणम्। प्रस्थे चतुःसेतिकाऽतिरिक्तधान्यस्येव झाटने, ठा०५ ठा०२ उ०। निसि०।

झोसण- न० *[झोषण]*
मार्गणे, 'आभोगणं ति वा मग्गणं ति वा झोसणं ति वा एगट्ठं।' वव०२ उ०।

झोसमाण- त्रि० *[झोषयत्]*
क्षपयति, आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ०।

झोसि- त्रि० *[झोषि]*
इह तीर्थे षण्मासान्तमेव तपस्ततः षण्णां मासानामुपरि यान् मासानापन्नोऽपराधी तेषां क्षपणं अनारोपणं, प्रस्थे चतुःसेतिकाऽतिरिक्तधान्यस्येव जाटनमित्यर्थः। ठा० ३२५।

झोसिय- त्रि० *[जुष्ट]*
सेविते, आचा०१ श्रु०५ अ०३ उ०।

झोसिय- त्रि० *[झोषित]*
क्षपिते, आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ०।

झोसेमाण- त्रि० *[जुषत्]*
आचरति, आचा०१ श्रु०८ अ०१ उ०।

झ-कारादि शब्द-परिभाषाः समाप्ताः

ट-कारादि शब्द-परिभाषा:

टंक-१ पुं० *[टङ्क]*
खड्गाऽऽदीनामग्रभागे, पण्हा०१ अ०।
छिन्नतटे कूटे, नं०। भग०।
एकदिशि छिन्ने पर्वते, नाया०१ श्रु०१ अ०।
उपकरणविशेषः। पन्न० ।
नतिदोषे दृष्टान्तः। आव० ।

टंक-२ पुं० *[टङ्क]*
मुद्रा चित्रविशेषे, आव०। पन्न०।

टंक-३ पुं० *[टङ्क]*
लोमपक्षिभेदे च। जीवा०१ प्रति०।

टंकण- पुं० *[टङ्कन]*
उत्तरापथे म्लेच्छदेशवास्तव्ये स्वनामख्याते म्लेच्छविशेषे, विशे०। आव०म०। आव०चू०। सूय०।
अनार्यविशेषः। भग० १७०।
टङ्कणः मिलेच्छविशेषः। सूय० ९३।

टंकणअ– पुं० *[टङ्कणक]*
म्लेच्छजातिविशेषः, आचार्यशिष्ययोर्दृष्टान्ते नामविशेषः। आव० ९६।

टंकणा– स्त्री० *[टङ्कणा]*
उत्तरापथे टङ्कणानामानो म्लेच्छाः। आव०।

टक्कर- पुं० *[टक्कर]*
अङ्गुल्यादिना शिरआदौ टगिति करणे, वव० १ उ०

टाल- न० *[टाल]*
अबद्धास्थिनि फले, दश० ७ अ०। आचा०।
अबद्धास्थि, कोमलफलादि। दश०।

टिट्टिभ- पुं० *[टिट्टिभ]*
'टिट्टी' इत्यव्यक्तं भाषते। (टिट्टीर) पक्षिभेदे आव०म०१ अ० ।

टिट्टियावण- न० *[टिट्टियापन]*
शब्दायमानकरणे, 'मयूरी अंडयं अभिक्खणं अभिक्खणं नो उव्वट्टेइ जाव नो टिट्टियावेइ।' नाया०१ श्रु०४ अ०।
स्वकीयकर्णसमीपे धृत्वा टिट्टीयावेतिशब्दायमानं करोति। नाया० १ श्रु०४ अ०। बुह०।

टिट्टियाविंति– स्त्री० *[टिट्टियावेंति]*
परस्परं ताडनेन टिट्टीतिशब्दोत्पादनपूर्वकं वादयन्ति। जंबू०।

टिप्पी- स्त्री० *[देशी]*
तिलक, दे०ना०४ वर्ग०।

टेंकणा– स्त्री० *[टेंकणा]*
चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषाः। जीवा० ३२।

टोप्परिया- स्त्री० *[टोप्परिका]*
'दवरी' इति ख्याते जत्राऽऽदिनिक्षेपणार्थे वस्तुनि, आचा० २ श्रु० १ अ० ७ उ०। गच्छा०।

टोलगइ-१ पुं० *[टोलगति]*
पञ्चमे वन्दनदोषे, । बुह०३ उ०।
पञ्चमं दोषमाहअवष्वष्कणं पश्चाद्गमनम्, अभिष्वष्कणमभिमुख गमनं, तेऽवष्वष्कणाभिष्वष्कणे टोलगत्ति द्रवदुत्प्लवमानः करोति यत्र तट्टोलगतिवन्दनकमित्यर्थः। आव०। बुह०।
उष्ट्राऽऽदिसमप्रचारे य। भग०७ श०६ उ०। जंबू०।

टोलगइ-२ त्रि० *[टोलाकृति]*
प्रशस्ताऽऽकारे, भग०७ श०६ उ०।

ट-कारादि शब्द-परिभाषा: समाप्ता:

ठ-कारादि शब्द-परिभाषाः

ठक्कुर- पुं० *[ठक्कुर]*
ग्रामाऽऽदिप्रभौ, विशे० । आव०म० ।

ठप्प- न० *[स्थाप्य]*
असंव्यवहार्ये, अणुओ० । भग० ।

ठवणकुल– न० *[स्थापनाकुल]*
सेज्झातरमामगाइ कुला ठवणकुला । निसि० ।
स्थापनाकुलानि, लोके गर्हितानि कुलानि । वव० ।
स्थापनाकुलानि । ओह० ।

ठवणपुरिस- पुं० *[स्थापनापुरुष]*
पुरुषप्रतिमाऽऽदौ, ठा०३ ठा०१ उ० ।

ठवणप्पमाण- न० *[स्थापनाप्रमाण]*
आकारविशेषवद्वस्तुप्रतिपादके नामनि, अणुओ० ।

ठवणसव्व- न० *[स्थापनासर्व]*
स्थापनया सर्वमेतदिति कल्पनया अक्षाऽऽदिद्रव्यं सर्वं, स्थापनैव वा अक्षाऽऽदिद्रव्यरूपा सर्वं स्थापनासर्वम् । ठा० १० ठा० ।

ठवणा- स्त्री० *[स्थापना]*
स्थाप्यतेऽमुकोऽयमित्यभिप्रायेण क्रियते निर्वर्त्यत इति स्थापना ।
काष्ठकर्माऽऽदिगताऽऽवश्यकवत् साध्वादिरूपे, अणुओ० । ठा० ।
लेप्याऽऽदिकर्मणि, ठा०२ ठा०४ उ० ।
सर्वस्य वस्तुनो निजे निजे आकारे, विशे० ।
आकारविशेषे, आव०म०१ अ०१ ।
लेप्याऽऽदिकर्मअर्हदादिविकल्पेन स्थाप्यते । ठा०१० ठा० ।
सद्भावासद्भावरूपप्रतिकृतौ, आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।
पत्राऽऽदिलिखिते आकारे, आव०म० । ठा० ।
पज्जुसणा, वासावासो, पढमं समोसरणं, जेट्ठोग्गहो । निसि० ।
अणागाढजोगणिक्खेवो । निसि० ।
स्थाप्यत इति स्थापना । सत्याभाषायास्तृ-तीयो भेदः । ठा० ।
स्थापनाउदाहरणस्य तृतीयो भेदः । दश० ।

ठवणाकप्प- पुं० *[स्थापनाकल्प]*
अकल्पस्थापनाकल्पशैक्षस्थापनाकल्पोभयरूपे साध्वाचारे, बृह०

ठवणाकम्म-न० *[स्थापनाकर्म]*
स्थापनं प्रतिष्ठायनं स्थापना, तस्याः कर्म करणं स्थापनाकर्म । येन ज्ञातेन परमतं दूषयित्वा स्वमतस्थापना क्रियते तत्स्थापनाकर्मेति भावः ।
तच्च द्वितीयाङ्गे द्वितीयश्रुतस्कन्धे प्रथमाध्ययनं पुण्डरीका-ऽऽख्यम् । तत्र ह्युक्तम्-अस्ति काचित् पुष्करिणी कर्दम-प्रचुरजला । तन्मध्यदेशे महापुण्डरीकम् । तदुद्धरणार्थं चतसृभ्यो दिग्भ्यश्चत्वारः पुरुषाः सकदर्ममार्गे प्रवेष्टुमारब्धाः । ते चाकृत-तदुद्धरणा एव पङ्के निमग्नाः । अन्यस्तु तटस्थोऽसंस्पृष्टकर्दम एवामोघवचनतया तदुद्धृतवानिति ज्ञातम् ।
उपनयश्चायम्– अत्र कर्दमस्थानीया विषयाः, पुण्डरीकं राजाऽऽ-दिर्भव्यपुरुषः, चत्वार पुरुषाः परतीर्थिका, पञ्चमः पुरुषः साधुः, अमोघवचनं धर्मदेशना, पुष्करिणी संसारः, तदुद्धारो निर्वाणमिति । अनेन च ज्ञातेन विषयाभिष्वङ्गवतामन्यतीर्थिकानां भव्यस्य संसारानुत्तारकत्वं, साधोश्च तद्विपर्ययं वदता आचार्येण परमतदूषणेन स्वमतं स्थापितमतो भवतीति, इदं स्थापनाकर्मेति
अथवा- आपन्नं दूषणमपोह्य स्वाभिमतस्थापनाकार्येत्येवं-विधार्थ प्रतिपत्तिर्यतो जायते तत् स्थापनाकर्म । यथा किल मालाकारेण केनापि राजमार्गे पुरीषोत्सर्गलक्षणाराधापोहाय तत्स्थाने पुष्प पुञ्जकरणेन किमिदमिति पृच्छतो लोकस्य हिङ्गुशिवो देवोयऽमिति वदता व्यन्तराऽऽयतनस्थापना कृतेति । एतस्मात् किलाऽऽख्यानकादुक्तार्थः प्रतीयते । इदं स्थापनाकर्म ठा०४ ठा०३ उ०

ठवणाकुल- न० *[स्थापनाकुल]*
स्थापनाकुलानि निर्विशति । अथवा– यानि लोके गर्हितानि कुलानि स्थापितान्युच्यन्ते, तेषामपरिभोग्यतया जिनैः स्थापि-तत्वात्, तेभ्य आहाराऽऽदिकमुत्पादयति । वव० १ उ० ।

ठवणाणंतय- न० *[स्थापनानन्तक]*
स्थापनानन्तके यदक्षादावनन्तकमिति स्थाप्यते । तस्मिन्ननन्तक भेदे, ठा०१० ठा० ।

ठवणाणय- पुं० *[स्थापनानय]*
स्थापनाप्राधान्यमिच्छति नये, स्थापनानय ।उत्त०१ अ०

ठवणापुरिस- पुं० *[स्थापनापुरुष]*
पुरुषप्रतिमाऽऽदौ, ठा०३ ठा०१ उ० ।
काष्ठाऽऽदिनिर्मिते जिनप्रतिमाऽऽदिके, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

ठवणावीर- पुं० *[स्थापनावीर]*
वीरवर्द्धमानस्वामिस्थापनावत् सुभटस्य स्थापनायाम्, सूर० २० पाहु० ।

ठवणासच्च- न० *[स्थापनासत्य]*
स्थाप्यत इति स्थापना, यल्लेप्याऽऽदिकर्मार्हदादिविकल्पेन स्थाप्यते तद्विषये सत्यं स्थापनासत्यम् । यथा–अजिनोऽपि जिनोऽनाचार्योऽप्याचार्योऽयमिति । ठा०१० ठा० ।
जिनप्रतिमाऽऽदिषु जिनाऽऽदिव्यपदेशे, पण्हा० ७ अ० ।
स्थापना सत्या यथाविधमङ्काऽऽदिविन्यासं मुद्रा-विन्यासं चोप-लभ्य प्रयुज्यते, यथा–एककं पुरतो बिन्दुद्वयसहितमुपलभ्य शतमिदमिति, बिन्दुत्रयसहितं सहस्रमिदमिति । तथाविधं मुद्राविन्यासमुपलभ्य मृत्तिकाऽऽदिषु माषोऽयं कार्षापणोऽयम् इति । पन्न०११ पद० ।

ठवणिंद- पुं० *[स्थापनेन्द्र]*
इन्द्राऽऽकारलक्षिते, ठा०३ ठा०१ उ०।
ठवित्ता- अव्य० *[स्थापयित्वा]*
प्ररूप्येत्यर्थे, वव०१ उ०।
ठविय- त्रि० *[स्थापित]*
संयतार्थं स्वस्थाने परस्थाने वा स्थापिते स्थापनादोषदुष्टे, वव० ३ उ०।
'ठवियं संकमट्ठाए, तं च होज्ज चलाचलम्।' दश०५ अ०१ उ०।
स्थापितं द्विविधम्-चिरस्थापितं, अचिरस्थापितं च। तत्र चिर-स्थापिते मासलघु। बुह०१ उ०।
प्रयोजने याचितं गृहस्थेन च तदर्थं स्थापितं यत्। पण्हा०।
ठवियगभोइ- त्रि० *[स्थापनकभोजिन्]*
स्थापनादोषदुष्टप्राभृतकभोजिनि, वव०१ उ०।
ठविया- स्त्री० *[स्थापिता]*
आरोपणाभेदे, । ठा० । यत्प्रायश्चित्तमापन्नस्तस्य स्थापितं कृतं, न बाहयितुमारब्धमित्यर्थः। आचार्याऽऽदिवैयावृत्त्यकरणार्थम्, तद्धि वहन्न शक्नोति वैयावृत्यं कर्तुम्, वैयावृत्त्यसमाप्तौ तु तत्करिष्यतीति स्थापितोच्यत इति। ठा० ५ ठा०२ उ०।
'मासाऽदी निक्खित्तं, जंबू० सेसं दिज्जए तत्तु।' निसि०१ उ०।
यदि पुनर्यन्मासाऽऽदिकमापन्नं तद् वैयावृत्त्यमाचार्याऽऽदीनां करोतीति स्थापितं क्रियते, तस्मिंश्च स्थापिते यदन्यत् शेषमु-द्घातमनुद्घातं वाऽऽपद्यते, तत्सर्वमपि प्रमादनिवारणार्थमनुद्घातं दीयते सा हाडहडा आरोपणा' वव० १ उ०।
ठाउं- अव्य० *[स्थातुम्]*
अवस्थायेत्यर्थे, आव०५ अ०।
'इच्छामि ठाउं काउस्सग्गं।' आव०५ उ०।
ठाग- न० *[स्ताघ]*
अवकाशे, बुह०३ उ०।
ठाण- न० *[स्थान]*
अवस्थितिविशेषे, आव०५ अ०।
एकत्रैव । दश ०४ अ० ।
उपवेशने, दशा० ३ अ०।
निषद्यायाम्, ठा०१० ठा०।
स्थापनं एषणा दोष इत्यर्थः। निसि०।
निषदनस्थाने, त्वग्वर्तनस्थाने, भग०१४ श०८ उ०।
पाद न्यासविशेषे, भग०७ श०९ उ०।
तिष्ठत्यनेनेति स्थानं कारणम्। पन्न०।
स्थानं-ऊर्द्धस्थानं, निषीदनस्थानं, त्वग्वर्त्तनस्थानं च। पण्हा० ।
तिष्ठन्त्येऽतेषु सत्सु शाश्वते स्थाने प्राणिन इति स्थानानि महाव्रतानि। आव०
कायोत्सर्गः। बुह०। ओह० ।
आसने, नाया०१ श्रु०१ अ०।
स्थीयतेऽस्मिन्निति स्थानं दुर्गतिगमनादिकम्। पक्षमभ्युपगत-मित्यर्थः। सूय०।
तिष्ठन्ति-विशेषा अस्मिन्निति स्थानं सामान्म्। पन्न०।
तिष्ठत्यस्मिन्निति स्थानं क्षीणकर्मणो जीवस्य स्वरूपं लोकाग्रं वा। उव० १५।
कायोत्सर्गस्थानं निषीदनस्थानं वा। नाया० २०६।
तिष्ठतिविशेषा अस्मिन्निति स्थानं सामान्यमेकवर्णं द्विवर्णं त्रिवर्णमित्यादि रूपम्। जीवा० १९।
उस्सग्गो। निसि०।
गमनादुपरम्य निवेशं कृत्वा क्वचित् प्रदेशेषु अवस्थाने,बुह०१ उ०
स्थितौ, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०। बुह०।
कुड्याऽऽदिषु स्थाने, निसि०१ उ०।
तिष्ठति-अनवस्थाननिबन्धनकर्माभावेन सदाऽवस्थितो भवति यत्र तत् स्थानं-क्षीणकर्मणो जीवस्य स्वरूपं लोकाग्रं वा। भग०
स्थानं-प्रदेशवृद्ध्या विभागः। भग० ।
पादन्यासविशेषलक्षणम्। भग० ३२३।
अवकाश-लक्षणम्। आव० ५९२।
आश्रयः। आव०।
निमित्तं, भेदः, पर्यायः। आव०।
व्यवहारतः सिद्धक्षेत्रं, निश्चयतो यथाऽवस्थितं स्वं स्वरूपम्। जीवा० ।
स्थानं-आलयः। दश० ।
स्थानं-एकत्रैव स्थितिः। दश०।
उत्कटादि। पिंड० ।
ठाणंग- न० *[स्थानाङ्ग]*
तिष्ठन्ति प्रतिपाद्यतया जीवाऽऽदयः पदार्था अस्मिन्निति स्थानम्। नं०। सम०।
तिष्ठति आसने वसन्ति यथा वदाभिधेयतयैकत्वाऽऽदिविशेषिता आत्माऽऽदयः पदार्था यस्मिन् तत्स्थानम्। अथवा-स्थानशब्देने-हैकाऽऽदिकः सङ्ख्याभेदोऽभिधीयते, ततश्चाऽऽत्माऽऽदिपदार्थ गतानामेकाऽऽदिदशान्तानां स्थानानामभिधायकत्वेन आचारा-भिधायकत्वादाचारवदिति स्थानं, तच्च प्रवचनपुरुषस्य क्षायो-पशमिकभावरूपस्याङ्गमिवाङ्गं वेति समुदायार्थः। ठा०१० ठा०।
प्रवचनपुरुषस्य तृतीयेऽङ्गे, सम०१ अङ्ग।
ठाणकप्प- पुं० *[स्थानकल्प]*
कल्पभेदे, 'अधुणा तु ठाणकप्पो, उद्धट्ठाणादिओ मुणेयव्वो। ठितकप्पसंजतस्स वि, अणुण्णओ अहितस्सेव।।१।।' पंच०भा०। पंच०चू०। ।

ठाणगुण- पुं० *[स्थानगुण]*
स्थानं स्थितिर्गुणः कार्यं यस्य स स्थानगुणः। ठा०५ ठा०२ उ०। जीवपुद्गलानां स्थितिपरिणतानां स्थित्युपष्टम्भहेतौ गुणतोऽ-धर्मास्तिकाये, भग०१ श०१ उ०।

ठाणचंचल- पुं० *[स्थानचञ्चल]*
चञ्चलशब्दोक्तार्थके चञ्चलभेदे, बुह० १ उ०।

ठाणठाइ- पुं० *[स्थानस्थायिन्]*
उचितस्थानस्थातरि, बुह०१ उ०। निसि०।

ठाणठिइ- स्त्री० *[स्थानस्थिति]*
विहारान्तरं वसतिप्रवेशात्प्राङ्मध्ये स्थितौ, ओह०।

ठाणठिय- त्रि० *[स्थानस्थित]*
उत्तरोत्तरविशिष्टसंयमस्थानाध्यासिनि, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०।

ठाणणिउत्त- त्रि० *[स्थाननियुक्त]*
स्थाने पदे नियुक्तो व्यापारितः स्थाननियुक्तः। प्रवर्त्तकस्थविर-गणावच्छेदकेषु, गच्छा० १ अधि०।

ठाणपडिमा- स्त्री० *[स्थानप्रतिमा]*
स्थानं कायोत्सर्गाऽऽद्यर्थ आश्रयः तत्र प्रतिमा स्थानप्रतिमा। स्थानविषयके तथाऽभिधेऽभिग्रहे, 'चत्तारि ठाणप्पडिमा । ठा० स्थानं कायोत्सर्गाऽऽद्यर्थ आश्रयः, तत्र प्रतिमाः स्थानप्रतिमाः। तत्र कस्यचिद् भिक्षोरेवंभूतोऽभिग्रहो भवतियद्यहमचित्तं स्थानमुपाश्रयिष्यामि, तत्र चाऽऽकुञ्चनप्रसारणाऽऽदिकां क्रियां करिष्ये, तथा किञ्चिदचित्तं कुड्यादिकमवलम्बयिष्ये, तथा तत्रैवं स्तोकं पादविहरणं समाश्रयिष्यामीति प्रथमा प्रतिमा। द्वितीया तु आकुञ्चनप्रसारणाऽऽदिक्रियामवलम्बनं च करिष्ये, न पाद-विहरणमिति। तृतीया तु आकुञ्चनप्रसारणमेव, नालम्बनपाद-विहरणे। चतुर्थी पुनर्यत्र त्रयमपि न विद्यते। ठा० ४ ठा० ३ उ०

ठाणपरिणाम- पुं० *[स्थानपरिणाम]*
परिणमनं परिणामः, तत्तद्भावगमनमित्यर्थः। यदाह–परिणामो ह्यर्थान्तराऽऽगमनं, न च सर्वथा व्यवस्थानं, न च सर्वथा विनाशः। परिणामभेदे, ठा० १० ठा०।

ठाणभट्ठ- त्रि० *[स्थानभ्रष्ट]*
स्थानाच्चारित्राद्,गुरुकुलाऽऽवासाऽऽदिकात्, सिद्धान्तव्याख्यान-रूपाद्वा सूत्रप्ररूपणेन भ्रष्टे, दुष्टाचारे च। तं०।

ठाणरय- त्रि० *[स्थानरत]*
कायोत्सर्गकारिणि, आचा०२ श्रु०२ अ०३ उ०।

ठाणविच्छुय- न० *[स्थानवृश्चिक]*
सम्मूर्च्छिमनपुंसकजीवभेदे, पन्न० ०१ पद०।

ठाणसत्तिक्कय- पुं० *[स्थानसप्तैकक]*
आचाराङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे सप्तैककानां प्रथमे, आचा० २ श्रु० २ चू०। ठा०।

ठाणाइगा- स्त्री० *[स्थानायतिका]*
ऊर्ध्वस्थायाम्, बुह०।
नो कल्पते निर्ग्रन्थ्याः, स्थानायतयो भवितुं स्थानायतं नामोर्द्ध-स्थानरूपमायतस्थानं, तद्यस्यामस्ति सा स्थानायतिका। बुह० ५ उ०।

ठाणाइगा- स्त्री० *[स्थानादिगा]*
ऊर्ध्वस्थायाम्, केचित्तु 'ठाणाइगा' इति पठन्ति। तत्रायमर्थः:-सर्वेषां निषदनाऽऽदीनां स्थानानामादिभूतमूर्द्धस्थानमतः स्थाना-नामादौ गच्छतीति स्थानाऽऽदिगं तदुच्यते, तद्योगादार्यिकाऽपि स्थानाऽऽदिगेति व्यपदिश्यते। बुह० ५ उ०।

ठाणाइय-१ पुं० *[स्थानातिद]*
स्थानं कायोत्सर्गाऽऽदिकमतिशयेन ददाति प्रकरोति अतिगच्छति वेति। ठा० ७ ठा०। भग०।
कायोत्सर्गकारिणि, धर्मधर्मिणोरभेदोपचारात् कायक्लेशभेदे च । ठा० ७ ठा०।

ठाणाइय-२ पुं० *[स्थानातिग]*
कायक्लेशभेदे, ठा०७ ठा०।

ठाणाइय-३ पुं० *[स्थानायतिक]*
कायक्लेशभेदे, ठा०७ ठा०।

ठाणायय- न० *[स्थानाऽऽयत]*
ऊर्ध्वस्थानरूपे आयतस्थाने, बुह० ५ उ०।

ठाणि- पुं०त्रि० *[स्थानिन्]*
स्थानानि विद्यन्ते येषां ते स्थानिनः।स्थानवत्सु, सूय०१श्रु०२अ०

ठाणुक्कुडुय- त्रि० *[स्थानोत्कुटुक]*
स्थानमासनमुत्कुटुकमाधारे पुतालगनरूपं यस्यासौ स्थानोत्कु-टुकः। आसनाभिग्रहविशेषवति, भग० २ श० १ उ०।

ठाणुप्पइयमह- पुं० *[स्थानोत्पातिकमह]*
स्वनामख्याते अपूर्वे उत्सवविशेषे, बुह०१ उ०।

ठवणा- स्त्री० *[स्थापना]*
निक्षेपे, न्यासे, ठा० १० ठा०।
प्रतिष्ठायाम्, बुह०।
प्रतिष्ठा स्थापना स्थानं व्यवस्था संस्थितिः स्थितिरवस्थानम्, अवस्था चैकार्थिकानि पदानि। बुह० ५ उ०।

ठावित्ता- त्रि० *[स्थापयितृ]*
स्थापनशीले, ठा०३ ठा०१ उ०।

ठिअलेस्स- न० *[स्थितलेश्य]*
लेश्यभेदे, ठा०३ ठा०४ उ०।

ठिइ-१ स्त्री० *[स्थिति]*
अवस्थाने, आव०४ अ०। विशे०। श्रा०। बुह०
स्थाने, ठा०५ ठा०३ उ०।

जीतं स्थितिः कल्पो व्यवस्था समयो मर्यादेति हि पर्यायाः। नं०।
'दुविहा ठिई पण्णत्ता। तं जहा–कायट्ठिई चेव, भावट्ठिई चेव।' ठा० २ ठा० ३ उ०। आव०। आव०चू०।
स्थितिः प्रकल्पमवस्थानं विकल्पनमित्येकार्थम्।ठा०४ ठा०३उ०
स्वभावव्यवस्थायाम्। क्रमे, ठा० ४ ठा० १ उ०।

ठिइ-२ स्त्री० *[स्थिति]*
आयुषि, भग० १४ श०५ उ०। पण्हा०।
तद्भवशक्ते आयुषि, कल्प० ६ क्षण०।

ठिइकरण- न० *[स्थितिकरण]*
स्थापने, सम०१० अङ्ग।

ठिइकल्लाण- न० *[स्थितिकल्याण]*
स्थितिस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमलक्षणा कल्याणं येषां ते। सर्वोत्कर्ष-स्थितिकेषु, सम० ८० सम०

ठिइकारण- न० *[स्थितिकारण]*
'वातेरिता णया इष, पकंपमाणाण तरुणमादीणं। होति थिरा वड्ढंतो, तरु व्व थिरकरणतेणं तु । इति निरूपितायां सप्तदश्यां गौणाऽनुज्ञायाम्, पंच० भा०। नं०।

ठिइक्खय- पुं० *[स्थितिक्षय]*
आयुष्काऽऽदिकर्मणां स्थितिर्निर्जरणे, भग०७ श०९ उ०।
आयुषः स्थितिबन्धक्षये, ठा०८ ठा०।
वेदने, भग०२ श०१ उ०।
विगमने, विपा० २ श्रु०१० अ०।
स्थितिवैक्रियशरीरे अवस्थानं, तस्याः क्षयेऽपूरणीकरणे। कल्प० १ क्षण०।

ठिइठाण- न० *[स्थितिस्थान]*
आयुषो विभागे, भग०१ श०५ उ०।

ठिइणामणिहत्ताउय- न० *[स्थितिनामनिधत्तायुष]*
स्थितिर्यथा स्यातव्यं तेन भावेनाऽऽयुर्दलिकस्य सैव नाम परिणामो, धर्म इत्यर्थः। स्थितिनाम गतिजात्यादिकर्मणां च प्रकृत्यादिभेदेन चतुर्विधानां यः स्थितिरूपो भेदस्तत् स्थितिनाम, तेन सह निधत्तमायुःस्थितिनामनिधत्ताऽऽयुः। आयुर्बन्धभेदे, सम०। ठा०। भग०। पन्न०।

ठिइपरिणाम- पुं० *[स्थितिपरिणाम]*
आयुषो याऽन्तर्मुहूर्त्ताऽऽदित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमान्ता स्थितिर्भवति स स्थितिपरिणामः। आयुः परिणामभेदे, ठा० ९ ठा०।

ठिइप्पगप्प- पुं० *[स्थितिप्रकल्प]*
स्थितौ अवस्थाने वलिचञ्चाविषये प्रकल्पः सङ्कल्पः स्थिति-प्रकल्पः। अवस्थानविषयके सङ्कल्पे, भग०३ श०१ उ०।
स्थितिप्रकल्पमवस्थानं विकल्पनम्-तेष्वहं तिष्ठेयमिति, एते वा मम तिष्ठन्तु स्थिरीभवनिवत्येवरूपे, स्थित्या वा मर्यादया विशिष्टः प्रकल्पः। आचाराऽऽसेवायाम्, स्था० ३ ठा० ३ उ०।
यानीमानि सुप्रसिद्धतया प्रत्यक्षाणि स्थविराणां स्थविरकल्पि-कानां स्थितौ समाचारे प्रकल्पानि प्रकल्पनीयानि योग्यानि विशुद्धपिण्डशय्याऽऽदीनि स्थितिप्रकल्पानि। पिण्डाऽऽदिकानां च कल्पानां मासकल्पाऽऽदिकानां स्थितिनां द्वन्द्वे,ठा०५ठा०१ उ०

ठिइबंधपरिणाम- पुं० *[स्थितिबन्धपरिणाम]*
येन पूर्वभवाऽऽयुः-परिणामेन परभवाऽऽयुषो नियतां स्थितिं बध्नाति, स स्थितिबन्धपरिणामः। यथा तिर्यगायुः परिणामेन देवाऽऽयुष उत्कर्षतोऽप्यष्टादश सागरोपमाणीति। आयुःपरि-णामभेदे, ठा० ९ ठा०

ठिइवडिय- त्रि० *[स्थितिपतित]*
कुलक्रमादागते पुत्रजन्मानुष्ठाने, निर० १ श्रु०१ वर्ग०१ अ०।
कुलस्य लोकस्य वा मर्यादायां गतायां पुत्रजन्ममहप्रक्रियायाम्, भग०११ श०११ उ०। रा०। विपा० । नाया०।

ठिइसकम- पुं० *[स्थितिसंक्रम]*
मूलप्रकृतीनामुत्तरप्रकृतीनां च स्थिते रुत्कर्षणेऽपकर्षणे प्रकृत्यन्तरस्थितौ नयने, । ठा०।
'ठिइसंकमो त्ति वुच्चइ, मूलुत्तरपगइओ य जा हि ठिई। उव्वट्टिया य ओवट्टिया व पगई नियावन्नं'। ठा०४ ठा०२ उ०।

ठिति- स्त्री० *[स्थिति]*
नरकावस्थानरूपा नरकायुष्करूपा। भग० ६४३।
साद्यपर्यवसितमुक्तिस्थितेर्हेतुत्वात्। स्थितिः, अहिंसाया द्वाविंशतितमं नाम। पण्हा० ९९।
स्थितिः-वेदनाकालः। पन्न० ६०२।

ठिय-१ त्रि० *[स्थिति]*
व्यवस्थिते, सूय०१ श्रु०६ अ०।
अवस्थिते, ठा०२ ठा०४ उ०। उत्त०। उवा०।
अप्रच्युते, अणुओ० आव०म०।
निषण्णे, उद्यते, अगतिपरिणामे, निसि०१ उ०।
कटीस्तम्भेन ऊर्ध्वस्थाने, बुह०१ उ०।
ऊर्ध्वस्थानस्थिते, भग०९ श०३३ उ०।

ठिय-२ त्रि० *[स्थिति]*
सूत्राऽऽदित आरभ्य पठनक्रियं यावदन्यदेवाविस्मरणतश्चेतसि स्थितत्वात् स्थितम्। द्वितीये आगमतो द्रव्याऽऽवश्यकभेदे, नाया०१ श्रु०९ अ०। आव०चू०। विशे०।

ठिय-३ त्रि० *[स्थिति]*
प्रथमे कल्पभेदे, 'अत्थे विणओघकारिते ठियस्स जहा विज्जाओ फलं पयच्छं ति।' निसि० १ उ०।

ठियकल्प- पुं० *[स्थितकल्प]*
अवस्थितसमाचारे, बुह०६ उ०। निसि० । भग०। निर० ।

ठियच्चि- त्रि० *[स्थितार्चि]* स्थिता शुद्धस्वभावाऽत्मना अर्चिर्लेश्या यस्य स भवति स्थितार्चिः। सुविशुद्धस्थिरलेश्ये, सूय०१ श्रु० १० अ०।

ठियप्पा- पुं० *[स्थिताऽऽत्मन्]*
स्थितो व्यवस्थितोऽशेषकर्मविगमादात्मस्वरूप आत्मा यस्य स भवति स्थितात्मा। ज्ञानक्रिययोः प्रधानफलयोगेन मुक्त्यर्हे, सूय०१ श्रु०१० अ०।
महासत्त्वे, दश०६ अ०।
ज्ञानाऽऽदिके मोक्षाध्वनि, आचा०१ श्रु०६ अ०५ उ०।
सम्यङ्मार्गे, सूय०१ श्रु०१० अ०।
स्थित आत्मा यस्याऽसौ स्थितात्मा। आव०।

ठीण- पुं० *[ठुंठ]*
छिन्नावशिष्टवनस्पतीनां शुष्कावयवे, जंबू०१ वक्ष०

ठ-कारादि शब्द-परिभाषा: समाप्ता:

ड-कारादि शब्द-परिभाषा:

डओयर- न० *[दकोदर]*
जलोदरनाम्नि रोगे, निसि०१ उ०।

डंक- पुं० *[डङ्क]*
वृश्चिकाऽऽदिकण्टके, नाया०१ श्रु०१६ अ०। निसि० आव०।
डङ्कः-भक्षणदेशः। आव०।

डंड– पुं० *[डण्ड]*
दण्डिकः। आव० ।
बाहुप्पमाणो। निसि०

डंडग- पुं० *[दण्डक]*
साधूपकरणे दण्डे, आचा०२ श्रु०१ चू०७ अ०१ उ०। निसि०।

डंडगि- पुं० *[दण्डकि]*
उत्तरापथे कुम्भकारकृतनगरस्य राज्ञि, यत्पुरोहितेन पालकनाम्ना पूर्वं वादपराजितश्चम्पाराजः स्कन्दकः प्रव्रज्य भगिनीं पुरन्दर-यशसं द्रष्टुमागतो मारितः सन् अग्निकुमारेषूपपन्नः। निसि०१६ उ०। वव०।

डंडडणगार- पुं० *[दण्डानगार]*
स्वनामख्यातेऽनगारे, यस्य यमुनातीरे यमुनावक्रोद्याने यमुना-राजेन हतस्य केवले उत्पन्ने महिमार्थं शक्र आगतः। आव०चू०। आव०। संथा०।

डंडय- पुं० *[दण्डक]*
'डंडग' शब्दार्थे, आचा०२ श्रु०१ चू०७ अ० १ उ०। निसि०।

डंडि- पुं० *[दण्डिन्]*
दण्डधारके, उव०।

डंडिखंडवसण- पुं० *[दण्डिखण्डवसन]*
दण्डिखण्डरूपं वसनं वस्त्रं येषां ते। दण्डिखण्डरूपवस्त्रवति, पण्हा०३ अ०।

डंभ- पुं० *[दम्भ]*
मायाप्रयोगे, पण्हा०६ अ०।

डंभण- न० *[दम्भन]*
सूचीप्राये दम्भकारके अङ्गुलिषु प्रक्षेप्ये शस्त्रविशेषे, विपा० १ श्रु०

डंभणा– स्त्री० *[दम्भना]*
यैरग्निप्रतापितैर्लोहशलाकादिभिः परशरीरेऽङ्क उत्पाद्यते तानि दम्भकानि। विपा० ७१।
दम्भः-मायाप्रयोगः। पण्हा० १०९।

डक्क- त्रि० *[दष्ट]*
दशनाऽऽहते, निसि०१ उ०। पण्हा०। आव०।
दंष्ट्राविषाऽऽदिना दष्टस्य प्राणिनः पीडाकारिणि विषपरिणामे, ठा०६ ठा०।

डगण- न० *[डगण]*
यानविशेषे, बुह०१ उ०।

डगलग- पुं०न० *[डगलक]*
अतीव पक्केष्टकासु, ओह०।
लघुपाषाणाऽऽदौ, ओह०।
पक्केष्टकाखण्डे, पिंड०।
पुरीषोत्सर्गानन्तरमपानप्रोच्छनकपाषाणाऽऽदिखण्डे,पिंड० ।बुह०

डज्झमाण- पुं० *[दह्यमान]*
भस्मसात्क्रियमाणे, उत्त०१४ अ०। आव०। आव०म०। भग०। निसि०। सूय०। पण्हा०।

डज्झमाणधूव- पुं० *[दह्यमानधूप]*
भस्मसात्क्रियमाणे अनेकसुगन्धद्रव्यसंयोगसमुद्भूते दशाङ्गाऽऽ-दिधूपके, कल्प०२ क्षण०।

डड्ढ- त्रि० *[दग्ध]*
भस्मीकृते, आव०४ अ० ।पण्हा० ।उव०। निसि० ।बुह०। संथा०

डभग- पुं० *[डभक]*
म्लेच्छभेदे, पन्न०१ पद०।

डमर-१ पुं०न० *[डमर]*
स्वराष्ट्रक्षोभे, सूय०२ श्रु०१ अ०।
परराजकृतोपद्रवे, जंबू०२ वक्ष०।
विग्रहे, प्रश्न ०२ अ०।
विड्वरे, उव०। पण्हा०।
राजकुमाराऽऽदिकृतविड्वरे, रा०। निर० । नाया०।

डमर-२ पुं०न० *[डमर]*
कुमाराऽऽद्युत्थाने, ठा०९ ठा०।

डमर-३ पुं०न० *[डमर]*
कलहे, आचा०२ श्रु०२ चू०४ अ०। नाया०।
अशोभने, आव०१ अ०।

डमरगर- त्रि० *[डमरकर]*
परस्परेण कलहविधायके, नाया०१ श्रु०१ अ०।
विड्वरकारिणि, भग०९ श०३३ उ०। उव०।
वाक्कायमनोभिर्विचित्रताडनकरणशीले, आव०म०२ अ०।
कायवाङ्मनोभिस्ताडनादिगहनम्। आव०

डमरय- पुं०न० *[डमरक]*
अशोभने, आव०१ अ०।

डमरुयमणिन्नाय- पुं० *[डमरुकमणिन्याय]*
एकस्यैव पदस्य पूर्वस्मिन् परस्मिंश्च पदे वाक्ये वा संबन्धद्योतके न्याये, विशे०। उत्त०।

डल्लग- न० *[डल्लक]*
वंशाऽऽदिरचिते 'डाला' इतिख्याते पात्रविशेषे, आव०म० १ अ०

डहण-१ पुं० *[दहन]*
भस्मीकरणे, बुह०१ उ०। आचा०।

डहण-२ पुं० *[दहन]*
केवलिसमुद्घातध्यानाग्निना वेदनीयस्य भस्मसात्करणे, शेषस्य च दग्धरज्जुतुल्यत्वाऽऽपादने च। आचा०१ श्रु०१ अ०४ उ०।

डहण-२ पुं० *[दहन]*
पाटलिपुत्रवास्तव्यस्य हुताशनब्राह्मणस्य स्वनामख्याते पुत्रे, स च पितृभ्यां भ्रात्रा च सह प्रव्रजितः। आव० १ अ०।

डहर-१ पुं० *[डहर]*
लघौ, सूय०१ श्रु०१२ अ०। बुह०। ओह०। ज्यो०। दश०।
बालके, सूय०२ श्रु०२ अ०। आचा०।
अप्राप्तवयसि, दश०९ अ०१ उ०।
क्षुल्लके, सूय०१ श्रु०१४ अ०।
आषोडशवर्षीयः। वव०।

डहर-२ पुं० *[डहर]*
यावत्परिपूर्णानि पञ्चदशवर्षाणि षोडशवर्षादर्वाक् तावड्डहरकं ब्रुवते समयविदः। वव०३ उ०।

डहर-३ पुं० *[डहर]*
पुत्रनप्त्रादौ, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०।

डहरयग्गाम- पुं० *[डहरकग्राम]*
क्षुल्लकग्रामे, वव०७ उ०।

डहरिया- स्त्री० *[डहरिका]*
जन्मतोऽष्टादशवर्षावधिकायां योषिति, जन्मपर्यायेण यावदष्टा-दशिका अष्टादशवर्षप्रमाणा तावद्भवति डहरिका। वव०४ उ०।

डाग- पुं० *[डाक]*
शाके, पिंड०। पण्हा०। सूर०। सम०।
पत्रशाके, दशा०१ अ०। निसि०।
डालप्रधाने शाके, आचा०२ श्रु०२ चू०१२ उ०।
वास्तुलाऽऽदिभर्जिकायाम्, भग०७ श०१० उ०। चंद०।
वृन्ताकचिर्भिटिकाचणकाऽऽदयः संस्कृताः पत्रशाकान्ता डाक-शब्देन भण्यन्ते। आव०।

डागवच्च- न० *[डाकवर्चस्]*
यत्र पतितो डाकः सटनेन वर्चोभवति तादृशे स्थले, आचा०२ श्रु०२ चू०१० अ०।

डागिणी- स्त्री० *[डाकिनी]*
पूतनायाम्, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ०।

डाय- पुं० *[डाक]*
'डाग' शब्दार्थे, पिंड०। पण्हा०। सूर०। सम०।

डायाल- न० *[डायाल]*
हर्म्यतले, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०१ उ०

डाल- न० *[डाल]*

शाखायाम्। ठा०।

शाखैकदेशे, आचा० २ श्रु०१ चू०१ अ०१० उ०।

डाली- स्त्री० *[डाली]*

शाखायाम्, निसि०१ उ०।

डाह- पुं० *[डाह]*

भस्मीकरणे। आचा०। अणुओ०।

डिंगर- पुं० *[डिङ्गर]*

पादमूलिके, निसि०१५ उ०।

डिंडिम- पुं० *[डिण्डिम]*

'डिडिड' इति शब्दं मिनोति प्रकाशयति। पटहाऽऽदिवादित्र-विशेषे, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०। रा०। आव०चू०।

प्रथमप्रस्तावनासूचके पणवविशेषे, जंबू०२ वक्ष०। जीवा०।

गर्भे, बुह०३ उ०।

कांस्यभाजने, न०। आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०११ उ०।

डिंडिबंध- पुं० *[डिण्डीबन्ध]*

गर्भसम्भवे, निसि०११ उ०।

डिंडिर- पुं० *[डिण्डीर]*

फेने, आव०म०१ अ०१ ।

डिंब-१ पुं० *[डिम्ब]*

वध्रे, ठा०९ ठा०। भग०। उव०। आचा०। निर० । रा०। नाया०

स्वदेशोत्थविप्लवे, जंबू०२ वक्ष०। जीवा०।

डिंब-२ पुं० *[डिम्ब]*

पराऽऽतीतश्रृगालिके, । सूय०२ श्रु०२ अ०।

डिंभ- पुं० *[डिम्भ]*

लघुतरवयसि बालके, बुह०२उ०। आव०म०। निर० । नाया०।

डिल्ली- पुं० *[डिल्ली]*

ग्राहभेदे, जीवा०१ प्रति०। पन्न०।

डुंग- न० *[डुङ्ग]*

शिलावृन्दे, जंबू०२ वक्ष०।

डुंगर- पुं० *[डुङ्गर]*

शिलोच्चयमात्ररूपे पर्वते, भग०१श०२उ०। निसि०। आव०चू०

डुंब- पुं० *[डोम्ब]*

एकावशतितमे म्लेच्छभेदे। पंच०चू०। । वव०।

डेवण- पुं० *[डेपन]*

आत्मनः प्रतिक्षेपे, वव०३ उ०। आव०म०।

गर्त वरण्डाऽऽदीनां रयेणोल्लङ्घने, जीत०। वव०। महानि०। गच्छा०। ओह०।

डेवेमाण- पुं० *[डेपयत्]*

अतिक्रामति, भग०१ श०७ उ०।

डोंगर- पुं० *[डुङ्गर]*

'डुंगर' शब्दार्थे, भग०१ श०२ उ०।

डोंबिलग- पुं० *[डोम्बिलक]*

म्लेच्छजातीये, पण्हा०१ अ०। पन्न०।

डोल- पुं० *[डोल]*

तिकाऽऽख्ये प्राणिनि, बुह०१ उ०। जीवा०। उत्त०।

डोलायमाण- त्रि०पुं० *[दोलायमान]*

शिबिकायाम्, दे०ना०४ वर्ग०।

चलचित्तवृत्तौ, निसि०१० उ०।

डोल्लणग- पुं० *[दोल्लनक]*

उदकसंजाते संस्वेदजे जीवे, सूय०२ श्रु०३ अ०।

डोहल- पुं०न० *[दोहद]*

मनोरथे, नाया०१ श्रु०१ अ०। आव०। निसि० ।

ड-कारादि शब्द-परिभाषाः समाप्ताः

ढ-कारादि शब्द-परिभाषा:

ढंक-१ पुं० *[ढङ्क]*

काकपक्षिविशेषे, जंबू०२ वक्ष०। सूय०। उत्त०। पन्न०। आव०म०। आव०चू०। ठा०। भग०।

लोमपक्षिविशेषः। जीवा० ४१।

ढंक-२ पुं० *[ढङ्क]*

श्रावस्त्यां तिन्दुकोद्याने पञ्चशतानि साधूनां सहस्रं साध्वीनां ढङ्केन कुम्भकारश्रावकेण जमालिं मुक्त्वा प्रतिबोधितानीति। आव० म० प्रियदर्शनाप्रतिबोधकः कुम्भकारविशेषः। उत्त० १५६।

ढङ्कः-कुम्भकारविशेषो यः श्रमणोपासको जातः। प्रियदर्शना प्रतिबोधकः। आव० ३१३।

ढंकण- पुं० *[ढङ्कन]*

चतुरिन्द्रियजीवभेदे, पन्न०१ पद०। जीवा०।

ढंकणग- पुं० *[ढङ्कनक]*

पिधाने, अणुओ०। आचा०।

ढंकणय- पुं० *[ढङ्कनक]*

'ढंकणग' शब्दार्थे, अणुओ०।

ढंढो– पुं० *[ढण्ढन]*

ढण्ढकुमारः, जन्मान्तरनाम्ना कृषिपारासरः वासुदेवसुतः, अलाभपरीषहे दृष्टान्तः। उत्त० ११८।

ढंढण- पुं० *[ढण्ढन]*

नेमितीर्थकरशिष्ये, भरतेश्वरवृत्तौ।

ढंढण- *[ढंढण]*

अलाभपरीसह शब्दे प्रथमभागे कथा गता। उत्त० २ अ०।

ढक्का- स्त्री० *[ढक्का]*

भम्भायाम्, जीवा०३ प्रति०। ठा०।

भेर्याम्, आव०म०१ अ०१ ।

ढक्किय- त्रि० *[ढकित]*

स्थगितद्वारे, वव०६ उ०।

समारचिते, वव० ४ उ०। अणुओ०।

ढक्केयव्व- त्रि० *[ढकितव्य]*

पिधानीये, दश०२ अ०।

ढड्डर- न० *[ढड्डर]*

एकत्रिंशे वन्दनकदोषे,

'उच्चसरेणं वंदइ, ढड्डर एवं तु होइ बोधव्वं।' उच्चस्वरेण महता शब्देन वन्दनकमुच्चारयन् यद्वन्दते तदेतद् ढड्डरमिति बोद्धव्यम्। बुह०३ उ०। आव०चू०।

यत् महता शब्देनोच्चारयन् वन्दते, कृति कर्मणि एकत्रिंशत्तमो दोषः। आव० ।

ढिंकण- पुं० *[ढिङ्कन]*

चतुरिन्द्रियजीवभेदे, उत्त०३६ अ०।

ढिंकुण- पुं० *[ढिङ्कुन]*

क्षुद्रजीवविशेषे, जंबू०२ वक्ष०।

ढिंग- पुं० *[ढिङ्ग]*

जीवविशेषे, पण्हा०१ अ०।

पक्षिविशेषः। पण्हा० ।

ढेंकिय- न० *[गर्जित]*

वृषशब्दे, आव०४ अ०।

ढेणियालग- पुं० *[ढेणिकालक]*

पक्षिविशेषे, पण्हा०१ अ०।

ढेणी- स्त्री० *[ढेणी]*

पक्षिविशेषे, अनुत्त०३ वर्ग०१ अ०।

ढ-कारादि शब्द-परिभाषा: समाप्ता:

ण-(न)कारादि शब्द-परिभाषा

ण- अव्य० *[न]*
प्रतिषेधे, निसि०१ उ० ।
नञ्-शब्दवन्नशब्दोऽप्यस्ति; अत एव न एकं नैकं, नायं नञ्, आव०म०१ अ० । निसि० ।

ण- अव्य० *[नञ्]*
सर्वनिषेधे, पयुदासे, नं० । ठा० ।
कुत्सितं शीलमशीलमिति । अणुओ० ।
दुःशब्दार्थे, यथा अशीलाः, दुःशीला इत्यर्थः । ठा०३ ठा०३ उ० ।
अल्पार्थे, यथाऽयं पुमानज्ञः, स्वल्पज्ञान इत्यर्थः । आचा० १ श्रु० ६ अ० ६ उ० ।

णइसंतार- पुं० *[नदीसन्तार]*
'णईसंतार' शब्दार्थे, जीत० ।

णई- स्त्री० *[नदी]*
सरिति, सूय०२ श्रु०१ अ०५ उ० । उत्त० । नाया०
सलिलायाम्, भग०९ श०२ उ० । पण्हा० ।

णईकच्छ- पुं० *[नदीकच्छ]*
नदीगहने, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

णईसंतार- पुं० *[नदीसन्तार]*
नद्युत्तरणे, नदीसन्तारश्चतुर्धा-जङ्घार्धदघ्नोदकः, संघट्टस्तदूर्ध्वं नाभिद्वयसोदकः, लेपस्तदूर्ध्वजलो, लेपोपरि बाहुभ्यामुडुपैर्वा चतुर्थः । चतुर्ष्वत्र प्रायः कायोत्सर्गः जीत० ।

णउ- अव्य० *[ननु]*
असूयायाम्, आव०५ अ० ।

णउअ- न० *[नियुत]*
चतुरशीतिलक्षगुणिते नियुताङ्गे, ठा०२ ठा० ४ उ० । जीवा० । अणुओ० । भग० ।

णउअंग- न० *[नियुताङ्ग]*
चतुरशीतिलक्षगुणिते प्रयुते, अणुओ० । ठा० । जीवा० ।

णउल- पुं० *[नकुल]*
वभ्रौ, उवा०२ अ० । सूय० ।
'नेवला' इति ख्याते जीवे, पन्न०१ पद० ।
माद्रीजाते पाण्डुराजपुत्रे, नाया०१ श्रु०१६ अ० ।
वाद्यभेदे, आव०चू०१ अ० । रा० ।

णउलय- पुं० *[नकुलक]*
'नौली' इतिख्याते रूप्यकभरणवस्त्रे, बुह० ४ उ० ।

णउली- स्त्री० *[नकुली]*
सर्पविद्याप्रतिपक्षभूतायां विद्यायाम्, विशे० जीवा० । कल्प० । आव०म० । आव०क० ।

णं- अव्य० *[णं]*
ते णं काले णं ते णं समए णं । णमिति वाक्यालङ्कारे । सूय०१ श्रु०११ अ० ।पण्हा० ।रा० ।उव० । कल्प । सम० । विशे० । ठा० ।
निपातानामनेकार्थत्वात् । पन्न०१५ पद ।
णमित्युपसंहारवाक्यम् । रा० ।
'णं' इत्यात्मनिर्देशे, निसि०२ उ० ।
एनम् । आव० । पिंड० ।
एत्तम् । उत्त० ।
निश्चितम् । पन्न०

णंगलग्गाम- पुं० *[लाङ्गलग्राम]*
स्वनामख्याते ग्रामे, यत्र वासुदेवगृहे वीरजिनः प्रतिमया स्थितः, तेन सह विहरन् गोशालो डिम्भभापनयाऽक्षिविक्रियां कुर्वन् तत्पित्रादिभिः कुट्टितो मुनिपिशाच इत्युपेक्षितः । कल्प० ६ क्षण० । आव०म० । आव०चू० ।

णंगलिय- पुं० *[लाङ्गलिक]*
गलावलम्बितसुवर्णाऽऽदिमयलाङ्गलप्रतिकृतिधारिणि भट्टविशेषे, भग० ९ श० ३ उ० । जंबू० । कल्प० । उव० ।

णंगुल- न० *[लाङ्गूल]*
पुच्छे, । जंबू० ।

णंगोलिय- पुं० *[लाङ्गोलिक]*
हिमवतः पश्चिमायां दिशि पर्यन्तादारभ्य पश्चिमोत्तरस्यां दिशि त्रीणि योजनशतानि लवणसमुद्रमवगाह्योपरि दंष्ट्रायां चतुर्थे-ऽन्तरद्वीपे, । नं० । जीवा० । ठा० ।
तद्वासिनि मनुष्ये च । पन्न०१ पद० ।

णंतग- न० *[देशी]*
वस्त्रे, वस्तुवृक्षेषु परिहीयमाणेषु भगवता वस्त्रोत्पादनिमित्तं वस्त्रशिल्पमुत्पादितम् । आव०म० १ अ० ।
यथा–'मुहणंतगं' मुखवस्त्रिका । आव०५ अ० ।

णंद-१ पुं० *[नन्द]*
नन्दयति, नन्दतीति वा नन्दः । समृद्धे, नाया०१ श्रु० १ अ० ।
'जय जय णंदा ! जय जय भद्दा !' नन्दति समृद्धो भवतीति नन्दः । तस्य सम्बोधनं हे नन्दा ! । कल्प०५ क्षण० । पण्हा० ।

णंद-२ पुं० *[नन्द]*
स्वनामख्याते राजगृहजे मणिकारश्रेष्ठि, वीरजिनान्तिके श्रावको भूत्वाऽपि मिथ्यात्वं गतः । श्रेणिकाऽऽज्ञया राजगृहस्य बहिरा-रोग्यशालाऽऽदिशोभितवन-खण्डचतुष्कपरिवृत्तां नन्दापुष्करिणीं निर्माप्य तदध्यवसायेन मृत्वा तत्रैव पुष्करिण्यां दर्दुरो जातः । ततो जातिस्मरणेन वीरसमवसरणमागच्छन् श्रेणिकाश्वकिशोरेण आक्रान्तो मृत्वा सौधर्मे कल्पे दर्दुरेऽवतंसके दर्दुरो नाम देवो जातः, ततश्च्युत्वा महाविदेह सेत्स्यति । नाया० १ श्रु० १३ अ० ।

णंद-३ पुं० *[नन्द]*
अरिष्टनेमेः प्रथमशिष्ये श्रावके, कल्प०७ क्षण०। आव०चू०। ति०। आव०म०।

णंदग- पुं० *[नन्दक]*
समृद्धिकारके नन्दकाभिधाने वासुदेवखड्गे, सम०।

णंदण-१ पुं० *[नन्दन]*
नन्दतीति नन्दनः। पुत्रे, कल्प०७ क्षण०।

णंदण-२ पुं० *[नन्दन]*
भरतवर्षे जाते सप्तमे बलदेवे, आव०। सम०।

णंदण-३ पुं० *[नन्दन]*
पञ्चविंशे भवे श्रीवीरजिने, पञ्चविंशतिभवे इहैव भरतक्षेत्रे छत्रिकायां नगर्यां जितशत्रुनृपतेर्भद्रादेव्याः कुक्षौ पञ्चविंशति-वर्षलक्षाऽऽयुर्नन्दनो नाम पुत्रः। कल्प०२ क्षण०। आव०म०। आव०चू०। सम०।

णंदण-४ पुं० *[नन्दन]*
श्रेणिकपुत्रवध्वा नन्दना अपत्ये, स च वीरजिनान्तिके प्रव्रज्य द्वौ वर्षौ प्रव्रज्यापर्यायं पालयित्वा मृत्वाऽच्युते कल्पे देवो भूत्वा महाविदेहे सेत्स्यति। इति कल्पावतंसिकाया दशमेऽध्ययने सूचितम्। निर० १ श्रु०२ वर्ग०१ अ०।

णंदण-५ पुं० *[नन्दन]*
सर्वाङ्गसुन्दर्याः पूर्वभवसत्कभ्रातृजाययोः साकेतनगरे उत्पन्नयोः पितरि, आव० म०१ अ०२ ।

णंदण-६ पुं० *[नन्दन]*
पूर्वभवे मल्लीतीर्थकृज्जीवे, सम०।

णंदण-७ पुं० *[नन्दन]*
मोकाया नगर्या बहिश्चैत्ये, 'तीसे णं मोयाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए नंदणनामं चेइए होत्था।भग० ३ श० १

णंदणकर- त्रि० *[नन्दनकर]*
वृद्धिकरे, पण्हा०४ अ०।

णंदणकूड- न० *[नन्दनकूट]*
नन्दनवनकूटे, सम०५०० सम०।

णंदणभद्द- पुं० *[नन्दनभद्र]*
आर्यसंभूतिविजयस्य माढरसगोत्रस्य प्रथमशिष्ये,कल्प०८ क्षण०

णंदणवण- न० *[नन्दनवन]*
मेरोः पञ्चयोजनशतोच्छ्रितप्रथममेखलाभाविनि पञ्चयोजनशतो-च्छ्रिते स्वनामके द्वितीयवने, सम० ६७ सम०। ज्यो०। नाया०। सूय०। जंबू०।
'दो णंदणवणा।' मेरोश्चत्वारि वनानि'भूमीए भद्दसालं, मेहल-जुयलम्मि दोन्नि रम्माइं। णंदणसोमणसाइं० इति वचनाद् मेरो-र्द्वित्वे नन्दनवनस्यापि द्वित्वम्। ठा०२ ठा०३ उ०। ओह०।

णंदणीपिया- पुं० *[नन्दनीपितृ]*
श्रावस्तीनगरीवास्तव्ये स्वनामख्याते गृहपतौ, उवा०।

णंदमाण- त्रि० *[नन्दत्]*
सौख्यं भुञ्जाने, तं०।

णंदवई- स्त्री० *[नन्दवती]*
श्रेणिकमहाराजभार्यायाम्, सा च राजगृहे स्वनामख्याता वीरान्तिके प्रव्रजिता विंशतिवर्षपर्याया सिद्धा। उवा०१ अ०।

णंदसंहिया- स्त्री० *[नन्दसंहिता]*
नन्दनिर्मितग्रन्थपद्धतौ, आव०म०१ अ०१ ।

णंदसिरी- स्त्री० *[नन्दश्री]*
वाराणस्यां भद्रसेनजीर्णश्रेष्ठिनः सुतायाम्, अवि०।

णंदा-१ स्त्री० *[नन्दा]*
ज्योतिषसङ्केतिते तिथिभेदे तत्र प्रतिपत्, षष्ठी, एकादशी च नन्दा। चंद०१० पाहु०। । जंबू०। सूर०। गणि०।

णंदा-२ स्त्री० *[नन्दा]*
शीतलजिनस्य मातरि, । आव०। सम०। ठा०।

णंदा-३ स्त्री० *[नन्दा]*
वीरजिनसत्कस्य अचलभ्रातुर्नाम गणधरस्य मातरि, आव०म०१ अ० । आव०चू०।

णंदा-४ स्त्री० *[नन्दा]*
श्रेणिकभार्यायामभयकुमारमातरि, निर० १ श्रु०१ वर्ग०१ अ०। अणुओ०। सा च वेन्नातटनगरे कस्यचित् क्षीणघनस्य श्रेष्ठिनो दुहिताऽपि जनाऽऽदृता श्रेणिकेन तत्र गत्वा परिणीता, क्रमेणा-भयकुमारं नाम पुत्रं जनितवती। तेण च वयःप्राप्तेन साकं राजगृहमागता श्रेणिकेन संमानिता राजभोगानुपलिषेवे। नं०।

णंदा-५ स्त्री० *[नन्दा]*
नन्दति नन्दयतीति वा नन्दः-समृद्धः समृद्धिप्रापको वा। नाया०

णंदा-६ स्त्री० *[नन्दा]*
पूर्वदिग्रूचकवास्तव्या दिक्कुमारी। आव०।

णंदा-७ स्त्री० *[नन्दा]*
दक्षिणदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्य दक्षिणस्यां पुष्करिणी। जीवा० ।

णंदावत्त-१ पुं० *[नन्द्यावर्त]*
प्रतिदिक्नवकोणके स्वस्तिके, जंबू०३ वक्ष०। रा०। पन्न०।

णंदावत्त-२ पुं० *[नन्द्यावर्त]*
चतुरिन्द्रियजीवभेदे, जीवा०१ प्रति०।

णंदि-१ पुं०स्त्री० *[नन्दि]*
हर्षे, नन्दिहेतुत्वाद् ज्ञानपञ्चके, नन्दन्ति प्राणिनोऽनेनास्मिन् वेति नन्दिः। ज्ञाते, आव०म०१ अ० ।

णंदि-२ पुं० *[नन्दिन्]* महेश्वराऽऽख्यव्यन्तरस्य शिष्ये, आव०चू० ४ अ० । आव०।

णंदिगर- त्रि० *[नन्दिकर]*
वृद्धिकरे, नाया०१ श्रु०१ अ०।
णंदिग्गाम- पुं० *[नन्दिग्राम]*
मङ्गलावतीविजये स्वनामख्याते ग्रामे,आव०चू०१अ०। आव०म०
मगधदेशान्तर्गते ग्रामे, यत्र जातो नन्दिषेणो गौतमपुत्रः पित्रोर्मृतयोर्दीक्षां जगृहे। आव०म०।
वीरभगवत्पितृमित्रनन्दीवासस्थानग्रामे,आव०म०१अ० आव०चू०
णंदिघोस- पुं० *[नन्दिघोष]*
द्वादशविधतूर्यनिनादे, नं०। रा०। नाया०
नन्दीसदृशघोषकारके, तं०। उत्त०।
णंदिचुण्णग- न० *[नन्दिचूर्णक]*
द्रव्यसंयोगनिष्पादितौष्ठम्रक्षणचूर्णे, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०।
णंदिज्ज- न० *[नन्दीय]*
स्थविरादार्यरोहणान्निर्गतस्य उद्देहगणस्य पञ्चमकुले,कल्प०८क्षण
णंदिज्जमाण- त्रि० *[नन्द्यमान]*
जय जय नन्देतिसमृद्धिमुपनीयमाने, उव०।
णंदिणी- स्त्री० *[नन्दिनी]*
पार्श्वनाथस्य प्रथमश्राविकायाम्, आव०चू०१ अ०।
गवि, दे०ना०४ वर्ग०।
णंदित- त्रि० *[नन्दित]*
हृष्टे, क्षुभिते च। पण्हा०२ अ०।
णंदितूर- न० *[नन्दितूर्य]*
युगपद् वाद्यमाने द्वादशविधतूर्यसमुदाये, बुह०१ उ०। आव०।
णंदिपिणद्ध- त्रि० *[नन्दिपिनद्ध]*
फुल्लिकायुक्ते, ज्यो०२ पाहु०। ।
णंदिपुर- न० *[नन्दिपुर]*
शाण्डिल्यदेशराजधान्याम्, पन्न०।
नन्दिपुरनगरराजस्य मित्राभिधानस्य श्रीको नाम महानसिकोऽभूत्। ठा०१० ठा०।
णंदिफल- न० *[नन्दिफल]*
नन्दिवृक्षाभिधानतरुफले, तदुदाहरणप्रतिपादके तृतीये ज्ञाताऽध्ययने, नाया०१श्रु०१अ०। आव०चू०। सम०। आव०। पण्हा०।
णंदिबद्धण-१ पुं० *[नन्दिवर्धन]*
पाण्डवस्थापिते मूलकुण्डग्रामे महावीरस्वामिनो ज्येष्ठभ्रातरि, चेटकराजसुतायाः चेल्लणास्वसुः ज्येष्ठायाः पत्यौ, आव०चू०४ अ०। कल्प०। आव०म०। आव० आचा०।
णंदिबद्धण-२ पुं० *[नन्दिवर्धन]*
लोकोत्तररीत्या कार्तिकमासे, कल्प०६ क्षण०।
नन्दिषेणमुनेर्गुरौ, आव०चू०४ अ०। आव०।
मथुरायां श्रीदामराजपुत्रे, विपा० ।

णंदिबद्धणा-१ स्त्री० *[नन्दिबर्द्धना]*
जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पूर्वे रुचकवरपर्वतस्य रजतकूटवास्तव्यायां दिक्कुमार्याम्, ठा० ८ ठा०। आव०म०। आव०चू०। जंबू०। आव०। जंबू०।
नन्दिवर्धनापौरस्त्यरुचकवास्तव्यां चतुर्थी दिक्कुमारी। जंबू० ३९।
णंदिबद्धणा-२ स्त्री० *[नन्दिबर्द्धना]*
शाश्वतपुष्करिणीभेदे, ठा०४ ठा०२ उ०। जीवा०।
नन्दिवर्द्धनादक्षिणदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्योतरस्यांपुष्करिणी।जीवा०
णंदिमित्त- पुं० *[नन्दिमित्र]*
कल्प मल्ल्या सह प्रव्रजिते राजपुत्रे, नाया०१ श्रु०८ अ०।
णंदिमुइंग- पुं० *[नन्दिमृदङ्ग]*
एकतः संकीर्णेऽन्यत्र विस्तृते मुरजविशेषे, रा०। आव०चू०।
णंदिमुह- पुं० *[नन्दिमुख]*
द्व्यङ्गुलप्रमाणशरीरके पक्षिविशेषे, पण्हा० १ अ०। उव०। रा०।
णंदिय- त्रि० *[नन्दित]*
समृद्धितरतामुपगते, उव०।
स्वनामख्याते स्थविरे, कल्प०।
'मिउमद्दवसंपन्नं, उवउत्तं नाणदंसणचरित्ते थेरं च णंदियं पि य, कासवगुत्तं पणिवयामि'। कल्प० ८ क्षण०।
णंदियगपोसण- न० *[नन्दितकपोषण]*
मनोज्ञाऽऽहाराऽऽदिभिर्वध्य-पशोः परिपालने, बुह०१ उ०।
णंदियावत्त-१ पुं० *[नन्द्यावर्त]*
प्रतिदिङ्नवकोणके स्वस्तिके, पण्हा०१ अ०। जंबू०। रा०। उव०।
णंदियावत्त-२ पुं० *[नन्द्यावर्त]*
ब्रह्मलोके कल्पे तदिन्द्रस्य पारियात्रिके विमाने, ठा०१० ठा०।
णंदियावत्त-३ पुं० *[नन्द्यावर्त]*
द्वीन्द्रियजीवभेदे, पन्न०१ पद। जीवा०।
णंदियावत्त-४ पुं० *[नन्द्यावर्त]*
स्तनितकुमारेन्द्रस्य घोषस्य महाघोषस्य च लोकपालभेदे, ठा०४ ठा०१ उ०। भग०।
सिद्धश्रेणिकापरिकर्मभेदे, सम०१२ अङ्ग०।
णंदिराय- पुं० *[नन्दिराज]*
वीरस्वामिज्येष्ठभ्रातरि नन्दिवर्द्धने, कल्प० ५ क्षण०।
णंदिराय- पुं० *[नन्दिराग]*
समृद्धौ सत्यां हर्षे, भग०२ श०५ उ०।
णंदिरुक्ख- पुं० *[नन्दिवृक्ष]*
धववृक्षे, अश्वत्थवृक्षे, तुन्ने, कुबेरके, मेषश्रृङ्ग्यां च। पन्न०। उव०। सम०। रा०।
णंदिसेण-१ पुं० *[नन्दिषेण]*
मथुरायां दामराजसुते युवराजनन्दिवर्धनापरनामके, ठा०१० ठा०

णंदिसेण-२ पुं० *[नन्दिषेण]*
स्वनामख्याते पार्श्वापत्यीये आचार्ये, यो हि भद्रिकापुर्यां वीरे भगवत्यागते प्रतिमया स्थितश्चौरभ्रान्त्याऽऽरक्षकपुरुषेण भल्लाऽऽहतो जाता वधिः स्वर्जगाम। कल्प०५ क्षण०। आव०म०। आव०चू०।
नन्दिग्रामे गौतमपुत्रे नन्दिवर्धनसूरिशिष्ये। आव०चू०।

णंदिसेणा-१ स्त्री० *[नन्दिषेणा]*
पूर्वस्मिन्नञ्जनकपर्वते पूर्वस्यां दिशि नन्दापुष्करिण्याम्, जीवा०३ प्रति०। ठा०।

णंदिसेणा-१ स्त्री० *[नन्दिषेणा]*
नन्दिवर्धनापरनामिकायां पूर्वरुचकवरवास्तव्यादिक्कुमार्याम्, ठा०

णंदिसेणिया- स्त्री० *[नन्दिषेणिका]*
स्वनामख्यातायां श्रेणिकभार्यायाम्, सा च वीरान्तिके प्रव्रजिता सिद्धा, इति अन्तकृद्दशानां सप्तमे वर्गे चतुर्थेऽध्ययने सूचितम्। अंत०६ वर्ग०१६ अ०।

णंदिस्सर-१ पुं० *[नन्दिस्वर]*
द्वादशतूर्यसंघातस्वरे, जीवा०३ प्रति०। तं० । रा०।

णंदिस्सर-२ पुं० *[नन्दीश्वर]*
महेश्वराऽऽख्यव्यन्तरस्य शिष्यभेदे, आव०चू०४अ०। आव०।

णंदिस्सर-३ पुं० *[नन्दीश्वर]*
नन्दी समृद्धिः, तस्या ईश्वरो द्वीपो नन्दीश्वरः। अणुओ०।
जंबू लवणे धायइकालोयपुक्खराइ जुयलाइ।वारुणिखीरघयक्खू नंदीसरअरुणदीवुदही। इति गणनयाऽष्टमे द्वीपे, । ठा० ४ ठा० २ उ०। रा०।

णंदी- स्त्री० *[नन्दी]*
'णंदि' शब्दार्थे, आव०म०।

णंदीचुण्णग- न० *[नन्दीचूर्णक]*
'णंदीचुण्णग' शब्दार्थे, सूय०१ श्रु० ४ अ०२ उ०।

णंदीसरवर- पुं० *[नन्दीश्वरवर]*
नन्दीश्वर एव वरश्च मनुष्यद्वीपापेक्षया बहुतरजिनभवनाऽऽदिसद्भावेन तस्य वरत्वादिति।अष्टमे द्वीपे, ठा०४ठा०२उ०। जीवा०

णंदीसरवरोद- पुं० *[नन्दीश्वरवरोद]*
नन्दीश्वरद्वीपस्याभितः समुद्रे, जीवा०।

णंदुत्तर- पुं० *[नन्दोत्तर]*
भवनपतीन्द्राणां रथानीकाधिपतिषु, ठा० ५ ठा०१ उ०।

णंदुत्तरा-१ स्त्री० *[नन्दोत्तरा]*
उत्तरपौरस्त्ये रतिकरपर्वते ईशास्य देवेन्द्रस्य कृष्णाया अग्रमहिष्या राजधान्याम्, जीवा०३ प्रति०।

णंदुत्तरा-२ स्त्री० *[नन्दोत्तरा]*
स्वनामख्यातायां शाश्वतनन्दापुष्करिण्याम्, ठा०४ ठा०२ उ०।

णंदुत्तरा-३ स्त्री० *[नन्दोत्तरा]*
मन्दरस्य पर्वतस्य रिष्टकूटवास्तव्यायां दिक्कुमार्याम्, जंबू० ५ वक्ष०। ठा०। जीवा०। आव०म०।

णंदुत्तरा-४ स्त्री० *[नन्दोत्तरा]*
स्वनामख्यातायां श्रेणिकमहाराजभार्यायाम्, सा च वीरजिनान्तिके प्रव्रज्य सिद्धा, इत्यन्तकृद्दशानां सप्तमे वर्गे तृतीयेऽध्ययने सूचितम्। अंत० वर्ग० १ ।

णकर- न० *[नगर]*
प्रांशुप्राकारबद्धे सन्निवेशे, आचा० १ श्रु० ८ अ० ६ उ०।

णकर- न० *[नकर]*
ण करा जत्थ तं णकरं। निसि०।

णक्क- न० *[नासिक्य]*
नासिकान्तर्नाड्याम्, विपा० १ श्रु०१ अ०। पण्हा०।

णक्क- न० *[नक्र]*
'नाक' इति ख्याते जलचरभेदे, पन्न०१ पद०। पण्हा०।
मत्स्यभेदे, जीवा०१ प्रति०।

णक्ख- पुं० *[नक्ख]*
कररुहे, जीवा०३ प्रति०। उव०।

णक्खण्णणिया- स्त्री० *[नखार्चनिका]*
नखहरणिकायाम्, नखार्चनं नखहरणिका, सा नखच्छेदनार्थं, कण्टकाऽऽदिशल्योद्धरणार्थं वा गृह्यते। बुह० १ उ०।

णक्खत्त- न० *[नक्षत्र]*
ज्योतिष्कभेदे। गणि०।

णक्खत्तचंदजोग- पुं० *[नक्षत्रचन्द्रयोग]*
सप्तविंशत्या नक्षत्रैः साकल्येन चन्द्रस्य योगे, ज्यो०२ पाहु०। ।

णक्खत्तणाम- न० *[नक्षत्रनामन्]*
नक्षत्राणामभिधायके शब्दे, अणुओ०

णक्खत्तमंडल- न० *[नक्षत्रमण्डल]*
नक्षत्राणां संबन्धिनि मण्डले, जंबू०।

णक्खत्तमास- पुं० *[नक्षत्रमास]*
चन्द्रस्य नक्षत्रमण्डले परिवर्तमाने निष्पन्न इत्युपचारतो मासोऽपि नक्षत्रं, नक्षत्रेषु भवो नाक्षत्रः, स चासौ मासश्च। चन्द्रश्चारं चरन् यावता कालेनाभिजित आरभ्योत्तराषाढानक्षत्रपर्यन्तं गच्छति तत्कालप्रमाणे मासभेदे, वव०१ उ०। निसि०। ठा०।

णक्खत्तमुह- न० *[नक्षत्रमुख]*
चन्द्रे, णक्खत्ताण मुहं बूहि, णक्खत्तण मुहं चंदो। उत्त०२५ अ०

णक्खत्तविचय- पुं० *[नक्षत्रविचय]*
विपूर्वश्चिङ् स्वभावात् स्वरूपनिर्णये वर्तते। तत्र विचयनं विचयः नक्षत्राणां विचयो नक्षत्रविचयः। नक्षत्राणां स्वरूपनिर्णये, सूर० १ पाहु०।

णक्खत्तसंवच्छर- पुं० *[नक्षत्रसंवत्सर]*
नक्षत्रेषु भवो नाक्षत्रः। किमुक्तं भवति ?
चन्द्रश्चारं चरन् यावता कालेनाभिजित आरभ्योत्तराषाढानक्षत्र-पर्यन्तं गच्छति तत्प्रमाणो नाक्षत्रो मासः। यदि वा चन्द्रस्य नक्षत्रमण्डले परिवर्तनतानिष्पन्न इत्युपचारतो मासोऽपि नक्षत्रम्। स च द्वादशगुणो नक्षत्रसंवत्सरः। जंबू०७ वक्ष०।
चन्द्रस्य नक्षत्रमण्डलभोगकालो नक्षत्रमासः, स च सप्तविंशतिः दिनानि, एकविंशतिः सप्तषष्टिभागा दिवसस्येत्येवंविधद्वादश-मासमिते संवत्सरभेदे, ठा०५ ठा०३ उ०।
स चायं त्रीणि शतानि अह्नां सप्तविंशत्युत्तराणि एकपञ्चाशच्च सप्तषष्टिभागा इति। ठा०५ ठा०३ उ०।
यावता कालेनाष्टाविंशत्यपि नक्षत्रैः सह क्रमेण योगपरि-समाप्तिस्तावान् कालविशेषो द्वादशभिर्गुणितो नक्षत्रसंवत्सरः। *सूर्य०*। ठा०।

णक्खि- त्रि० *[नखिन्]*
नखाः करजा विद्यन्ते येषां ते नखिनः। प्रशंसायामत्र मतुप्, यथा रूपवती कन्येत्यादिषु। द्वितीयतुर्ययोर्द्वित्वप्रसङ्गे, उपरि पूर्वी भवतः। सुनखेषु, बुह०१ उ०।

णग- पुं० *[नग]*
पर्वते, उव०। जीवा०। तं०। सूय०। नाया०। पण्हा०।
'जहा से णगाणं पवरे सुमहं मंदरो गिरी।' उत्त०११ अ०।

णगय- न० *[नाग्न्य]*
नग्नस्य भावो नाग्न्यम्। सरजस्कत्वे, संथा०।

णगर- न० *[नकर]*
नास्मिन् करोऽस्तीति नकरम्। नखाऽऽदित्वान्नञोऽकाराभावः। बुह०१ उ०। उत्त०। आचा०। निसि०। कल्प०। ठा०। अष्टादशकररहिते, भग०१ श०१ उ०। पन्न० ठा०। उत्त०। वव०। नाया०। गच्छा०। अकरदायिलोकाऽऽवासे, पण्हा०३ अ०।

णगर- न० *[नगर]*
चतुर्गोपुरोद्भासिनि पत्तने, उव०। जंबू०।

णगरगुत्तिय- पुं० *[नगरगुप्तिक]*
नगररक्षके, नाया०१ श्रु०२ अ०।
कोट्टपाले, पण्हा०२ अ०।

णगरट्ठाण- न० *[नगरस्थान]*
उद्धसग्रामस्थाने, कल्प०४ क्षण०।

णगरणिद्धमण- न० *[नगरनिर्धमन]*
नगरजलनिर्गमने, भग०३ श०७ उ०।
नगरजलनिर्गमनक्षाले, नाया०१ श्रु०२ अ०।

णगरणिवेस- पुं० *[नगरनिवेश]*
नगरवासकल्पनायाम्, सम०७२ सम०।

णगरधम्म- पुं० *[नगरधर्म]*
नगराऽऽचारे, ठा०१० ठा०।

णगरमाण- न० *[नगरमान]*
नगरस्य द्वादशयोजनायाम-नवयोजनव्यासाऽऽदिपरिज्ञाने, कलशाऽऽदिनिरीक्षणपूर्वकसूत्रन्यासयथास्थानवर्णाऽऽदिव्यवस्था परिज्ञाने, जंबू०।
पञ्चचत्वारिंशोऽयं कलाभेदः। जंबू०२ वक्ष०। नाया०। सम०।

णगरमारी- स्त्री० *[नगरमारी]*
नगरवासिलोकानां मारिकृते प्राणक्षये, जीवा०३ प्रति०।

णगररक्खिय- पुं० *[नगररक्षिक]*
नगरं रक्षति यः स नगररक्षिकः। कोट्टपाले, निसि०४ उ०।

णगरवह- पुं० *[नगरवध]*
सर्वेषां नगरवासिनामपराध्यनपराध्यविवेकेन प्रत्यनीकराजाऽऽ-ज्ञया मारणे, तेषां नारकाणां भयानकशब्दो नगरवध इव श्रूयते। यथा–नगरसंबन्धी महानाक्रन्दः स्यात्, सूय०१ श्रु०५ अ० १ उ०।

णगराय- पुं० *[नगराज]*
मन्दरे, मेरौ च, ठा० ९ ठा०।

णगरावास- पुं० *[नगराऽऽवास]*
नगराणामावासेषु, नगररूपेषु वा आवासेषु, सम०।

णगरी- स्त्री० *[नगरी]*
पुर्याम्, उव०।

णगिंद- पुं० *[नगेन्द्र]*
पर्वतप्रधाने मेरौ, सूय०१ श्रु०६ अ०।

णगिण- त्रि० *[नग्न]*
भावतो निर्ग्रन्थे, आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ०।

णग्ग- त्रि० *[नग्न]*
दिगम्बरे, नं०। आव०म०।

णग्गइ- पुं० *[नग्नजित्]*
गन्धारविषये पुरुषपुराधिपतौ स्वनामख्याते राज्ञि, आव०४ अ०।
'नमी राया विदेहेसु, गंधारेसु य णग्गई' प्रव्रजित इति शेषः। उत्त०१८ अ०।
, यः पुष्पिताम्रं दृष्ट्वा सम्बुद्धः सः। आव० ।

णग्गयमग्ग- पुं० *[नगगतमार्ग]*
विषमपर्वतमार्गे, तं०।

णग्गभाव- पुं० *[नग्नभाव]*
अचेलत्वे, समणाणं णिग्गंथाणं नग्गभावे मुंडभाव। ठा०९ ठा०

णग्गिया- स्त्री० *[नग्निका]*
अवस्त्रायाम्, विशे०।

णग्गोह- पुं० *[न्यग्रोध]*
वटे, पन्न०१ पद०। निसि०।

णग्गोहपरिमंडल- न० *[न्यग्रोधपरिमण्डल]*

न्यग्रोधवत्परिमण्डलं यस्य स तथा। यथा न्यग्रोध उपरि संपूर्णप्रमाणोऽधस्तु हीनः, तथा यत् संस्थानं नाभेरुपरि संपूर्णम्, अधस्तनु, तस्मिन् संस्थानभेदे, तं० । जीवा० ।

न्यग्रोधमण्डलं-विस्तारबहुलं संस्थानम्। आव०

णग्गोहवरपायव- पुं० *[न्यग्रोधवरपादप]*

वटप्रधानवृक्षे, अंत०१ श्रु०५ वर्ग०१ अ० ।

णच्च- न० *[नृत्य]*

पादजङ्घोरुकट्युदरबाह्वङ्गुलिवदननयनभ्रूमुखाऽऽदिविकारकरणे, निसि०१७ उ० ।

नाट्ये, ठा०९ ठा० ।

णच्चंत- त्रि० *[नृत्यत्]*

अङ्गविकारकारके, उव० । निसि० ।

'णच्चंताणि वा हसंताणि वा रमंताणि वा।' आचा०२ श्रु०२ चू०४ अ० ।

नृत्यन्ति कबन्धानि शिरोरहितकलेवराणि प्रचुराणि यत्र स तथा। पण्हा०२ अ० ।

णच्चग- पुं० *[नर्तक]*

नटानां नायके, वव०६ उ० ।

णच्चा- अव्य० *[ज्ञात्वा]*

अवगम्येत्यर्थे, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

अवबुध्येत्यर्थे, सूय०१ श्रु०८ अ० । आचा० । उत्त० ।

णच्चाविय- न० *[नर्तित]*

नृत्यवदिव कृते, ठा० ६ ठा० ।

नर्त्तयितव्यः । ओह० १०८ ।

णट्ट- न० *[नाट्य]*

नटस्य भावः कर्म वा। करचरणाऽऽदिविशिष्टपरिस्पन्दाविशेषे, आव०३ अ० ।

नृत्ते, नाया०१ श्रु०१ अ० । पण्हा० । जंबू० । जीवा० । ठा० ।

नृत्ये, भग०१४ श०६ उ० ।

साभिनय-निरभिनयभेदभिन्ने ताण्डवे, जंबू०५ वक्ष० । उत्त० ।

'चउव्विहे णट्टे पण्णत्ते। तं जहा–अंचिए, रिभिए, आरभडे, भसोले।' । ठा०४ ठा०४ उ० । आव० चू० ।

'नट्टं होइ अगीयं, गीयजुयं नाडयं तु नायव्वं।' बुह० १ उ० ।

एते नाट्यविधयो भरताऽऽदिशास्त्रज्ञेभ्योऽवसेयाः । जंबू०५ वक्ष० द्वात्रिंशद्विधं नाट्यमभिनयविषयवस्तुभेदाद्, यथा राजप्रश्नकृताभिधानद्वितीयोपाङ्ग इति संभाव्यते। द्वात्रिंशत्पात्रप्रतिबद्धमिति केचित्। सम० ३३ सम० ।

गीतेण विरहितं णट्टं। निसि० ।

नटाः-नाटयितारः। नृत्यन्ति स्म नृत्ताः-नृतविधायिनः। जंबू० ।

णट्टग- पुं० *[नर्तक]*

स्वयं नृत्यकर्त्तरि, कल्प० ५ क्षण० । उव० । रा० । नाया० । पण्हा० । अणुओ० ।

णट्टपाल- पुं० *[नाट्यपाल]*

नाट्यस्वामिनि सूत्रधारे, आव०चू० १ अ० ।

णट्टमालय- पुं० *[नृत्यमालक]*

खण्डकप्रपातगुहानां स्वामिषु देवेषु, यावत्यः खण्डकप्रपातगुहास्तावन्तो नृत्यमालकाः। ठा० २ ठा० ३ उ० । आव०म० ।

सुषमसुषमभाविनि कल्पद्रुमविशेषे, जंबू० २ वक्ष० ।

णट्टवत्थु- न० *[नाट्यवस्तु]*

नृत्यप्रतिपादके पापश्रुते, पण्हा० ५ अ० । आव० ।

णट्टवाइच्च- न० *[नाट्यवादित्व]*

नर्तकीत्वे, बुह०५ उ० ।

णट्टविहि- पुं० *[नाट्यविधि]*

नृत्यकरणप्रकारे, ठा०९ ठा०

नायकचरिताभिनये, भग०११ श०९ उ० ।

सामान्यतो नर्त्तनविधौ, जीवा०३ प्रति० ।

णट्टाणीय- पुं०ब० *[नाट्यानीक]*

नाट्यकारकजनसमूहे, भग०१४ श०६ उ० ।

णट्ठ- त्रि० *[नष्ट]*

सर्वथाऽदृश्यीभूते, आव०म०१ अ० । वव०

अपगते, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

हारिते, बुह०३ उ० ।

'णट्टे ति वा वि गए ति वा अंतद्धाभूए ति वा एगट्ठा।' आव०चू०१ अ० ।

नष्टोऽपगतः सत्पथः सद्भावः सन्मार्गः परमार्थो येभ्यस्ते। सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ० ।

रात्रिन्दिवस्य सप्तदशे मुहूर्त्ते, सम० ३० सम० ।

णट्ठमइय- त्रि० *[नष्टमतिक]*

मत्या स्वविषयकानिश्चायके, नाया०१ श्रु०१६ अ० ।

णट्ठरय- त्रि० *[नष्टरजस्]*

नष्टं सर्वथाऽदृश्यीभूतं रजो यत्र स तथा। जीवा०३ प्रति० ।

अदृश्यमानरजस्के, आव०म०१ अ० ।

णट्ठवं- त्रि० *[नष्टवत्]*

अहोरात्रस्य षड्विंशे मुहूर्त्ते, सम०३० सम० ।

णट्ठसण्ण- त्रि० *[नष्टसंज्ञ]*

मनसा भ्रान्ते, नाया०१ श्रु०१६ अ० ।

णट्ठसुइय- पुं० *[नष्टश्रुतिक]*

निर्यामके, शास्त्रेण दिगादिविवेचनस्य करणेऽशक्ते, नाया०१ श्रु०१६ अ० ।

णड- पुं० *[नट]*
नाटकानां नाटयितरि, नाया०१ श्रु०१ अ० । रा० । अणुओ० ।
नटा ये नाटकानि नर्त्तयन्ति । वव०३उ० । निसि० । कल्प० । उव०
'णडा दुविहा लंखका, वग्गुरिया य।' पंच०चू० । ।

णडखाइता- स्त्री० *[नटखादिता]*
नटस्येव संवेगविकल-धर्मकथा-करणोपार्जित-भोजनाऽऽदीनां खादितं भक्षणं यस्यां सा नटखादि ता। प्रव्रज्याभेदे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।

णडपिडय- पुं० *[नटपिटक]*
स्वनामख्याते भृगुकच्छावन्त्यन्तरालग्रामे, यत्र कश्चिद् गुरुप्रेषितः साधुः वर्षापातेनावरुद्धः सामाचारीमुपयुक्त एवाऽऽचरन् लवा-लवे उदाहरणम्। आव० ।

णडपेहा- स्त्री० *[नटप्रेक्षा]*
नटा नाटकानां नाटयितारः, तेषां प्रेक्षा नटप्रेक्षा। नटप्रेक्षणके, जीवा० ३ प्रति० ।
वीरसाधूनामृजुजमत्वे, कल्प० १ क्षण० । बुह० ।

णडिय- त्रि० *[नटित]*
विडम्बिते, नाया०१ श्रु०९ अ० ।

णडी- स्त्री० *[नटी]*
नर्तक्याम्, बुह०३ उ० ।
नटभार्यायाम्, ठा०६ ठा० ।

णडीरंग- पुं० *[नटीरङ्ग]*
नर्तकीरङ्गे नाट्यस्थाने, बुह०३ उ० ।

णडुल- त्रि० *[नड्डल]*
कारणे कार्योपचाराद् नड्वलः पादरोग । विशे० । आचा० ।

णणु- अव्य० *[ननु]*
आशङ्कितावधारणे, निसि० १ उ० ।
अभक्षायाम्, दश० १ अ० । जीवा० । विशे० ।
असूयायाम्, विशे० ।

णत्त- न० *[नक्त]*
रात्रौ, चंद० १० पाहु० ३ पाहु० ।

णत्तभाग- पुं० *[नक्तम्भाग]*
नक्तं रात्रौ चन्द्रयोगस्याऽऽदिमधिकृत्य विद्यन्ते येषां तानि नक्षत्राणि तथा। चंद०१० पाहु० । ३ पाहु० ।
चन्द्रस्य समयोगिषु नक्षत्रेषु, 'अद्दाऽसेसा साई, सयभिस अभिई य जेट्ठसमजोगा।' ठा० ६ ठा० ।

णत्तिअ- पुं० *[नप्तृक]*
पुत्रस्य दुहितुर्वा पुत्रे, निसि०२ उ० । आव० म० । बुह० । विशे० ।

णत्तिआ- स्त्री० *[नप्तृका]*
पौत्र्यां, दौहित्र्यां च। विपा० १ श्रु०३ अ० । गच्छा० ।

णत्तु- पुं० *[नप्तृक]*
'णत्तिअ' शब्दार्थे, निसि०२ उ० । आव०म० । बुह० । विशे० ।

णत्तुआ- स्त्री० *[नप्तृका]*
'णत्तिआ' शब्दार्थे, विपा० १ श्रु०३ अ० । गच्छा० ।

णत्तुआवइ- पुं० *[नप्तृकापति]*
पौत्रीणां दौहित्रीणां वा भर्तुषु, बुह०१ उ० ।

णत्तुइणी- स्त्री० *[नप्तृकिनी]*
पौत्रदौहित्रभार्यायाम्, विपा० १ श्रु०३ अ० ।

णत्थ- त्रि० *[न्यस्त]*
साध्वर्थमुपकल्पिते, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

णत्थिअ- पुं० *[नास्तिक]*
नास्ति जीवः परलोको वेत्येवं मतिर्यस्य सः। अक्रियावादिनि, ठा० ४ ठा० ४ उ० । आचा० । सूय० ।
नास्तिकवादिगणमतम्न सन्ति सप्त स्वपरसंस्थाः । ठा० ४ ठा० ४ उ० । सूय० ।

णत्थिभाव- पुं० *[नास्तिभाव]*
अविद्यमानभावे, 'णत्थिभावो त्ति वा अविज्जमाणभावो त्ति वा एगट्ठा।' आव०चू०१ अ० ।

णदियायतण- न० *[नद्यायतन]*
नद्याः प्रधानस्थाने, यत्र तीर्थस्थानेषु लोकाः पुण्यार्थं स्थानाऽऽदि कुर्वन्ति । आचा० २ श्रु०२ चू०३ अ० ।

णदी- स्त्री० *[नदी]*
गङ्गासिन्धुमहीकोशीप्रभृतिषु सरित्सु, सम० ३ पन्न० ।
गिरिनद्यादिषु, पन्न०११ पद० ।

णदीमह– पुं० *[नदीमह]*
नदीसत्क उत्सवः । जीवा० २८१ ।

णद्दिय- न० *[नर्दित]*
घोषे, नाया०१ श्रु०९ अ० ।

णपुंसग- पुं०न० *[नपुंसक]*
न स्त्री न पुमान् नपुंसकम् । गच्छा० १ अधि० ।
स्तनाऽऽदिश्मश्रुकेशाऽऽदिभावाभावसमन्वितम्। नपुंसकं बुधाः प्रादुर्मोहानलसुदीपितम् । तं० ।

णपुंसगपण्णवणी- स्त्री० *[नपुंसकपन्नपनी]*
स्तनाऽऽदिश्मश्रुकेशाऽऽदिभावाभावाऽऽदिसमन्वितमित्यादिलक्ष -णायां नपुंसकलक्षणाभिधायिन्यां भाषायाम्, शब्दव्यवहारानु-गतं नपुंसकलक्षणमाश्रित्यैतल्लक्षणाऽघटनेऽपि उच्यमाना वाङ् न मृषेति भाषाशब्दे, पन्न० ११ पद० ।

णपुंसगलिंगसिद्ध- पुं० *[नपुंसकलिङ्गसिद्ध]*
तीर्थकरप्रत्येकबुद्धवर्जिते नपुंसकलिङ्गशरीरनिर्वृत्तिरूपे व्यवस्थिते सति सिद्धे, नं० ।

णपुंसगवयण- न० *[नपुंसकवचन]*
पीठं देवकुलमित्यादिके नपुंसकलिङ्गे शब्दे, आचा० २ श्रु० १ चू० ४ अ० १ उ०। पन्न०। अणुओ०।
अव्यक्तगुणसंदोहे नपुंसकलिङ्गं प्रयुज्यते। जीवा०१ प्रति०।

णपुंसगवेय- पुं० *[नपुंसकवेद]*
वेद्यत इति वेदः, नपुंसकस्य वेदो नपुंसकवेदः। पन्न० २१ पद। स्त्रीपुंसयीरुपर्यभिलाषे, तद्धेतुके वेदनीयकर्मणि, यदुदये नपुंसकस्य स्त्रीपुंसयोरुभयोरभिलाषः पित्तश्मेष्मणोरुदये मज्जिताभिलाषवत्, स महानगरदाहाग्निसमानो नपुंसकवेदः। ठा०९ ठा०। बृह०। सम०। जीवा०।
तणकट्ठमहासंचयचिविंधिघणघोरजणियमणुवसंतो तत्तलक्खणो महाणगरड्डाहसमाणो। निसि० ३१।

णभ- न० *[नभस्]*
न भाति न दीप्यते इति नभः। भग० २० श० २ उ०।
आकाशे, उव०। सूय०।

णभप्पईव- पुं० *[नभःप्रदीप]*
नभ आकाशं प्रदीपयति यत्तत्तथा। सूर्ये, कल्प० ३ क्षण०।

णभसूर- पुं० *[नभःसूर]*
चन्द्रं सूर्यं वा गृह्णतो राहोः कृष्णपुद्गलभेदे, सूर० २० पाहु०। ।

णभसेण- पुं० *[नभःसेन]*
अष्टचत्वारिंशे ऋषभदेवपुत्रे, कल्प०७ क्षण०।

णमंसण- न० *[नमस्यत्]*
प्रणमने, नाया०१ श्रु०१अ० ।भग० ।निर० ।उव० ।संथा०। ठा०।

णमंसित्तए- अव्य० *[नमस्यितुम्]*
प्रणामपूर्वकप्रशस्तध्वनिभिर्गुणोत्कीर्त्तनं कर्तुमित्यर्थे, उवा०१ अ०। ठा०। रा०। आव०चू०।

णमंसित्ता- अव्य० *[तमस्यित्वा]*
प्रणम्येत्यर्थे, ठा०३ ठा०१ उ०।

णमण- न० *[नमन]*
शिरसा प्रमाणमात्रे, बृह०१ उ०। निर० । पंच०भा०।
नमस्कारे, उत्त० १ अ०।
विनयकरणे, उत्त० ५ अ०।
प्रह्वीकरणे, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ०।

णमणी- स्त्री० *[नमनी]*
'गिहिसाधूहि णमिज्जति, तम्हा जं होति णमणि त्ति।' पंच०भा० तृतीयगौणानुज्ञायाम्, नं०।

णमंत- त्रि० *[नमत्]*
आचार्याऽऽदेः प्रणामं कुर्वति, आचा० १ श्रु० ६ अ० ४ उ०।

णमि- पुं० *[नमि]*
स्वनामख्याते विदेहराजे, उत्त०।

णमिऊण- अव्य० *[नत्वा]*
प्रणम्येत्यर्थे, दश०१अ०।
'णमिऊण-ऽरहंताणं, सिद्धाणं कम्मचक्कमुक्काणं।' निसि०१ उ०।

णमिपव्वज्जा- स्त्री० *[नमिप्रव्रज्या]*
नमेः प्रव्रज्याऽत्राभिधीयते इति नमिप्रव्रज्या। मिथिलाराजस्य नमेः प्रव्रज्यायां शक्रसंवादरूपे उत्तराध्ययने, उत्त०९अ०। सम० नमिप्रव्रज्या-उत्तराध्ययनेषु नवममध्ययनम्। उत्त० ।

णमिय- त्रि० *[नमित]*
नम्रे, जीवा०३ प्रति०।
'कुसुमफलभारनमियसाला।' जीवा० ३ प्रति०।
नीचैर्भावं प्रापिते, जंबू० १ वक्ष०।

णमुदय- पुं० *[नमुदय]*
आजीविकोपासकभेदे, भग० ७ श० १० उ०।

णमोक्कार- पुं० *[नमस्कार]*
अञ्जलिबन्धशिरोनमनाऽऽदिलक्षणे प्रणाममात्रे, कायेन प्रणमने, नाया०१ श्रु०१ अ०।
अर्हदादिप्रणतौ, विशे०।

णमोक्कारणिज्जुत्ति- स्त्री० *[नमस्कारनिर्युक्ति]*
नमस्कारप्रतिपादकाऽऽवश्यकनिर्युक्तिगाथाकदम्बे।

णमोक्कारसहियपच्चक्खाण- न० *[नमस्कारसहितप्रत्याख्यान]*
अद्धाप्रत्याख्यानभेदे। आव०म०।

णमोरिह- पुं० *[नमोऽर्ह]*
जिने, आव०म०।

णम्मया- स्त्री० *[नर्मदा]*
रेवापर्याये अमरकण्टकादुद्गत्य पश्चिमसमुद्रं प्रविष्टे नदीभेदे, 'दिवा काकरवाद् भीता, रात्रौ तरति नर्मदाम्।' आव०२ अ०।

णय- त्रि० *[नत]*
प्रह्वीभूते, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०। नाया० । आचा० ।

णय- पुं० *[नय]*
नयत्यनेकांशाऽऽत्मकं वस्त्वेकांशावलम्बनेन प्रतीतिपथमारोपयतीति, नीयते वा अनेन तस्मिन् ततो वा नयनं नयः। उत्त०१ अ०। पंच०चू०। ।
नीयते परिच्छिद्यतेऽनेनास्मादिति वा नयः। अनन्तधर्माऽऽत्मकस्य वस्तुन एकांशपरिच्छित्तौ, अणुओ०। ठा०। आव० म०।
अनन्तधर्माऽऽत्मकस्य वस्तुनो नियतैकधर्माऽऽत्मकावलम्बनेन प्रतीतौ प्रापणे, उत्त० १ अ०।
अन्ये भणन्ति–नयन्तीति नयाः कारकाः, व्यञ्जकाः, प्रकाशका इत्यर्थः। आव०चू०१ उ०। निसि०। विशे०।

णयकप्प- पुं० *[नयकल्प]*
नयतत्त्वसमाचारे, पंच०चू०। ।।

णयगइ- स्त्री० *[नयगति]*
नयानां सर्वेषां परस्परसापेक्षाणां प्रमाणाबाधितवस्तु व्यवस्थापने, नैगमाऽऽदीनयानां स्वस्वमतपोषणे च। पन्न०१६ पद०

णयचक्क- न० *[नयचक्र]*
सप्तानां च नयशतानां संग्राहकाः पुनरपि विध्यादयो द्वादश नयाः, यत्प्ररूपकमिदानीमपि द्वादशारं नयचक्रमस्ति। अणुओ०

णयण- न० *[नयन]*
प्रापणे, आव०म०१ अ० । उत्त०।
लोचने, पण्हा०१ अ०।

णयणकीया- स्त्री० *[नयनकीका]*
नेत्रमध्यतारायाम्, रा०। नाया०। उव०।

णयणभूसणकर- त्रि० *[नयनभूषणकर]*
नेत्राऽऽनन्दकरे, नयनयोर्हि आनन्द एव भूषणम्। कल्प०३ क्षण०

णयणमाला- स्त्री० *[नयनमाला]*
श्रेणीभूतजननेत्रपङ्क्तौ, भग०९ श० ३३ उ०।

णयणविस- न० *[नयनविष]*
दृष्टिविषे, रोषे, नाया०१ श्रु०९ अ०। भग०।

णयणामय- पुं० *[नयनामय]*
कामलाऽऽदौ नेत्ररोगे, वव०६ उ०।

णयप्पमाण- न० *[नयप्रमाण]*
नया नैगमाऽऽदयः सप्त, द्रव्यास्तिकपर्यायास्तिकभेदात्। ज्ञान-नयक्रियानयभेदाद् वा द्वौ तौ एतावेव वा प्रमाणं वस्तुतत्त्व-परिच्छेदनं नयप्रमाणम्। आपेक्षिक-प्रमाकरणे, सम० ५ ।

णयप्पहाण- त्रि० *[नयप्रधान]*
नैगमाऽऽदिभिः सप्तभिः प्रत्येकं शतविधैर्नयैः शेषजनप्रधाने, यस्य वा नयाः प्रधानास्तस्मिन्, रा०।

णयरबलीवद्द- पुं० *[नगरबलीवर्द]*
वर्द्धितगवे, विपा० १ श्रु०२ अ०।

णयरी- स्त्री० *[नगरी]*
राजधानीकल्पेनगरे, यथा–आमलकल्पा,चम्पा।उव०।सूर०।रा

णयविहि- पुं० *[नयविधि]*
नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूतेषु नयभेदेषु, उत्त० २८ अ०।

णयविहिण्णु- त्रि० *[नयविधिज्ञ]*
नैगमाऽऽदीनां नयानां नीतीनां वा प्रकारज्ञे, नाया०१ श्रु०१ अ०।

णयसार- पुं० *[नयसार]* .
प्रथमभवे पश्चिममहाविदेहे स्वनामख्याते वीरस्वामिजीवे, कल्प०२ क्षण०।

णयाभास- पुं० *[नयाऽऽभास]*
नयान्तरनिक्षेपे नये दुर्नये, आव०म०१ अ०२ ।

णर- पुं० *[नर]*
मनुष्ये, आव०म०१ अ०२ । आचा०। उव०। पण्हा०। रा०।
नराश्चतुर्विधाः–सम्मूर्च्छिमाः, कर्मभूमिकाः, अकर्मभूमिकाः, अन्तर्भूमिकाः। आव०म०१ अ०१ ।
सामान्यमनुष्ये, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०। रा०।
प्राकृतपुरुषे, शास्त्रावबोधविकले, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ०।
पुरुषे, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

णरउसभ- पुं० *[नरवृषभ]*
अङ्गीकृतकार्यभरनिर्वाहकत्वाद् वृषभोपडिते नरे, उव०।

णरकंतप्पवाय- पुं० *[नरकान्तप्रपात]*
जम्बूद्वीपे मन्दरस्योत्तरतो रम्यकवर्षे नरकान्तानद्या उद्गमप्रपात-ह्रदे, ठा० ३ ठा० ३ उ०।

णरकंता- स्त्री० *[नरकान्ता]*
रम्यकवर्षे पूर्वाऽर्णवगामिन्यां महानद्याम्, जंबू०४ वक्ष०।
नरकान्ता महापुण्डरीकह्रदाद्दक्षिणतोरणेन विनिर्गत्य रम्यकवर्षं भजतीति हरिकान्तातुल्यवक्तव्या पूर्वसमुद्रमधिगता। ठा० २ ठा० ३ उ०। रा०। जंबू०। सम०।

णरकंताकूड- न० *[नरकान्ताकूट]*
जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरेण रुक्मिवर्षधरपर्वतस्य चतुर्थे कूटे, ठा० ८ ठा०।
नरकान्तानदीदेवीकूटम्। जंबू०।

णरकिंदग- पुं० *[नरकेन्द्रक]*
सीमान्तकाऽऽदिषु नरकवरेषु, ठा० ६ ठा०।

णरग- पुं० *[नरक]*
नरान् कायन्ति शब्दयन्ति योग्यताया अनतिक्र-मेणाऽऽकारयन्ति जन्तून् स्वस्वस्थाने इति नरकाः। नं०। आव० म०।
पापकर्मिणां यातनास्थानेषु, सूय०२ श्रु०१ अ०
निरये, ठा० ४ ठा०१ उ०।
रत्नप्रभाऽऽदिषु नारकोत्पत्तिस्थानेषु, उत्त० ३ अ०।

णरगगइ- स्त्री० *[नरकगति]*
नरानुपलक्षणत्वात्तिरश्चोऽपि प्रभूतपापकारिणः कायन्तीवाऽऽह्वयन्तीवेति नरका नरकावासाः, तत्रोत्पन्ना जन्तवोऽपि नरकाः, नरको वा विद्यते येषां ते। नरकाः, तेषु विषये गतिर्नरकगतिः। गतिभेदे, आव०।

णगरजायणा- स्त्री० *[नरकयातना]*
नरकेषु दुःखभोगे, नरकपीडायाम्। उत्त० ।

णरगपुढवी- स्त्री० *[नरकपृथिवी]*
रत्नप्रभाऽऽद्यासु पृथिवीषु, उत्त० ३६ अ०।

णरगवाल- पुं० *[नरकपाल]*
पञ्चदशप्रकारे परमाधार्मिके, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।

णरगविभत्ति- स्त्री० *[नरकविभक्ति]*
नरकाणां विभागो विभजनं विभक्तिः। नरकप्रविभागे, तदर्थ-प्रतिपादके सूत्रकृते, । सूय० १ श्रु० ५ अ० १ उ०। आव०चू०। सम०।
'पुढवीफासं अण्णाणुवक्कमं णिरयवालवहणं च। तिसु वेदंति अताणा, अणुभग्गं चेव सेसासु। सूय० १ श्रु० ५ अ० १ उ०।

णरगावास- पुं० *[नरकावास]*
नरकरूपे आवासे, ठा०८ ठा०।

णरगिंद- पुं० *[नरकेन्द्र]*
बृहत्त्वात्प्रधानत्वाच्च तथाविधे नरके चतुर्थ्यां नरकपृथ्व्यां सप्त नरकेन्द्रकाः। यथोक्तम्–'आरे मारे णारे तच्छेयमए य बोधव्वे। क्खोडक्खडे य खडखडे, इंदयनिरया चउत्थीए। ठा० ६ ठा०।

णरणारीसंपडिवुड- त्रि० *[नरनारीसंपरिवृत]*
नरैर्नारीभिश्च समन्तात् परिवृत्ते, पण्हा०३ अ०।

णरदेव-१ पुं० *[नरदेव]*
नराणां देवाः नरदेवाः। चक्रवर्तिषु, ठा०५ ठा०१ उ०।

णरदेव-२ पुं० *[नरदेव]*
स्वनामख्याते श्रीऋषभदेवपुत्रे, कल्प०७ क्षण०।

णररुहिर- न० *[नररुधिर]*
मनुष्यरुधिरे, तद्धि लोहितवर्णोत्कटमिति रक्तत्वेनोपमीयते। रा०

णरवइ- पुं० *[नरपति]*
राजनि, रा०। दश०। उव०। ठा०। आव०
विश्रुते राजनि, पण्हा०४ अ०।
नरनायके, नरस्वामिनि, सम०। उव०। नाया०।

णरवइदत्तपयार- पुं० *[नरपतिदत्तप्रचार]*
नृपानुज्ञातकामचारे, नाया० १ श्रु०१६ अ०।

णरवइदिन्नपयार- पुं० *[नरपतिदत्तप्रचार]*
नृपानुज्ञातकामचारे, नाया०१ श्रु०१६ अ०।

णरवरीसर- पुं० *[नरवरेश्वर]*
नराणां श्रेष्ठराजानि, उत्त०१८ अ०।
उत्क्षिप्तकार्ये भारनिर्वाहकत्वात्। सम०।

णरवसह- पुं० *[नरवृषभ]*
नराणां मध्ये गुणैः प्रधानत्वात् । पण्हा०४ अ० ।
धराभारधुरन्धरत्वाद् वृषभकल्पे, कल्प०३ क्षण०

णरवाहण- पुं० *[नरवाहन]*
स्वनामख्याते भृगुकच्छनरेश्वरे, आव०१अ०।आव०म०।आव०चू

णरविग्गहगइ- स्त्री० *[नरविग्रहगति]*
निरयविग्रहगतौ, ठा० १० ठा०

णरसंघाडग- न० *[नरसंघाटक]*
नरयुग्मे, जंबू०१ वक्ष०।

णरसीह- पुं० *[नरसिंह]*
शूरत्वात् दुःसहपराक्रमत्वात् (कल्प०३ क्षण०)
विक्रमयोगात् सिंहत्वोपमिते नरे, शरीरार्द्धतो नरे शरीरार्द्धतः सिंहे च। नाया०१ श्रु०१६ अ०। विशे०।

णराहिव- पुं० *[नराधिप]*
राजनि, उत्त०९ अ०। 'कुंथू नाम नराहिवो।' उत्त०९ अ०।

णरिंद- पुं० *[नरेन्द्र]*
नराणामिन्द्रो नरेन्द्रः। दशा०१० अ०।
परमैश्वर्ययोगात् समस्तभरताधिपे राजनि, उव०।
चक्रवर्त्यादौ, आव०म०। उत्त०।
प्रजापतौ, वव०२ उ०। बृह०।

णरिंदवसह- पुं० *[नरेन्द्रवृषभ]*
राजमुख्ये, उत्त० १५ अ०।
'एवं नरिंदवसहा, निक्खंता जिणसासणे।' उत्त० ९ अ०।

णरिंदसमणी- स्त्री० *[नरेन्द्रश्रमणी]*
मासराजकुलपालितायां श्रमण्याम्, सा चाऽदत्ताऽऽदानेन संसारं पर्यटितेति। महानि०

णरीसर- पुं० *[नरेश्वर]*
नृपे, 'इक्खागुरायवसहो, कुंथू नाम नरीसरो।' उत्त०१८ अ०।

णरोत्तम- पुं० *[नरोत्तम]*
ऋषभदेवस्य चतुश्चत्वारिंशे पुत्रे, कल्प० ७ क्षण०।

णलकूवर- पुं० *[नलकूवर]*
'अट्ठपुत्ते पयाहिसि सिरीए नलकूवरसमाणे।' आव०म०१ अ०।

णलगिरि- पुं० *[नलगिरि]*
प्रद्योतनृपतेर्हस्तिरत्ने, अनलगिरिरिति तन्ना मान्तरम्।आव० म०। आव०चू०। निसि०। आव०।

णलत्थंभ- पुं० *[नलस्तम्भ]*
वृक्षविशेषे, आव०३ अ०।

णलदाम- न० *[नलदामन्]*
स्वनामख्याते कुविन्दे, ठा० ४ ठा० ३ उ०। दश०। वव०। आव०म०।
नलदामा कुसुमपुरे कोलिकः। दश०।

णलागणि- पुं० *[नलाग्नि]*
नलदहनप्रवृत्तेऽग्नौ, ठा० ५ ठा०२ उ०।

णलिण-१ न० *[नलिन]*
ईषद्रक्ते कमले, चंद०१ पाहु० १ पाहु०। रा०।
ईषद्रक्तपद्मे, रा०। जंबू०। आव०म०। पन्न०।
ईषन्नीले पद्मे, जंबू०१ वक्ष०।
जलजकुसुमविशेषे, नाया०१ श्रु०९ अ०। आचा०।
जलरुहविशेषः। पन्न० २३।

णलिण-२ न० *[नलिन]*
चतुरशीतिलक्षगुणिते नलिनाङ्गे, भग०६ श०७ उ०। जीवा०। ज्यो०। जंबू०। अणुओ०। ठा०।

णलिण-३ न० *[नलिन]*
कच्छाऽऽदिषु द्वाविंशे विजयक्षेत्रयुगले, 'दो णलिणा।' ठा०२ ठा०३ उ०

णलिण-४ न० *[नलिन]*
स्वनामख्याते विमाने, सम०१८ सम०। ठा०।

णलिण-५ न० *[नलिन]*
रुचकपर्वतस्य दाक्षिणात्ये कूटे, ठा०।

णलिण-६ न० *[नलिन]*
जम्ब्वाः सुदर्शनायाः पूर्वस्यां दिशि पुष्करिण्याम्, जंबू०४ वक्ष०। जीवा०।

णलिणंग- न० *[नलिनाङ्ग]*
चतुरशीतिलक्षगुणिते पद्मशतसहस्रे, जीवा०३ प्रति० ४ उ०। अणुओ०। जंबू०। ठा०।

णलिणकूड- पुं० *[नलिनकूट]*
जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पर्वस्य पूर्वस्यां शीताया महानद्या उत्तरकूले वक्षस्कारपर्वते, ठा०३ ठा०३ उ०।
'दो णलिणकूडा।' ठा०२ ठा०३ उ०।
नलिनकूटं नाम वक्षस्कारपर्वतः। जंबू०। ठा०।

णलिणगुम्म-१ न० *[नलिनगुल्म]*
श्रेणिकभार्याया नलिनगुल्माया अप त्ये, स च वीरजिनान्तिके प्रव्रजितस्त्रीणि वर्षाणि प्रव्रज्यापर्यायं परिपाल्य सहस्रारे उपपन्नः, ततश्च्युत्वा महाविदेहे सेत्स्यति, इति कल्पावतंसिकाया अष्टमेऽव्ययने सूचितम्। निर० १ श्रु०१ वर्ग०८ अ०।
नलिनीगुल्ममप्यत्र। स्वनामख्याते अध्ययने च। आव०४ अ०।

णलिणगुम्म-२ न० *[नलिनगुल्म]*
अर्हत्ता महापद्मेन प्रव्राजिष्यमाणे स्वनामख्याते राजनि, ठा० ८ ठा०।

णलिणगुम्म-३ न० *[नलिनगुल्म]*
अष्टमदेवलोकस्ये स्वनामख्याते विमाने सम० १८ सम०।

णलिणवण- न० *[नलिनवन]*
पुष्कलावतीविजये पुण्डरीकिणिनगर्यां उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे स्वनामख्याते वने, नाया०१श्रु०१८अ० ।आव०म० ।उत्त० ।अणुओ०

णलिणावई- स्त्री० *[नलिनावती]*
कच्छाऽऽदिषु चतुर्विंशे विजयक्षेत्रयुगले, ठा०२ठा०३उ०। नाया० नलिनावती विजयः। सलिलावतीति पर्यायः। जंबू०।

णलिणी- स्त्री० *[नलिनी]*
पद्मिन्याम्, नाया०१ श्रु०१ अ०। पन्न०। आव०क०।

णव- त्रि० *[नव]*
संख्याविशेषे ९ विशिष्टे, निसि० १ उ०।
'नव खोडा।' प्रतिलेखनायाम्, नव खोडकाः, ते च त्रयस्त्रयः प्रमार्जनानां त्रयेण त्रयेण अन्तरिताः कार्याः, इति पदद्वयेनाऽपि पञ्चमी अप्रमादप्रत्युपेक्षणोक्ता। ठा०६ ठा०। निसि०।
प्रत्यग्रे, दश०१ अ०। चंद०। सूय०।
अपूर्वे, बुह० १ उ०।
अजीर्णे, जंबू०३ वक्ष०।
अभिनवे, आचा०२ श्रु०१ चू०५ अ०१ उ०।
नवकर्मणामनादानम्। नवान्युपचीयमानानि। आव०४ अ०।
'ते वरिसो होइ नवो।' प्रव्रज्यापर्यायेण यस्य त्रीणि वर्षाणि नाधिकमित्येव त्रिवर्षो भवति नवः। वव० ३ उ०।

णवंगसुत्तपडिबोहिया- स्त्री० *[नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधिता]*
नवाङ्गानि श्रोत्र० २ चक्षु० २ घ्राण० २ रसनात्वग्मनोलक्षणानि सुप्तानि सन्ति प्रतिबोधितानि यौवनेन यस्याः सा तथा। विपा० २ श्रु० १ अव।
नवयौवनायाम्, नाया०१ श्रु०३ अ०। विपा० । उव०।
'नवंगसुत्तपडिबोहियाए।' द्वे अक्षिणौ द्वौ कर्णौ द्वौ नासापुटौ जिह्वास्पर्शने नवमं मनः, एतानि नव अङ्गानि यावदद्यापि यौवनं न भवति तावत्सुप्तानि भवन्ति, न खलु तदानीमेतेषामतीचाराभिष्वङ्गसुखं भवति, ततः सुप्तानीति व्यपदिश्यन्ते, यौवने तु प्राप्तस्वकल्पगुणेन प्रतिबुद्धानि जायन्ते। वव०१० उ०।

णवकोडिपरिसुद्ध- त्रि० *[नवकोटिपरिशुद्ध]*
नवभिर्विभागैर्निर्दोषे, 'नवकोडीपरिसुद्धे, भिक्खे पन्नत्ते। नवभिः विभागैर्निर्दोषे, ठा०९ ठा०।

णवगणिवेस- पुं० *[नवकनिवेश]*
प्रथमावासे, निसि०।

णवग्गह- पुं० *[नवग्रह]*
अभिनवग्रहणे, सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ०।

णवच्छिद्द- त्रि० *[नवच्छिद्र]*
नवरन्ध्रोध्रोपेते, तं०।

णवजोयणिय- त्रि० *[नवयोजनिक]*
नवयोजनाऽऽयामे, 'जंबूदीवे णं दीवे नवजोयणिया मच्छा।' ठा० ९ ठा०।

णवणवमिया- स्त्री० *[नवनवमिका]*
नव नवमानि दिनानि यस्यां सा नवनवमिका, नव नवमानि च भवन्ति नवसु नवकेष्विति तत्परिमाणेयमिति। एकाशीतिदिनैः समाप्येऽभिग्रहविशेषे, । ठा०।

णवणवसंवेग- पुं० *[नवनवसंवेग]*
अपूर्वापूर्वे वैराग्ये, । बुह०।

णवणाम- न० *[नवनामन्]*
नवपदार्थनामनि, अणुओ०।

णवणीइया- स्त्री० *[नवनीतिका]*
पुष्पप्रधाने वनस्पतिभेदे, पन्न०१ पद०।
'णवणीइया गुम्मा।' जंबू०२ वक्ष०।

णवणीय- न० *[नवनीत]*
म्रक्षणे, उव०। निर० । आव०चू०। आव०। ठा०। नाया०। मक्खन इतिख्याते, । रा०। पण्हा०। जंबू०। निसि०। भग०। कल्प०। जीवा०। आव०म०।
नवनीतं हि महाविकृतितया निर्विकृतिकैरभक्ष्यम्। ठा० ९ ठा०।

णवत्तयकुसंत- पुं० *[नवत्वक्कुशान्त]*
नवा त्वक् येषां ते नवत्वचः कुशान्ता दर्भपर्यन्ताः, नवत्वचश्च ते कुशान्ताश्च नवत्वक्कुशान्ताः।प्रत्यक्त्वग्दर्भपर्यन्ते,रा०। जीवा०

णवधम्म- त्रि० *[नवधर्मन्]*
अभिनवश्रावके, बुह०१ उ०।

णवपज्जवण- न० *[नवपायन]*
नवं प्रत्यग्रं प्रतापितस्याऽयोधनकुट्टनेन तीक्ष्णीकृतस्य पायनं जलनिवोलनं यस्य तन्नवपायनम्, सद्याऽग्नितप्ते तीक्ष्णीकृते जलक्षेपेण शीतीकृते, 'णवपज्जणएणं असिपएणं पडिसाह-रिया।' भग० १४ श० ७ उ०।

णवपुव्वि- पुं० *[नवपूर्विन्]*
परिपूर्णनवपूर्वधरे, इहासतां नवपूर्विणः परिपूर्णनवपूर्वधराः, किंतु नवमस्य पूर्वस्य यत्तृतीयमाचारनामकं वस्तु, तावन्मात्र-धारिणोऽपि नवपूर्विणः। वव०१ उ०।

णवबंभचेरगुत्त- त्रि० *[नवब्रह्मचर्यगुप्तिगुप्त]*
नवभिर्मैथुनव्रतस्य रक्षाप्रकारैः सुसंवृत्ते। निसि०।

णवम- त्रि० *[नवम]*
नवसंख्यापूरके, उत्त० १ अ०। ठा०।

णवमल्लइ- पुं० *[नवमल्लकिन्]*
क्षत्रियविशेषजातीये, वीरस्वामिमोक्षगमनतिथिरात्रौ नवमल्ल-किभिः पोषधोपवासः कृतः, तत्र नवमल्लकिजातीयाः काशिदेशस्य राजानः। कल्प० ६ क्षण

णवमालिया- स्त्री० *[नवमालिका]*
पुष्पप्रधाने वनस्पतिभेदे, कल्प० ३ क्षण०। आचा०।

णवमिया- स्त्री० *[नवमिका]*
सुपुरुषस्य किम्पुरुषेन्द्रस्य द्वितीयायाम-ग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १ उ०। भग०।
शक्रस्य देवेन्द्रस्य षष्ठ्यामग्रमहिष्याम्। मन्दरस्य पश्चिमे रुचकवर पर्वतस्य रुचकोत्तमकूटे परिवसन्त्यां दिक्कुमार्याम्, ठा० ८ ठा०। आव० आव०चू०। जंबू०। आव०म०।

णवमी- स्त्री० *[नवमी]*
अष्टमीदशम्यन्तराले तिथौ, गणि०। विशे० । ज्यो०।

णवमीपक्ख- पुं० *[नवमीपक्ष]*
नवम्यास्तिथेः पक्षो ग्रहो यस्य तिथि मेलपाताऽऽदिषु तथा दर्श-नात् तिथिपाते यत्कृत्यस्याष्टमे च क्रियमाणत्वात् स नवमी पक्षः अष्टमे दिवसे, 'चित्तबहुलस्स णवमीपक्खेणं।' जंबू०३ वक्ष०।

णवय- पुं० *[नवत]*
ऊर्णाविशेष जीन इति लोकप्रसिद्धेऽर्थे,नाया०१श्रु०१अ०। आचा०

णवलग- पुं० *[नवलक]*
वस्त्रमये पक्वदोरकजालकमये वा मुद्राकोशे, कोऽपि कस्याऽपि पार्श्वे सुवर्णपणभृतं नवलकं क्षिप्तवान्। नं०।

णवविगइ- स्त्री० *[नवविकृति]*
नवसु क्षीराऽऽदिविकृतिषु, 'णवविगईओ पन्नत्ताओ। तं जहा– खीरं, दहि, णवणीयं, सप्पिं, तिल्लं गुलो, महुं, मज्जं, मंसं।' ठा० ९ ठा०।

णवसुत्त- त्रि० *[नवसूत्र]*
नवं सूत्रं वल्कलाऽऽदि यस्मिन् स तथा। नवसूत्ररचिते, 'आसं-दियं च नवसुत्तं, पाउल्लाइं संकमट्ठाए।सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०।

णवसोयपरिस्सवा- स्त्री० *[नवश्रोतःपरिस्रवा]*
नवभिः श्रोतोभिः छिद्रैः परिस्रवति मलं क्षरति इति नवश्रोतः परिस्रवा। छिद्रनवकेन मलं क्षरन्त्याम्, ठा०।

णवा- स्त्री० *[नवा]*
प्रत्यग्रयौवनायाम्, अतिनवोढायां वा स्त्रियाम्। सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ०। व्रतपर्यायेण यावत्त्रिवर्षायां श्रमण्याम्, वव०४ उ०।

णविय- त्रि० *[नव्य]*
अभिनवे, आचा० २ श्रु०२ चू०३ अ०।

णसंतिपरलोगवाइ- पुं० *[नशान्तिपरलोकवादिन्]*
न विद्यते शान्तिश्च मोक्षः परलोकश्च जन्मान्तरमित्येवं यो वदति स तथा। अक्रियावादिभेदे, । ठा०।
तथाहि-नास्त्यात्मा, प्रत्यक्षाऽऽदिप्रमाणाविषयत्वात्, खरविषाण-वत्, तदभावान्न पुण्यपापलक्षणं कर्म तदभावान्न परलोको, नाऽपि मोक्ष इति। यच्चैतच्चैतन्यं तद् भूतधर्म इति। अस्याऽ-क्रियावादिता स्फुटैव। न चैतस्य मतं संगच्छते, प्रत्यक्षा-ऽऽद्यप्रवृत्या आत्माऽऽदीनां निराकर्त्तुमशक्यत्वात्, सत्यपि वस्तु-प्रमाणप्रवृत्तिदर्शनादागमविशेषसिद्धत्वाच्च, भूतधर्मताऽपि न चैतन्यस्य, विवक्षितभूताभावेऽपि जातिस्मरणाऽऽदिदर्शनादिति। ठा० ८ ठा०।

णसण- न० *[न्यसन]*
व्यवस्थापने, विशे०।
न्यासे, आरोपणे, जीवा० १ प्रति०।

णस्समाण- त्रि० *[नश्यत्]*
सन्मार्गात् च्यवमाने, उवा०७ अ०।

णह- पुं० *[नख]*
खुराग्रभागे, भग० १२ श० ७ उ०।
करजे, तं०। पण्हा०। सम०। प्रव०।

णह- न० *[नभस्]*
आकाशे, दश० ७ अ०। कल्प०।

णहच्छेज्ज- न० *[नखच्छेद्य]*
नखच्छेदनविधिविशेषे कलाभेदे, कल्प ७ क्षण०।

णहच्छेदणय- न० *[नखच्छेदनक]*
नखकर्त्तन्याम्, आचा० २ श्रु० १ चू० ७ अ० १ उ०।

णहयल- न० *[नभस्तल]*
व्योम्नि, नाया० १ श्रु० १ अ०। पण्हा०।

णहवाहण- पुं० *[नभोवाहन]*
स्वनामख्याते भरुकच्छराजे पद्मावतीपतौ, यद्भार्यया पद्मावत्याः काव्यश्रवणेन पूर्वं मानितः पश्चात्तिरस्कृतोऽपरिवारो वज्रभृतिराचार्यः। वव०३ उ०। आव०। विशे०।

णहसिर- न० *[नखशिरस्]*
नखाग्रे, भग०५ श०४ उ०।

णहसिहा- स्त्री० *[नखशिखा]*
नखाग्रभागे, कल्प० ९ क्षण०। निसि०

णहसेण- पुं० *[नभःसेन]*
उग्रसेनतनये कमलायाः पत्यौ, विशे०।

णहहरणी- स्त्री० *[नखहरणी]*
नखकर्तन्याम्, यया नखा उद्ध्रियन्ते। बुह० ३ उ०।

णहि- त्रि० *[नखिन्]*
नखप्रधाने, अणुओ०।

णहु- अव्य० *[नहु]*
नैवेत्यर्थे, नाया० १ श्रु० ९ अ०। आव०। वव०।

णाइ- स्त्री० *[ज्ञाति]*
पूर्वापरसंबद्धे स्वजने, आचा० १ श्रु० २ अ० ५ उ०। भग०।
समानजातौ, निर०१वर्ग०५अ० ।कल्प० ।उव०। विपा०। सूय०।
मातापितृपुत्रकलत्राऽऽदौ, सूय०१श्रु०२अ०३उ०। उत्त० ।नाया०।
ज्ञाने, संविदि, ठा० ५ ठा० ३ उ०।

णाइमट्टिअ- त्रि० *[नातिमृत्तिक]*
नातिकर्दमे, भग० १५ श०।

णाइय- त्रि० *[नादित]*
ध्वनिमात्रे, नाया०१ श्रु०१ अ०। विपा० । भग०
प्रतिशब्दे, कल्प०५ क्षण०। रा०। जंबू०।
लपिते, नाया० १ श्रु० १ अ०। उव०।

णाइल-१ पुं० *[नागिल]*
आर्यवज्रसेनस्यान्तेवासिनि, यत आर्यनागिला शाखा निर्गता। कल्प० ८ क्षण०। आव०चू०।

णाइल-२ पुं० *[नागिल]*
नागिलकुलवशवर्तिनां साधूनामाचारादारभ्य यावदनुत्तरोपपातिकदशास्तावन्नास्ति आचाम्लम्। वव० १ उ०।

णाइल-३ पुं० *[नागिल]*
दुष्प्रसहानगारसमये भविष्यति श्रावके, यदनुशिष्टो दुष्प्रसहोऽनगारः प्रव्रजिष्यति। महानि०।

णाइल-४ पुं० *[नागिल]*
भविष्यत्यनगारे सुमतिभ्रातरि, महानि०।

णाइल-५ पुं० *[नागिल]*
नागिलः-श्रमणोपासकः, चम्पायां सुवर्णकारकुमारनन्दिनो मित्रम्। आव० ।

णाइवं- त्रि० *[ज्ञातिवत्]*
ज्ञातिर्विद्यते यस्य स ज्ञातिवान्। स्वजनवति, 'मित्तवं णाइवं होइ।' उत्त० ४ अ०।

णाइविगट्ठ- त्रि० *[नातिविकृष्ट]*
अनत्यन्तदीर्घे, विपा० १ श्रु०३ अ०।

णाइसंग- पुं० *[ज्ञातिसङ्ग]*
मातापितृकलत्राऽऽदिसङ्गे, सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ०।

णाइसीय- त्रि० *[नातिशीत]*
न विद्यतेऽतिशयेन शीतं यत्र स नातिशीतः। अतिशीताऽऽबाधारहिते, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ०।

णाउं- अव्य० *[ज्ञात्वा]*
विज्ञायेत्यर्थे। विनिश्चित्येर्थे, आव०म० १ अ०१ ।

णाग-१ पुं० *[नाग]*
भवनपतिविशेषे, नाया०१श्रु०८अ०। जीवा०। उव०। अणुओ०।
नागकुमारे, नं०। भग०। नाया०। सम०।
हस्तिनि, भग० १२ श० ८ उ०।
नागवेशप्रसृते, उव०। नाया०। उत्त०। आव०। पन्न०।
सर्पे, उव०।

णाग-२ पुं० *[नाग]*
भद्रिलपुरे नगरे सुलसायाः श्राविकोत्तमायाः पत्यौ, आव०म०१ अ०२ । ठा०। अंत०। कल्प०। आव०।

णाग-३ पुं० *[नाग]*
आर्यरक्षस्य शिष्ये स्वनामख्याते आचार्ये, कल्प०८ क्षण०।

णाग-४ पुं० *[नाग]*
द्रुमविशेषे, रा०। कल्प० आचा०।

णाग-५ पुं० *[नाग]*
ध्रुवकरणानां चतुष्पदाऽऽदीनामन्यतमे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० । जंबू० । विशे० । कल्प० ।

णाग-६ पुं० *[नाग]*
स्वनामख्याते द्वीपभेदे, समुद्रभेदे च । सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।

णागकुमार- पुं० *[नागकुमार]*
नागाश्च ते कुमाराश्च नागकुमाराः । पन्न०१ पद० ।
द्वितीयभवनपतिषु, ठा० ३ ठा०४ उ० । पन्न० । सम० ।

णागकेउ- पुं० *[नागकेतु]*
चन्द्रकान्तानगरीराजविजयसेननृपसखश्रीकान्तव्यवहारिभार्यायाः श्रीसख्याः सुते, येन हि स्तनन्धयेनापि पर्युषणायामष्टमं तपश्चक्रे, (कल्प०) ।

णागकेसर- पुं० *[नागकेशर]*
स्वनामख्याते पुष्पप्रधाने वनस्पतौ । आव० ।

णागग्गह- पुं० *[नागग्रह]*
नागावेशोत्थे ज्वराऽऽदौ, जीवा०३ प्रति० ।

णागघर- न० *[नागगृह]*
उरगप्रतिमायुक्ते चैत्ये, नाया० १ श्रु०८ अ० ।

णागजण्ण- पुं० *[नागयज्ञ]*
नागपूजायाम्, नागोत्सवे, नाया०१ श्रु०८ अ० ।

णागजसा- स्त्री० *[नागयशस्]*
पन्थकपुत्र्यां ब्रह्मदत्तचक्रिभार्यायाम्, उत्त० १३ अ० ।

णागज्जुण- पुं० *[नागार्जुन]*
हिमवदाचार्याणां शिष्ये, । नं० ।

णागणिय-न० *[नाग्र्य]*
निर्ग्रन्थभावे संयमानुष्ठाने, सूय० १ श्रु० ७ अ०

णागदंत-१ पुं० *[नागदन्त]*
गजदन्ते, तदाकारे गृहान्निर्गते नकुण्टके, अङ्कुटके, जीवा० ३ प्रति० । रा० ।

णागदत्त-२ पुं० *[नागदत्त]*
स्वनामख्याते राजपुत्रे, स च पूर्वभवे क्षुल्लक साधुः कोपेन मृतो ज्यौतिष्केषूपपद्य ततश्च्युतो राजसुततयोत्पन्नः प्रव्रजितः कोपरूपं भावापायं परिहृत्य केवलीभूय सिद्धः । ठा०३ ठा०४ उ० । दश० ।

णागदत्त-३ पुं० *[नागदत्त]*
ऋषभपुत्राणामन्यतमे, कल्प०७ क्षण० ।

णागदत्त-४ पुं० *[नागदत्त]*
प्रतिष्ठानपुरवास्तव्यनागवसुश्रेष्ठिनः सुते । आव० । आव०चू० ।

णागदत्त-५ पुं० *[नागदत्त]*
नागदैवताऽऽराधनाल्लब्धे लक्ष्मीपुरवास्तव्यदत्तश्रेष्ठिपुत्रे ।आव० । आव०चू० । आव०म० ।

णागदत्त-६ पुं० *[नागदत्त]*
बलराजभार्यायाः सुभद्राया आत्मजस्य महाबलकुमारस्य पूर्वभवसत्कजीवे मणिनगरवास्तव्ये स्वनामख्याते नरे, विपा० २ श्रु०७ अ० ।

णागदार- न० *[नागद्वार]*
सिद्धायतनानां पश्चिमदिक्स्थे नागावासभूते द्वारे,ठा०४ ठा०२ उ०

णागधर- पुं० *[नागधर]* हस्तिधारकपुरुषे, उव० ।

णागपडिमा- स्त्री० *[नागप्रतिमा]*
नागदैवतप्रतिमायाम्, 'तेसि णं जिणपडिमाणं पुरओ दो दो नागपडिमाओ पण्णत्ताओ ।' जीवा० ३ प्रति० ।

णागपरियावणिया- स्त्री० *[नागपरिज्ञा]*
नागा नागकुमारास्तेषां परिज्ञा यस्यां ग्रन्थपद्धतौ सा नागपरिज्ञा । कालिकश्रुतभेदे, तस्याश्चेयं चूर्णिकृता उपदर्शिता भावना–'जाहे तमज्झयणं समणे णिग्गंथे परियट्टइ ताहे अकयसंकप्पस्स चित्ते नागकुमारा तत्थत्था चेव तं समणं परियाणंति वंदंति नमंसंति बहुमाणं च करेंति सिंगनादितकज्जेसु य वरदा भवंति ।' नं० ।

णागपव्वय-पुं० *[नागपर्वत]*
जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पश्चिमेन शीतोदाया महानद्या उत्तरेण वक्षस्कारपर्वते, ठा० ५ ठा० २ उ० ।
'दो णागपव्वया ।' ठा० २ ठा० ३ उ० । जंबू० ।

णागपुप्फ- न० *[नागपुष्प]*
नागकेशरकुसुमे, जंबू० ४ वक्ष० ।

णागपुर- न० *[नागपुर]*
हस्तिनापुरे राजधानीलक्षणे कुरुजनपदप्रधाननगरे, ठा० १० ठा० । नाया० ।

णागवल्ली- स्त्री० *[नागवल्ली]*
ताम्बूलीलतायाम्, आचा० १ श्रु० ८ अ० १ उ० ।

णागभद्द- पुं० *[नागभद्र]*
नागद्वीपाधिपतौ देवे, सूर० १९ पाहु० । । चंद० १९ पाहु० ।
नागद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ।

णागभूय- न० *[नागभूत]*
स्थविरादार्यरोहणान्निर्गतस्य उद्देहगणस्य प्रथमे कुले, कल्प० ८ ।

णागमह- पुं० *[नागमह]*
नागदेवताके उत्सवे, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० २ उ० ।

णागमहाभद्द- पुं० *[नागमहाभद्र]*
नागाऽऽख्यद्वीपाधिपतौ देवे, सूर० १९ पाहु० । चंद०१९ पाहु० ।

णागमहावर- पुं० *[नागमहावर]*
नागसमुद्राधिपतौ देवे, सूर० १९ पाहु० । । चंद०१९ पाहु० ।

णागमित्त- पुं० *[नागमित्र]*
आर्यमहागिरिशिष्याणामन्यतमे, ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

णागर- पुं०स्त्री० *[नागर]*
नगरवासिनि, कल्प० ३ क्षण०। आव०म०। पण्हा०।

णागराइ- पुं० *[नागराज]*
नागकुमारे, 'वेलंधरनागराईणं' सम० १७ सम०। ठा०।

णागरिय- त्रि० *[नागरिक]*
नगरधर्मेरुपयुक्ते, सूय० २ श्रु० ७ अ०।

णागरुक्ख- पुं० *[नागवृक्ष]*
स्वनामख्याते वृक्षभेदे, 'णागरुक्खे भुयंगाणं।' ठा० ८ ठा०। पन्न०। सम०।

णागलया- स्त्री० *[नागलता]*
तिर्यक्शाखाप्रसराभावाद् लताकल्पेषु द्रुमविशेषेषु, जंबू०१ वक्ष०। रा०। जीवा०। पन्न०।
यस्य तिर्यक् तथाविधा शाखा प्रशाखा वा न प्रसूता सा लतेत्य-भिधीयते। रा०। जीवा०। उव०। पन्न०।
वल्लीविशेषः। पन्न०।

णागलयामंडवग- पुं० *[नागलतामण्डपक]*
नागलतामयमण्डपके, जीवा०३ प्रति०।

णागवर- पुं० *[नागवर]*
प्रधानगजे, उव०। जंबू०।
गजवरे, तं०।
हस्तिप्रधाने, भग०९ श०३३ उ०।
नागसमुद्राधिपतौ देवे, सूर० १९ पाहु०। चंद०१९ पाहु०।

णागवसु- पुं० *[नागवसु]*
प्रतिष्ठानपुरे नागश्रियाः पत्यौ नागदत्तपित्तरि, आव०। आव०चू०

णागवाण- पुं० *[नागवाण]*
दिव्याश्वभेदे, जीवा०३ प्रति०।

णागवीही- स्त्री० *[नागवीथी]*
हयवीथ्यां, ऐरावणपदे, 'भरणीस्वात्याग्नेयं, नागाख्या वीथिरुत्तरे मार्गे।' ठा० ९ ठा०।

णागसहस्सी- स्त्री० *[नागसाहस्री]*
नागकुमारदेवसहस्रे, सम०७२ सम०।
नागिलभार्यायां निर्नामिकाया मातरि, आव०चू०। आव०म०।

णागसिरी- स्त्री० *[नागश्री]*
प्रतिष्ठाननगरवास्तव्यनागवसुश्रेष्ठिभार्यायां,नागदत्तमातरि,नाया० १ श्रु० १४ अ०।
चम्पानगरवास्तव्य सोमद्विजस्य भार्यायाम्, यथा धर्मरुचये विष-युक्तान्नं दत्तं पश्चाद् भवेषु भ्रान्त्वा द्रौपदीजन्म लब्धम्। आव०चू०

णागसुहुम- न० *[नागसूक्ष्म]*
स्वनामख्याते मिथ्यादृक्परिकल्पिते श्रुते, तच्चेदानीं नोपलभ्यते। अणुओ०।

णागसेण- पुं० *[नागसेन]*
उत्तरचावालायां जाते स्वनामके गृहपतौ, स च उत्तरचावालायां स्वामिनं क्षीरेण प्रतिलम्भितवान् पञ्च दिव्यानि जातानि। कल्प० ६ क्षण०। आव०म०। आव०चू०।

णागहत्थि- पुं० *[नागहस्तिन्]*
आर्यनन्दिलक्षणशिष्ये, । नं०।

णागिंद- पुं० *[नागेन्द्र]*
नागराजे नागकुमाराणामिन्द्रे, 'असुरिंदसुरिंदणागिंदा।' सम०। तदुत्पत्तिश्च महा दुर्भिक्षान्ते पोतद्वारा धान्य गमने जाते जिनदत्तः श्रावको नागेन्द्रनामपुत्रसहितो वज्रसेनसूरीणामन्तिके दीक्षां जग्राह, ततो नागेन्द्रशाखा प्रवृत्तेति भाति। कल्प० ८ क्षण०।

णागिल-१ पुं० *[नागिल]*
कुमारनन्दिनः स्त्रीलोलसुवर्णकारस्य मित्रे श्रमणोपासके, आव०म० १ अ० ।

णागिल-२ पुं० *[नागिल]*
गच्छविशेषाश्रितेषु साधुषु, कल्प०८ क्षण०।

णागिल-३ पुं० *[नागिल]*
यथा नागिला रजोहरणमूर्ध्वमुखं कृत्वा कायोत्सर्गं कुर्वन्ति। वव०१ उ०।

णागिल-४ पुं० *[नागिल]*
धातकीखण्डपूर्वविदेहेषु नन्दिग्रामपत्तौ ललिताङ्गदेवदेव्याः स्वयंप्रभायाः पूर्वभवजीव निर्नामिकायाः पितरि, आव०।

णागी- स्त्री० *[नागी]*
सर्पिण्याम्, मायाऽऽत्मिका नागी निकृतिकपटवञ्चनाकुशला। आव० ४ अ०।

णाडइज्ज- न० *[नाटकीय]*
नाटकप्रतिबद्धपात्रे, नाया०१ श्रु०१ अ०। विपा० ।

णाडइणी- स्त्री० *[नाटकिनी]*
नर्तक्याम्, बुह० ३ उ०।
तत्प्रतिपादके श्रुते च। ठा० ९ ठा०। संथा०। जंबू०। अणुओ०। आव०म०।

णाडग- न० *[नाटक]*
अभिनयविशेषे, बुह०।

णाडयविही– स्त्री० *[नाटकविधि]*
अभिनयप्रबन्धप्रपञ्चनप्रकारः। जंबू०।
नाटकविधिः । रा० ।

णाडीय- पुं० *[नाडीक]*
नाडीवद्यस्य फलानि स नाडीकः। वनस्पतिविशेषे, भग०१० श० ७ उ०।
वल्लीविशेषः। पन्न० ३२।

णाण- न० *[ज्ञान]*
ज्ञातिर्ज्ञानम्, अथवा ज्ञायते वस्तु परिच्छिद्यतेऽनेनेति ज्ञानम्, । नं० । अणुओ० । निसि० ।
विमर्शपूर्वके बोधे, उत्त०१ अ० ।
संविज्ञानमवगमो भावोऽभिप्राय इत्यनर्थान्तरम् ।आव०म०१ अ०
यथास्थितपदार्थपरिच्छेदने, आचा० १श्रु० ३अ० १ उ० । ठा० ।
द्रव्यपर्यायविषये बोधे, ठा०३ ठा०२ उ० ।
विशेषावबोधे, उव० ।
स्वपरपरिच्छेदिनि जीवस्य परिणामे ज्ञानाऽऽवरणविगमव्यक्ते तत्त्वार्थपरिच्छेदे, आचा० १श्रु० १अ० ६उ० । ठा० । उव० ।
ज्ञानं-श्रुतज्ञानम् । ठा० ।

णाणंतराय- पुं० *[ज्ञानान्तराय]*
श्रुतस्य तद्ग्रहणाऽऽदौ विघ्ने भग० ८ श० ९ उ० ।

णाणकप्प- पुं० *[ज्ञानकल्प]*
श्रुतज्ञानविषयके कल्पे, पंच०भा० ।

णाणकसायकुसील- पुं० *[ज्ञानकषायकुशील]*
ज्ञानमाश्रित्य कषायकुशीले, भग० २५ श० ६ उ० ।

णाणकुसील- पुं० *[ज्ञानकुशील]*
गुरुकज्ञानाऽऽवरणोदयेनाहर्निशं प्रधर्षयति कुत्सितशीले,महानि०

णाणगुण- पुं० *[ज्ञानगुण]*
जीवाऽऽश्रिते ज्ञा तदविनाभाविनि पर्यये ज्ञानमाहात्म्ये,आव०४।

णाणच्चासायणा- स्त्री० *[ज्ञानात्याशातना]*
ज्ञानस्य ज्ञानिनां वा हील नायाम्, भग०८ श०९ उ० ।

णाणट्ठया- स्त्री० *[ज्ञानार्थता]*
ज्ञानमेवार्थो यस्य स ज्ञानार्थस्तद्भावस्तत्ता । ज्ञानार्थित्वे, ठा०५ ठा०२ उ० ।

णाणड्ढ- त्रि० *[ज्ञानाढ्य]*
बह्वागमे, जीवा०१६ अधि० ।

णाणड्ढि- स्त्री० *[ज्ञानर्द्धि]*
पभू णं भंते ! चोद्दसपुव्वी ।'अन्नाणी कम्मं' इत्यादि रूपायामृद्धौ, दश० ३ अ० ।

णाणणय- पुं० *[ज्ञाननय]*
ज्ञानमेव प्रधानमैहिकाऽऽमुष्मिकफलप्राप्तिकारणं युक्तियुक्तत्वात् इति सिद्धान्तव्यवस्थिते नये, आव० ६ अ० ।

णाणणिण्हवया- स्त्री० *[ज्ञाननिह्नवता]*
श्रुतस्य श्रुतगुरूणां वाऽपलपने, भग० ८ श० ९ उ० ।

णाणणिव्वत्ति- स्त्री० *[ज्ञाननिर्वृत्ति]*
ज्ञानस्य आभिनिबोधिकादितया निष्पत्तौ, सा चाभिनिबोधिका-ऽऽदिभेदेन पञ्चविधा। यस्य यावन्ति ज्ञानानि तस्य तावती। भग० २० श० ५ उ० ।

णाणतह- न० *[ज्ञानतत्थ]*
मत्यादिकेन ज्ञानपञ्चकेन यथास्वमवितथे विषयोपलम्भे, सूय० १ श्रु० १३ अ० ।

णाणत्त- न० *[नानात्व]*
नानाभावो नानात्वम् । वर्णाऽऽदिकृते वैचित्र्ये, पन्न०१५ पद० । भग० । निसि० । वव० । ठा० ।

णाणत्ता- स्त्री० *[नानाता]*
नानाभावो नानाता । विशेषे, आव०म०१ अ०२ ।

णाणत्ता- पुं० *[ज्ञानात्मन्]*
ज्ञानविशेषत उपसर्जनीकृतदर्शनाऽऽदिरात्मा ज्ञानाऽऽत्मा । सम्य-ग्दृष्टेरात्मनि, भग०१२ श०१० उ० ।

णाणदंसण- न० *[ज्ञानदर्शन]*
ज्ञानं च दर्शनं च, ज्ञानेन वा दर्शनं ज्ञानदर्शनम् । ज्ञानदर्शनयुग्मे, ‘अत्थि णं मम अइसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने ।’ ठा०७ ठा० ।

णाणदंसणलक्खणा- स्त्री० *[ज्ञानदर्शनलक्षणा]*
ज्ञानं च दर्शनं च लक्षणं स्वरूपं यस्याः सा ज्ञानदर्शनलक्षणा। सम्यग् ज्ञान सम्यग् दर्शनरूपायां मोक्षमार्गगतौ, ‘मोक्खमग्गगइं तत्थं, सुणेह जिणभासियं । चउकारणसंजुत्तं, नाणदंसणलक्खणं उत्त० २८ अ० ।

णाणदंसणसमग्ग- त्रि० *[ज्ञानदर्शनसमग्र]*
ज्ञानदर्शनाभ्यां पूर्णे, ‘तत्तो णाणदंसणसमग्गे’ उत्त० ८ अ० ।

णाणदाण- न० *[ज्ञानदान]*
श्रुतज्ञाने, ‘अन्येभ्यो भव्यवर्गेभ्योऽध्यापनश्रावणाऽऽदिभिः। यद्दानमागमस्यैतज्ज्ञानदानमुदाहृतम्’ । गच्छा०२ अधि० ।

णाणधण- त्रि० *[ज्ञानधन]*
ज्ञानवित्ते विपश्चिति, आव०४ अ० ।

णाणपज्जव- पुं० *[ज्ञानपर्याय]*
ज्ञानविशेषे बुद्धिकृतेऽविभागपलिच्छेदे, भग०२ श०१ उ० ।

णाणपडिणीयया-स्त्री० *[ज्ञानप्रत्यनीकता]*
ज्ञानस्य श्रुताऽऽदेः तत्साधनस्य पुस्तकाऽऽदेः तदभेदाद् ज्ञानवतां वा सामान्येन प्रतिकूलतायाम्, भग०८ श०९ उ० ।

णाणपडिसेवणाकुसील- पुं० *[ज्ञानप्रतिसेवनाकुशील]*
ज्ञानस्य प्रतिसेवनया कुशीलो ज्ञानप्रतिसेवनाकुशीलः। प्रतिसेवनाकुशीले, भग० २५ श०६ उ० ।

णाणपरिणाम- पुं० *[ज्ञानपरिणाम]*
ज्ञानलक्षणे जीवपरिणामे, पन्न० १५ पद० ।

णाणपरीसह- पुं० *[ज्ञानपरीषह]*
ज्ञानं मत्यादि तत्परीषहणं च ज्ञानपरीषहः। विशिष्टस्य ज्ञानस्य सद्भावे मदवर्जने अभावे, दैन्यवर्जने, ग्रन्थान्तरे त्वज्ञानपरीषह इति पठ्यते, तथैवास्माभिर्दर्शितम् । भग०८ श०८ उ० ।

णाणपायच्छित्त- न० *[ज्ञानप्रायश्चित्त]*
पापं छिनत्तीति। प्रायश्चित्तभेदे, ठा०३ ठा०४ उ०।

णाणपुरिस- पुं० *[ज्ञानपुरुष]*
ज्ञानलक्षणभावप्रधाने पुरुषे, ठा०३ ठा०१ उ०।

णाणपुलात– पुं० *[ज्ञानपुलाक]*
पुलाकस्य प्रथमो भेदः, ज्ञाननिस्सारत्वं य उपैति स पुलाकः। उत्त० २५६।
स्खलित-मिलितादिभिरतिचारैर्ज्ञानमाश्रित्यात्मानं असारं कुर्वन् ज्ञान-पुलाकः। ठा०।

णाणपेज्जदोष- न० *[नानाप्रेमदोष]*
प्रेम च द्वेषश्च प्रेमद्वेषं, नानाप्रकारं प्रेमद्वेषं नानाप्रेमद्वेषम्। अविनयभेदे, ठा० ३ ठा०३ उ०

णाणप्पओस- पुं० *[ज्ञानप्रद्वेष]*
श्रुताऽदौ ज्ञाने, ज्ञानवत्सु वाऽप्रीतौ, भग०८ श०९ उ०।

णाणप्पयार- त्रि० *[नानाप्रकार]*
विचित्रे, सूय० १ श्रु० १३ अ०। आव०।

णाणप्पवाय- न० *[ज्ञानप्रवाद]*
यत्र ज्ञानं मत्यादिकं स्वरूपभेदाऽऽदिभिः प्रोच्यते तज्ज्ञानप्रवादम्। सम०। ठा०।
ज्ञानं ज्ञानाऽऽदिभेदभिन्नं पञ्चप्रकारं तत्सप्रपञ्चं वदति। नं०।
ज्ञानस्य मतिज्ञानाऽऽदिपञ्चकस्य भेदप्ररूपणा यस्मात् तज्ज्ञान-प्रवादम्। चतुर्दशानां पूर्वाणां पञ्चमे, सम०। ठा०।
तस्य पदपरिमाणमेकापदकोटी। नं०।
'नाणप्पवायस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता'। सम०।

णाणफल- त्रि० *[ज्ञानफल]*
ज्ञानं फलं येषां तानि ज्ञानफलानि। श्रुतज्ञानाऽऽराधनाऽऽदिषु कर्मसु, उत्त० २ अ०।

णाणबल- न० *[ज्ञानबल]*
ज्ञानबलमतीताऽऽदिवस्तुपरिच्छेदसामर्थ्यम्, चारित्रसाधनतया मोक्षसाधनसामर्थ्यं वा तस्मिन्। ठा० १० ठा०।

णाणबोहि- पुं० *[ज्ञानबोधिन्]*
ज्ञानाऽऽवरणक्षयोपशमभूता ज्ञानप्राप्तिः। ठा०२ ठा०४ उ०।

णाणभट्ठ- त्रि० *[ज्ञानभ्रष्ट]*
सदसद्विवेकभ्रष्टे, आचा०१ श्रु० ६ अ०४ उ०।

णाणभाव- पुं० *[ज्ञानभाव]*
अधिगमे उपयोगे, निसि०२० उ०।

णाणभावणा- स्त्री० *[ज्ञानभावना]*
ज्ञानस्य भावना ज्ञानभावना। एवंभूतं मौनीन्द्रं ज्ञानप्रवचनं यथाऽवस्थिताशेषपदार्थाविर्भावकमित्येवंरूपायां भावनायाम्, आचा० २ श्रु०३ चू०१ अ०१ उ०।

णाणमंत- त्रि० *[ज्ञानवत्]*
ज्ञानशालिनि, निसि०१ उ०।

णाणमय- पुं० *[ज्ञानमद]*
आत्मनो विज्ञत्वहेतुकेऽहङ्कारे, 'ज्ञानं मददर्पहरं, माद्यति यस्तेन तस्य को वैद्यः ? अगदो यस्य विषायति, सूय०१ श्रु०१३ अ०।

णाणमय- त्रि० *[ज्ञानमय]*
ज्ञानाऽऽत्मके, आव०४ अ०।

णाणमूढ- पुं० *[ज्ञानमूढ]*
उदितज्ञानाऽऽवरणे, ठा०२ ठा०४ उ०।

णाणमोह- पुं० *[ज्ञानमोह]*
ज्ञानविषयके मोहे, ठा०२ ठा०४ उ०।

णाणवल- न० *[ज्ञानबल]*
अतीताऽऽदिवस्तुपरिच्छेदसामर्थ्ये, ठा० १० ठा०।

णाणवाइ- त्रि० *[ज्ञानवादिन्]*
यथाऽवस्थितवस्तुपरिज्ञानादेव मोक्ष इत्येवंवादिनि,। सूय० १ श्रु० ६ अ०।

णाणवि- त्रि० *[ज्ञानिवत्]*
ज्ञानं यथाऽवस्थितपदार्थपरिच्छेदकं तद्वेत्तीति ज्ञानवित्। ज्ञान-वेत्तरि, 'से आयवि णाणवि' आचा० १ श्रु०३ अ०१ उ०।

णाणविणय- पुं० *[ज्ञानविनय]*
ज्ञानमाभिनिबोधिकाऽऽदि पञ्चधा, तदेव विनयो, ज्ञानस्य वा विनयो भक्त्यादिकरणं ज्ञानविनयः। ठा० ७ ठा०।
ज्ञानानां श्रद्धानभक्तिबहुमानतद् दृष्टार्थभावनाविधिग्रहमत्यादि-नाऽभ्यासे, भग० २५ श०७ उ०।
ज्ञानविनयः पञ्चधा, ज्ञानस्य पञ्चविधत्वात्। उव०।

णाणविणयपरिहीण- त्रि० *[ज्ञानविनयपरिहीन]*
ज्ञानाऽऽचारपरिहीने, चंद० २० पाहु०।।

णाणविराहणा- स्त्री० *[ज्ञानविराधना]*
निह्नवाऽऽदिरूपायां ज्ञानप्रत्यनीकतायाम्, सम०१ सम०।

णाणविसंवायणाजोग- पुं० *[ज्ञानविसंवादनायोग]*
ज्ञानस्य ज्ञानिनां वा व्यभिचारदर्शनाय व्यापारे, भग०८ श०९ उ०

णाणविसोहि- स्त्री० *[ज्ञानविशुद्धि]*
ज्ञानाऽऽचारपरिपालनतो ज्ञानस्य विशुद्धौ, ठा०१० ठा०।

णाणवुड्ढ- पुं० *[ज्ञानबुद्ध]*
ज्ञानेन प्रतिबुद्धे, ठा०२ ठा०४ उ०।

णाणसंका- स्त्री० *[ज्ञानशङ्का]*
श्रुतज्ञानविषयकशङ्कायाम्, सूय०१ श्रु०१३ अ०।

णाणसंपण्ण- पुं० *[ज्ञानसंपन्न]*
श्रुतसंपन्ने, स च दोषविपाकं प्रायश्चित्तं, चाऽवगच्छतीति आलो-चनाऽर्हतयोक्तः। ठा० ८ ठा०।

णाणसंपण्णया- स्त्री० *[ज्ञानसंपन्नता]*

श्रुतज्ञानसहितत्वे, । उत्त० ।

णाणसमाहि- पुं० *[ज्ञानसमाधि]*

अपूर्वश्रुतावगाहनपूर्वकभावसमाधौ, 'जह जह सुयमवगाहइ, अइसयरसपसरसं जुयमउव्वं। तह तह पल्हाइ मुणी, णवणवसंवेगसद्धाए। सूय० १ श्रु०१० अ०।

णाणसिद्ध- पुं० *[ज्ञानसिद्ध]*

भवस्थकेवलिनि, दश०४ अ०।

णाणा- अव्य० *[नाना]*

'णाणादुमलयाऽऽइन्नं,णाणापक्खिणिसेविअं। णाणाकुसुमसंछन्नं उज्जाणं णंदणोवमं। नाना द्रुमलताकीर्णं विविधवृक्षवल्लीभिर्व्याप्तम्। उत्त० २० अ०। सूय०। रा०। सम०।

णाणाछंद- त्रि० *[नानाछन्द]*

नाना भिन्नश्छन्दोऽभिप्रायो येषां ते तथा। भिन्नाभिप्रायेषु, सूय० २ श्रु० २ अ०।

णाणादिट्ठि- त्रि० *[नानादृष्टि]*

नानारूपा दृष्टिर्दर्शनं येषां ते तथा। सूय०२ श्रु०१ अ०१ उ०। नानारूपा दृष्टिरन्तःकरणप्रवृत्तिर्येषां ते तथा। सर्वज्ञप्रणीताऽऽगमानाश्रयणान्निबन्धनाभावाद् भिन्नदर्शनेषु, सूय०२ श्रु०२ अ०

णाणापन्न- त्रि० *[नानाप्रज्ञ]*

नानाप्रकारा विचित्रक्षयोपशमात् प्रज्ञायतेऽनयेति प्रज्ञा, सा विचित्रा येषां ते तथा। नानामतिषु, सूत्र० २ श्रु०२ अ०।

णाणापिंडरय- त्रि० *[नानापिण्डरत]*

नाना अनेकप्रकाराभिग्रहविशेषात् प्रतिगृहमल्पाल्पग्रहणाच्च पिण्ड आहारपिण्डः, नाना चासौ पिण्डश्च नानापिण्डः, अन्त-प्रान्ताऽऽदि वा। तस्मिन् रता नानापिण्डरताः। नानापिण्डेऽनु-द्वेगवत्सु, णाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो। दश०१ अ०

णाणाभिगम- पुं० *[ज्ञानाभिगम]*

मत्यादिज्ञानेन बोधे, ठा०३ ठा० २ उ०।

णाणामणि- पुं० *[नानामणि]*

नानाप्रकारेषु मणिषु, रा०।

णाणामल्ल- न० *[नानामाल्य]*

नानारूपे पुष्पे, जीवा०३ प्रति०४ उ०

'नानामल्लपिणद्धा।' नानारूपाणि माल्यानि पुष्पाणि पिनद्धानि आविद्धानि यासां ता नानामाल्यपिनद्धाः। क्तान्तस्य पर निपातः, सुखाऽऽदिदर्शनात्। रा०।

णाणायार- पुं० *[ज्ञानाचार]*

ज्ञानं श्रुतज्ञानं, तद्विषय आचारः। सम० २३ सम०।

श्रुतज्ञानविषये कालाध्ययनविनयाध्यापनाऽऽदिरूपे व्यवहारे, सम० १ सम।

णाणारंभ- त्रि० *[नानाऽऽरम्भ]*

नानाप्रकार आरम्भो धर्मानुष्ठानं येषां ते नानाऽऽरम्भाः। विभिन्नधर्मकेषु, सूय० २ श्रु०१ अ०।

कृषिपाशुपाल्यविपणिशिल्पिकर्मसेवाऽऽदिषु अन्यतराऽऽरम्भक-र्तरि , सूय० २ श्रु० २ अ०।

णाणाराहण- न० *[ज्ञानाऽऽराधन]*

'नाणाराहणा तिविहा पण्णत्ता। तं जहा–उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा।' ठा० ३ ठा० ४उ०।

णाणारिय- पुं० *[ज्ञानार्य]*

ज्ञानेन आर्यत्वहेतुना। आर्यभेदे, पन्न० १ पद०।

आभिनिबोधिकाऽऽदिभेदात् पञ्चविधा ज्ञानार्याः। पन्न० १ पद०।

णाणारुइ- त्रि० *[नानारुचि]*

नानारूपा रुचिः चेतोऽभिप्रायो येषां ते तथा। सूय०२ श्रु०१ अ०।

विभिन्नाभिप्रायेषु, आहारविहारशयनाऽऽसनाऽऽच्छादनाऽऽभरण यानवाहनगीतवादित्राऽऽदिषु मध्येऽन्यस्यान्या रुचिर्भवति। सूय० २ श्रु०२ अ०।

णाणावरण- न० *[ज्ञानाऽऽवरण]*

सामान्यविशेषाऽऽत्मके वस्तुनि विशेषग्रहणाऽऽत्मकस्य बोधस्य मतिश्रुतावधिमनः पर्यायकेवललक्षणस्य स्वप्रभावत आच्छादके अष्टानां कर्मणां प्रथमे, उत्त०। बृह०।

ज्ञानाऽऽवरणं पञ्चधा– मतिज्ञानाऽऽवरणं, श्रुतज्ञानाऽऽवरणम्, अवधिज्ञानाऽऽवरणं, मनःपर्यायज्ञानाऽऽवरणं, केवलज्ञानाऽऽ-वरणं च। आव० म०।

णाणावरणिज्ज- न० *[ज्ञानाऽऽवरणीय]*

ज्ञानमावृणोतीति ज्ञानाऽऽवरणीयम्। ज्ञानाऽऽवरणकर्मणि, 'सरउग्गयससिणिम्मलतरस्स जीवस्स छायणं जमिह। नाणाऽऽ-वरणं कम्मं, पडोवमं होइ एवं तु । ठा० २ ठा० ४ उ०।

णाणावरणोदय- पुं० *[ज्ञानाऽऽवरणोदय]*

तत्काले ज्ञानाऽऽवरणीयकर्मविपाके, आव०४ अ०।

णाणाविह- त्रि० *[नानाविध]*

विविधप्रकारे, तं०। रा०।

बहुप्रकारे, सूय०२ श्रु०३ अ०।

नानाविधो नानाप्रकारो रागो येषां तानि नानाविधरागाणि, तान्येव वसनानि वस्त्राणि संवृततया यासां ता नानाविध-रागवसनाः। जीवा० ३ प्रति० ४ उ०। आचा०। रा०।

'णाणाविहपंचवण्णेहिं उवसोभिए।' नानाविधा जातिभेदाद् नानाप्रकारा ये पञ्चवर्णा मणयस्तैरुपशोभितः।आव०म०१।पन्न० प्रत्यासन्नेनीनाप्रकारैर्गुच्छैर्वृन्ताकीप्रभृतिभिर्गुल्मैर्नवमल्लिकाऽऽ-दिभिर्मण्डपैर्द्राक्षाऽऽदिमण्डपकैरुपशोभिता नानाविधगुच्छगुल्म-मण्डपकशोभिता जीवा० ३ प्रति० ४ उ०।

'णाणाविहरागरंजितउच्छितज्झयविजयवेजयंतीपडागातिपडाग-मंडितं करेंति।' नानाविधा रागा येषु ते नानाविधरागाः, नानाविधरागैरुच्छ्रितैरूर्ध्वीकृते ध्वजैः पताकाऽतिपताकाऽऽदि-भिश्च माण्डतां कुर्वन्ति। जीवा०३ प्रति०४ उ०।

'णाणामणिकणगरयणखइयउज्जलबलबहुसमसुविभत्तनिचि त-रमणिज्जकुट्टिमतला।' नानामणिकनकरत्नानि खचितानि यत्र स नानामणिकनकरत्नखचितः, निष्ठान्तस्य परनिपातो भार्याऽऽ-दिदर्शनात्। तथोज्ज्वलो निर्मलो बहुसमोऽत्यन्तसमः सुविभक्तो निचितो निविडो रमणीयश्च भूमिभागो यस्यां सा । जीवा० ३ प्रति०। रा०।

नानाविधै रागैर्भूषिता ये ध्वजाः सिंहाऽऽदिरूपोपलक्षिता बृहत्यः प्रताकाश्च लध्वास्ताभिर्मण्डितं विभूषितम्। कल्प०५ क्षण०।

णाणासील- त्रि० *[नानाशील]*

नानाप्रकारं शीलमनुष्ठानं येषां ते तथा। अनेकाऽऽचारेषु, सूय०२ श्रु०१ अ०।

परतीर्थिका नाना शीलाः, तत्र शीलं व्रतविशेषः, स च भिन्नस्तेषामनुभवसिद्ध एव। सूय०२ श्रु०२ अ०।

णाणाहुइमंतपयाभिसित्त- त्रि० *[नानाऽऽहुतिमन्त्रपदाभिषिक्त]*

आहुतयो घृतप्रक्षेपाऽऽदिलक्षणाः मन्त्रपदान्यग्नये स्वाहा इत्येव-मादीनि, तैरभिषिक्तम्। दीक्षासंस्कृते, दश० ९ अ०१ उ०।

णाणि- त्रि० *[ज्ञानिन्]*

ज्ञानं सकलपदार्थाऽऽविर्भावकं विद्यते यस्या सौ ज्ञानी। आचा०१ श्रु०४ अ०२ उ०।

विशिष्टविवेकवति, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ०। निसि०। पन्न०।

परमार्थविदि, आचा०१ श्रु०३ अ०३ उ०। सूय०।

जीवस्वरूपतद्वन्धकर्मवेदिनि, सूय०१ श्रु० ११ अ०

'णाणी तु तिहिं गुत्तो, खेवइ ऊसासमित्तेणं।' सूत्र० २ श्रु० ५ अ०। अणुओ०। उत्त०। जं अन्नाणी कम्मं, खेवइ बहुआइं वास-कोडीहिं। तं नाणी तेहिं ती, खेवइ ऊसासमेत्तेणं । संथा०।

णाणिंद- पुं० *[ज्ञानेन्द्र]*

श्रुताऽऽद्यन्यतरज्ञानवशविवेचितवस्तुविशरे केवलिनि, ठा० २ ठा० ४ उ०।

ज्ञानेन ज्ञानस्य ज्ञाने वा इन्द्रः परमेश्वरो ज्ञानेन्द्रः अतिशयव-च्छुताद्यत्रज्ञान्तरवशविवेचितवस्तुविस्तारः-केवली वा। ठा०।

णाणिड्ढी– स्त्री० *[ज्ञानर्द्धि]*

विशिष्टश्रुतसम्पत्। ठा० १७३।

णाणुप्पायमहिमा- स्त्री० *[ज्ञानोत्पादमहिमन्]*

तीर्थकृतां केवलज्ञानोत्पादे च कृतमहोत्सवे, ठा०३ ठा०१ उ०।

णाणोवघाय-पुं० *[ज्ञानोपघात]*

प्रमादतः श्रुतज्ञानोपघाते, ठा० १० ठा०

णात-१ त्रि० *[ज्ञात]*

दृष्टान्ते, निसि०१० उ०।

आहरणे, निसि०१५ उ०। अणुओ०।

निदर्शने, नाया०।

उदाहरणे, ज्ञाताध्ययने, नं०। सूय०।

णात-२ त्रि० *[ज्ञात]*

आगमिते, पण्हा०५ अ०।

ज्ञातमागमितमित्येकार्थम्। वव० ३ उ०।

णात-३ त्रि० *[ज्ञात]*

सम्यक् परिच्छिन्ने, । आव०६ अ०। आचा०।

विदिते, सूय०१ श्रु०६ अ०।

णात-४ त्रि० *[ज्ञात]*

उदारक्षत्रिये, बुह०१ उ० आचा०। उत्त०। पण्हा०।

क्षत्रियविशेषे, । सूय०१ श्रु०६ अ०। ठा०। आचा०।

णात-५ त्रि० *[ज्ञात]*

इक्ष्वाकुवंशविशेषभूते, नाया०१ श्रु०८ अ०।

श्रीऋषभदेवजातीये । कल्प०५ क्षण०।

यद्वंशे श्रीवीरस्वामी जज्ञे। ठा०६ ठा०।

ज्ञातपुत्रे, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०। आव०चू०।

णात- न० *[ज्ञात]*

ज्ञायतेऽस्मिन् सति दार्ष्टान्तिकोऽर्थ इति ज्ञातम्। दृष्टान्ते, ठा०।

णातकुमार- पुं० *[ज्ञातकुमार]*

राज्यार्हे ज्ञातक्षत्रियकुमारे, नाया० १ श्रु०८ अ०।

णातकुलचंद- पुं० *[ज्ञातकुलचन्द्र]*

ज्ञातकुले चन्द्र इव।महावीरस्वामिनि, कल्प०५ क्षण०। आचा०।

णातखंड- न० *[ज्ञातखण्ड]*

स्वनामख्याते वने, यत्र महावीरस्वामी प्रव्रजितः। ठा०१० ठा०। आव०चू०।

णातपुत्त- पुं० *[ज्ञातपुत्र]*

ज्ञातः सिद्धार्थः तस्य पुत्रः। कल्प० ५ क्षण

सिद्धार्थकक्षत्रियपुत्रे श्रीमहावीरे, 'णातपुत्ते महावीरे, एवमाह जिणुत्तमे।' सूय० १ श्रु०१ अ०१ उ०।

णाति- स्त्री० *[ज्ञाति]*

स्वजने, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ०।

णादिय- त्रि० *[नादित]*

लपिते, जीवा०३ प्रति०४ उ०।

णाभि-१ पुं० *[नाभि]*

शकटरथाङ्गे, दश०७ अ०।

णाभि-२ पुं० *[नाभि]*

जठरस्य मध्यावयवे, उत्त०२ अ०।

णाभि-३ पुं० *[नाभि]*
अस्यामवसर्पिण्यां भरतक्षेत्रजे प्रथमकुलकरे ऋषभदेवपितरि, आव०१ अ० । निर० । आचा० । आव०म० । जंबू० । ठा० ।

णाभिप्पभव- त्रि० *[नाभिप्रभव]*
नाभिरुत्पन्ने, तं० ।

णाभिरसहरणी- स्त्री० *[नाभिरसहरणी]*
नाभिनाले, तं० ।

णाम- पुं० *[नाम]*
नमनं नामः । परिणामे, भावे, । भग० ।

णाम-१ अव्य० *[नामन्]*
अलंकृतौ, पण्हा०१ अ० ।
वाक्यालङ्कारे, ठा० ४ ठा०१ उ० । सूय० । दश० ।
पादपूरणे, । विपा० । निसि० ।

णाम-२ अव्य० *[नामन्]*
शिष्याऽऽमन्त्रणे, जंबू०१ वक्ष० । विशे० । जीवा० ।
कोमलाऽऽमन्त्रणे, बुह०३ उ० । तं० । विशे०
संभावनायाम्, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० । आचा० । ठा० । नाया० । अणुओ० । विशे० । दशा० । भग० ।

णाम-३ अव्य० *[नामन्]*
प्रसिद्धौ, कल्प० ९ क्षण०
अभ्यनुज्ञायाम्, विशे० ।
याद्दच्छिकाभिधाने, नाया० १श्रु० १अ० ।

णामकम्म- न० *[नामकर्मन्]*
कर्मभेदे, नामकम्मे दुविहे पन्नत्ते- तं जहा- सुभनामे चेव, असुभनामे चेव । ठा० २ ठा० ४ उ०

णामकरण- न० *[नामकरण]*
अभिधानमात्रकरणे, आव०म०१ अ०२ ।

णामगुत्त- न० *[नामगोत्र]*
नाम्ना गोत्रमिति प्रसिद्धं यत्कर्म गोत्राऽभिधानं कर्मेत्यर्थः । कल्प०२ क्षण० ।
अन्वर्थयुक्ते नाम्नि, इहा न्वर्थयुक्तं नाम सिद्धान्तपरिभाषया नामगोत्रमित्युच्यते । सूर० १९ पाहु० । रा० ।

णामणय- पुं० *[नामनय]*
नामरूपमेव सर्वं वस्त्वित्येवं सिद्धान्तं व्यवसिते नये, विशे० ।

णामणिप्फण्ण- पुं० *[नामनिष्पन्न]*
गौणाऽऽदिनामनिष्पन्नं । दश० । निसि०१ उ० ।

णामधेज्ज- न० *[नामधेय]*
नामैव नामधेयम् । सूर० १० पाहु०, १३ पाहु० । पण्हा० । ठा० ।
प्रशस्ते नामनि, ठा० ९ ठा० । दश० । निसि० । नं० । नाया० ।
पर्यायध्वनौ, अणुओ० ।

णामधेज्जवई- स्त्री० *[नामधेयवती]*
प्रशस्तनामधेयवत्याम्, नाया० १ श्रु० १ अ० ।

णामपुरिस- पुं० *[नामपुरुष]*
संज्ञामात्रेण पुरुषे, सूय० १ श्रु० ४ अ०१ उ० ।
पुरुषेतिनाम्नि, ठा० ३ ठा० १ उ० ।

णामप्पमाण- न० *[नामप्रमाण]*
अर्थाभिधायके शब्दे, । अणुओ० ।

णाममुद्दा- स्त्री० *[नाममुद्रा]*
नामाङ्कितायां मुद्रायाम्, उवा०१ अ० ।

णामय- पुं० *[नामक]*
विनयालङ्कृतो गुर्वादावादेशदानोद्यतेऽगदा वाऽऽत्मानं नामयतीति नामकः । सदा गुर्वादौ प्रह्वे साधौ वा, सूय० १ श्रु० १६ उ० ।

णामवग्ग- पुं० *[नामवर्ग]*
नामप्रकृतिसमुदाये, जीवा०२ प्रति० ।

णामवीर- पुं० *[नामवीर]* .
यस्य जीवस्याजीवस्य वाऽन्वर्थरहितं इति नाम क्रियते स नामवीरः । नामनामवतोरभेदाद् तस्नौ वीरश्च नामवीरः । वीरभेदे, सूर० २ पाहु० । ।

णामसम- न० *[नामसम]*
नामाभिधानं, तेन समम् ।गच्छा०४अधि० ।आव०म० ।आव०चू०
स्वकीयेन नाम्ना समे, यथा स्वनाम शिक्षितं तथा तदप्याव-श्यकम् । विशे० ।

णामसव्व- न० *[नामसर्व]*
नाम च तत्सर्वं च नामसर्वम् । सचेतनाऽऽदेर्वा वस्तुनो यस्य सर्वमिति नाम तन्नामसर्वम्, नाम्ना सर्वं, सर्वमिति वा नाम यस्येति विग्रहाद् नामशब्दस्य पूर्वनिपातः । ठा० ४ ठा० २ उ० ।

णामसुह- न० *[नामशुभ]*
तीर्थकराऽऽदिसंबन्धिनि नामकर्मणि, दश०१ अ० ।

णामाणंतय- न० *[नामानन्तक]*
अनन्तकमिति नामभूतायां वर्णानुपूर्व्याम्, यस्य वा सचेतना-ऽऽदेर्वस्तुनोऽनन्तकमिति नाम तस्मिन्, ठा० १० ठा० ।

णामित्ता- स्त्री० *[नमयित्वा]*
नतिं कारयित्वेत्यर्थे, निसि० १ उ० ।

णामिय- न० *[नामिक]*
वाचके पदे, यथा ‘अश्व’ इत्यादि ।आव०म० १ अ० । अणुओ० ।

णामिंद- पुं० *[नामेन्द्र]*
यथार्थसंज्ञे इन्द्रे, अथवा–इन्द्रार्थशून्यत्वाद् नाममात्रे इन्द्रे, बुह० ।
केवला एका संज्ञा तदर्थनिरपेक्षा, स नामेन्द्रः ।बुह० १उ० । ठा०

णामुदय- पुं० *[नामोदय]*
कालोदाय्यादीनामन्ययूथिकानामन्यतमेऽन्ययूथिके ।भग०७श०

णाय- पुं० *[न्याय]*
नितरामीयते गम्यते मोक्षोऽनेनेति न्यायः। व्यवहाराध्ययने, वव०१ उ०।
श्रुतोपदेशे, वव० ३ उ०।
अभीष्टार्थ-सिद्धेः सम्यगुपायत्वाद् न्यायः। अथवा–जीवकर्म-संबन्धापनयनाद् न्यायः। अणुओ०। विशे०।
योऽयं लोकसंयोगातिक्रम एष न्यायः– एष सन्मार्गो मुमुक्षूणामयमाचारः प्रोच्यतेऽभिधीयते। यो हि त्यक्तलोकसंयोग एष एव परात्मनो मोक्षस्य न्यायः। आचा०१ श्रु०२ अ०६ उ०।
द्विजक्षत्रियविट् शूद्राणां स्ववृत्त्यनुष्ठाने, आव०६ अ०।
'णात' शब्दार्थे (दृष्टान्ते) निसि० १० उ०।

णायकारि- त्रि० *[न्यायकारिन्]*
उपपत्तिकारिणि, 'एवं आलोइय पडिक्कंतस्स जो सामाइयं देति सो णायकारी' आव०चू० १ अ०

णायकुमार- पुं० *[ज्ञातकुमार]*
'णातकुमार' शब्दार्थे, नाया० १ श्रु०८ अ०।

णायकुलचंद- पुं० *[ज्ञातकुलचन्द्र]*
'णातकुलचंद' शब्दार्थे, कल्प० ५ क्षण०।

णायखंड- न० *[ज्ञातखण्ड]*
'णातखंड' शब्दार्थे, ठा० १० ठा०।

णायग- पुं०स्त्री० *[ज्ञातक]*
पूर्वसंस्तुते, वव०९ उ०।
मातापित्रादौ, सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ०।
स्वजने, प्रज्ञायमाने, निसि० ८ उ० । सूय०।

णायग-१ त्रि० *[नायक]*
प्रभौ, यथा राष्ट्रस्य राष्ट्रमहत्तरकः सम०३० सम०। दशा०।
नगरकटकाऽऽदिप्रधाने, उव०।
अधिपतौ, ठा० ५ ठा० १ उ०।
प्रणेतरि, सूय०१ श्रु०१५ अ०।
स्वामिनि, सम०१ सम०। वव०।
कर्मणां नेतरि, भग०२० श०२ उ०। वव०
चक्रवर्त्यादौ राजनि, उव०।
प्रधाने, आव०५ अ०। नाया०।

णायग-२ त्रि० *[नायक]*
नयति वृद्धिं प्रापयति यः स नायकः। पण्हा०५ अ०।

णायग-३ त्रि० *[नायक]*
ज्ञानाऽऽदीनां प्रापके, वव०३ उ०। सूय०।

णायज्झयण- न० *[ज्ञाताध्ययन]*
उत्क्षिप्ताऽऽद्युदाहरणप्रतिपादकेऽध्ययने, षष्ठस्याङ्गस्य प्रथमश्रुत-स्कन्धेऊनविंशतिर्ज्ञाताध्ययनानि। नाया०।

णायद- पुं० *[न्यायद]*
न्यायदर्शिनि, नाया०१ श्रु०२ अ०।

णायपुत्त- पुं० *[ज्ञातपुत्र]*
ज्ञातः सिद्धार्थः तस्य पुत्रः। कल्प०५ क्षण
वीरवर्द्धमानस्वामिनि, सूय०१ श्रु०६ अ०। आचा०। दश०।
वर्तमानतीर्थाधिपतिर्महावीर इति। उत्त०।

णायपुत्तवओरय- त्रि० *[ज्ञातपुत्रवचोरत]*
भगवद्वर्धमाने वीरे निःसङ्गताप्रतिपादनपरे सक्ते, दश०६ अ०।

णायपुत्तिय- न० *[ज्ञातपुत्रीय]*
वीरस्वामिसंबन्धिनि तीर्थे, आचा०१ श्रु०१ अ०३ उ०।

णायविहि- पुं० *[ज्ञातविधि]*
स्वजनभेदे, वव०।

णायव्व- त्रि० *[ज्ञातव्य]*
स्वरूपतोऽवबोधव्ये, आव० ५ अ०। उत्त०

णायसंग- पुं० *[ज्ञातसङ्ग]*
पुत्राऽऽदिसंबन्धे, सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ०
'विबद्धो नायसंगेहिं।' ज्ञातसङ्गैर्विबद्धो मातापितृपुत्रकलत्रा-ऽऽदिमोहितः। सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ०।

णायसंड- न० *[ज्ञातखण्ड]*
कुण्डपुराद् बहिरुद्याने, आव०म०१ अ०२ ।
यत्र वीरस्वामी प्रव्रजितः। आचा० २ श्रु० ३ चू० १ अ०। आव०म०। कल्प०।

णाया– पुं० *[ज्ञाता]*
उदारक्षत्रियाः। बुह० ।
कुलार्यभेदः। पन्न०।

णायागय- त्रि० *[न्यायागत]*
द्विजक्षत्रियविट् शूद्राणां स्ववृत्त्यनुष्ठानलक्षणेन लोकव्यवहार्येण न्यायेन प्राप्ते, आव०६ अ०।

णायाधम्मकहा- स्त्री० *[ज्ञाताधर्मकथा]*
ज्ञातानि उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा।अथवा – ज्ञातानि ज्ञाताध्ययनानि प्रथमश्रुतस्कन्धे, धर्मकथा द्वितीये यासु शास्त्रेषुषु ता ज्ञाताधर्मकथाः,षष्ठं अंगसूत्रम् । नाया०।

णारग- पुं० *[नारक]*
नरकेषु भवा नारकाः। नरको वा विद्यते येषां ते नारकाः। नरकपृथिवीषूपपन्नेषु जीवेषु, नं०। आव०म०। आव०।

णारय-पुं० *[नारद]*
समुद्रविजयनृपपालिते सौर्यपुरे यज्ञयशसः सुतस्य सोममित्रायां जातस्य यज्ञदत्तस्य सोमयशोनामभार्यायां जाते पुत्रे। आव०।

णारयपुत्त- पुं० *[नारदपुत्र]*
स्वनामके वीरजिनानगारे, भग०५ श०७ उ०।

णाराय- न० *[नाराच]*
यत्रास्थ्योरुभयतो मर्कटबन्ध एव केवलं, न पुनः कीलिका ऋषभसंज्ञपट्टश्च तादृशे तृतीये संहनने, जीवा० १ प्रति०। तं०। रा०। ठा०। चंद०।
सर्वलोहवाणे, पुं०। जंबू० ३ वक्ष०। तं०। सम०। ठा०।

णारायण- पुं० *[नारायण]*
दशरथपुत्रे रामभ्रातरि लक्ष्मणनामके अव सर्पिण्यां भरतक्षेत्रजे अष्टमे वासुदेवे, । सम०। आव०।
वासुदेवमात्रे, उत्त०९ अ०।
कमलामेलोदाहरणे द्वारकाधिपतिः, नारायणः-कृष्णः। आव०

णारिकंतप्पवायदह- पुं० *[नारिकान्ताप्रपातह्रद]*
यत्र नारिकान्ता महानदी निपतति, यश्च नारिकान्तादेवीद्वीपेन सभवनेन भूषितमध्यभागः तस्मिन् रम्यकवर्षीये प्रताताह्रदे, ठा० २ ठा० ३ उ०।

णारिकता- स्त्री० *[नारिकान्ता]*
रम्यकवर्षे अपरार्णवगायां महानद्याम्, जंबू०६वक्ष० ।सम०। रा०
नारीकान्ता-नदीविशेषः। जंबू०।

णारिकंताकूड- न० *[नारिकान्ताकूट]*
जम्बूद्वीपे मन्दरस्य उत्तरेण नीलवतः पर्वतस्य षष्ठे कूटे, ठा० ९ ठा०।

णारी- स्त्री० *[नारी]*
नरस्त्रियाम्, बुह०४ उ०।

णाल- न० *[नाल]*
कन्दोपरिवर्त्यवयवे, जंबू०४ वक्ष०।
उत्पलाऽऽदिपुष्पाऽऽधारे, आचा०२ श्रु०१ अ०८ उ०।

णालंदइज्ज- न० *[नालन्दीय]*
नालन्दायां भवं नालन्दीयं, नालन्दासमीपोद्यानकथनेन वा निर्वृत्तं नालन्दीयम्। सूत्रकृताङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य षष्ठेऽध्ययने, सूय०।

णालंदा- स्त्री० *[नालंदा]*
नालं ददातीति नालंदा। इदमुक्तं भवति–प्रतिषेधप्रतिषेधेन धात्वर्थस्यैव प्राकृतस्य गमनात् सदाऽर्थिभ्यो यथाभिलषितं ददातीति नालंदा। राजगृहनगरयाहिरिकायाम्, । सूय०।

णालबद्ध- पुं० *[नालबद्ध]*
पितृभ्रातृपुत्रप्रभृतिके वल्लीबद्धे, । बुह० ।
श्रुतोपसंपदि द्वाविंशतिनालवद्धानि लभ्यन्ते, यथा–माता, पिता, भ्राता, भगिनी, पुत्रो, दुहिता, मातुर्माता, मातुःपिता, मातुर्भ्राता, मातुर्भगिनी। एवं पितुर्माता, पिता, भ्राता, भगिनी, भ्रातृपुत्रो, दुहिता, भगिन्याः पुत्रपुत्रिकाः, पुत्रस्य पुत्रः, पुत्रपुत्रिकाः, दुहितुः पुत्रः। पुत्रिका चेति। बुह० ४ उ०।

णालिएर- पुं० *[नारिकेर]*
अयं चैकजीविको वृक्षभेदः। पन्न०१ पद
तत्फले, नं०।

णालिएरदीव- पुं० *[नारिकेलद्वीप]*
नारिकेलवृक्षप्रधाने द्वीपे, यद्वास्तव्या मनुष्या अस्माद्भाषाऽऽदि-व्यवहारं नावबुध्यन्ते। आव० म० १ अ० ।

णालिएरमत्थप- न० *[नालिकेरमस्तक]*
नालिकेरवृक्षस्तवके, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ८ उ०।

णालिया- स्त्री० *[नालिका]*
घटिकायाम्, निसि०१ उ०। तं०।
ताम्राऽऽदिमथयटिकायाम्, अणुओ०। आव०। पन्न०।

णालियाखेड- न० *[नालिकाखेल]*
द्यूतविशेषे, मा भूदिष्टदायाद्विपरितपाशकनिपतनमिति नालिकया यत्र पाशकः पात्यते। जंबू० २ वक्ष०। नाया०। ओह०।

णाली- स्त्री० *[नाली]*
कालमापिकायां घटिकायाम्, जीवा० ३ प्रति०२ उ०। निसि०।
वल्लीभेदे, पन्न० १ पद०।

णावा- स्त्री० *[नौ]*
जलतरणसाधने तरणौ, आचा०। बुह०।

णावापूरग- पुं० *[नौपूरक]*
चुलुके, नावापूरओ नाम पसती। बुह०।

णावासंतारिम- न० *[नौसंतार्य]*
यत्र नावा तरति तावत्युदके, आचा० १ श्रु० १ चू०३ अ०१ उ०।

णाविय- पुं० *[नापित]*
नखशोधके वारिके, वव० ९ उ०। कल्प०।

णाविय- पुं० *[नाविक]*
नावा जीवति नाविकः। अणुओ०।
नौवाहके, भग०५ श०४ उ०।
कैवर्तके, नाया०१ श्रु०९ अ०।
नाविक इव नावं द्रोणीम्। भग०५ श०४ उ०। आव०म०।

णास-१ पुं० *[नाश]*
अभावाऽऽपादन, आव०म०१ अ०१ । उत्त०
ध्वंस, विशे०।

णास-२ पुं० *[न्यास]*
निक्षेपे, विशे०। उत्त०। अणुओ०। ठा०।
नामस्थापनाद्रव्यभावैर्वस्तुनो निक्षेपो न्यासः। सम०।
नामादिरचनात्मकं क्षेपणं न्यासः-निक्षेपः। उत्त०।

णासण- न० *[नाशन]*
कर्मप्रकृतेः स्थिवुकसंक्रमणे प्रकृत्यन्तरगमने, आचा० १ श्रु० ९ अ०१ उ०।

णासण- न० [*न्यासन*]
व्यवस्थापने, अणुओ०।
णासा- स्त्री० [*नासा*]
घोणायाम्, तं०। पन्न०। उव०। आव०म०।
णासाणिस्सासवोज्झ- त्रि० [*नासानिश्वासवाह्य*]
अतिलघुत्वाद् नासानिश्वासवातवाह्ये, । भग० ९ श० ३३ उ०। जीवा०
णासाभेय- पुं० [*नासाभेद*]
नासिकाविवरकरणे, पण्हा०१ अ०
णासावहार- पुं० [*न्यासापहार*]
स्थूलमृषावादविरतेः प्रथमेऽतिचारे, स्वामिमित्रविश्वस्तदेवगुरु-वृद्धबालद्रोहन्यासापहाराऽऽदीनि तु तद्धत्याप्रायाणि महापात-कानि सर्वथा विशिष्य वर्जनीयानि। उत्त०।
णासि- त्रि० [*नाशिन्*]
विनशनशीले, ठा०।
णासिक्कपुर- न० [*नासिक्यपुर*]
पञ्चवटीविभूषितोत्तरकूलाया गोदावर्यां दक्षिणकूलस्थे स्वनाम-ख्याते नगरे, आव०। आव०म०। आव०चू०। नं०।
णासियासिंघाणग- न० [*नासिकासिङ्घाणक*]
घ्राणजमलविशेषे, तं०
णाह- पुं० [*नाथ*]
योगक्षेमकृति, नं०। नाया०।
णाहवाइय- पुं० [*नाथवादिक*]
पार्श्वस्थे, पार्श्वस्था नाथवादिकमण्डलचारिणः। सूय० १ श्रु०३ अ० ४ उ०।
णाहियवाइ- पुं० [*नास्तिकवादिन्*]
अतिचार्वाके जीवनास्तित्वप्रतिपादके, दश० १ अ०।
णाहियवाय- पुं० [*नास्तिकवाद*]
चार्वाकमताभ्युपगमे, धूर्ताऽऽख्यानाऽऽदिवदसंबद्धजल्पने, गच्छा० २ अधि०।
णि- अव्य० [*नि*]
नितरामर्थे, विपा० १ श्रु०९ अ०। उत्त०।
नैयत्ये, अणुओ०।
निश्चये, आधिक्ये च। उत्त०१ अ०। सूय०। आव०चू०
णिइय- त्रि० [*नित्य*]
सदकारणवति, नं०।
अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावे, सूय० १ श्रु० १ अ०४ उ०।
परिणामानित्यतायामपि द्रव्यार्थतया नियते, सूय०२ श्रु०४ अ०।
णिइयपिंड- पुं० [*नित्यपिण्ड*]
निमन्त्रितपिण्डे, पंच०चू०। ।
णिउज्जम- पुं० [*निरुद्यम*]
कार्यमात्रोद्यमरहिते, । सूय०२ श्रु०२ अ०।
णिउज्जमाण- त्रि० [*नियोजयत्*]
व्यापारयति, सूय०१ श्रु०१० अ०।
णिउण-१ त्रि० [*निपुण*]
कुशले, इति वृद्धोक्तिः। सूक्ष्मदर्शिनि, उवा० ७ अ०। उव०। आव०। आचा०।
सूक्ष्मे, उव०।
सूक्ष्मज्ञाने ठा०८ ठा०।
उपायाऽऽरम्भके, अणुओ०। निसि०।
निपुणं निपुणमतिगम्यम्। ज्यो० २ पाहु०। । रा०। नाया०।
निपुणमिव निपुणम्। उत्त०९ अ०।
उपाय-विचक्षणे, कल्प०३ क्षण।
णिउण-२ त्रि० [*निपुण*]
संयमानुष्ठानकुशले, दश०२ चू०।
संगतोपचारकुशले, उव०।
अवगततत्वे, आचा०१ श्रु०२ अ०२ उ०।
णिउण-३ त्रि० [*निपुण*]
निपुणगन्धर्वगीतरतिकाः–
निपुणाः परमकौशलोपेता ये गन्धर्व- जातीया देवास्तेषां गीतं तत्र रतिर्येषां ते। जीवा० ३ प्रति०४ उ०।
निपुणं यथा भवति एवं गन्धर्वसमये नाट्यसमये ये कुशलाः। जीवा०३ प्रति०४ उ०।
णिउणकुसल- पुं० [*निपुणकुशल*]
निपुणानां मध्ये अतिशयेन कुशले, रा०।
णिउणसिप्पोवगय- त्रि० [*निपुणशिल्पोपगत*]
निपुणं यथा भवति एवं शिल्पं क्रियाकौशलमुपगतः। रा०।
निपुणानि सूक्ष्माणि यानि शिल्पानि अङ्गमर्दनाऽऽदीनि तान्यु-पगतोऽधिगतः। नाया० १ श्रु० १ अ०। उव०।
सूक्ष्मशिल्पसमन्विते, उत्त० ५ अ०।
णिउणिय- पुं० [*नैपुणिक*]
निपुणं सूक्ष्मं ज्ञानं, तेन चरन्तीति नैपुणिकाः। निपुणा एव वा नैपुणिकाः। निपुणज्ञानेषु निपुणेषु, । ठा०।
णिउणोचिय- त्रि० [*निपुणोचित*]
निपुणेन शिल्पिना परिकर्मिते, भग० ९ श०३३ उ०।
णिउत- त्रि० [*नियुत*]
नितरां संगते, नाया०१ श्रु०१८ अ०।
णिउत्त- त्रि० [*नियुक्त*]
व्यापारिते, । आव०म०। उत्त० ।
उचितव्यापारे, नियोगेनार्पिते, अणुओ०।

णिउर-१ पुं० *[निकुर]*
वृक्षविशेषे, नाया० १ श्रु०८ अ० ।

णिउर-२ न० *[नुपुर]*
स्त्रीणां पादाऽऽभरणे, आव०म० ।

णिउरंब- न० *[निकुरम्ब]*
समूहे, उव० । जीवा० । रा० । जंबू० । नाया० ।
महामेहवृन्दकल्प इत्यर्थः । नाया० १ श्रु०१ अ० ।

णिएल्लग- त्रि० *[निजकीय]*
आत्मीये, 'ताहे जा इच्छंति सव्वे णिएल्लगा ।' आव०म० अ०१

णिओग- पुं० *[नियोग]*
नियतो निश्चितो हितो वाऽनुकूलः सूत्रस्याभिधेयेन सह यो योगः सम्बन्धः स नियोगः । अनुयोगशब्दस्यार्थे, विशे० ।

णिओगपुर- न० *[नियोगपुर]*
नियोगो राजा, तस्य पुरम् । राजधान्याम्, देशे, जनपदे, राज्ये, राष्ट्रे च । जीत० ।

णिओजिय- त्रि० *[नियोजित]*
व्यापारिते, 'सोऊण जिणागमणं, निउत्तअणिओजियाइएसु वा ।' आव०म०१ अ० ।

णिंत- त्रि० *[नयत्]*
निर्गच्छति, निसि० १ उ० । आव०म० ।

णिंदंत- त्रि० *[निन्दत्]*
जुगुप्समाने, पण्हा०३ अ० । अंत० ।

णिंदण- न० *[निन्दन]*
मनसा कुत्सने, नाया०१ श्रु०८ अ० । ठा० ।
आत्मनैव दोषपरिकुत्सने, भग०१७ श०३ उ० ।
पश्चात्तापे, नाया० १ श्रु०१६ अ० ।

णिंदणा- स्त्री० *[निन्दना]*
आत्मनै-वाऽऽत्मदोषपरिभावने, उत्त०२ अ० ।
आत्मसाक्षिकमात्मनो निन्दायाम्, उत्त० ।

णिंदा- स्त्री० *[निन्दा]*
मिथ्यादुष्कृते, आव० ४ अ० ।
स्वप्रत्यक्षमेव जुगुप्सायाम्, सूय० । उत्त० । आव०म० । आव० ।
निन्दागर्हाऽभिधेयस्यापि जुगुप्सार्थस्य विशेषतो भेदोऽस्ति । तथाहि– स्वप्रत्यक्षाऽऽत्मसाक्षिकी जुगुप्सा, सा समये सिद्धान्ते निन्दामीत्यनेन गम्यते ।
या तु गुरुप्रत्यक्षा गुरुसाक्षिकी जुगुप्सा, सा गर्हामीत्यनेन गम्यते । विशे० ।

णिंदित्ता- अव्य० *[निन्दित्वा]*
जुगुप्सित्वेत्यर्थे, 'णिदित्ता गरहित्ता पडिक्कमित्ता अहारिहं उत्तर-गुणं पायच्छित्तं ।' आचा०२ श्रु०३ चू०१ अ० ।

णिंदिया- स्त्री० *[निन्दिता]*
एकदा विजातीयतृणाऽऽद्यपनयनेन शोधितायां कृषौ, ठा० ४ ठा०४ उ० ।

णिंदू- पुं० *[निन्दु]*
म्रियमाणप्रजनिका स्त्री । आव० २०५ ।
निन्दुः-मृतापत्यप्रयूः । आव० ३६७ ।

णिंब-१ पुं० *[निम्ब]*
'नीबडा' इति ख्याते वृक्षविशेषे, तत्फले च, पन्न०१ पद ।

णिंब-२ पुं० *[निम्ब]*
उज्जयिन्यामम्बर्षिद्विजपुत्रे मालुकाऽऽत्मजे, स च पित्रा सह, प्रव्रजितो दुर्विनीतत्वेन साधुभिस्तिरस्कृत इति विनयोपगते उदाहरणम् । आव० । आव० ।

णिंबअ- पुं० *[निम्बक]*
अभिप्रायवशाद् निम्बक इति नामाभिधेये, अणुओ० ।

णिंबोलिया- स्त्री० *[निम्बगुलिका]*
निम्बफले, नाया० १ श्रु०१६ अ० ।

णिकरण- न० *[निकरण]*
निश्चयेन नितरां नियतं वा क्रियन्ते नानादुःखावस्या जन्तवो येन तन्निकरणम् । निकारे, शारीरमानसदुःखोत्पादने, आचा० १ श्रु० २ अ० ५ उ० ।

णिकाइय- त्रि० *[निकाचित]*
निर्युक्तिसंग्रहणीहेतूदाहरणाऽऽदिभिरनेकधा व्यवस्थापिते, नं० ।
नितरां काचनं बन्धनं निकाचितम् कर्मणः सर्वकरणानाम-योग्यत्वेनावस्थापने, पूर्वबद्धस्य तप्तमिलितसंकुटितलोहशलाका संबन्धसमाने करणे, ठा० ।
'चउव्विहे निकाइए पण्णत्ते । तं जहा–
पगइनिकाइए, ठिइनिकाइए, अणुभागनिकाइए, पएसनिकाइए ठा० ४ ठा०२ उ०

णिकाइंसु- त्रि० *[निकाचितवत्]*
नितरां बद्धवति, भग०१ श०१ उ० ।
नियमितवति, सूय०२ श्रु०१ अ० ।

णिकाम- न० *[निकाम]*
अत्यर्थे, निश्चये, सूय०१ श्रु०१० अ० ।

णिकामकामीण- न० *[निकामकामीन]*
निकाममत्यर्थं प्रार्थयते यः स निकामकामीनः । आहारो-पकरणाऽऽदिकस्यार्थस्य प्रार्थके, सूय० १ श्रु०१० अ० ।

णिकामचारि- त्रि० *[निकामचारिन्]*
निकाममत्यर्थं चरति तच्छीलश्च निकामचारी । आधाकर्माऽऽ-दीनां तन्निमित्तनिमन्त्राणाऽऽदीनां वा ग्रहणशीले । सूय० १ श्रु० १० अ० ।

णिकाय-१ पुं० *[निकाय]*

निसर्गतःकाय औदारिकाऽऽदिर्यस्माद् यस्मिन् वा सति स निकायः। मोक्षे, आचा०१ श्रु०१ अ०३ उ०।

समूहे, ओह०। आव०चू०।

गणकायनिकायस्कन्धवर्गराश्यादीनि स्कन्धैकार्थिकानि।विशे०

णिकाय-२ पुं० *[निकाच]*

निकाचनं निकाचः। छन्दने, निमन्त्रणे, सम०१२ सम०।

णिकाय-३ अव्य० *[निकाच्य]*

व्यवस्थाप्येत्यर्थे, 'णिकाय समयं पत्तेयं पत्तेयं पुच्छिस्सामो।' आचा०१ श्रु०४ अ०२ उ०।

णिकायकाय- पुं० *[निकायकाय]*

षड्जीवनिकाये, दश०४ अ०।

निकायकायः षड्जीवनिकायः। दश०।

णिकायणा- स्त्री० *[निकाचना]*

'कच' बन्धने। नितरां कच्यते स्वयमेव बन्धमायाति कर्म जीवस्य तथाविधसंक्लिष्टाध्यवसायपरिणतस्य, तत्प्रयुङ्क्ते जीव एव, तथानुकूल्येन भवनात्, ततो निकाच्यते अवश्यवेद्यतया निबध्यते यया कर्म सा निकाचना जीववीर्यविशेषपरिणतिरूपे समस्तकरणाऽयोग्यत्वेन व्यवस्थापने। सूय०।

णिकायपडिवण्ण- त्रि० *[निकायप्रतिपन्न]*

निर्गतः काय औदारिकाऽऽदिर्यस्माद् यस्मिन् वा सति स निकायो मोक्षः, तं प्रतिपन्नो निकायप्रतिपन्नः।

सम्यग्दर्शनाऽऽदेः स्व-शक्त्यनुष्ठानाद् मोक्षं प्रतिपन्ने, आचा० १ श्रु०१ अ०३ उ०।

णिकिंचण- त्रि० *[निष्किञ्चन]*

निर्गतं किञ्चन हिरण्याऽऽदि येभ्यस्ते निष्किञ्चनाः। आव०म०१

णिकूड- त्रि० *[निष्कूट]*

अमाये, आव०५ अ०।

णिकेअ- पुं० *[निकेत]*

निवासे, नाया०१ श्रु०१६ अ०। गृहे, उत्त०२उ

णिक्क- *[देशी]*

सर्वथा विगतमले, नाया०१ श्रु०१ अ०।

णिक्कंकड- त्रि० *[निष्कङ्कट]*

निष्कञ्चुके, निरावरणे, निरुपघाते,सम०।

निष्कवचा, निरावरणाः। जंबू० ।

निष्कङ्कटाः- निष्कवचा, निरावरणाः। उव० ।

णिक्कंकडच्छाय- त्रि० *[निष्कङ्कटच्छाय]*

निष्कङ्कटा निष्कवचा निरावरणा निरुपघातेति भावः। छाया दीप्तिर्यस्य तन्निष्कङ्कटच्छायम्। रा०। जंबू०। उव०।

निरावरणदीप्तौ, उव०। सम०। पन्न० रा० ठा० ।जीवा०। भग०

णिक्कंखिय- न० *[निष्काङ्क्षित]*

काङ्क्षितं देशसर्वकाङ्क्षाऽऽत्मकं, तस्याभावो निष्काङ्क्षितम्। अन्यान्यदर्शनानभिलाषे, उत्त० २ अ०।

निर्गता काङ्क्षाऽन्यान्यदर्शनग्रहणरूपा यस्याऽसौ निष्काङ्क्षितः। सूय०२ श्रु०७ अ०।

देशसर्वकाङ्क्षारहिते, ।गच्छा०। वव०। रा०। उव०।

दर्शनान्तराऽऽकाङ्क्षारहिते, दशा० १० अ०।

णिक्कंत- त्रि० *[निष्क्रान्त]*

प्रव्रज्यां गृहीतवति, आचा०१ श्रु०१ अ०३ उ०।

णिक्कंतार- न० *[निष्कान्तार]*

कान्तारमण्यं, निर्गतः कान्ताराद् निष्कान्तारः। कान्तारान्नि-ष्क्रान्ते, कंताराओ णिक्कंतारे करेज्जा। निष्कान्तारं निष्क्रामितारं वा। ठा० ३ ठा० १ उ०।

निर्गतः कान्तारान्निष्कान्तारस्तन्निष्क्रमितारं वा। ठा० ।

णिक्कंप- पुं० *[निष्कम्प]*

स्थिरचित्तवृत्तौ, बुह०।

णिक्कट्ठ-त्रि० *[निकृष्ट]*

निष्कर्षिते, तपसा कृशदेहे, ठा० ४ ठा० ४उ०

णिक्कट्ठ- त्रि० *[निष्कृष्ट]*

तपसा कृषीकृते, ठा०४ ठा०४ उ०।

णिक्कमण- न० *[निष्क्रमण]*

प्रव्रज्यायाम्, आचा०१ श्रु०५ अ०६ उ०। बुह०।

णिक्कम्म- पुं० *[निष्कर्मन्]*

निष्क्रान्तः कर्मणो निष्कर्मा। मोक्षे, सम्बरे, आचा० १ श्रु० ४ अ० ४ उ०।

णिक्कम्मदंसि- त्रि० *[निष्कर्मदर्शिन्]*

निष्कर्मा मोक्षः, सम्बरो वा, तं द्रष्टुं शीलमस्येति निष्कर्मदर्शी। मोक्षसम्बरतत्त्ववेत्तरि, आचा०१ श्रु० ४ अ०४ उ०।

निष्कर्माणमात्मानं पश्यतीति तच्छीलश्च निष्कर्मदर्शी। कर्मबन्धनविप्रमुक्ते, निष्कर्मत्वादपगताऽऽवरणः सर्वज्ञानी सर्व-दर्शी च भवति। आचा० १ श्रु० ३ अ० २ उ०।

णिक्कल- त्रि० *[निष्कल]*

त्रासाऽऽदिदोषरहिते, भग०१५ श०।

णिक्कलुण- त्रि० *[निष्करुण]*

निर्गता करुणा दया यस्मादसौ निष्क-रुणः। स्नेहविरहिते, पण्हा०१ अ०।

णिक्कवय- त्रि० *[निष्कवच]*

निरावरणे, ठा०४ ठा०२ उ०।

णिक्कसण- न० *[निष्कसन]*

निर्गमने, सूय०१ श्रु०१४ अ०।

णिक्कसाय- त्रि० *[निष्कषाय]*
कषायरहिते, आतु०।
आगमिव्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यति त्रयोदशे तीर्थेश्वरे, सम०।
णिक्कसिज्जंत- त्रि० *[निष्कास्यमान]*
निर्वास्यमाने, निःसार्यमाणे, उत्त०१ अ०।
णिक्का– त्रि० *[निष्का]*
सारणी। निसि० ।
अन्नेकवाडसंजुत्ताओ णिक्का। निसि०।
णिक्काम- त्रि० *[निष्काम]*
शुभरसगन्धाऽऽद्युपभोगरहिते, बुह०१ उ०
णिक्कारण- न० *[निष्कारण]*
ग्लानाऽऽदिकारणाभावे, आव०६ अ०। वव०।
णिक्कासिय- त्रि० *[निष्कासित]*
विनिर्गते, उव०।
णिक्किंचण- त्रि० *[निष्किञ्चन]*
'णिकिंचण' शब्दार्थे, आव०म०१ अ० १ ।
णिक्किय- त्रि० *[निष्क्रिय]*
सर्वव्यापित्वेनावकाशभावाद् गमनागमनाऽऽदिक्रियावर्जते, पण्हा० २ अ०।
णिक्किव- त्रि० *[निष्कृप]*
कृपारहिते, गतघृणे। निसि०।
निष्कृपः-मम दुःखिताया अप्रतीकारत्। नाया०।
णिक्कीलिय- न० *[निष्क्रीडित]*
गमने। उव०। अंत०।
णिक्कुड- पुं० *[निष्कुट]*
तापनायाम्, अणुओ०। आव०म०।
णिक्कोरण- न० *[निष्कोलन]*
दुःसहस्य वस्तुनोऽपनयने, निसि०।
णिक्खंत- त्रि० *[निष्क्रान्त]*
संसाराद् गृहाच्च निःसृते, उत्त०१८ अ०
प्रव्रजिते, सूय०१ श्रु०८ अ०। अणुओ०।
णिक्खत्त- त्रि० *[निःक्षत्र]*
क्षत्रियजातिविहीने, पर्शुरामेण त्रिःसप्तकृत्वो निःक्षत्रिया पृथिवी कृता। सूय०१ श्रु०८ अ०।
णिक्खम- न० *[निष्क्रम]*
निष्क्रमणं निष्क्रमः।
प्रव्रज्यायाम्, इह च द्विर्भावो, नपुंसकता च प्राकृतत्वात्। निष्क्रमणमेव भवस्थानां सुखम्। सुखभेदे, ठा० १० ठा०। भग०।
द्रव्यभावगृहात्प्रव्रज्याग्रहणे, दश०१० अ०।
णिक्खमण- न० *[निष्क्रमण]*
सूर्याचन्द्रमसोः सर्वाभ्यन्तरान्मण्डलाद् बहिर्गमने, सूर० १३ पाहु०। ।
द्रव्यभावसङ्गाद् निष्क्रान्तिरूप-प्रव्रज्यायाम्, अंत०। बुह०।
बहिर्गमने, निसि०१ उ०।
उद्वर्तने, आचा० १ श्रु०१ अ०६ उ०।
णिप्फेडणं। निसि०।
णिक्खमणचरियणिबद्ध-न० *[निष्क्रमणचरितनिबद्ध]*
भगवतो महावीरस्वामिन्योऽन्येषां च प्रव्रज्यामहोत्सवचरित-निबद्धे नाट्यविधौ, रा०।
णिक्खमणपवेसं- पुं० *[निष्क्रमणप्रवेश]*
निर्गमनागमनयोः, निसि० ।
णिक्खमणाभिसेय- पुं० *[निष्क्रमणाभिषेक]*
निष्क्रमणाभिषेकसामग्र्याम्, भग०९ श०३३ उ०।
णिक्खममाण- त्रि० *[निष्क्रामत्]*
निर्गच्छति, आचा०१ श्रु०१ चू०२ अ०३ उ०।
णिक्खमित्तए- अव्य० *[निष्क्रमितुम्]*
प्रवेष्टुमित्यर्थे, कल्प०९ क्षण०
णिक्खम्म- अव्य० *[निष्क्रम्य]*
गेहान्निःसृत्य प्रव्रजितो भूत्वेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०१० अ०।
स्वदर्शनविहितां प्रव्रज्यां गृहीत्वेत्यर्थे, सूय०२ श्रु०१ अ०।
णिक्खित्त-१ त्रि० *[निक्षिप्त]*
स्वस्थानन्यस्ते, पण्हा०३ अ०।
विमुक्ते, नाया०१ श्रु०१ अ०।
व्यवस्थापिते, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०७ उ०।
परित्यक्ते, वव० २ उ०।
णिक्खित्त-२ त्रि० *[निक्षिप्त]*
सचित्तस्योपरि स्थापिते,तच्च एषणादोषदुष्टत्वान्न ग्राह्यम्। जीत०
णिक्खित्त-३ त्रि० *[निक्षिप्त]*
णाम गरलिगाबद्धं स्थापयति। निसि० ।
णिक्खित्तउक्खित्तचरय- पुं० *[निक्षिप्तोत्क्षिप्तचरक]*
निक्षिप्तं भोजनपात्र्यामुत्क्षिप्तं च स्वार्थं, तत एव निक्षिप्तोत्क्षिप्तं, चरत्यभिग्रहवशेन इति निक्षिप्तोत्क्षिप्तचरकः। अभिग्रहविशेषेण तथाविधभिक्षाचरके, उव०। ठा०।
णिक्खित्तचरगा– पुं० *[निक्षिप्तचरक]*
गोचरचर्यायामभिग्रहविशेषः। निसि०।
णिक्खित्तचरय- पुं० *[निक्षिप्तचरक]*
निक्षिपतं पाकभाजनादनुद्धृतं तदर्थमभिग्रहतश्चरति तद्गवेषणाय गच्छतीति निक्षिप्तचरकः। अभिग्रहविशेषात् तथाभिक्षचरण-शीले, उव०।

णिक्खित्तदंड- त्रि० *[निक्षिप्तदण्ड]*
निश्चयेन क्षिप्तः परित्यक्तः कायमनोवाङ्भ्यः प्राण्युपघातकारी दण्डो यैस्ते तथा। आचा०१ श्रु०४ अ०३ उ०।
निक्षिप्ताः संयमिता मनोवाक्कायरूपाः प्राण्युपमर्दकारिणो दण्डो यैस्ते तथा। त्रिविधेन करणेन परित्यक्तद-ण्डेषु, आचा० १ श्रु०६ अ०१ उ०।

णिक्खित्तपुव्व- त्रि० *[निक्षिप्तपूर्व]*
पूर्वमेवाऽऽत्मकृते निष्पादिते, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०३ उ०।

णिक्खित्तसत्थमुसल- त्रि० *[निक्षिप्तशस्त्रमुशल]*
त्यक्तखड्गाऽऽदिश-स्त्रमुशले, भग० ७ श० १ उ०।

णिक्खिप्पमाण- त्रि० *[निक्षिप्यमाण]*
स्वस्थाने न्यस्यमाने, 'अग्गपिंडं उक्खिप्पमाणं, अग्गपिंडं णिक्खिप्पमाणं।' आचा० २ श्रु०१ चू०४ अ०५ उ०।

णिक्खिविअव्व- त्रि० *[निक्षेप्तव्य]*
मोक्तव्ये, पण्हा०१ संव०द्वार।

णिक्खिविउं- अव्य० *[निक्षिप्य]*
निक्षेपं कारयित्वेत्यर्थे, वव०१ उ०।

णिक्खेव- पुं० *[निक्षेप]*
निक्षेपणं निक्षेपः। शास्त्राऽऽदेर्नामस्थापनाऽऽदिभेदेन न्यासनं व्यवस्थापनं निक्षेपः। निक्षिप्यते नामाऽऽदिभेदैर्व्यवस्थाप्यते अनेनास्मिन्नस्मादिति वा निक्षेपः। अणुओ०। पिंड०।
यथाभूतार्थनिरपेक्षमभिधानमात्रे,आचा०१ श्रु०२ अ०१उ०। ठा०
यथासंभवमावश्यकाऽऽदेर्नामाऽऽदिभेदप्ररूपणे, अणुओ०।
उपक्रमाऽऽनीतव्याचिख्यासितशास्त्रनामाऽऽदिन्यसने, । जंबू० १

णिक्खेवण- न० *[निक्षेपण]*
निक्षेपे, स्थापने।

णिक्खेवणाहिगरण- न० *[निक्षेपणाधिकरण]*
प्रतिलेखनाप्रमार्जनाऽऽद्यकरणेनोत्पन्नेऽधिकरणे, निसि०४ उ०।

णिक्खेवणिज्जुत्तिअणुगम- पुं० *[निक्षेपनिर्युक्त्यनुगम]*
निक्षेपो नामस्थापनाऽऽदिभेदभिन्नः, तद्विषया या निर्युक्तिः निक्षेपनिर्युक्तिः तस्या वाऽनुगमो निक्षेपनिर्युक्त्यनुगमः। निर्युक्त्यनुगमभेदे, । अणुओ०।

णिक्खेवय- पुं० *[निक्षेपक]*
प्रथमं स्वार्थं निक्षिप्य पश्चात् साधूनामनुज्ञाने, बुह० १ उ०।
निगमने, यथा–'एवं खलु जंबू० ! समणेणं० जाव उवासग-दसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिवेमि।उवा०१ अ०

णिक्खोभ- त्रि० *[निक्षोभ]*
वादिना क्षोभयितुमशक्ये, सम०२ सम०।

णिखव्व- न० *[निखर्व]*
शतगुणिते खर्वे, कल्प० ७ क्षण०।

णिखिल- न० *[निखिल]*
समग्रे, अणुओ०।

णिगच्छमाण- त्रि० *[निर्गच्छन्]*
बहिर्गच्छति, निसि० ९ उ०।

णिगज्झिय- अव्य० *[निगृह्य]*
निग्रहं कारयित्वेत्यर्थे,पाए णिगिज्झिय पप्फोडेमाणे। ठा०७ ठा०

णिगम- पुं० *[निगम]*
प्रभूततरवणिग्वर्णवासे, आचा०१ श्रु०८ अ० ६ उ०। ठा०। अणुओ०। उत्त०। सूय०। पण्हा०। वव०। पन्न०
वणिग्जनप्रधाने स्थाने, भग०१ श०१ उ०। जीवा०। पण्हा०।
वणिग्जनाधिष्ठिते सन्निवेशे, नाया०१ श्रु०८ अ०। पन्न०।
पौरवणिग्विशेषे, बुह० ३ उ०।
वाणिजकसमूहे, सम०३० सम०। आचा० दश०। दशा०।
वणिजि, भग०७ श०९ उ०।
निगमं नाम यत्र नैगमा वाणिजकविशेषाः, तेषां वर्गः समूहो वसति। अत एव निगमे भवा नैगमा इति व्यपदिश्यन्ते। बुह० १ उ०। आव०। ठा०।
कारणिके, भग०७ श०९ उ०। निसि०।
सामान्यविशेषाऽऽत्मकस्य वस्तुनो नैकेन प्रकारेणावगमः परिच्छेदो निगमः। सूय०२ श्रु०७ अ०। आव०म०।
निश्चितार्थबोधे, ठा०३ ठा०३ उ०।
लोकार्थनिबोधाः अर्था जीवाऽऽदयः, तेषु नितरामनेकप्रकारा बोधा लोकस्यार्थनिबोधा लोकार्थनिबोधाः। विशे०।
विचित्रेष्वभिग्रहविशेषेषु,रा०

णिगमण- न० *[निगमन]*
निश्चितं गमनं निगमनम्। निश्चितेऽवसाये, तच्चानुमानस्य दशमो ऽवयवः। दश० १ अ०। आव०।
निगमनं-प्रतिज्ञाहेत्वोः पुनर्वचनं निगमनम्। दश०

णिगर- पुं० *[निकर]*
राशिमात्रे, विपा० १ श्रु०६ अ०। नाया०।
वृन्दे, दलनिकरो दलवृन्दम्। नाया०१ श्रु०९ अ०।
हिरण्यद्रव्याऽऽदिनिकरवन्निकरः। भावस्कन्धे, अणुओ०।

णिगलिय- त्रि० *[निगरित]*
सर्वथा शोधिते सारीकृते, तं०।

णिगाम- न० *[निकाम]*
अत्यर्थे, ठा०५ ठा०२ उ०। आव०।

णिगामपडिसेविणी- स्त्री० *[निकामप्रतिसेविनी]*
निकाममत्यर्थं बीज पातं यावत् पुरुषं प्रतिसेवते इत्येवं शीला निकामप्रतिसेविनी। बीजपातं यावन्मैथुनकर्मकारिकायाम्, सा च पुरुषसंयुक्ताऽपि गर्भं नो धरते। ठा०५ ठा०२ उ०।

णिगामसज्जा- स्त्री० *[निकामशय्या]*
शयनं शय्या, निकामं शय्या निकामशय्या। प्रतिदिवसं प्रकामशय्यायाम्, आव०।

णिगामभोयण- न० *[निकामभोजन]*
'बत्तीसाइपरेणं, पगाम निच्चं तमेव उ निगामं।' प्रमाणातीतमाहारं प्रतिदिवसमश्नतो भोजने, पिंड०।

णिगामसाइ- पुं० *[निकामशायिन्]*
सूत्रार्थवेलामप्युल्लङ्घ्य शयाने, 'णिगामसाइस्स। उच्छोलणापहोअस्स दुल्ला सुगइ तारिसगस्स'।

णिगास- पुं० *[निकर्ष]*
सन्निकर्षे, पुलाकाऽऽदिना परस्परेण संयोजने।भग० २५ श० ७।

णिगिज्झ- अव्य० *[निगृह्य]*
स्थित्वेत्यर्थे, कल्प०९ क्षण०। वव०। ठा०।

णिगुंज- पुं० *[निकुञ्ज]*
लताऽऽदिपिहितस्थले, । ओह०।
'एगम्मि वणनिगुंजे ठविऊण पंथे आगतो।' आव०म०१ अ०२

णिगूढ- त्रि० *[निगूढ]*
गुप्ते, मौनिनि च। वव० ७ उ०। कल्प०।

णिगूढजाणु- त्रि० *[निगूढजानु]*
गुप्तजानौ, कल्प० २ क्षण०।

णिगूहिय- त्रि० *[निगूहित]*
गोपिते, आव०म० २ अ०। आचा०।

णिगोय-पुं० *[निगोद]*
अनन्तकायिके। सूक्ष्मबादरा निगोदाः पर्याप्ता अपर्याप्ताश्च एकस्मिन्निगोदेऽनन्ताजीवाः। पन्न० १ पद०

णिगोदजीव- पुं० *[निगोदजीव]* साधारणनामकर्मोदयवर्तिनि जीवे, भग०२५ श०६ उ०।

णिग्गंथ-१ पुं० *[निर्ग्रन्थ]*
निर्गता ग्रन्था द्रव्यतः सुवर्णाऽऽदिरूपाद् भावतो मिथ्यात्वाऽऽदिलक्षणादिति निर्ग्रन्थः। वव०३ उ०। ठा०। सूय०।
निर्गतो बाह्याभ्यन्तरो ग्रन्थो यस्मात्स निर्ग्रन्थः सूय०१ श्रु०९ अ०।
बाह्याभ्यन्तरग्रन्थिरहिते, दश०६ अ०।
जैनसाधौ, दश०३ अ०। सम०। ठा०।
'णिग्गंथा जिणसासणभवा।' निर्ग्रन्थास्ते भण्यन्ते, ये जिनशासनभवाः प्रतिपन्नपारमेश्वरप्रवचनमुनयः। पञ्चविधाः श्रमणाः तत्र निर्ग्रन्था जैन साधवः। आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ०। सूय०। ठा०। आव०क०। नाया०। पण्हा०। आव०चू०। नं०।

णिग्गंथ-२ न० *[नैर्ग्रन्थ्य]*
निर्ग्रन्थानामिदं नैर्ग्रन्थ्यम्। विशे०। आव०।
आर्हते प्रवचने, सूय०२ श्रु०६ अ०। आव०म०।

णिग्गंथधम्म- पुं० *[निर्ग्रन्थधर्म]*
निर्गतो बाह्याभ्यन्तररूपो ग्रन्थोऽस्यास्तीत निर्ग्रन्थः, स चाऽसौ धर्मश्च निर्ग्रन्थधर्मः। श्रुतचारित्राऽऽख्ये क्षान्त्यादिके वा सर्वज्ञोक्ते धर्मे, सूय० २ श्रु०६ अ०।

णिग्गंथपावयण- न० *[निर्ग्रन्थप्रावचन]*
निर्ग्रन्थानां साधूनामिदं नैर्ग्रन्थ्यं, प्रावचनमिति प्रकर्षेणाभिविधिनोच्यन्ते जीवाऽऽदयो यस्मिन्निति प्रावचनम्। जैनाऽऽगमे, 'इणमेव णिग्गंथे पावयणे सच्चे अट्ठे, सेसमणट्ठे।' आव० ४ अ०। ठा०। आव०चू०।

णिग्गंथी- स्त्री० *[निर्ग्रन्थी]*
निर्ग्रन्थः साधुः, तेषामियं निर्ग्रन्थी। साध्व्याम्, ठा०२ ठा०१ उ०

णिग्गम- पुं० *[निर्गम]*
निर्गमनं निर्गमः, कुतः सामायिकं निर्गतमित्येवमादिरूपे निर्गमने, विशे०। अणुओ०। आव०म०।

णिग्गमग- पुं० *[निर्गमक]*
प्रस्थाने, बुह०१ उ०।

णिग्गमण- न० *[निर्गमन]*
अपक्रमणे, निस्सरणे, पलायने, वव०१ उ०।
निस्सरणमार्गे, नाया०२ श्रु०१ अ०।

णिग्गय- त्रि० *[निर्गत]*
निःसृते, नाया० १ श्रु० १ अ०। उत्त०। नं०। निर० ।
अभिनिष्क्रान्ते, आव०म० १ अ०१ ।
रहिते, संथा० ।
अविद्यमाने, ठा०१ ठा०।
प्रतिपातिते, सम० ६ सम।
स्थानान्तरप्राप्त्या निश्चितेऽनिश्चिते गमने, भग०१४ श०१ उ०।

णिग्गह- पुं० *[निग्रह]*
अनाचारप्रवृत्तेर्निषेधने, निर० १ श्रु०१ वर्ग०१ अ०। नाया०।
अन्यायकारिणां दण्डे, आव०६ अ०। गच्छा०। भग०
रोधे, भग०७ श०९ उ०।
इन्द्रियनोइन्द्रियनियन्त्रणे, उत्त०१७ अ०। आव०चू०।

णिग्गहजुत्त- त्रि० *[निग्रहयुक्त]*
इन्द्रियकषायाणां निग्रहसमर्थे, बुह० ४ उ०।

णिग्गहट्ठाण- न० *[निग्रहस्थान]*
वादकाले वादी प्रतिवादी वा येन निगृह्यते तन्निग्रहस्थानम्। सूय०१ श्रु०१२ अ०।
वादिवञ्चनार्थके प्रतिज्ञाहान्यादौ न्यायपरिभाषिते पदार्थे, । ठा० १ ठा०।

णिग्गहदोस- पुं० *[निग्रहदोष]*
निग्रहस्थलाऽऽदिना पराजयस्थानरूपं दोषभेदे, ठा० १० ठा०।

णिग्गहप्पहाण- न० *[निग्रहप्रधान]*
अनाचारप्रवृत्तिनिषेधप्रधाने, निर० १ श्रु०१ वर्ग०१ अ०। उव०।

णिग्गहसमत्थ- पुं० *[निग्रहसमर्थ]*
जितेन्द्रिये, तरुणाऽऽदीना वा संयतीरुपसर्गयतां खरण्टाऽऽदिना शिक्षाकारणदक्षे, बुह० १ उ०

णिग्गहिय- त्रि० *[निगृहीत]*
वादे पराजिते, 'सो वादी णिग्गहितो, पच्छा सावगेहिं गोट्ठामाहिलो धरितो।' आव०म० २ अ०।

णिग्गाहि- पुं० *[निग्राहिण्]*
निगृह्णाति मनोजवेन वशीकरोतीति निग्राही। निग्रहणशीले, उत्त०४ अ०।

णिग्गुण- त्रि० *[निर्गुण]*
निर्गतगुणे, पण्हा०३ अ०।
उत्तरगुणा पेक्षया निर्मर्यादे, ठा०३ ठा०२ उ०। भग०।
उत्तरगुणविकले, जंबू०२ वक्ष०। ठा०।
गुणव्रतरहिते, नाया०१ श्रु०१८ अ०।
तीक्ष्णाऽऽदिगुणाभावात् । दशा०६ अ० ।
क्षान्त्यादिगुणाभावाद् गुणविकले, रा०। भग०।

णिग्गुणा– स्त्री० *[निर्गुणा]*
उत्तरगुणविकलाः। जंबू० १७१।

णिग्गूढ- त्रि० *[निर्गूढ]*
स्थिरतया स्थापिते, सूय०२ श्रु०७ अ०।

णिग्गोह- पुं० *[न्यग्रोध]*
वटवृक्षे, अणुओ० ठा०। सम०। जीवा०।

णिग्गोहपरिमंडल- न० *[न्यग्रोधपरिमण्डल]*
न्यग्रोधवत्परिमण्डलं यस्य तन्नयग्रोधपरिमण्डलम्।पन्न०।जीवा०
नाभेरुपरि न्यग्रोधवन्मण्डले, आद्यसंस्थानयुक्तत्वेन विशिष्टाऽऽकारे द्वितीयसंस्थाने, अणुओ०।
यथा न्यग्रोध उपरिसंपूर्णावयवोऽधस्तनभागे पुनर्न तथा, तथेदमपि नाभेरुपरि विस्तरबहुलं शरीरलक्षणोक्तप्रमाणभागमधस्तु हीनाधिकप्रमाणमिति। ठा० ६ ठा०।

णिग्गोहवरपायव– न्यग्रोधवरपादपः। जंबू०।

णिग्घाय- पुं० *[निर्घात]*
वैक्रियाशनिप्रपाते, जीवा०१ प्रति०। पन्न०।
विद्युत्प्रपाते, जीवा०१ प्रति०४ उ०।
साभ्रे निरभ्रे वा गगने व्यन्तरकृते महागर्जितध्वनौ, ठा०१० ठा०। आव०। निसि०।
निर्जरणे, सूय०१ श्रु०१५ अ०।

णिग्घायण- न० *[निर्घातन]*
निराधिक्येन घातो निर्घातः। निर्जरणे, आव०चू०५ अ०।

णिग्घायणट्ठ- पुं० *[निर्घातनार्थ]*
निर्घातननिमित्ते,पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए। आव०५ अ०।

णिग्घिण- त्रि० *[निर्घृण]*
न विद्यते घृणा पापजुगुप्सालक्षणा यत्र स निर्घृणः।पण्हा०१ अ०
निर्दये, नाया०१ श्रु०९ अ० । आव०।

णिग्घिणमइ- त्रि० *[निर्घृणमति]*
परस्य द्रव्यादविरते, पण्हा० ३ आश्र ० द्वार०।

णिग्घेउं- अव्य० *[निगृहीतुम्]*
निरुध्येत्यर्थे, 'पुव्वपयत्तेण सक्कितो णिग्घेउं।' निसि० १ उ०।

णिग्घोस- पुं० *[निर्घोष]*
नितरां घोषो निर्घोषः। तं०। आव०।
महा प्रयत्नोत्पादिते शब्दे, भग०९ श०३३ उ०।
महाशब्दे, कल्प०५ क्षण०। रा०। आव०म०। विपा० ।
महाध्वनौ, पण्हा०१ अ०। जीवा०। आचा०। नाया०। रा०।
निर्घोषः महाध्वनिः। उव०।

णिघंटु- पुं० *[निघण्टु]*
नामसङ्ग्रहे, कल्प०२ क्षण०।
कोशे, उव०।
नामकोशे, 'णिघंटुछट्ठाणं०। निर० १ श्रु० १ वर्ग० ५ अ०। कल्प०।

णिघस- पुं० *[निकष]*
कषपट्टगतायां कषितसुवर्णरेखायाम्, अणुओ०। निसि०। आव०म०। भग०। चंद०। पण्हा०।
कषपट्टके, सर्वेषामभिधानानामागमो निकषः हेमरजतकल्प जीवाऽऽदिपदार्थपरिज्ञानहेतुत्वात् कषपट्टकः। अणुओ०।

णिचय- पुं० *[निचय]*
द्रव्योपचये तन्निमित्ताऽऽपादितकर्मनिचये, सूय०१ श्रु०१० अ०। आचा०। रा०। उव०।
शूकराऽऽदिसंघाते, पिंड०।
संचये, ओह०।

णिचिक्खिल्ल- पुं० *[निश्चिखिल]*
कर्दमाभावे, वव०६ उ०।

णिचिय- त्रि० *[निचित]*
निविडे, अणुओ०। पण्हा०। रा०। ठा०। उव०। भग०।
निवडतरचयमापन्ने, आव०म० १ अ० ।

णिच्च- त्रि० *[नित्य]*
शाश्वते, उत्त०१८ अ०। आव०। संघा०।
सर्वदाऽवस्थायिनि, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ०।
अविचलितस्वभावे, दश०१ अ०।
अव्यवच्छिन्नरूपे, विशे०।

अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावे,आचा०१ श्रु०५अ०५उ० । ठा० ।
अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावतया कूटस्थनित्यत्वेन व्यवस्थापिते आचा० १ श्रु० ५ अ० १ उ० ।
ध्रुवे, पण्हा०३ आश्र द्वार । उव० ।
सर्वकाले, रा० । कल्प० । जीवा० । वव० । पण्हा० ।
सर्वदेत्यर्थे, संथा० । जंबू० । पण्हा० । रा० । ठा० । सूय० । उत्त० ।
नित्यं सदा नीचान्यधमजनोचितानि कर्माण्युपजीवन्ति तैर्वृत्तिं कुर्वन्ति ये ते तथा। पण्हा० ३ अ० ।

णिच्चंधकारतमस- न० *[नित्यान्धकारतमस]*
नित्यमेवान्धकारतमसं येषु ते तथा। मेघावच्छिन्नाम्बरतलकृष्ण-पक्षरजनीवत् तमोबहुलेषु नरकेषु, सूय० २ श्रु० २ अ० ।

णिच्चच्छणिय- त्रि० *[नित्यक्षणिक]*
नित्यं सर्वदा क्षणा उत्सवा यत्राऽसौ नित्यक्षणिकः सार्वदिकोत्स-वयुक्ते, नाया० १ श्रु०४ अ० ।

णिच्चणियंसण– त्रि० *[नित्यनियंसण]*
जं दिया रातो य परिहिज्जेह । निसि० ।

णिच्चदुक्खिय- त्रि० *[नित्यदुःखित]*
सदा दुःखाऽऽकुले, तं० ।

णिच्चदोस- पुं० *[नित्यदोष]*
अविनाशिदोषे, ठा० ।
तथा नित्यो यो दोषोऽभव्यानां मिथ्यात्वाऽऽदिरनाद्यपर्यवसि-तत्वात्, स दोषः सामान्यापेक्षया विशेषः अथवा– सर्वथा नित्ये वस्तुनि अभ्युपगते यो दोषो बालकुमाराऽऽद्यवस्थाभावाऽऽपत्ति-लक्षणः, सदोषः सामान्यापेक्षया दोषविशेष इति । ठा०१० ठा० ।

णिच्चभत्तिय- पुं० *[नित्यभक्तिक]*
नित्यमेकाशनिनि साधौ, कल्प० ९ क्षण० ।

णिच्चल- त्रि० *[निश्चल]*
अचले, उत्त०५ अ० ।
गमागमाऽऽदिरहिते, नाया०१ श्रु०२ अ० । रा० ।

णिच्चलपय- न० *[निश्चलपद]*
मोक्षे, रा० ।

णिच्चसंदण- त्रि० *[नित्यस्यन्दन]*
नित्यस्रवणशीले सततवाहिनि, कल्प०९ क्षण० ।

णिच्चसहाय- पुं० *[नित्यसहाय]*
अवस्थितसहाये, वव०६ उ० ।

णिच्चसुह- त्रि० *[नित्यसुख]*
सदा सौख्ये, आव०६ अ० ।

णिच्चाणिच्च- त्रि० *[नित्यानित्य]*
स्थितिभवनभङ्गरूपापेक्षया नित्ये, भवनभङ्गरूपापेक्षयाऽनित्ये, ठा० १ ठा० ।

णिच्चालोए– पुं० *[नित्यालोक]*
अष्टाशीतौ महाग्रहे चतुषष्ठितमः । ठा० ।

णिच्चालोग- पुं० *[नित्यालोक]*
चतुःषष्टितमे महाग्रहे, 'दोणिच्चालोया ।' ठा०२ ठा०३ उ० । कल्प० । सूर० । चंद० ।
नित्यमालोक उद्योतो यत्रेति । सर्वकालमुद्द्योतमाने, कल्प० ३

णिच्चुजोय- पुं० *[नित्योद्द्योत]*
पञ्चषष्टितमे महाग्रहे, 'दो णिच्चुज्जोया ।' ठा० २ ठा०३ उ० । कल्प० । चंद० । सूर० ।

णिच्चेट्ठ- त्रि० *[निश्चेष्ट]*
व्यापाररहिते, नाया० १ श्रु०२ अ० ।

णिच्चेयणय- त्रि० *[निश्चेतनक]*
चैतन्यवर्जिते शरीरे, तं० ।

णिच्चोउआ- स्त्री० *[नित्यर्तुका]*
नित्यं सदा, न त्र्यहमेव ऋतु् रक्तप्रवृत्तिलक्षणो यस्याः सा नित्यर्तुका। सदा रजस्वलायाम्, सा च गर्भं न धरते। ठा० ५ ठा० २ उ० ।

णिच्चोयग- त्रि० *[नित्योदक]*
प्रचुरजले, कल्प० ९ क्षण० ।

णिच्छइय- पुं० *[नैश्चयिक]*
निश्चये भवो नैश्चयिको नयः । निश्चयनये विशे० । भग० ।

णिच्चक्क- त्रि० *[देशी]*
निर्लज्जे, बुह० १ उ० ।
धृष्टे, वव०५ उ० ।
अनवसरज्ञे, नाया०१ श्रु०९ अ० ।

णिच्छय- पुं० *[निश्चय]*
निराधिक्ये चयनं चयः पिण्डीभवनमधिकश्चयो निश्चयः। अणुओ० ।
निरधिकश्चयो निश्चयः । सामान्ये, आव० चू०१ अ० ।
परमार्थे, आव०म० । आव० । सूय० । उव० ।
अवश्यङ्करणाभ्युपगमे तत्त्वनिर्णये, भग०२ श०५ उ० । आव० म० । सूय० । नाया० ।
निर्णयः निर्गतकर्मचयो निश्र्चयः-मोक्षः । पण्हा० ।

णिच्छयकहा- स्त्री० *[निश्चयकथा]*
अपवादे, ऋजुसूत्राऽऽदिभिः शुद्धनयैः क्रियमाणायां कथायाम्, निसि० ५ उ० ।

णिच्छयणय- पुं० *[निश्चयनय]*
ऋजुसूत्राऽऽद्यास्तु चत्वारो निश्चयनयाः । बुह० ४ उ० ।

णिच्छल्लिय- त्रि० *[निश्छल्लिक]*
छल्लीरहिते, बुह० १ उ० ।

णिच्छाय- त्रि० *[निश्छाय]*
गतश्रीके, नाया०३ श्रु०३ अ०।
विशोभे, पण्हा० २ अ०।

णिच्छिड्ड- त्रि० *[निश्छिद्र]*
स्थगितरन्ध्रे, भग०।

णिच्छिण्ण- त्रि० *[निश्छिन्न]*
रूपाऽऽदिव्यावृत्तेः पृथक्कृते, विशे०।

णिच्छिय- त्रि० *[निश्चित]*
अवश्यं भाविनि, सम० ६ सम०।
निश्चयवति, नाया० १ श्रु०१ अ०। पण्हा०।
असंशये, सम०११ सम०।

णिच्छुभण- न० *[निक्षुभण]*
निष्काशने, वव० ८ उ०।

णिच्छूढ- न० *[निष्ठ्यूत]*
निष्ठीवने, विशे०। आव०म०।
निष्ठ्यूतम्। दश० ३८।

णिच्छूहणा- स्त्री० *[निक्षोभणा]*
निःसरास्माद् गेहादिति भर्त्सने, नाया० १ श्रु० १६ अ०।

णिच्छेय- त्रि० *[निश्चेय]*
निश्चीयत इति निश्चेयः। अवश्यकरणीये, रा०।

णिच्छोडइत्ता- अव्य० *[निश्छोट्य]*
प्राप्त्यर्थं त्याजयित्वेत्यर्थे, भग० १५ श०।
पुरुषान्तरसम्बन्धिहस्ताऽऽद्यवयवतो वियोजयित्वेति,भग०१५श०
सम्बन्धान्तरसंबद्धहस्ताऽऽदौ गृहीत्वा बलात् क्षिप्त्वेत्यर्थे, ठा० ५ ठा० १ उ०। उवा०।

णिच्छोडणा- स्त्री० *[निश्छोटना]*
त्यजास्मदीयवस्त्राऽऽदीत्यादिरूपे भर्त्सने, भग०१५ श०। नाया०।

णिच्छोलण- न० *[निश्छोटन]*
त्वगपनयने, 'अंगादाणं णिच्छोलेइ, णिच्छोलंतं वा साइज्जइ।'
णिच्छोलेति त्वचमपनयति, महामणिं प्रकाशयति। निसि०१ उ०

णिजुद्ध- न० *[नियुद्ध]*
सर्वसन्धिविक्षोभणपूर्वके युद्धे, निसि० १२ उ०। उव०। नाया०।

णिज्जप्पपाणभोयण- न० *[निर्याप्यपानभोजन]* क०सम०।
निर्यापनाकारकेषु दुर्बलेषु पानभोजनेषु, पण्हा०५ अ०।

णिज्जरट्ठया- स्त्री० *[निर्जरार्थता]*
ममाऽप्येतान् वाचयतः कर्मनिर्जरा विपुला भविष्यतीति प्रयोजने, । आव०म०१ अ०१ । ठा०।

णिज्जरण- न० *[निर्जरण]*
यतनोपयोगिज्ञानदर्शनविशुद्धव्रते, उव०।
दाने च, 'णिज्जरणं भवत्थाणं।' वव०७ उ०।

णिज्जरमाण- त्रि० *[निर्जरयत्]*
निर्जरां कुर्वाणे, भग०१८ श०३ उ०।

णिज्जरा- स्त्री० *[निर्जरा]*
निर्जरणं निर्जरा।कर्मक्षये, आव०३ अ०। ठा०। ओह०। आचा०
कर्मणां जीवप्रदेशेभ्यः परिशटने, ठा०१० ठा०।
कार्त्स्नेनानुसमयं विशेषकर्मविपाकहान्या परिशटने, ठा०४ ठा०४
कर्मपुद्गलशाटने, सूय०२ श्रु०५ अ०। आव०। ठा०।
नाशे, कर्मणोऽकर्मताभवने, ठा० २ ठा०४ उ०।
विशरणे परिशटने, ठा० १ ठा०।

णिज्जरापेहि- त्रि० *[निर्जराऽपेक्षिन्]*
निर्जरणं निर्जरा कर्मणामात्यन्तिकः क्षयः, तामपेक्षतेकथं ममाऽसौ स्यादित्यभिलषतीति निर्जराऽपेक्षी। उत्त०२ अ।
कर्मक्षयमभीप्सौ, उत्त०२ अ०।

णिज्जरापेहि- त्रि० *[निर्जराऽपेक्षिन्]*
निर्जरां प्रेक्षितुं शीलमस्येति निर्जराप्रेक्षी। निर्जरातत्वज्ञे, आचा० १ श्रु० ८ अ० ८ उ०।

णिज्जरापोग्गल- पुं० *[निर्जरापुद्गल]*
निर्जीर्णेकर्मदलिके, भग० १८ श०३ उ०।
निर्जरापुद्गलः-अपगतकर्मभावः- परमाणुः। पन्न०।

णिज्जरिज्जमाण- त्रि० *[निर्जीयमान]*
नितरामपुनर्भावेन क्षीयमाणे कर्मपुद्गले,भग०१ श०२ उ०। ठा०

णिज्जरिय- त्रि० *[निर्जरित]*
सर्वथा क्षयं नीते, तं०।
वन्दित्वा कायवाग्मनोभिः स्तुतिं विधाय जिना रागद्वेषाऽऽदि-जयनशीलाः सामान्यकेवलिनः, तेषु तेभ्यो वा वरः प्रधाना-तिशयापेक्षया श्रेष्ठो जिन वरस्तम्। तं०।

णिज्जवग- पुं० *[निर्यापक]*
निर्यापयति तथा करोति यथा गुर्वपि प्रायश्चित्तं शिष्यो निर्वाहयतीति निर्यापकः। ठा०८ ठा०।
असमर्थस्य प्रायश्चित्तिनः प्रायश्चित्तस्य खण्डशः करणेन निर्वा-हके, भग० २५ श०७ उ०।
तथा प्रायश्चित्तं दत्त यथा परो निर्वोढुमलं भवति। ठा० १० ठा०
नेदानीं निर्यापकाः सन्तीति । वव० १ उ०।

णिज्जवणा- स्त्री० *[निर्यापणा]*
निराधिक्येन यान्ति प्राणिनः प्राणास्तेषां निर्यतां निर्गच्छतां प्रयोजकं निर्यापणा।
अष्टाविंशगोणहिंसायाम्, पण्हा०१ अ०।
प्रश्नार्थव्याख्यानस्य निगमने, आव०म०१ अ० । आव०चू०।
निर्यापना तु दापनादर्शितस्यैवार्थस्य प्रत्याभ्यासः प्रत्युच्चारणं निगमनम्। विशे०।

णिज्जाण- न० *[निर्याण]*
निरुपमं याने निर्याणम्। ईषत्प्राग्भाराऽऽख्ये मोक्षपदे, आव० ४ अ०। नाया०।
संसारात्पलायने, आव०चू०४ अ०।
अनावृत्तिगमने, उव०। आचा०। ठा०।
मरणकाले शरीरान्निर्गमे, ठा०३ ठा०४ उ०।
नगरान्निर्गमे, ठा०३ ठा०४ उ०।
पुरस्य निर्गमनमार्गे, सूर० ४ पाहु०। । चंद०।
णगर गाम वा जं ठियं तं। निसि०।

णिज्जाणकहा- स्त्री० *[निर्याणकथा]*
राजकथाभेदे, ठा०४ ठा०२ उ०।

णिज्जाणमग्ग- पुं० *[निर्याणमार्ग]*
निर्वाणस्य मोक्षपदस्य मार्गो निर्याणमार्गः। विशिष्टनिर्याण-प्राप्तिकारणे, आव०४ अ०। नाया०।
सिद्धिक्षेत्रगमनोपाये, भग०९ श०३३ उ०।
निर्याणस्य मरणकाले शरीरिणः शरीरान्निर्गमस्य मार्गो निर्याण-मार्गः। पादाऽऽदिके, ठा०।

णिज्जाणियलेण- न० *[नैर्याणिकलयन]*
नगरनिर्गमग्रहे, भग० १३ श०६ उ०।

णिज्जाणिया- स्त्री० *[निर्याणिकी]*
निर्याणक्रीडायाम्, निसि० ८ उ०
रायादियाण निग्गमणं ठाणं। निसि०।

णिज्जामग- पुं० *[निर्यामक]*
प्रापके, विशे०।
कर्णधारे, उव०
समुद्रे प्रवहणनेतरि, वव०३उ०।आव०म०।आव०। विशे०। रा०

णिज्जाय- त्रि० *[निर्यात]*
निश्चयेनापगते, आव०६ अ०।

णिज्जायकारण- त्रि० *[निर्यातकारण]*
निश्चयेन यातमपगतं कारणं प्रयोजनं यस्मिन्नसौ निर्यातकारणः। अपगतप्रयोजने, आव० ६ अ०। नाया०।

णिज्जायमाण- त्रि० *[निर्यत्]*
निर्याणकारके, 'पाएहिं णिज्जायमाणे निरयंगामी भवइ।' ठा० ५ ठा० ३ उ०।

णिज्जायरूवरयय- त्रि० *[निर्यातरूपरजत]*
णिज्जायरूवरयए गिहिजोगपरिवज्जए जे से भिक्खू।दश०६ अ०

णिज्जास- पुं० *[निर्यास]*
स्नेहे, सूय० २ श्रु० ३ अ०।
रसे, सूय० २ श्रु० १ अ०।
निर्यासः। ओह० १००।

णिज्जिण्ण- त्रि० *[निर्जीर्ण]*
क्षीणे, भग०१ श०१ उ०।
क्षीणरसीकृते, भग० १२ श०४ उ०।

णिज्जियसत्तु- त्रि० *[निर्जितशत्रु]*
पराजितशत्रौ, रा०। सूय०।

णिज्जियसत्तुसेण- त्रि० *[निर्जितशत्रुसेन]*
स्ववशीकृतविपक्षनृपतिसैन्ये, बुह० १ उ०।

णिज्जीव- न० *[निर्जीव]*
निर्जीवकरणे, रसेन्द्रस्य मूर्च्छाप्रापणे च।
एतच्च एकसप्ततितमा कला। जंबू० २ वक्ष०। नाया०। उव०। सम०।

णिज्जुत्त- त्रि० *[निर्युक्त]*
खचिते, नाया०१ श्रु०१ अ०। उव०।
निश्चयेनाऽऽधिक्येन साधु वा आदौ वा युक्ताः संबद्धा निर्युक्ताः।
निर्युक्तिव्यवस्थापितेषु, आव०म०१ अ०१ ।
निश्चयेन प्ररूपिते, आव०म० २ अ०।

णिज्जुत्ति- स्त्री० *[निर्युक्ति]*
निर्युक्तानामैव सूत्रेऽर्थानां युक्तिः परिपाट्या योजनम्, निर्युक्त-युक्तिरितिवाच्ये,युक्तशब्दलोपान्निर्युक्तिःदश०१अ०।सम०।ओह० निश्चयेनार्थप्रतिपादिका युक्तिर्निर्युक्तिः।आचा० १ श्रु० २ अ० १ उ०, सूय०।
भद्रबाहुस्वामिकृते व्याख्यानग्रन्थे, विशे०।
व्याख्योपायभूते सत्पदप्ररूपणताऽऽदौ, अणुओ०।
निर्युक्तिः निश्चयेन आदौ वा युक्ता अर्थास्तेषां युक्तिः निर्युक्ता-र्थव्याख्या वा। आव०।

णिज्जुत्तिअणुगम- पुं० *[निर्युक्त्यनुगम]*
निर्युक्तिर्नामस्थापनाऽऽदिप्र-कारैः सूत्रविभजनेत्यर्थः, तद्रूपोऽनु-गमस्तस्या वाऽनुगमोव्याख्यानं निर्युक्त्यनुगमः। अनुगमभेदे, । अणुओ०।

णिज्जुत्तिगार- पुं० *[निर्युक्तिकार]*
चतुर्दशपूर्वधरे श्रीभद्रबाहौ, तेन हि सर्वा निर्युक्तयः कृताः। आचा० १ श्रु० १ अ०१ उ०।

णिज्जूढ- त्रि० *[निर्यूढ]*
निष्काशिते, वव०२ उ०।
सा निर्यूढा निष्काशिता सती साधूनामुपरि प्रद्वेषं यायात्। बुह०३
पूर्वगतादुद्धृत्य विरचिते, दश०१ अ०।
'सत्तेक्कगई सत्त वि, णिज्जूढाई महापरिण्णाओ।' आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ०।
उज्झितप्राये, बुह०१ उ०।
कालावधीए जे ठप्पा कया ते णिज्जूढा। निसि०।

णिज्जूह- पुं० *[निर्यूह]*
गवाक्षे, वव०१ उ०।
णिज्जूहग- त्रि० *[निर्यूहक]*
पूर्वगतोद्धृतार्थविरचनाकर्तरि, दश० १ अ०।
द्वारोपरितनपूर्वविनिगतदारुणि, न०। पण्हा० १ अ०।
णिज्जूहगय- त्रि० *[निर्यूहगत]*
गवाक्षगते, वव०१ उ०।
णिज्जूहणा- स्त्री० *[निर्यूहणा]*
गच्छात् संघाद् वा निष्काशनायाम्, वव० १ उ०।
णिज्जूहित्तए- अव्य० *[निर्यूहितुम्]*
अपाकर्तुमित्यर्थे, वव०।
निर्यूहणा नामवैयावृत्यस्याकरणं, यदि वा वसतौ दोषाभावे यत् स्थानं न ददाति एषा निर्यूहणा। वैयावृत्याकरणाऽऽदिना यत्तस्य तपोऽकरणं सा निर्यूहणेति भावः। वव०२ उ०।
परित्यागे, ठा० ४ ठा० २ उ०।
णिज्जूहियव्व- त्रि० *[निर्यूहितव्य]*
ताम्बूलिकपत्रदृष्टान्तेन संघाद् बहिः कर्तव्ये, कल्प०९ क्षण०।
णिज्जोग- पुं० *[निर्योग]*
परिकरे, नाया०१ श्रु०१ अ०।
यथा पात्रनिर्योगः। बुह०३ उ०।
णिज्झर- पुं०न० *[निर्झर]*
उदकस्य स्रवणे, भग०५ श०७ उ०।
स्यन्दने, नाया०१ श्रु०१ अ०।
स्रोताऽऽदिविवरेषु, अणुओ०।
णिज्झाएत्ता- अव्य० *[निर्ध्याय]*
प्रलोक्येत्यर्थे, आचा०१ श्रु०५ अ० ४ उ०।
निश्चयेन ध्यात्वा चिन्तयित्वेत्यर्थे, आचा० १ श्रु० १ अ० ६ उ०।
णिज्झाएत्ता- त्रि० *[निर्ध्यातृ]*
दर्शनानन्तरमतिशयेन चिन्तयति, ठा० ९ ठा०।
णिज्झाएमाण- त्रि० *[निर्ध्यायत्]*
पश्यति, प्रेक्षमाणे, आचा०२ श्रु०३ चू०१ अ०।
णिज्झोसइत्ता- त्रि० *[निर्झोषयितृ]*
पूर्वोपचितकर्मणां क्षपके, आचा०१ श्रु०३ अ०३ उ०।
णिट्टंकिय- त्रि० *[निष्टङ्कित]*
निर्धारिते, ठा०।
णिट्ठवणिया- स्त्री० *[निष्ठापनिका]*
परिसमाप्तिकारिकायाम्, यथा पक्षस्य पञ्चदशी, अमावस्या च। ज्यो० ४ पाहु०।।
णिट्ठवय- पुं० *[निष्ठापक]*
समाप्तिकारके दिवसे, आव० ६ अ०।
णिट्ठविंसु- त्रि० *[निष्ठापितवत्]*
निष्ठां नीतवति, भग०२९ श०१ उ०।
णिट्ठवियअट्ठमदट्ठाण- त्रि० *[निष्ठापिताष्टमदस्थान]*
निष्ठापितानि क्षयं नीतानि अष्टौ मदस्थानानि मानभेदाः जातिकुलरूपबललाभश्रुततपोविभवमदाख्या येनासौ निष्ठापिताष्टमदस्थानः। क्षीणमदे, गच्छा० १ अधि०।
णिट्ठा- स्त्री० *[निष्ठा]*
पर्यवसाने, सूय० १ श्रु० १५ अ०।
समापने, आचा० २ अ०।
सारे सद्भावे, आव०चू०१ अ०।
णिट्ठाण- न० *[निष्ठान]*
निष्पत्तौ, निसि०१ उ०।
निष्ठीयतेऽत्र। भक्ताऽऽद्यन्नोपसेचने दध्यादौ व्यञ्जने, सर्वगुणोपेते, दश० १ अ०।
णिट्ठाणकहा- स्त्री० *[निष्ठानकथा]*
विकथाभेदे, ठा० ४ ठा० २ उ०।
णिट्ठाभासि- त्रि० *[निष्ठाभाषिण्]*
सावधारणभाषिणि, आचा०१ श्रु० १ चू०४ अ०१ उ०।
निशम्य भाषिणि, आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०२ उ०।
णिट्ठिक- त्रि० *[नैष्ठिक]*
सर्वधर्मप्रकर्षपर्यन्तवर्तिनि, पण्हा०३ अ०।
णिट्ठिय- त्रि० *[निष्ठित]*
निष्ठां गते कृतस्वकार्ये, नाया०१ श्रु०१ अ०।
मोक्षे, परिसमाप्ते, आचा०१ श्रु०५ अ०६ उ०। वव०।
निःसत्ताके, भग०६ श०१ उ०।
काल-गते, बुह० २ उ०। आव०म०।
सिद्धे अशनाऽऽदौ, आचा०२ श्रु० १ चू०१ अ०९ उ०।
परिसमत्तणं। दश०।
णिट्ठियट्ठ- त्रि० *[निष्ठितार्थ]*
विषयसुखनिष्पिपासे, आचा०१ श्रु०६ अ०४ उ०।
निष्ठितः समापितोऽर्थः प्रयोजनं यस्य स निष्ठितार्थः। आचा०१ श्रु०५ अ०६ उ०।
कृतकृत्ये, सूय०१ श्रु० १५ अ०। पन्न०। आव०म०।
णिट्ठियट्ठि- त्रि० *[निष्ठितार्थिन्]*
निष्ठितो मोक्षस्तेनार्थी। मुमुक्षौ, आचा०१ श्रु०५ अ०६ उ०।
णिट्ठुर- त्रि० *[निष्ठुर]*
मार्दवाननुगते, गच्छा०१ अधि०।
प्रस्तरे, गच्छा०२ अधि०।
यथा हेक्काप्रधाना भाषा निष्ठुरा, अशक्यप्रतीकारतया दुर्भेदा भाषा निष्ठुरा। रा०। आचा०।

णिट्ठवण- न० *[निष्ठीवन]*
नासिकामुखेन परित्यागे,कासितश्लेष्माऽऽदिप्रक्षेपणे,दश०२अ० निष्ठीवनाऽऽदौ इह साधवो द्विधागच्छगताः, गच्छनिर्गताश्च। तत्र ये गच्छनिर्गतास्ते नियमादनिष्ठीवकाः, औपग्रहिकमल्लकाऽऽद्युपकरणासम्भवात्। गच्छगता अपि ये विधिना निष्ठीव्यन्ति ते अनिष्ठीवका एव, न प्रायश्चित्तविषयाः।वव० १ उ०।
निष्ठीवनकर्तरि, ठा० ५ ठा० १ उ०। विशे०।

णिडाल- न० *[ललाट]*
भाले, तं०। उत्त०।
अलीके, जीवा०३ प्रति० ४ उ०। जंबू०।

णिणाय- पुं० *[निनाद]*
नितरां नादो महान् घोषः। जीवा०३ प्रति०४ उ०।
महति घोषे, कल्प०५ क्षण०। नाया०।
निर्घोषे, आव०म० १ अ०२ ।
प्रतिध्वनौ, जंबू०३ वक्ष०। पण्हा०।

णिण- त्रि० *[निम्न]*
नीचभूमिभागे, उत्त०१२ अ०।
शुष्कसरः प्रभृतौ, भग०१५ श०।

णिण्णक्खु- त्रि०।
निस्सारयतीत्यर्थे, । आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०१ उ०।

णिण्णगा- स्त्री० *[निम्नगा]*
नद्याम्, नीचैर्गामिनि, त्रि०। पन्न०१ पाद०।

णिण्णय- पुं० *[निर्णय]*
निश्चये, आव० म०१ अ०१ ।

णिण्णार- त्रि० *[निर्नगर]*
नगरनिष्क्रान्ते, 'अप्पेगइए णिण्णारे करेहिंति।' भग०१५ श०।

णिण्णामिया- स्त्री० *[निर्नामिका]*
ईशानकल्पोपपन्नस्य ललिताङ्गनाम्न ऋषभदेवाऽष्टमभवजीस्वयंप्रभानाम्न्यां देव्याम्, कल्प० ७ क्षण०। आव०म०। आव०चू०।

णिण्णिमेस- त्रि० *[निर्निमेष]*
अचेष्टे, म्रियमाणे, तद्गतप्रवचनकार्यानुपयोगिनि, ठा०५ठा०२ उ०

णिण्हइया- स्त्री० *[नैह्नविकी]*
ब्राह्मीलिपिभेदे, पन्न० १ पद०। सम०।

णिण्हग- पुं० *[निह्नव]*
निह्नुवतेऽपलपन्ति अन्यथा प्ररूपयन्तीति निह्नवाः। ठा०७ ठा०। आव०म०।
मिथ्यात्वाभिनिवेशाज्जिनोक्तार्थस्यापलापकजमाल्यादिषु, विशे०
त्यक्तसम्यग्दर्शनेषु, वव० १ उ०।

णिण्हव- धा० *[निह्नु]*
अपलपने, निह्नुते। अपलपति, बृह० १ उ०।

णिह्नव- पुं० 'णिण्हग' शब्दार्थे, ठा० ७ ठा०।
जो पुच्छिओ संतो सव्वहा अवलवइ। दश०।

णिण्हवण- पुं० *[निह्नवन]*
अपहृतधनाऽऽदिपरधनापहाराऽऽदिकं यैरपह्नुते न प्रकाशयति ते निह्नवनाः। अपहारगोपनच्छलप्रयोगेषु, विपा० १ श्रु०२ अ०।

णितंब- पुं० *[नितम्ब]*
पर्वताऽऽदेः कटके, स्त्रीकटेः पश्चाद् भागे च 'नीलवंतस्स वासहर पव्वयस्स द्राहिणिल्ले णितंबे।' जंबू० ४ वक्ष०।

णितिओमाण- न० *[नित्यावमान]*
नित्यमवमानं प्रवेशः स्वपक्षपरपक्षयोर्येषु तानि तथा। सर्वदा भिक्षूणां गोचराय कृतप्रवेशेषु कुलेषु, आचा०।
नित्यलाभात् तेषु स्वपक्षः संयतवर्गः, परपक्षोऽपरभिक्षाचरवर्गः सर्वो भिक्षार्थं प्रविशेत्। आचा०२ श्रु० १ चू०१ अ०१ उ०।

णितिय- न० *[नित्य]*
ध्रुवे, सतते, निसि०।

णितियपिंड- पुं० *[नित्यपिण्ड]*
मया एतावद्दातव्यं, भवता तु नित्यमेव ग्राह्यमित्येवं नियमग्राह्ये पिण्डे, ठा० १० ठा०।

णितियवास- पुं० *[नित्यवास]*
नित्यमवस्थानाद् नित्यः। नित्यवासिनि, ऋतुबद्धवर्षासु प्रमाणाधिकवासे, निसि०।

णितियावाइ- त्रि० *[नित्यावादिन्]*
नित्यो मोक्षो यत्र गतानां पुनरागमनाऽऽदि नास्ति। नित्यतयाऽवस्थितिर्यत्रास्ति तन्निषेधप्ररूपके, दशा० ६ अ०।

णित्त- न० *[नेत्र]*
नयने, लोचने, ठा० १० ठा०।

णित्तल- त्रि० *[निस्तल]*
अनिवृत्ते, 'तेणं णित्तलं मणिरयणं अस्सादेंति।' भग० १५ श०।

णित्तुस- त्रि० *[निस्तुप]*
अचोप्पडे, अवग्घारिते, बृह०१ उ०।

णित्तुस- त्रि० *[निस्तुष]*
तुषरहिते, तद्वद् विशुद्धे च। पण्हा० ४ अ०।

णित्तेय- त्रि० *[निस्तेजस्]*
गतकान्तौ, निर० १ श्रु०१ वर्ग०१ अ०।
निर्वीर्ये, भग०९ श०३३ उ०।

णित्थरण- न० *[निस्तरण]*
पारप्रापणे, जंबू०३ वक्ष०।
'भरणित्थरणसमत्था'। आव०म०१ अ०२ । जंबू०।

णित्थरिज्जंत- त्रि० *[निस्तीर्यमाण]*
पर्यन्ते प्राप्यमाणे, संथा०।

णित्थाण- त्रि० *[निस्थान]*
स्थानभ्रष्टे, नाया०१ श्रु०१८ अ० ।
स्थानवर्जिते, विपा० १ श्रु०३ अ० ।

णित्थारणा- स्त्री० *[निस्तारणा]*
पारप्रापणायाम्, जंबू० ३ वक्ष० ।

णिदंसण- न० *[निदर्शन]*
कथञ्चिद् गृह्णतः अभ्युपगच्छतः परानुकम्पया निश्चयेन पुनः पुनर्दर्शने, ठा० १० ठा० । अणुओ० । गच्छा० । उत्त० ।

णिदंसिय- त्रि० *[निदर्शित]*
नितरामनुज्ञाते, कथञ्चिद् गृह्णतः परयाऽनुकम्पया निश्चयेन पुनः पुनर्दर्शिते, गच्छा० २ अधि० । अणुओ० ।

णिदरिसण- न० *[निदर्शन]*
निश्चयेन दर्श्यतेऽनेन दार्ष्टान्तिक एवार्थ इति निदर्शनम् । दृष्टान्ते, दश० १ अ० ।

णिदा- स्त्री० *[निदा]*
निदानं निदा । प्राणिहिंसा नरकाऽऽदिदुःखहेतुरिति जानतोऽपि, यद् वा साधूनामाधाकर्म न कल्पते इति परिज्ञानवतोऽपि जीवानां प्राणव्यरोपणे, पिंड० ।
नियतं दानं शुद्धिर्जीवस्य 'दैप्' शोधने इति वचनाद्, निदा। ज्ञाने, आभोगे, तद्युक्ता वेदनाऽपि निदा। आभोगवत्यां वेदनायाम्, भग० १९ श० ५ उ० ।

णिदाह- *[निदाघ]*
लोकोत्तररीत्या श्रावणाऽऽदिगणनया एकादशे लौकिकरीत्या ज्येष्ठाऽऽख्ये मासे, आव० ५ अ० ।

णिदाह- पुं० *[निदाह]*
अधिको दाहो निदाहः । असाधारणदाहे, आव० ५ अ० ।

णिदंझाण- न० *[निद्राध्यान]*
निद्रापरतन्त्रस्य ध्यानं निद्राध्यानम् । स्त्यानर्द्धिनिद्रया महिषमांस भक्षिमोदकाभिलाषिहस्तिदन्तोत्पाटकारि प्राक्कुम्भकारत्वाभ्यस्त मृत्पिण्डत्रोटनवत् साधुमस्तकत्रोटिवटशाखाभेदिसाधूनामिव दुर्ध्याने, आतु० ।

णिद्दक्खय- पुं० *[निद्राक्षय]*
स्वापप्रमोक्षे, निद्राक्षयेण सुप्तोऽपि बुध्यते । ठा० ५ ठा०२ उ० ।

णिद्दड्ढ- पुं० *[निर्दग्ध]*
सीमन्तकप्रभान्नरकेन्द्रकात्पूर्वस्यामावलिकायामेकविंशेऽपक्रान्तनरके, ठा०५ ठा०२ उ० ।
'माया' शब्दे उदाहरिष्यमाणायां रण्डायाम्, । महानि० २ चू० ।

णिद्दड्ढमज्झ- पुं० *[निर्दग्धमध्य]*
सीमन्तकमध्यादुत्तरस्यामावलिकायामेकविंशेऽपक्रान्त महानरके ठा० ६ ठा० ।

णिद्दड्ढावत्त- पुं० *[निर्दग्धाऽऽवर्त]*
सीमन्तकाऽऽवर्तात् पश्चिमायामेकविंशेऽपक्रान्तमहानरके, ठा० ६ ठा० ।

णिद्दड्ढोसिट्ठ- पुं० *[निर्दग्धावशिष्ट]*
सीमन्तकावशिष्टाद्दक्षिणस्यामावलिकायामेकविंशेऽपक्रान्तमहानरके, ठा० ६ ठा० ।

णिद्दय- त्रि० *[निर्दय]*
निष्करुणे, पण्हा० १ अ० ।
निष्कृपे, पण्हा०१ अ० ।
निर्घृणे, पण्हा०१ अ० ।

णिद्दलण- न० *[निर्दलन]*
मर्दने, आचा०१ श्रु०१ अ०४ उ० ।

णिद्दा- स्त्री० *[निद्रा]*
'द्रा' कुत्सायां गतौ । नियतं द्राति कुत्सितत्वमविस्पष्टत्वं गच्छति चैतन्यमनयेति निद्रा । उत्त० । ठा० ।
निद्रा-सुखप्रतिबोधलक्षणा । भग० ।

णिद्दाणिद्दा-स्त्री० *[निद्रानिद्रा]*
शाकपार्थिवाऽऽदित्वान्मध्यमपदलोपी वा समासः । ठा० ९ ठा० ।

णिद्दापमाय- पुं० *[निद्राप्रमाद]*
प्रमादकारणीभूतनिद्रायाम् 'निद्राशीलो न श्रुतं नाऽपि वित्तं, लब्धुं शक्तो हीयते चैष ताभ्याम् । ज्ञानद्रव्याभावतो दुःखभागी, लोकद्वैते स्यादतो निद्रयाऽऽलम् । ठा० ६ ठा० ।

णिद्दामत्त- त्रि० *[निद्रामत्त]*
निद्राऽभिभूते, आव०५ अ० ।

णिद्दायण- न० *[निद्रायण]*
निषण्णस्य स्वप्नावस्थायाम्, बुह०३ उ० ।

णिद्दारिय- त्रि० *[निर्दारित]*
विस्फारिते, पण्हा०३ अ० ।
निष्कासिते, 'निद्दालियग्गजीहे ।' उवा०२ अ० ।

णिद्दिट्ठ- त्रि० *[निर्दिष्ट]*
कथिते, विशे० । तं० ।
प्रतिपादिते, आव० ।

णिद्दुद्धिया- स्त्री० *[निर्दुग्धिका]*
दुग्धरहितायाम्, तं० ।

णिद्देज्ज– त्रि० *[निर्देह]*
पुव्वं पडिहारितो दत्तो इदाणिं णिद्देज्जं देहित्ति । निसि० ।

णिद्देस- पुं० *[निर्देश]*
निर्देशनं निर्देशः ।
विशेषाभिधाने, यथा आवश्यके सामायिक- मिति । अणुओ० । आव०म० ।

णिद्देसदोस-पुं० *[निर्देशदोष]*
उचितनिर्देशाकरणरूपे सूत्रदोषे, अणुओ०
स च यत्र निर्दिष्टपदानामेकवाक्यता न क्रियते, यथेह देवदत्तः स्थाल्यामोदनं पचतीत्यभिधातव्ये पचतीति शब्दं नाभिधत्ते। अणुओ०। विशे०।
निर्देशदोषो नाम यत्र वस्तुपर्यायवाचिनः पदार्थस्यार्थान्तर परिकल्पनाऽऽश्रयणम्। यथा– द्रव्यपर्यायवाचिनां सत्ताऽऽदीनां द्रव्यादर्थान्तरपरिकल्पनमुलूकस्य। आव० म०१ अ०२ ।

णिद्देसवत्ति- त्रि० *[निर्देशवर्तिन्]*
आज्ञावर्तिनि, 'णिद्देसवत्ती पुण जे गुरुणं।' दश०९ अ०२ उ०।

णिद्दोत्थ- न० *[निर्दौस्थ्य]*
निर्भये, वव०४ उ०।
स्वस्थे, वव०७ उ०

णिद्दोस- त्रि० *[निर्दोष]*
निरवद्ये। 'अलियमुवघायजणियं। इत्यादिद्वात्रिंशत्सूत्रदोषरहिते ठा० ७ ठा०। आव०म०। अणुओ०।
हिंसादि दोषरहिते, अणुओ०।
समस्तोक्तानुक्तदोषविप्रमुक्ते, विशे दोषस्याभावे, वव०१ उ०।
अप्रायश्चित्ते, निसि०१ उ०।

णिद्ध- पुं० *[स्निग्ध]*
संयोगे सति संयोगिनां बन्धकारणे रसभेदे, । ठा० १ ठा०। पुद्गलद्रव्याणां मिथः संयुज्यमानानां बन्धनिबन्धने तैलाऽऽदि स्थिते रसे, अणुओ०। आचा०।
सस्नेहे, त्रि०। नाया०१ श्रु०८ अ०। आव०। सम०।
रात्रिभोजनाभ्यङ्गसूत्रयोर्यद् गृहाऽऽदिकं तैल वर्जितमद्रवं भवति तदेव स्निग्धमुच्यते। बुह०५ उ०।
अरूक्षे, कल्प०२ क्षण०। जीत०। उव०। पन्न०। जंबू०।
कान्ते, प्रश्न ०४ अ०। तं०। उव०।
स्निग्धं मनोहरं तेजो यासां ताः स्निग्धतेजसः। जीवा०३ प्रति०४

णिद्धंत- त्रि० *[निर्ध्मात]*
नितरामग्निसंयोगेन यद् ध्मातं विशोधितम् जीवा० ३ प्रति० ४ उ०। उव०।
दग्धमले, उव०। तं०। पण्हा०।

णिद्धंधस- पुं० *[निर्धन्धस]*
प्रवचनोपघातनिरपेक्षे, आव०३ अ०।
अत्यन्तमैहिकामुष्मिकापायशङ्काविकलः अत्यन्तंजन्तुबाधनिपेक्षो व परिणामोऽध्यवसायो वा। उत्त०

णिद्धच्छवि- स्त्री० *[स्निग्धच्छवि]*
स्निग्धा च कान्तिमती छविस्त्वक्। कान्तत्वचि, 'सुवन्नवन्ने सुकुमारया य, णिद्धच्छवी।' बुह० ३ उ०

णिद्धण- त्रि० *[निर्धन]*
गोमहिष्यादिरहिते, विपा० १ श्रु०३ अ०।

णिद्धण्णय- त्रि० *[निर्धान्यक]*
धान्यकणविवर्जिते, तं०।

णिद्धबंधणपरिणाम– त्रि० *[स्निग्धबन्धनपरिणाम]*
स्निग्धस्य सतो बन्धनपरिणामः। पण्हा० ।

णिद्धमण- न० *[निर्धमन]*
क्षाले, जलनिर्गममार्गे, ठा०५ ठा०१ उ०।
'खाल' इति देशप्रसिद्धम्। तं०।
'कुणालाए णिद्धममूले वसही वरिसायाले देवयाणुकंपेणं न वरिसइ।' आव०म० १ अ०२ ।
ऋद्धिरससातगौरवैर्युक्तत्वेन मृत्वा यक्षत्वमुपागते आर्यमङ्गाचार्ये, आव०४ अ०।

णिद्धम्म- त्रि० *[निर्धर्म]*
निर्गतो धर्मात् श्रुतचारित्रलक्षणादिति निर्धर्मः। पण्हा० १ अ०।
धर्मादपक्रान्ते, पण्हा०१ अ०।

णिद्धम्म- त्रि० *[निर्धर्मन्]*
निर्गतो धर्मो यस्य। असंयतीभूते, वव० १० उ०।
पार्श्वस्थाऽऽदिषु, निसि०१ उ०।

णिद्धाडण- न० *[निर्धाटन]*
निष्कालने, पण्हा०१ अ०।

णिद्धारण- न० *[निर्धारण]*
जातिगुणक्रियासंज्ञाभिः समुदायादेकदेशस्य पृथक्करणे, नररूपसमुदायात् क्षत्रियजातेरेकदेशस्य शूरत्वेन पृथक्करणम्। आचा०।

णिद्धुणे- अव्य० *[निर्द्धूय]*
प्रस्फोट्येत्यर्थे, 'अणिस्सिए सणिद्धुणे धुन्नमले।' दश०७ अ०।

णिद्धूम- त्रि० *[निर्धूम]*
धूमरहिते, निर्धूमं ग्रामं दृष्ट्वा अतीव भिक्षाप्रस्ताव इति ज्ञायते। आव०म० १ अ० २ ।

णिद्धूमग- पुं० *[निर्धूमक]*
अपलक्षणभेदे, यत्प्रभावतो राज्यमनुशासति रन्धनीयमेव न भवति। वव० ३ उ०।

णिद्धूय- त्रि० *[निर्धूत]*
अपनीते, रा०।

णिद्धूयजरढपंडुपत्त- त्रि० *[निर्द्धूतजरठपाण्डुपत्र]*
निर्द्धूतानि अपनीतानि जरठानि पाण्डुपुत्राणि येभ्यस्ते निर्द्धूतजरठपाण्डुपत्राः। जीवा०३ प्रति०४ उ०।
अपगतपुराणपाण्डुपुत्रेषु, उव०।

णिद्धोभास- त्रि० *[स्निग्धावभास]*
स्निग्धत्वेनावभासमाने, नाया० १ श्रु०१ अ०। रा०।

णिधत्त- न० *[निधत्त]*
निधानहं निहितं वा निधत्तम्, निपातनादुद्वर्त्तनापवर्तनवर्जितानां शेषकरणानामयोग्यत्वेन कर्मणोऽवस्थाने, पूर्वबद्धस्यकर्मणस्तप्त-संमीलितलोहशलाकासंबन्धसमाने करणे, 'चउव्विहे णिधत्ते पन्नत्ते। तं जहा-पगइणिधत्ते, ठिइणिधत्ते, अणुभागणिधत्ते, पएसणिधत्ते।' ठा०४ठा०२उ०।
विशिष्टानां परस्परतः पुद्गलानां निचयं कृत्वा धारणं रूढिशब्दत्वेन निधत्तमुच्यते।भग० १ श० १उ०

णिधत्ति- पुं० *[निधत्ति]*
निधीयते उद्वर्तनाऽपवर्त्तनावर्जशेषकरणायोग्यत्वेन व्यवस्थाप्यते यया सा निधत्तिः। निधत्ताऽऽख्यकरणे, निसि० १३ उ०।

णिधन- न० *[निधन]* पर्यवसानम्। पण्हा० ५।

णिधूय- अव्य० *[निर्धूय]*
अपनीयेत्यर्थे, 'णिधूय कम्मं ण पचं चुवेइ।' सूय०१ श्रु०७ अ०।

णिन्दित्तए- अव्य० *[निन्दितुम्]*
निन्दितुमतिचारान् स्वसमक्षं जुगुप्सितुमित्यर्थे, ठा०२ ठा०१ उ०

णिन्दू- स्त्री० *[निन्दू]*
मृतप्रजायां स्त्रियाम्, निन्दू महेला यद् यदपत्यं प्रसूयते तत्तन्म्रि-यते, एवं च आचार्यो यं यं प्रव्राजयति स स म्रियते अपगच्छति वा, ततः स निन्दूरिव निन्दूः। वव० ३ उ०

णिपडिसाडि- त्रि० *[निष्परिशाटिन्]*
परिशाटिरहिते, बुह०२ उ०।

णिपतंत- त्रि० *[निपतत्]*
नीचैः पतति, पण्हा०१ अ०।

णिपरिग्गहरुइ- पुं० *[निष्परिग्रहरुचि]*
निर्गता परिग्रहरुचिर्यस्य सः। परिग्रहविरते, पण्हा०५ अ०

णिपातिणी- स्त्री० *[निपातिनी]*
अभिमुखपातिन्याम्, । सूय०१ श्रु०९ अ०।

णिप्पंक- त्रि० *[निष्पङ्क]*
आर्द्रमलरहिते, उव०।
कर्दमविशेष रहिते, कलङ्कविकले च। सम०। पन्न०। आव० म०। जीवा०। ठा०। रा०। जंबू०।
'णिरया णिम्मला णिप्पंका।' पन्न०२ पद०।
कलङ्कविकला कर्दमरहिता वा। जंबू० ।
निष्पङ्कः-आर्द्रमलरहितः अकलङ्को वा। उव०।

णिप्पदं- त्रि० *[निष्पन्द]*
किञ्चिच्चलनेनापि रहिते, उवा० ७ अ०।

णिप्पकंप- त्रि० *[निष्प्रकम्प]*
स्वरूपतोऽपीषद् व्यभिचारलक्षणकम्पाभावात् । सम०२ सम ।
अतीव निश्चले, आव०४ अ०।

णिप्पच्चक्खाणपोसहोववास- त्रि० *[निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवास]*
प्रत्याख्यानपरिणामपर्वदिवसोपवासपरिणामाभावात् (रा०)
अविद्यमानपौरुष्यादिप्रत्याख्याने,असत्पर्वदिनोपवासे,दशा०६अ
असत्पौरुष्यादिनियमे, अविद्यमानाष्टम्यादिपर्वोपवासे, भग० ७ श० ६ उ०। ठा०।
निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासा-असत्पौरुष्यादिनियमा अविद्यमा-नाष्टम्यादिपर्वोपवासाश्चे-त्यर्थः। जंबू०।

णिप्पच्चवाय- त्रि० *[निष्प्रत्यवाय]*
प्रत्यवाय(मार्गोपद्रव)रहिते, निसि०१ उ०।

णिप्पट्ठपसिणवागरण- त्रि० *[निःस्पृष्टप्रश्नव्याकरण]*
निर्गतानि स्पृष्टानि प्रश्नव्याकरणानि यस्य स तथा। निरुत्तरी-कृते,भग० १५ श०

णिप्पट्ठपसिणवागरण- त्रि० *[निःस्पष्टप्रश्नव्याकरण]*
निरस्तानि स्पष्टानि व्यक्तानि (वागरणानि) प्रश्नव्याकरणानि यस्य स निःस्पष्टप्रश्नव्याकरणः। निरुत्तरीकृते, 'अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य णिप्पट्ठपसिणवागरणं करेह।' भग० १५ श०।

णिप्पडिकम्मया- स्त्री० *[निष्प्रतिकर्मता]*
शरीरस्य प्रतिकर्माऽकरणे, आव०।

णिप्पडियार- त्रि० *[निष्प्रतीकार]*
अचिकित्स्ये, पण्हा०४ अ०।

णिप्पण्णमेइणीय- पुं० *[निष्पन्नमेदनीक]*
निष्पन्ना, कोऽर्थः ? निष्पन्नसर्वशस्या मेदिनी यत्र स तथा। शस्य-निष्पत्तिकाले, 'कल्प०४ क्षण०।

णिप्पत्त- त्रि० *[निष्पन्न]*
स्वभावतः पत्ररहिते, वव० १ उ०।

णिप्पत्ति- स्त्री० *[निष्पत्ति]*
निष्पादने, वव०१ उ०।
सिद्धौ, ठा०९ ठा०। विशे०।

णिप्पभ- पुं० *[निष्प्रभ]*
प्रभारहिते, 'देवे चइस्सामीति जाणइ विमाणाभरणाइं णिप्पभाइं पासित्ता। विमानाऽऽभरणानां निष्प्रत्वमौत्पातिकं तच्चक्षुर्विभ्रम-रूपं वा। ठा०३ ठा०३ उ०।

णिप्परिग्गह- त्रि० *[निष्परिग्रह]*
बाह्याऽऽभ्यन्तरपरिग्रहरहिते, उत्त० १४ अ०।
क्वचिदविद्यमानस्वीकारे, उत्त० १४ अ०।

णिप्पलाय- पुं० *[निष्प्रलाक]*
भरते वर्षे भविष्यति चतुर्दशे तीर्थकरे, सम०।

णिप्पाण- त्रि० *[निष्प्राण]*
उच्छ्वासाऽऽदिरहिते, नाया०१ श्रु०२ अ०।

णिप्पाव- पुं० *[निष्पाव]*

वल्लाऽऽख्ये धान्यभेदे, इति धान्येषु निष्पावः पुलाकधान्यम्। बुह०५ उ०। जंबू०। ठा०। भग०। दश०। आचा०।

सचित्रभागकाकण्या त्रिभागोनगुञ्जाद्वयेन वा निवृत्ते प्रतिमाने, अणुओ०।

औषधिविशेषः। पन्न०।

णिप्पिवास- त्रि० *[निष्पिपास]*

पिपासायास्तृष्णाया निर्गतो निष्पिपासः। निस्पृहे, उत्त०१९ अ०।

निराकाङ्क्षे, पण्हा०२ अ०।

निःस्नेहे, पण्हा०१ अ०।

णिप्पीलण- न० *[निष्पीडन]*

निश्चयेन पीडने, आचा०१ श्रु०४ अ०४ उ०।

णिप्पुलाय- पुं० *[निष्पुलाक]*

आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां भरते वर्षे भविष्यति बलदेवजीवे चतुर्दशे तीर्थकरे, सम०।

णिप्फण्ण- त्रि० *[निष्पन्न]*

परिनिष्ठिते, विशे०। आव०म०१ अ० ।

णिप्फाइय- त्रि० *[निष्पादित]*

योग्यतामापादिते, आचा०१ श्रु०८ अ०१ उ०।

'ताहे तम्मि दिवसे समयसहस्सेणं तत्तं णिप्फादितं चिंतेइ।' आव०म०२ अ०।

णिप्फायण- न० *[निष्पादन]*

करणे, आसेवने, आव०४ अ०।

णिप्फाव- पुं० *[निष्पाव]*

वल्लनामके धान्यभेदे, जंबू०२ वक्ष०।

णिप्फेडिय- त्रि० *[निष्फेटित]*

निष्काशिते, आव०म०१ अ०२

निःसारिते, सूय०२ श्रु०२ अ०।

अपहृते, ठा०३ ठा०४ उ०।

णिबंध- पुं० *[निबन्ध]*

कालविशेषे देयत्वेन प्रतिश्रुते वस्तुनि, 'निबन्धो द्रव्यमेव' इति स्मृतिः। 'अम्मापियरो य पुत्तनेहेण अणुजाणंति, नेच्छइ निबंधे वि कए, कहं सुचिरक्खियं वयं भंजामि ?' आव० ४ अ०।

णिबद्ध- त्रि० *[निबद्ध]*

निर्ग्रथिते, सम०१ सम०।

णिबोलिज्जमाण- त्रि० *[निवोड्यमान]*

निमज्जमाने, पण्हा०३ अ०।

णिब्बल- त्रि० *[निर्बल]*

निर्गतं बलं सामर्थ्यं यस्येति निर्बलम्। निःसारे, आचा० १ श्रु० ५ अ० ४ उ०।

णिब्बलासय- पुं० *[निर्बलाशक]*

निर्बलं निस्सारमन्तप्रान्ताऽऽदिकं यद् द्रव्यं, तदशकस्तद्भोजी। अभिग्रहविशेषेण वल्लचणकाऽऽदिमात्रभोजिनि, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ०।

णिब्बलिय- त्रि० *[निर्वलित]*

शुद्धाशुद्धस्वरूपे, विशे०।

णिब्भंजण- न० *[निर्भञ्जन]*

पक्वान्नोत्तीर्णदग्धघृते, पण्हा०।

णिब्भच्छण- न० *[निर्भर्त्सन]*

अरे दुष्कर्मकारिन्नपसर दृष्टिमार्गादित्यादिरूपे आक्रोशविशेषे कटुकवचने, पण्हा०३ अ०।

अङ्गुल्यादिना तर्जने, निसि०१ उ०।

णिब्भच्छणा- स्त्री० *[निर्भर्त्सना]*

न त्वया मम प्रयोजनमित्यादिपरुषवचने, भग०१५ श०।

णिब्भय- त्रि० *[निर्भय]*

इहलोकाऽऽदिसप्तभयविप्रमुक्ते, आव०४ अ०। पण्हा०।

गतभीके, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०। आव०म०।

अविद्यमानराजाऽऽदिभये, पण्हा०३ अ०।

भयरहिते, यत्र भयं न विद्यते। निसि० १ उ०।

णिब्भर- न० *[निर्भर]*

निःशेषेण भरो भारोऽत्र। अतिमात्रे तद् युक्ते, आव०म० १ अ०

णिब्भिज्जमाण- त्रि० *[निर्भिद्यमान]*

नितरामतिशयेन भिद्यमाने, जीवा० ३ प्रति० ४ उ०। जंबू०।

प्राबल्याभावेनाधो विदार्यमाणे, भग० १८ श० २ उ०। जंबू०।

णिभ- त्रि० *[निभ]*

सदृशे, जंबू०३ वक्ष०। उत्त०। उव०।

णिभंग- पुं० *[निभङ्ग]*

गात्राणां भञ्जने, पण्हा०१ अ०।

णिभमेत्त- न० *[निभमात्र]*

उदाहरणमात्रे, निसि०८ उ०।

णिभाल- धा० *[निभाल]*

'खंधावारनिवेसे निभालेहि।' आव०म०१ अ०२ । आचा०।

णिभेलण- *[देशी]*

गृहे, 'सोमलच्छीबिभेलणं।' कल्प० ३ क्षण०

णिमंतणा- स्त्री० *[निमन्त्रणा]*

विषयोपभोगं प्रति प्रार्थने, सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ०।

भोगोपभोगं प्रति अभ्युपगमकरणे, सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ०। अणुओ०। आचा०। उव०।

अगृहीतेनाशनाऽऽदिनाऽहं भवदर्थमशनाऽऽद्यानयामीत्येवं भूतायां भक्तितः प्रार्थनायाम्, ठा०। जीत०। निसि०।भग०

णिमंतेमाण- त्रि० *[निमन्त्रयत्]*
निमन्त्रणं कुर्वाणे, 'तओ पच्छा तस्स गिहे णिमंतेमाणस्स अणिमंतेमाणस्स।' आचा० २ श्रु० १ चू० २ अ०३ उ०।

णिमग्ग- त्रि० *[निमग्न]*
अधोजलगमनानि कुर्वाणे, पण्हा०३ अ०।
पङ्काऽऽद्यवसन्ने, उव०। आव०म०।

णिमग्गजला- स्त्री० *[निमग्नजला]*
निमज्जयत्यस्मिन् तृणाऽऽदिकमखिलं वस्तुजातमिति निमग्नम्, बहुलवचनादधिकरणे क्तप्रत्य-यः। निमग्नं जलं यस्यां सा तथा। तमिस्रगुहाया मध्ये वहन्त्यां नद्याम्, जंबू०३ वक्ष०। आव०चू०।

णिमज्जग- पुं० *[निमज्जक]*
वानप्रस्थभेदेषु, ये स्नानार्थं निमग्ना एव क्षणं तिष्ठन्ति। निर० १ श्रु० ४ वर्ग० १ अ०। उव०। भग०।

णिमज्जण- न० *[निमज्जन]*
जलप्रवेशे, गच्छा०२ अधि०। बुह०।

णिमित्त- न० *[निमित्त]*
हेतौ, कारणे, विशे०।
सहकारिकारणे, निमित्तकारणे च। सूय०२ श्रु०२ अ०।
उपष्टम्भकारणे, विशे०। आव०म०। वव०।
द्वे शब्दस्य निमित्ते। तद्यथा–व्युत्पत्तिनिमित्तं प्रवृत्तिनिमित्तं च। यथा गोशब्दस्य। तथाहि–गोशब्दस्य व्युत्पत्तिनिमित्तं गमन क्रिया, गच्छतीति गौरिति व्युत्पादनात्। तेन च गमनेनैका-र्थिसमवायतया यदुपलक्षितं सास्नाऽऽदिमत्वं, तत्प्रवृत्तिनिमित्तं, तेन गच्छति, अगच्छति वा गोपिण्डे गोशब्दः प्रवर्तते, उभय्यामप्यवस्थायां प्रवृत्तिनिमित्तभावात्। अश्वाऽऽदौ तु न प्रव-र्तते, यथोक्तरूपस्य प्रवृत्तिनिमित्तस्य तत्राभावात्। वव०१ उ०।

णिमित्तकारण- न० *[निमित्तकारण]*
पटस्य निमित्तं तन्तव एव कारणं निमित्तकारणम्, तद्व्यतिरेकेण पटानुत्पत्तेः। तथा च तन्तुभिर्विना न भवति यतः, तथा तद्गततानागऽऽदिचेष्टाव्य-तिरेकेणापि न भवति, तस्याश्च चेष्टाया वेमाऽऽदि कारणम्। अन्यद्रव्यकारणभेदे, आव०म० १ अ० । आव०चू०।

णिमित्तणिप्पण्ण- त्रि० *[निमित्तनिष्पन्न]*
चिह्ननिष्पन्ने करणनिष्पन्ने, 'चिंधणिप्पन्नं ति, करणणिप्पन्नं ति, णिमित्तणिप्पन्नं ति वा एगट्ठं।' आव०चू० १ अ०।

णिमित्तपिंड- पुं० *[निमित्तपिण्ड]*
निमित्तमङ्गुष्ठप्रश्नाऽऽदि, तदवाप्तो निमित्तपिण्डः। आचा० २ श्रु०१ चू०१ अ०९ उ०।
अतीतानागतवर्त्तमानकालेषु लाभाऽऽदिकथनं भिक्षार्थं कुर्वता उत्पादनादोषसंपर्केण गृहीतपिण्डे, जीत०।

णिमित्तलक्खण- न० *[निमित्तलक्षण]*
विज्ञानहेतौ निमित्तशास्त्रे, विशे०।

णिमित्तजीविया- स्त्री० *[निमित्ताजीविका]*
त्रैकालिकलाभालाभाऽऽदि-विषयनिमित्तोपात्ताऽऽहाराऽऽदि उप जीवने, ठा०४ ठा०४ उ०

णिमेस- पुं० *[निमेष]*
अक्षिनिमीलने, भग०१४ श०१ उ०। आव०म०

णिम्मद्दग- पुं० *[निर्मर्दक]*
चौरविशेषे, पण्हा०३ अ०।

णिम्मद्दिय- त्रि० *[निर्मर्दित]*
दलिते, पण्हा०३ अ०।

णिम्मम- त्रि० *[निर्मम]*
निर्गतं ममत्वं बाह्याऽऽभ्यन्तरेषु वस्तुषु यस्मादसौ निर्ममः। सूय०१ श्रु०१० अ०।
ममत्वरहिते, संथा०। आव०। पंच०भा०। पन्न०। आव०म०।
वस्त्रपात्राऽऽदिषु ममत्वरहिते, उत्त०१९ अ०।
अस्यां भारतभूमौ उत्सर्पिण्यां भविष्यति सुलसाजीवे पञ्चदशे तीर्थकरे, सम०।

णिम्मल- त्रि० *[निर्मल]*
स्वाभाविकाऽऽगन्तुकमलरहिते, जीवा०३ प्रति०४ उ०। तं०। पन्न०। आव०म०। जंबू०। रा०।
विमले, उव०। पण्हा०।
कठिनमलरहिते, भग०२ श०९ उ०। सम०। उव०।
विशुद्धे, नाया०१ श्रु०१ अ०।
स्वच्छे, कल्प०३ क्षण०। भग०।
घट्टिनीघटिते, 'मट्ठा घट्ठा नीरया निम्मला०। पन्न०२ पद०।
पूर्वबद्धकर्मविनिर्मुक्ते द्रव्यमलवर्जिते सिद्धे, उव०।
ब्रह्मलोके षण्णां विमानप्रस्तटानां चतुर्थे, ठा० ६ ठा० अमिल। निसि०।

णिम्मलजलपुण्ण- त्रि० *[निर्मलजलपूर्ण]*
निर्मलने जलेन भृते, कल्प० ३ क्षण०।

णिम्मल्ल- न० *[निर्माल्य]*
तार्थाऽऽदिगतसप्रभावप्रतिमाशेषे, पिंड०।

णिम्मवइत्ता- त्रि० *[निर्मापयितृ]*
सफलतापर्यन्तकार्यनेतरि, ठा०४ ठा०४ उ०।

णिम्महियरागरोस- त्रि० *[निर्मथितरागरोष]*
निराकृतप्रीतिद्वेषे, जीवा ०१ अधि०।

णिम्माणणाम- न० *[निर्माणनामन्]*
सर्वजीवशरीरावयवनिष्पादके अङ्गोपाङ्गकर्मणि, आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ०। कर्म०। उत्त०।

णिम्माय- पुं० *[निर्मात]*
निष्पन्ने, बुह०६ उ०।
परिनिष्ठामुपागते, वव० १ उ०।
विशिष्टाभ्यासवति, कल्प०३ क्षण०।
सूत्रार्थतदुभयज्ञे, 'आयरियाण सगासे, अमुयत्तेणं तु णिम्माया।' वव० ३ उ०।

णिम्मावित्त- त्रि० *[निर्मापयितव्य]*
कर्त्तव्ये, पंच महब्भूया अणिम्मिया अणिम्मावित्ता अकडा नो कित्तिमा।' सूय० २ श्रु०१ अ०।

णिम्मिय- त्रि० *[निर्मित]*
निवेशिते, उवा०७ अ०। नाया०।
न्यस्ते, नाया०१ श्रु०१ अ०।
निष्पादिते, सूय०२ श्रु०१ अ०।
कृते, ठा०८ ठा०। उव०।

णिम्मियवाइ- त्रि० *[निर्मितवादिन्]*
निर्मितमीश्वरब्रह्मपुरुषाऽऽदिना कृतं लोकं वदतीति निर्मितवादी। ईश्वरकृतलोकवादिलक्षणे अक्रियावादिनि, । ठा०।

णिम्मिस्सवल्ली- स्त्री० *[निर्मिश्रवल्ली]*
नालबद्धेऽनन्तरस्वजनवर्गे। वव० १० उ०।

णिम्मूल- त्रि० *[निर्मूल]*
उच्छिन्नमूले, 'णिम्मूलुल्लुणकण्णोट्ठनासिकाछिन्नहत्थपङ्क्या।' पण्हा०१ अ०।
णिम्मूलितंतफुरफुरंतविगलमम्महयविगयगाढदिण्णपहारमुच्छि-तरुलंतविब्भलविलावकलुणो। निर्मूलितानि विकुक्षितो बहिः–कृतानि अन्त्राणि उदरमध्यावयवविशेषा येषां ते । पण्हा०३ अ०

णिम्मेरे- त्रि० *[निर्मर्याद]*
परस्त्रीपरिहाराऽऽदिमर्यादाविलोपित्वात् । रा०। दशा० ।
लोककुलाऽऽद्यपेक्षया । ठा०३ ठा०२ उ।
अविद्यमानकुलाऽऽदिमर्यादे, जंबू०२ वक्ष०। भग०।
प्रतिपन्नाऽपरिपालके, ठा०३ ठा०१ उ०।

णिम्मोयणी-स्त्री० *[निर्मोचनी]*
निर्मोके कञ्चुके, 'जहा य भोई तणुयं भुयंगो, णिम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो । उत्त०१४ अ०।

णियइ- स्त्री० *[निकृति]*
मायायाम्, तत्प्रच्छादनार्थे मृषावचने च। पण्हा०२ अ०। सम०।

णियइ- स्त्री० *[नियति]*
नियमनं नियतिः। यथाभवने, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ०।
अवश्यंभाव्युदये, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०।
सा च पदार्थानामवश्यतया यथाभवने प्रयोजककर्त्रीति। ठा० ४ ठा० ४ उ०। आचा०।

णियइकड- त्रि० *[नियतिकृत]*
अवश्यंभाव्युदयप्रापिते, सूय०१ श्रु० १ अ०२ उ०।

णियइकम्म- न० *[निकृतिकर्मन्]*
निकृतेर्मायायाः कर्म्म निकृतिकर्म। एकोनत्रिंशे गौणचौर्ये, पण्हा० ३ अ०।

णियइपण्णाण- त्रि० *[निकृतिप्रज्ञान]*
निकृतिर्माया, तद्विषये पज्ञानं यस्य स तथा। ग्लानः प्रति-चरणीयो मा भवत्विति ग्लानवेषमहं करोमीत्येवमादि विकल्प-वति, सम०।
'सड्ढे नियइपण्णाणे, कलुसाउलचेयसा। अप्पणो य अबोहीए, महामोहं पकुव्वइ । सम० ३० सम०।

णियइपव्वय- पुं० *[नियतिपर्वत]*
नियत्या नैयत्येन पर्वता नियतिपर्वताः। नियतपर्वतेषु यत्र वाणमन्तरा देवा देव्यश्च भावधाणीयत्वेन वैक्रियशरीरेण प्रायः सदा रममाणा अवतिष्ठन्त इति। जीवा० ३ प्रति०४ उ०। रा०।

णियइवाइ- पुं० *[नियतिवादिन्]*
सर्वभावानां नियतिकृतत्ववादिनि, नं०।

णियंटिय- त्रि० *[नियन्त्रित]*
नितरां यन्त्रितं नियन्त्रितमिति। नियते प्रतिज्ञातदिनाऽऽदौ ग्लानत्वाऽऽद्यन्तराभावेऽपि नियमात्कर्त्तव्ये प्रत्याख्यानभेदे, नं०। एतच्च प्रथमसंहननिनामेवेत्यभ्यधायि च। ठा०१० ठा०।

णियंठ- पुं० *[निर्ग्रन्थ]*
निर्गता ग्रन्थात्सबाह्याभ्यन्तरादिति निर्ग्रन्थाः। साधुषु, ते पञ्चधा–पुलाकः, बकुशः, कुशीलः, निर्ग्रन्थः, स्नातकश्चेति। तत्र निर्ग्रन्थः निर्गतो मोहनीयकर्मलक्षणाद्ग्रन्थादिति निर्ग्रन्थः।भग०

णियंठिपुत्त- पुं० *[निर्ग्रन्थिपुत्र]*
पेढालविद्याधरेण सुज्येष्ठाभिधानायां साध्व्यामुत्पादिते सत्यकौ, ठा० १० ठा०।

णियंठिया- स्त्री० *[नैर्ग्रन्थिकी]*
निर्ग्रन्थो भगवाँस्तस्येयं नैर्ग्रन्थिकी। तीर्थकरकृतायाम्, 'जं छन्नं तन्न वत्तव्वं, एसा आणा नियंठिया।' सूय० १ श्रु०९ अ०।

णियंसण- न० *[निवसन]*
परिधाने, उव०। उत्त०। जीवा०।

णियंसित्ता- अव्य० *[नुष्य]*
परिधायेत्यर्थे, 'देवदूसजुगलं नियंसित्ता अग्गेहिं वरेहि य मल्लेहि य अच्चेइ।' जीवा० ३ प्रति० २ उ०। रा०।

णियग- पुं० *[निजक]*
स्वकीये पुत्राऽऽदौ, निर० ।
स्वजने, निसि०२ उ०।
आत्मीये बान्धवे, सुहृदि च। आचा० १ श्रु०२ अ०१ उ०।

णियगपरिवाल- पुं० *[निजकपरिवार]*
आत्मीयपरिवारे, णियगपरिवालेण सद्धिं संपरिवुडे। रा०। उव०

णियच्छइत्ता- अव्य० *[नियम्य]*
अवश्यतया प्राप्येत्यर्थे, सूय०१ श्रु० १ अ०१ उ०।
निश्चयेनावतीर्य युक्त्वेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०।

णियट्टमाण- त्रि० *[निवर्त्तमान]*
व्यावर्त्तमाने, आचा०१ श्रु०६ अ०४ उ०।

णियट्टि- स्त्री० *[निवृत्ति]*
निवर्त्तनं निवृत्तिः। त्यागे, प्रतिक्रमणे, आव०।

णियट्टिबायर- पुं० *[निवृत्तिबादर]*
निवृत्तिप्रधानो बादरो बादरसंपरायो निवृत्तिबादरः। सम०१४
क्षपकश्रेण्यन्तर्गते क्षीणदर्शनसप्तके अपूर्वकरणाऽऽख्यसप्तमगुण-स्थानवर्तिनिजीवग्रामे, आव०४ अ०।
'इदाणिं नियट्टी–जदा जीवो मोहणिज्जं कम्मं खवेति वा, उवसमेति वा, तदा अप्पमत्तसंजतस्स अणंतरपमत्ततरेसु अज्झवसाणट्ठाणेसु वट्टमाणो दंसणमोहणिज्जे कम्मे खवेति, उवसामिते वा० जाव हासरतिअरतिसोगभवदुगंछाणं उदयवोच्छेदो न भवति, ताव सो भगवं अणगारो अंतोमुहुत्त-कालं नियट्टि त्ति भवति।' आव०चू०४ अ०।
भूताग्रामस्याष्टमं गुणस्थानम्। आव०।

णियडि- स्त्री० *[निकृति]*
नितरां करणं निकृतिः। आदरकरणेन परवञ्चने पूर्वकृतमाया-प्रच्छादनार्थे मायान्तरकरणे, भग०१२ श०५ उ०। पण्हा०। आव०। सम०।
आकारवचनाऽऽच्छादने, वव० ४ उ०।
बकवृत्त्या कुक्कुचाऽऽदिकरणेन दम्भप्रधानवणिक्श्रोत्रिय-साध्वा-कारेण परवञ्चनार्थं गलकर्त्तकानामिवावस्थाने, सूय०२ श्रु०२ अ०। दशा०। आव०म०। नाया०। ठा०। तं०।
बकवृत्त्या कुक्कुचाऽऽदिकरणे, अधिकोपचारकरणेन परच्छलने, मायाप्रच्छादनार्थं मायान्तरकरणे, नाया० १ श्रु०१८ अ०।
मायायाम्, आव०५ अ०। सूय०। वव०। दशा०।
परस्य व्यञ्जकत्वेन अधिकायक्रिया णियडी। निसि०।

णियडिल्लया- स्त्री० *[निकृतिमत्ता]*
निकृतिर्वञ्चनार्थं चेष्टा, मायाप्रच्छादनार्थं मायान्तरमित्येके। अत्यादरकरणेन परवञ्चनमित्येन्ये। तद्वत्ता। भग० ८ श०९ उ०।
निकृतिश्च वञ्चनार्थं कायचेष्टाऽऽद्यन्यथाकरण लक्षणाभ्युपचार लक्षणं वा, तद्वत्ता। निकृतौ, ठा० ४ ठा० ४ उ०।

णियण- न० *[निदान]*
निर्दलने, 'नियणाऽलुणणमद्दणवावारे बहुविहे दिया काउं।' बुह०१ उ०।

णियत- त्रि० *[नियत]*
निश्चिते, विशे०। सूय०। उत्त०।
प्रतिनियत-स्वरूपे, आव०म०१ अ०१ ।
परिच्छिन्ने, आव०४ अ०।
परिमिते, विशे०।
शाश्वते, आव०४ अ०।
एकरूपत्वात् शाश्वतत्वात् सर्वकालमवस्थिते, जंबू०४ वक्ष०

णियत- त्रि० *[निवृत्त]*
अपरते, 'परिग्गहारंभनियत्तदोसा।' उत्त० १४ अ०।
'निवृत्ता जीवितास्तेऽत्र, सर्वेऽप्यन्ये पुनर्मृताः ' आव०।

णियत्तण- न० *[निवर्तन]*
भूमिपरिमाणविशेषे, उत्त० १ अ०।
आगमने, आव० ४ अ०।

णियत्तणसयय- न० *[निवर्तनशतक]*
निवर्त्तनं भूमिपरिणामविशेषो देशविशेषप्रसिद्धः, ततो निवर्तन-शतं कर्षणीयत्वेन यस्याऽस्ति तन्निवर्त्तनशतकम्। निवर्त्तनशत-कर्षके हले, । उवा० १ अ०।

णियत्तणिय- न० *[निवर्तनिक]*
निवर्त्तनं क्षेत्रमानविशेषः, तत्परिमाणं निवर्तनिकम्। निवर्त्तन-भावे, निजतनुप्रमाणे, । भग०३ श०१ उ०।

णियत्तभाव- त्रि० *[निवृत्तभाव]*
निवृत्तपरिणामे अदुष्टाध्यवसाये, 'सुहुमो वि कम्मबंधो, न होइ उ नियत्तभावस्स। वव० २ उ०।

णियत्तमाण- त्रि० *[निवर्तमान]*
प्रत्यावर्तने, 'गुरुगा नियत्तमाणे।' वव० १ उ०।

णियत्ति- स्त्री० *[निवृत्ति]*
निवर्त्तने, 'असंजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तणं।उत्त०३१ अ०।

णियत्थ- त्रि० *[निवसित]*
परिहिते, आव०म० १ अ० ।

णियद्दिय- त्रि० *[न्यर्दित]*
नितरामर्दिते, अनुगते, 'अट्टनियद्दियचित्ता।' उव०। सूर०।

णियम- पुं० *[नियम]*
तत्त्व अभिग्रहे, निरोधे, पंच०चू०। ।
व्रते, संथा०
अभिग्रहविशेषे, संथा०। नाया०। उव०।
द्रव्यक्षेत्रकालभावेनाभिग्रहप्रहणे, उवा० ७ अ०। संथा०।
महाव्रताऽऽदिरूपे, । सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ० ।
विरमणे, संथा०। आव०म०।
पिण्डविशुद्ध्यादिके उत्तरगुणे, पण्हा०४ अ०। सम०।
अवश्यम्भावी। पण्हा०।

णियमण- न० *[नियमन]*

संयमे, उद्देसम्मि चउत्थे, समासवयणेण नियमणं भणियं। आचा० निर० १ श्रु०४ अ०१ उ०।

कारणे, आचा०१ श्रु०२ चू०अ०।

बन्धने, सूय०१ श्रु०८ अ०

उपरमे, 'अदत्तवरदारनियमणेहिं।' आतु०।

णियमणिप्पकंप- न० *[नियमनिष्प्रकम्प]*

नियमेनावश्यंभावेन निष्प्रकम्पमविचलं निरतिचारं यत्तत्तथा। निरपवादे व्रतान्तरं साप-वादमपि स्याद्, ब्रह्मचर्यं तु निरपवादमेव। पण्हा०१ अ०।

णियमपगंप– न० *[नियमप्रकम्प]*

कायोत्सर्गः। बुह०।

णियमप्पहाण- त्रि० *[नियमप्रधान]*

विचित्रैरभिग्रहविशेषैरुत्तमे, ते वा नियमा उत्तमा यस्य, रा०।

णियमसो– त्रि० *[नियमशः]*

नियमात्, अवश्यभावेन। उत्त० ।

णियमारक्खिय- पुं० *[नियमारक्षिक]*

राज्ञः सर्वप्रकृतीर्यो नियमाद् रक्षति स नियमारक्षिकः। श्रेष्ठिनि, निसि०४ उ०।

सव्वपगईओ जो रक्खति सो णियमारक्खिओ। निसि०।

णियय- त्रि० *[निजक]*

आत्मीये, आव०३ अ०।

णियय- त्रि० *[नियत]*

शाश्वते, सूय०१ श्रु०८ अ०।

नियताः सर्वभावा यैर्यथा भवितव्यं ते तथैव भवन्ति, न पुरुषकारबलादन्यथा कर्तुं शक्यन्ते इति। उवा०६ अ०।

भिक्षाचर्यां नियताकदाचिदाभिग्रहिकी, अनियताकदाचिदनाभि-ग्रहिकी।' बुह०१ उ०।

सदैव स्वस्वरूपा। वव०।

णिययचारि- त्रि० *[नियतचारिन्]*

अप्रतिबद्धविहारिणि, सूय०१ श्रु०७ अ०।

णिययपरिणाम- पुं० *[निजकपरिणाम]*

स्वाभिप्राये, स्वाभिप्रायान्। जीवा० २८ अधि०।

णिययपव्वय- पुं० *[नियतपर्वत]*

सदा भोग्यत्वेनावस्थितेषु पर्वतेषु, येषु देवा देव्यश्च भवधार-णीयेनैव वैक्रियशरीरेण प्रायः सदा रममाणा अवतिष्ठन्ते। रा०। जीवा०।

णिययपिंड- पुं० *[नियतपिण्ड]*

मया एतावद्दातव्यं, भवता तु नित्यमेव ग्राह्यमित्येवं नियतया गृह्यमाणे पिण्डे, ठा० १० ठा०।

णिययवास- पुं० *[नियतवास]*

विहारकाले विहारमकृत्वा एकत्रवासे 'जाहे वि अपरितंता, गामागरनगरपट्टणमडंता। तो केइ नियवासी, संगमथेरं ववइसंति।आव०३ अ०।

'भवयमणियतविहारं, णिययविहारं ण ताव साहूणं। कारण-नीयावासं, जो सेवे तस्स का वत्ता ?'। महानि०४ अ०।

णिययाणियय- त्रि० *[नियताऽनियत]*

अवश्यमनवश्यंभाविनि, 'निययानियय संतं, अयाणंता अबुद्धिआ सुखाऽऽदिकं किञ्चिन्नियतिकृतमवश्यं भाव्युदयप्रापितं तथाऽनियतमात्मपुरुषकारेश्वराऽऽदिप्रापितं सद् नियतकृतमेवै-कान्तेनैवाऽऽश्रयन्त्यतोऽजानानाः। सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०।

णिययाभिप्पायउज्जयविहारि-त्रि० *[निजकाभिप्रायोद्यतविहारिन्]*

स्वमत्तसुविहिते, जीवा० १ प्रति०।

णिययावास- पुं० *[नियतवास]*

'णिययवास' शब्दार्थे, आव०३अ०

णियल- न० *[निगड]*

लोहमये 'बेडी' इतिख्याते पादयोर्बन्धने, उव०।

'नियलेहि य बद्धा पिहिया य।' आव०म०१ अ० । सूय०।

णियलिंगि- पुं० *[निजलिङ्गिन्]*

स्वमतवेषिणि, जीवा० ३५ अधि०।

णियल्ल-१ पुं० *[निगड]*

अष्टाशीतिमहाग्रहाणं त्रयःपञ्चाशत्तमे महाग्रहे, 'दो नियल्ला।' ठा०२ ठा०३ उ०। चंद०।

णियल्ल-२ पुं० *[निज]*

महाग्रहे, ठा०२ ठा०३ उ०। चंद०।

णियाइय- त्रि० *[निकाचित]*

नियमिते, सूय०१ श्रु०९ अ०।

णियाग-१ पुं० *[नियाग]*

नितरां यजनं यागः पूजा यस्मिन् सोऽयं नियागः। मोक्षे, तत्रैव नितरां पूजा सम्भवात्। उत्त०१ अ०।

संयमे च। कार्ये कारणोपचारात्। सूय०२ श्रु०१ अ० आचा०।

णियाग-२ पुं० *[नित्य]*

आमन्त्रितपिण्डे, 'जे नियागं ममायंति, कीयमुद्देसियाहडं वहंते समणुजाणंति, इय वुत्तं महेसिणा दश० ६ अ०।

'उद्देसियं कीयगडं, नियागं अभिहडाणि य।' इति अनाचरितेषु परिगणनात्। तत्र नियागमित्यामन्त्रितस्य पिण्डग्रहणं नित्यं, न त्वनामन्त्रितस्य। दश० ३ अ०।

णियागट्ठि- त्रि० *[नियागार्थिन्]*

नियागो मोक्षस्तद्धर्मो वा तदर्थिनि, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०। मोक्षार्थिनि, उत्त०५ अ०।

णियागपडिवण्ण- त्रि० *[नियागप्रतिपन्न]*
यजनं यागो, नियतो निश्चितो वा यागो नियागो मोक्षमार्गः, सङ्गताध्वर्युत्वाद्धेतोः सम्यग्ज्ञानदर्शनचारित्राऽऽत्मकतया गतं सङ्गतमिति तं नियागं सम्य ग्दर्शनज्ञानचारित्राऽऽत्मकं मोक्षमार्गं प्रतिपन्नो नियागप्रतिपन्नः। मोक्षमार्गस्य सम्यग्दर्शनाऽऽदेरनुष्ठातरि, 'णियागपडिवन्ने अमायं कुव्वमाणे वियाहिए।' आचा०१ श्रु०१ अ० ३ उ०। सूय०।

णियाण- न० *[निदान]*
निश्चितं दानं निदानम्। अप्रतिक्रान्तस्याऽवश्यमुदयापेक्षेतीव्रकर्मबन्धे, आव०चू० ४ अ०। निसि०।

णियाणंझाण- न० *[निदानध्यान]*
नन्दिषेणगङ्गदत्तसम्भूतद्रौपद्यादीनामिव स्वर्गमर्त्याऽऽदिऋद्धिप्रार्थनध्याने आतु०।

णियाणकरण- न० *[निदानकरण]*
चक्रवर्तीन्द्राऽऽदिप्रार्थने, ठा० २ ठा० ४ उ०।

णियाणकारि- त्रि० *[निदानकारिण्]*
निदानकरणशीले, 'नियाणकारी संगं तु कुरुते उड्ढदेहियं।' ठा० ६ ठा०।

णियाणमयग- पुं० *[निदानमृतक]*
निदानं कृत्वा बालतपश्चरणाऽऽदिमत्त्वेन मृतेषु, उव०।

णियाणमरण- न० *[निदानमरण]*
मरणभेदे, ठा०६ ठा०।
ऋद्धिभोगादिप्रार्थना निदानं तत्पूर्वकं मरणं निदानमरणम्।ठा०

णियाणसल्ल- न० *[निदानशल्य]*
निदानं देवाऽऽदिऋद्धीनां दर्शनश्रवणाभ्यामितो ब्रह्मचर्याऽऽदेरनुष्ठानान्ममैता भूयासुरित्यध्यवसायः, तदेव शल्यम्। सम०३ अधिकरणानुमोदनान्निदानशल्यम्। शल्यभेदे, आव०४ अ०।

णियामित्ता- अव्य० *[नियम्य]*
नियम्येत्यर्थे, 'उवसग्गा णियामित्ता, आमोक्खाए परिव्वए।' सूय०१ श्रु०३ अ०३उ०

णियावाइ- पुं० *[नियतवादिन्]*
नियतं नित्यं वस्तु वदति यः स तथा। एकान्तनित्यवादिन्यक्रियावादिनि, ठा०।
नित्यो लोकः आविर्भावतिरोभावमात्रत्वात् उत्पादविनाशयोः, तथाऽसतोऽनुत्पादाच्छशविषाणस्यैव, सतश्चाविनाशात् घटवत्, न हि सर्वश्चा घटो विनष्टः, कपालाऽऽद्यवस्थाभिः तस्य परिणतत्वाद् तासां चापारमार्थिकत्वाद् मृत्सामान्यस्यैव पारमार्थिकत्वात्, तस्य चाविनष्टत्वादिति। अक्रियवादी चायम्, एकान्तनित्यस्य स्थिरैकरूपतया सकलक्रियाविलोपाभ्युपगमात् इति। ठा० ८ ठा०।

णियुद्ध- न० *[नियुद्ध]*
मल्लयुद्धे, जंबू०२ वक्ष०।

णियोग- पुं० *[नियोग]*
नियतो निश्चितो वा योगः सम्बन्ध इति नियोगः। यथा घटशब्देन घटस्यैव प्रतिपादनं, न पटाऽऽदेरिति। अनुयोगे, आव०म०१ अ० व्यापारे, उत्त०३ अ०। सूय०। आव०म०।
मोक्षमार्गे, सत्संयमे च। सूय० १ श्रु० १६ अ०।

णियोगपडिवन्न- त्रि० *[नियोगप्रतिपन्न]*
नियोगो मोक्षमार्गः, सत्संयमो वा, तं सर्वाऽऽत्मना भावतः प्रतिपन्नो नियोगप्रतिपन्नः। मोक्षमार्गप्रतिपन्ने, सूय०१ श्रु०१६ अ०।

णिर- अव्य० *[निर्]*
भृशार्थे, उत्त०१ अ०।
निश्चये, आधिक्ये, उत्त ०६ अ०।

णिरइ- स्त्री० *[निर्ऋति]*
राक्षसे, मूलधिष्ठातृदेवतायाम्, ।' ठा०२ ठा०३ उ०। जंबू०।

णिरओवम- त्रि० *[निरयोपम]*
नरकोपमे नरकतुल्ये, दश०१ चू०। पण्हा०।

णिरंकुस- त्रि० *[निरङ्कुश]*
गुर्वाज्ञाऽऽद्यतिचारिणि, गच्छा०२ अधि०।

णिरंगण– त्रि० *[निरञ्जन]* -
कौशाम्ब्यां राजमल्लः। उत्त०।

णिरंजण- त्रि० *[निरञ्जन]*
रञ्जनं रागाऽऽद्युपरञ्जनं, तेन शून्यत्वात् ।कल्प०६ क्षण०।नाया०
रञ्जनं रागाऽऽद्युपरञ्जनं, तस्मान्निर्गतः ठा० १० ठा०।
रागाऽऽदिमुक्ते, 'संखो इव निरंजणे।' ठा० १ ठा०।

णिरंतर- त्रि० *[निरन्तर]*
सतते, नैरन्तर्ये, विशे रा०।
अविश्रामे, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ०। पन्न०। ठा०।
नैरन्तर्येण राजलक्षणैश्चक्रस्वस्तिकाऽऽदिभिर्विरालितान्यङ्गानि शिरःप्रभृतीन्युपाङ्गानि चाङ्गुल्यादीनि यस्य स ।ठा०२ ठा०१ उ०।

णिरंतरिय- त्रि० *[निरन्तरिक]*
निर्गताऽन्तरिका लघ्वन्तररूपा येषां ते निरन्तरिकाः। लघ्वन्तररहितेषु, रा०।
'णिरंतरिघणकवाडाभित्ती।' रा०।
निर्गताऽन्तरिका लघ्वन्तररूपा ययोस्तौ निरन्तारिकौ, अत एव घनौ कपाटौ यस्य तन्निरन्तरिघनकपाटम्। जीवा० ३ प्रति०४ उ०। जंबू०।

णिरंबर- पुं० *[निरम्बर]*
निर्गतमम्बरं येभ्यस्ते निरम्बराः। जिनकल्पिकाऽऽदिषु, आव० म० १ अ० १ ।

णिरट्ठ- त्रि० *[निरर्थ]*

निष्प्रयोजने, उत्त०१ अ०।

निरर्थ:शोको यस्या: सा निरर्थशोका। उत्त० २० अ०

णिरट्ठग- न० *[निरर्थक]*

अर्थ प्रयोजनं, तदभावो निरर्थं, तदेव निरर्थकम्। प्रयोजना-ऽभावे, 'णिरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंबुडो।' उत्त०२ अ०।

णिरणुकंप- त्रि० *[निरनुकम्प]*

दयांशवर्जिते, तं०। सूय०।

नि:शूके, पण्हा०३ अ०।

णिरति- स्त्री० *[निरति]*

देवनन्दायाम्, कल्प० ६ क्षण०।

णिरत्थ- त्रि० *[निरस्त]*

निष्काशिते, वव० ८ उ०।

णिरत्थग- न० *[निरर्थक]*

सत्यार्थान्निष्क्रान्ते, पण्हा० २ अ०।

वर्णक्रमसत्यार्थरहिते, उत्त० १८ अ०।

निर्देशवति, आव०म० १ अ० २ ।

यत्र वर्णानां क्रममात्रं निर्देशमात्रमुपलभ्यते, न त्वर्थ:। यथा–अआइई इत्यादि। विशे०। अणुओ०।

यस्य वाऽवयवेष्वर्थो न विद्यते। यथा–डित्थ:, डवित्थ:, वाग्रन:। बुह० १ उ०।

णिरभिग्गह- त्रि० *[निरभिग्रह]*

निर्गता अभिग्रहा येभ्यस्ते निरभिग्रहा:। अभिग्रहरहितेषु केवलसम्यग्दर्शिषु, आव० ६ अ०।

णिरभिराम- त्रि० *[निरभिराम]*

अरमणीये, 'पहसितवीहणकणिरभिरामे।' पण्हा० ३ अ०।

णिरय- पुं० *[निरय]*

निर्गतमविद्यमानमयमिष्टफलं दैवं कर्म सातवेदनीयाऽऽदिरूपं येभ्यस्ते निरया:। ठा०।

निर्गतमयं शुभमस्मादिति निरय:। ठा०४ ठा०१ उ०।

सीमन्तकाऽऽदिषु नरकेषु,। ठा०। पण्हा०। आव०

निर्गता अयाच्छुभादिति निरया: ।नारकेषु, ठा० १० ठा० ।आचा०

णिरय- त्रि० *[निरत]*

सक्ते, दश० १० अ०। सम०।

णिरयगइ- स्त्री० *[निरयगति]*

निरये नरके वा गतिर्निरयगति:, निरयश्चासौ गतिश्चेति वा निरयगतिर्निरयप्रापिका वा गतिर्निरयगति:। ठा०५ ठा०३ उ०।

निर्गता अयाच्छुभादिति निरया नरका:, ते गतिर्गम्यमानत्वाद् निरयो नरकस्तद् गतिर्नामकर्मोदयसंपाद्यो नारकत्वलक्षण: पर्यायविशेषो वेति निरयगति:। गतिभेदे, ठा० १० ठा०।

णिरयगोयर- पुं० *[निरयगोचर]*

नरकवर्त्तिनि जीवे, पण्हा० २ अ०।

णिरयदंसि- न० *[निरयदर्शिन्]*

निरयं स्वरूपतो येत्यनर्थपरित्यागरूपत्वाद् ज्ञानस्य, परिहरति च। समानमपि पश्यति, परिहरति च, निरयदर्शी। नरकनिदान-वेतरि, । आचा० १ श्रु० ३ अ०४ उ०

णिरयपत्थड- पुं० *[निरयप्रस्तट]*

नरकप्रस्तरे, पन्न०३ पद०।

णिरयपरिसामंत- पुं० *[निरयपरिसामन्त]*

नरकपारिपार्श्वे, भग० १३ श०६ उ०।

निरयवासानां पार्श्वे, भग० १३ श० ४ उ०।

णिरयपाल- पुं० *[निरयपाल]*

नरकपालेषु परमाधार्मिकेषु, ठा० ४ ठा० १ उ०।

णिरयवास- पुं० *[निरयवास]*

नरकरूपे वासे, निरयो नरक:, स एव वासो निरयवास:, तत्र गमनं तदेव निधनं पर्यवसानं यस्य स निरयवासगमननिधनस्तत् फल इत्यर्थ:। पण्हा० १ अ०।

णिरयविग्गहगइ-स्त्री० *[निरयविग्रहगति]*

निरयाणां नारकाणां विग्रहात् क्षेत्रविभागानतिक्रम्य गतिर्गमनं निरयविग्रहगति:। स्थितिनिवृत्तिलक्षणायामृजुवक्ररूपायां विहा-योगतिकर्मापाद्यायां वा गतौ:, ठा० १० ठा०।

णिरयविभत्ति- स्त्री० *[निरयविभक्ति]*

नरकप्रविभागे, तदर्थके सूत्रकृतोऽध्ययने च, पण्हा०२ अ०।

सूत्रकृताङ्गस्य पञ्चममध्ययनम्। उत्त०।

णिरयवेयणिज्ज- न० *[निरयवेदनीय]*

निरये वेद्यतेऽनुभूयते यन्निरययोग्यं वा यद् वेदनीयमत्यन्ता-शुभनामकर्माऽऽदि, असातवेदनीयं वा।

नरकगतिनामकर्मणि, 'णेरइए णिरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि।' ठा० ४ ठा० १ उ०।

णिरयावलिया-१ स्त्री० *[निरयावलिका]*

आवलिकाप्रविष्टनरकेषु, पन्न०२ पद०।

यत्राऽऽबलिकाप्रविष्टा इतरे च नरकाऽऽवासा: प्रसङ्गतस्तद् गामिनश्च नरास्तिर्यञ्चो वा वर्ण्यन्ते, ता निरयावलिका:। नं०।

णिरयावलिया-२ स्त्री० *[निरयावलिका]*

अन्तकृद्दशाङ्गाऽऽदीनां पञ्चानामुपाङ्गानामुपाङ्गरूपे कल्पिकाऽऽदि पञ्चवर्गाऽऽत्मकश्रुतस्कन्धे,तत्र अन्तकृद्दशाङ्गस्य कल्पिका (अपर नाम- निरयावलिका) । जंबू० १ वक्ष०।

णिरयावास- पुं० *[निरयावास]*

आवसन्ति येषु, ते आवासा: निरयाश्च ते आवासाश्च निरयाऽऽवासा:। नरकाऽऽवासेषु रत्नप्रभाऽऽदिषु। भग०।

णिरवकंख- त्रि० *[निरवकाङ्क्ष]*
वाञ्छारहिते, उत्त०३० अ०।

णिरवकंखि- त्रि० *[निरवकाङ्क्षिन्]*
परित्यक्तभोगे, नाया०१ श्रु०९ अ०।

णिरवच्च- त्रि० *[निरपत्य]*
अविद्यमानशिष्यसंततौ, सम०७१ सम०।
शिष्यसन्तानरहिते, कल्प०८ क्षण०।
'तित्थसुहम्मातो, निरवच्चा गणहरा सेसा।' आव०म०१ अ० ।
निरपत्यः-शिष्यगणरहितः। आव०।

णिरवज्ज- त्रि० *[निरवद्य]*
असावद्ये, 'से संजए समक्खाए, निरवज्जाहार जे विऊ।' दश० ५ अ०१ उ०।

णिरवयक्ख- त्रि० *[निरपेक्ष]*
निर्गताऽपेक्षा परप्राणविषया, परलोकाऽदिविषया वा यस्मिन्नसौ निरपेक्षः, निरवकाङ्क्षो वा। पण्हा० १ अ०।
परप्राणापेक्षावर्जिते, पण्हा०२ अ०।

णिरवक्ख- त्रि० *[निरवकाङ्क्ष]*
आकाङ्क्षावर्जिते, पण्हा०२ अ०।

णिरवयव- त्रि० *[निरवयव]*
निरंशे, विशे०।

णिरवराहि- त्रि० *[निरपराधिन्]*
अकृतापराधे, 'निरवराही तो देवया।' आव०६ अ०।

णिरवलंब- त्रि० *[निरवलम्ब]*
निरालम्बने, यत्र न पतद्भिः किञ्चिदवाप्यते। पण्हा०३ अ०।

णिरवलाव- त्रि० *[निरपलाप]*
अन्यस्मैऽकथके, 'केरिसगस्स, मूले आलोयव्वं ? निरवलावस्स, जो अन्नस्स न कहेति।' आव०४ अ०।
निरपलापः स्यान्नान्यस्मै कथयेदित्यर्थः। सम० ३२ सम०।
निरपलापः-आचार्यस्यापरिश्रावित्वम्। पण्हा०।

णिरवसेस- त्रि० *[निवशेष]*
समग्रे, अणुओ०। आव०।
समस्ते, भग० १४ श०३ उ०।
संपूर्णे, आव०म०१ अ०१ ।
सर्वस्मिन्, आव०म०१ अ०२ । विशे०।

णिरवसेसपच्चक्खाण- न० *[निरवशेषप्रत्याख्यान]*
सर्वाऽऽशनपानत्यागाद् निरवशेषे प्रत्याख्याने। आव० ६ अ०।

णिरवसेससव्वय- न० *[निरवशेषसर्वक]*
निरवशेषव्यक्तिसमाश्रयेण सर्वं निरवशेषसर्वकम्। यथा अनि-मिषाः सर्वे देवाः, न हि देवव्यक्तिरनिमिषत्वं काचिद् व्यभि-चरतीत्यर्थः। ठा० ४ ठा० २ उ०।

णिरवेक्ख- त्रि० *[निरपेक्ष]*
पुत्रदारधनधान्यहिरण्याऽऽदिकमनपेक्षमाणे, सूय०१ श्रु०९ अ०।
अनपेक्षे, आव०४ अ०।
वृत्तिनिस्पृहे, । जीवा०। उत्त०।
बालाऽऽदिषु चिन्तारहिते, वव० ३ उ०।
आचार्यस्य शिष्यैः, प्रतीच्छकैश्च सर्वं कर्तव्यं, ये तु न कुर्वन्ति, ते निरपेक्षा इति। निसि०२० उ०।
निरभिलाषे निरभिष्वङ्गे, 'पक्खी पत्तं समादाय, निरवेक्खो परिव्वए।' उत्त० ६ अ०।
निरपेक्षः। आव० ८२०।

णिरहंकार- त्रि० *[निरहङ्कार]*
अहङ्काररहिते, उत्त०१९ अ०।
रागद्वेष-रहिते, सूय०१ श्रु०९ अ०।

णिरहिंगरणि- त्रि० *[निरधिकरणिन्]*
निर्गतमधिकरणमस्मादिति निरधिकरणी। अधिकरणदूरवर्तिनि, भग० १६ श०१ उ०।

णिसकिच्च- अव्य० *[निराकृत्य]*
अपनीयेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०११ अ०।
परित्यज्येत्यर्थे, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ०।

णिरागस- पुं० *[निराकर्ष]*
आकृष्यत इति आकर्षो, न विद्यते आकर्षो यस्य स निराकर्षः। द्रविणरहिते, 'किण्णे निरागसाणं, गुत्तिकरो काहितो राया।' निसि० २ उ०।

णिरातंक- त्रि० *[निरातङ्क]*
नीरोगे, पण्हा०४ अ०। उव०। तं०

णिरालए– त्रि० *[निरालय]*
वसतिप्रतिबन्धवन्ध्यः, यथोचितं सततविहारित्वात्। जंबू०।

णिरावाह- त्रि० *[निराबाध]*
स्वाऽऽयत्ताऽऽनन्दरूपत्वात्। ठा० १० ठा० ।
बाधारहिते, आव०४ अ०।

णिराभिराम- त्रि० *[निराभिराम]*
अभिरमणीये, पण्हा०२ अ०

णिरामगंध- त्रि० *[निरामगन्ध]*
निर्गतोऽपगत आमोऽविशोधिकोट्याख्यः, तथा गन्धो विशोधि-कोटिरूपो यस्मात् स भवति निराम गन्धः। मूलोत्तरगुणभेदभिन्नां चारित्रक्रियां कृतवति, सूय०१ श्रु०६ अ०।
णिरामगंधे स-परिव्वएज्जा।' आचा० १ श्रु० २ अ० ५ अ०।

णिरामय- त्रि० *[निरामय]*
नीरोगे, दश० ४ अ०।
निर्मलपरमात्मानुभवे, आव०म० १ अ० ।

णिरामिस- त्रि० *[निरामिष]*
विषयाऽऽदिपदार्थे, उत्त०।
निष्क्रान्त आमिषाद् गृद्धिहेतोरभिलषितविषयान्निर्गतूं वा आमिषमस्येति। उत्त० १४ अ०।
णिरायास- त्रि० *[निरायास]*
अखेदकारणे, पण्हा०४ अ०।
णिरारंभ- त्रि० *[निरारम्भ]*
निर्गत आरम्भादसत्क्रियाप्रवर्त्तनलक्षणान्निरारम्भः। आरम्भरहिते, उत्त० २ अ०।
णिरालंब- त्रि० *[निरालम्ब]*
ज्ञानाऽऽद्यालम्बनरहिते, वव० ४ उ०।
णिरालंबण- त्रि० *[निरालम्बन]*
त्राणायाऽऽलम्बनीयवस्तुवर्जिते, ज्ञा० १ श्रु० ९ अ०।
'गयणमिव णिरालंबणो।' गगनमिव निरालम्बनो, न कुलग्रामाऽऽद्यवलम्बत इति भावः। ठा० ९ ठा०।
ऐहिकाऽऽमुष्मिकाऽऽशंसारहिते, आचा०२ श्रु०४ अ०१ उ०।
णिरालंबणया- स्त्री० *[निरालम्बनता]*
निर्गत आलम्बनादाश्रयणीयाद् गच्छकुटुम्बकाऽऽदेरिति निरालम्बनस्तद्भावो निरालम्बनता। आश्रयानपेक्षत्वेऽविनयभेदे, । ठा० ४ ठा० ३ उ०।
णिरालोय- त्रि० *[निरालोक]*
निर्गताऽऽलोके, । निर० १ श्रु०१ वर्ग०१ अ०।
निरस्तप्रकाशा निरस्तदृष्टिप्रसरा वा। जंबू०।
णिरावकंखि- त्रि० *[निरावकाङ्क्षिण्]*
निस्पृहे, निरावकाङ्क्षी कायं शरीरं व्युत्सृज्य निष्प्रतिकर्मतया चिकित्साऽऽदिकमकुर्वन् छिन्न निदानो भवेत्।सूय०१ श्रु०१० अ०
णिरावयक्ख- त्रि० *[निरवकाङ्क्ष]*
निरपेक्षे, । पण्हा० ३ अ०।
णिरावरण- न० *[निरावरण]*
क्षायिकत्वात् । उव०। भग०। दशा० ।
समस्ताऽऽवरणरहिते, कल्प०१ क्षण०।
णिरास- त्रि० *[निरास]*
परित्यागे, प्रतिक्षेपे, वधे, निष्कासने। आव०म०।
णिरास- पुं० *[निराश]*
क्षीणमनोरथे, बुह०६ उ०। पण्हा०।
णिरासंख- त्रि० *[निराशंस]*
इहपरलोकाऽऽशंसाविप्रमुक्ते, आव०४ अ०।
ऐहिकाऽऽमुष्मिकाऽऽशंसारहिते, आचा०२ श्रु०४ चू०१ अ०।
णिरासबहुल- त्रि० *[निराशबहुल]*
आशाऽभावप्रचुरे, पण्हा० ३ अ०।

णिरासव- त्रि० *[निराश्रव]*
कर्माऽऽदानरहिते, पण्हा० ३ अ०।
णिरिंधणया- स्त्री० *[निरिन्धन]*
धूमस्येव कर्मेन्धनविमोचने, भग० ७ श०१ उ०।
णिरिक्खण- न० *[निरीक्षण]*
आलोकने, आव०।
णिरिक्खणा- स्त्री० *[निरीक्षणा]*
प्रत्युपेक्षणायाम्, ओह०।
णिरिक्खिय- त्रि० *[निरीक्षित]*
आलोकिते,
तत्र निरीक्षिता मनोरथ परम्परासम्पत्तिसंभवननिश्चय समुत्थ-सम्मदविकासिलोचनैरालोकिताः। नं०।
णिरुंभइत्ता- अव्य० *[निरुध्य]*
सन्मार्गे व्यवस्थाप्येत्यर्थे, सूय०१ श्रु० ४ अ०२ उ०। दश०।
णिरुंभण- न० *[निरोधन]*
प्रक्षेपणे, पण्हा०१ अ०।
प्रतिबन्धे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।
णिरुच्चार- त्रि० *[निरुच्चार]*
प्राकारस्योर्द्धजनप्रवेशनिर्गमवर्जिते, पुरीषविसर्गार्थं जनानां बहिर्निर्गमनरहिते, नाया० १ श्रु० ८ अ०।
निरुद्धपुरीषोत्सर्गे, पण्हा० ३ अ०।
अविद्यमानसञ्चरणः नष्टवचनोच्चारणो वा। पण्हा०।
उच्चारः-पुरीषं तद्विसगार्थं यज्जनानां बहिर्निगमनं तदपि सः। नाया०।
णिरुच्छाह- त्रि० *[निरुत्साह]*
सत्त्वपरिवर्जिते, जंबू०२ वक्ष०।
निरुद्यमे, गच्छा० १ अधि०।
णिरुज- न० *[निरुज]*
रुजानामभावो निरुजम्। रोगाणामभावे, आव०म०।
णिरुट्ठाइ-त्रि० *[निरुत्थायिन्]*
प्रयोजनेऽपि न पुनः पुनरुत्थानशीलः। उत्त०१ अ०।
निमित्तं विनाऽनुत्थाषके, उत्त०३ अ०।
णिरुत्त- न० *[निरुक्त]*
अभिधानाक्षरानुसारतो निश्चितार्थस्य वचने भणने, अणुओ०।
अनुयोगे सूत्रव्याख्यायाम् । बुह०।
णिरुत्ति- स्त्री० *[निरुक्ति]*
निश्चिता उक्तिर्निरुक्तिः। विशे०। आव०म०
निर्वचनं निरुक्तिः।
क्रियाकारकभेदपर्यायैः शब्दार्थकथने, विशे०। आव०म०। आव०चू०।

णिरुत्तिय- न० *[नैरुक्तिक]*
निरुक्ते भवं नैरुक्तम् ।निरुक्तवशेनार्थप्रतिपादके नामनि, अणुओ० 'से किं तं णिरुत्तिए ? मह्यांशेते महिषः। भ्रमति चरतीति भ्रमरः। मुहुर्मुहुर्लसतीति मुसलम्। कपेरिव लम्बते कपित्थम्। विच्चं करोति खल्लं च भवति चिक्खल्लन्। ऊर्द्धकर्ण उलूकः। स्वस्य माला मेखला। सेत्तं णिरुत्तिए।' अणुओ०।

णिरुद्ध- त्रि० *[निरुद्ध]*
आच्छादिते, सूय०१ श्रु०१२ अ०।
आवृत्ते, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।
परिगलिते, आचा०१ श्रु०४ अ०३ उ०।
विवक्षितदिग्गमननिवारिते, नाया०१ श्रु०१ अ०।
जलचरजीवविशेषे, कल्प०३ क्षण०।

णिरुद्धजोग- पुं० *[निरुद्धयोग]*
चतुर्थे शुक्लध्यानभेदे, सूय०१ श्रु०६ अ०।

णिरुद्धपग- त्रि० *[निरुद्धप्रज्ञ]*
निरुद्धाऽऽच्छादिता ज्ञानाऽऽवरणाऽऽदिना कर्मणा पन्न० ज्ञानं यस्य सः। अज्ञानप्रकाशे, सूय० १ श्रु०८ अ०।

णिरुद्धपरियाय- पुं० *[निरुद्धपर्याय]*
निरुद्धो विनाशितः पर्यायो यस्य स निरुद्धपर्यायः। वव० ३ उ०।

णिरुद्धबुद्धि- त्रि० *[निरुद्धबुद्धि]*
निरुद्धा संशयकोटीकृता बुद्धर्येषां ते निरुद्धबुद्धिर्वा संशयितेषु, बुह० ३ उ०।

णिरुद्धवासपरियाय- पुं० *[निरुद्धवर्षापर्याय]*
निरुद्धो विनाशितो वर्षा पर्यायो यस्य स निरुद्धवर्षापर्यायः। अनेकवर्षापर्याये, वव० ३ उ०। निसि०।

णिरुद्धाउय- पुं० *[निरुद्धायुष्क]*
परिगलिते आयुष्के, । आचा० १ श्रु०४ अ०३ उ०।

णिरुवक्कम- पुं० *[निरुपक्रम]*
निर्गतउपक्रमान्निरुपक्रमः ।अपवर्तनाकरणान्निर्गतेअनुभागे, भग० तत्र मरणविषयाऽऽयुषि सप्तभिरष्टभिर्वा कषैर्गवामिव मरुषु जलगण्डूषग्रहणरुपैर्युत्पद्गलोपादानं तदतिदृढमपवर्तयितुमशक्य-तया निरुपक्रममुच्यते। उत्त० ५ अ०।
उपक्रमणाभावे, भग०२० श०१० उ०।

णिरुवक्कमाउ- त्रि० *[निरुपक्रमायुष]*
अकालमरणरहिते, । आव०म०।
यदा ह्यसुमान् स्वायुषस्त्रिभागत्रिभागे वा जघन्यत एकेन द्वाभ्यां चोत्कृष्टतः सप्तभिरष्टभिर्वा वर्षैरन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणेन कालेनाऽऽत्म-प्रदेशरचनानाडिकान्तर्वर्त्तिन आयुष्ककर्मवर्गणापुद्गलान् प्रयत्न-विशेषेण विधत्ते तदा निरुपक्रमाऽऽनुर्भवति। आचा० १ श्रु०२ अ० १ उ०। विपा० ।

णिरुवक्किट्ठ- त्रि० *[निरुपक्लिष्ट]*
स्वगतशोकाऽऽद्युपक्लेशवियुक्ते, भग०२५ श०७ उ०।
'हट्ठस्स णवगलुस्स णिरुवक्किट्ठस्स जंतुणो।' अणुओ०।
व्याधिना प्राक् साम्प्रतं वाऽनभिभूतः। जंबू० ९०।

णिरुवक्केस- पुं० *[निरुपक्लेश]*
शोकाऽऽदिबाधावर्जिते, ठा०७ ठा०।
निरुपक्लेशः पर्यायः इति एभिरेवोपक्लेशै रहितः प्रव्रज्या-पर्यायोऽनारम्भी कुचिन्तावर्जितः श्लाघनीयो विदुषामित्येवं चिन्तनीयम्। दश० १ चू०।

णिरुवगारि- त्रि० *[निरुपकारिन्]*
निरुपकर्त्तु शीलमस्येति। निरुपकारकारके गुर्वादिकार्येष्वप्रव-र्त्तके, आव०म० १ अ० ।

णिरुवग्गहया- स्त्री० *[निरुपग्रहता]*
गत्र्यादिरहितपङ्गुवद् धर्मास्तिकायाभावेन तज्जनितगत्युपष्टम्भा-भावे, ठा० ४ ठा० ३ उ०।

णिरुवचरिय- त्रि० *[निरुपचरित]*
उपचारेणाऽऽत्मनोऽसंबन्धिनि, नाया० १ श्रु० ५ अ०।

णिरुवट्ठाणि- त्रि० *[निरुपस्थानिन्]*
निर्गतमुपस्थानमुद्यमो यस्य स निरुपस्थायी। सर्वज्ञप्रणीत-सदाचाराऽनुष्ठानविकले, आचा०१ श्रु०५ अ०६ उ०।

णिरुवद्दव- त्रि० *[निरुपद्रव]*
अविद्यमानराजाऽऽदिकृतोपद्रवे, उव०। नाया०। रा०।
रोगाऽऽदिक्लेशरहिते, तं०।
उपद्रवो नाम अशिवं, गलरोगाऽऽदिकं वा। तस्याभावो निरुपद्रवम्। उपद्रवाभावे, नं०।
'णिरुवद्दवं च खेडं च होहिति।' बुह० ४ उ०।
अशिवाऽऽद्युपद्रववर्जिते, बुह० १ उ०।

णिरुवम- त्रि० *[निरुपम]*
उपमारहिते, जीवा० ३ प्रति०४ उ०। तं०। आव०।
निरुपमं पिण्डिकेव वर्त्तुलत्वेन पिण्डिकायमानमग्रशिरः शिरोऽग्रं येषां ते तथा। तं०।

णिरुवयरिय- त्रि० *[निरुपचरित]*
'णिरुवचरिय' शब्दार्थे, नाया०१ श्रु०५ अ०।

णिरुवलेव- त्रि० *[निरुपलेप]*
द्रव्यता निर्मलदेहत्वाद् भावतो बन्धहेत्वाभावान्निर्गत उपलेपो यस्मादिति निरुपलेपः। ठा० ९ ठा०।
द्रव्यतो निर्मलदेहे, भावतस्तु कर्मबन्धहेतुलक्षणोपलेपरहिते, उव०। कल्प०। नाया०। पण्हा०। सम०।
लेपरहिते, उव०
स्नेहवर्जिते, पण्हा०४ अ०।

णिरुवसग्ग- पुं० *[निरुपसर्ग]*
जन्माऽऽद्युपसर्गरहिते मोक्षे, आव० । आचा० । आव०चू० ।
राजगुणभेदे, यतः सकलेऽपि देशे मारिडमराऽऽद्युपसर्गा-सम्भवः । वव० ३ उ० ।

णिरुवहय- त्रि० *[निरुपहत]*
वाताऽऽद्यनुपहते, भग० ७ श०१ उ० । नाया० । उत्त० ।
विकारविरहिते, उव० । रा० ।
ज्वराऽऽदिदशाऽऽद्युपद्रवरहिते, जीवा० ३ प्रति० ४ उ० ।
रोगाऽऽदिभिरनुपहते, पण्हा० ४ अ० ।
निरुपहतानि अविद्यमानवाताऽऽद्युपघातानि उदात्तानि उत्तम-वर्णाऽऽदिगुणानि अत एव लष्टानि मनोहराणि पञ्चापीन्द्रियाणि पटूनि च स्वविषयग्रहणदक्षाणि यत्र तत्तथा । भग०९ श०३३ उ०
स्फोटादिदोषविरहतः । नाया० ।

णिरुवहि- त्रि० *[निरुपधि]*
उपधिश्छद्म, मायेत्यनर्थान्तरम् । अयं च क्रोधाऽऽद्युपलक्षणं, ततश्च निर्गता उपध्यादयः सर्व एव कषाया येभ्यस्ते निरुपधयः ।
निष्कषायेषु, 'हेउविभत्ती निरुवहि जियाण अवहेण य जियंति ।
दश० १ अ० ।

णिरुस्साह- त्रि० *[निरुत्साह]*
सदनुष्ठाननिरुद्यमे, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ० ।

णिरुह- पुं० *[निरूह]*
विरचने, सूय०१ श्रु०९ अ० ।

णिरेय- त्रि० *[निरेजस्]*
निष्प्रकम्पे, भग०५ श०७ उ० । कल्प० ।
निश्चले, निसि०२० उ० ।
सैजसां निरेजासं च पुद्गलानां काय स्थितिरुक्ता ।भग०२५श०४ ।

णिरेयण- त्रि० *[निरेजन]*
निश्चले, उव० । पन्न० ।
निष्प्रकम्पे, आव ०५ अ० ।

णिरोदर- त्रि० *[निरोदर]*
विकृतोदररहिते, जीवा०३ प्रति०४ उ० ।
तुच्छोदरे, पण्हा०४ अ० ।

णिरोह- पुं० *[निरोध]*
निरोधनं निरोधः । प्रलयकरणे, आव० ४ अ० । आव० ।
अशेषकर्मक्षये, सूय० १ श्रु० १४ अ० ।
निश्चयेन धरणे, आव० ४ अ० ।

णिलय- पुं० *[निलय]*
गृहे, उत्त०३२ अ० । तं० ।

णिलयण- न० *[निलयन]*
वसतौ, नयानां निलयनौपम्यम् । विशे० ।

णिलाम- न० *[ललाट]*
भाले, पण्हा०४ अ० ।

णिलिंत- त्रि० *[निलीयमान]*
नीडाऽऽद्याश्रयति, रा० ।
निविशमाने, उव० ।

णिलिज्जमाण- त्रि० *[निलीयमान]*
अपनयति, धान्यशुद्धिं कुर्वाणे, सूय०२ श्रु०२ अ० ।
संबाधनं कुर्वति, सूय० १ श्रु० ४ अ० २उ०

णिलुक्क- *[देशी]*
विरते, 'खिप्पामेव णिलुक्को ।' आव०म०१ अ०१ ।
अन्तर्हिते, नाया०१ श्रु०८ अ० ।
निलुक्को निवृत्तः । आव० ।

णिल्लंबण- न० *[निर्लाञ्छन]*
नितरां लाञ्छनमङ्गावयवच्छेदः, गवादिकर्णकम्बलश्रृङ्गपुच्छ-च्छेदनासावेधाङ्कनखण्डनत्वग्दाहाऽऽद्युष्ट्र पृष्ठ गालनाऽऽदिरूपे छेदनव्यापारे, बलीवर्दतुरङ्गाऽऽदीनां वर्धितकरणे, पण्हा० ।
आव०चू० ।

णिल्लंछणकम्म- न० *[निर्लाञ्छनकर्मन्]*
निर्लाञ्छनमेव कर्म जीविका निर्लाञ्छनकर्म । गोमहिष्यादीनां नासावेधे, गवाश्वाऽऽदीनां वर्धितकरणे, उवा० । आव० ।

णिल्लज्ज- त्रि० *[निर्लज्ज]*
लज्जारहिते, पण्हा०२ अ० ।

णिल्लालिय- त्रि० *[निर्लालित]*
प्रसाति, नाया० १ श्रु०१ अ० ।
विवृतमुखाद् निःसारिते, नाया०१ श्रु०८ अ० ।
लपलपायमाने, कल्प ०२ क्षण० ।

णिल्लेव- त्रि० *[निर्लेप]*
विगतलेपे, भग०६ श०७ उ० ।
अत्यन्तसंश्लेषात् तन्मयतागतबालाग्रापहारादपनीतभित्यादिगत धान्यलेपकोष्ठागारवद् निर्लेपः । भग० ६श० ७ उ० । अणुओ० ।
जीवा० ।
लेपरहिते पृथुकाऽऽदौ, आव० ४ अ० ।

णिल्लेवग- पुं० *[निर्लेपक]*
रजके, वव० १ उ० ।
'रायगिहे सेणिओ राया, तेण खोमजुयलं णिल्लेवगस्स दिन्नं ।'
आव०चू० ४ अ० ।

णिल्लेवण- न० *[निर्लेपन]*
मलस्याभावे मलच्छोटने, वव० १ उ० । निसि० ।
निर्लेपे, 'उव्वत्तणणिल्लेवणपीहंते' ओह० ।
द्विविधानि शरीराणि बद्धानि, मुक्तानि चेति । भग०७ श०४ उ० ।

णिल्लेहण- न० *[निर्लेखन]*
ईषच्छुष्कस्योद्वर्त्तने, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०२ उ०।

णिल्लोह- त्रि० *[निर्लोभ]* विगतलोभे, उत्त०८ अ०।

णिव- पुं० *[नृप]*
राजनि, निसि०२ उ०।
'दशवेश्यासमो नृपः।' आचा०१ श्रु०२ अ०६ उ०।
दण्डिके, बुह०१ उ०।

णिवइ- पुं० *[नृपति]*
राजनि, वव०१ उ०।

णिवइत्ता- त्रि० *[निपतितृ]*
अवतरीतरि, ठा०४ ठा०४ उ०।

णिवइय- त्रि० *[निपतित]*
उपरि पतिते तथा सत् यत् पीडयति तन्नि पतितम्। त्वग्विषे दृष्टिविषे वा विषभेदे, न०। ठा०४ ठा०४ उ०।
अधोलम्बमाने, आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०१ उ०।

णिवउप्पय- पुं० *[निपातोत्पात]*
निपातपूर्वक उत्पातो यत्र स निपातोत्पातः। नाट्यभेदे, यत्र पूर्वं निपतन्ति, तत उत्पतन्ति। आव०म० १ अ० १ । जंबू०।

णिवट्टण- न० *[निवर्त्तन]*
निवृत्तौ मार्गनिवर्त्तनस्थाने, नाया०१ श्रु०२ अ०।

णिवडण- न० *[निपतन]*
अधःपतने, पण्हा०२ अ०।

णिवडिय- त्रि० *[निपतित]*
नीचैः पतिते, 'सव्वंगेहिं णिवडिया।' आव०म० १ अ० ।

णिवण्ण- त्रि० *[निवन्न]*
शपिते, आव०४ अ०।
लुप्ते, संथा०।
त्वग्वर्तिते, बुह०१ उ०।

णिवण्ण- पुं० *[निपन्न]*
'धम्मं सुक्कं च दुवे, न वि झायइ न वि अ अट्टरुद्दाइं। एसो काउस्सग्गो, णिवण्णओ होइ नायव्वो। इत्युक्तलक्षणे कायोत्सर्ग भेदे, आव० ५ अ०।

णिवण्णणिवण्ण- पुं० *[निपन्ननिपन्न]*
'अट्टं रुद्दं च दुवे, झायइ झाणाइं जो णिवण्णो उ। एसो काउस्सग्गो, णिव्वण्णणिवण्णगो नाम। इत्युक्तलक्षणे कायोत्सर्गभेदे, आव० ५ अ०।

णिवण्णुस्सिय- पुं० *[निपन्नोत्सित]*
'धम्मं सुक्कं च दुवे, झायइ झाणाइं जो णिवण्णो उ। एसो काउस्सग्गो, होइ णिवण्णुस्सिओ नाम। इत्युक्तलक्षणे कायोत्सर्गभेदे, आव०५ अ०।

णिवत्तमाण- त्रि० *[निवर्त्तमान]*
प्रत्यावर्त्तमाने, 'गुरुगा णिवत्तमाणे।' वव० १ उ०।

णिवत्ति- स्त्री० *[निवृत्ति]*
बन्धने, ठा०४ ठा०१ उ०।
निष्पत्तौ, स्था ०४ ठा०४ उ०।

णिवन्न– न० *[निवन्न]*
सुप्त। नाया० ।

णिवपडिमा- स्त्री० *[नृपप्रतिमा]*
राज्ञ आकारे, 'संगामे णिव पडिमं देवी काऊण जुज्झति रणम्मि।' वव० १ उ०।

णिववस- पुं० *[नृपवश]*
नरेशवशे, जीवा० १२ अधि०।

णिवविट्ठि- स्त्री० *[नृपविष्टि]*
राजविष्टौ, वव०२ उ०।

णिवसण- न० *[निवसन]*
परिधाने, नाया०१ श्रु०८ उ०।
विशिष्टरचनारचिते परितः परिधाने, अणुओ०।

णिवह- पुं० *[निवह]*
सङ्घाते, विशे०। आव०म०।

णिवाइ- त्रि० *[निपातिन्]*
निपतितुं शीलमस्येति निपातीति विगृह्यणिनिः। निपतनं वा निपातः, सोऽस्यास्तीति निपाती। भ्रष्टे, अधःपतिते, संयमाद-संयमं प्राप्ते, आचा० १ श्रु०५ अ०३ उ०।

णिवाडेइत्ता- अव्य० *[निपात्य]*
लगयित्वेत्यर्थे, 'जाणुं धरिणतलंसि निहट्टु णिवाडेइत्ता।' जीवा०३ प्रति०४ उ०।

णिवाण- न० *[निपान]*
जलपानस्थाने, बुह०३ उ०।

णिवाय- पुं० *[निपात]*
निपतनं निपातः। आचा०१ श्रु०५ अ०३ उ०।
पतने, नाया०१ श्रु०१ अ०।
विनाशे, पिंड०।
निवेशने, प्रश्न ०२ अ०।
नितरां पातो निपातः। संयोगे,। उत्त० २ अ०।
तत्तदर्थद्योतनाय तेषु तेषु निपततीति निपातः। पण्हा०२ अ०।

णिवाय- त्रि० *[निवात]*
वायुप्रवेशरहिते, भग०७ श०८ उ०। नाया०।
'तंसिप्पेगे अणगारा, हिमवाए णिवायमेसंति।' शीतार्दिता निवातमेषयन्तिघङ्घशालाऽऽदिवसतीर्वातायनाऽऽदिरहिताः। आचा०१ श्रु०९ अ०२ उ०।

णिवायगंभीर- त्रि० *[निवातगम्भीर]*
निवातविशाले, यद् हि गृहाऽऽदिकं वातरहितमपि महद् भवति तत्तथा। भग०७ श०८ उ०

णिवायण- न० *[निपातन]*
गर्ताऽऽदिप्रक्षेपणे, पण्हा०२ अ०। सूय०।
व्याकरणप्रसिद्धे आदेशाऽऽगमाऽसाध्ये समुदायाऽऽदेशे । आव० म० १ अ० ।

णिवायसरणप्पईव- पुं० *[निवातशरणप्रदीप]*
निर्गतवातगृहैकदेशस्थदीपे, 'जं पुण सुनिप्पकंपं, निवायसरण-प्पईवमिव चित्तं।' आव० ४ अ०।

णिवायसरणप्पईवज्झाण- न० *[निवातशरणप्रदीपध्यान]*
वातवर्जित गृहदीपज्वलने, णिवायसरणप्पईवज्झाणमिव णिप्पकंपे।' पण्हा० ५ अ०।

णिवारण- न० *[निवारण]*
नितरां वारणं निवारणम्। प्रतिघाते, भग० ९ श० ३३ उ०।
नितरां वार्यते निषिध्यतेऽनेन शीताऽऽतपाऽऽदीनीति निवारणम्। सौधाऽऽदिके तथाविधे गृहे, वस्त्राऽऽदौ च। उत्त०२ अ०।

णिवारय- त्रि० *[निवारक]*
मैवं कार्षीरित्येवं निषेधके, नाया० १ श्रु०१६ अ०। निर० ।

णिवारिय- त्रि० *[निवारित]*
प्रतिषिद्धे, आव०४ अ०।

णिवास- पुं० *[निवास]*
निवसने भूमिभागे, निर० १ श्रु०१ श्रु०१ वर्ग०१ अ०।

णिविट्ठ- त्रि० *[निविष्ट]*
अध्युपपन्ने, आचा०१ श्रु०४ अ०२ उ०। सूय०। नाया०।
जीवप्रदेशेषु, भग०१३ श०७ उ०।
तीव्रानुभावजनकतया स्थिते कर्मांशे, पन्न० २ पद०। भग०।

णिविट्ठ- त्रि० *[निर्विष्ट]*
लब्धे, उपात्ते, 'थोवं बहु णिविट्ठम्मि' इत्यादौ निर्विष्टशब्दस्य लाभार्थस्य दर्शनात्। ठा० ५ ठा० २ उ०

णिविट्ठकप्पट्ठिइ- स्त्री० *[निर्विष्टकल्पस्थिति]*
कल्पशास्त्रोक्तसाधुसामाचारीभेदे, ठा०५ ठा०२ उ०।

णिवित्ति- स्त्री० *[निवृत्ति]*
आरम्भनिवर्त्तने, 'न मांसभक्षणे दोषो, न मद्ये न च मैथुने। प्रवृत्तिरेषा भृतानां, निवृत्तिस्तु महाफला' । सूय०१ श्रु०८ अ०।
'नियमविहूणस्स, परदारगमस्स उ। अणियत्तस्स भवे बंधो, णिवित्तीए महाफलं०।। महानि०६ अ०।

णिवुट्ठ- त्रि० *[निवृष्ट]*
नितरां वृष्टे, 'पवुट्ठो देव त्ति वा निवुट्ठो देव त्ति वा णो वए।' आचा० २ श्रु०१ चु०४ अ०१ उ०।

णिवुड्ढित्ता- अव्य० *[निर्वेष्ट्य]*
हापयित्वेत्यर्थे, 'दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढित्ता रतणिक्खेत्तस्स अभिवुड्ढित्ता चारं चरति।' सूर० १ पाहु०। ।

णिवुड्ढेमाण- त्रि० *[निर्वेष्ट्यत्]*
हापयति, सूर०।
'विक्खंभवुड्ढिं णिवुड्ढेमाणे अट्ठारसजोयणाइं परिरयवुड्ढिं णिवुड्ढिं णिवुड्ढेमाणे' सूर० २ पाहु०। ।

णिवुड्ढि- स्त्री० *[निवृद्धि]*
वातपित्ताऽऽदिभिः शरीरोपचयहानौ, ठा०
निर्शब्दस्याभावार्थत्वाद्, निरुदरा कन्येत्वादिवत्। 'दोण्हं गब्भत्थाणं निवुड्ढी पण्णत्ता। तं जहा–मणुस्साणं चेव, पंचिं-दियतिरिक्खजोणियाणं चेव।' ठा०२ ठा०३ उ०।
'तिहिं ठाणेहिं जीवाणं णिवुड्ढी पण्णत्ता। तं जहा–उड्डाए, अहोए, तिरियाए।' ठा०३ ठा०२ उ०।
वृद्ध्यभावे, सूर०१२ पाहु०। ।

णिवेयणापिंड- पुं० *[निवेदनापिण्ड]*
यक्षाऽऽदिभ्यो निवेद्यमाने पिण्डे निसि०।

णिवेस- पुं० *[निवेश]*
नि–आधिक्येन वेशो निवेशः। प्रवेशे, निसि० ४ उ०।
स्थापने, ठा०९ ठा०।
यत्र प्रभूतानां भाण्डानां प्रवेशस्ताद्दशे स्थाने, बुह०।
निवेशो नामयत्र सार्थ आवासितः, आदिग्रहणेन ग्रामो वा, अन्यत्र प्रस्थितः सन् यत्रान्तरा समधिवसति, यात्रायां चागतो लोको यत्र तिष्ठति। एष सर्वोऽपि निवेश उच्यते बुह० १ उ०।

णिवेसइत्ता- अव्य० *[निवेश्य]*
अवधार्येत्यर्थे, 'इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी।' उत्त० ३२ अ०।

णिवेसण- न० *[निवेशन]*
स्थाने, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ०।
एकद्वारे पृथक् परिक्षिप्ते अनेकगृहे, आव०४ अ०।
यथा एकनिष्क्रमणप्रवेशानि द्व्यादीनि गृहाणि। बुह०१ उ०।
आसमंतावसा समादि सत्थट्ठाणं। निसि०।

णिवेसिय- अव्य० *[निवेश्य]*
प्रवेश्येत्यर्थे, । निसि०३ उ०।

णिवेसियव्व- त्रि० *[निवेष्टव्य]*
स्थापनीये, 'परलोगे चित्त णिवेसयव्वं असासयं जीवियं।' आव० म०१ अ०१ ।

णिव्वट्टग- त्रि० *[निर्वर्तक]*
कर्त्तरि, आव० ४ अ०।
करणे, विशे०।

णिव्वट्टित्ता- अव्य० *[निर्वर्त्य]*
जीवप्रदेशेभ्यः शरीरं पृथक् कृत्वेत्यर्थे, ठा० २ ठा०४ उ०।

णिव्वट्टिय- त्रि० *[निर्वर्तित]*
कृते, ठा०१ ठा०।
'असंथडा ति वा, बहुणिव्वट्टियफला ति वा, बहुसंभूवा ति वा।' आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०२ उ०। पण्हा०।

णिव्वण- त्रि० *[निर्व्रण]*
विस्फोटकाऽऽदिकृतक्षतरहिते, जंबू०२ वक्ष० उव०। जीवा०।
छिद्रग्रन्थ्यादिदोषरहितः। जंबू०।

णिव्वत्त- त्रि० *[निर्वृत्त]*
निर्वर्तिते, ठा०९ ठा०।
अतिक्रान्ते, नाया०१ श्रु०१ अ०।

णिव्वत्तणया- स्त्री० *[निर्वर्तनता]*
निष्पत्तौ, 'तओ निव्वत्तणया तओ परियाइणत्ता।पन्न०३४ पद०।

णिव्वत्तणा- स्त्री० *[निर्वर्तना]*
इन्द्रियाणां निष्पादनायाम्, उत्त०३अ०

णिव्वत्तणाहिगरणिकिरिया- स्त्री० *[निर्वर्तनाधिकरणिक्रिया]*
निर्वर्तनमसिशक्तितोमराऽऽदीनां निष्पादनं, तदेवाधिकरणक्रिया आधिकरणिक्याः क्रियाया भेदे, भग० ३ श०३ उ०। ठा०।
निष्ठानयने, ठा० २ ठा०१ उ०।
यच्चादितस्तयोर्निर्वर्त्तनं सा निर्वर्त्तनाधिकरणिकी। ठा०।

णिव्वत्ति- स्त्री० *[निर्वृत्ति]*
वस्तुनः करणे,अन्नोन्नसमाहाणं,जमिहं करणं न णिव्वत्ती। विशे०
निर्वर्तनं निर्वृत्तिर्निष्पत्तिः। निष्पत्तौ, भग०।

णिव्वत्तिय- त्रि० *[निर्वर्तित]*
बन्धयोग्यता निष्पादिते, ठा०१० ठा०
सामान्येनोपार्जिते, ठा०२ ठा०४ उ०।

णिव्वय- त्रि० *[निर्व्रत]*
अविरते, ठा०३ ठा०१ उ०।
प्राणातिपाता-ऽऽद्यनिवृत्ते, ठा०३ ठा०२ उ०।
अणुव्रतरहिते, नाया०१ श्रु०८ अ०।

णिव्वया– त्रि० *[निर्व्रता]*
महाव्रताणुव्रतविकलाः। जंबू०।

णिव्वयण- न० *[निर्वचन]*
निरुक्तौ, विशे०।
शब्दार्थकथने, आव० म०१ अ०२ ।
व्याकरणे, ठा०१० ठा०।

णिव्वह- धा० *[पिष्]*
पेषणे, निर्वहयेत्, असारतामापादयेत्। सूय०१ श्रु०९ अ०।

णिव्वाघाइम- त्रि० *[निर्व्याघातिम]*
व्याहननं व्याघातः पर्वताऽऽदिस्खलनम्, तेन निर्वृत्तं व्याघातिमम्। निर्व्याघातिमं व्याघातान्निर्गताम्। स्वाभाविके, चंद० १८ पाहु०, १ पाहु०। । सूर०।
णिरुअस्स-अखुतदेहस्स णिव्वाघाइमं। निसि०।

णिव्वाघाय- अव्य० *[निर्व्याघात]*
व्याघातस्याभावो निर्व्याघातम्। व्याघाताभावे, पन्न०२ पद०।
'णिव्वाघाएणं पन्नरसकम्मभूमीसु।' पन्न०२ पद०।
धरणीधराऽऽदिभिः प्रतिहतत्वात् । ठा० ९ ठा० ।
कटकुड्याऽऽद्यप्रतिहतत्वाद् व्याघातरहिते केवलज्ञाने, उव०। दशा०।

णिव्वाण-१ न० *[निर्वाण]*
निर्वृत्तौ, विशे०। उत्त०। पञ्चा०। आव० चू०। सूय०।
आत्मस्वास्थ्ये, आव०चू० ४ अ०। आचा०। आव० ।
सर्वद्वन्द्वोपरतिभावे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०।

णिव्वाण-२ न० *[निर्वाण]*
कर्मकृतविकाररहितत्वे, ठा०३ ठा०३ उ०।
सकलसंतापरहितत्वे, उव०।
सकलकर्मविरहजे सुखे, नाया०१ श्रु०१ अ०।
अशेषकर्मक्षयरूपे । सूय०१ श्रु०९ अ०। आचा० ।

णिव्वाण-३ न० *[निर्वाण]*
सकलकर्मक्षयजे आत्यन्तिके सुखे, उव०।
मोक्षे, पण्हा०। आतु०। सूय०
घातिकर्मचतुष्टयरूपेण कर्मक्षयेण केवलज्ञानावाप्तौ, सूय० १ श्रु० ११ अ०।
मोक्षपदशेषे कर्मक्षयरूपे ईषत्प्राग्भाराऽऽख्ये भूभागोपर्यवस्थित क्षेत्रखण्डे, सूय० २ श्रु० २ अ०।

णिव्वाणपुर- न० *[निर्वाणपुर]*
ईषत्प्राग्भाराऽऽख्ये सिद्धिपत्तने, आव० ४ अ०।

णिव्वाणभावि- त्रि० *[निर्वाणभाविन्]*
निर्वाणे भविष्यतीति निर्वाण-भावी। भव्ये, विशे०।

णिव्वाणभूय- त्रि० *[निर्वाणभूत]*
असावद्यानुष्ठानभूते, सूय०।
यथा निर्वृत्तौ निर्व्यापारत्वात् कस्यचिदुपघाते न वर्तते, एवं साधुरपि सावद्यानुष्ठानरहितः परिसमन्ताद् व्रजेदिति।सूय०१ श्रु०१०अ

णिव्वाणमग्ग- पुं० *[निर्वाणमार्ग]*
निर्वृतिर्निर्वाणं, सकलकर्मक्षयजमात्यन्तिकसुखमित्यर्थः।निर्वाणसय मार्गो निर्वाणमार्गः।परमनिर्वृत्तिकारणे, आव०४अ०।आतु०
सिद्धिक्षेत्रावाप्तिपथे, उवा०२ अ०।
सकलकर्मविरहजसुखोपाये, भग०९ श०३३ उ०।

णिव्वाणमहावाड- पुं० *[निर्वाणमहावाट]*
सिद्धिमहागोस्थानविशेषे, उवा०७ अ० ।

णिव्वाणवाइ- पुं० *[निर्वाणवादिन्]*
निर्वाणं सिद्धिक्षेत्राऽऽख्यं कर्मच्युतिलक्षणं स्वरूपतस्तदुपायप्राप्तिहेतुतो वा वदितुं शीलं येषां ते तथा। निर्वाणपथदेशके, सूय०२ श्रु०६ अ० ।

णिव्वाणवीय- न० *[निर्वाणबीज]*
मोक्षसुखयोर्हेतौ, सूय०१ श्रु०१२ अ० ।

णिव्वाणसुह- न० *[निर्वाणसुख]*
निर्वाणमशेषकर्मक्षयस्तदवाप्तौ वा विशिष्टकोशप्रदेशः। तेन तत्र वा सुखं निर्वाणसुखम्। मोक्ष-सुखे, आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ० ।

णिव्वाणसेट्ठ- त्रि० *[निर्वाणश्रेष्ठ]*
मोक्षप्रधाने, सूय०१ श्रु०६ अ० ।

णिव्वाणाऽऽवेस- पुं० *[निर्वाणाऽऽवेश]*
मोक्षाऽऽवेशे, 'यथाप्रकारा यावन्तः, संसाराऽऽवेशहेतवः। तावन्तस्तद्विपर्यासाः, निर्वाणाऽऽवेशहेतवः। सूय० १ श्रु० १२ अ० ।

णिव्वाय– पुं० *[निर्वात]*
निर्व्याघातः। नाया० ।

णिव्वाव- पुं० *[निर्वाप]*
शाकघृताऽऽदिपरिमाणे, निसि० १ उ० ।
दशपञ्चरूप्यका इयञ्च व्यञ्जनभेदादिरिति प्रशंसनं द्वेषणं वा।
भक्तकथाया द्वितीयो भेदः। आव०। निसि० ।

णिव्वावकहा- स्त्री० *[निर्वापकथा]*
एतावन्तस्तत्र पक्वान्नभेदाः, व्यञ्जनभेदा वेति भक्तकथायाम्, ठा० ४ ठा० २ उ० ।

णिव्वावण- न० *[निर्वापण]*
विध्यापने, दश०४ अ० ।
अभावाऽऽपादने, दश० ८ अ० ।

णिव्वावार- त्रि० *[निर्व्यापार]*
व्यापारान्निर्गतो निर्व्यापारः। निरारम्भे, उत्त० ९ अ० ।
परिहृतकृषिपशुपाल्याऽऽदिक्रिये, उत्त० ९ अ० ।

णिव्वाविऊण- अव्य० *[निर्वाप्य]*
विध्याप्येत्यर्थे, निसि० १ उ० ।

णिव्वाविय- त्रि० *[निर्वापित]*
शीतलीकृते, नाया० १ श्रु०१३ अ० ।

णिव्वाविय- अव्य० *[निर्वाप्य]* दाहभयाद्विध्यातं विधायेत्यर्थे, 'पज्जालिया णिव्वाविया।' दश०५ अ०१ उ० ।

णिव्वाहण- न० *[निर्वाहन]*
निःसारीकरणे, सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

णिव्विइय- न० *[निर्विगतिक]*
आकाराः पूर्ववद् व्याख्येयाः, नवरं(पडुच्च मक्खिएणं ति)प्रतीत्य सर्वथा रूक्षं डण्डकाऽऽदिकमपेक्ष्य, म्रक्षितं स्नेहितमीषत्सौकुमार्योत्पादनाद् म्रक्षणकृतविशिष्टस्वादुतायाश्चाभावाद् म्रक्षितम् इव यद्वर्तते तत्प्रतीत्य म्रक्षितं म्रक्षिताभास इत्यर्थः। आव०६अ०

णिव्विगप्प- पुं० *[निर्विकल्प]*
निःसन्दिग्धे, गच्छा०२ अधि० ।
गतशङ्के, गच्छा०२ अधि० ।

णिव्विगिच्छ- न० *[निर्विचिकित्स्य]*
निर्गता विचिकित्सा निर्विचिकित्सा, तस्य भावो निर्विचिकित्स्यम्। फलं प्रति संदेहाकरणे, उत्त० २८ अ० ।

णिव्विगिच्छ- त्रि० *[निर्विचिकित्स]*
न ह्यविकल उपाय उपेयवस्तुपरि प्रापको न भवतीति संजातनिश्चये, गच्छा०। वव० ।
विचिकित्सारूपाऽतिचाररहितसम्यक्त्वे, दश०३ अ० ।
फलं प्रति निःशङ्के, दशा० १० अ० ।

णिव्विग्घ- अव्य० *[निर्विघ्न]*
विघ्नाभावे, 'सीसपवित्तिनिमित्तं, निव्विग्घत्थं च।' अणुओ० ।

णिव्विट्ठ- त्रि० *[निर्विष्ट]*
आसेवितविवक्षितचारित्रे अनुपारिहारिके, ठा० ३ ठा० ४ उ० । अणुओ० ।
निर्व्विष्टं ससेवम्। दश० १८१ ।

णिव्विट्ठकप्पट्ठिइ- स्त्री० *[निर्विष्टकल्पस्थिति]*
निर्विष्टाआसेवितविवक्षितचारित्राऽनुपारिहारिका इत्यर्थः। तत् कल्पस्थितिः। स्थिति-भेदे, ठा०३ ठा०४ उ० ।
निर्विष्टकायिके, यथा प्रतिदिनमायाममात्रतया भिक्षा तथैवेति। । ठा० ३ ठा० ४ उ० ।

णिव्विट्ठकाइय-पुं० *[निर्विष्टकायिक]*
निर्विष्टः-आसेवितः प्रस्तुततया विशेषः, कायो येषां ते निर्विष्टकायाः, त एव स्वार्थे कप्रत्य-योपादानान्निर्विष्टकायिकाः, तदभेदादिदमपि निर्विष्टकायिकम्। अणुओ०। विशे०। बुह०।
निर्विशमानकानुचरकेषु, भग० २५ श० ७ उ० ।

णिव्विण्ण- त्रि० *[निर्विण्ण]*
खिन्ने, जीत० ।
जो एत्तियं पि चित्ते, इच्छइ सो को न णिव्विण्णो ? आचा० १ श्रु० ३ अ० ३ उ० ।

णिव्विण्णचार- त्रि० *[निर्विण्णचार]*
चरणं चारोऽनुष्ठानं, निर्विण्णस्य चारो निर्विण्णचारः, सोऽस्यास्तीति निर्विण्णचारी। खिन्ने, 'से णिव्विण्णचारी अरते पयासु।' आचा० १ श्रु ० ५ अ० ३ उ० ।

णिव्विण्णवरा- स्त्री० *[निर्विण्णवरा]*
निर्विण्णा वराः परिणेतारो यस्याः स्य निर्विण्णवरा। वरवर्जितायाम्, नाया० २ श्रु० १ वर्ग०।

णिव्विण्णाण- त्रि० *[निर्विज्ञान]*
बलीवर्दवत् विशिष्टज्ञानरहिते, तं०।

णिव्विति- स्त्री० *[निर्वृत्ति]*
कर्णशष्कुलिकाऽऽदावाकारे द्रव्येन्द्रियभेदे, विशे०। नं०। निर्वृत्तिराभ्यन्तरबाह्यभेदाद् द्विधैव। निर्वर्त्यत इति निर्वृत्तिः। । आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ०। ठा०

णिव्वितिलक्खण- त्रि० *[निर्वृतिलक्षण]*
सर्वसावद्ययोगोपरमस्वभावे, । इयत्ताऽवगमरूपे, अणुओ०।

णिव्वियतिय– त्रि० *[निर्विकृतिक]*
निर्गतघृतादिविकृतिकः। उव०।

णिव्वियार- त्रि० *[निर्विकार]*
कोपाऽऽदिविकाररहिते, संथा०।

णिव्विस- त्रि० *[निर्विष]*
विषरहिते, 'णिव्विसं पंडरं मंसं।'उव०

णिव्विसंत- त्रि० *[निर्विशत्]*
समस्तं प्रवेशयति, अपरिभुञ्जमाने, अनासेवमाने,। ठा० ५ ठा० १ उ०।

णिव्विसणकप्प-पुं० *[निर्विशनकल्प]*
निर्विशमानकल्पस्थितौ, पंच०भा०

णिव्विसमाण- पुं० *[निर्विशमान]*
परिहारविशुद्धिकल्पं वहमानेषु, ठा० ६ ठा०। भग०।

णिव्विसमाणकप्पट्ठिइ- स्त्री० *[निर्विशमानकल्पस्थिति]*
निर्विशमाना ये परिहारविशुद्धितपोऽनुचरन्ति, पारिहारिका इत्यर्थः, तेषां कल्पे स्थितिः। परिहारकल्पस्थितौ, ठा०।
यथा ग्रीष्मशीतवर्षाकालेषु क्रमेण तपो जघन्यं चतुर्थषष्ठाष्टमाऽऽदि, मध्यमं षष्ठाऽऽदीनि, उत्कृष्टमष्टमाऽऽदीन् इति, पारणे चायामम्।
एवं पिण्डेषणासप्तके चाद्ययोरग्रह एवेति पञ्चसु पुनरेकया भक्तमेकया च पानकमित्येवं द्वयोरभिग्रह इति। बुह०।

णिव्विसमाणय- पुं० *[निर्विशमानक]*
विवक्षित (परिहार) तपोविशेषाऽऽसेवके, साधौ, तदव्यतिरेकात् चारित्रभेदे च। विशे०। अणुओ०। बुह०।

णिव्विसय- त्रि० *[निर्विषय]*
विषयाभिलाषरहिते, उत्त० १४ अ०।
शब्दाऽऽदिविषयरहिते, उत्त० १४ अ०।
देशान्निष्क्रान्ते, पण्हा० ३ अ०।
निर्विषयः। आव०।

णिव्विसेस- त्रि० *[निर्विशेष]*
विशेषवर्जिते, तं०।
अपवादोत्सर्गज्येष्ठेतराऽऽदिविशेषरहिते, तं०।

णिव्वुअ- त्रि० *[निर्वृत]*
क्रोधाऽऽद्यपगमने न शीतीभूते, आचा० १ श्रु०८ अ०१ उ०।
स्वस्थाऽऽत्मनि नाया०१ श्रु०१ अ०।

णिव्वुइ- स्त्री० *[निर्वृति]*
मनःस्वास्थ्ये, पण्हा०२ अ०।
समाधौ, नं०।
सुखे, आव०म०२ अ०।
सामान्यसुखे, आव०४ अ०।
निर्वृतिहेतुत्वात्। निर्वृत्तिः-क्षीणमोहावस्थेति। सूय०।
निर्वाणं-सकलकर्ममलापगमनेन स्वस्वरूपलोभतः परमं स्वास्थ्यं तद्धेतुः सम्यग्दर्शनाद्यपि कारणे कार्योपचारात् निर्वृत्तिः। पन्न० ।
महादुर्भिक्षे वज्रसेनेन प्रव्राजितस्य जिनदत्तश्राद्धस्य सह प्रव्रजिते पुत्रे, यतो निर्वृतिनाम्नी शाखा निर्गता। कल्प० ८ क्षण०।
निर्वृतिकुलीनशीलाङ्गाऽऽचार्येण प्रथमद्वितीययोरङ्गयोष्टीका कृता आचा० १ श्रु० ९ अ०४ उ०।
मथुरायां पर्वतकराजस्य सुतायाम्, आव०म० १ अ० । आव०।

णिव्वुइकर- त्रि० *[निर्वृतिकर]*
निर्वृतिर्निर्वाणं सकलकर्ममलापगमनेन स्वस्वरूपलाभतः परम-स्वास्थ्यं, तद्धेतुः सम्यग्दर्शनाऽऽद्यपि कारणे कार्योपचारान्निर्वृतिः तत्करणशीलो निर्वृतिकरः। पन्न० १ पद०।
सर्वकर्मक्षयभावकरे, तं०।
सुखोत्पादके, रा०

णिव्वुइपुर- न० *[निर्वृतिपुर]*
सिद्धिपुरे, आव०म० १ अ० ।

णिव्वुड- त्रि० *[निर्वृत]*
शीतीभूते, आचा० १ श्रु० ४ अ० ३ उ०।
निर्वाणमनुप्राप्ते, सूय०१ श्रु०१५ अ०।
मुक्तिपदवीडधिरूढे, वव०२ उ०।
निर्वृतं कषायौपशमाच्छीतीभूतं कालं मृत्युकालं यावदभिका-ङ्क्षेत्। सूय० १ श्रु० ११ अ०।
निवारणे, भग० ५ श० ४ उ०।

णिव्वुडमाण- त्रि० *[निवुडत्]*
जन्ममरणाऽऽदिजले नितरां निमज्जति उवा० ७ अ०।

णिव्वुड्ड- त्रि० *[निर्वृत]*
निष्ठाङ्गते, 'निव्वुड्डे वितिमिरे विसुद्धे ति।' भग०५ श०४ उ०।

णिव्वूह- पुं० *[निर्व्यूह]*
गृहैकदेशविशेषे, जीवा० ३ प्रति० ४ उ०।

णिव्वेढुंत- त्रि० *[निर्वेष्टयत्]*

निर्जरयति, विचटयति। विशे०।

हापयति, आव० म०१ अ०२ ।

सुबद्धानि कुर्वति, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०२ उ०।

णिव्वेय- पुं० *[निर्वेद]*

विरागे, आचा० १ श्रु०४ अ०१ उ०। उत्त०।

संसारवैराग्ये, बृह० ३ उ०।

संसारादुद्विग्नतायाम्, उत्त० १८ अ० भग०। दश०।

संसाराद् विरक्ततायाम्, उत्त० २९ अ०।

णिव्वेयणी- स्त्री० *[निर्वेदनी]*

निर्वेद्यते संसाराऽऽदेर्निर्विण्णः क्रियते श्रोताऽनयेति निर्वेदनी। ठा० ४ ठा० २ उ०। दश०।

णिव्वेस- पुं० *[निर्वेश]*

लाभे, ठा० ५ ठा० २ उ०।

णिव्वोढव्व- त्रि० *[निर्वोढव्य]*

निर्ब्राह्ये, आव० ४ अ०।

णिव्वोदग- न० *[निव्रोदक]*

गृहच्छानप्रान्तगलिते जले गृहपटलान्तोत्तीर्णे जले,पिंड० ।आव०

णिस- पुं० *[निश]*

वृक्षविशेषे, उत्त० १ अ०।

नृन्नरान् शंसति हिनस्तीति नृशंसः। नाया० १ श्रु० २ अ०।

णिसंत- त्रि० *[निशान्त]*

नितरां शान्तो निशान्तः। अत्यन्तं मन्दीभूते आव०म० १ अ० ।

श्रुते, अवगते, आचा०२ श्रु०१ चू० २ अ०२ उ०।

निशमिते श्रुते, भग० ९ श० ३३ उ०।

निःसञ्चरवेलायाम्, बृह० ३ उ०।

रात्र्यवसाने दिवसे, दश० ९ अ०१ उ०। नाया०।

अवधारिते, सूय० १ श्रु०६ अ०।

नितरां-अतिशयेन शान्तः-उपशमवान्, अन्तः क्रोधपरिहारेण बहिश्च प्रशान्ताकारतया निःशान्तः। उत्त०

णिसंस- त्रि० *[नृशंस]*

क्रूरकर्मणि, बृह० ३ उ०।

शूकावर्जिते, पण्हा० १ अ०।

णिसग्ग- पुं० *[निसर्ग]*

निसर्जनं निसर्गः। निसृष्टौ, मोक्षे, विशे०।

स्वभावे, उत्त०२८ अ०। ठा०। आव०। आव०चू०। आव०म० पन्न०। वव०। संथा०। निसि०।

पारिट्ठावणियासमिती। निसि०।

णिसग्गकिरिया- स्त्री० *[निसर्गक्रिया]*

निसर्जनक्रियायाम्, आव०।

णिसग्गरुइ- पुं० *[निसर्गरुचि]*

निसर्गः स्वभावः, तेन रुचिर्जिनप्रणीततत्त्वाभिलाषरूपा यस्य स निसर्गरुचिः। पन्न०१ पद०।

निसर्गा रुचिर्निसर्गतो वा रुचिरिति निसर्गरुचिः। स्वभावत एव तत्त्वश्रद्धाने, भग०२५ श०७ उ०।

सम्यक्त्वभेदे, ठा०१० ठा०।

णिसग्गसम्मत्त- न० *[निसर्गसम्यत्त्व]*

निसर्गरुच्याख्ये सम्यक्त्वभेदे, आव०चू०।

'णिसग्गो नाम सभावो, जधा सावगपुत्तनत्तुयाणं कुलपरंपरागतं निसग्गत्तं भवति, जहा वा सयंभूरमणमत्थाणपडिमासंठिताणि साहुसावयाणि य पउमाणि मच्छरा वा दट्ठूण मा णं खओवसमेणं निसग्गसम्मत्तं भवति। तम्मूलं च देवलोगगमणं तेसिं भवति त्ति।' आव०चू० १ अ०।

णिसज्जा- स्त्री० *[निषद्या]*

निषदनं निषद्या। आसने, । सम०।

उपवेशने, वव० ४ उ०।

उपवेशनविशेषे, ठा०।

सा च पञ्चधा–तत्र यस्यां समं पादौ पुतौ च स्पृशतः सा समपादपुता १। यस्यां तु गोरिवोपवेशनं सा गोनिषद्यिका २। यत्र पुताभ्यामुपविष्टः सन् एकं पादमुत्पाट्याऽऽस्ते सा हस्ति-शुण्डिकाः ३ ।पर्यङ्काऽर्धपर्यङ्का च प्रसिद्धा ४-५। ठा० ठा०१ उ०।

'पलियंकनिसेज्जा य, सिणाणं सो भवज्जणं।' निषद्या च गृहे एकानेकरूपा अनाचारः। दश०६ अ०।

निषीदन्त्यस्यामिति निषद्या। स्त्रीपशुपण्डकविवर्जिते स्वाध्याय-भूम्यादौ, उत्त० १ अ०।

निषघा-समपुतोपवेशनादिका। पण्हा० ।

जं णिदेज्जं दिण्णं तं णिसट्ठं। निसि० ।

णिसट्ठ- त्रि० *[निसृष्ट]*

परेणोत्सङ्कलिते, सूय० १ श्रु० १६ अ०।

दत्ते, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ५ उ०। नाया०।

णिसढ- पुं० *[निषध]*

नितरां सहते स्कन्धे पृष्ठे वा समारोपितं भारमिति निषधः। चंद० ४ पाहु०। ।

बलीवर्दे, सूर०४ पाहु०। ।

बलदेवस्य रेवत्यामुत्पन्ने पुत्रे, निर० ।

णिसढकूड- न० *[निषधकूट]*

निषधपर्वताधिष्ठातृदेवनिवासोपेते । ठा० ९ ठा० ।

निषधवर्षधरपर्वतस्य द्वितीये कूटे, ठा०२ ठा०३ उ०। जंबू०।

णिसढद्दह- पुं० *[निषधह्रद]*

मन्दरस्य दक्षिणेन देवकुरुषु महाह्रदे, ठा०।

णिसण्ण- त्रि० *[निषण्ण]*
स्थिते, उत्त० २० अ०। आव०।
उपविष्टे, ठा० ५ ठा० २ उ०। नाया०। उत्त०। आचा०।
निविष्टे, नाया०१ श्रु०८ अ०।
निमग्ने, सूय०२ श्रु०२ अ०।

णिसण्णअ- पुं० *[निषण्णक]*
'संवरआसवदारो, अव्वावाहे अकंटए देसे। काऊण थिरं ठाणं, ठिओ णिसण्णो णिवन्नो वा। इत्युक्तलक्षणे कायोत्सर्गभेदे, आव० ५ अ०।

णिसण्णणिसण्ण- त्रि० *[निषण्णनिषण्ण]*
'अट्टं रुद्दं च दुवे, झायइ झाणाइ जो णिसन्नो उ। एसो काउस्सग्गो, णिसण्णनिस्सण्णगो नाम । इत्युक्तलक्षणे कायोत्सर्ग भेदे, आव० ५ अ०

णिसणोस्सिय- पुं० *[निषण्णोत्सृत]*
धम्मं सुक्कं च दुवे, झायइ झाणाइं जो णिसन्नो अ। एसो काउस्सग्गो, णिसण्णुसिओ होइ नायव्वो । इत्युक्तलक्षणे कायोत्सर्गभेदे, आव० ५ अ०।

णिसमेंत- त्रि० *[निशमयत्]*
आकर्णयति, आव०म० १ अ० १ ।

णिसम्म- अव्य० *[निशम्य]*
ज्ञात्वेत्यर्थे, आचा० १ श्रु० १ चू० १ अ० ९ उ०।
अवगम्येत्यर्थे, सूय० १ श्रु० १० अ०।
निश्चित्येत्यर्थे, आचा० १ श्रु० १ चू० १ अ० ३ उ०।
अवधार्येत्यर्थे, ठा०३ ठा० ३ उ०।
हृदयेनाऽवधार्य्येत्यर्थे,कल्प०३ ।ठा० ।तं० ।नाया० ।सूय० ।आचा०
निशम्य-हृदये परिणमय्य। जीवा० ।

णिसम्मभासि- त्रि० *[निशम्यभाषिण्]*
अत्वरितभाषिणि, आचा०१ श्रु०१ चू०४ अ०२ उ०।
पूर्वोत्तरेण पर्यालोच्य भाषके, सूय०१ श्रु०१० अ०।

णिसह- त्रि० *[निषध]*
'णिसढ' शब्दार्थे, चंद० ४ पाहु०। ।

णिसहकूड- न० *[निषधकूट]*
'णिसढकूट' शब्दार्थे, ठा० ९ ठा०।

णिसहदह- पुं० *[निषधह्रद]*
'णिसढदह' शब्दार्थे, ठा० ५ ठा० २ उ०।

णिसा- स्त्री० *[निशा]*
नितरां श्यति व्यापारान्। बृह० ५ उ०।

णिसाकप्प- पुं० *[निशाकल्प]*
रात्रौ द्रवाभावेन मात्रके मोकं गृहीत्वाऽऽचमने, गीतार्थाऽऽचीर्णत्वादस्य कल्पत्वम्। बृह० ५ उ०।

णिसापासाण- न० *[निशापाषाण]*
मुद्गाऽऽदिदलनशिलायाम्, उवा० २ अ०।

णिसामित्ता- अव्य० *[निशम्य]*
आकर्ण्येत्यर्थे, उत्त०२ अ०।
निशम्येत्यर्थे, सूय०१ श्रु० १४ अ०। आचा०।
अवधार्येत्यर्थे, आचा० १ श्रु० ८ अ० ३ उ०।

णिसालोढ- न० *[निशालोष्ट]*
शिलापुत्रके, उवा०२ उ०।

णिसिक्किय- अव्य० *[निषिच्य]*
अग्नाविन्धनाऽऽदिप्रक्षिप्येत्यर्थे आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०७ उ०।

णिसिज्जा- स्त्री० *[निषद्या]*
निषदनानि निषद्याः। उपवेशनप्रकारेषु। ठा०।

णिसिज्जापट्टग- पुं० *[निषद्यापट्टक]*
रजोहरणनिषद्यायाम्, ओह०।

णिसिट्ठ- त्रि० *[निसृष्ट]*
निर्गते, रा०।
प्रदत्ते, आचा०१ श्रु०८ अ०२ उ०। बृह०।
स्वामिनोत्सङ्कलिते, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०१ उ०।
निसृष्टो नाम यस्य शय्यातरेण प्रवेशोऽनुज्ञातः। बृह० २ उ०

णिसिद्ध- त्रि० *[निषिद्ध]*
निवारिते, आव०म० १ अ०२ ।

णिसिद्धप्प- पुं० *[निषिद्धाऽऽत्मन्]*
निषिद्धो मूलगुणोत्तरगुणातिचारेभ्य आत्मा येन स निषिद्धाऽऽत्मा। निरतिचारे सुसंयते, आव० म०१ अ०२ ।

णिसिय- त्रि० *[निशित]*
तीक्ष्णे, सूय० १ श्रु०५ अ०१ उ०।

णिसियर- पुं० *[निशाचर]*
पिशाचाऽऽदौ व्यन्तरे, ओह०।

णिसिरणा- स्त्री० *[निसर्जना]*
दाने, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१० उ०।
निक्षेपणे, सूय०२ श्रु०२ अ०। ठा०।
इयाणिं णिसिरणा दुविधा–लोइया, लोउत्तरिया य। तत्थ लोइया णिसिरणा तिविधा– सहसा, पमाएण, अणाभोगेण य। पुव्वाइट्ठेण जोगेण किंचि सहसा णिसिरति, पंचविध पमायऽन्नतरेण पमत्तो णिसरति। एगंतविस्सती अनाभोगो, तेण णिसिरति। निसि० ४ उ०।

णिसिइत्ता- अव्य० *[निषद्य]*
उपविश्येत्यर्थे, ठा० ३ ठा० २ उ०।

णिसिइत्ता- त्रि० *[निषीदयितृ]*
उपवेष्टरि, सेहे रातिणियस्स सपक्खं निसीइत्ता भवति।दशा० २

णिसीइयव्व- त्रि० *[निषत्तव्य]*
संदंशकभूमिप्रमार्जनाऽऽदिन्यायेनोपवेष्टव्ये, भग०२ श०१ उ०। उपवेष्टव्यं संदंशकभूमिप्रमार्जनादि-न्यायेनेत्यर्थः। नाया०।

णिसीढ- न० *[निशीथ]*
अप्रकाशे, निसि०३ उ०।

णिसीयंत- त्रि० *[निषीदत्]*
उपविशति, भग० १३ श०६ उ०।

णिसीयण- न० *[निषीदन]*
उपवेशने, ठा० ७ ठा०। वव०। निसि० । पिंड०। उव०।

णिसीयमाण- त्रि० *[निषीदत्]*
उपविशति, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०

णिसीरिज्जमाण- त्रि० *[निसृज्यमान]*
क्षिप्यमाणे, भग० ८ श० ७ उ०

णिसीह- न० *[निशीथ]*
अप्रकाशे, निसि० ३ उ०।
मध्यमरात्रौ, तद्वद्रहोभूतं यदध्ययनं तन्निशीथम्। आचाराङ्ग-पञ्चमचूडायाम्, पा०। नं०।
छेदसुत्तं। निसि०।

णिसीहकप्प- पुं० *[निशीथकल्प]*
निशीथाध्ययनमर्यादायाम्, । पंच०भा०।

णिसीहकरण- न० *[निशीथकरण]*
रहस्यसूत्रार्थे, विशे०।

णिसीहगंथ- पुं० *[निशीथग्रन्थ]*
प्रकल्पशास्त्रे, जीवा० १ प्रति०।

णिसीहचुण्णि- स्त्री० *[निशीथचूर्णि]*
निशीथाऽध्ययनव्याख्यायां चूर्णिग्रन्थे, निसि०।

णिसीहचूला- स्त्री० *[निशीथचूडा]*
आचाराङ्गस्य पञ्चमचूडारूपे निशीथाध्ययने, निसि०१ उ०।

णिसीहज्झयण- न० *[निशीथाध्ययन]*
आचाराङ्गस्य निशीथाख्यपञ्चमचूलिकायाम्, आचा० १ श्रु० १ अ० १ उ०। आव०चू०।

णिसीहपेढिया- स्त्री० *[निशीथपीठिका]*
निशीथचूर्णिभूमिकायाम्, निसि०।
सुत्तत्थो पेढियाए देओ, न वा ? कस्स देओ, कस्स वा ण देओ इति ? अहवा–कहित्तो सुत्तत्थो पेढियाए णिसीहियपेढियाए सुत्तत्थो व्याख्यातो। सो पुण णिसीहपेढिकाए सुत्तत्थो कस्स देओ, कस्स वा न देओ ? इति भण्णति। निसि० १ उ०

णिसीहिया-१ स्त्री० *[निशीथिका]*
अल्पतरकालिकायां वसतौ, भग०१४ श०१० उ०। आव०चू०। आचा० २ श्रु० २ चू०२ अ०।

णिसीहिया-२ स्त्री० *[नैषेधिकी]*
प्राणातिपाताऽऽदिनिवृतिः प्रयोजनमस्या नैषेधिकी। प्राणाति-पातनिवृत्तायां तन्वाम्, । आव०। उत्त०
निषेधो गमनाऽऽदिव्यापारपरिहारः, स प्रयोजनमस्याः, तमर्ह-तीति वा नैषेधिकी। बुह० २ उ०। जीत०।
निषीदनस्थाने, जीवा०३ प्रति०४ उ०। रा०।
निषेधः प्रमादेभ्य आत्मनो व्यावर्तनं, तत्र भवा नैषेधिकी। गच्छा० २ अधि०।
निषेधेन निर्वृत्ता नैषेधिकी। व्यापारान्तरनिषेधरूपायां सामा-चार्य्याम्, आश्रये प्रवेशितो । ठा० १० ठा०।
वसतिप्रवेशे निषिद्धोऽहं गमनक्रिययेति भणने, बुह०१ उ०। रा०। आव०म०।

णिसीहियापरिसह- पुं० *[नैषेधिकीपरिषह]*
निषेधनं निषेधः पापकर्मणां गमनाऽऽदिक्रियायाश्च, स प्रयोज-नमस्या नैषेधिकी, श्मशानाऽऽदिस्वाध्यायाऽऽदिभूमिर्निषद्येति यावत्। सैव च परिषहो नैषेधिकीपरिषहः। उत्त०२ अ०।
नैषेधिकी स्वाध्यायभूमिः शून्यागाराऽऽदिरूपा, तत्परिषहणं च तत्रोपसर्गेष्वत्रासः भग०८ श०८ उ०।
श्मशानाऽऽदिनिषद्यास्तु, स्त्र्यादिकण्टकवर्जिते। उपसर्गाननिष्टे-ष्टानैकोऽभीरस्पृहः क्षमेत् । आव०म० १ अ० ।

णिसीहियारय- त्रि० *[निशीथिकारत]*
स्वाध्यायध्यायिनि, आचा० २ श्रु०१ चू०३ अ०।

णिसीहियासत्तिक्कय- न० *[निशीथिकासप्तैकक]*
आचाराङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य सप्तैककस्याष्टमाध्ययनस्य द्वितीये निशीथिकाप्रतपादकेऽध्ययने, आचा०२ श्रु०२चू०। ठा०।

णिसुंभ- पुं० *[निशुम्भ]*
पञ्चमे प्रतिवासुदेवे, आव०।

णिसुंभण-त्रि० *[निपातयत्]*
भूमौ पातयति, सूय० १ श्रु० ६ अ० १ उ०

णिसुंभा- स्त्री० *[निशुम्भा]*
बलेर्वैरोचनेन्द्रस्य पञ्चानामग्रमहिष्याम्, ठा०४ ठा०२ उ० ।नाया०

णिसुणिऊ- अव्य० *[निश्रुत्य]*
श्रवणं कृत्वेत्यर्थे, जीवा० १ अधि०।

णिसेज्जा- स्त्री० *[निषद्या]*
स्त्रीवसतौ, स्त्रीभिः कृतायां मायायाम्, 'तम्हा समणा ण समेंति आयहियाए सण्णिसेज्जाए।' सूय० १ श्रु०४ अ०१ उ०।
एगाए निसज्जाए एक्कारस अंगा चोद्दसहिं। चोद्दसपूव्वाणि नं०
निषद्या-प्रणिपत्य पृच्छा । आव०)

णिसेय- पुं० *[निषेक]*
कर्मपुद्गलानां प्रतिसमयानुभावरचनायाम्, ठा०६ ठा०। आचा०।

णिसेविय- त्रि० *[निषेवित]*
आसेविते, आव०म०१ अ० ।
आश्रिते, उत्त० २० अ०।

णिसेह- पुं० *[निषेध]*
'षिध' गत्यामस्य निपूर्वस्य घञि निषेधनं निषेधः। आव०३ अ०

णिसेहण- न० *[निषेधन]*
वारणे, आव०म० १ अ० ।

णिसेहणा- स्त्री० *[निषेधना]*
वारणायाम्, आव० १ अ०।

णिसेहिया- स्त्री० *[नैषेधिकी]*
निषिध्यन्ते निराक्रियन्तेऽस्यां कर्माणीति नैषेधिकी निर्वाणभूमिः यदि वा निषेधे सकलकर्मनिराकरणलक्षणे भवानैषेधिकी। मुक्ति गतौ, उत्त० १० अ०।
शवपरिष्ठापनाभूमौ, गच्छा० २ अधि०।
निषीदनस्थाने, द्वारकूटसमीपे नितम्बे, जीवा० ३ प्रति० ४ उ०।

णिस्संक- त्रि० *[निःशङ्क]*
निर्दये, इहपरलोकाऽऽशङ्कारहिते, वव० १० उ०।
शङ्काया अभावो निःशङ्कम्।
संशयाभावे, विव निर्गता शङ्का देशसर्वशङ्कारूपा यस्य स निःशङ्कः।सूय० २श्रु० ७अ०। आचा०
शङ्कारहिते, उत्त० १९ अ०।

णिस्संकिय- त्रि० *[निःशङ्कित]*
शङ्कनं शङ्कितं शङ्का, निर्गतं शङ्कितं यस्मादसौ निःशङ्कितः। देशसर्वशङ्कारहिते,वव०१उ० ।दश० ।गच्छा० ।निसि० ।उत्त०। ठा
निःसंशये, रा०।
शङ्कनं शङ्कितं देशतः सर्वतश्च शङ्काऽऽत्मकम्। तस्याभावो निःशङ्कितम्। उत्त० २८ अ०।
संशयाभावे निःसंदेहे, उव०।

णिस्संग- त्रि० *[निस्सङ्ग]*
बाह्याभ्यन्तरसङ्गरहिते, आव०म० १ अ० । उत्त०।
पुत्रकलत्रमित्रधनधान्यहिरण्यसुवर्णाऽऽदिसकलसम्बन्धविकले, आव०।

णिस्संचार- त्रि० *[निस्संचार]*
द्वारापद्वारैर्जनप्रवेशनिर्गमवर्तिते, नाया० १ श्रु० ८ अ०।

णिस्संत- त्रि० *[निःशान्त]*
नितरामतिशयेन शान्त उपशमो वाऽन्तः क्रोधपरिहारेण बहिश्च प्रशान्ताऽऽकारतया निःशान्तः। उत्त० १ अ०।
अत्यन्तमन्दभूते, रा०।

णिस्संधि- त्रि० *[निस्सन्धि]*
निर्विवरे, 'णिस्संधिवारविरीहया।' पण्हा० १ अ०।

णिस्संस- त्रि० *[निःशंस]*
श्लाघारहिते, पण्हा० २ अ०।

णिस्संस- त्रि० *[नृशंस]*
निष्क्रान्तो वा शंसायाः श्लाघाया इति। पण्हा० ५।
नृशंसः-निस्तृंशो जीवान्। विहिंसन् मनागपि न शङ्कते, निशंतो वा परप्रशंसा रहितः। उत्त०।

णिस्संसय- त्रि० *[निस्संशय]*
संदेहाभावे, 'ततो णिज्जीवं निस्संसयं मुणिऊण।' आव०म० १ अ०। सूय०।

णिस्सण्ण- त्रि० *[निःसञ्ज्ञ]*
नष्टसञ्ज्ञे, सूय० १ श्रु०५ अ०१ उ०।

णिस्सयर- न० *[निःस्वकर]*
स्वकर्मानादिसम्बन्धत्वात्तदपनयनसमर्थानि निःस्वकराणि।कर्म-विश्लेषकेषु, आचा० २ श्रु० ४ चू०१ उ०

णिस्सरण- न० *[निःसरण]*
पलायने, वव०१ उ०।
निर्गमे, ठा० ४ ठा० २ उ०।
प्रस्खलम्। बुह० ।

णिस्सरणणंदि- त्रि० *[निःसरणनन्दिन्]*
निःसरणेन निर्गमेण नन्दति यो, नन्दिर्वा यस्य स निःसरणनन्दी। प्राधूर्णकशिष्याऽऽदीनामात्मनो वा गच्छाऽऽदेर्निर्गमेण प्रसन्ने पुरुषजाते, ठा० ४ ठा० २ उ०।
निःसरणेन-गच्छादेर्निर्गमेन नन्दति यो नन्दिर्वा यस्य सः। ठा०

णिस्सल्ल- त्रि० *[निश्शल्य]*
मिथ्यादर्शनाऽऽदिशल्यरहिते, सम०६ सम०। आव०म०। उत्त०।

णिस्सा- स्त्री० *[निश्रा]*
रागे, वव० १ उ०।
पक्षपाते, वव० ३ उ०।
उपसंपदि, वव० ४ उ०।
आश्रयणे, भग० ३ श० २ उ०।

णिस्साकरउ त्रि० *[निश्राकर]*
जो किंचि अववादपदं लभिता मुसलं पक्खिवइ। निसि०।
आलंबणं। निसि०।

णिस्साठाण- न० *[निश्रास्थान]*
अवलम्बनस्थाने, उपग्रहहेतौ, ठा०

णिस्साण-न० *[निश्राण]*
आलम्बने, 'णिस्साणपेहि त्ति अववातपेहि त्ति वुत्तं भवति।' निसि० १ उ०। पण्हा०।

णिस्साणपय- न० *[निश्राणपद]* निश्रायते मन्दश्रद्धाकैरासेव्यते इति निश्राणं, तच्च तत्पदं च निश्राणपदम्। अपवादे, बुह०१ उ०।

णिस्सार- त्रि० *[निःसार]*
सारवर्जिते प्रञ्जलिप्रायगुणधान्ये, सम० ६ सम।
सारो हि विषयगणरसतत्प्राप्तौ तृप्तिस्तदभावान्निःसारम्। तथा-विधसाररहिते, आचा० १ श्रु० ३ अ० २ उ०।
जीर्णे, आचा० १ श्रु०४ अ०३ उ०।
वेदवचनाऽऽदिवत्तथाविधयुक्तिरहिते परिफल्गुश्रुते, अणुओ०।
यत्र सारोऽर्थो न विद्यते अस्थि चर्म शिलापृष्ठं वृद्ध। बुह०१ उ०।
णिस्सारय- त्रि० *[निस्सारवत्]*
निर्गत एकान्ततः सारश्चारित्राऽऽख्यो यस्य स निःसारः। यदि वा निर्गतस्य सारो निःसारः, स विद्यते यस्याऽसौ निःसारवान्। साररहिते, 'णिस्सारए होइ जहा पुलाए।' सूय० १ श्रु० ७ अ०।
णिस्सारिय- त्रि० *[निःसारित]*
संयमाच्च्याविते, विषयोन्मुखतामापादिते, सूय० १ श्रु० १४ अ०।
णिस्सावयण- न० *[निश्रावचन]*
निश्रया वचनं निश्रावचनम्। आहरणतद्देशभेदे, ठा०।
कमपि सुशिष्यमालम्ब्य यदन्यप्रबोधार्थं वचनं निश्रावचनं, तद्यत्र विधेयतयोच्यते तदाहरणं निश्रावचनम्– यथा असहनान् विनेयान् मार्दवसम्पन्नमन्यमालम्ब्य किञ्चिद् ब्रूयात्, गौतममाश्रित्य भगवानिवेति। तथाहि–किल गौतमं तापसाऽऽदिप्रव्रजितानां केवलोत्पत्तावनुत्पन्नकेवलत्वेनाधृतिमन्तं चिरसंसृष्टोऽसि गौतम ! चिरपरिचितोऽसि गौतम ! मा त्वमधृतिं कार्षीरित्यादिना वचन-संदोहेनानुशासयताऽन्येऽप्यनुशासिताः, तदनुशासनार्थं द्रुमपत्र-काध्ययनं च प्रणिन्ये इति। ठा० ४ ठा० ३ उ०।
णिस्सिंचमाण- त्रि० *[निस्सिञ्चत्]*
दत्त्वोद्वरितं प्रक्षिपति, आचा० २ श्रु० १ चू० ६ अ०६ उ०
णिस्सिंचिय- अव्य० *[निःषिच्य]*
तद्भाजनाद्रहितं द्रव्यमन्यत्र भाजने कृत्वेत्यर्थे, दश०५ अ०१ उ०।
णिस्सिय- त्रि० *[निःश्रित]*
'श्रिञ्' सेवायाम्। आव०चू०४ अ०।
निश्चयेन श्रितः संबद्धो निःश्रितः।अध्युपपन्ने, सूय०१श्रु०२अ०३
संबद्धे, प्रवृत्ते, प्रतिबद्धे, सूय० १ श्रु० १० अ०। पण्हा०
लिङ्गप्रमिते, ठा० ६ ठा०। सम०।
आश्रिते, ठा० १० ठा०। सम०। सूय०।
आसक्ते, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०।
रागे आहाराऽऽदिलिप्सायाम्, ठा० ८ ठा०।
निश्रा रागः, निश्रा संजाताऽस्येति निश्रितः। रक्ते, सर्वाऽऽशंसा-युक्ते, शिष्यत्वाऽऽदिप्रतिपन्ने, ठा० ५ ठा० २ उ०।
णिस्सिय- त्रि० *[निःसृत]*
निर्गते, ठा० ७ ठा०। आचा०।
तमेव लिङ्गनिश्रया जानानो निःसृतं मुणतीत्युच्यते। विशे०।
णिस्सील-१ त्रि० *[निःशील]*
निर्गतशुभस्वभावे दुःशीले, ठा० ३ ठा० १ उ०।
सुस्वभाववर्जिते, ठा०३ ठा०२ उ०।
गताऽऽचारे, जंबू० २ वक्ष०।
समाधानरहिते, भग०१२ श०८ उ०।
अपगतशुभस्वभावे, नाया० १ श्रु० १८ अ०।
णिस्सील-१ त्रि० *[निःशील]*
महाव्रताणुव्रतविकले, भग०७ श०६ उ०।
ब्रह्मचर्यपरिणामाभावात् गृहस्थे, सूय० १ श्रु० १ अ० १ उ०।
णिस्सेणि- स्त्री० *[निःश्रेणि]*
अवतरण्याम्, पण्हा० १ अ०। आचा०।
णिस्सेयस- न० *[निःश्रेयस]*
निश्चितं श्रेयः प्रशस्यम्। ठा०३ ठा०४ उ०।
कल्याणे, ठा०६ ठा०।
कर्मक्षयहेतुत्वात् । आचा०१ श्रु०८ अ०४ उ० ।
अभ्युदयप्राप्तौ, उत्त० ९ अ०।
निश्चितकल्याणे मोक्षे, दशा० ४ अ०।
मोक्षे, निर० १ अ०। ठा०। उव०। नं०। दशा०। आव०म०।
अभिलषितविषयावाप्त्याऽभ्युदये, उत्त० ८ अ०।
णिस्सेयसिय- त्रि० *[नैःश्रेयसिक]*
निःश्रेयसं विपद् मोक्षमिच्छतीति नैःश्रेयसिकः। भग०१५ श०।
निःश्रेयसं मोक्षः, तत्र नियुक्त इव नैःश्रेयसिकः। मोक्षयोग्ये मोक्षार्थिनि, भग०।
णिस्सेस- त्रि० *[निःशेष]*
सम्पूर्णे, दश० ९ अ० २ उ०।
णिह-१ त्रि० *[निभ]*
सदृशे, आव०म० १ अ० ।
णिह-२ त्रि० *[निह]*
निहन्यते निहः। । आचा० १ श्रु०२ अ०३ उ०।
मायिनि, सूय० १ श्रु० ६ अ०।
क्रोधाऽऽदिभिः पीडिते, सूय० १ श्रु०२ अ०१ उ०।
निहन्यते प्राणिनः कर्मवशगा यस्मिन् तन्निहम्। आघातस्थाने, सूय० १ श्रु०५ अ०२ उ०।
णिह- त्रि० *[स्निह]*
स्निह्यते श्लिष्यते अष्टप्रकारेण कर्मणा इति स्निहः। रागवति, आचा० १ श्रु० ४ अ० ३ उ०।
रागद्वेषयुक्ते, आचा० १ श्रु०५ अ०३ उ०।
ममत्वसहिते, सूय० १ श्रु० २ अ० २ उ०।
णिहट्टु- अव्य० *[निर्हत्य]*
पृथक् कृत्वेत्यर्थे। आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० १० उ०

णिहट्ट- अव्य० *[निहत्य]*
स्थापयित्वेत्यर्थे, नाया० १ श्रु० १६ अ० ।
णिहण- न० *[निधन]*
तच्चेव णिहणमुवगतो ।' आव०म० १ अ० ।
'णिहणाहि रागदोसमल्ले ।' कल्प०५ क्षण० ।
णिहणिंसु- *[निहतवत्]*
क्षिप्तवति, आचा० १ श्रु० ९ अ० ३ उ० ।
णिहत्त- न० *[निधत्त]*
निधानं निहितं वा निधत्तं, उद्वर्तनापवर्तनावर्जितशेषकरणानाम-योग्यत्वेन कर्मणाऽवस्थापने, ठा०४ ठा०२ उ० । भग० ।
निषिक्ते, निषेकश्च प्रतिसमयबहुहीनहीनतरस्य दलिकस्यानु-भवनार्थं रचना । सम० । ठा० । सूय० ।
निश्चिते, प्रमाणे, निकाचिते, । ठा० ८ ठा० ।
णिहय- त्रि० *[निहत]*
मारिते, 'जक्खा हु वेयावमियं करेंति, तम्हा उ एए णिहया कुमारा ।' उत्त०१२ अ० ।
निश्चयेन हन्यते इति निहतः । भावरिपुभिरिन्द्रियकषायकर्मभि-र्हन्यमाने, आचा० १ श्रु० ४ अ० ३ उ० ।
णिहयकंटय- त्रि० *[निहतकण्टक]*
निहता मारणात्कण्टका दायादा यत्र राज्ये तत् तथा । मारित-दायादे, ठा० ९ ठा० ।
णिहयरय- त्रि० *[निहतरजस्]*
निहतं रजो भूय उत्थानासम्भवाद् यत्र तन्निहतरजः । शान्त-रजसि, रा० ।
निहतं रजो यस्यां सा निहतरजास्तां, तत्र निहतत्वं रजसः क्षण-मात्रमुत्थानाभावेनाऽपि सम्भवति । जीवा०३ प्रति०४ उ० । रा० ।
णिहयसत्तु- त्रि० *[निहतशत्रु]*
निहता रणाङ्गणे पतिताः शत्रयो यत्र तन्निहतशत्रुहतशत्रुके, 'ओहयसत्तु णिहयसत्तु मवियसत्तु निज्जियसत्तु ।रा० ।ठा० । सूय०
णिहा- स्त्री० *[निहा]*
निहन्यन्ते प्राणिनः संसारे यथा सा निहा । मायायाम्, सूय० १ श्रु० ८ अ० ।
णिहाण- न० *[निधान]*
रत्नाऽदौ, ठा० ५ ठा०१ उ० ।
निधौ, अणुओ०
निक्षिप्ते, 'दव्वे निहाणमाई ।' दश० ८ अ० ।
णिहाय- अव्य० *[निधाय]*
व्यवस्थाप्येत्यर्थे, सन्निधिं कृत्वेत्यर्थे, सूत्र० १ श्रु०७ अ० ।
परित्यज्येत्यर्थे, सूय० १ श्रु० १३ अ० ।
णिहार- पुं० *[निहार]*
निर्गमे प्रमाणे, ठा० ८ ठा० ।
णिहालेउं- अव्य० *[निभाल्य]*
सम्यग्विलोक्येत्यर्थे, गच्छा० २ अधि० ।
सम्यक्परीक्ष्येत्यर्थे, गच्छा० १ अधि० ।
णिहि- स्त्री०पुं० *[निधि]*
विशिष्टरत्नसुवर्णाऽऽदिद्रव्यभाजने, ठा० ।
णिही- स्त्री०
अनन्तजीववनस्पतिभेदे, पन्न०१ पद० ।
णिहु- स्त्री० *[स्निहु]*
औषधिभेदे, जीवा०१ प्रति० ।
णिहुअ- त्रि० *[निभृत]*
तदर्थमनुद्युक्ते, सूय०१ श्रु०८ अ० ।
निर्व्यापारे, बुह०३ उ० ।
निश्चले, उत्त०१९ अ० ।
असंभ्रान्ते, कायस्थित्या उचितधर्मे, दश०६ अ० ।
णिहुइंदिय- त्रि० *[निभृतेन्द्रिय]*
अनुद्धतेन्द्रिये, दश० १ अ० ।
णिहौड- धा०णिहोडइ ।' निवारेइ । निवारयति । पातयति वा । वव०
णी- स्त्री० *[नीति]*
नये, ठा०७ ठा० । अणुओ० ।
मर्य्यादायाम्, पंच०चू० ।
नीयते परिच्छिद्यते एकदेशविशिष्टोऽर्थ आभिरिति नीतयः । नैगमाऽऽदिनयेषु, ठा० २ ठा० २ उ० ।
कुलकराणां ह-क्काराऽऽदिषु दण्डनीतिषु, आव०म० १ अ० ।
राजनीतौ, 'तिविहः नीई पण्णत्ता । तं जहा–सामे, दंडे, भेए ।' तत्र सामनीतेः पञ्च, दण्डस्य त्रयो, भेदस्य उपप्रदानस्य स पञ्च पञ्च कामन्दाऽऽदिषु प्रसिद्धाः । नाया०१ श्रु०१ अ० । विपा० ।
प्रयोगश्चासामेवम्–'उत्तमं प्रणिपातेन, शूरं भेदेन योजयेत् । नीचमल्पप्रदानेन, समं तुल्यपराक्रमैः' । ठा०३ ठा०३ उ० ।
संग्रामनिर्गमप्रवेशे, आव० ।
णीइकोविय- पुं० *[नीतिकोविद]*
लोकनीतिचतुरे, उत्त०२१ अ० ।
णीछूढ- न० *[निष्ठ्यूत]*
निष्ठीवने, नं० ।
णीजूहग- न० *[निर्यूहक]*
द्वारपार्श्वविनिर्गतदारुके, नाया०१ श्रु०१ अ०
णीजूहयंतर- न० *[निर्यूहकान्तर]*
निर्यूहकं द्वारपाईर्वविनिर्गतदारु, तयोरन्तरे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।
णीणिज्जमाण- त्रि० *[गम्यमान]*
नीयमाने, 'णीणिज्जमाणं पेहाए ।' आचा०१ श्रु०२ चू०४ अ० ।

णीणित- त्रि० *[गमित]*
निर्व्यूढे धाडिते, निसि० १ उ०।
णीणिया- स्त्री० *[नीनिका]*
चतुरिन्द्रियजीवभेदे, जीवा० १ प्रति०।
णीततर- त्रि० *[नीचतर]*
अतिशयेन नीचे, निसि० १ उ०।
णीय-त्रि० *[नीच]*
अत्यन्तावनतकन्धरे, उत्त०१ अ०।
उच्चविपरीते, ठा०३ ठा०४ उ०।
अपूज्ये, भग०३ श०१ उ०।
निम्ने, निसि० १ उ०।
नीचैः स्थाने, मालाऽऽदौ, उत्त०१ अ०।
णीय- त्रि० *[नित्य]*
सदाऽवस्थायिनि, ठा० १० ठा०।
णीय- त्रि० *[नीत]*
स्वस्थानं प्रापिते, नाया०१ श्रु०१६ अ०। उत्त०। सूय०।
णीयच्छंद- त्रि० *[नीचच्छन्द]*
अनुन्नताभिप्राये, ठा०३ ठा०४ उ०।
णीयजण- त्रि० *[नीचजन]*
जात्यादिहीने जने, पण्हा०२ अ०।
'णीयजणणिसेविणी लोगगरहणिज्जा।' पण्हा० २ अ०
णीयत्तल- न० *[नीचत्व]*
गुणधिकान् प्रति नीचभावे, दश० ९ अ० ३ उ०।
णीयदुवार- त्रि० *[नीचद्वार]*
नीचनिर्गमप्रवेशे, दश० ५ अ० १ उ०।
णीयलग्ग- पुं० *[निजक]*
स्वज्ञातीये, 'णीयल्लगाण य भया हिरिवत्तियसंजमाहिगारे' वव०४ उ०।
आत्मीये, वव०२ उ०।
णीयागोय- न० *[नीचैर्गोत्र]*
सर्वजनविगीते गोत्रकर्मभेदे, सूय०२ श्रु०१ अ०।
नीचैर्गोत्रमपूज्यत्वनिबन्धनमिति कर्मभेदे, ठा० १ ठा०।
नीचैर्गोत्रोद्भवे वणपिसदसम्भूते, सूय० २ श्रु०१ अ०।
णीयावास- पुं० *[नित्यवास]*
विहारकालेऽप्येकत्र वासे, आव०चू०३ अ०।
णीयावित्ति- त्रि० *[नीचैर्वृत्ति]*
नीचैर्वृत्तिर्वर्तनं यस्य स तथा। अनुच्च वृत्तौ, वव० १ उ०।
णीयासण- न० *[नीचासन]*
नीचमासनं नीचासनम्।
गुरूणां नीचतरोपवासे, निसि० १ उ०।
णीरय- त्रि० *[नीरजस्]*
निर्गतं रजो यस्य। अणुओ०।
आगन्तुकरजोरहितत्वात् । सम०। उव० ।
सहजरजोरहितत्वात् । जंबू० १ वक्ष०। उव०। ठा० ।
स्वाभाविकरजोरहितत्वात् । पन्न०२ पद०। जीवा० ।
निर्मले, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ०। भग०।
बध्यमानकर्मबन्धनैस्त्यक्ते, बध्यमानकर्मरहिते। आव०म०।
सूक्ष्मवालाग्रोऽपकृष्टधान्यरजः कोष्ठागारवत्। जंबू०।
णीरोग- त्रि० *[नीरोग]*
आरोग्ये, ठा० १० ठा०।
रोगवर्जिते, नाया०१ श्रु०१ अ०।
ग्लान्याभावे, बुह०३ उ०। उव०।
णीरोगय- त्रि० *[नीरोगक]*
रोगवर्जिते, जीवा० ३ प्रति० ४ उ०। रा०।
णील-१ त्रि० *[नील]*
ईषत्सुन्दररूपे, कृष्णे, वर्णविशेषे, ठा० १ ठा०
नील्यादिवद् नीलवर्णपरिणते, पन्न० १ पद०।
'णीले णीलोभासे।' वनखण्डे, हरितत्वमतिक्रान्तानि कृष्णत्वम-संप्राप्तानि पत्राणि नीलानि, तद्योगाद्वनखण्डापि नीलाः। रा०।
णील-२ त्रि० *[नील]*
मरकतमणौ, जीवा०३ प्रति०४ उ०। तं०। जंबू०। नाया०।
णील-३त्रि० *[नील]*
पञ्चविंशतितमे महाग्रहे, कल्प०६ क्षण०।
'दो णीला।' ठा०२ ठा०३ उ०। सूर०। चंद०।
णीलकंठ- पुं० *[नीलकण्ठ]*
शक्रस्य देवेन्द्रस्य महिषीनीकाधिपतौ, ठा०४ ठा०२ उ०।
णीलकणवीर- पुं० *[नीलकरवीर]*
नीलवर्णपुष्पे करवीराऽऽख्ये वृक्षभेदे, रा०।
णीलकूड- न० *[नीलकूट]*
नीलवर्षधरपर्वतकूटे, ठा०२ ठा०३ उ०
णीलकेसी- स्त्री० *[नीलकेशी]*
कृष्णकेश्यां तरुण्याम्, वव० ४ उ०।
णीलगुफा- स्त्री० *[नीलगुहा]*
स्वनामख्याते उद्याने, यत्र मुनिसुव्रतनामा तीर्थकरा निष्क्रान्तः। आव०म० १ अ० ।
णीलगुलिया- स्त्री० *[नीलगुटिका]*
नील्या गुटिका नीलगुटिका। गुटीरूपे नीलपदार्थे, 'णीलगुलिया गवलप्पगासा।' जीवा० ३ प्रति० ४ उ०। रा०।
णीलपत्त- त्रि० *[नीलपत्र]*
नीलवर्णपत्रोपेते, पन्न० १ पद०।

णीलपाणि- त्रि० *[नीलपाणि]*
नीलः, काण्डकलाप इति गम्यते। पाणौ येषां ते नीलपाणयः। नीलवर्णकाण्डहस्ते, रा०।

णीलप्पभ- त्रि० *[नीलप्रभ]*
नीलवर्णे, नाया० १ श्रु० १ अ०।

णीलफल- त्रि० *[नीलफल]*
नीलं फलं यस्याः। जम्बूवृक्षे, पन्न०।

णीलबंधुजीव- त्रि० *[नीलबन्धुजीव]*
नीलवर्णपुष्पे वृक्षविशेषे, रा०।

णीलमट्टिया- स्त्री० *[नीलमृत्तिका]*
नीलवर्णमृत्तिकायाम्, श्लक्ष्णपृथ्वीकायभेदे, आचा०।

णीलरत्तपीअसुक्किल्ल- त्रि० *[नीलरक्तपीतशुक्ल]*
नीलरक्तपीतशु-क्लवर्णमनोहरे, कल्प० ३ क्षण०।

णीललेस्सा- स्त्री० *[नीललेश्या]*
वर्णतो नीलाशोकगुलिकावैडूर्येन्द्रनीलचाषपिच्छाऽदिमलवर्णैः, रसतो मरिचपिप्पलीनागराऽऽदिसमधिकतरसैः,गन्धतो मृगतुरग-शरीराऽऽदिसमाधकतरगन्धैः, स्पर्शतो जिह्वाऽऽदिसमधिकतर-कर्कशस्पर्शैः,सकलप्रकृतिनिष्पन्दभूतैर्नीलद्रव्यैर्जनितत्वान्नीलोपि लेश्याऽऽत्मपरिणतिरिति। लेश्याभेदे, ठा०।

णीलवंत- पुं० *[नीलवन्तत]*
उत्तरकुरुषु स्वनामख्याते ह्रदे, तद्वासिनि नागकुमारदेवे च। जंबू० ४ वक्ष०। जीवा०।
मन्दरस्य पर्वतस्य भद्रशालबने द्वितीये दिग्हस्तिकूटे, जंबू०।
नीलवान् दिग्हस्तिकूटं द्वितीयः। जंबू०।
जम्बूद्वीपे द्वीपे नीलवन्नाम्ना द्वितीयः वर्षधरपर्वतः। जंबू०

णीलवंतकूड- न० *[नीलवत्कूट]*
नीलवद्वर्षधरपर्वतस्य द्वितीये कूटे, ठा०२ ठा०३ उ०। जंबू०।
'दो नीलवंतकूडा।' ठा० २ ठा० ३ उ०।

णीलवंतदह- पुं० *[नीलवदह्रद]*
उत्तरकुरुषु विचित्रचित्रकूटपर्वतसमवक्तव्यताभ्यां यमकाभिधा-नाभ्यां स्वसमाननामदेवाऽऽवासाभ्यां पर्वताभ्यामनन्तरे महाह्रदे, ठा० ५ ठा० २ उ०। जंबू०।

णीलवंतदहकुमार- पुं० *[नीलवदह्रदकुमार]*
नीलवद् ह्रदस्याधिपतिनागकुमारे देवे, जीवा०३ प्रति०४ उ०।

णीला- स्त्री० *[नीला]*
नीललेश्यायाम्, सम०। उत्त०।
जम्बूद्वीपे मन्दरस्योत्तरेण रक्तायां महानद्यां सङ्गतायां महानद्याम्, ठा० १० ठा०।

णीलाभास- पुं० *[नीलाभास]* षड्विंशतितमे महाग्रहे, 'दो णीला-भासा।' ठा० २ ठा०३ उ०। चंद०। सूर०। कल्प०।

णीलासोग- पुं० *[नीलाशोक]*
नीलश्चाऽसौ अशोकश्च नीलाशोकः। नीलपुष्पाशोकवृक्षे । रा०। उत्त०।
शुकपरिव्राजकजेतुः सुदर्शनश्रेष्ठिन आवासभूतायाः सुगन्धिका-पुर्या बहिरुद्याने, नाया० १ श्रु०५ अ०।

णीली- स्त्री० *[नीली]*
गुलिकायाम्, नाया० १ श्रु०१६ अ०। जीवा०। रा०। जंबू०।
गुच्छवनस्पतिभेदे, पन्न०१ पद।
आर्द्रे स्त्रीत्वविशिष्टेऽर्थे, । दश०७ अ०।

णीलीराग- पुं० *[नीलीराग]*
नील्याः सम्बन्धी रागो यस्य स नीलीरागः। नीलोरक्ते, 'णीलीरागं खलु, दुमहत्थी सरभासिया।' वव० ३ उ०।

णीलुप्पल- न० *[नीलोत्पल]*
कुवलये, जंबू० १ वक्ष०।
'णीलुप्पलगवलगुलिय।' उवा० २ अ०।

णीलुप्पलकयामेल- त्रि० *[नीलोत्पलकृताऽऽपीड]*
नीलोत्पलकृतशेखरे, उवा०७ अ०।

णीलुप्पलवण- न० *[नीलोत्पलवन]*
इन्दीवरकानने, तं०।

णीलोभास- त्रि० *[नीलावभास]*
मयूरगलवदवभासमाने, उव०। रा०

णीव- पुं० *[नीप]*
कदम्बे, उव०।
वृक्षविशेषे, नाया०१ श्रु०९ अ०। आव०म०।

णीवार- पुं०न० *[नीवार]*
शूकराऽऽदीनां पशूनां बध्यस्थानप्रवेशनभूते भक्ष्यविशेषे, सूय०१ श्रु० १५ अ०।
ब्रीहिविशेषकणदाने, सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ०।

णीसंद- पुं० *[निस्यन्द]*
परिगालपरिस्रावे, 'णवमपुव्वणीसंदो।' पंच०भा०।

णीसट्ठ- त्रि० *[निसृष्ट]*
विमुक्ते, पण्हा०१ अ०।
बहिर्निष्काश्य निवेदिते, यस्य याचकाऽऽदेरर्थाय निष्काशितः तस्मै प्रदत्ते, बुह० २ उ०।

णीसरण- न० *[निस्सरण]*
फेह्लसने, वव०४ उ०।

णीसल्ल- त्रि० *[निःशल्य]*
मायादर्शननिदानशल्यरहिते, संथा०।

णीसवग- पुं० *[निश्रावक]*
कर्मनिर्जरके, आव०म०१ अ० । विशे०।

णीसवमाण- त्रि० *[निश्रवयत्]*
कर्मणि निर्जरयति, आव०म०१ अ० ।
यस्मात्सामायिकं प्रतिपद्यते तदावरण कर्मनिर्जयन्। आव०।

णीससंत- त्रि० *[निःश्वसत्]*
निःश्वासान् मुञ्चति, पण्हा०३ अ०।
'ऊससमाणे वा, णीससमाणे वा, कासमाणे वा, छीयमाणे वा।' आचा० २ श्रु०१ चू०२ अ०३ उ०।

णीससिउच्छसियसम- न० *[निःश्वसितोच्छूसितसम]*
मानमतिक्रामतो गाने, ठा० ७ ठा०।

णीससिय- न० *[निःश्वसित]*
निःश्वसनं निःश्वसितम्। नं०
अधःश्व-सिते, आव०५ अ०। विशे०। आव०म०।
कामक्रीडायाः श्वाससमुद्भवे, नाया०१ श्रु०९ अ०।

णीसा- स्त्री० *[निश्रा]*
पीषण्याम्, 'दगवारएण पिहियं, णीसाए पीढएण वा।' दश० ५ अ० १ उ०।

णीसास- पुं० *[निःश्वास]*
अधःश्वासे, आव०चू० ५ अ०।
श्वास मोक्षणे तं०।

णीसासय- त्रि० *[निःश्वासक]*
निःश्वसतीति निःश्वासकः। आनप्राणपर्याप्तिपरिनिष्पन्ने, । आव० म० १ अ० । विशे०।

णीसेयस- न० *[निःश्रेयस]*
निश्चितकल्याणे, जीवा०३ प्रति०४ उ०।

णीहट्टु- अव्य० *[निर्हत्य]*
निःसार्येत्यर्थे, आचा०२ श्रु०१ चू०६ अ० २ उ०।

णीहड- त्रि० *[निर्हृत]*
निर्गते, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ०।
निष्क्रान्ते, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०९ उ०।

णीहडिया- स्त्री० *[निर्हृतिका]*
अन्यत्र नीयमाने सागारिकेद्रव्ये, बुह०२ उ०।

णीहरण- न० *[निर्हरण]*
निर्गमे, निर० १ श्रु०१ वर्ग०१ अ०।
अपनयने, सूय०२ श्रु०२ अ०।
परित्यागे, निसि०१ उ०। आचा०

णीहरित्तए- अव्य० *[निर्हर्तुम्]*
निष्काशयितुमित्यर्थे, भग०५ श०४ उ०।
विशोधयितुमित्यर्थे, दशा०७ अ०। विशे०।

णीहरिय- अव्य० *[निर्हृत्य]*
निष्क्राम्येत्यर्थे, निसि०९ उ०।

णीहार- पुं० *[निर्हार]*
मूत्रपुरीषोत्सर्गे, सम०३४ सम०।

णीहारण- न० *[निर्हारण]*
निस्सारणे, ठा०२ ठा०४ उ०।

णीहारि- त्रि० *[निर्हारिण्]*
व्यापिनि, योजननिर्हारिणा योजनव्यापिना शब्देन। आव०म०१
योजनातिक्रामिणा शब्देन। सम० ३४ सम०।
प्रबले, आव०म०१ अ० ।
घोषवति, घण्टाशब्दवच्छब्दभेदे, ठा० १० ठा०।

णीहारिम- न० *[निर्हारिम]*
निहरिण निर्वृत्तं यत्तन्निर्हारिमम्। प्रतिश्रये यो म्रियते तस्यै तत् कलेवरस्य निर्हारणात् निर्हारिमम्। पादोपगमनमरणभेदे, भग० २ श० १ उ०।
दूरं विनिर्गमनशीले, आव०म०१ अ० । रा०। नाया०।

णीहुय- त्रि० *[निह्नुत]*
अकिञ्चित्करे, 'पवयणणीहुयाणं।' आव०म० १ अ० ।

णु- अव्य० *[नु]*
निश्चये, वितर्के, विशे०। सूय०। आव०चू०।

णुक्कार- पुं० *[नुक्कार]*
नुगितिशब्दकरणे, अप्पेगइया नुक्कारशब्दं कुर्वन्ति। रा०।

णूणं- अव्य० *[नूनम्]*
निश्चिते, बुह० १ उ०। उत्त०। सूय०। भग०। नाया०।
उपमाने, अवधारणे, तर्के, प्रश्ने, हेतौ, भग० २ श०६ उ०।

णूम-१ धा० *[छादि]*
छादने, माहु समाच्छादयेत्तरुणी। बुह०१ उ०।

णूम-२ न० *[छन्न]*
अवतमसे, गाढतमसे, भग०श० ८ उ०।
प्रच्छन्ने गिरिगुहाऽऽदिके, सूय०१ श्रु०३अ०३उ०। आचा०।
प्रच्छादने पण्हा०२ अ०।
गहने, मायायाम्, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ०।
परवञ्चनार्थं निम्नताया निम्नस्थानस्य च आश्रयणे, भग०१२ श०५
भिन्ने, निसि०११ उ०।

णूमगिह- न० *[छन्नगृह]*
वृक्षप्रधाने गृहे, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ० ३ उ०। भूमिगृहे, निसि०१२ उ०।

णे- अव्य० *[णे]*
'णे' इति निपातः। पूरणे, जीवा०७ अधि०।

णेउणिय- न० *[नैपुणिक]*
'णिउणिय' शब्दार्थे, अनुप्रवादपूर्वगते स्वनामख्याते वस्तुनि, आव०म०१ अ०२ । विशे०।

णेउण्ण- न० *[नैपुण्य]*
आलेख्याऽऽदिकलायाम्, दश०९ अ०२ उ० आव०।
णेउर-१ न० *[नूपुर]*
पादाऽऽभरणे, पण्हा० ४ अ०।
'खुड्डियवरणेउरचलणमालिया'। उव०। आव०म०।
णेउर-२ न० *[नूपुर]*
द्वीन्द्रियजीवभेदे, पन्न०१ पद। जीवा०।
चतुरिन्द्रियजीवभेदे, पन्न०१ पद। जीवा०।
णेग- त्रि० *[नैक]*
न एकं नैकम्। नायं । प्रभूते, आव०म०१ अ०२ ।
बहुके, पण्हा०३ अ०। सूय० विशे०।
णेगम-१ पुं० *[नैगम]*
निगमा वणिजः, तेषां स्थानं नैगमम्। वणिजाऽऽवासे, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०२ उ०।
वाणिजके, भग०१८ श०२ उ०। कल्प०। बृह०।
सामान्यविशेषग्राहकत्वात्तस्यानेकेन ज्ञानेन मिनोति परिच्छि-नत्तीति नैगमः। अथवा निगमा निश्चितार्थबोधाः, तेषु कुशलो भवो वा नैगमः। अथवा नैकोगमोऽर्थमार्गो यस्य स प्राकृतत्वेन नैगमः। ठा०३ ठा० ३ उ०।
वणियवग्गो जत्थ वसति तं णेगमं। निसि० ७०
निगमेषु वा भवो नैगमः, निगमाः-पदार्थपरिच्छेदाः। आव०।
णेगम-२ पुं० *[नैकम]*
नैकेर्मानैर्महासत्तासामान्यविशेषज्ञानैर्मिमीते मिनोत्ती वा नैकमः। अथवा नैके गमाः पन्थानो यस्य स नैक गमः। ठा० ७ ठा०। अणुओ०। गच्छा०।
नैकेन-सामान्यविशेषग्राहकत्वात् तस्यानेकेन ज्ञानेन मिनोति-परिच्छिनत्तीति नैकमः, ठा० ७ ठा०।
णेगम-३ पुं० *[नैनेगम]*
नयभेदे, आव०म०।
णेगविह- त्रि० *[नैकविध]*
नानाप्रकारे, निसि०१ उ०।
णेचइय- पुं० *[नैचयिक]*
निचयेन संचयेनार्थाद् धान्यानां ये व्यवहरन्ति ते नैचयिकाः। धान्यव्यापारिषु, वव० ४ उ०।
णेच्छंत- त्रि० *[अनिच्छत्]*
अनभिलषति, वव०२ उ०।
णेच्छिय- त्रि० *[नेच्छित]*
न इच्छितं नेच्छितम्। इच्छाया अविषयीकृते, जीवा०।
णेट्टूर- पुं० *[नेट्टूर]*
अनार्यदेशभेदे, तत्रत्यमनुष्ये च। पण्हा०१ अ०। पन्न०।
णेत्त-न० *[नेत्र]*
नयन्त्यर्थदेशमर्थक्रियासमर्थमर्थमाविर्भावयन्ति इति नेत्राणि। चक्षुरादिष्विन्द्रियेषु, आचा०१ श्रु०४ अ०४ उ०।
'दो णेत्ता।' पन्न०१८ पद०।
'उड्ढंमुहे णिग्गयजीहणेत्ते।' उत्त०१२ अ०।
मन्थदण्डाऽऽकर्षणरज्जो, उवा०२ अ०।
णेत्तसूल- न० *[नेत्रशूल]*
नेत्रपीडायाम्, नाया०१ श्रु०१३ अ०।
णेदूर- न० *[नेदूर]*
म्लेच्छविशेषः। पन्न०।
णेम- पुं० *[नेम]*
भूमिभागादूर्ध्वं निष्क्रामति प्रदेशे, जंबू०१ वक्ष०। जीवा०। रा०। आव०म०।
भूमेरूर्ध्वं निष्क्रामन्तः प्रदेशाः। जंबू०।
नेमशब्दो देश्यः। कार्ये, पिंड०।
णेमि-१ पुं० *[नेमि]*
चक्रस्य वाह्यपरिधौ, जीवा०३ प्रति०४ उ०। सूय० नं०।
चक्रधारायाम्, ठा०३ ठा०३ उ०।
णेमि-२ पुं० *[नेमि]*
धर्मचक्रस्य नेमिवन्नेमिः। अस्यामवसर्पिण्यां जाते द्वाविंशे तीर्थकरे, कल्प०७ क्षण०। सम०। आव०चू०। आव०।
णेमित्तकारण- न० *[नैमित्तकारण]*
निमित्तस्येदं नैमित्तं, तदेव कारणं नैमित्तकारणम्। नैमित्तिक-कारणे, आव०म० १ अ० । विशे०।
णेमित्तिय- न० *[नैमित्तिक]*
निमित्तमतीताऽऽदिपरिज्ञानोपायशास्त्रम्, तदेव नैमित्तिकम्। कूटपर्वताऽऽदौ, पापश्रुते, ठा०९ ठा०।
अष्टाङ्गनिमित्तसम्पन्ने, निसि० १ उ०। दश०। आचा०।
णेमिपडिरूवग- न० *[नेमिप्रतिरूपक]*
नेमिश्चक्रधारा, तद्योगावक्रमपि नेमिस्तत्प्रतिरूपकम्। वृत्ततया तत्सदृशम्। वृत्तस्थाने, भग० १४ श०६ उ०।
णेय- त्रि० *[ज्ञेय]*
ज्ञायत इति ज्ञेयम्। ज्ञानविषये, निसि०१ उ०।
ज्ञानक्रियाविषये परिच्छेद्ये, वव०१ उ०। विशे०।
ज्ञातव्ये, आव०४ अ०।
णेयव्व- त्रि० *[नेतव्य]*
संवेदनविषयतां प्रापणीये, उत्त०१ अ०।
णेया- त्रि० *[नेतृ]*
नयनशीलो नेता, नयतेस्ताच्छीलिकस्तृन्। सूय० १ श्रु०३ अ०१ प्रणायके, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०। सम०

णेयाउय- पुं० *[नैयायिक]*

न्यायेन चरति नैयायिकः। न्यायाऽबाधिते आव०चू०४ अ०। न्यायानुगते, उव०।
न्यायानिष्ठे, उत्त०२ अ० सूय०।
न्यायमनतिक्रान्ते, दशा०९ अ०।
न्यायोपपन्ने, उत्त०३ अ०। सूय०।
गौतमशास्त्रज्ञे आक्षपादे, ते च प्रमाणप्रमेयाऽऽदीनां पदार्था-नामन्वयव्यतिरेकपरिज्ञानान्निःश्रेयसाधिगम इति व्यवस्थिताः। सूय० १ श्रु० १ अ०१ उ०।
नयनशीलो नैयायिकः, न्याये वा भवो नैयायिकः। मोक्षगमके, नाया०१ श्रु०१ अ०। ध०। भग०। आव०।
मोक्षनयनशीले, नयनशीला नेता, नयतेस्ताच्छीलिकस्तृन्। स चाऽत्र सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राऽऽत्मको मोक्षमार्गः। श्रुतचारित्र-रूपो वा धर्मो मोक्षनयनशीलवान् गृह्यते; मार्गं धर्मं वा मोक्षं प्रति नेतारं सुष्ठु तीर्थकराऽऽदिभिराख्यातं स्वाख्यातं तमुपादाय गृहीत्वा सम्यक् मोक्षाय चेष्टते ध्यानाध्ययनाऽऽदावुद्यमं विधत्ते। सूय०२ श्रु० ८ अ०।
निश्चित आयो-लाभो न्यायः-मुक्तिरित्यर्थः स प्रयोजनमस्येति नैयायिकः। उत्त० ।

णेरइय- पुं० *[नैरयिक]*

निर्गतमविद्यमानमयमिष्टफलं येभ्यस्ते निरयाः, तेषु भवा नैरयिकाः। क्लिष्टसत्त्वविशेषेषु, ठा०।

णेरइयत्ता- स्त्री० *[नैरयिकता]*

नैरयिकत्वे नैरयिकभावे, ठा०४ ठा० ४ उ०।

णेरइयावास- पुं० *[नैरयिकावास]*

नैरयिकाणामावासभूमौ, जीवा०१ प्रति०। ठा०।

णेरई- स्त्री० *[नैर्ऋती]*

निर्ऋतिर्देवताऽस्या नैर्ऋती। भग०७ श०१ उ०। ठा०।
पूर्वस्याः पश्चिमायाश्चान्तरालविदिशिः,आव०म०। विशे०। ठा०।

णेरप्प- न० *[नैरात्म्य]*

आत्मराहित्ये, शौद्धोदनीयाः पुनरेव माहुः–नैरात्म्यभावना। नं०।

णेरुत्त- न० *[नैरुक्त]*

अभिधानाक्षरानुसारतो निश्चितार्थस्य वचनं भणनं निरुक्तं, तत्र भवं नैरुक्तम्। निरुक्तवशेनाऽर्थाभिधायके नामनि, यथा मह्यां शेते महिष इत्यादि। अणुओ०।
निरुक्तशास्त्राविदि, । वव०७ उ०।

णेल- न० *[नैल]*

नीलीविकारे, भग०१ श०१ उ०। पन्न०।

णेवइय- त्रि० *[नैतकिक]*

नीतिकारिणि, वव०१ उ०।

णेवत्थ- न० *[नेपथ्य]*

वेषे, पण्हा०४ अ०। आव०म०। उव०। रा०।
स्त्रीपुरुषाणां वेषे, ठा०४ ठा०२ उ०।
परिधानाऽऽदिरचने, नाया०१ श्रु०१ अ०।
केशचीवरसमारचने, । निर० । उव०।
निर्मलवेषे, नाया०१ श्रु०१६ अ०। ठा०।
देशनेपथ्यं-स्त्रीपुरुषाणामाभूषणसम्बन्धीविचारः। देशकथायाः चतुर्थो भेदः। आव०।

णेवाइय- न० *[नैपातिक]*

निपतत्यर्हदादिपदानामादिपर्यन्तेषु इति निपातः। निपाते भवं नैपातिकम्। यदि वा निपात एव नैपातिकम्। निपातसंज्ञके पदे, विशे०। आव०म०।

णेवाल- पुं० *[नेपाल]*

देशभेदे, नेपालनामा ऋषभदेवपुत्र आसीत्तद्राज्यभूतो देशोऽपि नेपालः। आव०४ अ०। कल्प०। आव०चू

णेसज्ज- पुं० *[नैषद्य]*

समपुततयोपविष्टे, । निषद्यावति, आव०चू।

णेसज्जिय- पुं० *[नैषद्यिक]*

निषद्यया चरके, निषद्योपविष्टे, बृह०।
नैषद्यिकः-समपदपुतादिनिषद्योपवेशी। ठा०।

णेसत्थिया- स्त्री० *[नैसृष्टिकी]*

निसर्जनं निसृष्टं, क्षेपणमित्यर्थः। तत्र भवा नैसृष्टिकी, निसृजतः कर्मबन्धरूपायां निसर्गरूपायां वा क्रियायाम्, ठा०२ ठा०१ उ०।
'णेसत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता। तं जहा–जीवणेसत्थिया चेव, अजीवणेसत्थिया चेव।' । ठा०२ ठा०१ उ०। आव०चू०।

णेसप्प- पुं० *[नैसर्प]*

निधानभेदे, तदभेदविवक्षया देवभेदे च। ठा०।
'णेसप्पम्मि निवेसा, गामागरनगरपट्टणाणं च। दोण-मुहमडंबाणं, खंधाराणं गिहाणं च। ठा० ९ ठा०।

णेसाय- पुं० *[निषाद]*

निषीदन्ति स्वरा यस्मात्स निषादः। स्वरविशेषे, 'निषीदन्ति स्वरा यस्मान्निषादस्तेन हेतुना। सर्वांश्चातिभवत्येषः यदादित्योऽस्य दैवतम्। ठा० ७ ठा०।

णेह- पुं० *[स्नेह]*

मोहोदयजे प्रीतिविशेषे पुत्राऽऽदिष्वत्यन्तानुरागे,आतु०। जीत०।

णेहंझाण- न० *[स्नेहध्यान]*

स्नेहो मोहोदयजः प्रीतिविशेषः पुत्राऽऽदिष्वत्यन्तानुरागः। मरुदेवीसुनन्दाहरन्नकमात्राऽऽदीनामिव दुर्ध्याने, आतु०।

णेहुत्तुप्पियगत्त- त्रि० *[स्नेहोत्त्पिपितगात्र]*

स्नेहस्नेहितशरीरे, विपा० १ श्रु०२ अ०।

णो- अव्य० *[नो]*
अवधारणे, सूय०१ श्रु०७ अ०।
निषेधे, विशे०। सूय०। आव०म०। भग०।
सर्वनिषेधे, नं०।
देशनिषेधे च। दश ०१ अ०। आचा०। विशे०। उत्त०। वव०।

णोअक्खरसंबद्ध- पुं० *[नोअक्षरसंबद्ध]*
अक्षरसम्बद्धादितरो नोअक्षरसम्बद्धः। अक्षरसंबद्धभिन्ने, ठा०२ ठा०३ उ०।

णोअमण- न० *[नोअमनस्]*
अविवक्षितसम्बन्धिविशेषे मनोमात्रे, ठा०३ ठा०३ उ०।

णोअवयण- न० *[नोअवचन]*
वचनमात्रे, ठा०३ ठा०३ उ०।

णोआउज्जसद्द- न० *[नोअवचन]*
वचनमात्रे, ठा०३ ठा०३ उ०।

णोआउज्जसद्द- पुं० *[नोआतोद्यशब्द]*
आतोद्यादितरो नोआतोद्यशब्दः। ठा०२ ठा०३ उ०।
'णोआउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–भूसणसद्दे चेव, नो भूसणसद्दे चेव। ठा०२ ठा०३ उ०।

णोआगम- पुं० *[नोआगम]*
आगमस्याभावे, आगमस्यैकदेशे, आग मेन सह मिश्रणे च। नोशब्दस्य त्रिष्वप्यर्थेषु वर्तमानत्वात्। आव०म०१ अ० । पदार्थाऽपरिज्ञाने, नं०। ध०। अणुओ०।

णोआगास- न० *[नोआकाश]*
आकाशादन्यस्मिन् धर्मास्तिकायाऽऽदौ, ठा० २ ठा० १ उ०।

णोइंदिय- न० *[नोइन्द्रिय]*
मनसि, सादृश्यार्थत्वान्नोशब्दस्यार्थपरिच्छेदकत्वे नेन्द्रियाणां सदृशमिति तत्सहचरमिति। ठा० ६ ठा०। भग०।

णोइंदियत्थ- पुं० *[नोइन्द्रियार्थ]*
नोइन्द्रियस्य विषये, ठा०।
नोशब्दस्यार्थपरिच्छेदकत्वेनेन्द्रियाणां सदृशमिति तत्सहचरमिति वा नोइन्द्रियं मनः, तस्यार्थो विषयो जीवाऽऽदिर्नोइन्द्रियार्थ इति। ठा०६ ठा०।

णोउस्सासग- पुं० *[नोउच्छ्वासक]*
उच्छ्वासपर्य्याप्तिविकले, 'णेरइया दुविहा पण्णत्ता। तं जहा–उस्सासगा चेव, णो उस्सासगा चेव जाव० वेमाणिया।' ठा०२ ठा०२ उ०।

णोएगिंदिय- पुं० *[नोएकेन्द्रिय]*
त्रसाऽऽदिषु, आव०४ अ०।

णोकम्म- न० *[नोकर्मन्]*
मनोवचनकायाऽऽत्मकेषु कर्मसु, आव०चू०

णोकसाय- पुं० *[नोकषाय]*
कषायैः सहचरा नोकषायाः। हास्याऽऽदिषु, ते च नव, हास्याऽऽदयः षट्, त्रयो वेदाः। अत्र नोशब्दः साहचर्यवाची। एषां हि केवलानां न प्राधान्यमस्ति, किं तु कषायैरनन्तानुबन्ध्यादिभिः, सहोदयं यान्ति, तद्विपाकसदृशमेव विपाकं दर्शयन्ति, बुधग्रहवदन्यसंसर्गमनुवर्तन्ते इति भावः। कषायोद्दीपनाद् वा नोकषायाः। आव०चू०

णोकसायमोहणिज्ज- न० *[नोकषायमोहनीय]*
नोकषायरूपे मोहनी यकर्मणि, तच्च द्विविधम्–हास्याऽऽदिषट्कं, वेदत्रिकं च। आव०चू०

णोकसायवेयणिज्ज- न० *[नोकषायवेदनीय]*
नोकषायतया वेद्यते यत्कर्म तन्नोकषायवेदनीयम्। वेदनीयकर्मभेदे, ठा०।

णोकेवलणाण- न० *[नोकेवलज्ञान]*
'णोकेवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तं जहा–ओहिणाणे चेव, मणपज्जवणाणे चेव।' ठा० २ ठा० १ उ०।

णोकार- पुं० *[नोकार]*
निषेधार्थके नोइत्यक्षरे, विशे०।

णोगुण- पुं० *[नोगुण]*
गुणेभ्यो निष्पन्नं यत्र नो भवति तन्नोगुणम्। अयथार्थे, अणुओ०।

णोजीव- पुं० *[नोजीव]*
जीवाजीवव्यतिरिक्ते, । आव०चू० १ अ०। आव० म०। विशे०। । ठा० ।

णोणाणायार- पुं० *[नोज्ञानाचार]*
ज्ञानाचाराभावे, 'णोणाणायारे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–दंसणायारे चेव, णोदंसणायारे चेव।' ठा० २ ठा० ३ उ०।

णोतस- पुं० *[नोत्रस]*
त्रसा न भवन्तीति नोत्रसाः। आहाराऽऽदिषु, आव० ४ अ०।

णोतहा- अव्य० *[नोतया]*
अन्यथाऽपीतिशब्दस्यार्थे, ठा०४ ठा०२ उ०।

णोदंसणायार- पुं० *[नोदर्शनाचार]*
नोदर्शनाऽऽचारश्चारित्राऽऽदिः। 'दुविहे णोदंसणायारे पण्णत्ते। तं जहा–चरित्तायारे चेव, नोचरित्तायारे चेव।' ठा०२ ठा०३ उ०।

णोदिय- त्रि० *[नोदित]*
प्रेरिते, गमनाभिमुखीकृते, नाया०१ श्रु०९अ०

णोपरमाणुपोग्गल- पुं० *[नोपरमाणुपुद्गल]*
स्कन्धेषु, ठा०२ ठा०३ उ०।

णोबद्धपासपुट्ठ- पुं० *[नोबद्धपार्श्वस्पृष्ट]*
नोबद्धाः किं तु पार्श्वस्पृष्टा इत्येकपदनिषेधे श्रोत्रेन्द्रियज्ञानगोचराः। एकपदनिषेधे श्रोत्रेन्द्रियग्रहगोचरेषु, ठा०२ ठा०३ उ०।

णोभासासद्द- पुं० *[नोभाषाशब्द]*
अव्यक्तशब्दे, भाषाशब्दादितरो नोभाषाशब्दः। ठा०२ठा० ३ उ०

णोभिउरधम्म- पुं० *[नोभिदुरधर्म]*
स्वत एव नो भिद्यत इति नोभिदुरधर्मम्। सुद्दशधर्मे, ठा० २ ठा० ३ उ०।

णोभूसणसद्द- पुं० *[नोभूषणशब्द]*
भूषणशब्दव्यतिरिक्ते, भूषणं नूपुराऽऽदि। 'नोभूसणसद्दे दुविहे पन्नत्ते। तं–तालसद्दे चेव, लत्तियासद्दे चेव। ठा०२ ठा० ३ उ०।

णोमाउयापय- न० *[नोमातृकापद]*
मातृकापदव्यतिरिक्ते अपराधपदे, 'नोमाउयं पि दुविहं, पंच पइन्नगं च बोधव्वं।' दश०२ अ०।

णोमालिया- स्त्री० *[नवमालिका]*
'नेवार' इतिख्याते सुगन्धपुष्पप्रधाने वृक्षभेदे, जंबू०१ वक्ष०। नाया०। जीवा०।

णोल्लिय- त्रि० *[नोदित]*
प्रेरिते, पण्हा०३ अ०।

णोसुमण- त्रि० *[नोसुमनस्]*
अपहतमनः सङ्कल्पे, आव०३ अ०।

ण्हं- अव्य० *[ण्हं]*
पादपूरणे, बुह०१ उ०। आव०म०।
वाक्यालङ्कारे, कल्प०९ क्षण०।

ण्हवण- न० *[स्नपन]*
जलक्षालने, निसि०१ उ०।
सौभाग्यपुत्राऽऽद्यर्थं वध्वादेर्मज्जने, पण्हा० २ अ०।

ण्हाअ- त्रि० *[स्नात]*
सामान्यतः कृतस्नाने, दशा०१० अ०।
'ण्हाया कयबलिकम्मा।' नाया०१ श्रु०२ अ०।

ण्हाण- न० *[स्नान]*
देशतः सर्वतो वा शरीरस्य प्रक्षालने, वव०१० उ०। उत्त०।

ण्हाणमल्लिया- स्त्री० *[स्नानमल्लिका]*
स्नानयोग्ये मल्लिकाविशेषे, जीवा०३ प्रति०। जंबू०।

ण्हारु- न० *[स्नायु]*
अस्थिबन्धनशिरायाम्, तं०। आचा०।

ण्हाविअपसेवय- पुं० *[नापितप्रसेवक]*
नखशोधकक्षुराऽऽदिभाजने, उत्त०२ अ०।

ण्हुसा- स्त्री० *[स्नुषा]*
पुत्रवध्वाम्, आव०म० १ अ०२ ।

ण-कारादि शब्द-परिभाषाः समाप्ताः

त-कारादि शब्द-परिभाषा

त- पुं० *[त]*
तच्छब्दनिर्देशे, यथा–'से गामंसि वा' इत्यादि।निसि० २० उ०।

तअण्णवत्थुअ- पुं० *[तदन्यवस्तुक]*
'तयण्णवत्थुअ' शब्दार्थे, ठा० ४ ठा०३ उ०।

तइय- त्रि० *[तृतीय]*
त्रयाणां पूरणे, येन त्रित्वसंख्या पूर्यते तस्मिन् पदार्थे, आव०म०।

तइयंग- न० *[तृतीयाङ्ग]*
स्थानाङ्गे, प्रति०।

तइया- स्त्री० *[तृतीया]*
स्वनामख्यातायां विभक्तौ, 'विवक्षितक्रियासाधकतमं करणं, तस्मिंस्तृतीया।' अणुओ०।

तउ- न० *[त्रपु]*
अग्निं दृष्टा त्रपते लज्जते इव लज्जया द्रवीभवतीति वा। सोसके वङ्गे, । पण्हा० ५ अ०। सम०। उत्त०
तप्तत्रपु पाय्यन्ते, पाय्यमाना आर्ततरं रारटन्ति। सूय० १ श्रु० ५ अ० २ उ०।
'त्रपुक' शब्दोऽप्यत्र। पण्हा०५ अ०। सूय० पन्न०। उव०।

तउआगर- पुं० *[त्रपुकाकर]*
यत्र त्रपुकं ध्मायते। त्रपुकध्मापनस्थाने ठा० ८ ठा०। निसि०।

तउस- न० *[त्रपुष]*
वल्लीविशेषे, आचा० १ श्रु० १ अ०५ उ०। वव०। पन्न०।
पत्राणि एतेषामेकजीवाधिष्ठानानि, पुष्पाण्यनेकजीवाऽऽत्मकानि । पन्न० १ पद०।

तउसमिंजिया- स्त्री० *[त्रपुषमिञ्जिका]*
त्रीन्द्रियजीवविशेषे, जीवा०१ प्रति०।

तए- अव्य० *[ततस्]*
तस्मादित्यर्थे, उत्त०१ अ०।

तं- अव्य० *[तत्]*
तस्मादित्यर्थे, भग०१५ श०। विपा० ।
तदितिनिर्देशे, आव०४ अ०।
प्रक्रान्तपरामर्शिनि, । आचा०१ श्रु० २ अ०२ उ०। अणुओ०।
'तं जहा–सासमसाओ तिविहा पण्णत्ता। तं जहा–जाणिया, अजाणिया, दुव्विअढा जाणिया।नं०। आचा०। अणुओ०। ठा०
तद्यथेति वाक्योपन्यासार्थे, आचा०१श्रु०५ अ०५ । आव०। सूय०

तंजहा– अव्य० *[तद्यथा]*
वक्ष्यमाणभेदकथनप्रकाशनार्थः। पन्न०।
तद्यथा-प्रतिज्ञातार्थोदाहरणम्। आचा०।
तद्यथा-उपप्रदर्शनार्थः। आचा०।

तंडव- न० *[ताण्डव]*
नृत्ये, जीवा०३ प्रति०४ उ०।
'अप्पेगइया तंडवेंति'। आव०म०१ अ०१ ।
ताण्डवरूपं नृत्यं कुर्वति, रा०।

तंडुल- पुं० *[तण्डुल]*
धान्याऽऽदिसारे, निस्तुषे धान्याऽऽदौ, तण्डुलीयशाके च। विडङ्गे, आव०म०।
वृक्षविशेषे,। सम०।
तण्डुलशब्देन औषध्य उच्यन्ते। आव०१ अ०।

तंत-१ न० *[तन्त्र]*
शास्त्रे, । आव०चू०। आव०म०।
विद्यायाम्, ठा०८ ठा०।

तंत-२ न० *[तन्त्र]*
षष्ठायां स्त्रीकलायाम्, कल्प०७ क्षण०।

तंत-३ त्रि० *[तान्त]*
कायेन खेदवति, नाया०१ श्रु०८ अ०।
'संता तंता परितंता।' खेदवाचका एते। निर० १ श्रु०१ वर्ग०१

तंतय- त्रि० *[तन्त्रज]*
तन्त्रं वेमविलेख्यन्यञ्छनिकाऽऽदि, तस्माज्जातं तन्त्रजम्। वस्त्रे, कम्बले च। उत्त० २ अ०।

तंतव- पुं० *[तन्तव]*
चतुरिन्द्रियजीवविशेषे, पन्न०१ पद।

तंतिय- त्रि० *[तान्त्रिक]*
तन्त्रीवादनं शिल्पमस्येति तान्त्रिकः। तन्त्रीवादनशिल्पोपजीविनि, अणुओ०।

तंती- स्त्री० *[तन्त्री]*
वीणायाम्, जीवा०३ प्रति०४ उ०। आव०म०। कल्प०। आचा०। उव०। रा०। जंबू०। सूर०।
'तंती' तान्यो भण्यन्ते। अणुओ०।
वीणाविशेषे, पण्हा०५ अ०।
तन्त्री वीणा, तलतालो हस्ततालः, तालः कंसिका, त्रुटितानि वादित्राणि। जीवा०३ प्रति०४ उ०।
तन्त्री वीणा, तला हस्ततालाः, कंसिकास्तलताला वा हस्तताला, गीतवादिते प्रतीते, तेषां यो रवः स तथा । भग०९ श०३३ उ०।

तंतीसम- त्रि० *[तन्त्रीसम]*
वीणाऽऽदितन्त्रीशब्देन तुल्ये, ठा०७ठा०
नट्टभेओ। निसि०।

तंतु- पुं० *[तन्तु]*
तन्यते भवोऽनेनेति तन्तुः। भवतृष्णायाम्, उत्त० २३ अ०। तुरीवेमाऽऽदौ, भग०६ श०३ उ०।

तंतुगय- त्रि० *[तन्तुगत]*
तन्तोस्तुरीवेमाऽऽदेरपनीतमात्रे, भग०६ श० ३ उ०।

तंतुग्गय- त्रि० *[तन्त्रोद्गत]*
तुरीवेमाऽऽदेरुत्तीर्णे, भग०८ श०३ उ०।

तंतुय- त्रि० *[तन्तुज]*
तन्तुभ्यो जातं तन्तुजम्, वस्त्रे, कम्बले च। उत्त०२ अ०।

तंतुवाय- पुं० *[तन्तुवाय]*
कुविन्दे, । आव०म०। कल्प० पन्न०। अणुओ०।

तंतुवायसाला- स्त्री० *[तन्तुवायशाला]*
कुविन्दशालायाम्, भग०१५ श०।

तंदुगुज्जाण- न० *[तन्दुकोद्यान]*
श्रावस्त्या नगर्या बहिरुद्याने, यत्र कोष्ठकं चैत्यम्। आव०चू०१ ।

तंदुल- पुं० *[तन्दुल]*
धान्ये, तन्दुलवाहान् भुनक्ति। तं०।
तन्दुला-निस्त्वचितकाणाः। जंबू० ।
तन्दुलं-औषधिः। आव०।

तंदुलच्छिण्णग- त्रि० *[तन्दुलच्छिन्नक]*
तन्दुलप्रमाणखण्डैः खण्डिते, उव०।

तंदुलपिट्ठ- न० *[तन्दुलपिष्ट]*
अमाशस्त्रोपहततन्दुलकुक्कुरो, निसि० ४ उ०।

तंदुलमच्छ- पुं० *[तन्दुलमत्स्य]*
मत्स्यभेदे, जीवा०१ प्रति०। पन्न०।

तंदुलवेयालिय- न० *[तन्दुलवैचारिक]*
तन्दुलानां वर्षशताऽऽयुष्कपुरुषप्रतिदिनभोग्यानां सङ्ख्याविचारे-णोपलक्षितं तन्दुलवैचारिकम्।
वीरहस्तदीक्षितमुनिविरचिते नन्दीसूत्रोक्तशास्त्रविशेषे, तं०।

तंदुलेज्जग- पुं० *[तण्डुलीयक]*
हरितवनस्पतिभेदे, पन्न०१ पद। आचा०।

तंब- न० *[ताम्र]*
धातुविशेषे, पन्न०१ पद। उत्त०। सूय०।
'तंब-पायाणि वा, तउपायाणि वा, सुवण्णपायाणि वा।' गच्छा० २ अधि०।
अरुणे, । उव०।
शुल्वे, पण्हा०४ अ०।

तंबणह- त्रि० *[ताम्रनख]*
ताम्रा इव रक्ता नखाः कररुहा यासां तास्ताम्रनखाः। ताम्रसदृशलोहितनखवति, जीवा०३ प्रति०४ उ०

तंबणिद्धणह- त्रि० *[ताम्रस्निग्धनख]*
ताम्रा अरुणाः स्निग्धाः कान्तिमन्तो नखा येषां ते तथा। कान्तिमदरुणनखे, पण्हा० ४ अ०।

तंबलित्त- पुं० *[ताम्रलिप्त]*
देशभेदे, क्वचित्सिन्धुताम्रलिप्तकोङ्कणाऽऽदिके देशेऽधिका दंश-मशका भवन्ति। सूय० १श्रु० २अ० १उ०।

तंबागर- पुं० *[ताम्राकर]*
ताम्रध्मापनस्थाने, यत्र ताम्रं ध्मायते। स्था० ८ ठा०।
यत्र ताम्रमुत्पद्यते। ताम्रोत्पत्तिस्थाने, निसि०५ उ०

तंबाय- पुं० *[ताम्राक]*
स्वनामख्याते ग्रामे, यत्र भद्रिकापुर्या आगते वीरभगवति नन्दिषेणः पार्श्वापत्यीयो भल्लाहतः स्वर्जगाम। आव०चू०।

तंबोल- न० *[ताम्बूल]*
नागवल्लीदले, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०।
पत्रपूगखदिरवटिकाकत्थकाऽऽदिस्वादिमे, अणुओ०।

तंबोली- स्त्री० *[ताम्बूली]*
नागवल्ल्याम्, जीवा०३ प्रति०३ उ०।
लोमसिका त्रपुसिका ताम्बूलिका इत्येवमादिका वल्ल्यः। वव०९ उ०।

तंबोलीमंडवग- पुं० *[ताम्बूलीमण्डपक]*
ताम्बूली नागवल्ली तन्मया मण्डपकाः। नागवल्लीमयमण्डपे, रा०। जीवा०।

तंस- त्रि० *[त्र्यस्र]*
तिस्रोऽस्रयो यस्मिन् तत् त्र्यस्रम्। ठा०१ ठा०।
शृङ्गाटकफलवत् त्रिकोणे, अणुओ०।
त्र्यस्रःसंस्थानविशेषः। पन्न०।

तकार- पुं० *[तकार]*
'त' इत्येवंरूपे वर्णे, आव०४ अ०।

तक्क- न० *[तक्र]*
दध्यवयवरूपे, बुह०१ उ०।
'तक्ककुंडेणाहरणं।' निसि०१ उ०।

तक्क- त्रि० *[तत्क]*
ईदृशे, अणुओ०।

तक्क- पुं० *[तर्क]*
तर्कणं तर्कः। ठा०१ ठा०।
संशयादूर्ध्वं भवितव्यताप्रत्यये, सदर्थपर्यालोचनाऽऽत्मके भवितव्यमत्र स्थाणुना पुरुषेण वेत्येवंरूपे ज्ञानविशेषे,सूय०१श्रु०१२ अ०
संभवत्पदार्थास्तित्वाध्यवसायरूपे ऊहे, आचा०१श्रु०५अ०६ उ०
विमर्शे, ठा०९ ठा०।
विचारे, दश०१ अ०।
पर्यालोचने, आचा०१ श्रु०८ अ०२ उ०।

तक्कणवित्ति- न० *[तर्कणवृत्ति]*
नटनग्नाऽऽचार्याऽऽदीनां कृपणकुले, ठा०८ ठा०।

तक्कम्मसेवि- पुं० *[तत्कर्मसेविन्]*
मैथुनमासेव्यवीर्यनिसर्गे सति यः श्वान इव वेदोत्कटतया जिह्वालेहनाऽऽदिनिन्द्यकर्मणा सुखहमात्मनो मन्यते स तथा। गलितश्वसदृशस्वलिङ्ग लेड्न कर्तरि।बुह०।पंच०भा०।पंच० चू०

तक्कर- पुं० *[तस्कर]*
तदेव चौर्यं कुर्वन्तीत्येवं शीलाः। । निर० । उव०।
परद्रव्यहारे, पण्हा०३ अ०। आव०। नाया० रा०। निसि०। आव०चू०।

तक्करघराणि– न० *[तस्करगृहाणि]*
तस्करनिवासान् श्रृङ्गाटकादीनि प्राग् व्याख्यातानिः। उत्त० ।

तक्करट्ठाण- न० *[तस्करस्थान]*
शून्यदेवकुलाऽगाराऽऽदौ, नाया०१ श्रु० २ अ०।

तक्करत्तण- न० *[तस्करत्व]*
नवमे गौणेऽदत्ताऽऽदाने, पण्हा०३ अ०।
अधर्मद्वारस्य नवम नाम। पण्हा० ४३।

तक्करपओग- पुं० *[तस्करप्रयोग]*
तस्कराश्चौराः, तेषां प्रयोगः संहरणक्रियायाप्रेरणमभ्यनुज्ञातं तस्करप्रयोगः, तान् प्रयुङ्क्तेहरत यूयमिति। स्थूलकादत्तादनि-विरते द्वितीयेऽतिचारे, आव० ६ अ०।
चौराणां हरणक्रिया प्रेरणम्। आव० ।

तक्कलि- स्त्री० *[तर्कारी]*
वनस्पतिभेदे, पन्न०१ पद। आचा०। भग०

तक्कली- स्त्री० *[तर्कारी]*
'तक्कलि' शब्दार्थे, पन्न०१ पद।

तक्कलीमत्थय- न० *[तर्कारीमस्तक]*
तर्कारीमध्यवर्तिनि गर्भे, आचा० २ श्रु०१ चू०१ अ०८ उ०।

तक्कलीसीसय- न० *[तर्कारीशीर्षक]*
तर्कारीस्तवके, आचा० २ श्रु०१ चू०१ अ०८ उ०।

तक्का- स्त्री० *[तर्का]*
स्वकीयविकल्पनायाम्, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०।
वितर्के, स्वमतिपर्यालोचने, सूय०१ श्रु०१३ अ०।
अपायात्पूर्वा ईहाया उत्तराः प्रायः शिरः कण्डूयनाऽऽदयः पुरुष-धर्मा इह घटन्त इति सम्प्रत्ययरूपाः, । ठा०१ ठा०।

तक्खण- न० *[तत्क्षण]*
तस्मिन्नेव क्षणे, तत्क्षणमेव प्रव्रजामीतिवचनश्रवणक्षण एव अवरुग्णं ग्लानं दुर्बलं च शरीरं यस्याः सा तथा। लावण्येन शून्या लावण्यशून्या, निश्छाया निष्प्रभा, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः। भग० ९ श० ३३ उ०।

तक्खमाण- त्रि० *[तक्षत्]*
तनूकुर्वति, अणुओ०।

तक्खसिला- स्त्री० *[तक्षशिला]*
बहलीदेशे बाहुबलेर्नगर्याम्, आव०म० १अ०। कल्प०।आचा०। आव०चू०।

तगर- पुं० *[तगर]*
गन्धद्रव्यविशेषे, पण्हा०५ अ०। सूय०। नाया०। रा०। जंबू०। जीवा०।
'अगरतगरचोआकुंकुमेण।'अणुओ०

तगार- पुं० *[तकार]*
तच्छब्दघटकस्यानुकरणं 'त' इति। ततः कार-प्रत्ययः। निर्देशे, निसि० १ उ०।

तच्च- न० *[तथ्य]*
अवितथे, सत्ये, तत्त्वरूपे, उत्त०२८ अ०। जीवा० आचा०।

तच्चकम्मसंपउत्त- त्रि० *[तथ्यकर्मसंप्रयुक्त]*
तथ्यानि सत्यफलान्यव्यभिचारितया कर्माणि क्रियास्तत्संपदा तत्समृद्ध्या यः प्रयुक्तः स तथा। तस्मिन् लब्धफले, उत्त०३ अ०

तच्चावाइ- पुं० *[तथ्यवादिन्]*
कौशाम्बीराजस्य शतानीकस्य धर्मपाठके, आव०। आव०चू०। आव०म०।

तच्चावाय- पुं० *[तत्त्ववाद]*
तत्त्वानि वस्तूनामैदम्पर्याणि तेषां वादस्तत्त्ववादः। दृष्टिवादे, ठा० १० ठा०।

तच्चावाय- पुं० *[तथ्यवाद]*
तथ्यो वादस्तथ्यवादः। दृष्टिवादे, ठा० १० ठा०।

तच्चित्त- त्रि० *[तच्चित्त]*
तस्मिन् भगवद्वचने चित्तं भावो मनो येषां ते तच्चित्ताः, सामान्योपयोगापेक्षया वा तच्चित्ताः। उव०।
तास्मन्नेव आवश्यके चित्तं सामान्योपयोगरूपं यस्येति तस्मिन् विवक्षिते भावमनोयुक्ते, सामान्योपयुक्ते च। गच्छा०२ अधि०। अणुओ०। विपा० ।

तच्छ- धा० *[तक्ष]*
तक्षयन्ति सर्वशो देहावयवापनयनेन तनून् कारयन्ति। सूय० १ श्रु० ५ अ०१ उ०।

तच्छण- न० *[तक्षण]*
क्षुराऽऽदिना त्वचस्तनूकरणे, विपा० १ श्रु०१ अ०। सूय०।
वास्या काष्ठस्येव देहकर्तनरूपे शारीरदण्डे, प्रश्न०३अ०। नाया०।

तच्छिय- अव्य० *[तक्षयित्वा]*
वास्यादिना तक्षणं कृत्वेत्यर्थे, सूय० १ श्रु०४ अ०१ उ०।

तज्जण- न० *[तर्जन]*
शिरोऽङ्गुल्यादिस्फोरणतो ज्ञास्यसि रे जाल्म ! इत्यादिभणने, उव०। तं०। पण्हा०। नाया०। आचा०।

तज्जमाण- त्रि० *[तर्जत्]*
कृतावष्टम्भान् तर्जयन् ज्ञास्यथ रे यन्मम इदं वचनं दत्स्वेत्येवं भीषयति, विपा० १ श्रु० १ अ

तज्जाइय- त्रि० *[तज्जातिक]*
तस्माज्जातिरुत्पत्तिर्यस्य सः। तदुत्थे, सूय० १ श्रु०४ अ०२ उ०।

तज्जाईय- त्रि० *[तज्जातीय]*
अभिन्नजातीये, आव०४ अ०। आचा०

तज्जाय- त्रि० *[तज्जात]*
तस्माद् विवक्षितात् सकाशाज्जातं तज्जातम् तदुत्पन्ने, दशा०३ अ०। ठा०।

तज्जायसंसट्ठचरग- त्रि० *[तज्जातसंसृष्टचरक]*
तज्जातेन देयद्रव्याविरोधिना यत्संसृष्टं हस्ताऽऽदि तेन दीयमानं यश्चरति तस्मिन्, ठा० ३ ठा०१ उ०।

तज्जाया- स्त्री० *[तज्जाता]*
तुल्यजातीयक्रियमाणायां परिष्ठापनायाम्, आव० ४ अ०।

तज्जिय- न० *[तर्जित]*
एकोनविंशतितमे वन्दनदोषे, बुह०।

तज्जीवतच्छरीर- न० *[तज्जीवतच्छरीर]*
स चाऽसौ जीवश्च तज्जीवः कायाऽऽकारो भूतपरिणामस्तदेव शरीरम्। जीवशरीरयोरैक्ये, सूय० १ श्रु०१ अ०१ उ०।

तज्जीवतच्छरीरवाइ- त्रि० *[तज्जीवतच्छरीरवादिन्]*
नास्तिकविशेषे, सूय०।

तज्जेमाण- त्रि० *[तर्जयत्]*
ज्ञास्यथ रे ! यन्ममेदं वचनं दत्स्वेत्येवं भीषयति,विपा०१श्रु०१अ०

तट्टिया- स्त्री० *[तट्टिका]*
बोट्टिकानां धर्मोपकरणभेदे, आचा० १ श्रु० २ अ०५ उ०।

तट्ठ- त्रि० *[तत्स्थ]*
तस्मिन् तिष्ठतीति तत्स्थः। तस्मिन् स्थिते,आचा०१ श्रु०१अ०३उ

तट्ठ- न० *[तष्ट]*
घट्टिते, सूय० १ श्रु० ७ अ०।

तट्ठा- पुं० *[त्वष्ट्]*
चित्रानक्षत्राधिष्ठातरि देवे, अणुओ०।
'दो तट्ठा।' ठा० २ ठा० ३ उ०। जंबू०।

तड- त्रि० *[तट]*
कूवे, आचा० १ श्रु०२ अ०३ उ०। निसि०।
समीपवर्तिनोऽत्युन्नतप्रदेशे, रा०।

तडउमा- स्त्री० *[तडउडा]*
आउल्याम्, जंबू० १ वक्ष०।

तडउमाकुसुम- न० *[तडउडाकुसुम]*
आउलीपुष्पे, जीवा० ३ प्रति० ४ उ०। आव०म०।

तडतडण- न० *[स्फुट]*
स्फुटने, 'तडवडस्स भज्जंति भज्जणे कलंबुवालगा पट्टे।' स्फुटतः। सूय० १ श्रु०५ अ०१ उ०।

तडतडेंत– त्रि० *[तटतटायमान]*
तथाविध ध्वनिं विदधानाः। नाया० १५९।

तडतमंत- त्रि० *[तडतडत्]*
तडतडेत्येवंध्वनिं विदधाने, नाया० १ श्रु० ९ अ०।

तडागमह- पुं० *[तडागमख]*
तडागयज्ञे, 'अगडमहेसु वा तडागमहेसु वा दहमहेसु वा।' आचा० २ श्रु०१ चू०१ अ०२ उ०।
तडाकसत्क उत्सवः। जीवा० ।

तडितडिय- स्त्री० *[तडित्तडित्]*
विस्तारितविद्युति, उव०।

तडिय- स्त्री० *[तडित्]*
ताडयत्यभ्रम्। नाया०१ श्रु०१६ अ०।

तडी- स्त्री० *[तटी]*
नद्यादीनां तटेषु, निसि० १ उ०।
विच्छिन्नटङ्कायाम्, 'आउत्ते रीयाती, तडिसकमउवहिसंथारे।' निसि० १ उ०।

तण- न० *[तृण]*
तरन्तीति तृणाति औणादिको नक्, ह्रस्वत्वं च। उत्त०२ अ०।

तणग- न० *[तृणक]*
तृणविशेषे, सूय०२ श्रु०२ अ०।

तणग्ग- न० *[तृणाग्र]*
तृणस्योपरितने पूलिते भागे, निसि०१ उ०।

तणघर- न० *[तृणगृह]*
दर्भाऽऽदितृणमये, गृहे, वव०४ उ०।

तणच्छाह- स्त्री० *[तृणच्छाया]*
संकुच्छायायाम्, अणुओ०।

तणट्ठाण- न० *[तृणस्थान]*
दर्भाऽऽदितृणशालायाम्,यत्र दर्भाऽऽदीनि स्थाप्यन्ते।निसि०१ उ

तणफास- पुं० *[तृणस्पर्श]*
तृणानां कुशाऽऽदीनां स्पर्शः। आचा०१ श्रु०९ अ०२ उ०।
सप्तदशतमे परीषहे, पण्हा० ५ अ० । आचा०। उत्त०।

तणफासपरीसह- पुं० *[तृणस्पर्शपरीषह]*
तरन्तीति तृणाति वा । तेषां स्पर्शस्तृणस्पर्शः, स एव परीषहः तृणस्पर्शपरीषहः। उत्त०२ अ०।
कादाचित्कतृणग्रहणे तत्संस्पर्शजन्यदुःखाधिसहने, भग०८ श०८ उ० ।तथा चोक्तम्–अहताल्पाणुचेलत्वे, कादाचित्कं तृणाऽऽदि षु तत्संस्पर्शोद्भवं दुःखं, सहेदिच्छेद् न तान्मृदून् ।आव०म०१ अ०

तणबेंटक न० *[तृणबेन्टक]*
त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा०।

तणभार- पुं० *[तृणभार]*
तृणभारके, भग०८ श०९ उ०।

तणय- पुं० *[तनय]*
तनोति कुलम्। पुत्रे, दुहितरि, वक्रकुल्यायाम्, लतायाम्, घृतकुमार्यां च। आव०म०।

तणवणस्सइ- पुं० *[तृणवनस्पति]*
बादरवनस्पतिभेदे, भग०७ श०६ उ०।

तणवणस्सइकाइय- पुं० *[तृणवनस्पतिकायिक]*
तृणवद्वनस्पतयस्तृणवनस्पतयः। ठा०१० ठा०।
बादरवनस्पतिकायिकभेदे, भग०७ श०६ उ०।

तणविंटय- पुं० *[तृणवृन्तक]*
त्रीन्द्रियजीवविशेषे, पन्न० १ पद०। जीवा०।

तणवेंटय- पुं० *[तृणवृन्तक]*
'तणविंटय' शब्दार्थे, पन्न०१ पद०। जीवा०।

तणसूअ- पुं०न० *[तृणशूक]*
तृणाग्रे, भग०८ श०६ उ०।

तणसोल्लिया- स्त्री० *[तृणसोल्लिका]*
मल्लिकायाम्, नाया०१ श्रु०१६ अ०। जंबू०।

तणहार- पुं० *[तृणाहार]*
त्रीन्द्रियजीवविशेषे, जीवा०१ प्रति०। उत्त०। पन्न०।

तणु- स्त्री० *[तनु]*
देहे, आव०४ अ०। तं०। आव०म०।
सूक्ष्मे। कल्प० २ क्षण०। पण्हा०। तं०। उव०। सम०।

तणुअ-१ त्रि० *[तनुक]*
तनुरेव तनुकः। कृशे, आव०५ अ०।
स्तोके, जीत०।
सुजर, भग० १५ श०।
लघुसुजरे, नाया०१ श्रु०१२ अ०।

तणुअ-२ त्रि० *[तनुज]*
तनुः शरीरं, तस्माज्जातस्तनुजः। उत्त०१४ अ०।
शरीरादुत्पन्ने, उत्त०१४ अ०।

तणुअंत- न० *[तन्वन्त्र]*
सूक्ष्मान्त्रे, तेन प्रस्रवणं मूत्रं परिणमति। तं०।

तणुई- स्त्री० *[तन्वी]*
ईषत्प्राग्भारायास्तृतीये नाम्नि, ठा० ८ ठा०।

तणुकायकिरिय- त्रि० *[तनुकायक्रिय]*
तन्वी उच्छासनिःश्वासाऽऽदिलक्षणाः कायक्रिया यस्य स तथा।
सूक्ष्मोच्छ्वासनिःश्वासाऽऽदिलक्षणव्यापारवति, आव० ४ अ०।

तणुग- न० *[तनुक]*
शरीरे, जंबू० ३ वक्ष०।
सूक्ष्मे, जंबू०२ वक्ष०।

तणुजोग- पुं० *[तनुयोग]*
कायिके योगे, न मनोवाग्द्रव्याणामुपादानं करोति स कायिको योगः। विशे०।

तणुणमिय- त्रि० *[तनुनमित]*
तनु कृशं नतं नम्रं तनुनतम्। ईषन्नम्रे, जंबू० २ वक्ष०।

तणुणिद्द- त्रि० *[तनुनिद्र]*
तन्वी स्तोका निद्रा यस्येति। अल्पनिद्रणशीले, बुह०१ उ०।

तणुतणुइ- स्त्री० *[तनुतन्वी]*
अतितनुत्वात्तनुतनुः। ईषत्प्राग्भारायाश्चतुर्थे नाम्नि, ठा० ८ ठा०।
तनुभ्योऽपि तन्वी मक्षिकापत्रतोऽपि पर्यन्तदेशेऽतितनुत्वात् तनुतन्वी, ईषत्प्राग्भारायाश्चतुर्थं नाम। पन्न०।

तणुवग्गा- स्त्री० *[तनुवर्गणा]*
तनूनामौदारिकाऽऽदिशरीराणां भेदाभेदपरिणामाभ्यां योग्यत्वाभिमुखास्तनुवर्गणाः। अथवा-पक्ष्यमाणमिश्रस्कन्धाचित्तस्कन्धद्वयस्य तनुदेहः शरीरं मूर्त्तिरिति यावत्, तद्योग्यत्वाभिमुखा वर्गणा तनुवर्गणा। द्रव्यवर्गणाभेदे, आव० म०१ अ० ।

तणुय-१ त्रि० *[तनुक]*
अग्रभागे, श्लक्ष्णे। । विशे०।
प्रतरे, नाया०१ श्रु०८ अ०।
तनुकः-दरिद्रः। भग० १०१।

तणुय-२ पुं० *[तनुज]*
तनुःशरीरं तस्माज्जातस्तनुजः। उत्त०१४ अ०।

तणुयर- त्रि० *[तनुतर]*
अतिशयेन तनुस्तनुतरः। अतिसूक्ष्मे, मक्षिकापत्रादपि तनुतरः। आव०म० १ अ० ।

तणुल- त्रि० *[तनुल]*
तनुं शरीरं सुखस्पर्शतया लाति अनुगृह्णातीति तनुलम्। तनु-सुखाऽऽदौ, जंबू० २ वक्ष०।

तणुवाय- पुं० *[तनुवात]*
तनुश्चासौ वातश्च तनुवातः। ठा०३ ठा०४ उ०।
घनवातस्याधः स्थायिनि विरलपरिणामोपेते बादरवायुकायिकभेदे, जीवा० १ प्रति०। पन्न०। पिंड०। ठा०।

तणुवायवलय- न० *[तनुवातवलय]*
तनुवातः स एव वलयमिव वलयं कटकम्। ठा० ३ ठा०४ उ०।
बादरवायुकायिकभेदे, पन्न० २ पद।

तणुसरीर- न० *[तनुशरीर]*
सूक्ष्मशरीरे, पण्हा०१ अ०।

तण्ण-१ पुं० *[तर्ण]*
वत्से, जीवा०१ प्रति०।

तण्ण-२ पुं० *[तार्ण्य]*
तृणसंबन्धिनि, किञ्चिच्छस्त्रं स्वकाय एव अग्निकाय एव अग्निकायस्य। तद्यथा–तार्णोऽग्निः पार्णाग्निशस्त्रम्। आचा० १ श्रु० १ अ० ४ उ०।

तण्णिट्ठ- त्रि० *[तन्निष्ठ]*
तदाश्रिते, आचा०१ श्रु०१ चू०२ अ०१ उ०

तण्णिवेसण- त्रि० *[तन्निवेशन]*
सदा तन्निवासिनि, तन्निवेशनः सदा गुरुकुलनिवासी। आचा० १ श्रु० ५ अ० ६ उ०।

तण्हज्झाण- न० *[तृष्णाध्यान]*
तृष्णा तृषापरीषहोदयस्तया ध्यानम् तृषार्तस्य मार्गं गच्छतो जनकसाधुसहितस्य क्षुल्लकस्येव तृषा ध्याने, आतु०।

तण्हा- स्त्री० *[तृष्णा]*
तर्षस्तृष्णा। अभिलाषे, ठा०२ ठा०३ उ०। उत्त०। पण्हा०।
पुद्गलभोगपिपासायाम्, उव०। आव०। उत्त०। सूय०।
अनुचितवाञ्छायाम् पण्हा०३ अ०।
तृषापरीषहोदये, आतु०।
तृष्णा-प्राप्तार्थानामव्ययेच्छा। भग०।
धनाद्या-कांक्षापरिग्रहस्य सप्तविंशतितमं नाम। पण्हा०।

तण्हागेही- स्त्री० *[तृष्णागृद्धि]*
तृष्णा च प्राप्तद्रव्यस्याव्ययेच्छागृद्धिश्चाप्राप्तस्य प्राप्तिवाञ्छा, तद्धेतुकं चादत्ताऽऽदानमिति तृष्णागृद्धिरुच्यते। गौणे अदत्ताऽऽदाने, पण्हा०३ अ०।

तण्हातिअ- त्रि० *[तृष्णार्दित]*
पिपासिते, पण्हा०१ अ०।

तण्हाऽभिहय- त्रि० *[तृष्णाऽभिहत]*
तृषाऽभिहते, जीवा०३ प्रति०।

तत- न० *[तत]*
वीणाऽऽदिके, । ठा० ४ ठा० ४ उ०। पण्हा०। जंबू०। जीवा०। आचा०।
ततं वीणाऽऽदिकं ज्ञेयं, विततं पटहाऽऽदिकम्।भग०५ श०४ उ०
मृदङ्गपटहाऽऽदिके, जीवा०३ प्रति० ४ उ०। रा०। आव०म०।
वीणापटहाऽऽदिजनिते शब्दे, धनः शुषिरश्चेति व्यपदिश्यते। ‘तते दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-घणे चेव, सुसिरे चेव।’ ठा०२ ठा०३ उ०। आव०चू०।
वादित्रविशेषः। जंबू० ।
आउज्जविसेसो। निसि०।
विपञ्चीबद्धीसकादि तन्त्रीवाद्यम्। आचा०।

ततगइ-१ स्त्री० *[ततगति]*
ततस्य ग्रामनगराऽऽदिकं गन्तुं प्रवृत्तत्वेन तच्चाप्राप्तत्वेन तदन्तरालपथे वर्त्तमानतया प्रसारितक्रमतया च विस्तारं गतस्य, गतिस्ततगति। गतिप्रवादभूते, भग० ८ श० ७ उ०

ततगइ-२ स्त्री० *[तद्गति]*
ततो वा अवविभूतग्रामाऽऽदेर्नगराऽऽदौ गतिः। प्राकृतत्वेन 'ततगइ'। गतिप्रवादभेदे, भग०८ श०७ उ०।
'से किं तं ततगति ? ततगति जेणं जं गामं वा० जाव सन्निवेसं वा संपट्ठिए असंपत्ते अंतरापहे य वट्टइ। से तं ततगति।' पन्न० १६ पद०।

ततगति- स्त्री० *[ततगति]*
'ततगइ' शब्दार्थे, भग०८ श०७ उ०।

तत्त-१ न० *[तत्त्व]*
परमार्थे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०। उत्त०।
परमार्थजाते, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०।
यथाऽवस्थितलोकस्वभावे, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ०।
परस्परनिरपेक्षसामान्यविशेषाऽऽत्मके।आचा०१ श्रु०४ अ०२ उ०
जीवाजीवपुण्यपापाऽऽश्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षाऽऽत्मके, तथा धर्माधर्माऽऽकाशपुद्गलजीवकालाऽऽत्मके द्रव्ये, नित्यानित्यस्वभावे सामान्यविशेषाऽऽत्म-केऽनाद्यपर्यवसानचतुर्दशरज्ज्वात्मके लोके च। सूय० २श्रु० ५ अ०

तत्त-२ त्रि० *[तप्त]*
अनुष्ठिते, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ०।
उष्णे, ठा० ८ ठा०। तं०।
संतापे, उव०।
संतप्ते, 'तत्ततवणिज्जकणग-वण्णा।' उव०।
तापितम्। नाया०। विपा०।

तत्तजला- स्त्री० *[तप्तजला]*
जम्बूद्वीपे मेरोः पूर्वस्यां दिशि शीताया महानद्या दक्षिणभागास्थितायां स्वनामख्यातायामन्तर्नद्याम्, ठा०३ ठा०४ उ०।
'दो तत्तजलाओ।' ठा०२ ठा०३ उ०। जंबू०।

तत्तण्णु- त्रि० *[तत्त्वज्ञ]*
तत्त्वं सकलपर्यायोपेतसकलवस्तुस्वरूपं जानातीति तत्त्वज्ञः। वस्तुतत्त्ववेदिनि, सर्वज्ञे, आव० १ अ०।

तत्ततव- त्रि० *[तप्ततपस्]*
तापिततपस्के, आर्यसुधर्माणमुपक्रम्य 'उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे।' तप्तं तापितं तपो येन स तप्त-तपाः। तेन तत्तपस्तप्तं येन कर्माणि सन्ताप्यन्ते, तेन न च तपसा स्वात्मा तपोरूपः संतापितो, यतोऽन्यस्यास्पृश्यमिव जातम्। ओह०। निर० । भग०। जंबू०। रा०। सूर०। नाया०।

तत्ततवणिज्ज-न० *[तप्ततपनीय]*
तप्तसुवर्णे, 'तत्ततवणिज्जसंकासो।' पन्न० १ पद०।

तत्ततवोधण- त्रि० *[तप्ततपोधन]*
तप्तमनुष्ठितं तप एव धनं यस्य स तप्ततपोधनः। पञ्चाग्न्यादितपोविशेषेण निष्टप्तदेहे, सूय०१ श्रु० ३ अ०४ उ०।

तत्तदंसि- त्रि० *[तत्त्वदर्शिन्]*
मेधाविनि, आचा०१ श्रु०३ अ०२ उ०
तत्त्वावलोकनकर्तरि, सूय०१ श्रु०१५ अ०।

तत्तफासुअ- त्रि० *[तप्तप्राशुक]*
तप्तं सत्प्राशुकं त्रिदण्डोद्धृतं तप्तप्राशुकम्। त्रिदण्डोद्धृते तप्ते जलाऽऽदौ, । दश० ८ अ०।

तत्तवि- त्रि० *[तत्त्वविद्]*
तत्त्वं वेत्तीति तत्त्वविद्। जीवाजीवाऽऽदिवस्तुविज्ञातरि, परमार्थविदि, निर० १ श्रु० १ वर्ग० १ अ०।

तत्तवेइ- पुं० *[तत्त्ववेदिन्]*
तत्त्वज्ञानिनि, आचा०।
सारो हि विषयगणस्य तत्प्राप्तौ तृप्तिः, तदभावान्निःसारः, तं दृष्ट्वा ज्ञानी तत्त्ववेदी न विषयाभिलाषं विदध्याद्, न केवलं मनुष्याणां, देवानामपि विषयसुखाऽऽस्पदमानैत्यं जीवितमिति दर्शयति उपपातं जन्म, च्यवनं पातः, तच्च ज्ञात्वा न विषयसङ्गोन्मुखो भवेदिति।यतो निःसारो विषयग्रामः, समस्तः संसारो वा, सर्वाणि च स्थानान्यशाश्वतानि। सारासारवेत्तरि, आचा०१ श्रु० ३ अ० २ उ०।

तत्तरसासाय- पुं० *[तत्त्वरसाऽऽस्वाद]*
तत्त्वे परमार्थे रस आसक्तिहे-तुस्तस्याऽऽस्वादस्तत्त्वरसाऽऽस्वादः ।परमार्थाऽऽसक्तिहेत्वास्वादे, निर० १ श्रु०१ वर्ग०१ अ०।

तत्तलोहपह- पुं० *[तप्तलोहपथ]*
तप्ते लोहमयमार्गे, पण्हा०१ अ०।

तत्तसमजोइभूय- त्रि० *[तप्तसमज्योतिर्भूत]*
तप्तेन तापेन समातुल्या ज्योतिषा बह्निना भूता जाता या सा तप्तसमज्योतिर्भूता। ताप सदृशवह्निजाते, भग० १० श०५ उ०।

तत्ताणिव्वुडभोइत्त- न० *[तप्तानिर्वृत्तभोजित्व]*
तप्तं च तदनिर्वृत्तं चात्रिदण्डोद्धृतं च उदकमिति विशेषणान्यथानुपपत्त्या गम्यते तद्भोजित्वमिति। असचित्तोदकभोजित्वे, गच्छा० २ अधि०।
तप्तञ्च तदनिर्वृतञ्च- उदकमिति विशेषणान्यथानुपपत्त्या गम्यते, तदभोजित्वंमिश्रसचित्तोदक भोजित्वम्। दश० ११७।

तत्ताणुरूवत्त- न० *[तत्त्वानुरूपत्व]*
पञ्चदशतमे सत्यवचनातिशेषसम्प्राप्ते, तत्त्वानुभोजित्वं विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता। रा०।

तत्ति-१ स्त्री० *[तृप्ति]*
घ्राणौ, ठा०१ ठा०।
सन्तोषे, आतु०।
बुभुक्षाऽऽद्युपशमलक्षणायाम्, विशे०।

तत्ति-२ स्त्री० *[तप्ति]*
सारायाम्, गणस्य गच्छस्य या तप्तिः सारा, तया विप्रमुक्ताः। वव० १ उ०।

तत्तिय- पुं०न० *[तात्त्विक]*
वास्तवे, आव०म०।

तत्तिय- त्रि० *[तावत्]*
'जत्तियं गहियं तत्तियं ठियं, सेसं नट्ठं, ततो गतो सिं घरं।' आव०म० १ अ० ।
'तत्तियं' तावन्मात्रमेव कार्यम्। व्यवहारे, निसि० ११ उ०।

तत्तिला– त्रि० *[तप्तिला]*
अर्थिनः। ओह० ७१। यत्नवती, परायणा। नं० ६४।

तत्तिव्वऽज्झवसाण-त्रि० *[तत्तीव्राध्यवसान]*
तस्मिन्नेवाऽऽवश्यके तीव्रं प्रारम्भकालादारभ्य प्रतिक्षणं प्रहर्षयायि प्रयत्नविशेषलक्षणमध्यवसानं यस्य स तथा। तस्मिन्, गच्छा० २ अधि०।

तत्थ- अव्य० *[तत्र]*
तस्मिन् कालाऽऽदौ, तत्र तस्मिन्नित्यर्थे।ठा०।अणुओ०। पण्हा०।
वाक्योपन्यासार्थे, सूय० २ श्रु०२ अ०
निर्धारणार्थे च। दश०१ अ०।

तत्थ- त्रि० *[स्तब्ध]*
परमाधार्मिकदेवपरस्परोदीरित-दुःखसंपातभयात् त्रासमुपपन्ने, जीवा० १ प्रति०। ठा०।

तत्थ- त्रि० *[त्रस्त]*
भीते, नाया०१ श्रु०१ अ०।

तदक्ख- त्रि० *[तदाख्य]*
तेन अर्थेन आख्यायेषां ते तदाख्याः। अहिंसके, निसि०२ उ०।

तदज्झवसाण- त्रि० *[तदध्यवसान]*
तस्यामेवाध्यवसानं भोगक्रिया प्रयत्नविशेषरूपं यस्य स तस्मिन्। तदध्यवसिते, विपा० १ श्रु० २ अ०। अणुओ०।

तदज्झवसिय- त्रि० *[तदध्यवसित]*
तस्मिन्नेव विवक्षिते आवश्यके अध्यवसितं क्रियासंपादनविषयमस्येति तदध्यवसितः। तद्विषयकाध्यवसाययुक्ते, गच्छा० २ अधि०। अणुओ०।

तदट्ठ- पुं० *[तदर्थ]*
तस्मै अर्थस्तदर्थः। आचा० १ श्रु०२ अ०५ उ०।
तत्प्राप्तौ, विपा० १ श्रु० २ अ०।

तदट्ठोवउत्त- त्रि० *[तदर्थोपयुक्त]*
तस्य-विवक्षितस्य आवश्यकस्यार्थस्तदर्थः, तस्मिन्नुपयुक्तस्तदर्थोपयुक्तः। अणुओ०।
तत्प्राप्तये उपयोगवति, विपा० १ श्रु० १ अ० ।गच्छा०।
तदभिधेयोपयुक्ते, उव०

तदण्णवयण- न० *[तदन्यवचन]*
वचनभेदे, ठा०।
तस्माद्विवक्षितघटाऽऽदेरन्यः पटाऽऽदिः, तस्य वचनं तदन्यवचनं, घटापेक्षया पटवचनवत्, नोअवचनमभणननिवृत्तिर्वचनमात्रं डित्थाऽऽदिवदिति। अथवा-स शब्दव्युत्पत्तिनिमित्तधर्मविशिष्टोऽर्थोऽनेनोच्यते इति तद्वचनं, यथार्थनामेत्यर्थः। ज्वलनतपनाऽऽदिवत्। तथा तस्माच्छब्दव्युत्पत्तिनिमित्तधर्मविशिष्टादन्यः शब्दप्रवृत्तिनिमित्तधर्मविशिष्टोऽर्थः,उच्यतेऽनेनेति तदन्यवचनमयथार्थमित्यर्थः। ठा० ३ ठा० ३ उ०।

तदन्नवत्थुत– न० *[तदन्यवस्तुत्व]*
तस्मात्-परोपन्यस्ताद् वस्तुतोऽन्यदुत्तरभूतं वस्तु यस्मिन्नुपन्यासोपनये स तदन्यवस्तुकः। ठा० २५४।

तदप्पियकरण- त्रि० *[तदर्पितकरण]*
तस्मिन् भगवत्यर्पितानि करणानीन्द्रियाणि शब्दरूपाऽऽदिषु श्रोत्रचक्षुरादीनि यैस्ते तदर्पितकरणाः। उव०। गच्छा०।

तदाहार-१ त्रि० *[तदाधार]*
ते पृथिव्यादय आधारो येषां ते तदाधाराः तत्राऽऽहितेषु, । पण्हा० १ अ०।

तदाहार-२ पुं० *[तदाहार]*
तानेव पृथिव्यादीन् आहारयन्तीति तदाहारः। तद्भक्षके, । पण्हा० १ अ० ।

तदुपरि– त्रि० *[तदुपरि]*
तत्र जङ्घार्द्धप्रमाणे उदकसंस्पर्शे संघट्टः, नाभिप्रमाणे उदक संस्पर्शे लेपः, तत उपरि उदकसंस्पर्शे तदुपरि। वव०।

तदुभयहिय- त्रि० *[तदुभयहित]*
इहपरलोकहिते, पंच०भा०।

तद्देस- पुं० *[तद्देस]*
तस्य देशस्तद्देशः। उदाहरणदेशे, दश०१ अ०

तद्दोस- पुं० *[तद्दोष]*
तस्योदाहरणस्यैव दोषो यस्मिन् तत्तद्दोषः। उदाहरणदोषे, दश०१ अ०।

तद्दोस- त्रि० *[त्वग्दोष]*
कुष्ठिनि, उव०।
श्वेतकुष्ठिनि, पिंड०।
स च त्वग्दोषो द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां भवति। तत्थिमा वव०६ उ०।

तद्धिय- त्रि० *[तद्धित]*
तस्मै हितं तद्धितमित्यन्वर्थाभिधायका ये प्रत्ययास्ते तद्धिताः। यथा गोभ्यो हितो गव्यो देश इत्यादि। पण्हा०२ अ०। आव०चू०।

तद्धियए- न० *[तद्धितज]*
तद्धिताज्जातं तद्धितजम्। इह तद्धितशब्देन तद्धितप्राप्तिहेतुभूतोऽर्थो गृह्यते, तत्रायम्, यत्रापि तद्धितप्रत्ययो न दृश्यते, तत्रापि तद्धेतुभूतार्थस्य विद्यमानत्वात्तद्धित जं सिद्धं भवति। अणुओ०।
भावप्रमाणभेदे, अणुओ०।

तद्धियय- न० *[तद्धितज]*
'तद्धियए' इतिशब्दार्थे, अणुओ०।

तपोरिह- न० *[तपोऽर्ह]*
प्रायश्चित्तभेदे, जीत०।

तप्प- पुं० *[तप्र]*
नदीप्रवाहेण प्लाव्यमाने दूरादानीयमाने, काष्ठसमुदाये, आव०म० १ अ० । पन्न०।
उडुपके, भग० ११ श० १० उ०। विशे०। नं०। आव०चू०।

तप्पक्खिय- त्रि० *[तत्पाक्षिक]*
तेषां विवक्षितानां संविग्नानां पक्षस्तत्पक्षः, तत्र भवस्तत् पाक्षिकः। वव० १ उ०।
तस्य प्रयोजनेषु सहाये, भग०३ श०७ उ०।

तप्पज्ज- न० *[तात्पर्य]*
तत्परस्य भावः, वक्तुरिच्छायाम्, अभिप्राये, तत्परतायां च। आचा० १ श्रु० ३ अ० १ उ०।

तप्पडिवक्ख- पुं० *[तत्प्रतिपक्ष]*
तद्विरुद्धे, यथा– परिणतप्रतिपक्षा अपरिणताः, निसि० १ उ०।

तप्पडिरूवगववहार- पुं० *[तत्प्रतिरूपकव्यवहार]*
तेन प्रतिरूपकं सदृशं तत्प्रतिरूपकं, तस्य विविधमवहरणं व्यवहारः प्रक्षेपः तत्प्रतिरूपकव्यवहारो यद्यत्र घटते व्रिहिघृतादिषु पलञ्जीवशाऽऽदेः प्रक्षेपे,तत्प्रतिरूपेण वशाऽऽदिना व्यवहरणे तत् प्रतिरूपकव्यवहारः।स्थूलादत्ताऽऽदानविरतेश्चतुर्थेऽतिचारे,आव०

तप्पढमया- स्त्री० *[तत्प्रथमता]*
तेषां विवक्षितानाम् अणुव्रताऽऽदीनां प्रथमं तत्प्रथमं, तद्भावस्तत् प्रथमता। तस्याम्, उत्त०१ अ०।
प्रथमे कल्पे, कल्प० २ क्षण०।

तप्पण- न० *[तर्पण]*
उपकरणे, सम०३० सम०।
शक्तौ, पण्हा०५ अ०।
स्नेहाऽऽदौ शरीरबृंहणे, विपा० १ श्रु०१ अ०।
स्नेहद्रव्यविशेषैर्बृंहणे, नाया०१ श्रु०१३ अ०।

तप्पणालोडिय- न० *[तर्पणाऽऽलोडित]*
सक्त्वालोडने, जलाऽऽद्यालोडितसक्तौ, ठा०४ ठा०३ उ०।

तप्पमाण- त्रि० *[तर्पमाण]*
क्षरति, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०। सम०

तप्पर- त्रि० *[तत्पर]*
तद्रूपतया वर्त्तमानेऽन्यस्मिन्, यथा परमाणोरपरः परमाणुः। आचा०२ श्रु०२ चू०६ अ०।
आसक्ते, आचा० १ श्रु०१ अ०७ उ०।

तप्पागारसंठिय- त्रि० *[तप्राकारसंस्थित]*
अधोमुखसरावाऽऽकारसंस्थिते। भग० ११ श० १० उ०। आव०

तप्पुरक्कार- पुं० *[तत्पुरस्कार]*
तस्याऽऽचार्यस्य पुरस्करणं पुरस्कारः सर्वेकार्येष्वग्रतः स्थापने, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ०।
तमाचार्यं सर्वकार्येषु पुरस्करोतीति तत्पुरस्कारः। आचार्यानुमत्या क्रियाऽनुष्ठायिनि, । आचा०१ श्रु०५ अ०६ उ०।

तप्पुरिस- पुं० *[तत्पुरुष]*
द्वितीयाऽऽदिविभक्त्यन्तपदानां स्वनामख्याते समासे, यथा तीर्थे काक इवाऽऽस्ते तीर्थकाकः। अणुओ०।

तब्भत्तिय- त्रि० *[तद्भक्तिक]*
तत्र भक्तिः सेवा बहुमानो वा येषां ते तद्भक्तिकाः। तत्सेवके, भग० ५ श०७ उ०।

तब्भवमरण- न० *[तद्भवमरण]*
तस्मै भवाय मनुष्याऽऽदेः सतो मनुष्याऽऽदावेव बद्धाऽऽयुषो यन्मरणं तत् तद्भवमरणम्। इदं च नरतिरश्चामेव भवति। बालमरणभेदे, भग० २१ श० १ उ०। सम०। ठा०।
मरणस्य सप्तमो भेदः। उत्त० ।
जंमि भवे वट्टइ तस्सेव भवस्स हेउसु वट्टमाणो आउयं बंधित्ता पुणो तत्थोववज्जिउकामस्स जं मरणं तब्भवमरणं। निसि०।
यस्मिन् भवेतिर्यग्मनुष्यभवलक्षणे वर्त्तते जन्तुस्तद्भवयोग्यमेवायुर्बद्धापुनः तत्क्षयेण म्रियमाणस्य यद्भवति तत्तद्भवयोग्यमे वायुर्बद्ध्वा पुनर्म्रिमाणस्य मरणं तद्भवमरणम्। ठा० ।

तब्भारिय- त्रि० *[तद्भार्य]*
तस्य सोमस्य भार्या इव भार्या अत्यन्तवश्यत्वात्पोषणीयत्वाच्च इति तद्भार्यः। दासे, भग० ३ श०७ उ०।

तब्भारिय- त्रि० *[तद्भारिक]*
तद्भारो येषां वोढव्यतयाऽस्ति ते तद्भारिकाः।दासे, भग०३ श०७

तब्भावणाभाविय-त्रि० *[तद्भावनाभावित]*
तस्याऽऽवश्यकस्य भावना अव्यवच्छिन्नपूर्वपूर्वतरसंस्कारस्य तद् अनुष्ठानरूपतया भावितः उद्गाढभावेन परिणताऽऽवश्यकानुष्ठान परिणामे, अणुओ०। विपा०। गच्छा०।

तब्भूम- त्रि० *[तद्भौम]*
तस्यामेव भूमौ भवस्तद्भौमः। तद्भूमिवास्तव्यलोकपरिचिते, बुह० १ उ०।

तम-१ पुं० *[तमस्]*
तमयति खेदयति जनलोचनानीति तमः। उत्त० १ अ०।
अन्धकारे, उव०। आचा०। तमिस्रे, सम०।

तम-२ पुं० *[तमस्]*
कृष्णचतुर्दश्यां, रजन्यां वा तेजोद्रव्याभावे, बुह०१ उ०। निसि०

तम-३ पुं० *[तमस्]*
मोहे, उव०। अज्ञाने, । ठा०।
मिथ्याज्ञाने, ठा०४ ठा०२ उ०।

तम-४ पुं० *[तमस्]*
बद्धस्पृष्टनिधत्ते ज्ञानाऽऽवरणीये निकाचिते, आव०५ अ०।

तम-५ पुं० *[तमस्]*
अप्कायपरिणामस्वरूपेऽन्धारे, स्था० ४ ठा०२ उ०।

तमतमग- पुं० *[तमस्तमाग]*
सप्तमपृथ्वीनारके, । पण्हा०।

तमतमप्पभा- स्त्री० *[तमस्तमप्रभा]*
तमसः प्रभा यस्याः सा ।सप्तमनारकपृथिव्याम्, अणुओ०। पन्न०

तमतमा- स्त्री० *[तमस्तमा]*
अतिशयवत्तमस्तद्रूपव्ययोगात्तमस्तमा। सप्तमनरकपृथिव्याम्, अणुओ०। ठा०।

तमतिमिर-न० *[तमस्तिमिर]*
अन्धकारे, रात्रौ यदा रजो धूमधूमिका भवति तदा तमतिमिरं भण्यते। बुह०४ उ०।
विज्ञानमन्दताऽल्पत्वे, आव०चू० ५ अ०। निसि०।

तमतिमिरपडल- न० *[तमस्तिमिरपटल]*
तमो विज्ञानमन्दता, यथा पृथ्वीकायाऽऽदीनां तिमिरविज्ञानाल्पता, तथा शेषाणां तमस्तिमिरनिमित्तभूतं पटलं तमस्तिमिर पटलम्। ज्ञानाऽऽवरणीयाऽऽदिकर्म सङ्घाते, आव०चू०।
यद्वा–तमोऽपरिज्ञानं तस्य हेतुभूतं तिमिरपटलं तमस्तिमिरपटलम्। ज्ञानाऽऽवरणाऽऽदिकर्मबन्धे, आव०चू०।
तमोऽनवबोधः, स एव तिमिर तमस्तिमिरं, तस्य कारणं पटलं तमस्तिमिरपटलम्। अथवा तमोऽपरिज्ञानहेतुः स एव बहलस्तिमिरं, तस्य पटलं वर्गः समूहः। अन्ये पुनर्भणन्तितमो बद्धं स्पृष्टं निधत्तं ज्ञानाऽऽवरणीयं निकाचितं तिमिरं, तस्य पटलं वृन्दं तमस् तिमिरपटलम्। ज्ञानाऽऽवरणीयकर्मसंघाते, आव०चू० ५ अ०।
यदा तस्यामेव रजन्यां रजःप्रभृतयो मेघदुर्दिनं च भवति, तदा तमस्तिमिरपटलमभिधीयते। यथा तत्रैवान्धकारे पुरुषः किञ्चिद् अपि न पश्यति। अन्धकारसमूहे, बुह० ४ उ०।

तमतिमिरपडलभूय- त्रि० *[तमस्तिमिरपटलभूत]*
दर्शनाऽऽवरणीयोदयादकिञ्चित्पश्यति, निसि०।

तमतिमिरपडलविद्धंसण- त्रि० *[तमस्तिमिरपटलविध्वंसन]*
तमोऽज्ञानं तदेव तिमिरं तमस्तिमिरम्। अथवा-तमो बद्धस्पृष्टं निधत्तं ज्ञानाऽऽवरणीयं, निकाचितं तिमिरं, तस्य पटलं वृन्दं तमस्तिमिरपटलं, तद्विध्वंसयति विनाशयतीति तमस्तिमिरपटलविध्वंसनः। अज्ञाननिराशकर्तरि, आव०।

तमपज्जलण- त्रि० *[तमःप्रज्वलन]*
तमोबलेनाऽज्ञानबलेनाऽन्धकारबलेन वा प्रज्वलति दर्पितो भवतीति तमःप्रज्वलनम्। अज्ञानबलेन अन्धकारबलेन वा दृप्ते, ठा० ४ ठा० ३ उ०।

तमपडल- न० *[तमःपटल]*
ज्ञानाऽऽवरणे, भग०६ श०४ उ०।
अन्ध कारसमूहे, उत्त०४ अ०।

तमपडलमोहजालपलिच्छअ- त्रि० *[तमःपटलमोहजालप्रतिच्छन्न]*
तमः पटलमिव तमः पटलं ज्ञानाऽऽवरणं, मोहामोहनीयं, तदेव जालं, मोहजालं, ताभ्यां प्रतिच्छन्ना आच्छादिता, ते तथा। ज्ञानाऽऽवरणीयमोहनीयकमभ्यामाच्छादितेषु, भग०६ श०४ उ०

तमप्पभा- स्त्री० *[तमःप्रभा]*
तमोमय्यां षष्ठ्यां नरकपृथिव्याम्, पन्न०१ पद ।भग०। अणुओ०।

तमप्पविट्ठ- त्रि० *[तमःप्रविष्ट]*
तमः प्रविष्ट इव । तमः कर्मप्रवेशकर्तरि, भग०६ श०४ उ०।

तमबल- पुं० *[तमोबल]*
तमोऽज्ञानं बलं सामर्थ्यं यस्य सः, तमोऽन्धकारं वा तदेव तत्र वा बलं यस्य स तथा। असदाचारवति, अज्ञानिनि, रात्रिञ्चरे, चौराऽऽदौ पुरुषजाते, ठा० ४, गच्छा० ३ उ०

तमोबलपलज्जण- पुं० *[तमोबलप्ररजन]*
तमो मिथ्याज्ञानमन्धकारं वा तदेव बलं यत्र। अथवा–तमस्युक्त रूपे बले च सामर्थ्ये प्ररज्यते रतिं करोतीति तमोबलप्ररजनः। तमोबलरक्ते पुरुषजाते, ठा० ४, गच्छा०३ उ०।

तमोबलपलज्जण- पुं० *[तमोबलप्रलज्जन]*
तमोबलेनान्धकारबलेन सञ्चरन् प्रलज्जते इति तमोबलप्रलज्जनः प्रकाशचारिणि पुरुषजाते, ठा० ४ ठा० ३ उ०।

तमरयविद्धंसणाण- न० *[तमोरजोविध्वंसज्ञान]*
तमोरजसी अज्ञानपातके, विध्वंसयति नाशयतीति यत्ततमोरजोविध्वंसं, तच्च तद् ज्ञानं च तमोरजोविध्वंसज्ञानम्। अज्ञानपातकनाशके ज्ञाने, सम० ५।

तमस्सई- स्त्री० *[तमस्वती]*
तमोऽन्धकारमस्यास्तीति तमस्वती। वव० ५ उ०।
बहलतमःपटलकलितायां रात्रौ, बुह०१ उ०।

तमा-१ स्त्री० *[तमा]*
तमोरूपद्रव्ययुक्तत्वात् तमा इति। अणुओ०।
तमा-२ स्त्री० *[तमा]*
षष्ठ्यां नरकपृथिव्याम् । ठा० ७ । गच्छा०।
तमा-३ स्त्री० *[तमा]*
अन्धकारयुक्तत्वेन रात्रितुल्यत्वादधोदिशि, ठा०१० ठा०। पन्न०।
तमाल-१ पुं० *[तमाल]*
संख्येयजीवके वलयाऽऽख्यवनस्पतिभेदे, आचा० १ श्रु०१ अ० ५ उ०। पन्न०। भग०। उव०। रा०।
तमाल-२ पुं० *[तमाल]*
वलयविशेषः। पन्न०।
तडिसंधयार- पुं० *[तमिस्रान्धकार]*
बहुलतमोऽन्धकारे, यत्राऽऽत्माऽपि नोपलभ्यते चक्षुषा केवलम् अवधिनाऽपि मन्दं मन्दमुलूका इवाह्नि पश्यन्ति। सूय० १ श्रु० ५ अ० १ उ०। पिंड०।
तमिस्स- न० *[तमिस्र]*
अन्धकारे, ठा०४ ठा०३ उ०।
तमुक्काय- पुं० *[तमस्काय]*
तमसोऽप्कायपरिणामस्वरूपस्यान्धकारस्य कायः प्रचयस्तम-स्कायः । अप्कायपरिणामरूपतमः प्रचये, ठा०।
तमुयत्त- न० *[तमस्त्व]*
जात्यन्धतायाम्, अत्यन्ताज्ञानाऽऽवृततायाम्, सूय०२ श्रु०२ अ०।
तमोकसिय- त्रि० *[तमःकाषिक]*
तमसि कषितुं शीलं येषां ते तमः काषिणः, त एव तमः काषिकाः। पराविज्ञाताः क्रियाः कुर्वत्सु सूय० २ श्रु०२ अ०।
तम्मण- त्रि० *[तन्मनस्]*
तस्य देवदत्ताऽदेस्तस्मिन् घटाऽऽदौ मनस्तन्मनः। मनोविशेषे, ठा०३ ठा०३ उ०।
तस्मिन्नेव मनोविशेषोपयोगरूपं यस्य स तथा। तस्मिन् विशेषो-पयुक्ते, अणुओ०। गच्छा०।
तद्विषयकद्रव्यमनोयुक्ते, विपा० १ श्रु०२ अ०।
तम्मय- त्रि० *[तन्मय]*
तेषां विवक्षितानामनलानिलतृणवनस्पतिगणानां विकारास्तन्मया तद्विकारेषु, पण्हा० १ अ०।
तम्मित्त- न० *[तन्मात्र]*
पञ्च तन्मात्राणि। तद्यथा-गन्धरसरूपस्पर्शशब्दतन्मात्राऽऽख्यानि, तत्र गन्धमात्राद् पृथिवी गन्धरसरूपस्पर्शवती, रसतन्मात्रादापो रसरूपस्पर्शवत्यः, रुपतन्मात्रात्तेजो रूपस्पर्शवत्, स्पर्शतन्मात्रा-द्वायुः स्पर्शवान्। शब्दतन्मात्रादाकाशंगन्धरसरूपस्पर्शवर्जितम् उत्पद्यत इति। सूय० १ श्रु० १ अ०१ उ०।

तम्मियय- न० *[तन्मात्रज]*
शब्दाऽऽदीनि यानि पञ्च तन्मात्राणि सूक्ष्मसंज्ञानि, तेभ्यो जातमुत्पन्नं तन्मात्रजम्। अम्बराऽऽदिषु, ठा०२ ठा०१ उ०।
तम्मुत्ति- स्त्री० *[तन्मुक्ति]*
तेन विवक्षितेन उक्ता सर्वसङ्गेभ्यो विरतिर्मुक्तिस्तन्मुक्तिः। तदुक्तसर्वसङ्गेन विरतौ, आचा० १ श्रु०५ अ०४ उ०।
तम्मेत्त- त्रि० *[तन्मात्र]*
'तम्मित्त' शब्दार्थे, सूय० १ श्रु० १ अ०१ उ०
तम्मेयय- न० *[तन्मात्रज]*
'तम्मियय' शब्दार्थे, ठा० २ ठा०१ उ०
तम्मोत्ति- स्त्री० *[तन्मुक्ति]*
'तम्मुत्ति' शब्दार्थे, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ०।
तय- न० *[तत]* 'तत' शब्दार्थे, ठा०४ ठा०४ उ०।
तयक्खाय- पुं० *[त्वक्खाद]*
त्वचं बाह्यवल्कं खादतीति त्वक्खादः। त्वग्भक्षके घुणाऽऽदौ, ठा०४ ठा०१ उ०।
त्वक्कल्पाऽसारभोक्तरि, साधौ च। दश०१ अ०।
तयण्णवत्थुक- पुं० *[तदन्यवस्तुक]*
तस्मात्परोपन्यासाद्वस्तुनोऽन्यदुत्तरभूतं वस्तु यस्मिन्नुपन्यासोपनये स तदन्यवस्तुकः। उपन्यासोपनयोदाहरणभेदे,। ठा०।
तयप्पमाणमित्त- न० *[त्वक्प्रमाणमात्र]*
तिलतुषत्रिभागमात्रे, तच्चा-शनस्य घटते। बुह०६ उ०।
तयप्पमाणमेत्त- न० *[त्वक् प्रमाणमात्र]*
'तयप्पमाणमित्त' शब्दार्थे, बुह०६ उ०।
तया- स्त्री० *[त्वक्]*
तृणवनस्पतिकायिकभेदे, ठा०८ ठा०।
छल्लयाम्, जीवा०३ प्रति०४ उ०। रा०।
बाह्यवल्के, ठा०४ ठा०१ उ०।
तणुओ तिक्खत्तुओ, असोणिओ केवलं तयालग्गो। आव०५ अ० त्वगिवासारं भोक्तव्यमित्यर्थसूचकत्वात् त्वग् उच्यते, दशवैकालिकस्य द्रुमपुष्पिकाऽध्ययने, दश०।
तयाणंतर- न० *[तदनन्तर]*
तम्मादव्यवहितोत्तरे, रा०।
तयाणुग- त्रि० *[तदनुग]*
तदनुगन्तरि, 'विवरीयपन्नसंभूयं, अन्नं उत्तं तयाणुगे।' सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ०।
तयामुह- पुं० *[त्वचामुख]*
सुखकारिणि, कल्प०३ क्षण०।
तयामंत- त्रि० *[त्वग्वत्]*
त्वग्विद्यते यस्याऽसौ। विशिष्टत्वक् शालिनि, रा०।

तयाविस- पुं० *[त्वग्विष]*
त्वचि विषं स त्वग्विषः। दर्वीकरसर्पभेदे, जीवा०१ प्रति०।

तयाहार- पुं० *[त्वगाहार]*
त्वहमात्राऽऽहारकवानप्रस्थविशेषे, उव०।

तर-१ पुं० *[तर]*
तरतीति तरः। ठा०५ ठा०१ उ०।
संतरणकर्तीर, तरशब्दो महादोषप्रदर्शने, यथा कृष्णः, कृष्णतर इत्यादि। निसि० १ उ०।

तर-२ न० *[तरस्]*
वेगे, बले च। उव०।

तरंग- पुं० *[तरङ्ग]*
कल्लोले, पण्हा०३ अ०। कल्प०।
वीचिषु, जंबू० २ वक्ष०। उव०।
ह्रस्वकल्लीले नाया० १ श्रु० ८ अ०। उव०।

तरगवई- स्त्री० *[तरङ्गवती]*
स्वनामख्यातायां नायिकायाम्, तरङ्गवतीवक्तव्यताप्रतिबद्धे कथ ग्रन्थे, दश० ३ अ०। आव०म०।
कामकथायां अनुभूतमधिकृत्य निजानुभवनिवेदयित्री। दश० ।
मिश्रकथाव्याख्याने स्त्री। दश०

तरग- त्रि० *[तरक]*
तरन्तीति तरस्ति एव तरकाः। पारगन्तृषु (ठा०)।

तरच्छ- पुं० *[तरक्ष]*
व्याघ्रविशेषे, । पण्हा०। पन्न०। भग०।
स्त्रियां तरक्षी। पन्न०११ पद०।

तरण- न० *[तरण]*
लङ्घने, सूय०१ श्रु०११ अ०।
निस्तारणे, निर० चु०१ उ०।
पारगमने प्लवने च। आव०चू०।

तरतम- त्रि० *[तरतम]*
तरतमजोगजुत्तेहिं जालयपरेहिं अण्णुण्णमिव अणुप्पइत्तं पिच्छइ । कल्प० ३ क्षण०।

तरमाण- त्रि० *[तरत्]*
समर्थे, निसि० १ उ०। जीवा०।

तरलियमइ- स्त्री० *[तरलितमति]*
विसंस्थुलबुद्धौ, जीवा०१ प्रति०।

तरिअव्व- त्रि० *[तरितव्य]*
निचोंढव्ये, 'तरिअव्वं व पइन्निअ, मरि मव्वं वा समरे समत्थेणं।' आव०४ अ०।

तरु- पुं० *[तरु]*
वृक्षे, दश०१ अ०।

तरुण- त्रि० *[तरुण]*
जन्मपर्यायेण षोडशवर्षाण्यारभ्य याश्चत्वारिंशद्वर्षाणि तावत्तरुणः । वव०३ उ०।
इत्युक्तलक्षणे प्रवर्द्धमानवयसि, भग० १४ श० १ उ०। सूय०। गच्छा०। उत्त०।
नूतने, कल्प०३ क्षण०। उव०।
विशिष्टवर्णाऽऽदिगुणोपेतेऽभिनवे वस्तुनि, जीवा०३ प्रति०२ उ०।
प्रवर्द्धमानवयाः। अनुओ०।
यद् द्रव्यं विशिष्टवर्णादिगुणोपेतमभिनवं च तत्तरुणम्। राय० ।
वर्धमानवयाः, वर्णादि-गुणोपचितः। *उवा०* ।
अर्वाक् चत्वारिंशतो वर्षेभ्यः। वव०२४५।
चत्तासत्तरुणो।वव०।
जन्म-पर्यायेण षोडशवर्षाण्यारभ्य यावच्चत्त्वारिंशद्वर्षाणि तावत्तरुणः। वव०।
तरुणः-प्रथमकुमारत्वे वर्त्तमानः। वव०।

तरुणग- त्रि० *[तरुणक]*
स्तनन्धये, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ०।
अभिनवे, भग०१५ श०।

तरुणदिवाकर- पुं० *[तरुणदिवाकर]*
अभिनवोदिताऽऽदित्वे, आव० ४ अ०। अंत०।

तरुणधम्म- त्रि० *[तरुणधर्म]*
अविपक्वपर्याये, निसि०१९ उ०।
तारुण्ये वर्तमाने, आव०म०१ अ०२ ।

तरुणपरिकम्म- न० *[तरुणपरिकर्म]*
रोगग्रस्तस्य सतस्तरुणस्य बलविवृद्धिकरणे, वव०४ उ०।

तरुणिया- स्त्री० *[तरुणिका]*
अपरिपक्वायाम्, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०।

तरुणीपडिकम्म- न० *[तरुणीप्रतिकर्म]*
एतदेकत्रिंशत्तमकलाभेदे, युवतीनां वर्णाऽऽदिवृद्धरूपायां सङ्ग-सक्रियायाम्, जंबू० २ वक्ष० नाया०। उव०।

तरुणीपरिकम्म- *[तरुणीपरिकर्म]*
'तरुणीपडिकम्म' शब्दार्थे, जंबू० २ वक्ष०।

तरुतिगिच्छा- स्त्री० *[तरुचिकित्सा]*
वृक्षाणां रोगप्रतीकारलक्षणे एकोनपञ्चाशत्पुरुषकलाभेदे, । कल्प० ७ क्षण०।

तरुपक्खंदोलय- त्रि० *[तरुपक्षान्दोलक]*
तरुपक्षे तरुपार्श्वे आत्मानमान्दोलयन्ति ये ते तथा। तरुपक्षा-न्दोलनात्पातेन मृतेषु, उव०

तरुपडण- न० *[तरुपतन]*
पिप्पलवटाऽऽदितरुनारुह्य उत्पत्य पतने, निसि०११ उ०। भग०।

तरुपतणट्ठाण- न० *[तरुपतनस्थान]*
यत्र मुमूर्षव एवानशनेन तरुवत्पतितास्तिष्ठन्ति, तरुभ्यो वा यत्र पतन्ति। तथाभूते स्थाने, आचा० २ श्रु० २ चू०३ अ०।

तल-१ पुं० *[तल]*
हस्ततले, जंबू०१ वक्ष०। निसि०। आव०म०। जीवा०
हस्ते, ठा० ८ ठा०। चंद०। नाया०। उव०।
हस्तताले, रा०। नाया०। दशा०।

तल-२ पुं० *[तल]*
पाणिपादानामधोभागे, नाया०१ श्रु०१ अ०। तं०।
अधोभागे, नाया० १ श्रु०१ उ०।

तल-३ पुं० *[तल]*
मध्यखण्डे, ठा०८ ठा०।

तल-४ पुं० *[तल]*
प्रतिष्ठाने, 'उम्मग्गनिमग्गदुल्लहतलं।' पण्हा० ३ अ०।

तल-५ पुं० *[तल]*
अतिदीर्घे तालाभिधाने वृक्षो,नाया०१श्रु०८अ० ।जीवा० ।आव०म
तालो वृक्षस्तत्र भवं तालम्। तालवृक्षफले, वव० १ उ०।

तलओडा- स्त्री०
गुच्छभेदे, 'तेलेडा' इति गुर्जरदेशे प्रसिद्धम्। पन्न० १ पद०।

तलजमलजुगलबाहु- त्रि० *[तलयमलयुगलबाहु]*
तलौ तालवृक्षौ तयोर्यमलं युगलं श्रेणिकयुगलं तलयमलयुगलं, तद्वत् अतिसरलौ पीवरौ बाहू यस्य सः। तालवृक्षसदृशाति- सरलपीवरबाहौ, रा०। जीवा०।
तलयमलयुगलपरिघनिभबाहुः। तलौ तालवृक्षौ तयोर्यमलं समश्रेणिकं यद्युगलं द्वयं परिघश्चार्गला, तन्निमौ तत्सदृशौ दीर्घ- सरलपीनत्वाऽऽदिना बाहू यस्य सः। भग० १४ श० १ उ०।

तलण- न० *[तलन]*
सुकुमारिकाऽऽदेरिव भ्राष्ट्रभर्जने, पण्हा० १ अ०।
अग्नौ स्नेहेन भर्जने, विपा० १ श्रु० ३ अ०।

तलताल- पुं० *[तलताल]*
हस्तताले, कल्प०१ क्षण० ।सूर० ।चंद० ।कल्प० ।नाया०। भग०।
हस्तकंशिकयोः, कल्प० ४ क्षण०। चंद०।

तलपत्त- न० *[तालपत्र]*
तालाभिधानवृक्षपर्णे, नाया० १ श्रु० १७ अ०।

तलभंगय- पुं० *[तलभङ्गक]*
बाह्वाभरणविशेषे, जीवा० ३ प्रति० ४ उ०। उव०।

तलवर-१ त्रि० *[तलवर]*
परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषिते राजस्थानीये, ठा०९ ठा०। उव०। पन्न०। भग०। जीवा० । कल्प०। जंबू०। रा०। अंत०। नाया०। अणुओ०। बुह०।

तलवर-२ त्रि० *[तलवर]*
परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धभूषितः। ठा०।
प्रभुस्थानीयो नगरादिचिन्तकः। उत्त०।
प्रतुष्टनरपतिवितीर्णपट्टबन्धः-विभूषितो राजस्थानीयः। भग०।
सन्तुष्टनरपतिप्रदत्तसौवर्णपट्टालङ्कृतशिरस्कचौरादिशुद्धयधिकारी। जंबू०।
तलवरः-राजवल्लभः, राजसमानः। अन्त०।
राजप्रतिमाचामरविहितो तलवारो। निसि०।
तलवरः- परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषितः। उव०।
तलवरः-कृतपट्टबन्धराजस्थानीयः। पण्हा०।
तलवरः- राजप्रसादवानु राजोत्यासनिकः। विपा०।
परितुष्टनरपतिप्रदत्तरत्नालङ्कृतसौवर्णपट्ट विभूषितशिराः। जीवा०
परितुष्टनरपतिदत्तसौवर्णतलवरपट्टालंऽकृतशिरस्कः। बुह०।
राजवल्लभः। भग० ४६३।

तलाअ- पुं० *[तडाग]*
पुरुषाऽऽदिकृते जलाऽऽश्रयविशेषे, पण्हा० ४अ० ।पन्न०। उव०। अणुओ०। आव०म०। आचा०। आव० । रा० ।

तलाग- पुं० *[तडाग]*
'तलाअ' शब्दार्थे, पण्हा० ४ अ०।

तलिण- न० *[तलिन]*
प्रतले, उव०।

तलिड- न० *[तल्प]*
शयनीये, नाया०१ श्रु०१६ अ०।

तलिमा- स्त्री० *[तलिमा]*
तूर्यवाद्यभेदे, नं०। आव०म०।

तलिय- त्रि० *[तलित]*
स्नेहपक्के, निर० १ वर्ग० १ अ०। निसि०

तलिया- स्त्री० *[तलिका]*
उपानहि, बुह०।

तलुण- त्रि० *[तरुण]*
प्रत्यग्रे, नाया०१ श्रु०१६ अ०।
प्रवर्द्धमानवयसि, आव०म० १ अ० । रा०।

तल्लअ- पुं० *[तल्लज]*
तृणविशेषे, पण्हा०३ अ०।

तल्लक- पुं०
सुराविशेषे, जंबू०२ वक्ष०।

तल्लेस्स- त्रि० *[तल्लेश्य]*
तत्रैव लेश्या शुभपरिणामरूपा यस्य सः गच्छा०२ । अणुओ०।
लेश्या हि कृष्णाऽऽदिद्रव्यसाचिव्यजनित आत्मपरिणामः। तद् विषयलेश्यायुक्ते, विपा० १ श्रु०२ अ०

तव-१ पुं० *[तपस्]*
तप्यतेऽनेनेति तपः। तापयति अष्टप्रकारं कर्मेति तपतेरौणाऽऽदिकोऽसुप्रत्ययः। आव०म०१ अ०२ ।
तापयति कर्म दहतीति तपः। सम०।
ताप्यन्ते रसाऽऽदिधातवः कर्माणि वा अनेनेति तपः। आव०म०। रसरुधिरमांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राण्यनेन तप्यन्ते, कर्माणि वाऽशुभानीत्यतस्तपोनामनिरुक्तम्। ठा०५ ठा०१ उ०।

तव-२ पुं० *[तपस्]*
चतुर्थोऽऽदिषण्डासान्ते । ठा०६ ठा० ।
अनशनाऽऽदौ, पण्हा० ४ अ० । आव०। उत्त०। सूय०। नं०। रा०। संथा०। दश०।
भद्रमहाभद्रप्रतिमासु, उत्त० ३० अ०।
तपः-धर्म्मध्यानादि। सूर० ।
तपः-ध्यानम्। नाया०

तव-३ पुं० *[तपस्]*
उत्तराध्ययनेषु त्रिंशत्तममध्ययनम्। उत्त० ।

तवआयार- पुं० *[तपआचार]*
आचारभेदे, तप आचारो द्वादशविधः उक्तं च–'बारसविहम्मि वि तवे, अब्भिंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे। अगिलाए अणाजीवी, नायव्वो सो तवाऽऽयारो'। इति ठा० २ ठा० ३ उ०।

तवकरण- न० *[तपःकरण]*
तपसोऽनशनाऽऽदिबाह्याभ्यन्तरभेदभिन्नस्य करणं कृतिस्तपःकरणम् ।अनशनाऽदेर्बाह्याभ्यन्तरभेदभिन्नतपसः कृतौ, आव०म० १

तवगुण- पुं० *[तपोगुण]*
अनशनाऽऽदौ, ठा० ९ ठा०।

तवग्ग- पुं० *[तवर्ग]*
तकाराऽऽदिवर्णपञ्चके, रा०।

तवग्गपविभत्ति- न० *[तवर्गप्रविभक्ति]*
तकारथकारदकारधकारनकारइत्येवंरूपे प्रविभक्तिनामकेऽष्टादशे नाट्यविधौ, रा०।

तवचरण- न० *[तपश्चरण]*
तपोविधाने तपसि च कृते धृतिं करोति नार्तध्यान। अणुओ०। संयमानुष्ठाने, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।
तपश्चरणं ब्रह्मचर्याऽऽदि, तत्फलमप्युपचारात्तपश्चरणम्। स्वर्गसंभवे भोगजाते, नाया०१ श्रु०९ अ०।

तवचरणचरियणिबद्ध- न० *[तपश्चरणचरितनिबद्ध]*
दिव्ये नाट्यविधौ रा०।

तवचरणि- त्रि० *[तपश्चरणिन्]*
तपस्विनि, 'नाणादीओ जीवइ, अह सुहुमो अह इमो मुणेयव्वो। साइज्जंतो एगं, वच्चइ एसो तवच्चरणी। ठा० ५ ठा० ३ उ०।

तवण- पुं० *[तपन]*
तपतीति तपनः। रवौ, अणुओ०। पिंड०।

तवणिज्ज- न० *[तपनीय]*
आरक्तसुवर्णे, जीवा०३ प्रति०४ उ०। तं०। भग० ।उव०। जंबू०। सुवर्णविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ उ०। तं०। उव०। सम०। रा०। जंबू०। सूर०। नाया०।
'तवणिज्ज बालुयापत्थडे।' तपनीयमय्यः बालुकाः सिकताः, तासां प्रस्तटः प्रस्तारो यस्मिंस्तत्तथा ।जीवा०३प्रति०४ उ०। रा०। तपनीयस्तपनीयमयो 'लंबूसगो दाम्नामग्रिमभागे प्राङ्गणे लम्बमानो मण्डनविशेषो गोलकाऽऽकृतिर्येषां तानि। जीवा०३ प्रति०४ उ०। रा०।

तवणिज्जकूड- पुं० *[तपनीयकूट]*
जम्बूद्वीपे रुचकपर्वतस्य द्वितीयस्मिन् कूटे, ठा०८ ठा०।

तवणियमणाणरुक्ख- पुं० *[तपोनियमज्ञानवृक्ष]*
भाववृक्षे, आव०म० १ अ०१ ।

तवतेण- पुं० *[तपःस्तेन]*
क्षपकरूपकल्पे, कश्चित्केनचित् पृष्टस्त्व मसौ क्षपक इति ? तदा स पूजाऽऽद्यर्थमाह–अहम्। अथवा वक्तिसाधव एव क्षपकाः। अथवा–तूष्णीमास्ते। दश० ५ अ० २ उ०।
परसम्बन्धि तप आत्मनि परप्रतिपत्तितः सम्पादयन्। पण्हा०

तवधण- त्रि० *[तपोधन]*
तप एव धनं यस्य सः। तपोधनवति, उत्त ०१८ अ०।

तवप्पडिमा- स्त्री० *[तपःप्रतिमा]*
तपसाऽऽत्मतुलनायाम्, बुह०१ उ०

तवप्पहाण- त्रि० *[तपःप्रधान]*
तपसा प्रधाने उत्तमे, शेषमुनिजनापेक्षया, तपो वा प्रधानं यस्य तस्मिन्, नाया०१ श्रु०१ अ०। निर० । रा०।

तवबल- त्रि० *[तपोबल]*
यदनेकभवार्जितमनेकदुःखकारणं निकाचितकर्मग्रन्थि क्षपयति तस्मिन्, ठा० १० ठा०।

तवबलिय- पुं० *[तपोबलिक]*
तपसा बलिकस्तपोवलिकः तपसा बलिष्ठे, महताऽपि तपसा यो न क्लाम्यति, यत्र तत्र वा स्वल्पे प्रयोजने तपः करिष्यामि इति विचिन्त्य प्रतिसेवते। यदि वा–षाण्मासिके तपसि दत्ते वदति–समर्थोऽहमन्यदपि तपः कर्तुं तदपि मे देहीति। तस्मिन् तपोबलिके मूलपर्याये, वव०१ उ०।

तवभावणा- स्त्री० *[तपोभावना]*
प्रशस्तभावनाभेदे, बुह०१ उ०।

तवमय- पुं० *[तपोमद]*
तपः प्रधानो मदस्तपोमदः। मदस्थानभेदे, ठा०१० ठा०। सम०।

तवय- न० *[तवक]*
सुकुमारिकाऽऽदितलनभाजने, विपा० १ श्रु०३ अ०।
तवविणय- पुं० *[तपोविनय]*
विनयभेदे, दश०।
तवसंजम- पुं० *[तपःसंयम]*
तापयतीति तपस्तत्प्रधानः संयमस्तपःसंयमः। चारित्रसामायिके विशे०। तप अशनोदरताऽऽदि तत्प्रधानः संयमस्तपः संयमः। अशनोदरताऽऽदिप्रधाने संयमे, आव०म०१ अ०२ ।
तवसंजमप्पहाण- पुं० *[तपःसंयमप्रधान]*
तपःबाह्याभ्यन्तरं द्वादशप्रकारं, तथा संयमः सप्तदशभेदः। पञ्चाऽऽश्रवविरमणाऽऽदिलक्षणः, ताभ्यां प्रधानास्तपःसंयम प्रधानाः। तपःसंयमाभ्यां प्रधाने, सूय० १ श्रु० ११ अ०।
तवसंजमरय- पुं० *[तपःसंयमरत]*
भावसाधौ, उव०।
तवसमाहि- पुं० *[तपःसमाधि]*
तपसि बाह्याऽऽभ्यन्तरभेदभिन्ने यथा शक्ति निरन्तरं प्रवृत्तिः तपःसमाधिस्तस्मिन्, दश०।
तवसामायारि- पुं० *[तपःसामाचारिन्]*
पाक्षिकाऽऽदिषु तपःकर्म स्वयं करोति, परं च कारयति, भिक्षाचर्यां स्वयमनुतिष्ठति, परं च तस्यां नियुङ्क्ते, इति तपः सामाचारी। वव० १० उ०।
तवसिद्ध- पुं० *[तपःसिद्ध]*
तपसा सिद्धे, सिद्धभेदे, । आव०म० ।
तवसूर- पुं० *[तपःशूर]*
तपोधीरे, ठा० ४ ठा० ३ उ०।
'तवसूरा अणगारा।' संथा०।
तवसोसिय- त्रि० *[तपःशोषित]*
तपसा शोषमुपगते, वव०२ उ०।
तवस्सि-१ पुं०त्रि० *[तपस्विन्]*
तपोऽस्यास्तीति तपस्वी। तपः संयमतपस्तस्मिन् विद्यमाने, वव० १ उ०।
विकृष्टमष्टमप्रकृतिकं तपा विद्यते येषां ते तपस्विनः। निसि०।
प्रशस्ततपोयुक्ते, पण्हा० ५ अ०।
तपोबाह्याऽऽभ्यन्तरकर्मेन्धनदहनज्वलनकल्पमनवरतशुभध्यान-लक्षणमस्ति यस्य स तपस्वी। ठा०२ ठा०४ उ०।
तवस्सि-२ पुं० *[तपस्विन्]*
क्षपके, भग० ८ श० ८ उ०। बुह०। ठा०।
मासक्षपकाऽऽदिषु, आव०। ठा०।
चतुर्थभक्ताऽऽदिकारिणि, पण्हा० ३ अ०।
अष्टमाऽऽदिक्षपके, भग०२५ श०७ उ०।
तवस्सि-३ पुं० *[तपस्विन्]*
अनशनाऽऽदितपोविचित्रयुक्तेषु सामान्यसाधुषु, नाया० १ श्रु०८ साधौ, सूय० १ श्रु०२ अ०१ उ०। उत्त०।
क्षीणदेहे, बुह०१ उ०।
निष्टप्तदेहे सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०।
प्रशस्यतपोऽन्विते भिक्षौ, उत्त०२ अ०।
तवस्सि-४ पुं० *[तपस्विन्]*
जितेन्द्रिये, उव०।
तवायार- पुं० *[तपआचार]*
द्वादशविधतपोविशेषानुष्ठिते। सम० १ सम।
तवारिह-१ न० *[तपोऽर्ह]*
निर्विकृतिकाऽऽदितपःशोध्ये । ठा०१० ठा०।
तवारिह-२ न० *[तपोऽर्ह]*
षष्ठे प्रायश्चितभेदे, ठा०८ ठा०।
तपोऽर्ह-प्रायश्चित्तविषयः–ततश्च रात्रिन्दिवपञ्चकादारभ्य रात्रि-दिवपञ्चकाऽऽदि बृद्ध्या तावन्नेयं, यावत् षण्मासाः, तत्र येषु स्थानेषु रात्रिन्दिवपञ्चकं तपः, वव० १ उ०।
तविय- त्रि० *[तप्त]*
उष्णे, ठा० ८ ठा०।
आइच्चतेयसा तविया खणलबदिवसाओ परिणमंति। ठा० ५ ठा० ३ उ०।
तवेइ– धा० *[तवेति]*
तपति अपनीतशीतं करोति, यथा वा सूक्ष्मं पिपी-लिकादि दृश्यते तथा करोति। भग० ७८।
तवेंति– धा० *[तापयन्ति]*
तपन्ति मन्दाङ्गाररूपतां प्रतिपद्यन्ते। जंबू०।
तवोकम्म- न० *[तपःकर्म]*
तस्यैवाऽष्टप्रकारस्य कर्मणो बद्धस्पृष्टनिधत्तनिकाचितावस्थस्या-ऽपि निर्जराहेतुभूलं बाह्याभ्यन्तरभेदेन द्वादशप्रकारं तपः कर्मोच्यते। आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ०।
निर्विकृतिकाऽऽदिनि । ठा०२ ठा०१ उ०। सम०। उव० ।
महालयाऽऽदिनि । अंत०८ वर्ग०३ अ० ।
तपःक्रियायाम्, ठा०४ ठा०३ उ०।
तपःकर्म-तपोऽनुष्ठानम्। दश०।
तवोकम्मगंडिया- स्त्री० *[तपःकर्मगण्डिका]*
तपः कर्मवक्तव्यतार्थाधिकारानुगतायां ग्रन्थपद्धतौ, सम०।
तवोगुणपहाण- त्रि० *[तपोगुणप्रधान]*
षष्ठाष्टमाऽऽदितपोधनवति, दश० ४ अ०।
तवोमग्गगइ- स्त्री० *[तपोमार्गगति]*
उत्तराध्ययनानां त्रिंशत्तमेऽध्ययने, उत्त० २९ अ०। सम०।

तवोमय- पुं० *[तपोमद]*

अहमेव विकृष्टतपोविधायी नापि तपसा ग्लानिमुपगच्छामीत्येवं-रूपे मदे, सूय०१ श्रु०१३ अ०।

'पन्नामयं चेय तवोमयं च, णिन्नामए गोयमयं च भिक्खू।' सूय० १ श्रु० १३ अ०।

तवोवहाण- न० *[तपउपधान]*

विशिष्टतपोविशेषे, सूय० १ श्रु० ६ अ०।

अनियन्त्रिते तपसि, श्रुतोपचारतपसि च। सम० ६ सम।

तपउपधानं-अनशनादिकम्। बृह०।

तपउपधानं-द्वादशविधं तपः। सम०।

तवोसमायारिसमाहिसंवुड- पुं० *[तपःसामाचारिसमाधिसंवृत]*

तपसोऽनशनाऽऽद्यात्मकस्य सामाचारी समाचरणम्।

यद्वा-तपश्च सामाचारी च तत्कृतो वक्ष्यमाणस्वरूपः समाधिश्च चेतसः स्वास्थ्यं, तैः संवृतो निरुद्धाऽऽश्रवः तपः सामाचारि समाधिसंवृतः।

यद्वा–तपःसामाचारिसमाधिभिः संवृतं संवरणं यस्य स तथा। तपसः समाचरणेन समाधिना च निरुद्धाऽऽश्रवे, उत्त० १ उ०।

तव्वइरित्तदंसणा– स्त्री० *[तद्व्यतिरिक्तदर्शना]*

अभिग्रहीतमिथ्यादर्शनप्रत्ययिकीक्रियायाः द्वितीयो भेदः।आव०

तव्वइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया-स्त्री० *[तद्व्यतिरिक्तमिथ्यादर्शनप्रत्यया]*

तस्मात् ऊनातिरिक्तमिथ्यादर्शनाद्व्यतिरिक्तं मिथ्यादर्शनं नास्त्ये-वाऽऽत्मेत्यादिमतरूपं प्रत्ययो यस्याः सा तथा, तस्याम्, ठा०२ ठा०१ उ०।

तव्वज्ज– न० *[तद्वर्ज]*

बुद्बुदवर्जंवर्षम्। आव० ।

तव्वत्थुय- पुं० *[तद्वस्तुक]*

तदेव परोपन्यस्तसाधनं वस्त्विति उत्तरभूतं वस्तु यस्मिन् उपन्या-सोपनये स तद्वस्तुकः।

अथवा- तदेव परोपन्यस्तं वस्तु तद्वस्तु, तदेव तद्वस्तुकं, तद्युक्त उपन्यासोपनयोऽपि तद्वस्तुकः। उपन्यास भेदे, ठा०।

तव्वत्थूवण्णास- पुं० *[तद्वस्तूपन्यास]*

उपन्यासस्य प्रथमो भेदः। दश० १ अ०।

तव्वयण- न० *[तद्वचन]*

तस्य विवक्षितार्थस्य घटाऽऽदेर्वचनं भणनं तद्वचनं, घटार्था-पेक्षया घटवचनवत्। वचनभेदे, ठा० ३ ठा० ३ उ०।

तव्विवरीय– पुं० *[तद्विपरित]*

यादृशं वस्तु स्वप्ने दृष्टं तद्विपरीतस्यार्थस्य जागरणे यत्र प्राप्तिः स तद्विपरीतस्वप्नो यथा-

कश्चिदात्मनं मेध्यविलिप्तं स्वप्ने पश्यति जागरितस्तु मेध्यमर्थं कञ्चन प्राप्नोतीति। भग०।

तस- पुं० *[त्रस]*

त्रसन्ति उष्णाऽऽद्यभितप्ताः सन्तो विवक्षितास्थानादुद्विजन्ते गच्छन्ति च छायाऽऽद्यासेवनार्थं स्थानान्तरमिति त्रसाः, अनया च व्युत्पत्त्या त्रसास्त्रसनामकर्मोदयवर्तिन एव परिगृह्यन्ते, न शेषाः। अथ च शेषैरपीह प्रयोजनं, तत एवं व्युत्पत्तिः–त्रसन्ति अभिसन्धिपूर्वकमनभिसन्धिपूर्वकं वा ऊर्ध्व मधस्तिर्यक्षु चलन्ति इति त्रसाः। तेजोवायुषु, द्वीन्द्रियाऽऽदिषु च। जीवा०१ प्रति०।

त्रसन्तीति त्रसाः। द्वीन्द्रियाऽऽदिषु, सूय० २ श्रु०१ अ०। जंबू०। सूर०। ठा०। आचा०। आव०। सम०।

द्वीन्द्रियाऽऽदिकृम्यादिषु, आचा० १ श्रु०९ अ०१ उ०।

द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियेषु पर्याप्तापर्याप्तभेदभिन्नेषु, सूय०१ श्रु०५ अ०१

त्रसनामकर्मोदयतस्त्रस्यन्तीति त्रसाः। द्वीन्द्रियाऽऽदिषु, ठा० २ ठा० १ उ०। सूय०।

तेजोवायुद्वीन्द्रियाऽऽदिषु, निसि० १२ उ०। सूय०।

द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियेषु, सूय० १ श्रु०११ अ०।

त्रस्यन्ति तापाऽऽद्युपतप्ताश्छायाऽऽदिकं प्रत्यभिसर्पन्तीति त्रसाः। द्वीन्द्रियाऽऽदिषु, उत्त०५ अ०।

कुन्थ्वादिषु, पा०।

दर्दुरप्रभृतिषु, सूय०२ श्रु०३ अ०।

त्रससंभारकृतेन कर्मणा समुत्पन्नाः सन्तः सामान्यसंज्ञया प्राणा अप्युच्यन्ते तथा विशेषतः 'त्रस' भयचलनयोरिति धात्वर्था-नुगमाद्, भयचलनाभ्यामुपेतेषु, सूय० २ श्रु० ७ अ०।

त्रस्यन्तीति त्रसाः तेजोवायुरूपा विकलेन्द्रियपञ्चेन्द्रियभेदात्त्रिधा। सूय० १ श्रु० ६ अ०।

तसकाइय- पुं० *[त्रसकायिक]*

त्रसनशीलास्त्रसाः, त्रसाः कायाः शरीराणि येषां ते त्रसकायाः, त्रसकाया एव त्रसकायिकाः। दश० ४ अ०।

जङ्गमप्राणिनि, सम० ३ सम०।

तसकाय- पुं० *[त्रसकाय]*

त्रसनामकर्मोदयात्त्रस्यन्तीति त्रसाः, तेषां कायो राशिस्त्रसकायः। ठा० २ ठा० १ उ०।

त्रसनशीलास्त्रसाः त्रसाः कायाः शरीराणि येषां ते त्रसकायाः। जङ्गमजीवभेदे, सम० १० सम०।

'तसकाए दुविहे पण्णत्ते। तं जहा– भवसिद्धिए चेव, अभवसिद्धिए चेव।' ठा० २ ठा० १ उ०।

तसण- न० *[त्रसन]*

पलायने, सूय० १ श्रु० ७ अ०।

स्पन्दने आचा० १ श्रु०१ अ० ६ उ०।

तसवाइया- स्त्री० *[त्रसपादिका]*

त्रीन्द्रियजीवभेदे, जीवा० १ प्रति०।

तसासि- त्रि० *[त्रसासिन्]*
पिपीलिकाऽऽदिसहितोदनभक्षके, निसि० १ उ०।

तसिअ- त्रि० *[त्रस्त]*
त्रसनं त्रस्तम्। दुःखोद्वेजने, दश०४ अ०।
परमाधार्मिकदेवपरस्परोदीरितदुःखसंपातभयात् त्रासमुपपन्ने, जीवा० ३ प्रति० २ उ०। भग०।

तस्सण्णि- त्रि० *[तत्संज्ञिन्]*
तस्य संज्ञा तत्संज्ञातज्ज्ञानम्, तद्वान् तत्संज्ञी।आचा० १श्रु० ५ अ०
विवक्षितज्ञानोपयुक्ते, आचा० १ श्रु० ५ अ० ६ उ०।

तस्सेवि- पुं० *[तत्सेविन्]*
ये दोषा आलोचयितव्यास्तत्सेवी यो गुरुस्तस्य पुरतो यदा-लोचनम्। तत्सेविलक्षणे आलोचनादोषे, ठा० १० ठा०।

तह- अव्य० *[तथा]*
उक्तपरामर्शे, कल्प० १ क्षण०।
पादपूरणे, निसि० १ उ०।

तह- त्रि० *[तथ्य]*
सदर्थाभिधायित्वे, । सूय० ।

तइक्कार- पुं० *[तथाकार]*
गुरोः पार्श्वे वाक्यं श्रुत्वा गुरुं प्रति इदं कथनं यद्भवद्भिरुक्तं तत्तथैवतथाऽस्तु, इति करणं तथाकारः। उत्त०२६ अ०।
गुर्वादिषु ब्रुवाणेषु यथाऽऽदिशत यूयं, तथैवेति भणनरूपे सामाचारीभेदे, बृह०१ उ०।
तथाकरणं तथाकारः, स च सूत्रप्रश्नगोचरः। यथा भवद्भिरुक्तं तथेदमित्येवंस्वरूपे सामाचारीभेदे,। आव०म० १ अ० ।आव० चू०। जीत०। उत्त०। ठा०।

तहच्च- त्रि० *[तथार्च]*
अवस्थितचित्तवृत्तिके, तथाभूता सम्यक्दर्शनप्राप्तियोग्यार्चाले-श्यान्तः परिणतिरकृतधर्माणामिति। यदि वा–अर्चा मनुष्यशरीरं, तदप्यकृतधर्मबीजानामार्यक्षेत्रसुकुलोत्पत्तिसकलेन्द्रियसामग्र्यादि रूपं दुर्लभं भवति; जन्तूनां धर्मरूपमर्थं व्याकुर्वन्ति ये, धर्मप्रति-पत्तियोग्या इत्यर्थः। तेषां तथाभूताऽर्चा सुदुर्लभा भवति। सूय० १ श्रु० १५ अ०।

तहणाण- न० *[तथाज्ञान]*
यथा वस्तु तथा ज्ञानं यस्य तत्तथाज्ञानम् सम्यग्दृष्टिजीवद्रव्ये, तस्यैवावितथज्ञानत्वात्। यथैव यद् वस्तु तथैव ज्ञानमवबोधः प्रतीतिर्यस्मिंस्तत्तथाज्ञानम्। घटाऽऽदिद्रव्ये ठा० १० ठा०।

तहप्पओग- पुं० *[तथाप्रयोग]*
तथाशब्दस्य प्रयोगे, 'तह त्ति पओगो नाम जं-एवमेतं अवितह-मेतं जाहे तं तुज्झे वदह, इच्चे तस्स अत्थस्स संपच्चयत्थं सविसए तह त्ति सद्दं पउंजंति।' आव० चू० १ अ०।

तहप्पगार- पुं० *[तथाप्रकार]*
पूर्वोक्तप्रकारे, आचा०१ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ०। निसि०।
एवंप्रकारे, जीवा०१ प्रति०। भग०।
पूर्वोक्तस्वरूपे, कल्प०१ क्षण०।

तहा- अव्य० *[तथा]*
तेन प्रकारेण। कल्प०। विशे०।
साम्ये, अभ्युपगमे, पृष्टप्रतिवाक्ये, समुच्चये, निश्चये च। । नं०।
आनन्तर्ये, नं०। आव०म०।
अवधिज्ञानेन सहास्य छद्मस्थत्वाऽऽदिभिः सारूप्यप्रदर्शने, आव०म०१ अ०१ ।
समुच्चयनिर्देशावधारणसादृश्यप्रैष्येषु, दश०१ अ०।
ग्रहणानन्तरे, विशे०।
यथाशब्देनानूद्यमानस्य विधेयस्यार्थे, तद्यथा–यथेदं तथैवेदम्। सूय० १ श्रु० १३ अ०।
पूर्वोक्तार्थे, सूय० २ श्रु०६ अ०।
दृढाध्यवसानप्रकारसादृश्योपदर्शनार्थे, आव०४ अ०।
तथाशब्दः-अनुक्तसमुच्चयार्थः। उत्त०।

तहाकार- पुं० *[तथाकार]*
तीर्थकरत्वं केवलज्ञानं न नते, सूय० १ श्रु० १२ अ०।

तहागय-१ पुं० *[तथामत]*
तथा तेन यथावस्थितपदार्थोपलम्भाऽऽत्म-केन प्रकारेण गतं ज्ञानमेषामिति तथागताः। बृह०३ उ०।
तथाऽपुनरावृत्त्या गतास्तथागताः। सूय०१ श्रु०१५ अ०।
अथवा–तथैवापुनरावृत्या गतं गमनं येषां ते तथागताः। यदि वा–यथैव ज्ञेयं तथैव गतं ज्ञानं येषां ते तथागताः। आचा०१ श्रु० ३ अ०३ उ०।
अथवा–तथागतानि यथावस्थितानि तथैवावि-तथं जानन्ति, न विभङ्गज्ञानिन इव विपरीतं पश्यन्ति। तेषु, सूय०१ श्रु०१२ अ०।

तहागय-२ पुं० *[तथामत]*
देवत्वाऽऽदिप्रकारमापन्नेषु, भग०१७ श०२ उ०।

तहागय-३ पुं० *[तथामत]*
यथोक्तानुष्ठायिषु सिद्धेषु, सर्वज्ञेषु च।आचा०१ श्रु०३ अ०३ उ०।

तहाजुत्त- त्रि० *[तथायुक्त]*
सेवकगुणोपेततया उचिते, जीवा० ३ प्रति० ४ उ०।

तहाभूय- त्रि० *[तथाभूत]*
एवंप्रकारं प्राप्ते, 'अह णं स होई उवलद्धो तो संति तहाभूएहिं।' सूय० १ श्रु० ४ अ० २ उ०।

तहारूव- त्रि० *[तथारूप]*
तथा तत्प्रकारं रूपं स्वभावो नेपथ्याऽऽदिर्वा यस्य स तथारूपः। दानोचिते, ठा०३ ठा०१ उ०।

उचितस्वभावे, भग०२ श०५ उ०।
भक्तिदानोचितपात्रे, भग०५ श०५ उ०।
अविज्ञातव्रतविशेषे, । भग० १५ श०।
तहाविय- पुं० *[तथाविद्]*
तथारूपमनुष्ठानं विदन्तीति तथाविदः। इङ्गिताऽऽचारकुशले, निपुणे, तद्विदि सर्वज्ञे,। सूय० १ श्रु० ४ अ०१ उ०।
तहाविह- त्रि० *[तथाविध]*
तत्प्रकारे, 'तं तहाविहं पेच्छइ।' आव० म० १ अ०२ । निसि०।
तहि- अव्य० *[तत्र]*
तस्मिन्नित्यर्थे। जंबू०। पण्हा०।
तहिय- अव्य० *[तथाच]*
उक्तप्रकारमापन्ने, मात्रयाऽप्यन्यूनाधिके, उत्त० ६ अ०। पण्हा०।
तहिय- त्रि० *[तथ्य]*
परमार्थभूते सत्ये, सूय० १ श्रु० १४ अ०।
ताअ- पुं० *[तात]*
जनके, उत्त०१४ अ०।
पुत्रे सूय० १ श्रु०३ अ०२ उ०। पण्हा०।
ताइ- त्रि० *[तापिन्]*
मोक्षं प्रति गमनशीले, सूय० २ श्रु० ६ अ०।
तायते रक्षति दुर्गतेरात्मानमेकोन्द्रियाऽऽदिप्राणिनो वाऽवश्यमिति तायी उत्त० ८ अ०।
तापः स्वदृष्टमार्गोक्तिः तद्वान् तापी। सुपरिज्ञातदेशतया विनेयपालपितरि, । दश०।
तपने तापः, स विद्यते यस्यासौ तापी। तस्मिन्, सूय० १ श्रु० १५ अ०। आव०।
ताइ- त्रि० *[त्रायिन्]*
मनोवाक्कायगुप्तिभिः कृतकारितानुमतिभिर्वाऽऽत्मानं त्रातुं शीलम् अस्येति त्रायी, जन्तूनां सदुपदेशदानतस्त्राणकरणशीले, सूय० १ श्रु०१४ अ०।
आसन्नभव्यानां त्राणकारणे, सूय०२ श्रु०६ अ०।
आत्मनः परेषां च त्राणशीले, सूय०२ श्रु०६ अ०।
विशिष्टोपदेशदानादपरेषां त्राणभूते । सूय०१ श्रु० १ अ०।
धर्मकार्याऽऽदिना संसारदुःखेभ्यस्त्राणकर्त्तरि, दश० २ अ०।
ताडण- न० *[ताडन]*
उरःशिरःकुट्टनकेशलुञ्चनाऽऽदिषु, आव० ४ अ०।
गुणने, ठा० १ ठा०।
ताडिअ- अव्य० *[ताडयित्वा]*
ताडनं कृत्वेत्यर्थे, उत्त० १९ अ०।
ताडिज्जमाण- त्रि० *[ताड्यमान]*
कुड्याऽऽद्यभिघाताऽऽदिना ताडनां प्राप्यमाणे, सूय०२ श्रु०१ अ०

ताण-१ त्रि० *[त्राण]*
शरणे, आचा०१ श्रु०२ अ०१ उ०। सूय०। विशे०। ठा०।
अनर्थप्रतिघातहेतौ, कल्प० २ क्षण०।
अनर्थ प्रतिहनने, अर्थसंपादने च। तं०।
बन्धुभिः पालनं जरातो वा रक्षणम्। उत्त०
ताण-२ पुं० *[तान]*
ततायां तन्त्र्याम्, तत्र षड्जाऽऽदयः स्वराः प्रत्येकं सप्तभिस्तानैर्गीयन्त इत्येवमेकोनपञ्चाशत्तानाः सप्ततन्त्रिकायांवीणायां भवन्ति । अणुओ०।
तामरस- न० *[तामरस]*
पद्मे, पन्न०१ पद। ठा०। कल्प०।
तामलित्ति- स्त्री० *[ताम्रलिप्ति]*
जम्बूद्वीपे भारतवर्षे स्वनामख्यातायां नगर्याम्, यत्र मौर्यपुत्र ईशानदेवेन्द्रजीवो गृहपतिरासीत्। भग० ३ श०१ उ०।
बङ्गानां आर्यजनपदानां राजधान्याम्,पन्न०१पद। सूय०। आचा०
तामलित्तिया- स्त्री० *[ताम्रलिप्तिका]*
स्थविराद्गोदासान्निर्गतस्य व्योदासगणस्य प्रथमशाखायाम्, । कल्प० ८ क्षण०।
तामली- पुं० *[तामली]*
ताम्रलिप्तिनगरीवास्तव्ये ईशानदेवेन्द्रजीवे मौर्यपुत्रगृहपतौ, भग०
तामस- पुं० *[तामस]*
अज्ञानपरिणामे, पण्हा० ४ अ०।
ताय- पुं० *[तात]*
पितरि, भग० ३३ श०९ उ०।
तायत्तीसग- स्त्री० *[त्रयस्त्रिंशत्]*
त्र्यधिकायां त्रिंशति, भग० ३ श० १ उ०। पन्न०।
तायत्तीसग- पुं० *[त्रायस्त्रिंश]*
इन्द्राणां पूज्ये महत्तरकल्पे, उवा० २ अ०। ठा०। कल्प०।
तायय- पुं० *[तातक]*
पितरि, उत्त०२ अ०।
तारग-१ न० *[तारक]*
तारयत्यगाधात् संसारपयोधेर्योगिनमित्यन्वर्थिक्या संज्ञया तारकमुच्यते। विवेकजने ज्ञाने, रा०। सम०।
तारग-१ पुं० *[तारक]*
द्वितीये प्रतिवासुदेवे, । सम०।
तारग्गह- पुं० *[तारकग्रह]*
तारकाऽऽकारा ग्रहास्तारकग्रहाः। नवग्रहे, तत्र च चन्द्राऽऽदित्यराहूणां तारकाऽऽकारत्वादन्ये षट् तथोक्ताः। 'छ तारग्गहा पण्णत्ता। तं जहा–सुक्के, बुधे, बहस्सई, अंगारए, सणिच्चरे, केऊ' । ठा० ६ ठा०।

तारगा- स्त्री० *[तारका]*
पुण्यभद्रस्य यक्षेन्द्रस्य यक्षराजस्य तुर्यायामग्रमहिष्याम्, ठा० ४ ठा० १ उ०।
ज्योतिषि नक्षत्रे, अनुत्त० ३ वर्ग० १ अ०। सूय०।
अश्विन्यादिनक्षत्रेषु, सूय० २ श्रु० ६ अ०।

तारग्ग- न० *[ताराग्र]*
तारापरिणामे, चंद० १ पाहु०। सूर०१ पाहु०।

तारवई- स्त्री० *[तारवती]*
संसारपुरराजबन्धुमारस्य अङ्गारवतीभार्यायां जातायां दुहितरि, आव०चू० ४ अ०।

तारा-१ स्त्री० *[तारा]*
सुग्रीवभार्यायाम्, तस्याश्चकृते संग्रामोऽभूत्। पण्हा०।
सुभूममाता। आव०।
कार्त्तवीर्यपत्नी। आव०।
भरतक्षेत्रे सप्तमचक्रवर्त्तिमातृनाम। सम०।

तारा-२ स्त्री० *[तारा]*
ताराः-ज्योतिष्कभेदविशेषः। पन्न०।
ताराः अश्विन्यादिनक्षत्राणि। सूय०।
ज्योतिष्कविमानानि अधिकारान्नक्षत्रजातीयज्योतिष्कानां विमानानीत्यर्थः जंबू०।
ज्योतिर्विमानरूपा। ठा०। भग०।
भरतक्षेत्रे सप्तमचक्रवर्त्तिमातृनाम। सम०।

तारापह- पुं० *[तारापथ]*
नभसि, अणुओ०।

तारारूव- पुं० *[तारारूप]*
तारकजातीयम्। सम०। ठा०।
तारारूपाः-तारिकारूपाः। जंबू०।
तारकमात्रम्। ठा०।

तारिम- त्रि० *[तारिम]*
तरणयोग्ये, सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ०। दश०

तारुण्ण- न० *[तारुण्य]*
यौवने, उत्त०३२ अ०।

ताल- पुं० *[ताल]*
तलनं तालः। निसि०१२ उ०।
वृक्षविशेषे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ०।
कंशिकादिशब्दविशेषः। ठा०।
हस्तताला समुत्य उपचारा-च्छब्दः। अनुओ०।
तालः-घनवाद्यविशेषः। जंबू०।

तालउड- न० *[तालपुट]*
तालमात्रव्यापत्तिकरे उपविषे, उत्त० १६ अ०। दश०। आव०म०

तालजंघ- पुं० *[तालजङ्घ]*
तालो वृक्षविशेषः, स च दीर्घस्कन्धो भवति, ततस्तालवज्जङ्घे यस्य स तथा। नाया० १ श्रु०८ अ०।

तालज्झय- पुं० *[तालध्वज]*
तालो वृक्षविशेषो ध्वजा यस्य सः। बलदेवे, आव०म०१ अ०१

तालण- न० *[ताडन]*
चपेटाऽऽदिना निश्छोटने, उवा०७ अ०।
चपेटाऽऽदिदाने, उव०।
कुट्टने, पण्हा०१ अ०। अंत०। उव०। आव०म०।

तालपलंब- पुं० *[तालप्रलम्ब]*
आजीवकोपासकभेदे, भग० ८ श० ५ उ०।

तालपिसाय- पुं० *[तालपिशाच]*
तालो वृक्षविशेषः, तदाकारो दीर्घत्वाऽऽदिसाधर्म्यात्पिशाचो राक्षसः तालपिशाचः। दीर्घतरे पिशाचे, ठा० १० ठा०। भग०। आव०म०। वव०। नाया०। आव०।
पिशाचभेदे, पन्न०१ पद०।

तालपुड- न० *[तालपुट]*
'तालउड' शब्दार्थे, उत्त०१६ अ०।

तालमत्थय- न० *[तालमस्तक]*
तालमध्यवर्तिनि गर्भे, आचा० २ श्रु०१ चू०१ अ०८ उ०।

तालमाण- स्त्री० *[तालमान]*
तालमानपरिज्ञानाऽऽत्मके कालभेदे, कल्प०७ क्षण०।

तालमूलय- न० *[तालमूलक]*
तालमूलाऽऽकारे अधःपृथनि उपरि च सूक्ष्मे लयने, कल्प०९।

तालविण्ट- न० *[तालवृन्त]*
व्यजने, आचा० १ श्रु०१ अ०७ उ० अनुत्त०। दश०।
द्विपुटाऽऽदिव्यजने, पण्हा०१ अ०। दश०। नाया०।
मयूरपिच्छकृतव्यजने, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०७ उ०।

तालसंवुड- पुं० *[तालसंपुट]*
पवनेरितशुष्कतालपत्रसंचये, सूय० १ श्रु०२ अ०१ उ०।

तालसम- न० *[तालसम]*
यत्परस्पराऽऽहतहस्ततालस्वरानुवृत्तिर्भवति तत्तालसमम्। स्वरभेदे, ठा० ७ ठा०।

तालायर- त्रि० *[तालाचर]*
तालैर्वाद्यविशेषैश्चरन्तीति तालाचराः। निसि०१५ उ०।
तालाऽऽदानेन प्रेक्षाकारिणि, उव०। पण्हा०। जंबू०। विपा०। नाया०। पन्न०।
नटनर्तकाऽऽदिषु, बुह०३ उ०।

तालायरकम्म- न० *[तालाचरकर्म]*
प्रेक्षककर्मविशेषे, नाया० १ श्रु० १३ अ०।

तालिअण्ट- पुं० *[तालवृन्त]*
व्यजने, आचा० १ श्रु०१ अ०७ उ०।
तालाभिधानवृक्षपत्रं वृन्तं तत्पत्रच्छोट इत्यर्थः। भग०।
तालिंत- त्रि० *[ताड्यमान]*
चपेटाऽऽदिभिः पीड्यमाने, नाया० १ श्रु० १६ अ०।
तालिज्जंत- त्रि० *[ताड्यमान]*
चपेटाऽऽदिभिः पीड्यमाने, आव०चू० १ उ०।
तालिय- त्रि० *[ताडित]*
आहते, पण्हा०३ अ०।
ताली- स्त्री० *[ताली]*
वाद्यभेदे, आव०चू०१ अ०।
तालु- न० *[तालु]*
तरन्त्यनेन वर्णाः। जिह्वेन्द्रियाधिष्ठाने स्थानभेदे, पन्न०। नाया०।
तालुग्घाडणी- स्त्री० *[तालोद्घाटनी]*
तालोद्घाटनकारिकायां विद्यायाम् सूय०२ श्रु०२ अ०।
तालुजिब्भ- पुं० *[तालुजिह्व]*
तालु एव जिह्वा यस्य। कुम्भीरे, तस्य जिह्वाशून्यत्वेऽपि तालुनैव रसाऽऽस्वादनात्। पण्हा०।
ताव- अव्य० *[तावत्]*
तत्परिमाणमस्य। प्रस्तुतार्थप्रदर्शके,आव०म० ।आव०चू०। सूय०
ताव- पुं० *[ताप]*
दुःखे, आव०४ अ०।
सूर्याणामेव तापः, चन्द्रस्य तु प्रभासः। 'चत्तारि सूरिया तविंसु वा, तवंति वा, तविस्संति वा। चत्तारि चंदा पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा' इत्यवभासस्य पार्थक्येनोक्तेः। ठा० ४ ठा० २ उ०।
तावइय- त्रि० *[तावत्क]*
तत्परिमाणवति, भग० १८ श० ४ उ०। आव० म०।
तावंचण- पुं० *[तावच्चण]*
तावति काले, भग०१५ श०।
तावक्खेत्त- न० *[तापक्षेत्र]*
तपनं तापः सूर्यकिरणस्पर्शजनितः प्रकाशाऽऽत्मकः परितापः, तदुपलक्षितं क्षेत्रं तापक्षेत्रम्। धर्मोपलक्षिते क्षेत्रे, आव०म०१ ।
तावक्खेत्तदिसा- स्त्री० *[तापक्षेत्रदिशा]*
तपनं तापः सूर्यकिरणस्पर्शजनितः प्रकाशाऽऽत्मकः परितापः, तदुपलक्षितं क्षेत्रं तापक्षेत्रं, तदेव दिक्। अथवा–तापयतीति तापः सविता, तदनुसारेण क्षेत्राऽऽत्मिका दिक् तापक्षेत्रदिक्। आव०म०१ अ०२ । विशे०।
तापः सविता, तदुपलक्षिता दिक् तापक्षेत्रदिक्। पूर्वाभिधानायां दिशि, सा चाऽनियता। ठा० ३ ठा० २ उ०।

तावण- न० *[तापन]*
अग्निना हस्तपादाऽऽदीनामुष्णीकरणे, निसि० १ उ०।
तावणिज्ज- त्रि० *[तापनीय]*
तापसहे, भग०१५ श०।
तावदिसा- स्त्री० *[तापदिशा]*
तापयतीति ताप आदित्यः, तदाश्रिता दिक् तापदिक्। सूर्यतापितायां दिशि, आचा०।
तावस- पुं० *[तापस]*
तापोऽस्यास्तीति तापसः। दश०२ अ०।
ताप प्रधानस्तापसः। दश०१० अ०।
सतपस्के वनवासिनि पाखण्डिविशेषे, बुह०। पिंड०। अणुओ०। आचा०।
श्रमणभेदे, ठा०५ ठा०३ उ०।
माठरगोत्रस्याऽऽर्यशान्तिश्रेणि-कस्य शिष्ये, कल्प०८ क्षण०।
तापसः-कौशाम्ब्यां श्रेष्ठिविशेषः। उत्त०।
पतितपत्राद्युपभोगवान् बालतपस्वी। भग० ५०।
तावसावसह- पुं० *[तापसावसथ]*
तापसमठे, भग० ११ श० ९ उ०।
ताविया- स्त्री० *[तापिका]*
कटाहिकायाम्, आव०म० १ अ०
तास- पुं० *[त्रास]* उद्वेगे, पण्हा०१ अ०। नाया०।
तासन- त्रि० *[त्रासन]*
क्षोभाऽऽदिलिङ्गकारकत्वात्त्रासनः। पण्हा०१ अ०।
त्रासजनके, पण्हा०३ अ०। निसि०। आव०म०।
तासी- त्रि० *[त्रासी]*
स्वयं त्रस्तः परानपि त्रासयतीति त्रासी। त्रस्ते, अन्यत्रासकरे च। ठा० ४ ठा० २ उ०।
ताहं- अव्य० *[ताहं]*
आमन्त्रणे, पण्हा०१ अ०।
ति- अव्य० *[इति]*
पदात्परस्य इतिशब्दस्य ति इत्यादेशो भवति। उपमाभूतवस्तूनां परिसमाप्तौ, जीवा०३ प्रति०४ उ०। पण्हा०।
एवार्थे, उत्त०१ अ०।
तिउडण- न० *[त्रित्रुटन]*
त्रिभ्यो मनोवाक्कायेभ्योऽशुभेभ्यो मुक्तौ, सूय०१ श्रु०१५ अ०।
तिउल-१ त्रि० *[त्रितुल]*
त्रीन् मनोवाक्कायाँस्तुलयत्यभिभवति या सा त्रितुला। मनोवाक्कायतोदके दुःखहेतौ, पण्हा०१ अ०। भग०। नाया०। ठा०।
तिउल-२ त्रि० *[तोदक]*
सूत्रत्वात्तोदकः। मनोवाक्कायतोदके दुःखहेतौ उत्त०२ अ०।

तिउल-३ त्रि० *[त्रिदल]*
त्रीन् प्रस्तावान्मनोवाक्कायान् विभाषितण्यन्तत्वाच्चुराऽऽदीनां दलतीव स्वरूपचलनेन त्रिदलः। मनोवाक्कायतोदके दुःखहेतौ, उत्त० २ अ०।

तिऊम- पुं० *[त्रिकूट]*
'तिकूड' शब्दार्थे, ठा० ४ ठा० २ उ०।

तिओय- न० *[त्र्योजस्]*
त्रिभिरादित एव कृतयुग्माद्वोपरिवर्त्तिभिरोजो विषमराशि-विशेषस्त्र्योजः। भग० १८ श० ४ उ०।
विषम-राशिविशेषे, यो हि राशिश्चतुष्कापहारेणापह्रियमाणस्त्रि-पर्यवसितो भवति स त्र्योज इति। ठा० ४ ठा०३ उ०।
मितप्रदेशासु दिक्षु, । सर्वासां दिशां प्रत्येकं ये प्रदेशास्ते चतु-ष्केणापह्रियमाणास्त्रिकावशेषा भवन्तीति कृत्वा तत्प्रदेशाऽऽ-त्मिकाश्च दिश आगमसंज्ञया त्र्योजःशब्देनाभिधीयते। आचा० १ श्रु०१ अ०१ उ०।

तिंतिण- पुं० *[तिन्तिण]*
तिन्तिणो नाम यः स्वल्पोऽपि केनचित्साधुनाऽपराद्धोऽनवरतं पुनस्तं झषन्नास्ते स तिन्तिणः। तस्मिन्, वव०१ उ०।
अलाभे सति खेदाद्यत्किञ्चनाभिधायी, स च खेदप्रधानत्वात् तिन्तिणिको भवति। ठा० ६ ठा०।
तिन्तिणिको हि सुन्दरमाहाराऽऽदिकं गवेषयन्नेषणासमितेः परिमन्थुर्भवतीति। बुह० ६ उ०।

तिंतिणी- स्त्री० *[तिन्तिणी]*
यत्र तत्र वा स्तोकेऽपि कारणे करकरायणं, वव० ३ उ०।

तिंदुक-१ पुं० *[तिन्दुक]*
बहुबीजकफलप्रधाने वृक्षविशेषे, पन्न०१ पद। आचा०।
वाराणस्यां तिन्दुकवृक्षप्रधाने उद्याने, आव०म०१ अ० ।
श्रावस्त्यां नगरमण्डले पुरपरिसरे तिन्दुकवृक्षप्रधाने उद्याने, उत्त० २३ अ०। आव०। विशे०।

तिंदुक-२ पुं० *[तिन्दुक]*
तत्र गण्डीतिन्दुकनामा यक्षो वसति उत्त० १२ अ०। ठा०।

तिंदुक-३ पुं० *[तिन्दुक]*
चैत्यविशेषे, श्रावस्तीनगरीचैत्ये, ठा० ७ ठा०

तिंदुक-४ पुं० *[तिन्दुक]*
त्रीन्द्रियजीवविशेषे, उत्त०३६ अ०।

तिंदूस- पुं० *[तिन्दूस]*
बहुबीजकफलप्रधाने वृक्षविशेषे, पन्न०१ पद

तिंदूसय- पुं० *[तिन्दूसक]*
कन्दुके, नाया०१ श्रु०१८ अ०।
क्रीडाविशेषे, आव०म० १ अ० ।

तिकंडग- त्रि० *[त्रिकण्डक]*
कण्डत्रययुक्ते, मेरुः–त्रीणि कण्डान्यस्येति त्रिकण्डकः, तद्यथा–भौमं, जाम्बूनदं, वैडूर्यमिति। सूय० १ श्रु०६ अ०।

तिकट्टु– इतिकृत्वा। आव० ७९३।

तिकट्ठ- अव्य० *[त्रिकृत्वम्]*
त्रीन् कृत्वेत्यर्थे, भग० २ श० १ उ०।

तिकडुय- न० *[त्रिकटुक]*
त्रयाणां कटूनां समाहारस्त्रिकटु, त्रिकटु एव त्रिकटुकम्। शुण्ठी मरिचपिप्पल्यात्मके कटुत्रयसमाहारे, उत्त० ३४ अ०। अणुओ०।

तिकरणभावसुद्ध- त्रि० *[त्रिकरणभावशुद्ध]*
त्रिविधेन त्रिप्रकारेण कर णेन मनोवाक्कायलक्षणेन सुविशुद्धे, मनसाऽप्यसंयमानभिलाषाद् भावेन च परिणामेन विशुद्ध इह-लोकाऽऽद्याशंसाविप्रमुक्तत्वात् त्रिकरणभावविशुद्धः। तस्मिन्, वव० ३ उ०।

तिकरणसुद्ध- न० *[त्रिकरणशुद्ध]*
मनोवाक्कायलक्षणकरणत्रयस्य दायकसंबन्धिनो विशुद्धतायाम्, विपा० २ श्रु०१ अ०।

तिकूड- पुं० *[त्रिकूट]*
त्रीणि कूटान्यस्य। लङ्कापुरसन्निहिते सुवेलाऽऽख्ये पर्वते, ठा० ४ ठा०२ उ०।
'दो तिकूडा।' ठा०२ ठा०३ उ०।
जम्बूद्वीपे मेरुपर्वतस्य पूर्वस्मिन् भागे शीताया महानद्या दक्षिणस्यां दिशि आद्ये वक्षस्कारपर्वते, ठा० ४ ठा०२ उ०।

तिकोण- त्रि० *[त्रिकोण]*
त्रयः कोणा यस्य। त्रिकोटियुक्ते पदार्थे, ठा०१ ठा०।
शृङ्गाटके, ठा० ५ ठा० १ उ०।

तिक्ख- त्रि० *[तीक्ष्ण]*
गुरुके, अतिपातिनि च। वव०१ उ०।
परुषे, भग०१९ श०३ उ०।
वेगवति, जंबू०२ वक्ष०
तीक्ष्ण- भेदिक। भग०।
तीक्ष्णाच्छेदकरणात्मकम्। दश०।

तिक्खतुंडा- स्त्री० *[तीक्ष्णतुण्डा]*
घृतेल्लिकायाम्, कल्प०६ क्षण०।

तिक्खुत्त- अव्य० *[त्रिःकृत्वस्]*
त्रीन् वारान् कृत्वेत्यर्थे, विपा० १ श्रु० १ अ०। दशा०। ठा०। निसि०। रा०। प्रति०। कल्प०। आव०म०। निर० । उव०।

तिग- न० *[त्रिक]*
रथ्यात्रयमीलकस्थाने, बुह० १ उ०। जीवा०। भग०। कल्प०। उव०। नाया०। अणुओ०। आव०म०। सूय०।

तिगिच्छ- पुं० *[चिकित्स]*
किञ्जल्के, ठा० १० ठा०।
वैद्ये, वव० ५ उ०।
दशमकल्पे देवानां विमानविशेषे, सम० २० सम०।

तिगिच्छग- त्रि० *[चिकित्सक]*
रोगप्रतीकारकर्तरि, ठा०।

तिगिच्छा- स्त्री० *[चिकित्सा]*
चिकित्सनं चिकित्सा। सा द्विविधा–सूक्ष्मा, बादरा च तत्र सूक्ष्मा औषधविधिवैद्यज्ञापनेन। बादरा स्वयं चिकित्साकरणेन, अन्यस्मात्कारणेन च। । पिंड०। विशे०।
द्रव्यौषधाऽऽद्युपयोगतः पीडोपशमे, आचा० १ श्रु० ९ अ० ४ उ०। गच्छा०।
चिकित्सया पिण्डोत्पादनम्।उत्पादनादोषभेदे, ठा०३ ठा०४ उ०
रोगप्रतिकारः। निसि० । रोगप्रतिकारः। पिंड०।
मतिविभ्रमः। आव०।

तिगिच्छापिंड- पुं० *[चिकित्सापिण्ड]*
चिकित्सां वमनविरेचनवस्तिकर्माऽऽदि कारयतो वैद्यभैषज्यादि सूचयतो वा पिण्डार्थं चिकित्सापिण्डः। चिकित्सया पिण्डोत्पादनम्। उत्पादनादोषभेदे, आचा०।

तिगिच्छासंहिया- स्त्री० *[चिकित्सासंहिता]*
चिकित्साशास्त्रे श्लोकस्थाननिदानशारीरचिकित्सितकल्पसंज्ञकायां मूलसंहितायाम्, सूय० २ श्रु०२ अ०।

तिगिच्छासत्थ- न० *[चिकित्साशास्त्र]*
आयुर्वेदे, ठा०८ ठा०।

तिगिच्छि- न० *[पुष्परजस्]*
देशीशब्दो वा। पुष्परजसि, जंबू०४ वक्ष०।

तिगिच्छकूड- पुं० *[तिगिच्छकूट]*
चमरस्य उत्पातपर्वते, भग० २ श० ४ उ०। ठा०।
'दो तिगिच्छिकूडा।' ठा०२ ठा०३ उ०।

तिगिच्छिदह- पुं० *[तिगिच्छिह्रद]*
तिगिच्छिः पौष्परजः तत्प्रधाना ह्रदस्तिगिच्छिह्रदः। निषधवर्षधरपर्वतमध्ये ह्रदे, जम्बूमन्दरस्य दक्षिणे तृतीयह्रदे, जंबू०।

तिगिच्छिय- पुं० *[चिकित्सक]*
रोगापनयने, रोगापनयनकर्तरि वैद्ये,। ठा०९ ठा०।

तिगुण- न० *[त्रिगुण]*
त्रयाणां समाहारः। साङ्ख्योक्ते प्रधाने, त्रिभिर्गुण्यते 'गुण' संख्याने, त्रिभिर्गुणिते, । अणुओ०। जंबू०।

तिगुणुक्कंड- त्रि० *[त्रिगुणोत्कण्ड]*
त्रिगुणं त्रीन् वारान् यावदुत्प्राब-ल्येन कण्डनं छण्टनं येषां ते त्रिगुणोत्कण्डाः। त्रीन् वारान् कण्डिते, पिंड०।

तिगुत्त- त्रि० *[त्रिगुप्त]*
तिसृभिरट्टालकोच्छूलकशतघ्नीसंस्थानीयाऽऽदिभिः मनोगुप्त्यादिगुप्तिभिर्गुप्तम्, उत्त० ९ अ०।
मनोवाक्कायकर्मभिर्गुप्ते,। दश०। आव०। सम०।
गुप्ताऽऽत्मनि, ठा०९ ठा०।
त्रिस्रो गुप्तयो यत्र तत् त्रिगुप्तम्–मनसा सम्यक् प्रणिहितो, वाचाऽस्खलितान्यक्षराण्युच्चरन्, कायेनाऽऽवर्त्तानविराधयन् वन्दनकं करोति। दश०।
मनोवाक्कायगुप्ते, अर्थात् अकुशलमनोवाक्कायप्रवृत्तिनिरोधिनि, कुशलमनोवाक्कायोद्दीपके, आव०म०१ अ० ।

तिगोण- त्रि० *[त्रिकोण]*
त्रयः कोणा यस्य। त्रिकोटियुक्ते पदार्थे, आव०म०।

तिघरंतरिय- पुं० *[त्रिगुहान्तरिक]*
त्रीणि गृहाणि अन्तरं भिक्षाग्रहणे येषां ते त्रिगृहान्तरिकाः। एकत्र गृहे भिक्षां गृहीत्वाऽप्यभिग्रविशेषाद् गृहत्रयमतिक्रम्य पुनर्भिक्षां गृह्णन्ति, न निरन्तरं, दिन द्वयान्तरं वा। तेषु, उव०।

तिचक्खु- पुं० *[त्रिचक्षुष्]*
उत्पन्नज्ञानदर्शनधरे श्रमणे माहने, ठा०३ ठा०४ उ०।

तिच्छडिय- त्रि० *[त्रिच्छटित]*
त्रीन् वारान् छटिते, रा०। जीवा०।

तिट्ठाणकरणसुद्ध- त्रि० *[त्रिस्थानकरणशुद्ध]*
त्रीणि स्थानानि उरः प्रभृतीनि, तेषु करणेषु क्रियायां शुद्धं त्रिस्थानकरणशुद्धम्। तस्मिन्, तद्यथा–
'उरः शुद्धं, कण्ठशुद्धं, शिरोविशुद्धं च। तत्र यदि उरसि स्वरः स्वभूमिकानुसारेण विशालो भवति, तत उरोविशुद्धम्। स एव यदि कण्ठे वर्तितो भवंति अस्फुटितश्च, ततः कण्ठविशुद्धम्। यदि पुनः शिरः प्राप्तः सन् सानुनासिको भवति, ततः शिरोविशुद्धम्।
यदि वा उरः–कण्ठशिरोभिः श्लेष्मणाऽव्याकुलितैर्विशुद्धिर्गीयते, तत् उरःकण्ठ शिरोविशुद्धत्वात् त्रिस्थानकरणविशुद्धम्। रा०। जंबू०। जीवा०

तिणइय- न० *[त्रिनयिक]*
त्रिनयोपेते सूत्रे, यानि त्रैराशिकमतमवमम्ब्य द्रव्यास्तिकाऽऽदिनयत्रिकेण चिन्त्यन्ते। नं०।

तिणय- त्रि० *[त्रिनत]*
मध्यपार्श्वद्वयलक्षणस्थानत्रयेऽवनते, भग०३ श०६ उ०। जीवा०

तिणसूय- पुं०न० *[तृणशूक]*
तृणाग्रे, भग०१५ श०।

तिणहत्थय- न० *[तृणहस्तक]*
तृणपूलके, भग०३ श०३ उ०।

तिणाम- न० *[त्रिनाम]*
त्रिभेदे नाम्नि, तच्च–तिणामे तिविहे पण्णत्ते। तं जहा–दव्वणामे, गुणणामे, पज्जवणामे अ।' अणुओ०।
'तं पुण णामं तिविहं, इत्थी पुरिसे नपुंसगे चेव।' अणुओ०।

तिणिस- पुं० *[तिनिश]*
वृक्षविशेषे, दश०६अ० ।जीवा० ।निसि०। उव०। ठा०। नाया०।

तिण्ण-१ त्रि० *[तीर्ण]*
अतिक्रान्ते, सूय० १ श्रु०१२ अ०।
पारंगते, सूय०१ श्रु०१० अ०।

तिण्ण-२ त्रि० *[तीर्ण]*
तीर्थकृत्सु, 'तिण्णाणं तारयाणं।' रा०

तिण्ण-३ त्रि० *[तीर्ण]*
तीर्ण इव तीर्णः, संसारसागरमिति गम्यते। उव०।
तीर्णवत्तीर्णः विशुद्धसम्यग्दर्शनाऽऽदिलाभाद्ध्वार्णवमिति गम्यते। दश०१० अ०। विशे०। उत्त०। कल्प०।
संसारसागरं, भाविनि भूतवदुपचारात्तीर्णाः।आचा०१श्रु०८ अ०६

तिण्ण-४ त्रि० *[तीर्ण]*
सर्वभावज्ञास्तीर्णाः परमदुस्तरम्।आव०म० १अ० ।सम० ।जीवा०

तिण्हा- स्त्री० *[तृष्णा]*
पिपासायाम्, सम०५२ सम०।

तितिक्ख- त्रि० *[तितिक्ष]*
तितिक्षते सह्यते इति तितिक्षम् ।परीषहाऽऽदीनि, ठा०५ठा०१ उ०

तितिक्खण- न० *[तितिक्षण]*
अधिसहने, ठा०६ ठा०।

तितिक्खमाण- त्रि० *[तितिक्षमाण]*
अधिसहति, सूय०१ श्रु०७ अ०

तितिक्खा-१ स्त्री० *[तितिक्षा]*
सहने, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०।
क्षमायाम्, उत्त०१ अ०। नाया०। आचा०।
क्षमा, तितिक्षा, क्रोधनिरोध इत्येकार्थाः।आव०चू० ४ । उवा०।

तितिक्खा-२ स्त्री० *[तितिक्षा]*
परीषहोपसर्गसहनरूपायां क्षान्तौ, सूय०१ श्रु०८ अ०।
परीषहोपसर्गाऽऽदिदुःखविशेषसहने, आचा०१ श्रु०८ अ०८ उ०।
परीषहभेदे, परीषहाऽऽदिजये तितिक्षा कार्या। आव०४ अ०।
परीषहाऽऽदिजये, सम०३४ सम०।

तित्त- पुं० *[तिक्त]*
श्लेष्माऽऽदिदोषहन्तरि निम्बाऽऽद्याश्रिते रसविशेषे,
'एगे तित्ते।' ठा०१ ठा०।
निम्बाऽऽदिवत्तिक्तरसोपेते, त्रि०। पण्हा०३ अ०। तं०। नाया०। उत्त०। पन्न०। भग०।

तित्तग- पुं० *[तिक्तक]*
भूनिम्बे चिर तिक्ते, कृष्णखदिरे, निम्बे, इङ्गुदीवृक्षे, तिक्तार्थे। दश०। निसि०
तिक्तकं एलुकवालुङ्कादि। दश०।

तित्तऽलाउय- स्त्री० *[तिक्तालाबुक]*
कटुकतुम्बके, नाया०१ श्रु०९ अ०

तित्ति- स्त्री० *[तृप्ति]*
घ्राणौ, विशे०। पण्हा०।

तित्तिय– पुं० *[तित्तिक]*
चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। पण्हा०।

तित्तिर- पुं० *[तित्तिरि]*
पक्षिविशेषे, सूय०२ श्रु०२ अ०। पण्हा०। उवा०। पन्न०।

तित्तिरकरण- न० *[तित्तिरिकरण]*
तित्तिरिमुद्दिश्य यत्र किञ्चिक्रियते तथा यत्र स्थाप्यते एवंभूते स्थाने, आचा०।

तित्तिरलक्खण- न० *[तित्तिरिलक्षण]*
तित्तिरिस्वरूपप्रतिपादके ग्रन्थ-विशेषे, सूय०२ श्रु०२ अ०।

तित्थ-१ न० *[तीर्थ]*
तीर्यतेऽनेनेति तीर्थम्। द्रव्यतो नद्यादीनां समोऽनपायश्च भूभागो, भौताऽऽदिप्रवचनं वा ।भावतीर्थं तु सङ्घः ।ठा०१ ठा०। आव०म०

तित्थ-२ न० *[त्रिस्थ]*
त्रिषु वा क्रोधाग्निदाहोपशमलोभतृष्णानिरासकर्ममलापनयन-लक्षणेषु ज्ञानाऽऽदिलक्षणेषु वा अर्थेषु तिष्ठन्तीति त्रिस्थम्। संघे, प्राकृतत्वात् 'तित्थं' ठा० १ ठा०।

तित्थ-३ न० *[त्र्यर्थ]*
त्रयो वा क्रोधाग्निदाहोपशमाऽऽदयोऽर्थाः फलानि यस्य तत्त्र्यर्थम्। अथवा– त्रयो ज्ञानाऽऽदयोऽर्था वस्तूनि यस्य तत्त्र्यर्थम्। संघे, ठा० १ ठा०।

तित्थअर- पुं० *[तीर्थकर]*
'तित्थयर' शब्दार्थे, विशे०।

तित्थंकर- पुं० *[तीर्थकर]*
तीर्थमुक्तलक्षणं तत् कुर्वन्त्यानुलोभ्येन हेतुत्वेन तच्छीलतया वेति तीर्थकराः। नं०।

तित्थगर- पुं० *[तीर्थकर]*
'तित्थयङ्क' शब्दार्थे, विशे०।

तित्थणिगार- पुं० *[तीर्थनिकार]*
केषाञ्चित्सत्यामपि कर्मक्षयानन्तरं मोक्षवाप्तौ तथाऽपि स्वतीर्थनिकारदर्शनतः पुनरपि संसाराऽभिगमनं भवतीदमाश-ङ्क्याऽऽह–कर्माभावे कुतः संसाराभिगमनं ? स्वदर्शनानुसार निकाराभिनिवेशो न भवति एव. सूय० १ श्रु० १५ अ०।

तित्थपवत्तणचम्यिणिबद्ध- न० *[तीर्थप्रवर्तनचरित्रनिबद्ध]*
नाट्यभेदे, रा०।
श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य चरमपूर्वमनुष्यभव-चरमच्यवन - चरमगर्भसंहरण चरमभरतक्षेत्रावसर्पिणीतीर्थङ्करजन्माऽभिषेक-चरमबालभाव-चरमयौवन-चरमकामभोग-चरमनिष्क्रमण-चरम तपश्चरण-चरमज्ञानोत्पाद-चरमतीर्थप्रवर्तन-चरम-परिनिर्वाणनि-चरमचरमनिबद्धं नाम द्वात्रिंशत्तमं नाट्यविधिमुपदर्शयति रा०।

तित्थभेय- त्रि० *[तीर्थभेद]*
तीर्थानितीर्थभूतदेवद्रोण्यादीनि भिनत्ति द्विधा करोति तद् द्रव्यमोषणाय तत्परिकरभेदनेनेति तीर्थभेदः नाया०१ श्रु०२ अ०। तीर्थमोषके तस्करे, तीर्थमोचके, पण्हा०३ अ०।

तित्थमाट्टिया- स्त्री० *[तीर्थमृत्तिका]*
तीर्थमृत्तिकायम्, रा०।

तित्थयर- पुं० *[तीर्थकर]*
तीर्यते भवोदधिरनेन अस्मात् अस्मिन्निति वा तीर्थं वक्ष्यमाण स्वरूपम्, तत्करणशीलः तीर्थकरः। अर्हति, विशे०।

तित्थयरगंडिया- स्त्री० *[तीर्थकरगण्डिका]*
तीर्थकरैकवक्तव्यतार्था-धिकारानुगतायां वाक्यपद्धतौ, सम०।

तित्थयरणाम- न० *[तीर्थकरनामन्]*
नामकर्मभेदे, यदुदयवशादष्टमहाप्रातिहार्यप्रमुखाश्वतुस्त्रिंशदति-शयाः प्रादुर्भवन्ति।

तित्थयरणामगोयकम्म- न० *[तीर्थकरनामगोत्रकर्म]*
तीर्थकरत्वनिबन्धनं नाम तीर्थकरनाम, तच्च गोत्रं च कर्मविशेष एवेत्येकवद्भावात् तीर्थकरनामगोत्रम्। अथवा–तीर्थकर इति नामगोत्रमभिधानं यस्य तत्तीर्थकरनामगोत्रम्। तीर्थकरनामाख्ये नामकर्मभेदे, ठा०।

तित्थयरत्त- न० *[तीर्थकरत्व]*
अर्हत्वे, आव०म०।

तित्थयरसम- पुं० *[तीर्थकरसम]*
सर्वाऽऽचार्यगुणयुक्ततया सुधर्माऽऽदिवत्तीर्थकरकल्पे, गच्छा०।

तित्थयरसिद्ध- पुं० *[तीर्थकरसिद्ध]*
तीर्थकराः सन्तो ये सिद्धा ऋषभाऽऽदिवत्ते तीर्थकरसिद्धाः। सिद्धभेदेषु, नं०। आव०चू०।

तित्थयराभिमुह- त्रि० *[तीर्थकराभिमुख]*
तीर्थकरसम्मुखे, बुह०१उ०

तित्थयरी- स्त्री० *[तीर्थकरी]*
स्त्रीत्वविशिष्टे तीर्थकरे, यथा बुद्धीमल्लिस्वामिनीप्रभृतिका तीर्थकरी, सामान्यसाध्व्यादिका वा वैदितव्या। यतः सिद्धप्राभृतटीकायामेवोक्तम्–'बुद्धीओ वि मल्लीपमुहाओ अन्नाओ य सामन्नसाहुणीपमुहाओ व हुंति त्ति।' नं०।

तित्थसिद्ध- पुं० *[तीर्थसिद्ध]*
तीर्यते संसारसागरोऽनेनेति तीर्थम्, यथाऽवस्थितसकलजीवा-जीवाऽऽदिपदार्थसार्थप्ररूपकं परमगुरुप्रणीतं प्रवचनं, तच्च निराधारं न भवतीति सङ्घः, प्रथमगणधरो वा; तस्मिन्नुत्पन्ने ये सिद्धास्ते तीर्थसिद्धाः। पन्न०१ पद०। नं०। आव०चू०।
तीर्थेसति सिद्धा निर्वृत्ता ऋषभसेनगणधराऽऽदिवदिति तीर्थ-सिद्धाः । सिद्धभेदेषु ठा० १ ठा०।

तित्थाणुसज्जणा- स्त्री० *[तीर्थानुषज्जना]*
जिनशास्त्रज्ञनुषज्जनायाम्, कल्प०।

तित्थाभिसेअ- पुं० *[तीर्थाभिषेक]*
लौकिकतीर्थस्नाने, उव०।

तित्थिय- त्रि० *[तीर्थिक]*
अन्यमतीये सम्मतपापे, आचा०१ श्रु०८ अ०१ उ०।

तित्थुग्गालिय- न० *[तीर्थोद्गालिक]*
स्वनामख्याते प्रकीर्णके, तित्थु०

तिदंड- न० *[त्रिदण्ड]*
त्रयाणां दण्डानां समाहारस्त्रिदण्डम्। त्रयाणां दण्डानां समाहारे, उव०। भग०।

तिदंडि- पुं० *[त्रिदण्डिन्]*
मनोवाक्कायदण्डत्रयपरिज्ञानार्थं दण्डत्रयधारके वेदान्तावलम्बि-श्रमणभेदे, आव०म०१ अ० । सूय०।
त्रिदण्डी सुवर्णपुरुषकारीपरिव्राजकः। आव०।

तिदिस- न० *[त्रिदिश्]*
त्रिस्रो दिशः समाहतास्त्रिदिक्। दिक् त्रये, रा०।

तिपरिवत्त- त्रि० *[त्रिपरिवर्त्त]*
त्रिभिर्वारैर्वेष्टनीये, बुह०३ उ०।

तिपह- न० *[त्रिपथ]*
त्रयाणां पथां समाहारे, । अणुओ०।

तिपायण- न० *[त्रिपातन]*
'कायवयमणा तिन्नि उ, अहवा देहा उ इंदिया पाणा। सामित्ता वायाणे, होयऽतिवाओ य करणेसुं । इत्युक्तलक्षणे प्राणिविनाशे, पिंड०।

तिपुड- पुं० *[त्रिपुट]*
त्रयः पुटा यस्य। खेसारीकलापभेदे, शरे, तालकयन्त्रे, गोक्षुरे, हस्तभेदे च। सूक्ष्मैलायाम्, मल्लिकायाम्, त्रिवृदोषधौ, कर्ण-स्फोटनायां, देवीभेदे च। जंबू० ५ वक्ष०

तिपुर- पुं० *[त्रिपुर]*
त्रीणि पुराणि त्रिपुरम्। अणुओ०।

तिप्प- त्रि० *[तृप्त]*
अतिशयोपभोगेन निवृत्तेच्छे, आचा०१ श्रु०२ अ०५ उ०।

तिप्प- धा० *[तृप्]*

क्षरणे, आचा०१ श्रु०२ अ०५ उ० ।

शरीरबलं क्षरामि। सूय०२ श्रु०१ अ० ।

'तिप्पंति।' सुखाच्चयावयन्त्यात्मानं, पराँश्च। सूय०२ श्रु०२ अ० ।

तिप्पणया-१ स्त्री० *[तेपनता]*

तिपेः क्षरणार्थत्वादश्रुमोचने, भग०२५ श०७ उ० । ठा० ।

शोकातिरेकादेव अश्रुलालाऽऽदिक्षरणप्रापणायाम्, । भग० ३ श० ३०

आर्तध्यानलक्षणे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।

परिदेवने, सूय०२ श्रु०४ अ० ।

त्रिभिर्योगैः परितापे, आव०चू०४ अ० ।

तिप्पणया-२ स्त्री० *[त्रिपातनता]*

त्रिभ्यो मनोवाक्कायेभ्यः पातनं त्रिपातनं, तद्भावस्त्रिपातनता।

त्रिपातनभावे, सूय० २ श्रु० ४अ

तिबिंदु- न० *[त्रिबिन्दु]*

बिन्दुत्रयसमाहारे, अणुओ० ।

तिमि- पुं० *[तिमि]*

मत्स्यभेदे, पन्न०१ पद। जीवा० । कल्प० ।

'अस्ति मत्स्यस्तिभिर्नाम, शतयोजनविस्तरः। तिमिङ्गिलगिलोऽप्यस्ति, तद्गिलोऽप्यस्ति राघवः। सूय०२ श्रु०३ अ० ।

महामत्स्ये, पण्हा० १ अ० ।

तिमिंगिल- पुं० *[तिमिङ्गिल]*

तिमिं मत्स्यं गिरति। मत्स्यभेदे, पन्न० १ पद।

मीने, कल्प० । सूय० । जीवा० ।

महामत्स्यतमे, पण्हा०१ अ० ।

तिमिंगिलगिल- पुं० *[तिमिङ्गिलगिल]*

महामत्स्ये, सूय०२ श्रु०६अ०

तिमिर- न० *[तिमिर]*

अन्धकारे, कल्प०३ क्षण० ।

'जदा कण्हच-उद्दसीए रातीए रयरेणुधूमिगा भवति, तदा तम्मि तिमिरं भण्णति।

अहवा-पित्तुदएण दव्वचक्खिदियस्संतरकरणं भवति।' निसि०४ उ० ।

विज्ञानाल्पतायाम्, बहलापरिज्ञाने, आव०चू० ५ अ० ।

पर्वतकवनस्पतिभेदे, पन्न० १ पद० ।

तिमिरसम्पाद्यो भ्रमः। पन्न० ।

पित्तुदयविकारेण दव्वचरिंवदियस्य सवलीकरणं। निसि० ।

तिमिरं निकाचितं ज्ञानावर-णीयम्। आव० ।

तिमिला- स्त्री० *[त्रिमिला]*

तूर्यभेदे, उव० ।

तिमिसगुहा- स्त्री० *[तिमिस्रगुहा]*

वैताढ्यगुहायाम्, यया स्वक्षेत्राच्चक्रवर्त्ती चिलातक्षेत्रं याति। ठा० ९ ठा० ।

ताश्च भरतैरवतवर्षयोर्दीर्घवैताढ्ययोर्द्धे, कच्छाऽऽदि द्वात्रिंशद्विजयेषु द्वात्रिंशदित्येवं चतुस्त्रिंशज्जम्बूद्वीपे। (ठा०८ ठा०)

एवं धातकीखण्डे, पुष्करार्द्धे च प्रत्येकमष्टषष्टिस्तासां प्रमाणम्। ठा०२ ठा०३ उ० ।

तत्र कृतमालको देवः। ठा०२ ठा०३ उ० । सम० । जंबू० आव० ।

'तिमिसगुहा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तणेणं।' ठा० ८ ठा० ।

तिमिसगुहाकूड- पुं०न० *[तिमिस्रगुहाकूट]*

तिमिस्रगुहाऽधिपदेवस्य निवासभूतं कूटं तिमिस्रगुहाकूटम्। वैताढ्यपर्वतस्य तृतीये कूटे, जंबू० १ वक्ष० । ठा० ।

तिय-१ न० *[त्रिक]*

त्रित्वसंख्यायाम्, रा० । आव०म० ।

त्रिपथयुक्ते स्थाने, नाया० १ श्रु०१ अ० ।

त्रिकं रथ्यात्रयमीलनस्थानम्। पण्हा० ।

तिय-२ त्रि० *[त्रिज]*

त्रिभ्यो धातुमूलजीवलक्षणेभ्यो जातं त्रिजम्। सर्वस्मिन् वस्तुनि, विशे० ।

तियंकर- पुं० *[त्रिकङ्कर]*

स्वनामख्याते क्षपके, पिंड० ।

तियस- पुं० *[त्रिदश]*

तिस्रो दशा जन्मसत्ताविनाशाऽऽख्याः, न तु वृद्धिपरिणामक्षया मर्त्यानामिव दशा येषां ते त्रिदशाः। देवेषु, । आव०म० ।

तियसलोग- पुं० *[त्रिदशलोक]*

स्वर्गे, । आव०म० ।

तियसिंदणमंसिय- त्रि० *[त्रिदशेन्द्रनमस्थित]*

त्रिदशाः सुमनसस्तेषामिन्द्रास्त्रिदशेन्द्रास्तैर्नमस्थितः। देवेन्द्रनते, गच्छा०१ अधि० ।

तिरयणमाला- स्त्री० *[त्रिरत्नमाला]*

ज्ञानदर्शनचारित्ररूपरत्नत्रयमालायाम्, संथा० ।

'चारित्तसुद्धसाला, तिरयणमाला तुमे भव्वा।' संथा० ।

तिरासि- न० *[त्रिराशि]*

जीवाजीवनोजीवभेदात्रयो राशयः समाहतास्त्रिराशि। राशित्रये, ठा०७ ठा० ।

तिरिअजोणि- पुं० *[तिर्यग्योनि]*

तिरश्चामुत्पत्तिस्थाने, पन्न०१ पद।

तिरिक्ख- त्रि० *[तिर्यक्]*

तिरोऽञ्चतीति तियङ्, तिसरस्तिर्यदिशः। पन्न०१ पद।

चतसृणा गताना चतुर्थतिमापन्ने, पण्हा०१ अ० ।

तिरिक्खजोणिय-१ पुं० *[तिर्यग्योनिक]*
तिर्यग्लोके योनय उत्पत्तिस्थानानि येषां ते तिर्यग्योनिकाः। जीवा०१ प्रति०। ठा०।
'तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता।' तं जहा–इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा।' ठा०३ ठा०१ उ०।

तिरिक्खजोणिय-२ पुं०
तिर्यग्लोके योनयस्तिर्यग्योनयः, तत्र जास्तिर्यग्योनिजाः। जीवा०१ प्रति०। जीवभेदे, ठा०८ ठा०। जीवा०।
'तिविहा तिरिक्खजोणिया पण्णत्ता। तं जहा–इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा।' ठा०३ ठा०१ उ०।
तिर्यक् त्वकारणानि–'चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति। तं जहा–माइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेणं, कूडतुलाकूडमाणेणं।' ठा०४ ठा०४ उ०।

तिरिक्खजोणिय-३ त्रि०
तैरिश्चे तिर्यग्योनिकृते, ठा०४ ठा०४ उ०।

तिरिक्खभूय- त्रि० *[तिर्यग्भूत]*
पशुकल्पे, पण्हा०३ अ०।

तिरिघट्टना– स्त्री० *[तिर्यग्घट्टना]*
प्रत्युपेक्षणां कुर्वन् वस्त्रेण तिर्यक् कुट्यादि घट्टयति। ओह० ।

तिरिच्छ- त्रि० *[तिरश्चीन]*
तिर्यग्गते, 'गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः' । आचा०। निसि०।

तिरिच्छसंतारिमा- स्त्री० *[तिरश्चीनसन्तारिमा]*
लाङ्गूलवद्दजुगामिन्यां नौकायाम्, निसि० १ उ०।

तिरिच्छसंपातिम- त्रि० *[तिरश्चीनसंपातिम]*
तिर्यग्गामिनि, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०३ उ०।

तिरिय- त्रि० *[तिर्यक्]*
चतसृषु गतिषु चतुर्थगतिमापन्ने, सूय०१ श्रु० ३ अ०१ उ०। ठा०। । आचा०। उव०। संथा०।
तिर्यग्लोके, ठा०३ ठा०४ उ०।
मध्ये, अणुओ०।

तिरिय- त्रि० *[तीरित]*
पारं प्रापिते, पण्हा०१ अ०।
अन्तं प्रापिते, वव०९ उ०।
तीरं पारं नीता पूर्णेऽपि कलाऽवधौ किञ्चित्कालावस्थानेन। ठा० ७ ठा

तिरियंकट्टु- अव्य० *[तिर्यक्कृत्वा]*
अपहस्तयित्वेत्यर्थे, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ०।

तिरियंगोरवपरिणाम- पुं० *[तिर्यग् गौरवपरिणाम]*
आयुःपरिणामभेदे येन आयुःस्वभावेन जीवस्य तिर्यग् दिशि गमनशक्तिलक्षणपरिणामो भवति। ठा०९ ठा०।

तिरियगइ- स्त्री० *[तिर्यग्गति]*
तिर्यक्षु तिरश्चां तिर्यत्त्वप्रसाधिका गतिः। ठा०५ ठा०३ उ०।
तिर्यङ्नामकर्मोदयसंपाद्ये तिर्यत्त्वलक्षणे पर्याये, ठा० १० ठा०।
तिर्यक्परिभ्रमणे, चंद०।

तिरियदिसा- स्त्री० *[तिर्यग् दिशा]*
पूर्वाऽऽदिकासु दिक्षु, आव०६ अ०।
एताश्चाष्टापि रुचकात्तिर्यक् प्रव्यूढत्वात्तिर्यग्दिश इति व्यवह्रियन्ते। आव०म०१ अ० ।

तिरियदिसिप्पमाणाइक्कम-पुं० *[तिर्यग्दिक् प्रमाणातिक्रम]*
तिर्यग्दिशि यावत्प्रमाणं परिगृहीत तस्यातिलङ्घने,आव०६, उवा०

तिरियदिसिव्वय- न० *[तिर्यग्दिग्व्रत]*
तिर्यग्दिशः पूर्वाऽऽदिकास्तासां संबन्धि तासु वा व्रतं तिर्यक् दिग्व्रतम्। एतावती दिक् पूर्वेणावगाहनीया, एतावती दक्षिणेन इत्यादि, न परत इत्येवंभूते दिग्व्रते आव०६ अ०।

तिरियपव्वय- पुं० *[तिरश्चीनपर्वत]*
तिरश्चीनं पर्वतं तिरश्चीनपर्वतम्। गच्छतो मार्गावरोधके पर्वते, भग० १४ श० ५ उ०।

तिरियभित्ति- स्त्री० *[तिर्यग्भित्ति]*
तिरश्चीनायां प्राकारवरण्डकाऽऽदिभित्तौ, । भग० १४ श० ५ उ०। आचा०

तिरियलोग- पुं० *[तिर्यग्लोक]*
सातिरेकः सप्तरज्जुप्रमाणोऽधोलोकोर्ध्वलोकयोर्मध्ये १८ योजन शतप्रमाणस्तिर्यग्भागावस्थितत्वात्तिर्यग् लोकः।ठा०३ ठा० २ उ०
लोकभेदे, अणुओ०।

तिरियलोगचूला- स्त्री० *[तिर्यग्लोकचूडा]*
तिर्यग्लोकस्य चूडा तिर्यग्लोकचूडा, तिर्यग्लोकातिक्रान्तत्वात्। अथवा–तिर्यग्लोकप्रतिष्ठितस्य मेरोरुपरि चत्वारिंशद्योजना चूडा तिर्यग्लोकचूडा। तिर्यग्लोकोपरिभागे, निसि० १ उ०।

तिरियवसइ- स्त्री० *[तिर्यग्वसति]*
तिर्यग्योनी, पण्हा०१ अ०।

तिरियवाय- पुं० *[तिर्यग्वात]*
तिर्यग्गच्छन् यो वाति वातः स तिर्यग्वातः। तिर्यङ् निमज्जति वायुभेदे, पन्न०१ पद।

तिरियविग्गहगइ- स्त्री० *[तिर्यग् विग्रहगति]*
गतिभेदे, ठा०१०ठा०

तिरियसंसारविउस्सय- पुं० *[तिर्यक्संसारव्युत्सर्ग]*
संसारव्युत्सर्गभेदे, उव०।

तिरीड- पुं०न० *[किरीट]*
शेखरत्राणयुक्ते, उव०। पन्न०।
मुकुटे, सम०।

तिरीड- पुं० *[तिरीट]*
वृक्षविशेषे, बुह०२ उ० ।
तिरीडपट्टग- न० *[तिरीटपट्टक]*
तिरीटो वृक्षविशेषस्तस्य यः पट्टो वल्कललक्षणं, तन्निष्पन्नं वा तिरीटपट्टकम् । बुह०२ उ० ।
वृक्षत्वङ्मये वस्त्रे, ठा०५ ठा०३ उ० ।
तिरीडरुक्खस्स वागो तस्स तंतू पट्टसरिसो स । निसि० ।
तिरोभाव- पुं० *[तिरोभाव]*
अन्तर्धाने, विशे० ।
तिरोहिअ- त्रि० *[तिरोहित]*
अन्तर्हिते, आच्छादिते, आचा० ।
तिल-१ पुं० *[तिल]*
स्वनामख्याते धान्यभेदे, 'साली-बीही-गोहुम-जवा-कलम-सूरि-तिल-मुग्गा । पन्न०१ पद ।आचा० ।जंबू० ।आव० ।विपा० । ठा०
वर्णेन तिलसदृशकाले, यापिताः कालान्तरं प्राप्ता ये तिला धान्य विशेषास्तद्वद् ये वर्णसाधर्म्यात्ते तथा । नाया०१ श्रु०१७ अ० ।
तिल-२ पुं० *[तिल]*
एकत्रिंशे महाग्रहे, सूर०२० पाहु० । । कल्प० ।
'दो तिलया ।' ठा०२ ठा०३ उ० ।
तिलग-१ पुं० *[तिलक]*
वृक्षविशेषे, भग०१श०१उ० ।सम० ।उव० । कल्प० । रा० । जंबू०
यः स्त्रीकटाक्षनिरीक्षितो विकसति तत्पुष्पे, जंबू०३ वक्ष० ।
तिलग-२ पुं० *[तिलक]*
विशेषकापरपर्याये ललाटाऽऽभरणविशेषे, उव० ।जंबू० ।नाया० । सूय० । तं० ।
पुण्ड्रे, सम० ७ सम० । तं० । नाया० । सूर० । चंद० ।
प्रथमवासुदेवस्य त्रिपृष्ठस्य प्रतिशत्रौ सम० ९ सम० ।
स्वनामख्याते द्वीपे, समुद्रे च । पन्न० १ पद० ।
वसन्तपुरनगरवास्तव्ये स्वनामख्याते श्रेष्ठिनि, यस्य सुदर्शना नाम भार्या । पिंड० ।
तिलगकरणी- स्त्री० *[तिलककरणी]*
तिलकः क्रियते यया सा तिलककरणी । दन्तमय्यां सुवर्णाऽऽत्मिकायां वा शलाकायाम्, सूत्र यया गोरोचयनाऽऽदियुक्तया तिलकः क्रियते । यदि वा गोरोचनया तिलकः क्रियते, सा च तिलककरणीत्युच्यते । अथवा–तिलकाः क्रियन्ते पिष्यन्ते वा यत्र सा तिलककरणी ।तिलकपेषणोपकरणे, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०
तिलगरयण- न० *[तिलकरत्न]*
पुण्ड्रविशेषे, जंबू० १ वक्ष० ।
तिलकरत्नानि पुण्ड्रकविशेषास्तैरर्द्धचन्द्रेश्च चित्राणि नानारूपाणि तिलकार्द्धचन्द्रचित्राणि । जीवा० १ प्रति० ।
तिलचुन्न- न० *[तिलचूर्ण]*
चूर्णिकाभेदे, 'से किं तं चुन्नियाभेदे ? चुन्नियाभेदे जं णं तिलचुन्नाण वा, मुग्गचुन्नाण वा ।' पन्न०१ पद० ।
तिलथंभ- पुं० *[तिलस्तम्ब]*
तिलवृक्षगुल्मे, कुम्भग्रामे तिलस्तम्बं दृष्ट्वा गोशालकस्य वीर-स्वामिनं प्रति तज्जीवपृच्छा । भग० १५ श० । आव० ।
तिलपिट्ठ- न० *[तिलपिष्ट]*
कुट्टिततिलचये, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ८ उ० ।
तिलपिष्टः । तिललोट्टः । दश० ।
तिलपुप्फवण्ण-१ पुं० *[तिलपुष्पवर्ण]*
चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रतारारूपे ग्रहभेदे, सूर० २० पाहु० । । चंद० ।
तिलपुप्फवण्ण-२ पुं० *[तिलपुष्पवर्ण]*
द्वात्रिंशत्तमे महाग्रहे, । ठा० १ ठा० । कल्प० ।
अष्टाशितौ महाग्रहे द्वात्रिंशत्तमः । जंबू०
तिलभट्ट- पुं० *[तिलभट्ट]*
अन्तर्दुष्टव्रणवत्कुथितहृदयाया उन्मत्तरामायाः पत्यो, तं० ।
तिलसंगलिया- स्त्री० *[तिलसंगलिका]*
तिलफलिकायाम्, भग० १५ उ० ।
तिलसक्कुलिया- स्त्री० *[तिलशष्कुलिका]*
तिलप्रधानायां पिष्टमयपोट्टलिकायाम्, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ० । जीवा० ।
तिलागणि- पुं० *[तिलाग्नि]*
तिला धान्यविशेषाः, तेषामवयवा अपि तिलाः,तेषामग्निस्तद्दहन प्रवृत्तो वह्निस्तिलाग्निः ।
तिलावयवदहनप्रवृत्ते वह्नौ, ठा०८ ठा० ।
तिलिविलिय- पुं० *[तिलिविलिक]*
जलचरजीवविशेषे, कल्प० ३क्षण
तिलोग- पुं० *[त्रिलोक]*
त्रयो लोकाः समाहतास्त्रिलोकाः । समाद्धतेषु त्रिषु लोकेषु, नं० ।
तिलोगदंसि- पुं० *[त्रिलोकदर्शिन्]*
त्रिलोकमूर्ध्वाधस्तिर्यग्लक्षणं द्रष्टुं शीलं येषां ते त्रिलोकदर्शिनः । तीर्थकृत्सु सर्वज्ञेषु, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ० ।
तिलोगमहिय- पुं० *[त्रिलोकमहित]*
त्रिलोकमहिते तीर्थकृति, बुह० ।
त्रयो लोकाः समाहृताः, समवसरणे त्रयाणामपि संभवात् । तथाहि–समागच्छन्ति भगवतां तीर्थकृतां समवसरणेष्वधोलो-कवासिनो भवनपतयः, तिर्यग् लोकवासिनो वाणमन्तरतिर्यग् पञ्चेन्द्रियज्योतिष्काः, ऊर्द्धलोकवासिनः कल्पोपपन्नका देवाः, त्रिलोकेन महिताः पूजिताः, त्रिभिर्वा लोकैर्महितास्त्रिलोकम-हिताः । बुह०१ उ० ।

तिलोदग- न० *[तिलोदक]*
निस्त्वचिततिलधावनजले, कल्प० क्षण।
तिलैः केनचित्प्रकारेण प्राशुकीकृते उदके, गच्छा० २ अधि०। ठा०। आचा०।
तत्प्रक्षालनजलम्। ठा०।

तिल्ल- न० *[तैल]*
तिलस्य विकारः, तिलसर्षपातसीकुसुम्भानां स्निग्धवस्तूनां स्नेहरूपे विकारे, पण्हा०।
तैलं चतुर्धा, तिलातसीकुसुम्भसर्षपभेदात्। ठा० ९ ठा०।

तिल्लग- त्रि० *[तैलक]*
तैलविक्रयकारके, बुह० १ उ०।

तिल्लोदा- स्त्री० *[तैलोदा]*
शशकाऽऽख्यन धूर्तेन परिकल्पिते वृष्टितिलसमुद्भूते नदीभेदे, निसि०१ उ०।

तिवई- स्त्री० *[त्रिपदी]*
मल्लस्येव रङ्गभूम्यां गतिविशेषे, नाया०१ श्रु० १६ अ०।
भूमौ पदत्रयन्यासे, उव०।
मल्ल इव रङ्गभूमौ त्रिपदीच्छेदं करोति। भग०३ श०२ उ०।
त्रिपदी भूमौ पदत्रयः न्यायः पदत्रयस्योन्नमनं वा। जंबू०।

तिवग्ग- पुं० *[त्रिवर्ग]*
त्रयो वर्गास्त्रिवर्गाः। धर्मार्थकामत्रये, लोकवेदसमयत्रये, सूत्रार्थतदुभयत्रये च। आव०चू० १ अ०। आव०म०। आचा०।
त्रिवर्गः त्रैलोक्यं धर्मार्थकामा वा। आव० ४२३।

तिवरिस- पुं०स्त्री० *[त्रिवर्ष]*
प्रव्रज्यापर्यायेण यस्य त्रीणि वर्षाणि नाधिकमित्येष त्रिवर्षो भवति। प्रव्रज्यापर्यायेण त्रिवर्षजाते नवे, वव० ३ उ०।

तिवरिसपरियाय- पुं०स्त्री० *[त्रिवर्षपर्याय]*
त्रीणि वर्षाणि पर्यायः प्रव्रज्यापर्यायो यस्य स त्रिवर्षपर्यायः। प्रव्रज्यापर्यायेण त्रिवर्षजाते नवे, वव० ३ उ०।

तिवलिय- त्रि० *[त्रिवलिक]*
रेखात्रयोपेते, रा०। उव०। नाया०। भग०

तिवली- स्त्री० *[त्रिवली]*
वलित्रये, पण्हा०३ अ०। विपा० ।

तिवलीविणीय- त्रि० *[त्रिवलीविनीत]*
तिस्रो वलयो विनीता विशेषतः प्रापिता यत्र तत् त्रिवली-विनीतम्। वलित्रययुक्ते, जीवा० ३ प्रति०४ उ०।

तिवस्सजाय- त्रि० *[त्रिवर्षजात]*
त्रीणि वर्षाणि जातायास्त्रिवर्षजाता ज्यो०२ पाहु०। ।
जन्मतो वर्षत्रयाणि जातानि यस्य स त्रिवर्षजातः। जन्मतः प्रव्रज्यातो वा त्रिवर्षजाते, तं०।

तिविट्ठ- पुं० *[त्रिपृष्ठ]*
वर्त्तमानप्रथमवासुदेवे, । पण्हा०। कल्प०। आव०। आव०चू०।
'तिविट्ठे णं वासुदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।' 'तिविट्ठे णं वासुदेवे असीइवाससयसहस्साइं महाराय: होत्था।' सम०८०
त्रिपृष्ठवासुदेवस्य चतुरशीतिवर्षलक्षाणि सर्वाऽऽयुरिति चत्वारि लक्षाणि कुमारत्वे, शेषं तु महाराज्ये इत्यादि। सम० ८० सम०।
प्रथमवासुदेवः श्रेयांसजिनकालभावीति, अप्रतिष्ठानो नरकः सप्तमपृथिव्यां पञ्चानां मध्यम इति। सम० ८४ सम०।
जनोपद्रवकारी विषमगिरिगुहावासी महाकेसरीमारकः। पण्हा०

तिविह- त्रि० *[त्रिविध]*
तिस्रो विधा यस्य स त्रिविधः। आव०म०१ अ० ।
त्रिप्रकारे, वव०१ उ०। पण्हा०। आव०।
मनोवाक्कायलक्षणे, कृतकारितानुमतिलक्षणे। सूत्र०१श्रु०२ अ०६

तिव्व- न० *[तीव्र]*
रौद्रे, सूय० १ श्रु०५ अ०१ उ०।
उत्कटे, आव०म० २ अ०। आव०।
दु:सहे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।
अत्यर्थे, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०। उव०।
असह्ये, सूय०२ श्रु०६ अ०
'कक्कसा, पगाढा, चंडा, दुहा, तिव्वा, दुरहियास त्ति' एकार्थाः । विपा० १ श्रु० १ अ०।
तीव्रानुभवगन्धजनिते, पण्हा०१ अ०। निसि०।
प्रबले, द्वा०२१ द्वा०।
रौद्रे, आव०म०१ अ०२ ।
उत्कटे, आचा०१ श्रु० ३ अ०१ उ०।
दुर्विषहे, दे०ना०५ वर्ग ११ गाथा।
प्रकृष्टे, सम० ११ सम।
निम्बाऽऽदिवत् तिक्ते, । भग०९ श०३४ उ०।

तिव्वकसायपरिणइ- स्त्री० *[तीव्रकषायपरिणति]*
उत्कृष्टानां दीर्घका-लान्तरावस्थायिनां वा क्रोधाऽऽदिकषायाणां परिणामे, पंच०चू०।

तिव्वाखिंसण- न० *[तीव्रखिंसन]*
अत्यर्थनिन्दायाम्, उव०। पण्हा०

तिव्वगिद्ध- त्रि० *[तीव्रगृद्ध]*
अत्यर्थमनुपपन्ने, पण्हा०३ अ०।

तिव्वचरित्तमोहणीय- न० *[तीव्रचारित्रमोहनीय]*
कषायव्यतिरिक्ते नोकषायलक्षणे मोहनीये कर्मणि, । भग० ८ श० ९ उ०।

तिव्वदंसणमोहणिज्ज- न० *[तीव्रदर्शनमोहनीय]*
मिथ्यात्वतया दर्शनमोहनीये, भग० ८ श०९ उ०।

तिव्वपरिणाम- त्रि० *[तीव्रपरिणाम]*
तीव्रो दुःसहः परिणामः परिणतिर्येषां ते तीव्रपरिणामाः। दुःसहपरिणतिकेषु, आचा० १ श्रु० ५ अ०१ उ०।

तिव्ववेर- त्रि० *[तीव्रवैर]*
अविच्छिन्नोत्कटवैरे, पण्हा० १ अ०। नाया०।

तिव्वसंवेग- पुं० *[तीव्रसंवेग]*
तीव्रसंवेगेन भृशं दुःखलक्षाऽऽकुलभवभयेन संजाता सम्यगुत्पन्ना श्रद्धा श्रद्धानं धर्माऽऽदिषु यस्य स तथा। तं०।

तिव्वसढ- त्रि० *[तीव्रशठ]*
तीव्रैरुपसर्गैरभिद्रुते शठनुष्ठाने, सूय० १ श्रु०३ अ०१ उ०।

तिव्वाभिताव- त्रि० *[तीव्राभिताप]*
दुःसहसन्तापवति, 'तिव्वाभितावे नरए पण्णत्ते।' तीव्रो दुःसहः खदिराङ्गारमहाराशितापादनन्तगुणोऽभितापः संतापो यस्मिन् स तथा। सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।
तीव्रकर्मबन्धरूपे, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ०।

तिव्वाभितावि- त्रि० *[तीव्राभितापिन्]*
तीव्रोऽसह्यो योऽभितापः क्रकचपाटनकुम्भीपाकतप्तत्रपुपानशाल्मल्यालिङ्गनाऽऽदिरूपः, स विद्यते यस्याऽसौ तीव्राभितापी। तीव्रवेदनाऽभिभूते, सूय० २ श्रु०६ अ०।

तिव्वाभिलास- पुं० *[तीव्राभिलाष]*
अत्यन्ताध्यवसायित्वे, आव० ६ अ०। उवा०।

तिव्वुण्ह- त्रि० *[तीव्रोष्ण]*
अत्युष्णे, आव०५ अ०।

तिसंधि- त्रि० *[त्रिसन्धि]*
आदिमध्यावसानेषु सन्धिभावात् त्रिषु स्थानेषु सन्धियुक्ते। भग० ३ श० ६ उ०।

तिसत्तखुत्त- अव्य० *[त्रिसप्तकृत्वस्]*
एकविंशतिवारेषु, पिंड०। जीवा०। भग०।

तिसमइय- त्रि० *[त्रिसमयिक]*
त्रयः समयास्त्रिसमयं, तद्यत्रास्ति स त्रिसमयिकः। समयत्रयभाविनि, ठा० ३ ठा०४ उ०।

तिसमय- न० *[त्रिसमय]*
त्रयः समयाः समाहृतास्त्रिसमयम्। समयत्रयसमाहारे, । आव० म० १ अ० ।

तिसमयसिद्ध- पुं० *[त्रिसमयसिद्ध]*
सिद्धत्वसमयात्तृतीयसमयवर्तिनि सिद्धे, पन्न०१ पद।

तिसमयाऽऽहारग- पुं० *[त्रिसमयाऽऽहारक]*
आहारं गृह्णातीत्याहारकः त्रयः समयाः समाहृतास्त्रिसमयं, त्रिसमयमाहारकस्त्रिसमयाऽऽहारकः। त्रीन् समयान् यावदाहारके, आव०म० १ अ० । विशे०। नं०।

तिसमुट्ठाण- त्रि० *[त्रिसमुत्थान]*
त्रिभ्यो धर्मार्थकामेभ्यः समुत्थानं तद्विषयत्वेनोत्पत्तिरस्येति त्रिसमुत्थानम्। धर्मार्थकामजाते, दश० २ अ०।

तिसमुद्दक्खायकित्ति- त्रि० *[त्रिसमुद्रख्यातकीर्ति]*
पूर्वदक्षिणापरदिग्विभागव्यवस्थितत्वात् पूर्वापरदक्षिणास्त्रयः समुद्रास्त्रिसमुद्रम् उत्तरस्तु हिमवान्, वैताढ्यो वा। त्रिसमुद्रे ख्याता कीर्तिर्यस्याऽसौ त्रिसमुद्रख्यातकीर्तिः। दक्षिणार्द्धभरतव्यापिकीर्त्तौ, नं०।

तिसर- न० *[त्रिशरस्]*
शरत्रये, अणुओ०। विपा० ।

तिसरग- न० *[त्रिसरक]*
हारविशेषे, उव०। नाया०। तं०। जंबू०।

तिसला- स्त्री० *[त्रिशला]*
सिद्धार्थनरेन्द्रभार्यायां महावीरस्वामिनो मातरि, ठा०१० ठा०। ।आचा०। सम०। आव०।
चतुर्विंशतितमतीर्थकरस्य माता। सम०।
विदेहदिन्ना प्रियकारिणी महावीरस्वामिनः माता। आचा०।
त्रिशला सिद्धार्थक्षत्रियपत्नी। आचा०। आव०।
त्रिशला वर्द्धमानमाता। आव० १६०।
त्रिशला महावीरजननी। भग० २६८।

तिसुगंध- त्रि० *[त्रिसुगन्ध]*
त्वगेलाकेसरैस्तुल्ये त्रिजातके, 'त्वगेला केसरैस्तुल्यं, त्रिसुगन्धं त्रिजातकम्।' जीवा० ३ प्रति०४ उ०।

तिसूल- न० *[त्रिशूल]*
त्रीणि शूलानि शिखाऽग्राणि यत्र ।स्वनामख्याते अस्त्रभेदे। सूय०

तिसूलिया- स्त्री० *[त्रिशूलिका]*
लघुत्रिशूले, सूय०१ श्रु०५ अ०१उ०

तिसोवाण- न० *[त्रिसोपान]*
त्रयाणां सोपानानां समाहारस्त्रिसोपानम्। सोपानत्रये, रा०।

तिसोवाणपडिरूवग- न० *[त्रिसोपानप्रतिरूपक]*
त्रयाणां सोपानानां समाहारस्त्रिसोपानम्। त्रिसोपानानि च तानि प्रतिरूपकाणि चेति विशेषणसमासः। विशेषणस्य परनिपातः प्राकृतत्वात्। सुन्दरे सोपानत्रये, जीवा०।

तिस्सगुत्त- पुं० *[तिष्यगुप्त]*
द्वितीयनिह्नवे वसुनामाऽऽचार्यशिष्ये, विशे०।

तिहा- अव्य० *[त्रिधा]*
त्रिप्रकारे, अणुओ०।

तिहि-१ पुं० *[तिथि]*
चन्द्रनिष्पादिते अहोरात्रे, चंद० १० पाहु०। ।
पर्वणि, आतु०।

तिही-२ स्त्री० *[तिथी]*
'तिहि' शब्दार्थे, चंद० १० पाहु०। ।

तिहुयण- न० *[त्रिभुवन]*
अधस्तिर्यगूर्ध्वलोकभेदे, आव०४ अ०।

तीय- त्रि० *[अतीत]*
अतिशयेन इतो गतोऽतीतः, पिधानवदकारलोपः। वर्तमानत्वम् अतिक्रान्ते, ठा० ३ ठा०४ उ०। आव०।

तीयवयण-न० *[अतीतवचन]*
कृतवानित्येवंरूपे षोडशवचनेषु द्वादशे वचने, आचा० २ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ०।

तीर- पुं० *[तीर]*
पर्यन्ते, निसि० १ उ०।
तटे, सूय०१ श्रु०१ अ०।
पारे, ठा०४ ठा०१ उ०।
प्रवाहात्परकूले, विशे०।

तीरंगम- त्रि० *[तीरङ्गम]*
तीरं गच्छन्तीति तीरङ्गमाः, पारगामिनि, आचा०१ श्रु०२अ०३ उ०

तीरट्ठ- त्रि० *[तिरस्थ]*
सम्यक्त्वाऽऽदिप्राप्तेः संसारपरिमाणात् तटस्थे, दश०२ अ०।

तीरट्ठि- त्रि० *[तिरार्थिन्]*
तीरं पारं भवार्णवस्यार्थत इत्येवंशीलस्तीरार्थी, तीरस्थायी वा, तीरस्थितिरितिवा 'तीरट्ठी' इति। ठा० ४ ठा० १ उ० ।सूय०। भवार्णवतेतीर्षौ,दश० १०अ०

तीरित्ता- अव्य० *[तारयित्वा]*
यावज्जीवमाराध्येत्यर्थे, कल्प०९ क्षण

तीरिय- त्रि० *[तारित]*
पूर्णेऽपि प्रत्याख्यानकालावधौ किञ्चिदधिककालावस्थानेन तीरं नीते, आचा०।
पूर्णेऽपि तदवधौ स्तोककालावस्थानात्तीरिता भवति। आव०चू० समाप्ते, वव० १ उ०।

तीसइमुहुत्त- त्रि० *[त्रिंशन्मुहूर्त्त]*
त्रिंशतं मुहूर्त्तांश्चन्द्रभागो येषां तानि तथा। त्रिंशन्मुहूर्त्तानि यावच्चन्द्रेण सह युज्यमाननक्षत्रे, ठा० ६ ठा०।

तीसगुत्त- पुं० *[तिष्यगुप्त]*
राजगृहनगरवास्तव्यस्य वसुनामाऽऽचार्यस्य स्वनामख्याते शिष्ये, स च जीवप्रादेशिकानां निह्नवानां धर्माऽऽचार्यः। विशे०। आव०। उत्त०। ठा०। आव०म०। आव०चू०।

तीसभद्द- पुं० *[तिष्यभद्र]*
माठरसगोत्रस्याऽऽर्यसंभूतविजयस्थविरस्य स्वनामख्याते शिष्ये, कल्प० ८ क्षण०।

तीसिया- स्त्री० *[त्रिंशिका]*
त्रिंशद्वर्षपर्यायायां स्त्रियाम्, वव० ७ उ०।

तु- अव्य० *[तु]*
समुच्चये, विशे०। निसि०।
अवधारणे, विशे०। उत्त०। सूय०। दश०। आव०म०। निसि०।
विशेषणे, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०। आचा०।
वितर्के, सूय०२ श्रु०४ अ०। आव०।
पूरणे, ठा०४ ठा०२ उ०। निसि०।
पादपूरणे, । निसि०।
पुनःशब्दार्थे, आचा० १ श्रु०५ अ०१ उ०। दश०।
पूर्वस्माद्विशेषदर्शने, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०।
एवकारार्थे, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०। गच्छा०। दश०। नं०। आव०म०। ठा०।
यस्मादर्थे, निसि० १ उ०।
चशब्दार्थे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०।
शब्दार्थप्रदर्शने, निसि० १५ उ०।
भिन्नक्रमे, अव्ययत्वेनाऽनेकार्थत्वाद् हेतौ, वव०१ उ०।
कारणापेक्षायाम्, निसि० १ उ०।
तुशब्दो यच्छब्दार्थे द्रष्टव्यः। तेणं जं तं चित्तमचित्तेत्यर्थः। निसि०१ उ०।
विकल्पदर्शनि, निसि०१ उ०
परिग्रहे, निसि०१ उ०।
अप्रतिषेधे, स्तोकप्रायश्चित्तप्रदानविशेषे, निसि०१ उ०।
अनेकप्रकारविशेषणे, दश०४ अ०।
पर्याप्तिवचने, आचा०१ श्रु०१ अ०६ उ०।

तुंग- त्रि० *[तुङ्ग]*
उच्चैस्त्वगुणयुक्ते, सम०। जंबू०। उव०। जीवा०। कल्प०। सूर० उन्नते, उव०। अत्युच्चे, रा०।

तुंगार- पुं० *[तुङ्गार]*
दक्षिणपूर्वस्या दिग्वाते, आव०म० १ अ०, आव०चू०।

तुंडिय- पुं० *[तुङ्गिक]*
वत्सदेशान्तर्गते स्वनामख्याते ग्रामे, आव०म०१अ० । आव०चू० 'जसभद्दं तुगियं चेव।' तुङ्गिकगणे तुङ्गिकापत्यगोत्रे, नं०।

तुंगिया- स्त्री० *[तुङ्गिका]*
स्वनामख्यातायां नगर्याम्, भग०।

तुंगियायण- पुं० *[तुङ्गिकायन]*
तुङ्गर्षिगोत्रापत्ये ऋषौ, कल्प०८ क्षण०।

तुंड- न० *[तुण्ड]*
मुखे, विशे०। आव०म०।
पुरोभागे, । 'सायं से धूता सगडस्स तुंडे ठिता' निसि०१ उ०।

तुंदपरिमिय- त्रि० *[तुन्दपरिमित]*
उदरभरणव्यग्रे, सूय०१० श्रु०७अ

तुंदिल- त्रि० *[तुन्दिल]*
तुंदमस्यास्तीति तुंदिलः ।यथेप्सितभोजनेन वर्द्धितोदरे,उत्त०७अ

तुंब- न० *[तुम्ब]*
अलाव्वाम्, नाया० १ श्रु०१ अ० । रा० । निसि० ।
अष्टादशे ज्ञाताध्ययने, सम०१८ सम० । आव० ।
शकटनाभ्याम् आव०म०१ अ०१ ।
तुम्बं-षष्ठाङ्गे षष्ठं ज्ञातम् । सम०

तुंबणाय- न० *[तुम्बज्ञात]*
अलाबूदृष्टान्तप्रतिपादकेषष्ठेऽध्ययने,नाया०१श्रु०१अ० । आव०चू

तुंवर- त्रि० *[तुम्बर]*
कच्चे आमे, 'जह तरुणअंबगरसो० । उत्त० ३४ अ० ।

तुंवरफल- न० *[तुम्बरफल]*
हरीतकीप्रभृतिषु, बुह०१ उ० ।

तुंववणग्गाम- पुं० *[तुम्बवनग्राम]*
स्वनामख्याते ग्रामे, यत्र सुनन्दाभिधानां साधानां भार्यां मुक्त्वा धनगिरिणा दीक्षा गृहीता ।कल्प०१क्षण० । आव०चू० । आव०म०

तुंववीण- त्रि० *[तुम्बवीण]*
तुम्बयुक्ता वीणा येषां ते तुम्बवीणाः। तुम्बवीणावादकेषु, जीव०३ प्रति० ४ उ० ।

तुंववीणिय- त्रि० *[तुम्बवीणिक]*
तुम्बयुक्ताया वीणाया वादके, रा० । आचा० । पण्हा० । नाया० । अणुओ० ।

तुंवसाग- पुं० *[तुम्बशाक]*
स्वनामख्याते शाकविशेषे, उत्त०२ अ०

तुं वा- स्त्री० *[तुम्वा]*
चमरस्य बलस्य च लोकपालानामग्रमहिषीणां चाभ्यन्तर-परिषदि, ठा०३ ठा०२ उ० ।
चन्द्रस्य सूर्यस्य च सामानिकाग्रमहिषीणां चाभ्यन्तरपरिषदि, ठा०३ ठा०२ उ०

तुंवाग- न० *[तुम्बाक]*
त्वङ् मिञ्जाऽन्तर्वर्त्तिनि, आर्द्रायां तुलस्यां च । दश०५अ०१ उ० ।

तुंविणी- स्त्री० *[तुम्बिनी]*
वल्लीविशेषे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ०

तुंवुरु- पुं० *[तुम्बुरु]*
शक्रस्य देवेन्द्रस्य गन्धर्वानीकाधिपतौ, ठा०७ ठा०। तृतीये गन्धर्वे, पन्न०१ पद । वृक्षवि-शेषे, सम०८ सम० ।

तुंवेअ- न० *[तुम्बेक]*
ज्ञाताऽध्ययनभेदे, आव० ४ अ० ।

तुच्छ-१ त्रि० *[तुच्छ]*
असारे, आव०६ अ० ।
अल्पे, भग०९ श०३३ उ० । पण्हा० ।
उन्मत्ते, न तुच्छो भवेन्नोन्मादं गच्छेत् । सूय०१ श्रु०१४ अ० ।

तुच्छ-२ त्रि० *[तुच्छ]*
चतुर्थी नवमीचतुर्दशीरूपासु तिथिषु,चंद०१०पाहु ।गणि० ।सूर०

तुच्छ-३ त्रि० *[तुच्छ]*
रिक्ते, स च द्रव्यतो निर्धनो जलाऽऽदिरहितो घटाऽऽदिर्वा, भावतो ज्ञानाऽऽदिरहितः । आचा०१ श्रु०२ अ०६ उ० ।

तुच्छ-४ त्रि० *[तुच्छ]*
द्रमके, काष्ठहारकाऽऽदौ, अथवा–'ज्ञानैश्वर्यधनोपेतो, जात्य-न्वयबलान्वितः ।तेजस्वी मतिमान् ख्यातः, पूर्णस्तुच्छो विपर्य-यात् । इत्युक्तलक्षणे अपूर्णे, आचा०१ श्रु०२ अ०६ उ० ।

तुच्छकुल- त्रि० *[तुच्छकुल]*
अल्पकुटुम्बे, कल्प०२ क्षण० ।
चाण्डालाऽऽदीनां कुले, । ठा० ८ ठा० । आव०म० ।

तुच्छग- त्रि० *[तुच्छक]*
अगम्भीरे, । आव०चू० । आव०म० । आचा० ।

तुच्छत्त- न० *[तुच्छत्व]*
निःसारतायाम्, भग० १८ श०३ उ० ।

तुच्छरूव- त्रि० *[तुच्छरूप]* तुच्छं हीनं रूपमाकरो यस्य स तुच्छ-रूपः । हीनाऽऽकारे, ठा०४ ठा०४ उ० ।

तुच्छोभासि- त्रि० *[तुच्छावभासिन्]*
तुच्छो धनश्रुताऽऽदिरहितोऽत एव तद् विनियोजकत्वात् तुच्छाव-भासी । द्रष्टृणामपूर्णावभासिनि, ठा०४ ठा० ४ उ० ।

तुच्छोसहिभक्खणया- स्त्री० *[तुच्छौषधिभक्षणता]*
असाराणामौषधीनां भक्षणरूपे उपभोगपरिभोगविरति व्रतस्या-तिचारे, उत्त०१ अ० ।

तुज्ज- न० *[तूर्य]*
वाद्यभेदे, सूर०१० पाहु० । ।

तुट्ट- धा० *[त्रुट्]*
छेदने, त्रुट्यति व्यवच्छिद्यते जीवानां जीवितमिति शेषः । सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।
तुट्यति च्यवते । सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ० ।
जीविताच्यवने, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।
त्रोट्येदपनयेत् आत्मनः पृथक्कुर्यात्परित्यजेद्वा । सूय०१ श्रु०१ अ०१

तुट्ठ- त्रि० *[तुष्ट]*
संतुष्टे, उत्त० १८ अ० । तोषं कृतवति, आव०म०१ अ० । उव० । जीवा० । भग० । रा० । आचा० । नाया० ।
उत्त सन्तोषं प्राप्ते, कल्प०१ क्षण० ।

तुट्टि- स्त्री० *[तुष्टि]*
संतोषे, कल्प०१ क्षण०।
मनःप्रसत्तौ, कल्प०६ क्षण०।
उत्सवे, निर० १ श्रु०१ वर्ग०१ अ०।

तुडिय-१ न० *[त्रुटित]*
तूर्ये, जंबू०३ वक्ष०। उव०। ठा०।
दिव्यतूर्ये, आव०म०१ अ०१ खण्ड।
वेणुवीणामृदङ्गाऽऽदिषु आतोद्येषु, रा०।
पटहाऽदौ, ठा०८ ठा०।
आतोद्ये, रा०। आव०म०। जीवा०। पन्न०।
वादित्रे, नाया०१ श्रु०१ उ०। कल्प०।
ततविततन्त्रीतलतालभिन्नवादित्रे, कल्प०१क्षण०।जंबू०। दशा०। भग०। उव०। रा०।

तुडिय-२ न० *[त्रुटित]*
चतुरशीत्या लक्षैर्गुणिते त्रुटिताङ्गे, । जंबू०। कल्प०। ठा०। अणुओ०। ज्यो०। जीवा०। भग०।

तुडिय-३ न० *[त्रुटित]*
बाहुरक्षिकायाम्, । रा०। नाया०। ठा०। आचा०। तं०। उव०। सम०। उत्त०। पन्न०। जंबू०। भग०।

तुडिय-४ न० *[त्रुटित]*
चमरस्य सामानिकानाम्नभ्यन्तरपरिषदि, ठा०३ ठा०२ उ०।

तुडियंग-१ न० *[त्रुटिताङ्ग]*
चतुरशीत्या लक्षगुणितपूर्वे, ठा०२ ठा०४ उ०।
'चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं से एगे तुडिअंगे।' अणुओ०। जंबू०। कर्म०। भग०।

तुडियंग-२ न० *[त्रुटिताङ्ग]*
सुषमसुषमायां भरतैरवतयोरकर्मभूमिषु च भाविनि कल्पवृक्षे, तं०। आव०। जीवा०। सम०।
त्रुटितानि तूर्याणि तत्करणत्वात् त्रुटिताङ्गः। ठा०१० ठा०।

तुण्णग- त्रि० *[तुन्नाक]*
सीवनकर्मकर्त्तरि, नं०। आचा०। आव०चू०। पन्न०। अणुओ०। आव०म०।

तुण्णाग- त्रि० *[तुन्नाक]*
'तुण्णग' शब्दार्थे, नं०।

तुण्णिय- त्रि० *[तुन्नित]*
तुन्नकारणे स्वकलाकौशलतः पूरिते छिद्रे, बुह०१ उ०।

तुण्हिक्क- त्रि० *[तृष्णीक]*
मौनावलम्बिनि, आव०म०१ अ०१ निसि०।
तूष्णीभावं भजमाने, निसि०।
'जह णाविए गंडूसं कोती धेत्तूण नाम तुण्हिक्को।' निसि०१ उ०।

तुद- पुं० *[तोद]*
प्रतोदाऽऽदिषु, 'रहंसि जुत्तं सरयंति बालं, आरुस्स विज्झंति तुदेण पिट्ठे।' कोपं कृत्वा प्रतोदाऽऽदिना पृष्ठदेशे तं नारकं परवशं नयन्ति। सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ०।

तुप्प- पुं० *[तुप्र]*
मृतककलेवरं वशाघृताऽऽदिभिः परिणामिते, बुह०१उ०। निसि०

तुप्पग- न० *[तुपाग्र]*
म्रक्षिताग्रे, कल्प०२ क्षण०।

तुप्पोट्ठ- त्रि० *[तुप्रोष्ठ]*
तुप्रा म्रक्षिता मदनेन वा वेष्टिताः शीतरक्षाऽदिनिमित्तमोष्ठा येषां ते तुप्रोष्ठाः। म्रक्षितोष्ठेषु, गच्छा० २ अधि०। अणुओ०।

तुम- त्रि० *[त्व]*
बहुवचनोच्चारणयोभ्ये तिरस्कारप्रधानैकवचनान्ते,सूय०१श्रु०६। 'तुमं ति वत्ता भणइ।' आव०१ अ०। ठा०।

तुयट्टण- न० *[त्वग्वर्तन]*
शयने, निसि० १० उ०। तं०। पिंड०। वव०। दश०। उत्त०। ठा०। बुह०।
संस्तारकं प्रस्तीर्य शयने, बुह०३ उ०।
निषण्णाऽऽसीने, 'तुयट्टंति' निषण्णा आसते। भग०१३श०६ उ०

तुयट्टिय- त्रि० *[त्वग्वर्तित]*
वामपार्श्वतः परावृत्त्य दक्षिणपार्श्वेन, दक्षिणपार्श्वतः परावृत्त्य वामपार्श्वेन वा अवतिष्ठमाने, रा०।

तुयट्टियव्व- न० *[त्वग्वर्तितव्य]*
कर्त्तव्ये शयने, भग०२ श०१ उ०।

तुयावइत्ता- अव्य० *[तोदयित्वा]*
तोदं कृत्वा 'व्यथामुत्पाद्य' या प्रव्रज्या दीयते मुनिचन्द्रपुत्रस्य सागरचन्द्रेण सा तथा। प्रव्रज्याभेदे, ठा०३ ठा०२ उ०।

तुरंत- त्रि० *[त्वरमाण]*
शीघ्रे, तं०

तुरग- पुं० *[तुरग]*
अश्वे, अणुओ०। कल्प०। उव०। रा०।
तुरगा आटव्या महाकायाः पशवः परसरेति पर्यायाः। भग० ११ श० ११ उ०।

तुरगमुह- पुं० *[तुरगमुख]*
अनार्यदेशविशेषे, 'कैकयकिरीयहयमुहखरमुह तह तुरगमेंढय-मुहा य।' सूय० २ श्रु०१ अ०।

तुरगमेंढग- पुं० *[तुरगमेढ्रक]*
धर्मसंज्ञारहिते अनार्यदेशविशेषे, सूत्र० १ श्रु० ५ अ० १ उ०।

तुरगारोहणसिक्खा- स्त्री० *[तुरगारोहणशिक्षा]*
तुरगारोहणविषयकशिक्षाभेदे, कल्प० ७ क्षण०।

तुरतुंगव- पुं० *[तुरतुङ्गव]*
त्रीन्द्रियजीवभेदे, पन्न० १ पद०।
तुरय- पुं० *[तुरग]*
'तुरग' शब्दार्थे, अणुओ०।
तुरा- स्त्री० *[त्वरा]*
'अत्वरा सर्वकार्येषु, त्वरा कार्यविनाशिनी। त्वरमाणेन मूर्खेण मयूरो वायसीकृतः। आव०चू० १ अ०।
तुरिमिणी- स्त्री० *[तुरिमिणी]*
तुरिमिणीनगर्यामुपसर्गकारी तरुणजनो भूपात् हतमथितविप्रारब्धः। बुह० ४ उ०।
तुरिय- न० *[त्वरित]*
शीघ्रे, रा०। आव०म०। पण्हा०। भग०। अणुओ०। नाया०।
त्वरा संजाता अस्य। त्वरायुक्ते,भग०३श०। नाया०।रा०।जीवा०
औत्सुक्यवत्याम्, कल्प०२ क्षण।
तुरिय- त्रि० *[तूर्य]*
भेरीमृदङ्गपटहकरतालताला़ऽऽदिषु, उत्त० २२ अ०।
द्वादशप्रकारस्तूर्यसङ्घातः। स चायम्–'भंभामकुंदमद्दल कडंब-झल्लरिहुडुक्ककंसाला। काहलतलिमा वंसो, संखो पणवो य वारसमो। आव०म०१ अ० ।
तुरियगइ- स्त्री० *[त्वरितगति]*
मानसौत्सुक्यप्रवर्तितवेगवद्गतौ, भग०३ श०२ उ०।
'तुरियगई खिप्पगई।' दिक्कुमारेन्द्रयोरमितगत्यमितवाहनयोः पौरस्त्ये लोकपाले, ठा० ४ ठा० १ उ०। भग०।
तुरियभासि- त्रि० *[त्वरितभाषिण्]*
अविवेकभाषिणि, आचा०२ श्रु० १ चू०४ अ०२ उ०।
तुरिया- स्त्री० *[त्रुटिता]*
बाहुरक्षिकायाम्, उव०।
तुरुक्क- न० *[तुरुष्क]*
सिह्लके, नाया०१ श्रु०१ अ०। जीवा०। आव०म०। भग०।
तुरुक्कधूव- पुं० *[तुरुष्कधूप]*
सेह्लकलक्षणे धूपे, उत्त०१ अ०।
तुरुक्ख- न० *[तुरुष्क]*
सिह्लकाभिधाने गन्धद्रव्ये, सम०३४ सम०। उव०। पन्न०। जंबू०। रा०।
तुलणा- स्त्री० *[तुलना]*
परिच्छेदे, 'जं हा इमेहिं दसहिं अंगेहिं पडलेहिं सूरिओ उट्ठेति, तहा तं कालं तुलेति।' निसि०२ उ०।
पञ्च तुलना जिनकल्पे उक्ताः, 'तवेण इत्यादि'। तुलना, भावना, परिकर्म चैकार्थाः। विशे०। वव०। निसि०। पंच०चू०। । ठा०। उत्त०।
तुलसी- स्त्री० *[तुलसी]*
रूढी आढइ णीली, तुलसी तह माउलिंगा य।पन्न०१ पद। ठा०।
गुच्छविशेषे, आचा० १ श्रु०१ अ०५ उ०।
भूतानां चैत्यवृक्षः। ठा०। भग०।
तुला- स्त्री० *[तुला]*
औपम्ये, सूय०२ श्रु०२ अ०।
'एतं तुलमण्णेसिं इह संतिगया दविया णावकंखंति।' का पुनरसौ तुला ? यथाऽऽत्मानं सर्वथा सुखाभिलाषितया रक्षसि, तथा परमपि रक्ष, यथा परं तथाऽऽत्मानमिति। आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ०
तुलासम- पुं० *[तुलासम]*
अरक्तद्विष्टे, यथा तुला समस्थिता न चाग्रतो न वा पुरतो नमति, सा इवाऽयं रागद्वेषविमुक्तो मानापमानसुखदुःखादिषु समः। बुह० ६ उ०। निसि०।
तुलिय- त्रि० *[तुलित]*
गुणिते, तं०। उत्त०।
तुलेऊण- अव्य० *[तोलयित्वा]*
सम्यक् निश्चित्येत्यर्थे, बुह०१ उ०।
तुल्ल- न० *[तुल्य]*
सदृशे, उव०।
समाने, विशे०।
एककाले, नं०। पन्न०।
तुल्लचरित्त- त्रि० *[तुल्यचरित्र]*
समानसामायिकाऽऽदिसंयमे, बुह०६ उ०।
तुल्लट्ठिय- त्रि० *[तुल्यस्थित]*
परस्परापेक्षया समानाऽऽयुष्के, भग० ३४ श०१ उ०।
तुल्लय- त्रि० *[तुल्यक]*
तुल्यमेव तुल्यकम्। समे, भग० १०श० ७उ०
तुवर- धा० *[त्वर]*
वेगे, कुसुम्भोदकाऽऽदिके, बुह० ३ उ०।
वृक्षविशेषे, उव०। निसि०।
तुवरपत्त- न० *[तुवरपत्र]*
पलाशपत्राऽऽदिषु, निसि०१ उ०।
तुवरफल- न० *[तुवरफल]*
हरीतक्यादिषु, निसि०१ उ०।
तुसमूल- न० *[तुषमूल]*
बीजस्य तुषमूलकणिकायाम्, ठा०८ठा०
तुसागणि- पुं० *[तुषाग्नि]*
तुषाः कोद्रवाऽऽदयस्तेषामग्निस्तद्दहनप्रवृत्तो वह्निस्तुषाग्निः। कोद्रवाऽऽदिदहनप्रवृत्ते वह्नौ, ठा० ८ ठा०। जीवा०।

तुसार- पुं० *[तुषार]*
हिमे, नाया० १ श्रु०१ अ० । उव० ।
तुसिणीय- त्रि० *[तूष्णीक]*
मौनिनि, उत्त० २ अ० ।
वचनरहिते, ज्ञा ०१ श्रु०२ अ० ।
वाचंयमे, उपेक्षके, ठा०३ ठा०३ उ० ।
तूष्णीं शीले, उत्त०१ अ० । आचा० ।
तुसिय- पुं० *[तुषित]*
षष्ठकृष्णराजिमध्यवर्तिसुराभनामलोकान्तिकविमानदेवे, भग०६ श०५ उ० । ठा० । नाया० । सम० ।
असौ संज्ञाऽन्तरतो मारुतोऽप्यभिधीयते । आव०म० ।
तुसोदग- न० *[तुषोदक]*
व्रीह्यादिधावनजले, कल्प० ९ क्षण० । गच्छा० । ठा० ।
तुहग- पुं० *[तुहक]*
कन्दवनस्पतिविशेषे, उत्त०१ अ० ।
तूणइल्ल- त्रि० *[तूणावत्]*
तूणाभिधानवाद्यवति, जीवा०३ प्रति०४ उ० । कल्प० । उव० । रा० । पण्हा० । अणुओ० । नाया० ।
तूणा- स्त्री० *[तूणा]*
शराऽऽश्रये, जंबू०३ वक्ष० ।
तूणाभिधानवाद्यविशेषे, उव० । रा० । अणुओ० । नाया० ।
तूर्य- न०
वादित्रभेदे, उत्त०२ अ० । नाया० ।
तूरवइ- पुं० *[तूर्यपति]*
नटमहत्तरे, बुह०१ उ० ।
तूरसद्द- पुं० *[तूर्यशब्द]*
तूर्यशब्देनाधिश्रिते संनिनादे, विशे० ।
तूल- न० *[तूल]*
अर्कतूले, सूर०२० पाहु० । आचा० । भग० । आव०म० । कल्प० ।
तूलकड- त्रि० *[तूलकृत]*
अर्काऽऽदितूलनिष्पन्ने, आचा०२ श्रु०१ चू०५ अ०१ उ० ।
तूलिया- स्त्री० *[तूलिका]*
संस्कृतरुताऽऽदिभृते शयनोपकरणे, गच्छा० ३ अधि० ।
बालमय्यां, चित्रलेखनकूर्चिकायां च । नाया० १ श्रु०८ अ० ।
तूली- स्त्री० *[तूली]*
अप्रतिलेख्यदूष्यविशेषे, जीत० । जंबू० ।
संस्कृतरुताऽऽदिभृते अर्कतूलाऽऽदिभृते वा शयनोपकरणे, । बुह० ३ उ०
तूवर- पुं० *[तूवर]*
कषाये, रा० ।
तव- पुं० *[तस्मिन्]*
प्राकृतशैलीवशात्तस्मिन्नित्यस्य स्थाने 'ते' इत्यादेशः । 'ते णं काले णं ते णं समए णं' । रा० । जंबू० । कल्प० ।
तेआ- स्त्री० *[तेजस्]*
त्रयोदश्याम्, जंबू० ७ वक्ष० ।
तेइंदिय- पुं० *[त्रीन्द्रिय]*
त्रीणि स्पर्शनरसनघ्राणरूपाणि इन्द्रियाणि येषां ते । जीवा० यूकात्मत्कुणगर्दभेन्द्रगोपकुन्थुमत्कोटपिपीलिकोपदेहिकाकर्पा-सास्थिकत्रपुसबीजकतुस्थुरूकाऽऽदिषु, उत्त० । आव० ।
तेइच्छ- न० *[चैकित्स्य]*
चिकित्सायाभावश्चैकित्स्यम् ।व्याधिप्रतिक्रियारूप,दश०३,आचा
तेइच्छिय- त्रि० *[चैकित्स्यिक]*
वैद्ये, बुह०१ उ० ।
तेउ- न० *[तेजस्]*
उष्णोद्द्योतलक्षणे, सूय०२ श्रु०१ अ० ।
उष्णरूपे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।
पक्तृगुणे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ० ।
अग्निकुमारेन्द्रयोरग्निसिंहाग्निमानवयोः पूर्वदिग्लोकपाले, । ठा० ४ ठा०१ उ० । भग० ।
तेउकंत- पुं० *[तेजस्कान्त]*
अग्निकुमारेन्द्रयोरग्निसिंहाग्निमानवयोरु-त्तरदिग्लोकपाले, ठा० ४ ठा०१ उ० । भग० ।
तेउक्काइय- पुं० *[तेजस्कायिक]*
तेजो वह्निः, तदेव कायः शरीर येषां ते तेजस्कायाः, तेजस्काया स्वार्थिके कप्रत्ययविधानात्तेजस्कायिकाः ।जीवा० १ प्रति० । पन्न०
एकेन्द्रियजीवभेदे, दश०
तेउपुट्ठ- त्रि० *[तेजःस्पृष्ट]*
तेजसा अग्निना स्पृष्टो दह्यमानः । अग्निना दह्यमाने, सूय० १ श्रु० ३ अ० १ उ० ।
तेउप्पभ- पुं० *[तेजःप्रभ]*
अग्निकुमारेन्द्रयोरग्निसिंहाग्निमानवयोः पश्चिमदिग्लोकपाले, ठा० ४ ठा० १ उ० ।
अग्निकुमारेन्द्रयोरग्निसिंहाग्निमानवयोरुत्तरदिग्लोकपाले, भग० ३ श० ८ उ० ।
तेउप्फास- पुं० *[तेजःस्पर्श]*
उष्णस्पर्शे, आचा० १ श्रु०६ अ०३ उ०
उष्णस्पर्शश्च आतापनाऽऽदिकाले । आचा०१ श्रु०९ अ०२ उ०
तेउल्लेसा- स्त्री० *[तेजोलेश्या]*
तेजोऽग्निज्वाला, तद्वर्णानि यानि द्रव्याणि, लोहितानीत्यर्थः । तत्साचिव्याज्जाता तेजोलेश्या । ठा० १ ठा० ।

विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवायां तेजोज्वालायां लेश्यायां सुखासिकायाम्, विपा० १ श्रु० १ अ० । रा० । चंद० । जंबू० ।

तेउसमुग्घाय- पुं० *[तैजससमुद्घात]*
तेजोलेश्याविनिर्गमकालभाविनि तैजसनामकर्मपुद्गलपरिज्ञात-हेतौ समुद्घातविशेषे, पन्न० ३४ पद० । ठा० । आचा० ।

तेउसीह- पुं० *[तेजःसिंह]*
अग्निकुमारेन्द्रयोरग्निसिंहाग्निमानवयोर्दक्षिणदिग् लोकपाले । ठा० ४ ठा० १ उ० । भग० ।

तेउसोय- न० *[तेजःशौच]*
तेजसा अग्निना तद्विकारेण वा भस्मना शौचं तेजःशौचम् । शौचभेदे, ठा० ५ ठा० २ उ० ।

तेंदुसय- पुं० *[तेन्दुसक]*
कन्दुके, नाया०१ श्रु०८ अ० ।

तेंवुरु- पुं० *[तेम्बुरु]*
त्रीन्द्रियजीवभेदे, जीवा०१ प्रति० ।

तेगारपव्वय- पुं० *[त्र्याकारपर्वत]*
स्वनामख्याते पर्वते, यत्र सहस्रफणीपार्श्वनाथः पूज्यते । कल्प० ।

तेगिच्छ- न० *[चैकित्स्य]*
चिकित्साकर्मणि, बुह०१ उ० । वव० । कल्प० ।
'तिविहे तेगिच्छम्मि उ, उज्जुय वाउलणसाहणा चेव । पण्णवणमणिच्छंते, दिट्ठंतो भंडिपोएहिं । वव०१ उ० । निसि० ।

तेगिच्छायण- त्रि० *[चैकित्सायन]*
चिकित्सगोत्रापत्ये, जंबू०४ वक्ष० ।

तेगिच्छिदह- पुं० *[चैकित्स्यह्रद]*
निषकपर्वतस्थे धृतिदेवताके स्वनामख्याते ह्रदे, ठा०२ ठा०३ उ०

तेजस्सिया- स्त्री० *[तेजस्विता]*
प्रतिवादिक्षोभाऽऽपादिकायां शरीरस्य स्फूर्तिमत्यां देदीप्यमान-तायाम्, वव० १ उ० ।

तेण- त्रि० *[स्तेन]*
चौरे, ठा०५ ठा०३ उ० ।आचा० ।सूय० ।आव० ।तं० ।दश० ।वव०
'तेणा दुविहा तिविहा वा ।' वव०२ उ० ।
'नाणातिकारणेहिं गममाणे अंतरा तेणा भवंति ।' निसि०५ उ० ।
बुह० । पंच०भा० । पंच०चू० । । गच्छा० ।

तेणउइ- स्त्री० *[त्रिनवति]*
त्र्यधिकायां नवतिसंख्यायाम्, 'तेणउइ गणा, तेणउइ गणधरा ।' सम० ९२ सम० ।

तेणग- त्रि० *[स्तेनक]*
चौरे, स्तेनकाश्चौरा विघ्नकरा भवन्ति । गच्छा० ३ अधि० ।

तेणाणुबंधि- पुं० *[स्तेनानुबन्धिन्]*
'रुद्दज्झाण' शब्देऽर्थोऽस्य द्रष्टव्यः

तेणाहड- पुं० *[स्तेनाऽऽहृत]*
चौराऽऽनीते स्थूलादत्ताऽऽदानविरते प्रथमेऽतिचारे, तत्सामर्थ्यम् अतिलोभात्काणक्रयेण गृह्णतोऽतिचरति तृतीयव्रतमित्यतिचार-हेतुत्वात्स्तेनाऽऽहृतम् । अतिचारता चाऽस्य साक्षाच्चौर्यप्रवृत्तेः । उवा०१ अ० । बुह० ।
स्तेनाश्चौराः तैर्वर्धमानाऽऽनीतं किञ्चित्कुङ्कुमाऽऽदि देशान्तरा-त्स्तेनाऽऽहृतम् । आव० ६ अ० ।

तेणिक्क- न० *[स्तैनिक्य]*
स्तेये, पण्हा०३ अ० ।

तेणिक्कहरणबुद्धि- त्रि० *[स्तैनिक्यहरणबुद्धि]*
स्तेयेन हरणे बुद्धिर्येषां ते । स्तेयहरणमतियुक्तेषु, पण्हा०३ अ०

तेणिस- त्रि० *[तैनिस]*
तिनसाभिधानवृक्षसंबन्धिनि, भग० ७ श० ९ उ०

तेण्ण- न० *[स्तैन्य]*
चौर्ये, निसि०१ उ० ।

तेतल- पुं० *[तेतल]*
धरणस्य नागकुमारेन्द्रस्य गन्धर्वानीकाधिपतौ, ठा०७ ठा० ।

तेतलि- पुं० *[तेतलिन्]*
तेतलिपुरराजस्य कनकरथस्यामात्यपितरि, आव०म० १ अ० ।
मनुष्यजातिभेदे, जंबू० १ वक्ष०

तेतलिसुय- पुं० *[तेतलिसुत]*
तेतलिपुरराजस्य कनकरथस्यामात्ये, नाया० ।

तेतिल- पुं० *[तैतिल]*
स्त्रीविलोचनापरपर्याये ववाऽऽदितश्चतुर्थे करणे, जंबू०७ वक्ष० ।

तेतिलिपुर- न० *[तेतलिपुर]*
स्वनामख्याते पुरे, यत्र कनकरथस्यामात्यस्तेतलिसुत आसीत् । नाया० १ श्रु० १३ अ० । आव०म० । आव०चू० ।

तेत्तिर- पुं० *[तित्तिर]*
लोमपक्षिभेदे, जीवा०१ प्रति० ।

तेय-१ पुं० *[तेजस्]*
अभितापे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।
प्रभावे, अंत०१ श्रु०६ वर्ग०३ अ० ।
वह्नौ, पन्न०१ पाद । ठा० ।
कान्तौ, उवा०२ अ० ।
दीप्तौ, उपा० २ अ० । आचा० ।

तेय-२ पुं० *[तेजस्]*
शरीरस्य कान्तौ, ठा०८ ठा० । निर० ।
शरीरसंबन्धिनि रोचिषि, प्रभावे च । उव० ।
अह तेओ पुण देहे अणोतप्पया चेव ।' तेजः पुनर्देहे शरीरेऽनव-त्रप्यता अलज्जनयिता दीप्तियुक्तत्वेनापरिभूतत्वम् । बुह०१ उ० ।

तेय-३ पुं० *[तेजस्]*
तेजोलेश्यायाम्, ठा०१ ठा०।
शरीरप्रभायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ०।
रसाऽऽद्याहारपाकजनने तेजोनिसर्गलब्धिनिबन्धने च। अणुओ०

तेय-४ पुं० *[तेजस्]*
स्तेये, नं०।
चौर्ये, विशे०।

तेयंसी- त्रि० *[तेजस्विन्]*
तेजः शरीरप्रभा, तद्वांस्तेजस्वी। नाया०१ श्रु०१ अ०।
शरीरप्रभायुक्ते, भग० २ श०५ उ०। सम०। निर० । आचा०।
दीप्तिमति, आचा० २ श्रु० १ चू० २ अ० १ उ०। बुह०।

तेयग- न० *[तैजस]*
ऊष्मलिङ्गे, भुक्ताऽऽहारपरिणमनकारणे शरीरभेदे, यद्वशाच्च विशिष्टतपः समुत्थलब्धिविशेषस्य पुंसस्तेजोलेश्याविनिर्गमः। जीवा०१ प्रति०। ठा०। पन्न०।
वैश्वानरे, पुं०। सम० ३० सम०।

तेयगलद्धि- स्त्री० *[तैजसलब्धि]*
क्रोधाऽऽधिक्यात्प्रतिपन्थिनं प्रति सुखेन विशिष्टतपोजन्यानेक-योजनप्रमाणक्षेत्राऽऽश्रितवस्तुदहनसामर्थ्यतो जाज्वल्यमानज्वा-लामोचनशक्तौ, सा तु यो यमी नित्यं षष्ठं तपः करोति पारणके कुल्माषमुष्ट्या जलचुलुकेन चाऽऽस्ते, तस्य षण्मासान्ते सिद्ध्यतीति। गच्छा० २ अधि०।

तेयगसमुग्घाय- पुं० *[तैजससमुद्घात]*
तेजसि विषये भवस्तैजसः, स चासौ समुद्घातश्च तैजस समुद्घातः। तेजोलेश्याविनिर्गमकालभाविनि तैजसशरीरनाम कर्माऽऽश्रये समुद्घातविशेषे, पन्न०। सम०।

तेयजणण- न० *[तेजोजनन]*
माहात्म्योत्पादने, बुह०३ उ०।

तेयमंडल- न० *[तेजोमण्डल]*
प्रभापटले, सम०६ सम०।

तेयमाहप्पकंतिजुत्त- त्रि० *[तेजोमाहात्म्यकान्तियुक्त]*
तेजोदीप्तिर्माहात्म्यं महानुभावता, कान्तिः काम्यता, तैर्युक्ते, उवा० २ अ०

तेयलिपुर- *[तेतलिपुर]*
'तेतिलिपुर' शब्दार्थे, नाया०१ श्रु०१ अ०।

तेयलेस्सा- स्त्री० *[तेजोलेश्या]*
विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवायां तेजोज्वालायाम्, नाया० १ श्रु०२ अ०।

तेयवंत- त्रि० *[तेजस्विन्]*
प्रभावति, पण्हा०४ अ०।

तेयवीरिय- पुं० *[तेजोवीर्य]*
भरतराजपुत्रपरम्परायां भरतात्पञ्चमे महाबलस्य पुत्रे, ठा०८ठा०

तेया- स्त्री० *[तेजस्]*
त्रयोदश्याम्, ज्यो०४ पाहु०। चंद०।
लोकोत्तररीत्या त्रयोदश्यां रात्रौ, कल्प० ६ क्षण०।

तेया- स्त्री० *[त्रेता]*
'तेयाजुगे य दासरही रामो सीयालक्खणसंजुओ वि।'कल्प०।

तेयाणुबंधि- न० *[स्तेयानुबन्धिन्]*
स्तेनस्य चौरस्य कर्म स्तेयं, तीव्रक्रोधाऽऽद्याकुलतया तदनु-बन्धवत्स्तेयानुबन्धिनि, भग०२५ श० ७ उ०।
रौद्रध्यानभेदे, आव०चू०।

तेयाली- पुं० *[तेयालिन्]*
वृक्षभेदे, 'ताले तमाले तक्कलितेयालीसालिसारकल्लोणे।' । पन्न० १ पद०।

तेरसी- स्त्री० *[त्रयोदशी]*
त्रयोदश्यां यात्रा शुभकरी। तदुक्तम्–'जे वि हुंति अमित्ता, ते तेरसिपट्ठिओ जिणइ।' ज्यो०।

तेरासिय- पुं० *[त्रैराशिक]*
जीवाजीवनोजीवभेदास्त्रयो राशयः समाहृतास्त्रिराशि, तत्प्रयोजनं येषां ते त्रैराशिकाः। ठा०७ ठा० आव०म०।
त्रीन् राशीन् जीवाजीवनोजीवरूपान् वदन्ति ते त्रैराशिकाः। उव० जीवोऽजीवो जीवाजीवश्च, लोकोऽलोको लोकालोकश्च, सत् असत् सदसत्। नयचिन्तायामपि त्रिविधं नयमिच्छन्ति। तद्यथा –द्रव्यास्तिकम्, पर्यायास्तिकम्, उभयास्तिकं च। उक्तं च– त्रिभी राशिभिश्चरन्तीति त्रैराशिकाः। नं०
त्रिराशिभिर्दीव्यन्ति जिगीषन्तीति त्रैराशिकाः। उत्त०३ अ०।

तेरिच्छिय- त्रि० *[तैरश्चिक, तैर्यग्योन]*
तिर्यग्योनिभ्यो भवस्तैर्यग्योनः तिर्यग्योनिकृते, विशे०।

तेल- पुं०न० *[तैल]*
उत्तरत्र स्थितस्य चात्र संबन्धात् तैलानि चत्वारि भवन्ति। केषां संबन्धीन ? तत्राऽऽह– तिलातसीकुसुम्भसर्षपाणां, शेषाणां डोलाऽऽदीनां मधूकफलाऽऽदीनाम्, आदिशब्दान्नालिकेर-एरण्डशिंशपाऽऽदीनां संबन्धीनि तैलानि न विकृतयः। अणुओ०। सूय०। नाया०। आव०चू०। निसि०। आव०।

तेलकेला- स्त्री० *[तैलकेला]*
सौराष्ट्रप्रसिद्धे मृन्मये तैलभाजनविशेषे, स च भङ्गभयात् सुष्ठु संगोप्यते। नाया० १ श्रु०१ अ०। भग०। तं०। निर० ।

तेलचम्म- न० *[तैलचर्म]*
तैलाभ्यक्तस्य यत्र स्थितस्य संवाधना क्रियते तत्त।नाया० १ श्रु०१
तैलाभ्यक्तस्य संबाधनाकरणसाधने चर्मणि, उव०।

तेलुक्क- न० *[त्रैलोक्य]*
त्रयो लोकास्त्रिलोकाः, त्रिलोका एव त्रैलोक्यम्। नं०।
भुवनपतिव्यन्तरविद्याधरज्योतिष्कवैमानिकेषु, नं०।
स्वर्गमर्त्यपाताललक्षणे तन्निवासिप्राणिगणे। गच्छा०१ अधि०।
भुवनत्रये, पण्हा०५ अ०।
त्रैलोक्येन स्वर्गमर्त्यपाताललक्षणेन, तन्निवासिप्राणिगणेनेत्यर्थः नमितं क्रमयुगलं येषां ते त्रैलोक्यनमितक्रमयुगलाः।गच्छा०१ ।
त्रैलोक्यमेव यो रङ्गः। मल्लयुद्धमण्डपे, कल्प० ५ क्षण०।

तेलुक्कदंसि- पुं० *[त्रैलोक्यदर्शिन्]*
सर्वज्ञे, नाया०।

तेलुक्कनिरिक्खियमहियपूइय- पुं० *[त्रैलोक्यनिरीक्षितमहितपूजित]*
निरीक्षिताश्च महिताश्च पूजिताश्चेति निरीक्षितमहितपूजिताः। त्रैलोक्येन निरीक्षितमहितपूजिताश्च ये ते तथा। सर्वज्ञे, नं०।

तेलोक्कदेवमहिय- पुं० *[त्रैलोक्यदेवमहित]*
भुवनत्रयवासिभिः सुरासुरैरभ्यर्चितेषु, बुह०३ उ०।
त्रिभुवनवासिभिर्भवनपत्यादिभिर्देवैर्महितेषु, वव० २ उ०।

तेल्लकेला- स्त्री० *[तैलकेला]*
'तेलकेला' शब्दार्थे, नाया० १ श्रु० १ अ०

तेल्लग- पुं० *[तैलक]*
सुराविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ उ०।

तेलचम्म- न० *[तैलचर्म]*
'तेलचम्म' शब्दार्थे, नाया०१ श्रु०१ अ०।

तेल्लपल्ल- न० *[तैलपल्य]*
तैलपेढाऽऽख्ये सौराष्ट्रप्रसिद्धे मृन्मये तैलस्य भाजनविशेषे, स च भङ्गभयात्सुष्टुसङ्गोप्यते। दशा० १० अध्या०।

तेल्लपाइया- स्त्री० *[तैलपायिका]*
जीवभेदे, 'तेल्लपाइयातो तातो तिक्खेहिं तुंडेहिं अतीव दंसंति।' आव०म०१ अ० ।

तेल्लपूय- पुं० *[तैलपूप]*
तैलप्रधाने पूपे, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०९ उ०। जीवा०।

तेल्लपूयसंठाणसंठिय- पुं० *[तैलपूपसंस्थानसंस्थित]*
तैलेन पक्वः पूपस्तैलपूपः। तैलेन हि पक्वोऽपूपः प्रायः परिपूर्ण-वृत्तो भवति न घृतपक्व इति तैलविशेषसाम्यम्, तस्येव यत् संस्थानं तेन संस्थितः। तस्मिन्, अत्र तैलाऽऽदित्वाल्लकारस्य द्वित्वम्। जंबू० १ वक्ष०। जीवा०।

तेल्लसमुग्गय- पुं० *[तैलसमुद्गक]*
सुगन्धितैलाऽऽधारविशेषे, उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम्– 'तैलसमुद्गकः सुगन्धितैलाऽधारः।' जीवा०३ प्रति०४ उ०। रा०।

तेल्लसुरभियाकरण- न० *[तैलसुरभिकाकरण]*
स्त्रीणां षट् त्रिंशत्कायां कलायाम्, कल्प०७ क्षण०।

तेल्लिय- त्रि० *[तैलिक]*
तैलविक्रयकारिणि, वव०९ उ०। आव०।

तेल्लोक्कविहियमहियपूइय- पुं० *[त्रैलोक्यविहितमहितपूजित]*
त्रैलोक्येन त्रिलोकवासिना जनेन समग्रैश्वर्याऽऽद्यतिशयसंदोह-दर्शन समाकुलचेतसा हर्षभरनिर्भरेण प्रबलकुतूहलबलादनिमिष लोचनेनावलोकितः। सेव्यतया वाञ्छितः पूजितश्च पुष्पाऽऽदि-भिर्यः स तथा। तस्मिन्, उवा० ७ अ०।

तेवग्ग- पुं० *[त्रिवर्ग]*
त्रयो वर्गास्त्रिवर्गाः। लोकरूढ्या धर्मार्थिकामेषु, नं०।

तेवट्ठि- स्त्री० *[त्रिषष्टि]*
त्र्यधिकायां षष्टिसंख्यायाम्,'तेवट्ठीए राइंदिएहिं।'सम०६३ सम०

तेवत्तरि- स्त्री० *[त्रिसप्तति]*
त्र्यधिकायां सप्ततिसंख्यायाम्, सम०७२ सम०।

तेवीसइम- त्रि० *[त्रयोविंशतितम]*
त्र्यधिकविंशतिसंख्यापूरके, स्था० ६ ठा०।

तोडन- न० *[तोदन]*
व्यथने, सूय० १ श्रु०५ अ०१ उ०।
असहने, दे०ना०५ वर्ग०१८ गाथा।

तोडहिया- स्त्री० *[तोडहिका]*
'खरमुही' इत्याख्ये वाद्यविशेषे, आचा०२ श्रु०२ चू०४ उ०।

तोड्ड- पुं० *[तोड्ड]*
चतुरिन्द्रियजीवभेदे, पन्न०१ पद०।

तोण- पुं० *[तृण]* इ
शरभस्त्रायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ०।
शरधीत्यपरनामधेये वाणाऽऽश्रये, विपा० १ श्रु०३ अ०। जीवा०।
इषौ, निर० १ श्रु०१ वर्ग०१ अ०।

तोदग- त्रि० *[तोदक]*
व्यथके, उत्त०२० अ०।

तोमर- पुं० *[तोमर]*
बाणविशेषे, जंबू०३ वक्ष०। पण्हा०। आचा०।
'असिसत्तिकोंततोमरसूलतिसलेसु सूइवियगासु।' सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०। उव०।

तोय- न० *[तोय]*
जले, वव०२ उ०। आव०।
व्यथायाम्, ठा० ४ ठा० ४ उ०।

तोयधारा- स्त्री० *[तोयधारा]*
ऊर्ध्वलोकवास्तव्यायां पञ्चम्यां दिक्कुमारिकायाम्, आव०म०१ अ० । आव०। आव०चू०। जंबू०।
'अष्टोर्ध्वलोकादेत्यैताः, नत्वाऽर्हन्तं समाकृतम्। तत्र गन्धाम्बु-पुष्पौधवर्षं हर्षाद्वितेनिरे। आव०।

तोयपिट्ठ- न० *[तोयपृष्ठ]*
जलोपरितनभागे, उव० ।

तोरण- न० *[तोरण]*
द्वारावयवविशेषे, । ठा० । आचा० । रा० । पण्हा० । जीवा० । पन्न० । उव० । सम० ।
बहिर्द्वारि स्तम्भोपरिस्थे सिंहाऽऽकारे काष्ठे, द्वारबाह्यभागे च, कन्धरायाम्, न० । ठा० ।

तोरामदा- न० *[त्वरामत्]*
नेत्ररोगभेदे, 'सब्भूकडक्खा तोरामदा महालसा वंका विवंका कुसीला अद्धक्खिआ काणक्खिआ।' महानि० ३ अ० ।

तोलण- न० *[तोलन]*
माने, आचा०१ श्रु०४ चू०१ अ० ।
पुरुषे, दे० ना०५ वर्ग०१७ गाथा।

तोसग- पुं० *[तोसक]*
स्वनामख्यातेऽवन्तिराजे, आव० ।

तोसलि- पुं० *[तोसलिन्]*
स्वनामख्याते ग्रामे, यत्र गच्छन् वीरः सप्त वारान् रज्वा बद्धः ततस्तोसलिकक्षत्रियेण मोचितः। आव०म० १ अ० ।
आव०चू० ।
तोसलिदेशस्थे स्वनामख्याते आचार्ये आचा० ।

तोसलिपुत्त- पुं० *[तोसलिपुत्र]*
दशपुरनगरस्थे स्वनामख्याते आचार्ये यत्र सोमदेवब्राह्मणस्य रुद्रसेनायां भार्यायामुत्पन्नश्चतुर्दशविद्यापारगोरक्षितो नाम पुत्रो बभूव। तेन च मातृप्रेरितेन तोसलिपुत्राऽऽचार्याणां समीपे दीक्षा प्रतिपन्ना। विशे० । आव०म० । आव०चू० । आव० ।

तोसलिय- पुं० *[तोसलिक]*
तोसलिग्रामाधिपे क्षत्रिये, आव०म०१ अ० । आव०चू० ।

तोसिय- त्रि० *[तोषित]*
संतोष प्रापिते, आव०म०१ अ०१ ।

त-कारादि शब्द-परिभाषाः समाप्ताः

थकारादि शब्द-परिभाषा

थ- पुं० *[थ]*

वाक्यालङ्कारे, नाया० १ श्रु०८ अ०।

निपातः पादपूरणे। बुह० ।

थंडिल- न० *[स्थण्डिल]*

परानुपरोधात्प्रासुके भूभागे, गच्छा०२ अधि० आव०।

छारचितीवर्ज्जितं केवलं मडयदट्ठाणं। निसि०।

स्थण्डिलं उच्चारभूमिः। आव०।

अचितभूमी। निसि० ।

यदुदयेन ह्यात्मा सदसद्विवेकविकलत्वात्स्थण्डिलवद्भवति स स्थण्डिलः-क्रोधः। सूय०।

स्थण्डिलं-भूभागः। आव०।

थंभ- पुं० *[स्तम्भ]*

उत्तमजातीयोऽहं कथमेतेषां भिक्षाचराणां हीनजातीयानां पार्श्वे गच्छामीत्यादिलक्षणे जात्याद्यभिमाने, आव०म०१ अ० । उत्त०। आव०। दश०।

अहङ्कारे, उत्त० ११ अ०।

अवमाननायाम्, भग०१२ श०५ उ०।

गर्वे, सूय०१ श्रु०१३ अ०।

शैलदारुमयाऽऽदौ, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०७ उ०।

स्थाणौ, ठा०४ ठा०२ उ०।

स्तम्भं जात्याद्यभिमानम्। आव०।

स्तम्भः मानः। दश०।

जात्यादिसमुत्थोऽहङ्कारः। उत्त० ।

थंभण- न० *[स्तम्भन]*

ऊर्द्धीकरणे, उव०।

थंभणया- स्त्री० *[स्तम्भनता]*

ग्रीवायां धमन्यादीनां तिष्ठतो वाऽऽत्मनोऽङ्गप्रदेशानामवरोधे, पन्न०१६ पद। आव०म०। सूय०।

स्तम्भनता स्तम्भनया या यथा तावदुपविष्टः स्थितो यावत् सुप्तः पादादिः स्तब्धो जातः। ठा०।

स्तम्भनं ऊर्ध्वीकरणम्। उव०।

स्तम्भनताव-ङ्गतेर्द्वितीयो भेदः। पन्न०।

तावदुपविष्टः स्थितो यावत्सुप्तः स्तब्धो जातः, । आव०।

थंभणी- स्त्री० *[स्तम्भनी]*

स्तम्भनकारिणि विद्याभेदे, सूय०२ श्रु०२ अ०। नाया०।

थंभिय- त्रि० *[स्तम्भित]*

स्तब्धीकृते, ठा०८ ठा०।

'कडगतुडियथंभियभुया।'पन्न०२२ पद०। उव०। सम०। आव०

थक्क- पुं० *[थक्क]*

स्थितम्। ओह०।

अवसरः। आव०। उत्त० ।

थक्कः-देशः। काले। निसि०। निसि०।

प्रस्तावः। वव०।

थक्कारेंत- त्रि० *[थक्कारयत्]*

'थक्का' इत्येवं महान्तं शब्दं कुर्वति, आव०म० १ अ० ।

थगण- न० *[स्थगन]*

पिधाने, ठा०४ ठा०४ उ०।

संवरणे, आव० ६ अ०।

थगिय- त्रि० *[स्थगित]*

पिहिते, दश०५ अ०१ उ०।

संवृत्ते, परित्यक्ते, आव०म०१ अ०२ । आव०।

थण- पुं० *[स्तन]*

वक्षोजे, पयोधरे, मांसगोले, । नाया० २ श्रु० १ वर्ग० १ अ०। अणुओ०।

कुचे। आव०।

थणगच्छीर- न० *[स्तनकक्षीर]*

पयोधरदुग्धे, तं०।

थणण- न० *[स्तनन]*

रारटने, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ०।

आक्रन्दने, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।

आक्रोशे, आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ०। सूय०।

सशब्दनिःश्वासे, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

थणपीलण- न० *[स्थनपीडन]*

पयोधरचम्पने, तं०।

थणिय-१ न० *[स्तनित]*

मेघगर्जिते, पण्हा०४ अ०। अणुओ०।

दीर्घविस्वराऽऽक्रन्दने, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।

रसिते, सम०।

भोगसमये दूरतरघनगर्जितानुकारिशब्दे, उत्त० १६ अ०।

कृतमन्दध्वनौ, नाया०१ श्रु०१ अ०।

थणिय-२ न० *[स्तनित]*

स्तनितकुमारे भवनपतिभेदे, तं०।

थणियकुमार- पुं० *[स्तनितकुमार]*

भूषणनियुक्तहयवररूपचिह्नधरे दशमे भवनपतिनिकाये, पन्न०२ पद०। ठा०।

छावत्तरि थणियकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता।भग०१६श०१३ उ

वरुणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्त्तिनो देवाः। भग० ।

स्तनितकुमाराः-भवनपतिभेदविशेषः। पन्न०

थणियसद्द- पुं० *[स्तनितशब्द]*
मेघगर्जिते, ठा० ३ ठा०१ उ० ।
थद्ध- त्रि० *[स्तब्ध]*
मानवति, सम० ३० सम० ।
अहङ्कारिणि, उत्त० १७ अ० । गच्छा० ।
यत्किञ्चनकारिणि मानिनि, सूय०२ श्रु०२ अ० ।
स्तब्धकृते द्वितीयदोषदुष्टे वन्दने, बुह०३ उ० । आव० ।
स्तब्धं जात्यादिमदस्तब्ध-कृतिकर्मणि द्वितीयोः दोषः । आव०
स्तब्धं-सुदृढम् । जंबू० ।
स्तब्धाय स्वभावत एव मानप्रकृत्या विनयभ्रंशकारिणे । सूर०
थय- पुं० *[स्तव]*
स्तुतावित्यस्मादच् । आव०चू० ३ अ० ।
गुणकीर्तने, वव० ।
थयण- न० *[स्तवन]*
स्तुतौ, थुइथयणवंदणनमंसणाणि एगट्ठियाणि । आव० २ अ० ।
थयथुइमंगल- न० *[स्तवस्तुतिमङ्गल]*
स्तवः शक्रस्तवपाठः, स्तुतिस्तूर्द्धीभूय कथनम् । स्तवाश्च स्तुतयश्च स्तवस्तुतयः, ताएव मङ्गलं स्तवस्तुतिमङ्गलम् । स्तवस्तुतिरूपे भावमङ्गले, उत्त० २९ अ० ।
थरथरंत– न० *[थरथरंत]*
कम्पमानः । पिंड० १६३ ।
भृशं कम्पमानः । बुह० ।
थल- न० *[स्थल]*
अटव्याम्, दशा०७ अ० ।
उच्चभूमिभागे, उत्त० २ अ० ।
भूमिप्रदेशविशेषे, ठा०५ ठा०३ उ० । ध० ।
आकाशे, निसि०१ उ० । ओह० । बुह० ।
इह कवलप्रक्षेपणाय मुखे विड्विंते यदाकाशं भवति तत् । वव० ।
जलपरिहारेण स्थितो नदिकूर्परपथः । बुह० ।
स्थलं-धुल्युच्छ्रयरूपम् । भग० ।
थलकुक्कुडियंड- न० *[स्थलकुक्कुट्यण्ड]*
इह कवलप्रक्षेपणाय मुखे विडम्बिते यदाकाशं भवति तत्स्थलं भण्यते, स्थलमेव कुक् कुट्यण्डकं स्थलकुक्कुट्यण्डकम् । कवलप्रक्षेपार्थं विकाशिते मुखे, वव० ७ उ० ।
थलकुक्कुडियंडप्पमाण- न० *[स्थलकुक्कुट्यण्डप्रमाण]*
मुखविवरप्रमाणे कवले, यावत्प्रमाणमात्रेण कवलेन मुखे प्रक्षिप्यमाणेन मुखं न विकृतं भवति । वव० ७ उ० ।
थलचार- पुं० *[स्थलचार]*
स्थले रथाऽऽदिना देशान्तरावाप्तौ, आचा०१ श्रु०५ अ०१ उ० ।
स्थलचरः मनुष्यादिकः । दश० ।

थलयपुप्फ- न० *[स्थलजपुष्प]*
विचकिलकोरण्टकाऽऽदिके स्थल एव जायमाने कुसुमे, । आव० म० १ अ० । पन्न० ।
थलयर- पुं० *[स्थलचर]*
स्थले चरतीति स्थलचरः । ठा० १० ठा० ।
स्थलजेषु पञ्चेन्द्रियतिर्यक्षु, ठा० १० ठा० । सम० ।
थली- स्त्री० *[स्थली]*
देवद्रोण्याम्, निसि० १ उ० ।
थलीघोडय- पुं० *[स्थलीघोटक]*
देवडङ्गरापरपर्याये पशुविशेषे, वव० ७ उ० ।
थव- पुं० *[स्तव]*
'थय' शब्दार्थे, आव०चू०३ अ० ।
थवइय- त्रि० *[स्तवकित]*
संजातपुष्पस्तवके, भग०१ श०१ उ० । जीवा० । उव० । नाया० । जंबू० । रा० ।
स्तबकवान् । नाया० । उव० ।
थवण- न० *[स्तवन]*
'थयण' शब्दार्थे, आव०२ अ० ।
थवथुइमंगल- न० *[स्तवस्तुतिमङ्गल]*
'थयथुइमंगल' शब्दार्थे, उत्त०२९ अ० ।
थवय- पुं० *[स्तवक]*
पुष्पगुच्छे, जीवा०३ प्रति०४ उ० ।
थविर- पुं० *[स्थविर]*
प्रवर्तितव्यापारान् संयमयोगेषु सीदतः साधून् ज्ञानाऽऽदिषु ऐहिकाऽऽमुष्मिकापायदर्शनतः स्थिरीकरोतीति स्थविरः । ठा० । । उत्त० । आचा० ।
सीदतां स्थिरीकरणहेतौ, दश० ९ अ० १ उ० । वव० ।
थविरकंचुइज्ज- पुं० *[स्थविरकञ्चुकीय]*
अन्तःपुरप्रयोजननिवेदके व्यतीहारे, भग० ९ श० ३३ उ० ।
थविरकप्प- पुं० *[स्थविरकल्प]* ६ त० ।
आचार्याऽऽदीनां गच्छप्रतिबद्धानां सामाचार्याम्,ठा०३ठा०४ उ०
थविरकप्पट्ठिइ- स्त्री० *[स्थविरकल्पस्थिति]*
स्थविरा आचार्याऽऽदयो गच्छप्रतिबद्धास्तेषां कल्पस्थितिः स्थविर कल्पस्थितिः । बुह०४ उ० ।
कल्पस्थितिभेदे, बुह०५ उ० । ठा० । पंच०चू० । । पंच०भा०
थविरकप्पिय- पुं० *[स्थविरकल्पिक]*
स्थविरकल्पमाश्रिते, बुह० ।
थविरभूमि- स्त्री० *[स्थविरभूमि]*
स्थविरो वृद्धस्तस्य भूमयः स्थविरभूमयः । वृद्धपदवीषु, ठा० ३ ठा० २ उ० ।

थविरभूमिपत्त- त्रि० *[स्थविरभूमिप्राप्त]*
आचार्यपदप्राप्ते, वव० १ उ०
सूत्रार्थतदुभयोपेते, बुह०१ उ०।

थविरय- पुं० *[स्थविरक]*
जीर्णे, आचा० १ श्रु०१ अ०२ उ०। सूय०
शतातीते वृद्धे, सूय० १ श्रु०३ अ०२ उ०।

थविरवेयावच्च- न० *[स्थविरवैयावृत्त्य]*
स्थविराणां भक्तपानाऽऽदिभिरुपष्टम्भे, उव०।

थविरावली- स्त्री० *[स्थविराऽऽवली]*
ऐदंयुगीनसाधूनामुपकारार्थं प्रवचननेतॄणामावलिकायाम्, नं०।

थविरोवघाइय- पुं० *[स्थविरोपघातिक]*
स्थविरा आचार्याऽऽदिगुरवस्तान् आचारदोषेण शीलदोषेणाव-ज्ञाऽऽदिभिर्वोपहन्तीत्येवंशील:, स एव वा स्थविरोपघातिक:। दशा०२ अ०। ठा०।
षष्ठासमाधिस्थे, आव० ४ अ०। दशा०। आव०चू०।

थाइणी- स्त्री० *[स्थायिनी]*
प्रतिवर्षविजननशीलायाम्, स्थायिन्यो नाम वडवास्ता उच्यन्ते वर्षे वर्षे विजायन्ते या:। बुह० ३ उ०।

थाणणिउत्त- त्रि० *[स्थाननियुक्त]*
स्थाने पदे नियुक्ता: स्थाननियुक्ता:। प्रवर्तकस्थविर गणावच्छे-दकाऽऽख्येषु पदस्थगीतार्थेषु, बुह० १ उ०।

थाणविसेस- पुं० *[स्थानविशेष]*
आसनविशेषे, विशे०।

थाणाणिउत्त- त्रि० *[स्थानानियुक्त]*
सामान्यसाधुषु, बुह०१ उ०।

थाणु- पुं० *[स्थाणु]*
स्तम्भे, ठा०४ ठा०२ उ०।
कीलके, विशे०।

थाम- न० *[स्थामन्]*
वीर्ये, बुह०१ उ०।
'जोगो वीरियं थामं' इत्येकार्था: ।आव०म० ।आव०चू० ।निसि०
क्रियायाम्, । गच्छा० ।
सामर्थ्ये, गच्छा० १ अधि०। सूय०।
प्राणे, शारीरबलयुक्ते, ओह०। नाया०। पिंड०। ठा०।
बलवति । निसि०११ उ०।

थामवं- त्रि० *[स्थामवत्]*
स्थाम बलं, तदस्य संयमविषयमस्तीति स्थामवान्। उत्त०२ अ०
शीताऽऽतपाऽऽदिसहनं प्रति सामर्थ्यवति, उत्त० २ अ०।
मनोबलयुक्ते, । उत्त०।
धैर्ययुक्ते, उत्त० २ अ०।

थामावहारविजढ- त्रि० *[स्थामापहारविमुक्त]*
अनिगृहीतबलवीर्ये, बुह० १ उ०।

थाल- न० *[स्थाल]*
त्रट्टे, भग०१५ श०।
पाकपात्रे च। आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ०। रा०। जंबू०।

थालइ- पुं० *[स्थालकिन्]*
गृहीतभाण्डे वानप्रस्थभेदे, निर०१ वर्ग०७ अ०। उव०। भग०।

थालपाणय- न० *[स्थालपानक]*
स्थालं त्रट्टं तत्पानकमिव दाहोपशमहेतुत्वात् स्थालपानकम्। आजीविकानामकल्पनीये स्थालके भग० १५ श०।

थाली- स्त्री० *[स्थाली]*
उखायाम्, जीवा०३ प्रति०२ उ०।
पिठर्याम्, ठा० ३ ठा०१ उ०। सूर०। आव०म०।
बृहद्-भाजनविशेष:। ओह० ।

थालीपाग- त्रि० *[स्थालीपाक]*
स्थाल्यामुखायां पाको यस्य तत्स्थालीपाकम्।
स्थाल्यां पक्के, ठा०
स्थाली पिठरी, तस्यां पाको यस्य तत्तथा। अन्यत्र हि पक्कमपक्कं वा न तथाविधं स्यादितीदं विशेषामिति।
शुद्धं भक्तदोषवर्जितं, स्थालीपाकं च तच्छुद्धं स्थालीपाकेन वा शुद्धमिति विग्रह:। ठा० ३ ठा० १ उ०।

थालीपागसुद्ध– त्रि० *[स्थालीपाकशुद्ध]*
स्थाल्यां उखायां पाको यस्य तत्स्थालीपाकं, अन्यत्र हि पक्कम-पक्कं वा न तथाविधं स्यादितीदं विशेषणं,
शुद्धंभक्तदोषवर्जितं, तत:कर्मधारय: स्थालीपाकेन वा शुद्धम्। भग० । ठा० ।

थावच्चा- स्त्री० *[स्थापत्या]*
द्वारवतीवासिन्यां स्वनामख्यातायां गृहपतिकायाम्, नाया० १ श्रु० ५ अ०।

थावच्चापुत्त- पुं० *[स्थापत्यापुत्र]*
स्थापत्याया गृहपतिकाया: सुते, नाया० १ श्रु०४ अ०।
द्वारवत्यां सार्थवाह-पुत्र:। नाया० । *अनुत्त०* ।

थावत– धा० *[स्थापक]*
पक्षमक्षेपेण प्रसिद्धव्याप्तिकत्वात् समर्थयति,
यथा परिव्राजकधूर्ते लोकमध्यभागे दत्तं बहुफलं भवति तच्चाहमेव जानामीति मायया प्रतिग्राममन्यान्यं लोकमध्यं प्ररूपयति सति तन्निग्रहाय कश्चित् श्रावको लोकमध्यस्यैक-त्वात् कथं बहुषु ग्रामादिषु तत्सम्भव इत्येवंविधोपपत्त्या त्वद्दर्शितो भो लोकमध्यभागो न भवतीति पक्षं स्थापितवानिति स्थापक:। ठा० २५४।

थावय- पुं० *[स्थापक]*
स्थापयति पक्षमक्षेपेण प्रसिद्धव्याप्तिकत्वात् समर्थयति यः स तथा। हेतुभेदे, । ठा०।

थावर- पुं० *[स्थावर]*
तिष्ठतीत्येवंशीलः स्थावरः। जीवा० १ प्रति०।
शीताऽऽतपाऽऽद्युपेतत्वेऽपि स्थानान्तरं प्रत्यनभिसर्पितया स्थानशीले, उत्त० ५ अ०।
स्थावरनामकर्मोदयात् पृथिव्यादिके, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ०। आव०चू०। ठा०। नं०।
स्थावराः पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः।आचा०१ श्रु०९ अ०१ उ०।
सूत्र द्विविधः स्थावरः, सूक्ष्मबादरभेदात्। सूक्ष्मस्थावरो वनस्पत्यादिः। बादरस्थावरः पृथिव्यादिः। सूय०।
उष्णाद्यभितापेऽपि तत्स्थानपरिहारासमर्थाः सन्तस्तितष्ठन्तीत्येवं शीलाः स्थावराः पृथिव्यादयः। जीवा० ।

थावरकाय- पुं० *[स्थावरकाय]*
स्थावरनामकर्मोदयात् स्थावराः पृथिव्यादया, तेषां काया राशयः स्थावरो वा कायः शरीरं येषां ते स्थावरकायाः। पृथिवीकायाऽऽदिषु, ठा०।

थावरविस- न० *[स्थावरविष]*
विषभेदे, यद्वि भुक्तं सत्पीडयति। ठा० ६ ठा०।

थासग- पुं० *[स्थासक]*
दर्पणाऽऽकारे, नाया० १ श्रु० १ अ०। जंबू०। विपा० ।
आदर्शकाऽऽकारे, भग० ११ श०११ उ०। उव०।
हस्तबिम्बे, नाया०१ श्रु०१ अ०।
अश्वाऽऽभरणविशेषे। अणुओ०।
दर्पणाकार आभरणविशेषः। जंबू० ५३०।

थासगावली- स्त्री० *[स्थासकाऽऽवली]*
दर्पणाऽऽकृतीनां स्थासकानां स्फूरकाऽऽदिषु उपर्युपरि स्थितानां पद्धतौ, अनुत्त० १ वर्ग० २ अ०।

थाह- न० *[स्ताघ]*
यावति जले नासिका न ब्रुमति तावति जले, बुह० ४ उ०।
गाधे, नाया० १ श्रु०५ अ०।

थिग्गल- न० *[स्थिग्गल]*
प्रदेशपतितसंस्कृते, आचा० २ श्रु०१ चू० १ अ०६ उ०। पन्न०।
चित्ते, 'आलोय थिग्गलं दारं, संधिं दगभवणाणि य। चरंतो न विनिज्झाए, संकट्ठाणविवज्जए' दश० ५ अ०१ उ०।

थिण्ण- त्रि० *[स्त्यान]*
कठिने, नाया० १ श्रु०९ अ०।

थिमिओदय- न० *[स्तिमितोदक]*
यस्याधः कर्दमो नास्ति तादृशे जले, उव०।

थिमिय- त्रि० *[स्तिमित]*
स्वचक्रपरचक्रतस्करडमराऽऽदिसमुत्थभय-कल्लोलमालाविवर्जिते, सूर० १ पाहु०। रा०। पण्हा०। भग०
भयवर्जितत्वेन स्थिरे, उव०। विपा० । नाया०।
निभृते, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ०।
दशारपुरुषाणां तृतीये पुरुषे, अंत० १ श्रु० १ वर्ग०१ अ०।
स च अन्धकवृष्णेर्धारण्यामुत्पद्यारिष्टनेमेरन्तिके प्रव्रज्य शत्रुञ्जये सिद्ध इति अन्तकुद्दशानां प्रथमवर्गे चतुर्थेऽध्ययने चिन्तितम्। अंत० १ श्रु० १ वर्ग० १ अ०। ठा०।

थिमियमज्झ- त्रि० *[स्तिमितमध्य]*
स्तिमितं स्थिरं मध्यं देहिनोऽन्तः करणं यस्मिन् सति तत्तथा। निश्चलमनस्के, पण्हा० ४ अ०

थिर- त्रि० *[स्थिर]*
संहननधृतिभ्यां बलवति, आव०४ अ०। आचा० । सूय०।
निश्चले, नाया० १ श्रु० ८ अ०। वव०। पण्हा०। उत्त०।
अप्रकम्पे, भग० ११ श०११ उ०। आव०।
अनतिश्लथे, जीवा० ३ प्रति० ४ उ०।
दृढे, । आचा०२ श्रु०१ चू० ५ अ० २ उ०। नं०। आव०। बुह०। निसि० ।
असंख्येयकालावस्थायिनि, सूय० १ श्रु०१ अ०१ उ०।
तत्रावस्थाया ध्रुवकर्मिके, वव० ६ उ०।
स्थिरा नाम येषां तत्रैव गृहाणि। बुह० १ उ०।
ध्रुवे, निसि० ५ उ०।
स्थिरो नाम उद्योगं कुर्वन्नपि न परिताम्यति। वव०३ उ०।
स्थिरा निष्पन्ना। दश० ७ अ०।
सुप्रतिष्ठानं दृढं वा। बुह०।
दढसंघयणो। निसि०।
दृढसंहननः। ओह०।
पौनःपुन्यकरणेन परिचितो वा कृत-योगः। आव०।
धितिसंघयणेहिं बलवं अहवा दरिसणे पव्वज्जाए वा थिरो अचलेत्यर्थः। निसि०।

थिरग्गहत्थ- त्रि० *[स्थिराग्रहस्त]*
स्थिरोऽग्रहस्तो यस्य स स्थिराग्रहस्तः। जीवा० ३ प्रति०२ उ०।
सुलेखवत् तथाविधहस्ते, उत्त० ४ अ०। भग०।

थिरचित्त- त्रि० *[स्थिरचित्त]*
अविचलमानसे, जीवा०६ अधि०।

थिरजाय- पुं० *[स्थिरजात]*
स्थिरेण निर्विघ्नेन जात उत्पन्नो गर्भे स्थिरजातः।चिरेण जाते, तं०

थिरता- स्त्री० *[स्थिरता]*
स्थैर्ये, बुह० ४ उ०।

थिरपइण्ण- त्रि० *[स्थिरप्रतिज्ञ]*
भाषितस्यानन्यथाकारके, आव० ६ अ०।
स्थिरप्रतिज्ञः-यो न भवितमन्यथा करोति। आव०

थिरपरिवाडि- पुं० *[स्थिरपरिपाटि]*
स्थिरा अतिशयेन निरन्तराऽभ्यासतः स्थैर्यमापन्ना अनुयोगपरिपाट्यो यस्य स स्थिरपरिपाटिः। वव०। अणुओ०। गच्छा०।
परिचितसूत्रार्थे, आचा० १ श्रु०१ अ०१ उ०
स्थिरपरिपाटी स्थिरपरिचितग्रन्थस्य सूत्रं न गलति। दश० ।
स्थिरपरिपाटिः,
परिचितग्रन्थस्य सूत्रार्थगलनासम्भवात्।आचा०

थिरव्वय- पुं० *[स्थिरव्रत]*
व्रतेषु स्थिरे, आव०म० १ अ० ।

थिरसंघयण- पुं० *[स्थिरसंहनन]*
स्थिरं दृढं संहननं यस्य सः। आव०म०१ अ०१ ।
बलवत्तरशरीरे, दशा०४ अ०।
अविघटमानसंहनने, भग०१५ श०।

थिरसंघयणया- स्त्री० *[स्थिरसंहननता]*
तपःप्रभृतिषु शक्तियुक्ततायाम्, उत्त० १ अ०।
शरीरसंपद्भेदे, ठा० ८ ठा०।

थिरसत्त- पुं० *[स्थिरसत्त्व]*
स्थिरं परीषहाऽऽदिसंपातेऽप्यध्वंसात्सत्त्वं यस्य स स्थिरसत्त्वः। तस्मिन्, ठा० ४ ठा०३ उ०।
निश्चलमानसावष्टम्भे, बुह०१ उ०।

थिरसरीर- पुं० *[स्थिरशरीर]*
शारीरबलोपेते, बुह०१ उ०।

थिरावलिया- स्त्री० *[स्थिराऽऽवलिका]*
भुजपरिसर्पणीभेदे, जीवा० २ प्रति०।

थिरीकरण- न० *[स्थिरीकरण]*
सीदतां चारित्राऽऽदिषु स्थैर्यहेतौ, जीत०।
धर्माद् विषीदतां तत्र चारुवचनचातुर्यादवस्थापने, दश०।
स्वगतपरगतधर्मव्यापाराणां स्थिरत्वाऽऽधाने, निसि०
स्थिरीकरणं-धर्माद् विषीदतां तत्रैव स्थापनम्। पन्न०।

थिल्लि- स्त्री० *[थिल्लि]*
वेगसराऽऽदिद्वयविनिर्मिते यान-विशेषे, दशा० ६अ०। सूय०। जंबू०। रा०।
लाटानां यत् रूढं, तदन्यविषयेषु थिल्लिरित्युच्यते। जीवा०३ प्रति० ४ उ०। उव०। नाया०। भग०।
वेगसरादिद्वयविनिर्मितो यानविशेषः। जंबू०।
लाटानां यदश्वपल्यानं तदन्यविषयेषु थिल्लीत्युच्यते। भग०।
अड्डपल्लाणं रूढं तदन्यविषये थिल्लिरित्युच्यते। जीवा०

थिवथिवंत त्रि० *[स्तिवस्तिवत्]*
द्रिग् द्रिगायमाने, तं०।
थिविथिविवायमानैरत्रैर्वीभत्सं, रौद्रमित्यर्थः। तं०।

थिवुग- पुं० *[स्तिवुक]*
पानीयविन्दौ, आव०चू०१ अ०। आव०म०। पन्न०। विशे०।

थिहु- स्त्री० *[स्तिभु]*
साधारणबादरवनस्पतिकायभेदे, जीवा० १ प्रति०

थीण- त्रि० *[स्त्यान]*
संघातमापन्ने, ठा०९ ठा०।

थीणगिद्धि- स्त्री० *[स्त्यानगृद्धि]*
स्त्याना बहुत्वेन सङ्घातमापन्ना गृद्धिरभिकाङ्क्षा जाग्रदवस्थाऽध्यसवसितार्थसाधनविषया यस्यां स्वा पावस्थायां सा स्त्यानगृद्धिः, तस्यां हि सत्यां जाग्रदवस्थाऽध्यवसितमर्थमुत्थाय साधयति, स्त्याना वा पिण्डीभूताऋद्धिरात्मशक्तिरूपा यस्यामिति स्त्यानर्द्धिरित्यप्युच्यते। तमावे हि स्वप्नुः केशवार्द्धबलसदृशी शक्तिर्भवति।
अथवा– स्त्याना जडीभूता चैतन्यर्द्धिरस्यामिति स्त्यानर्द्धिरिति, तादृशविपाकवेद्या कर्मप्रकृतिरपि स्त्यानर्द्धिः, स्त्यानगृद्धिरिति वा। ठा० ९ ठा०। उत्त०।

थीणद्धि- स्त्री० *[स्त्यानर्द्धि]*
स्त्याना पिण्डीभूता ऋद्धिरात्मशक्तिरूपा यस्यां स्वापावस्थायां सा स्त्यानर्द्धिः। तद्भावे हि उत्कर्षतः प्रथमसंहननस्य केशवार्द्धबलसदृशी शक्तिर्भवति, श्रूयते चैवं कथानक आगमे क्वचित्प्रदेशे कोऽपि क्षुल्लको विपाकप्राप्तस्त्यानर्द्धिनिद्रासहितो द्विरदेन दिवा स्खलीकृतः, ततः स तस्मिन् बद्धाऽभिनिवेशो रजन्यां स्त्यानर्द्ध्युदये वर्तमानः समुत्थाय तद्दन्तयुगलमुत्पाट्य स्वोपाश्रयद्वारि च प्रक्षिप्य पुनः सुप्तवान् इत्यादि। तद्विपाकवेद्या कर्मप्रकृतिरपि स्त्यानर्द्धिः। जीत०।
इत्थं चित्तं तं थीणं जस्स अच्चंत दरिसावरणकम्मोदया सा थीणद्धी। निसि०।

थुइ- स्त्री० *[स्तुति]*
स्तवने, आव०२ अ०। सूय०।
स्तुतिर्द्विधाप्रणामरूपा, असाधारण गुणोत्कीर्त्तनरूपा च। नं०।
ऊर्द्धीभूय जघन्येन चतुष्टयस्तुतिप्रकथने, मध्यमेनाष्टस्तुतिकथने, उत्कृष्टेन १०८ स्तुतिकथने, उत्त० १४ अ०। निसि०।
अनुशिष्टौ, वव० १ उ०।

थुइमंगल- न० *[स्तुतिमङ्गल]*
प्रतिक्रमणस्यान्ते स्तुति(त्रय)भणने, ओह०।

थुक्कार- पुं० *[थूत्कार]*
महता शब्देन थुगितिकरणे, रा०।

थुड- न० *[स्थुड]*
वनस्पतीनां स्कन्धभागे, ठा० १० ठा०।

थुणण- न० *[स्तवन]*
स्तोत्रैर्गुणकीर्तने, आचा०२ श्रु०३ चू०१ अ०। दशा०।

थुल्ल- त्रि० *[स्थूल]*
मोट्टे, आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०२ उ०।

थुव्वंत- त्रि० *[स्तूयमान]*
अभिनन्द्यमाने, भग०१५ श०।

थूणा- स्त्री० *[स्थूणा]*
छादनाऽऽदिस्तम्भनार्थछल्लीकाष्ठे, निसि० १३ उ०।
'थूणा णं भंते ! उड्ढं ऊसिया समाणी जावइयं खेत्तं ओगाहित्ता णं चिट्ठेति, तिरियं पि य णं आयता समाणी तावइयं चेव खेत्तं ओगाहित्ता णं चिट्ठइ ?
हंता गोयमा ! थूणा णं उड्ढं ऊसिया तं चेव चिट्ठइ।'
पन्न० १५ पद०।
पूर्वजनपदभेदे, पूर्वस्यां दिशि स्थूणाविषयं यावद् विहरेत्।
बुह० १ उ०।
वेली। निसि०।
स्थूणा नगरी। आव० १७१।
स्थूणा-ऊर्ध्वतिर्यक्करणयोगात्सङ्घातशाटविरहादुभयशून्या।आव०

थूणाग- पुं० *[स्थूणाक]*
स्वनामख्याते सन्निवेशे, यत्र एकः सामुद्रिकः छद्मस्थविहरतो वीरजिनस्य लक्षणानि दृष्ट्वा विस्मितः शक्रेण प्रत्युक्तः। आव०म०

थूणामंडव- पुं० *[स्थूणामण्डप]*
स्थूणाप्रधान वस्त्राऽऽच्छादिते मण्डपे, नाया०१ श्रु०३ अ०।

थूभ- पुं० *[स्तूप]*
संघातावयविनि, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०।
पीठे, जंबू०२ वक्ष०। रा०।
ऋषभभगवद्देहाऽऽदिदग्धस्थानेषु भरतेन स्तूपाः प्रावर्तन्त। रा०। आव०। वव०।
'इट्टगादिवियावच्चा थूभो भण्णति।' निसि० ३ उ०
स्तूपः-पीठविशेषः। जंबू०।
चितिविशेषः। पण्हा० ।
स्तूपः-चैत्यस्तूपः। रा० ।

थूभकरंड- न० *[स्तूपकरण्ड]*
ऋषभपुराऽऽसन्ने धन्ययक्षाऽऽवासे उद्याने, विपा० २ श्रु०२ अ०।

थूभमह- पुं० *[स्तूपमह]*
स्तूपस्य विशिष्टे काले पूजायाम्, आचा० २श्रु० १चू० १अ० २उ०

थूभिया- स्त्री० *[स्तूपिका]*
लघुशिखरे, जंबू० १ वक्ष०। जीवा०। रा०। नाया०।

थूल- त्रि० *[स्थूल]*
प्रमाणतः मौल्यतश्च । आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ०। पण्हा० ।
महति, पण्हा० ५ अ० ।
बृहति, सूय०१ श्रु० १ अ०१ उ०।
बृहत्काये उपचितमांसशोणिते, सूय०८ श्रु०६ अ०। उत्त०।
अनिपुणे, उत्त०१ अ०।
अत्यन्तमांसलोऽयं मनुष्यादिः। दश०।
स्थूलं-एरण्डकाष्ठादि। दश०।

थूलगअदिण्णादाण- न० *[स्थूलादत्ताऽऽदान]*
स्थूलं परिस्थूलविषयत्वेन प्रसिद्धमिदं चौर्याऽऽरोपणहेतुत्वेन प्रसिद्धमदत्ताऽऽदानम्। आव० ६ अ०।
तृतीयेऽणुव्रते, आव०।
परिस्थूलविषयं चौर्याऽऽरोपणहेतुत्वेन प्रसिद्धमिति दुष्टाध्यवसायपूर्वकं स्थूलं, विपरीतमितरत्, स्थूलमेव स्थूलकं, स्थूलकं च तत् अदत्तादानं चेति समासः। आव० ६ अ०।

थूलगअदिण्णादाणवेरमण- न० *[स्थूलकादत्ताऽऽदानविरमण]*
श्रावकस्य तृतीयेऽणुव्रते, आव० ६ अ०।

थूलगपाण- पुं० *[स्थूलकप्राण]*
द्वीन्द्रियाऽऽदिजीवे, आव०चू० ६ अ०

थूलगपाणाइवाय- पुं० *[स्थूलकप्राणातिपात]*
स्थूला एव स्थूलकाः, प्राणा इन्द्रियाऽऽदयः, तेषामतिपातः स्थूलकप्राणातिपातः। द्वीन्द्रियाऽऽदिजीववधे, आव० ६ अ०।

थूलगपाणाइवायवेरमण- न० *[स्थूलकप्राणातिपातविरमण]*
प्रथमाणुव्रते, आव० ६ अ०। आव०चू०।

थूलगमुसावाय- पुं० *[स्थूलकमृषावाद]*
परिस्थूलवस्तुविषयेऽतिपुष्टविवक्षासमुद्भवः स्थूलः, स्थूल एव स्थूलकः, स्थूलकश्चाऽसौ मृषावादश्चेति समासः। आव०६ अ०।

थूलगमुसावायवेरमण- न० *[स्थूलकमृषावादविरमण]*
द्वितीयाणुव्रते, आव० ६ अ०।

थूलभद्द- पुं० *[स्थूलभद्र]*
शकटालपुत्रे आर्यसंभूतिविजयस्य शिष्ये, कल्प० ८ क्षण०।
अन्तिमचतुर्दशपूर्वधरः। निसि०।
स्थूलभद्रः-स्त्रीपरीषहे दृष्टान्तः। उत्त०।
योगसंग्रहे-शिक्षादृष्टान्ते कल्पकवंशप्रसूतस्य नवमनन्दराजमन्त्रिशकटालस्य ज्येष्ठः पुत्रः यः शिक्षायोगवान् आचार्यो जातः। आव० ६७०।
संभूअस्स सीसो। निसि०।
स्थूलभद्रः-बहुश्रुतआचार्यविशेषः। उत्त० ।
स्थूलभद्रः-कल्पकवंशप्रसूतशकटालज्येष्ठपुत्रः। आव० ६९३।
स्त्रिया अजेता मुनिः। *मरण०* ।

थूलवय- पुं० *[स्थूलवचस्]*
स्थूलमनिपुणं वचो येषां ते स्थूलवचसः अविचार्यभाषिषु, उत्त०

थूलादत्तादाण- न० *[स्थूलादत्ताऽऽदान]*
परिस्थूलवस्तुविषये चौर्याऽऽरोपणहेतुत्वेन प्रसिद्धे अतिदुष्टाध्यवसायपूर्वके चौर्ये, ठा० ५ ठा० १ उ०।

थूलेसरो– पुं० *[स्थूलेश्वर]*
इहलोकगुणविषये व्यन्तरविशेषः। आव०।

थेज्ज- न० *[स्थैर्य]*
स्थिरतायाम्, उव०।
स्थेये, प्रीति करतया गच्छचिन्तायाः प्रमाणभूते, अनेकशो वा प्रीतिकरीकृते, वव० ३ उ०।

थेरकंचुइज्ज- पुं० *[स्थविरकञ्चुकिन्]*
'थविरकंचुइज्ज' शब्दार्थे, भग० ९ श०३३ उ०।

थेरकप्प- पुं० *[स्थविरकल्प]*
'थविरकप्प' शब्दार्थे, ठा० ३ ठा० ४ उ०

थेरकप्पट्ठिइ- स्त्री० *[स्थविरकल्पस्थिति]*
'थविरकप्पट्ठिइ' शब्दार्थे, बुह० ४ उ०।

थेरभूमि- *[स्थविरभूमि]*
जातिश्रुतपर्यायस्थविरेषु, स्थविरभूमिस्त्रिधा ठा० ३ ठा० २ उ०।

थेरभूमिपत्त- त्रि० *[स्थविरभूमिप्राप्त]*
'थविरभूमिपत्त' शब्दार्थे, वव० १ उ०। बुह०।

थेरय- पुं० *[स्थविरक]*
'थविरय' शब्दार्थे, आचा० १ श्रु० १ अ० २ उ०

थेरवेयावच्च- न० *[स्थविरवैयावृत्य]*
'थविरवेयावच्च' शब्दार्थे, वव० १ उ०।

थेरावली- स्त्री० *[स्थविरावली]*
'थविरावली' शब्दार्थे, नं०।

थेरोवघाइय- पुं० *[स्थविरोपघातिक]*
'थविरोवघाइय' शब्दार्थे, दशा० २ अ०।

थेव- त्रि० *[स्तोक]*
स्तोके, आव०। निर० १ अ०। आव०म०। विशे०

थोक्क- त्रि० *[स्तोक]*
अपर्याप्ते, आचा० १ श्रु०२ अ०४ उ०।
अणथोवं वणथोवं, अग्गीथोवं कसायथोवं च।
न हु भे वीससियव्वं, थेवं पि हु तं बहुं होइ।
आव०१ अ० आव०म०। विशे०।

थोगुच्चय- पुं० *[स्तोकोच्चय]*
स्तोकस्योद्धरणे, ज्यो० १ पाहु०। ।

थोभग- पुं० *[स्तोभक]*
चकारहिकारतुशब्दवाशब्दाऽऽदिषु निपातेषु ।विशे० ।आव० म०

थोव- पुं० *[स्तोक]*
सप्तप्राणाऽऽत्मके कालविशेषे,
'सत्त पाणाणि से थोवे, सत्त थोवाणि से लवे।'
भग०१ श०१ उ०।
ते च प्राणाः सप्त सप्तसंख्याका एकः स्तोकः। ज्यो०१ पाहु०। । तं० । कल्प०। नाया०। अणुओ०। ठा०।
अल्पे, पण्हा० २ अ०। ठा०। विशे०।
स्वल्पे, आव०४ अ०।
गणनाप्रमाणहीने,। विशे०।
'थोवाऽऽहारो थोवभणिओ अ, जो होई थोवणिद्दो अ। थोवोवहिउवगरणे, तस्स हु देवा वि परिणमंति।
सूय० १ श्रु० ८ अ०।

थोवअ- पुं० *[स्तोकक]*
वातकपक्षिणि, नाया०१ श्रु०१ अ०।

थ-कारादि शब्द-परिभाषाः समाप्ताः

द-कारादि शब्द-परिभाषा

दइय- पुं० *[दयित]*
पत्यौ, रक्षिते, नं० । आचा० । नाया० । आव०म० ।

दइवयप्पभाव- पुं० *[दैवकप्रभाव]*
विधिसामर्थ्ये, पण्हा०२ अ० ।

दआभास- पुं० *[दकाभास]*
शिवकस्य वेलन्धरनागराजस्य आवासपर्वते, जीवा०३ प्रति०४ उ० । ठा० ।

दओदर- न० *[दकोदर]*
जलोदरे, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

दओह- पुं० *[दकौघ]*
पानीयप्रवाहे, बुह०१ उ० । ठा० ।

दंड-१ पुं० *[दण्ड]*
दण्ड्यते–व्यापाद्यते प्राणिनो येन स दण्डः ।आचा०१ श्रु०२ अ०३
प्राणिन आत्मानं वा दण्डयतीति दण्डः । आचा० १ श्रु०४ अ० १ उ० । ठा० ।
दुष्प्रयुक्तमनोवाक्कायलक्षणैर्हिंसामात्रे, 'एगे दंडे ।'एकत्वं चाऽस्य सामान्यतयोद्देशात् । सम०२ सम० । आतु० ।
प्राणिनो दण्डयतीति दण्डः परितापकारी । आचा०
दण्डनं दण्डः-अपराधिनामनुशासनम् । ठा० ।
दण्डनं दण्डः- अतिपातात्मकः । उत्त० २९३ ।
अपराधानुसारेण राजग्राह्यं द्रव्यम् । भग० ।

दंड-२ पुं० *[दण्ड]*
भूतोपमर्दे, आचा० । सूय० ।
प्राणव्यपरोपणविधौ, सूय०१ श्रु०१३ अ० ।
वधाऽऽदिरूपे परनिग्रहे, ठा०३ ठा०३ उ० ।

दंड-३ पुं० *[दण्ड]*
दण्ड्यति पीडामुत्पादयतीति दण्डः । दुःखविशेषे, सूय० १ श्रु०५ अ०१ उ० ।
परितापकारिणि, आचा० १ श्रु०८ अ०३ उ० ।
प्राणि पीडाकारके, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ० ।
तथाविधपरिक्लेशे धनहरणादिको दण्डः । नाया० ।
दण्डयतीति दण्डः-पापोपादानसंकल्पः । सूय० ३०६ ।

दंड-४ पुं० *[दण्ड]*
पापोपादानसङ्कल्पे, सूय०२ श्रु०२ अ० ।
उपतापे, सूय०२ श्रु०६ अ० ।
दुरध्यवसाये, उत्त० ३१ अ० ।
विनाशनम् । सम० ।
जीवप्रदेशकर्मपुद्गलसमूहः । भग० । नाया० ।

दंड-५ पुं० *[दण्ड]*
मनोवाक्कायानामसद् व्यापारे, उत्त०१९ अ० । आचा० ।
चारित्रैश्वर्यापहारतोऽसारीक्रियते एभिरात्मा इति दण्डाः । दुष्प्र-युक्तमनोवाक्कायेषु, । आचा० । ठा० ।
ऊर्ध्वाधआयतः शरीरबाहल्यो जीवप्रदेशः । जंबू० ।
दण्ड इव दण्डः ऊर्ध्वाधआयतः शरीबाहल्यो जीवप्रदेशकर्म पुद्गलसमूहः । भग० । नाया० ।
दण्डः-वंशयष्टादिः । कूर्प्पराभि-घातः । उत्त० ।

दंडकिरिया- स्त्री० *[दण्डक्रिया]*
सर्वविषनिवारिण्यां विद्यायाम्, आव० ४ अ० ।

दंडग- पुं० *[दण्डक]*
साधूपकरणे, सूय०२ श्रु०२ अ० ।
पादप्रोञ्छनके, जीत० । ध० । बुह० ।
वाक्यपद्धतौ, ठा० १ ठा० ।
वेत्रलतायाम्, ओह० ।

दंडगपमज्जणी– स्त्री० *[दण्डकप्रमार्जणी]*
वसतिप्रमार्जनाय रजोहरणविशेषः । बुह० ।

दंडगमई- स्त्री० *[दण्डकमयी]*
दण्डको वंशवेत्राऽऽदिमयी यष्टिस्तैर्निवृत्तायां चिलिमिलिकायाम्, बुह०१ उ० । निसि० ।

दंडगुरुय- पुं० *[दण्डगुरुक]*
दण्डेन गुरुको दण्डगुरुकः । यस्य महान् दण्डो भवति असौ दण्डेन गुरु भवति । तस्मिन्, सूय० २ श्रु०२ अ० ।

दंडणायग- पुं० *[दण्डनायक]*
तन्त्रपालके, राष्ट्ररक्षके, नाया०१श्रु०१अ० । रा० । उव० । भग० ।
भूपाले, स्वदेशचिन्ताकर्तरि च । कल्प० ३ क्षण० ।

दंडणिक्खेव- पुं० *[दण्डनिक्षेप]*
दण्डः प्राणिपीडालक्षणः, तस्य निक्षेपः परित्यागः । संयमे, आचा० २ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ०

दंडणीइ- स्त्री० *[दण्डनीति]*
दण्डनं दण्डः परिधीनामनुशासनं, तत्र तस्य वा स एव नीतिर्नयो दण्डनीतिः । ठा०७ ठा० ।
दण्डेनोपलक्षितायां नीतौ, ठा० ९ ठा० । आव०म० । कल्प० आव०चू० ।
दण्डनीतिः सामादिश्चतुर्विधा । जंबू० २५९ ।

दंडदारु- न० *[दण्डदारु]*
ब्रह्मचारिणामग्रेर्दक्षिणतः स्थाप्ये सप्ताङ्गानामन्यतमेऽङ्गे, भग०११ श० ३ उ० ।

दंडपरिहार- पुं० *[दण्डपरिहार]*
महत्यां जीर्णकम्बलिकायाम्, बुह० १ उ० ।

दंडपह- पुं० *[दण्डपथ]*
गोदण्डमार्गे, सूय० ।
लघुमार्गः, प्रमुखोज्ज्वलो वा। सूय० ।

दंडपासि- पुं० *[दण्डपार्श्विन्]*
दण्डस्य पार्श्वं दण्डपार्श्वं, तद्विद्यते यस्याऽसौ दण्डपार्श्वी। स्वल्पतया स्तोकापराधेऽपि कुप्यति दण्डं च पातयति यः तस्मिन्, दशा० ६ अ० । सूय० ।
दंडपाशकः-खरकार्मिकः । ओह० ।

दंडपुंछणय- न० *[दण्डपुञ्छनक]*
दण्डयुक्तायां संमार्जन्याम्, जंबू० ५ वक्ष० ।
सणकहस्तकेशरपर्णाऽऽदिशलाकासमुदाये च, आव०म०१अ० ।

दंडपुरक्कड- पुं० *[दण्डपुरस्कृत]*
सदा पुरस्कृतदण्डे, दशा० ६ अ० । सूय० ।

दंडप्पयार-१ पुं० *[दण्डप्रकार]*
आज्ञाविशेषे, सम० ।
आज्ञाविशेषो नीतिभेदविशेषो वा। सम० ।

दंडप्पयार-२ पुं० *[दण्डप्रचार]*
दण्डप्रचाराः-सैन्यविचरणम्। सम० ।

दंडफरुस– पुं० *[दण्डपारुष्य]*
व्यसनं अनपराधे स्वल्पे वापराधे अत्युग्रदण्डं निर्वर्त्तयति। बुह०

दंडभी- स्त्री० *[दण्डभी]*
दण्डं जीवकर्मसमारम्भं मृषावादाऽऽदिकं, दण्डाद्विभेतीति दण्डभीः । दण्डभीते, आचा० १ श्रु० ८ अ० १ उ०

दंडमाइ- पुं० *[दण्डाऽऽदि]*
डल्लानां धरणिपाताऽऽद्युभयाङ्कयुद्धप्रभृतिषु, पिंड० ।

दंडय- पुं० *[दण्डक]*
'दंडग' शब्दार्थे, सूय० २ श्रु०२ अ० ।

दंडरयण- न० *[दण्डरत्न]*
रत्नविशेषे, आव०चू०१ अ० ।
'दंडरयणं परामुसइ।
तए णं भवे दंडरयणं रयणपंचसइयं वइर-सारमइयं विणासणं सव्वसत्तूसेन्नाणं खंधावारेण खइयस्सगुहा-दरीविसमपब्भारगिरि पवाताणं समीकरणं संतिकरणं सुभकरणं रन्नो हिदयइच्छित मणोरह पूरगं दिव्वमपडिहतं दंडरयणं गहाय सत्तट्ठपदे पच्चोसक्कइ।' आव०चू० १ अ० । ठा० । पन्न० ।
चक्रवर्त्तिनश्चतुर्थं रत्नम्। ठा० ३९८ ।

दंडरुइ- पुं० *[दण्डरुचि]*
'एगंतदंडरुइणो।' हिंसनश्रद्धे, पण्हा०३ अ० ।

दंडलक्खण- न० *[दण्डलक्षण]*
दण्डस्वरूपनिरूपणे, जंबू० ।

दंडलत्तिय- पुं० *[दण्डलातिक]*
दण्डो गृहीतो येन स दण्डलातः, सुखाऽऽदिदर्शनाद् निष्ठान्तस्य परनिपातः। दण्डलात एव दण्डलातिकः। गृहीतदण्डे राज्ञि, वव० १ उ० ।

दंडवइ- पुं० *[दण्डपति]*
यः पुनस्तं दण्डमुद्गमयति तस्मिन्, बुह० २ उ० ।

दंडविज्जा- स्त्री० *[दण्डविद्या]*
वंशदण्डाऽऽदिपर्वसंख्याफलकथने, उत्त० १५ अ० ।

दंडवीरिय- पुं० *[दण्डवीर्य]*
भरतचक्रवर्तिवंशोद्भवे भरतात्सप्तमे स्व नामख्याते नृपे, ठा० ८ ठा० । आव० । आव०चू० ।
दण्डवीर्य-पुरुषयुगे दृष्टान्तः। ठा० ।

दंडसंपुच्छणि– स्त्री० *[दण्डसंपुञ्छनी]*
दण्डयुक्ता सम्मार्जनी। जंबू० ।

दंडसत्थपरिजुण्ण- पुं० *[दण्डशस्त्रपरिजीर्ण]*
दण्डा वेत्रदण्डाऽऽदयः, शस्त्राणि खङ्गाऽऽदीनि, ताभ्यां परिजीर्णे समन्ततो दुर्बलभावमापादिते, दश० ९ अ०२ उ० ।

दंडसमायाण- न० *[दण्डसमादान]*
समादीयते कर्म एभिरिति समादानानि कर्मोपादानहेतवः, दण्डा एव मनोदण्डाऽऽदयः प्राणव्यपरोपणाध्यवसायरूपाः समादानानि दण्डसमादानानि। कर्मोपादानहेतुषु प्राणव्यपरोपणाध्यवसायरूपेषु मनोदण्डाऽऽदिषु, जीवा०३ प्रति०२ उ० ।
दण्डयतीति दण्डः पापोपादानसंकल्पः, तस्य समादाने ग्रहणे, सूय०२ श्रु०२ अ० । आचा० । आव०चू० ।

दंडायइय- पुं० *[दण्डाऽऽयतिक]*
दण्डस्येवाऽऽयतिर्दीर्घत्वं पादप्रसारणेन यस्यास्ति स दण्डाऽऽयतिकः। ठा० ५ ठा० १ उ० ।
प्रसारितदेहे, ठा० ७ ठा० । उव० । सूय० ।

दंडायत- पुं० *[दण्डाऽऽयत]*
दण्डवद्यष्टिवदायतो दीर्घो दण्डाऽऽयतः भून्यस्ताऽऽयतशरीरे, सूय० ।

दंडारक्खिग- पुं० *[दण्डाऽऽरक्षिक]*
दण्डधरे, निसि० ।
'दंडधरो दंडाऽऽरक्खिगो दंडगहियग्गहत्थो सव्वतो अंतेउरं रक्खइ, रण्णो वयणेण इत्थिं पुरिसं वा अंतेपुरं णीणेति, पवेसेति वा। एस दंडाऽऽरक्खिगो।' निसि०९ उ० ।

दंडासणिय- पुं० *[दण्डाऽऽसनिक]*
दण्डस्येवाऽऽयतं पादप्रसारणेन तद्दीर्घं यदासनं तद्दण्डाऽऽसनं, तदस्यास्तीति दण्डाऽऽसनिकः।
आसनविशेषाभिग्रहवति,बुह० ५

दंडि- पुं० *[दण्डिन्]*
दण्डधारिणि, जंबू० ३ वक्ष० । उव० । दशा० ।

दंडिय- पुं० *[दण्डिक]*
राजनि, वव०४ उ० ।
करणपतौ च । वव०१ उ० । ठा० ।

दंडिया- स्त्री० *[दण्डिका]*
लेखोपरि राजमुद्रायाम्, बुह०१ उ० ।

दंडुक्कल-१ पुं० *[दण्डोत्कट]*
दण्ड आज्ञा, अपराधिदण्डनं वा, सैन्यं वा उत्कटः प्रकृष्टो यस्य, तेन वोत्कटो यः स दण्डोत्कटः । उत्कटभेदे, ठा०५ ठा०३ उ० ।

दंडुक्कल-२ पुं० *[दण्डोत्कल]*
दण्डेन उत्कलति वृद्धिं याति यः स दण्डोत्कलः । उत्कल भेदे, ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

दंत- पुं० *[दन्त]*
दशने, 'दशनानि च कुन्दकलिकाः स्युः ।' आचा०
गजादीनां दन्ताः । दश० ।

दंत- पुं० *[दान्त]*
दाम्यतीन्द्रियाऽऽदिदडं करोतीत दान्तः । दश०१० अ० ।
पापेभ्य उपरते, वव०१० उ० ।
इन्द्रियनोइन्द्रियदमने, न० । नाया०१ श्रु०१४ अ० । सूय० । जितेन्द्रिये, नाया०१ श्रु०१४ अ० । सूय० । दश० । पण्हा० । उत्त० । वव० । आचा० । गच्छा० ।
क्रोधाऽऽदिरहिते, उत्त०२ अ० । भग० ।
उपशान्ते, सूय०१ श्रु० ६ अ० । आव०म० ।
इन्द्रियजयसम्पन्ने, वव०१ उ० ।
समर्थे, ठा०७ ठा० ।
वश्येन्द्रिये, धर्मध्यायिनि च । सूय०१ श्रु०११ अ० ।
य इन्द्रियनोइन्द्रियाणि दमयति । दश० ।
दान्तः-उपशमं नीतिः । नाया० । दश० ।
क्रोधादिदमनाद्द्वयन्तो वा रागद्वेषयोरन्तार्थं प्रवृत्तत्वात् । भग०
दमं ग्राहितः, असमजञ्जसचेष्टया व्यावर्णितः । उत्त० ।
गुरुभिर्दमंग्राहितः विनयितः । उव० ।

दंतकम्म- न० *[दन्तकर्म]*
दन्तपुत्तलिकाऽऽदिषु, आचा०२ श्रु०२ चू० ४ अ० ।
गजविषाणविषया रूपनिर्माणक्रिया । पण्हा० १६० ।

दंतकलह- पुं० *[दन्तकलह]*
वाग्युद्धे, 'अदन्तकलहो यत्र, तत्र शक्र ! वसाम्यहम् ।' सूय० १ श्रु० ३ अ० २ उ० ।

दंतकुंडी- स्त्री० *[दन्तकुण्डी]*
हड्डभाजने, नकारोऽलाक्षणिकः । तं० ।

दंतकुडी- स्त्री० *[दन्तकुटी]*
दंष्ट्रासु, तं० ।

दंतचक्क- पुं० *[दन्तचक्र]*
दंतपुरणगरे राया । निसि० ।
दन्तपुरे नृपः ।वव० ।
दन्तचक्रः, द्रव्यव्युत्सर्गे दन्तपुरनरेशः । आव० ।
दन्तचक्रः, योगसंग्रहे निरपलापदृष्टान्ते दन्तपुरनगराधिपतिः । आव० ।
दन्तचक्रो दन्तपुरनृपतिः । उत्त० ।

दंतणिवाय- पुं० *[दन्तनिपात]*
दशनच्छेद्यरूपेऽसंप्राप्तकामे, दश०६ अ० ।

दंतधावण- न० *[दन्तधावन]*
दन्तकाष्टे, निसि०३ उ० ।

दंतपाय- न० *[दन्तपात्र]*
दन्तनिर्मिते पात्रे, आचा०२ श्रु०१ चू०६ अ०१ उ० ।

दंतपुर- *[दन्तपुर]*
स्वनामख्याते दन्तवक्रस्य राज्ञो नगरे, वव०१ उ० उत्त० । आव० । । निसि० । आव०चू० ।
दन्तपुरं द्रव्यव्युत्सर्गे नगरम् । आव० ।
योगसंग्रहे निरपलापदृष्टान्ते दन्तचक्रराज्ञो नगरम् । आव०
णगरविसेसो । निसि० ।
दंतचक्क-रायाए नगरं । वव० ।
दन्तपुरं-दन्तचक्रराजधानी । उत्त० ३०१ ।

दंतप्पक्खालण-न० *[दन्तप्रक्षालन]*
दन्ताः प्रक्षाल्यनते अपगतमलाः क्रियन्ते येन तद्दन्तप्रक्षालनम् ।
दन्तकाष्ठे, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० । आचा० । अणुओ० ।

दंतप्पहावण- न० *[दन्तप्रधावन]*
अङ्गुल्यादिना क्षालने, दश०३ अ०

दंतमणि- पुं० *[दन्तमणि]*
प्रधानदन्ते, हस्तिप्रभृतीनां दन्तजेमणौ च पण्हा० ५ अ० ।

दंतमल- पुं० *[दन्तमल]*
दन्तकिट्टे, निसि०३ उ० ।

दंतमलमइल- न० *[दन्तमलमलिन]*
दन्तमलमलीमसे, तं० ।

दंतमाल- पुं० *[दन्तमाल]*
द्रुमजातिविशेषे, जंबू० २ वक्ष० ।

दंतमाला- पुं० *[दन्तमाला]*
दन्तमालाः भरते द्रुमगणविशेषः । जंबू० ।
एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः । जीवा० १४५ ।

दंतवक्क- पुं० *[दन्तवक्र]*

दन्तपुरराजे, यद्भार्यायाः सत्यवत्याः दन्तमयसौधकरणे दोहदो जातः, तन्नगर एव धनमित्रवणिग्भार्यायाः धनश्रियास्तथैव दोहदं पूरयितुकामस्य दृढमित्रस्य बन्ध माप्तस्य मुमोचयिषुर्धनमित्रो यथातथं वदन् मुक्तो राजकुलात् वव० १ उ० । निसि० । आव० । उत्त० । आव०चू० ।

दान्ता-उपशान्ता यस्य वाक्येनैव शत्रवः स दान्तवाक्यः चक्र-वर्त्ती । सूय० ।

दंतवण- न० *[दन्तपावन]*

दन्तमलापकर्षणकाष्ठे उवा०१ अ० । दश० ।

दशननिर्लेपनकाष्ठे यष्टिमध्वादौ, ठा०

दन्तवेदम् । ओह० ।

दंतवणविधि- पुं० *[दन्तपावनविधि]*

दन्तमलापकर्षणविधौ, उवा० १ अ० ।

दंतवाणिज्ज- न० *[दन्तवाणिज्य]*

दन्ताऽऽश्रितं दन्तविषयं वाणिज्यम् दन्तक्रयविक्रययोः। यत्र प्रथमत एव पुलिन्दानां दन्ताऽऽनयननिमित्तं मूल्यं ददाति, आकरे वा गत्वा स्वयं क्रीणाति, ततस्ते वनाऽऽदौ गत्वा तदर्थं घ्नन्ति, तद्विक्रयपूर्व यदाजीवनं तस्मिन्,आव० ।आव०चू० । भग०

दन्तवाणिज्यं-हस्तिदन्तादिक्रयविक्रयक्रिया । आव० ।

दंतवेयणा- स्त्री० *[दन्तवेदना]*

दन्तपीडायाम्, जीवा० ३ प्रति०४ उ० ।

दंतसेढी- स्त्री० *[दन्तश्रेणी]*

दशनपङ्क्तौ, जंबू०२ वक्ष० । उव० ।

दंतसेणी- स्त्री० *[दन्तश्रेणी]*

'दंतसेढी' शब्दार्थे, जंबू०२ वक्ष० ।

दंतसोहणग- न० *[दन्तशोधनक]*

दन्तानां मलनिःसारणसाधने उपकरणभेदे, पंच०भा० ।

दंतामय- पुं० *[दन्ताऽऽमय]*

दन्तरोगे, निसि०३ उ० ।

दंतार- पुं० *[दन्तकार]*

दन्तशिल्पिनि, पन्न०१ पद ।

शिल्पार्यभेदः । पन्न० ।

दंति- पुं० *[दन्तिन्]*

हस्तिनि, आव०चू०१ अ० ।

अनन्तजीववनस्पतिभेदे, पन्न० १ पद ।

दंतिक्क- न० *[दन्तिक]*

मोदकमण्डिकाशौकर्त्र्यादिकं यद्बहुविधं दन्तखाद्यकं तस्मिन्, बुह० १ उ० ।

तन्दुलचूर्णे, बुह० १ उ० । निसि०

पुण्णो तंदुलोट्ठो । निसि० ३९ ।

तंदुला, सव्वं वा दंतखज्जयं । निसि० ।

मोदकादिकं दन्तखाद्यं तन्दुलचूर्णो वा । मोदकमण्डकादिकं यद्बहुविधं दन्तखाद्यकं तद्दन्तिकम् । बुह० ।

दंतिक्कचुण्ण- पुं० *[दन्तिकचूर्ण]*

तन्दुललोके,

तन्दुलचूर्णमोदकाऽऽदिखाद्यकद्वन्द्वे, दन्तिकचूर्णः तन्दुललोट्टः यद्वादन्तिकं तन्दुलचूर्णं, चूर्णं तु मोदकाऽऽदि खाद्यकचूर्णम् । बुह० १ उ० ।

दंतिया- स्त्री० *[दन्तिका]*

गुल्मभेदे, पन्न०१ पद ।

दंतिल्लिया- स्त्री० *[दन्तवती]*

पत्रकाऽऽलयग्रामवास्तव्यस्य स्कन्दकनाम्नो ग्रामकूरपुत्रस्य दास्याम्, आव०चू० १ अ० । आव०म० ।

दंतुक्खलिय- पुं० *[दन्तोत्खलिक]*

फलभोजिषु, निर० १ वर्ग० ३ अ० । उव० । भग० ।

दंतुट्ठ- पुं० *[दन्तोष्ठ]*

दन्तानामोष्ठयोश्च समाहारे, ठा०७ ठा० ।

दंतुर- त्रि० *[दन्तुर]*

उन्नता दन्ताः सन्त्यस्य, उन्नतदन्तयुक्ते, उन्नताऽऽनते विषमस्थाने च । आव०म० ।

दंतो– पुं० *[दन्तो]*

साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । पन्न० ।

दंद- पुं० *[द्वन्द्व]*

समुच्चयप्रधाने समासभेदे, अणुओ० ।

दंभ- पुं० *[दम्भ]*

मायया परवञ्चने, सूय०२ श्रु०२ अ० । सम० ।

स्त्री-कलाभेदे, कल्प० ७ क्षण० ।

दंभग- न० *[दम्भक]*

यैरग्निप्रतापितैर्लोहशलाकाभिः परशरीरे अङ्का उत्पाद्यन्ते तेषु, विपा० १ श्रु०६ अ० ।

दंभबहुल- त्रि० *[दम्भबहुल]*

दम्भो मायया परवञ्चनं तदुत्कटे, सूत्र० २ श्रु० २ अ० ।

दंस-१ पुं० *[दंश]*

वनमक्षिकायाम्, आचा०१ श्रु०६ अ०३ उ० । आव० । उत्त० ।

दंस-२ पुं० *[दर्श]*

दर्शनं दर्शः । सम्यक्त्वे, आव०म० १ अ० १ ।

पञ्चमः परीषहः । आव० ।

दंस-३ पुं० *[दंश]*

चतुरिन्द्रियजीवविशेषः । पन्न० ।

दंसण- न० *[दर्शन]*

दृश्यन्ते श्रद्धीयन्ते ज्ञायन्ते वा जीवाऽऽदयः पदार्था अनेनास्मादस्मिन्वेति दर्शनम्। दृष्टिर्वा दर्शनम्। सम्यक्त्वाऽपरपर्याये, दर्शनमोहनीयक्षयाऽऽद्याविर्भूते तत्त्वश्रद्धानरूपे आत्मपरिणामे, 'एगे दंसणे।' ठा० १ ठा०।

तच्चोपाधिभेदादनेकविधमपि श्रद्धानसाम्यादेकम्, एकजीवस्य चैकदा एकस्यैव भावादिति। नन्वबोधसामान्याद् ज्ञानसम्यक्त्वयोः कः प्रतिविशेषः? उच्यते रुचिः सम्यक्त्वं, रुचिकारणं तु ज्ञानम्। ठा० १ ठा०। आचा०। सूय०। उत्त०। नाया०। उव०। आव०। रा०। संथा०। भग०। आव०म०। सम०। आतु०। ओह०। नं०।

स्वस्वविषये सामान्यग्रहणं रूपसामान्यग्रहणलक्षणम्। पन्न० ।

दर्शनं-रूपम्। नाया० ।

सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि सामान्यप्रहणात्मको बोधः। पन्न०

दर्शनं-आकारः। जीवा० २०७।

दर्शनं सम्यग्दर्शनम्। आव०। दश०। ओह० ।

दर्शनम्। आव० ।

दर्शनं-सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि सामान्यावबोधः रूपसामान्य परिच्छेदः। जीवा० ।

दर्शनं-सम्यक्त्वम्। ठा० । भग० ।

दर्शनंवर्णादिपरिणतसूत्रानुसारः। दश०।

दर्शनंप्रस्थातुर्दृष्टिपथः। जंबू०।

दर्शनं-सामान्योपलब्धिरूपंचक्षुरचक्षुरवधिकेवलाख्यम्।आचा०

दर्शनप्रतिमा श्रावकस्य प्रथमा प्रतिज्ञा। आव० ६४६।

दर्शनं-रुचिरूप आत्मनः परिणामः। भग० ३५०।

ईहावग्रहौ हि दर्शनं-सामान्यग्राहकत्वात् श्रद्धानम्। ठा० २३।

दृश्यन्ते श्रद्धीयन्ते पदार्था अनेनास्मादस्मिन् वेति दर्शनं-दर्शनमोहनीयस्य क्षयः क्षयोपशमो वा दृष्टिर्वा दर्शनं-दर्शनमोहनीयक्षयाद्याविर्भूतस्तत्त्वश्रद्धानरूप आत्मपरिणामः। ठा० ।

दृष्टिः-रुचिस्तत्त्वानि प्रति। ठा० ३०।

शुद्धाशुद्ध-मिश्रपुञ्जत्रयरूपंमिथ्यात्वमोहनीयम्। ठा०।

अभिप्रायो यदि वा दृश्यते यथावस्थितं वस्तुतत्त्वमनेनेति दर्शनं उपदेशः। आचा०१७२।

प्रमेयस्य परिच्छेदनम्। भग० ६५९।

दर्शनं क्षायिकभावापन्नं सम्यक्त्वम्। जंबू० १६१।

दृश्यते तत्त्वमस्मिन्निति दर्शनम्। उत्त० ५५६।

दृष्टिर्दर्शनंतत्त्वेषु रुचिः। ठा० ४८।

दर्शनं-प्रकाशनं उपनिबन्धनम्। सम० ११६।

दंसणकप्प- पुं० *[दर्शनकल्प]*

कल्पभेदे, पंच०भा०।

दंसणकुसील- पुं० *[दर्शनकुशील]*

कुशीलशब्दप्रदर्शितस्वरूपे कुशीलभेदे, महानि० ३ अ०।

दर्शनमाश्रित्य कषायकुशीलो दर्शनक-षायकुशीलः। भग०।

दंसणखवग- पुं० *[दर्शनक्षपक]*

दर्शनमोहनीयक्षये, क्षयोपशमे च। ठा० १ ठा०।

दंसणगुणप्पमाण- न० *[दर्शनगुणप्रमाण]*

गुणप्रमाणभेदे, अणुओ०।

दंसणचरित्तमोह- पुं० *[दर्शनचारित्रमोह]*

द्विरूपमोहनीये कर्म्मणि, पण्हा०।

ननु चारित्रमोहस्य हेतुर्मैथुनमिति प्रतीतम्। तदाह–'तिव्वकसाओ बहुमोहपरिणओ रागदोससंजुत्तो।' पण्हा०४ अ०।

दंसणट्ठ- त्रि० *[दर्शनार्थ]*

दर्शनं तत्त्वानां श्रद्धानं, तदर्थे वस्तुनि, ठा० ५ ठा० ३ उ०।

दंसणट्ठया- स्त्री० *[दर्शनार्थता]*

दर्शनप्रभावकशास्त्रार्थिकत्वे, ठा० ५ ठा० २ उ०।

दंसणणय- पुं० *[दर्शननय]*

दर्शनिन एव सम्यक्त्वमित्येवंभूते नये। आव०।

दंसणतह- *[दर्शनतथ्य]*

शङ्काऽऽद्यतिचाररहिते जीवाऽऽदितत्त्वश्रद्धाने, सूय०१श्रु०१३ अ०

दंसणपक्खो– पुं० *[दर्शनपक्ष]*

योऽप्रत्याख्यानकषायोदयवति श्रावके भवति। आव० ।

दंसणपभावग- पुं० *[दर्शनप्रभावक]*

सर्वज्ञशासनप्रकाशके, जीवा०।

दंसणपरिणाम- पुं० *[दर्शनपरिणाम]*

सम्यग्दर्शनपरिणामे, पन्न० १३ पद०।

दंसणपरीसह- पुं० *[दर्शनपरीषह]*

दर्शनं सम्यग्दर्शनं तदेव क्रियाऽऽदिवादिनां विचित्रमतश्रवणेऽपि सम्यक् परिषह्यमाणं निश्चलचित्ततया धार्य्यमाणं परीषहः। यद्वा–दर्शनशब्देन दर्शनव्यामोहहेतुरैहिकाऽऽमुष्मिकफलानुपलम्भाऽऽदिरिह गृह्यते, ततः स एव परीषहः दर्शनपरीषहः। दर्शनपरीषहे, उत्त०२ अ०। सम०।

जिनानां जिनोक्तभावानां चाश्रद्धानवर्जनरूपे परीषहे, भग० ८ श० ८ उ०।

दर्शनं-सम्यग्दर्शनं, सहनं चास्य क्रियादिवादिनां विचित्रमत श्रवणेऽपि निश्र्चलचित्ततया धारणम्। सम० ।

दंसणपायच्छित्त- न० *[दर्शनप्रायश्चित्त]*

प्रायश्चित्तभेदे, ठा० ३ ठा० ४ उ०।

दंसणपुरिस- पुं० *[दर्शनपुरुष]*

सम्यक्त्वयुक्तपुरुषे, ठा० ३ ठा० १ उ०

दंसणबल- पुं० *[दर्शनबल]*

दृढदर्शने, पण्हा० १ अ० ।
दर्शनबलं सर्ववेदिवचनप्रामाण्यादतीन्द्रियाऽऽदियुक्तिगम्यपदार्थ-रोचनलक्षणम्। ठा० १० ठा० ।

दंसणबुद्ध- न० *[दर्शनबुद्ध]*
बुद्धभेदे, 'दुविहा बुद्धा पण्णत्ता। तं जहा– नाणबुद्धा चेव, दंसणबुद्धा चेव।' ठा० २ ठा० ४ उ० ।

दंसणबोहि- पुं० *[दर्शनबोधिन्]*
दर्शनमोहनीयक्षयोपशमाऽऽदिसम्पन्नश्रद्धानलाभे,ठा०२ठा०४उ०

दंसणभावणा- स्त्री० *[दर्शनभावना]*
सम्यत्त्वपर्यालोचने आचा० ।

दंसणभेइणी- स्त्री० *[दर्शनभेदिनी]*
ज्ञानाऽऽद्यतिशयतः कुतीर्थिकप्रशंसारूपायां विकथायाम्, तद्यथा –'सूक्ष्मयुक्तिशतोपेतं सूक्ष्मबुद्धिकरं परम्। सूक्ष्मार्थदर्शिभिर्दृष्टं, श्रोतव्यं बुद्धशासनम् ।।१।।' इत्यादि। एवं हि श्रोतॄणां तदनुरागात् सम्यग्दर्शन भेद इति। ठा०७ ठा० । गच्छा० ।

दंसणमूढ- पुं० *[दर्शनमूढ]*
मिथ्यात्विषु, दर्शनमूढा मिथ्यात्व्यादयः। ठा० ३ ठा० १ उ० ।

दंसणमोहणिज्ज– पुं० *[दर्शनमूमोहनीय]*
दर्शनं मोहयतीति दर्शनमोहनीयं, मिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्वभेदम्। । ठा० ।

दंसणरइय- त्रि० *[दर्शनरचित]*
दर्शने दृष्टिमार्गे रचितो विहितो दर्शनरचितः। दृष्टिमार्गविहिते वस्तुनि, उव० ।

दंसणरइय- त्रि० *[दर्शनरतिद]*
दर्शने सति रतिदो सुखप्रदो दर्शनरतिदः। दर्शने सति सुखप्रदे वस्तुनि, उव० ।

दंसणरय- त्रि० *[दर्शनरत]*
'बहुसु अ समरसुयसंपराएसु दंसणरए समंतओ कलहं सदक्खिणं अणुगवेसमाणे।' नाया० १ श्रु० १६ अ० ।

दंसणलद्धिय- पुं० *[दर्शनलब्धिक]*
श्रद्धानमात्रलब्धिके, भग० ८ श० २ उ० ।

दंसणलूसि- पुं० *[दर्शनलूषिन्]*
सम्यग्दर्शनविध्वंसिनि, असदनुष्ठानेन स्वतो भ्रष्टे, आचा० १ श्रु० ६ अ०४ उ० ।

दंसणवावन्नग- पुं० *[दर्शनव्यापन्नक]*
दर्शनं सम्यक्त्वं व्यापन्नं भ्रष्टं येषां ते तथा। निह्नवेषु, पन्न०२३ ।

दंसणविणय- पुं० *[दर्शनविनय]*
दर्शनं सम्यक्त्वं, तदेव विनयो दर्शनविनयः, दर्शनस्य वा तदव्यतिरेकाद् दर्शनगुणाधिकानां सुश्रूषणाऽनाशातनारूपो विनयो दर्शनविनयः। ठा०७ ठा० ।
सम्यग्दर्शनगुणाधिकेषु सुश्रूषाऽऽदिरूपे विनये,भग०२५श०७उ०
'पवयणमसेससंघो, दंसणमिच्छंति इत्थ सम्मत्तं। विणओ दंसणमेसिं, कायव्वा चेव एयं तु ।' संथा० ।
विनयस्य प्रथमो भेदः। दश०
सम्यग्दर्शनगुणाधिकेषु शुश्रूषादि-रूपः। भग० ।

दंसणविराहणा- स्त्री० *[दर्शनविराधना]*
विराधना खण्डना, दर्शनं सम्यग्दर्शनं क्षायिकाऽऽदि, तस्य विराधना दर्शनविराधना। दर्शनप्रत्यनीकतानिह्नवाऽऽदिरूपायां तपोविराधनायाम्, सम०३ सम० ।

दंसणविसोहि- स्त्री० *[दर्शनविशुद्धि]*
दर्शनाऽऽचारपरिपालनतो विशुद्धिर्दर्शनाविशुद्धिः। विशुद्धिभेदे, ठा० १० ठा० ।
दर्शनविशुद्धिकारकाणि शास्त्राणि, तदर्थमध्वानं गच्छेत्। बुह० १ उ० ।

दंसणसंकिलेस- पुं० *[दर्शनसंक्लेश]*
दर्शनस्य संक्लेशोऽविशुद्ध्यमानता स दर्शनसंक्लेशः। संक्लेश-भेदे, ठा० १० ठा० ।

दंसणसंपण्ण- पुं० *[दर्शनसम्पन्न]*
अविरतसम्यग्दृष्टौ, बुह० १ उ० ।ठा० ।
दर्शनसम्पन्नः शुद्धोऽहमित्येवं श्रद्धत्ते। ठा० ८ ठा० ।

दंसणसंपण्णया- स्त्री० *[दर्शनसंपन्नता]*
दर्शनस्य क्षायोपशमिकस्य सम्पन्नता। तस्याः क्षायोपशम सम्यत्त्वसहितत्वे, उत्त० ।

दंसणसमाहि- पुं० *[दर्शनसमाधि]*
भावसमाधिभेदे, सूय० ।
दर्शनसमाधौ व्यवस्थितो जिनवचनभावितान्तःकरणो निर्वात शरणप्रदीपवन्न कुमतवायुभिर्भ्राम्यते। सूय०१ श्रु०१० अ० ।

दंसणसावग-पुं० *[दर्शनश्रावक]*
दर्शनं सम्यक्त्वं तत्प्रतिपन्नः श्रावको दर्शनश्रावकः। उपाशकानां प्रथमप्रतिमायाम्, सम०१० सम० । आव०चू० ।
तत्र दर्शनं सम्यक्त्वं, तत्प्रतिपन्नः श्रावको दर्शनश्रावकः।
इह च प्रतिमानां प्रक्रान्तत्वेऽपि प्रतिमाप्रतिमावतोरभेदोपचा-रात्प्रतिमावतो निर्देशः कृतः।
एवमुत्तरपदेष्वपि। अयमत्र श्रावको दर्शनश्रावकः। इह च प्रतिमानां प्रक्रान्तत्वेऽपि प्रतिमा-भावार्थः सम्यग्दर्शनस्य शङ्काऽऽदिशल्यरहितस्याऽणुव्रताऽऽदिगुणविकल्पस्याऽयमभ्युप - गमः सा प्रतिमा प्रथमति। सम० १० ।

दंसणसावय- पुं० *[दर्शनश्रावक]*
'दंसणसावग' शब्दार्थे, सम० १० सम० ।

दंसणसुद्धि- स्त्री० *[दर्शनशुद्धि]*
सम्यग् दर्शननिर्मलतायाम्, वव० ४ अ०।

दंसणाभिगम-पुं० *[दर्शनाभिगम]*
दर्शनं सामान्यग्राही बोधः, तच्चेह गुणप्रत्ययाबध्यादिप्रत्यक्ष-रूपम्। तेनाभिगमे वस्तुनः परिच्छेदे, तत् प्राप्तौ । ठा०६ ठा०।

दंसणाऽऽया- स्त्री० *[दर्शनाऽऽत्मन्]*
षष्ठे आत्मनो भेदे, दर्शनाऽऽत्मा सर्वजीवानाम्। भग०।

दंसणायार- पुं० *[दर्शनाऽऽचार]*
आचरणमाचारी व्यवहारो, दर्शनं सम्यक्त्वं, तदाचारः- निःशङ्कि-तादिरष्टधैव । ठा० २ ठा०३ उ०।
सम्यक्त्ववतां व्यवहारे, सम० १।

दंसणायाराइयार- पुं० *[दर्शनाऽऽचारातिचार]*
सम्यक्त्वव्यवहारातिचरणे, जीत०।

दंसणायारातियारपायच्छित्त-न० *[दर्शनाऽऽचारातिचारप्रायश्चित्त]*
प्रायश्चित्तभेदे, जीत०।

दंसणाराहणा- स्त्री० *[दर्शनाऽऽराधना]*
सम्यक्त्वाऽऽराधने, 'तिविहा दंसणाऽऽराहणाउक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा।' ठा० ३ ठा० ४ उ०।

दंसणारिय- पुं० *[दर्शनाऽऽर्य]*
अष्टमे अनृद्धिप्राप्ताऽऽर्यभेदे, पन्न० १ पद०।

दंसणावरण- न० *[दर्शनाऽऽवरण]*
दर्शनं सम्यक्त्वमावृणोतीति दर्शनाऽऽवरणम्। उत्त०३३ अ०।

दंसणावरणिज्ज- न० *[दर्शनाऽऽवरणीय]*
दर्शनाऽऽवरणप्रवृत्तौ, सम० ९ सम०। आचा०। पण्हा०।

दंसणि- पुं० *[दर्शनिन्]*
दर्शनमस्यास्तीति दर्शनी। सम्यक्त्ववति, आव० ३ अ०।
'दंसणेणं दंसणी।' अणुओ०। आव०। रा०।

दंसणिज्ज- पुं० *[दर्शनीय]*
आदेयदर्शनो यः स तथा। नाया०१ श्रु०१ अ०।
दर्शनयोग्ये, सूय०२ श्रु०७ अ०।
यानि पश्यतश्चक्षुषी श्रमं न गच्छतः। जीवा०३ प्रति०४ उ०। नाया०। ठा०। सूर०
दर्शनीयं-द्रष्टुं योग्यं, दर्शनेन तृप्तिरसम्भवात्। सूर० ।

दंसणिड्ढि- स्त्री० *[दर्शनर्द्धि]*
प्रशमाऽऽदिरूपायां सम्यक्त्वसम्पत्तौ, दश०३ अ०।
प्रवचने निःशङ्कितादित्वं प्रवचनप्रभावकशास्त्रसम्पद्वा। ठा०।

दंसणिंद- पुं० *[दर्शनेन्द्र]*
इन्द्रभेदे, ठा०१० ठा०।

दंसणोवघाय- पुं० *[दर्शनोपघात]*
शङ्काऽऽदिभिः सम्यक्त्वविराधनायाम्, ठा०१० ठा०।

दंसमसग- पुं० *[दंशमशक]*
दंशाश्च मशकाश्च दंशमशकाः उभये अप्येते चतुरिन्द्रियाः, महत्वामहत्वकृतश्चैषां विशेषः।
अथवा– दंशो दशनं, भक्षणमित्यर्थः। तत्प्रधाना मशका दंशमशकाः। चतुरिन्द्रियजीवभेदेषु, सम० २१ सम०।

दंसमसगपरीसह- पुं० *[दंशमशकपरीषह]*
दशन्तीति दंशाः, पचाऽऽदित्वादच् प्रत्ययः। मारयितुं शक्नुवन्तिति मशकाः। दंशाश्च मशकाश्च दंशमशकाः।
अथवा–दंशो दंशनं, भक्षणमित्यर्थः, तत्–प्रधाना मशका दंशमशकाः चतुरिन्द्रिय विशेषाः, यूकाऽऽद्युपलक्षणं चैते एव परीषहो दंशमशक परीषहः । उत्त०२ अ०। सम०।
दंशमशकाऽऽदिभिर्दश्यमानोऽपि न ततः स्थानादपगच्छेन्न च तदपनयनार्थं धूमाऽऽदिना यतेत, न च व्यजनाऽऽदिना निवारयेदित्यनुतिष्ठतः । आव०१ अ० ।
देहव्यथामुत्पादयत्स्वपि तेष्वनिवारणभयद्वेषाभावकरणरूपे परी-षहे, भग०१ श०३ उ०।
'दष्टोऽपि दंशैर्मशकैः, सर्वाऽऽहारप्रियत्ववित्। त्रासं द्वेषं निरासं न, कुर्यात्कुर्यादुपेक्षणम्। उत्त०। सूय०।

दंसमाण- त्रि० *[दशत्]*
भक्षणं कुर्वति, 'अप्पे जणे णिवारेइ लूसणए सुणए दंसमाणे।' आचा०१ श्रु०९ अ०२ उ०।

दंसिय- त्रि० *[दर्शित]*
प्रकटिते, अणुओ०।
प्रकाशिते च। उत्त०९ अ० पन्न०।

दक्ख-१ त्रि० *[दक्ष]*
निपुणे, कल्प०५ क्षण०। सूय०।
चतुरे, ठा० ७ ठा०। उत्त०। सूय०।
शीघ्रकारिणि, । उत्त० ५ अ०। बुह०। निसि०। नाया०। अणुओ०। भग०
सकलकलाकुशले, कल्प०६ क्षण०।
कार्य्याणाविलम्बकारिणि, उवा०७ अ०। जीवा०। आव०म०। कल्प०। रा०। उत्त०।
भूतानन्दस्य नागकुमारेन्द्रस्य नागकुमारराजस्य स्वनामख्याते पदात्यानीकाधिपतौ च। ठा० ५ ठा० १ उ०।
दक्षस्य भावो दाक्ष्यं-अविलम्बितकारित्वम्। उत्त०

दक्ख-२ त्रि० *[दक्ष]*
उत्तरत्यानां धरणेन्द्रस्य पादत्राणीकाधिपतिः औत्तराहाणं बलिवर्जितानां दक्षो नाम्ना पदातिपतिः। जंबू० ४०८।

दक्खत्त- न० *[दक्षत्व]*
आश्रयकारित्वे, उत्त०३ अ०।

दक्खा- स्त्री० *[द्राक्षा]*
मृद्वीकायाम्, ठा०४ ठा०३ उ०।

दक्खिण- पुं० *[दक्षिण]*
सर्वनायिकासु समानुरागे नायकभेदे, मध्यदेशाद्दक्षिणे देशे च।
। जंबू०। ज्यो०।
शरीरस्य दक्षिणे भागे, अनुत्तरे, सरले, परच्छन्दानुवर्तिनि, अवामभागस्थे, औदार्यवति च।आव०म०। कल्प०

दक्खिणकूलग- पुं० *[दक्षिणकूलक]*
यैर्गङ्गाय दक्षिणकूल एव वस्तव्यं तेषु, उव०। भग०। निर०।
दक्षिणकूलकः यैर्गङ्गया दक्षिणकूल एव वस्तव्यम्। उव०

दक्खिणत्त- न० *[दक्षिणत्व]*
षष्ठे सत्यवचनातिशये, रा०।

दक्खिणत्त- त्रि०
दाक्षिणात्यानामसुरकुमाराऽऽदीनाम्। पन्न०२ पद०।

दक्खिणपच्छिमा- स्त्री० *[दक्षिणपश्चिमा]*
नैर्ऋत्यकोणे, आव०म०१ अ०२ ।

दक्खिणपुव्वा- स्त्री० *[दक्षिणपूर्वा]*
दक्षिणपूर्वयोरन्तराला दिक् दक्षिणपूर्वा। अग्निकोणे, चंद०।

दक्खिणा- अव्य० *[दक्षिणा]*
दाने, नाया०१ श्रु०१६ अ०। आव०म०।
'दक्खिणाए पडिलम्भो, अत्थि वा णत्थि वा पुणो।' सूय० २ श्रु० ५ अ०। ठा०।

दक्खिणायण- न० *[दक्षिणाऽयन]*
दक्षिणस्यामयनं गमनम्। तत् यस्मिन् काले, कर्कटे वा रविसंक्रमणे तदादि षण्मासे काले च। ज्यो०।

दक्खिणावह- पुं० *[दक्षिणापथ]*
इतो य वइरस्सामी दक्खिणावहे विहरइ। आव०म०। आव०चू०

दक्खु-१ त्रि० *[दक्खु]*
निपुणे, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

दक्खु-२ पुं० *[पश्य]*
पश्यतीति पश्यः। दर्शके, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

दक्खुदंसण-१ न० *[दक्षदर्शन]*
सर्वज्ञदर्शने, सूय०१ श्रु०२ अ०३उ०।
सर्वज्ञोक्तशासनानुयायिनि च। सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

दक्खुदंसण-२ न० *[दृष्टदर्शन]*
सर्वज्ञदर्शने, सर्वज्ञोक्तशासनानुवर्तिनि च।सूय०१ श्रु०२अ०३ उ०

दक्खुदंसण-३ न० *[पश्यदर्शन]*
सर्वज्ञाभ्युपगमे, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

दक्खुवाहिय- त्रि० *[दक्षव्याहृत]*
सर्वज्ञोक्ते सर्वज्ञाऽऽगमे, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

दक्खुवाहिय- त्रि० *[दृष्टव्याहृत]*
दृष्टातीतानागतव्यवहितसूक्ष्मपदार्थदर्शिनाऽभिहिते सर्वज्ञाऽऽगमे सूय० १ श्रु० २ अ० ३ उ०।

दक्खुवाहिय- त्रि० *[पश्यव्याहृत]*
पश्येन सर्वज्ञेन व्याहृतमुक्तं पश्यव्याहृतम्। सर्वज्ञोक्ते सर्वज्ञाऽऽ-गमे, सूय० १ श्रु० २ अ० ३ उ०।

दग-१ न० *[दक]*
पानीय, गच्छा०३ अधि०। ठा०। पण्हा०। आव०म०। दश०। पन्न०। निसि०। कल्प०। बुह०।
अप्काय, आव०चू० ४ अ०। आव०।

दग-२ न० *[दक]*
अष्टाशीतिमहाग्रहान्तर्गते स्वनामख्याते ग्रहे, चंद० २० पाहु०।
। 'दो दगा।' ठा० २ ठा०३। कल्प०। सूर०।
अष्टाशीतौ महाग्रहे त्रयस्त्रिंशत्तमः। जंबू०। ठा०।

दगकलसग- पुं० *[दककलशक]*
उदकभृते भृङ्गारे, रा०।

दगकुंभग- पुं० *[दककुम्भक]*
दकघटे, रा०।

दगगब्भ- पुं० *[दकगर्भ]*
दकस्योदकस्य गर्भा इव गर्भा दकगर्भाः। कालान्तरे जल-वर्षणस्य हेतुषु तत्संसूचकेषु, ठा० ४ ठा० ४ उ०।

दगछड्डुण- न० *[दकछर्दन]*
उदकप्रतिष्ठापने, उदकप्रक्षेपस्थाने च। आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ६ उ०।

दगछड्डुणमत्तय- पुं० *[दकछर्दनमात्रक]*
उदकप्रतिष्ठापनमात्रके, उपकरणधावनोदकप्रक्षेपस्थाने च। आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ६ उ०।

दगणिग्गम- पुं० *[उदकनिर्गम]*
जलवीणिकायाम्, निसि०१० उ०।

दगतीर- न० *[उदकतीर]*
उदकाऽऽकराद्यतो नीयते उदकं तस्मिन्, निसि० १६ उ०।
उदकोषकण्ठे, बुह० १ उ०।
सिंचनवीचिस्पृष्टानि न नयनदृष्टपूराणि मनुष्यादिस्थानं त्ववश्यं सिंचनवीचिस्पृष्टलक्षणानि दगतीरम्।
मनुष्यास्त्रियो वा जलार्थिन आगच्छन्तः साधुं यत्र स्थितं दृष्ट्वा तिष्ठन्ति निवर्त्तंते वा तद्दकतीरम्। बुह०।

दगतुंड- पुं० *[दकतुण्ड]*
पक्षिभेदे, पण्हा०१ अ०।

दगतूर- न० *[उदकतूर्य]*
उदके मुखाऽऽदितूर्याणां शब्दे, बुह०१उ०

दगथालग- पुं० *[दकस्थालक]*
कंसाऽऽदिमये उदकभृतभाजने, रा०

दगपंचवण्ण- पुं० *[दकपञ्चवर्ण]*
अष्टाशीतिमहाग्रहाणां चतुस्त्रिंशत्तमे स्वनामख्याते ग्रहे, ठा०। 'दो दगपंचवण्णा।' ठा० २ ठा० ३ उ०। कल्प०।

दगपासाय- पुं० *[दकप्रासाद]*
स्फटिकप्रासादे, जंबू०१ वक्ष०।

दगपिप्पली- स्त्री० *[उदकपिप्पली]*
हरितवनस्पतिभेदे, पन्न०१ पद

दगफासिया- स्त्री० *[दकस्पर्शिका]*
अवश्याये, कल्प०९ क्षण०।

दगवाह- पुं० *[दकवाह]*
उदकमार्गे, निसि०८ उ०।

दगभवण- न० *[उदकभवन]*
जलगृहे, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०६ उ०।

दगभास- पुं० *[दकाभास]*
शिवकस्य वेलन्धरनागराजस्य आवासपर्वते, सम०८७ सम०।

दगमंचग- पुं० *[दकमञ्चक]*
स्फटिकमञ्चके, जंबू०१ वक्ष०। जीवा०।

दगमंडग- पुं० *[दकमण्डप]*
स्फटिके मण्डपे, रा०।

दगमंडव- पुं० *[उदकमण्डप]*
उदकक्षरणयुक्ते मण्डपे, पण्हा०५ संब ०द्वार०।

दगमंडवग- पुं०न० *[दकमण्डपक]*
स्फटिकमण्डपके, जंबू०१ वक्ष०। जीवा०।
उदकक्षरणयुक्ते मण्डपे, पण्हा०५ अ०।

दगमग्ग- पुं० *[उदकमार्ग]*
उदकवाहे, निसि०८ उ०।

दगमट्टिआ- स्त्री० *[उदकमृत्तिका]*
उदकप्रधानायां मृत्तिकायाम्, आचा०२ श्रु०१ चू०१ उ०।
कायाऽऽर्द्रीकृतमृत्तिकायाम्, आचा०१ श्रू०८ अ०६ उ०। दशा०।
दकमप्कायो, मृत्तिका पृथ्वीकाय:, तयोर्द्वन्द्वे, आव०चू०। आव०
सचित्ते मिश्रे च कर्दमे, बुह० ४ उ०।
दकसंयुक्ता मृत्तिका, विवेकद्रव्यप्रयोगपूर्विका तद्विवेचनकलाऽप्युपचाराद्दकमृत्तिका।
तस्यां द्वासप्ततिकलाऽन्तर्गतायां पञ्चदश्यां कलायाम्, जंबू० २ वक्ष०। नाया०। सम०

दगमट्टिआयाण- न० *[उदकमृत्तिकाऽऽदान]*
आदीयते अनेनेत्यादानो मार्गः। उदकमृत्तिकाऽऽदानमार्गे, दश० ५ अ०१ उ०।

दगमट्टिया- स्त्री० *[उदकमृत्तिका]*
'दगमट्टिआ' शब्दार्थे, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ०।

दगमालग- न० *[दकमालक]*
स्फटिकमालके, जंबू०१ वक्ष०। जीवा०।

दगरक्खस- पुं० *[उदकराक्षस]*
जलमानुषाऽऽकृतौ जलचरविशेषे, सूय०१ श्रु०७ अ०।

दगरय- न० *[उदकरजस्]*
बिन्दुमात्रे, कल्प०९ क्षण०।
पानीयकणिकायाम्, जीवा० ३ प्रति०४उ०। बुह०। उव०। जंबू०। रा०। आव०म०। कल्प०। पन्न०।
उदकरेणौ, पण्हा०३ अ०।
उदकगणाः। पन्न० । जीवा० ।

दगलेव- पुं० *[दकलेप]*
नाभिप्रमाणजलावतरणे, ठा०५ ठा०२ उ०। आव०।

दगवण्ण- पुं० *[दकवर्ण]*
अष्टाशीतिमहाग्रहाणां चतुस्त्रिंशत्तमे ग्रहे, सूर० २० पाहु०। ।
पञ्चत्रिंशत्तमे च ग्रहे, चंद० २० पाहु०। ।

दगवारग- पुं० *[उदकवारक]*
लघुपानीयघटे, बुह०१ उ०। रा०।
गमुके, निसि०१२ उ०। जीवा०।

दगवीणिया- *[दकवीणिका]*
दकस्य वीणिका दकवीणिका। उदकवाहे, निसि० १ उ०।

दगसंघट्ट- न० *[दकसङ्घट्ट]*
अर्द्धजङ्घाप्रमाणं यावदुडुपतार्य जलं तादृशे क्षेत्रे, निसि० १० उ०। कल्प०।

दगसंसट्ठहडा- स्त्री० *[उदकसंसृष्टाहृता]*
उदकसंबन्धाऽनीतायां हस्त मात्रगतोदकसंसृष्टायां परिष्ठापनायाम्, आव०४ अ०।

दगसत्तघाइ- पुं० *[दकसत्त्वघातिन्]*
जलप्राणिहिंसके, सूय० १ श्रु० ७ अ०।

दगत्तीम- पुं० *[उदकसीमन्]*
मनःशिलाकस्य वेलन्धरनागराजस्याऽऽवासपर्वते, सम० ८७ सम०। जीवा०।

दगसोकरिग- पुं० *[दगसौकरिक]*
परिव्राजके, बुह०१ उ०।

दगाभास- पुं० *[दकाभास]*
'दगभास' शब्दार्थे, सम०८७ सम०।

दगाहरण- न० *[उदकाऽऽहरण]*
उदकमाह्रियते येन तदुदकाऽऽहर-णम्। कुटवर्द्धनिकाऽऽदौ, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०।

दच्चा- अव्य० *[दत्त्वा]*
दानं कृत्वेत्यर्थे, ठा०३ ठा०२ उ०। उत्त०
दज्झ- त्रि० *[दग्ध]*
भस्मीकृते कत्तृणे, न०। पण्हा० १ अ०।
दट्ठंत्तिय- त्रि० *[दार्ष्टान्तिक]*
दृष्टान्तपरिच्छेद्ये, आव०४ अ०।
दट्ठूण- अव्य० *[दृष्ट्वा]*
चक्षुषा उपलभ्येत्यर्थे, पण्हा०। निसि०।
दड्ढ- त्रि० *[दग्ध]*
भस्मीकृते, आव०३अ०। पण्हा०।
'अग्गिदड्ढाणं' उव०।
'दड्ढमुड्डाइं करेज्जा।' निसि० १ उ०।
'एवं दीहदड्ढस्स किरियणिमित्तं जोइ घेप्पत्ति।' निसि० १ उ०।
बुह०। संथा०। पण्हा०।
दड्ढच्छवि- त्रि० *[दग्धच्छवि]*
शीताऽऽदिभिरुपहतत्वचि, पण्हा०३ अ०।
दढ- न० *[दृढ]*
तद्वति, बलवति, उव०। नाया०।
निष्प्रकम्पे, नं०।
विस्रोतसिकारहिते, आचा० १ श्रु०२ अ०१ उ०।
स्थिरे, उत्त०१८ अ०।
निश्चले, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०।
समर्थे, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ०।
अतिनिविडे, रा०।
स्थूले, प्रगाढे, शक्ते, कठिने च। । पण्हा०। ठा०।
दढणेमि- पुं० *[दृढनेमि]*
द्वारवत्यां समुद्रविजयस्य शिवानाम्न्यां भार्यायामुत्पन्ने पुत्रे, अंत०। स चारिष्टनेमेरन्तिके प्रव्रज्य षोडशवर्षपर्यायः शत्रुञ्जये सिद्ध इति अन्तकृद्दशानां चतुर्थवर्गस्य दशमेऽध्ययने सूचितम्। अंत० ३ वर्ग० ८ अ०।
दढधणु- पुं० *[दृढधनुष्]*
जम्बूद्वीपेद्वीपे भारते वर्षे आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यत्यष्टमे कुलकरे, ठा० १० ठा०।
जम्बूद्वीप आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यामैरवते वर्षे भविष्यति सप्तमे कुलकरे सम०।
दढधम्म-१ पुं० *[दृढधर्मन्]*
श्रुतचारित्ररूपे धर्मे दृढो द्रव्यक्षेत्राऽऽद्यापदुदयेऽपि निश्चलः स दृढधर्मा। । बुह०१ उ०। ठा०। वव०। आव०म०।
अङ्गीकृतापरित्यागे, । ठा० ४ ठा०३ उ०।
दृढः स्थिरः निश्चलः धर्मो यस्य स तथा। ओह०।
आपद्यपि धर्मादविचले, नाया०१ श्रु०८ अ०। ठा०।
दृढे चारित्रे स्थिरे, बुह० ३ उ०।
दृढः समर्थो धर्मः स्वभावः संग्रामाभङ्गरूपो यस्य स तथा। समर्थ-स्वभावे, सूय० १ श्रु०३ अ०१ उ०।
दढधम्म-२ पुं० *[दृढधर्मन्]*
स्वनामख्याते देवे च, 'ईसाणदेवसयसमीवातो दढधम्मो नाम देवो आगतो भणइ।' आव०म०१ अ०१ ।
दढधम्मया- स्त्री० *[दृढधर्मता]*
दृढधर्मत्वे, सम०३२ सम०। आव०। आव०चू०। सम०।
दढपइण्ण- पुं० *[दृढप्रतिज्ञ]*
सूर्याभस्य देवस्य देवलोकाच्च्युतस्य महाविदेहे वर्षे कस्यचि-दाढ्यस्य पुत्रत्वेनोत्पत्स्यमाने जीवे,तदुत्पत्तौ सत्यां तन्मातापित्रो-र्दृढा प्रतिज्ञा भविष्यतीति तदन्वर्थनामकरणात्। रा०। अंत०।
दढपरक्कम- पुं० *[दृढपराक्रम]*
संयमे, स्थिरवीर्यभाजि, उत्त०१६अ०
दढपाणिपायपासपिट्ठंतरोरुपरिणय- त्रि० *[दृढपाणिपादपार्श्वपृष्ठान्त-रोरुपरिणत]*
दृढं पाणिपादं यस्य, तथा पार्श्वौ पृष्ठान्तरे च ऊरू च परिणते परिनिष्ठितां गते यस्य स तथा। उत्तमसंहनने भग० १४ श०१ उ०। जीवा०।
दढप्पहारी- त्रि० *[दृढप्रहारी]*
गाढप्रहारे, नाया०१ श्रु०१८ अ०।
सिद्धभेदे, पुं०। आव०म०१ अ० । आव०क०।
दढभूमि- त्रि० *[दृढभूमि]*
स्थिरे, द्वा०१० द्वा०।
बहुम्लेच्छदेशे, यत्र श्रीभगवान् वीरः कोष्ठे चैत्ये एकरात्रिकया प्रतिमया स्थितः। आव०म०१ अ० । आव०चू०।
दढमइ- त्रि० *[दृढमति]*
दृढा निश्चला मतिर्यस्य स निश्चलमतौ, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०।
दढमित्त- पुं० *[दृढमित्र]*
दन्तपुरनगरवास्तव्यस्य धनमित्रनाम्नो वणिजः स्वनामख्याते मित्रे, आव० ४ अ०।
दढमित्तित्त- न० *[दृढमैत्रीत्व]*
निश्चलसौहृदे, बुह०१ उ०।
दढरह- पुं० *[दृढरथ]*
जम्बूद्वीपे भारते वर्षे अतीतायामवसर्पिण्यां जातेऽष्टमे कुलकरे, सम०। ठा०।
अस्यामेवावसर्पिण्यां जातस्य दशमतीर्थकरस्य शीतलस्य पितरि, सम०। ठा०। आव०।
नवनवतितमे ऋषभनन्दने, कल्प०७ क्षण०।

दढरहा- स्त्री० *[दृढरथा]*
व्यन्तरेन्द्राणां कालाऽऽदीनां तत्सामानिकाग्रमहिषीणां च बाह्या-यां पर्षदि, धरणाऽऽदीनां भवनपतीन्द्राणां लोकपालाग्रमहिषी-सत्कबाह्यपर्षदि च। ठा० ३ ठा० १ उ०। जीवा०।

दढवइर- त्रि० *[दृढवैर]*
अतिशयवैरशालिनि, दृढवैराः स्त्रियः, इहापरत्र दारुणवैर कारण-त्वात्। तं०

दढव्वय- त्रि० *[दृढव्रत]*
दृढानि निश्चलानि व्रतानि नियमा उत्तरगुणा इत्यर्थो यस्याऽसौ दृढव्रतः। निश्चलनियमे, गच्छा० २ अधि०

दढायु- पुं० *[दृढाऽऽयुष्]*
पञ्चमतीर्थकरस्य पूर्वभवजीवे, 'सर्वानुभूतिनामानं, दृढाऽऽयुषो जीवपञ्चमं वन्दे।' सम०। जीवा०।

दण्णियावुड्ढि- स्त्री० *[दर्णिकावृद्धि]*
द्वात्रिंशत्तमे स्त्रीकलाभेदे, कल्प० ७ क्षण०।

दत्त-१ त्रि० *[दत्त]*
अनुज्ञाते, पण्हा०३ अ०।
वितीर्णे, ठा०५ ठा०१ उ०।
न्यस्ते, जंबू०१ वक्ष०।

दत्त-२ त्रि० *[दत्त]*
भारतवर्षेऽस्यामेवोत्सर्पिण्यां जाते सप्तमे वासुदेवे, सम०३५ सम०। आव०।

दत्त-३ त्रि० *[दत्त]*
मेतार्य्यगणधरपितरि, आव०म०१ अ०२ । आव०चू०।

दत्त-४ त्रि० *[दत्त]*
जम्बूद्वीपे भारते वर्षे आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां भविष्यति पञ्चमे कुलकरे सम०। ठा०।

दत्त-५ त्रि० *[दत्त]*
भद्राऽङ्गजे कालिकाऽऽचार्य्यजामिजे, आव०चू०। आव०म०।

दत्त-६ न० *[दात्र]*
शस्त्रभेदे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ०।

दत्ति- स्त्री० *[दत्ति]*
अविच्छिन्नदाने।दत्तीओ जत्तिए वारे,खिवई होंति तत्तिया। अवो-च्छिन्नानि वा पावो, दत्ती होइ दवंतरं।ठा०५ ठा०१ उ०। कल्प०।

दत्तिय- पुं० *[दत्रिक]*
वातपूर्णे चर्मणि, निसि०१ उ०।

दत्तिया- स्त्री० *[दात्रिका]*
छेदसाधने शस्त्रे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ०।

दत्तेसणिज्ज- न० *[दत्तेषणीय]*
उत्पादाऽऽद्येषणादोषरहिते, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ०।

ददंत- न० *[ददत्]*
दायके, बुह०१ उ०।

दद्दर- न० *[दर्दर]*
बहले, नाया०१ श्रु०१ अ०। रा०। जंबू०। जीवा०। आव०म०। पन्न०। उव०।
चीरावनद्धकुण्डिकाऽऽदिभाजनमुखे नाया०१ श्रु०१ अ०। जीवा०। आव०म०। रा०।
बहलः, दर्दराभिधानाद्रिजातश्रीखण्डो वा चपेटारूपः। नाया०। यस्य चतुर्भिश्चरणैरवस्थानं भुवि तस्मिन् गोधाचर्मावनद्धे-वाद्यविशेषे, जंबू० २ वक्ष०। जीवा०। रा०।
चपेटाप्रकारे, पन्न०२पद।आव०म०।जीवा०।नाया०।रा०। उव०
निरन्तरकाष्ठफलकमये निःश्रेणिविशेषे, पिंड०।
घनं-चपेटाभिघातः, सोपानवीथीः। सम०।
गलदर्दरःवचनाटोप इत्यर्थः। पण्हा०।
सोपानवीथ्याम्, सम०।
आच्छादनम्। आव०।
मुखे घनेन चीवरेण बन्धनम्। बुह०।
दर्द्दरः-वाद्यविशेषः। जीवा० ।
घने, पुं०। सम०।

दद्दरपिहाण- न० *[दर्दरपिधान]*
वस्त्रमयबन्धने, बुह०१ उ०।

दद्दरिया- स्त्री० *[दर्दरिका]*
उत्ताडनेन वाद्यमाने वाद्यविशेषे, आव० चू०१ अ०।
चतुर्भिश्चरणैः प्रतिष्ठानं भुवि यस्याः सा तथा गोधाचर्म्मणा अवनद्धेति गोधिका वाद्यविशेषः, दर्द्दरिकेति यत्पर्यायः। ठा० ७ ठा०। अणुओ०। रा०।

दद्दु- पुं० *[दद्रु]*
क्षुद्रकुष्ठभेदे, 'दाद' इति प्रसिद्धे, जंबू०२ वक्ष०। भग०।
'दद्दुकिडिभसिंभफुडियफरुसच्छविचित्तलंगा।'भग०७श०६ उ०

दद्दुर-१ पुं० *[दर्दुर]*
मण्डूके, वव० १ उ०। पण्हा०। भग०। नाया०। उव०।
मण्डूको भूत्वा दर्दुरावतंसके जाते देवे, नाया०।

दद्दुर-२ पुं० *[दर्दुर]*
स्वनामख्याते पर्वते, नाया०१ श्रु०१६ अ०। जंबू०। भग०।

दद्दुर-३ पुं० *[दर्दुर]*
राहौ, सूर०१९ पाहु०।

दद्दुर-४ पुं० *[दर्दुर]*
चर्म्मावनद्धमुखे कलशे, पण्हा०५ अ० ।

दद्दुरवडिंसग- न० *[दर्दुरावतंसक]*
दर्दुरदेवाधिष्ठिते विमाने, नाया० १ श्रु० १३ अ०।

दप्प-१ पुं० *[दर्प]*
निष्कारणेऽनाचारे, वव०४ उ०।
अरुच्या कामभोगे निसि०१ उ०।
स्त्रीणां मानमर्दनादुत्पन्ने गर्वे, उत्त०१ अ०।

दप्प-२ पुं० *[दर्प]*
माने, सम०५१ सम०।
धृष्टतायाम्, भग०१२ श०५ उ०।
प्रमादे, निसि०।

दप्प-३ पुं० *[दर्प]*
अष्टमे गौणाब्रह्मणि, दर्पो देहतृप्तता, तज्जनकत्वादस्य दर्प इत्युच्यते। अथवा–दर्पः सौभाग्याऽऽद्यभिमानः, पण्हा०४ अ०।

दप्प-४ पुं० *[दर्प]*
धावनवल्गनमेपनाऽऽदौ, जीत०।
'दप्पो पुण होइ वग्गणाईणो।' इति। ठा० १० ठा०।
'जो अणेगव्वायमजोग्गं वग्गणाऽदिकिरियं करेति निक्कारणे सो दप्पो।' निसि० १ उ०।

दप्पण- पुं० *[दर्पण]*
आदर्शे,नाया०१श्रु०१अ।निसि०।पण्हा०।जंबू०।आव०चू०।रा०

दप्पणिज्ज- त्रि० *[दर्पणीय]*
बलकरे, उत्साहवृद्धिकरे च। ठा०६ ठा०। कल्प०। नाया०। उव०। पन्न०। जीवा०।

दप्पपडिसेवणा- स्त्री० *[दर्पप्रतिसेवना]*
आगमप्रतिषिद्धप्राणातिपाताऽऽद्यासेवायाम्,ठा०१०ठा०। निसि०

दप्पिय- त्रि० *[दर्पित]*
दृप्ते, पण्हा०१ अ०।
दर्पाद्विराधका भवन्ति ज्ञानाऽऽदीनाम्। निसि०१ उ०।
दर्पयति, पण्हा०३ अ०।

दब्भ- पुं० *[दर्भ]*
समूले कुशे, समूला दर्भाः, अमूलाः कुशाः। भग०८श०९ उ०। आव०म०। आचा०। निर०। विपा०। भग०। अंत०। पन्न०।
दर्भैरग्रभूतैः कुशैर्मूलभूतैर्जात्या दर्मकुशभेद। नाया०१ श्रु०२ अ०।

दब्भपुप्फ- पुं० *[दर्भपुष्प]*
दर्वीकरसर्पविशेषे, पन्न० १ पद। पण्हा०।

दब्भय- पुं० *[दर्भक]*
समूले कुशे, भग०१८ श०१ उ०।

दब्भवण- न० *[दर्भवन]*
दर्भकानेन, 'जातणाहिं किं ते असिवणं दब्भवणं ? दर्भवनं प्रतीतं, दर्भपत्राणि छेदकानि, तदग्राणि च भेदकानि भवन्तीति तद्घातनाहेतुत्वेनोक्तम्। पण्हा० १ अ०।

दब्भवत्तिय-पुं०न० *[दर्भवर्तित]*
दर्भिणः शरीरविकर्तने,दशा०६अ०

दब्भविज्जा- स्त्री० *[दर्भविद्या]*
रोगप्रतीकरणविद्याभेदे, अत्था दर्भे दर्भविषया भवति विद्या, यथा दर्भैरपमृज्यमान आतुरः प्रगुणो भवति। वव०५ उ०।

दब्भियायण- पुं० *[दार्भ्यायण]*
दर्भर्षेर्गोत्रापत्ये, 'चित्ता नक्खत्ते किंगोत्रे पण्णत्ते ? दब्भियायण सगोत्ते पण्णत्ते।' सूर० १० पाहु०। । जंबू०। चंद०।

दम- पुं० *[दम]*
इन्द्रियनिग्रहे, पण्हा०४ अ०। सम०।
इन्द्रियोपशमे, नं०। आचा०। उत्त०।

दमग-१ पुं० *[दमक]*
हस्त्यश्वादीनां प्रथमं विनयग्राहके, निसि०९उ

दमग-२ पुं० *[द्रमक]*
दुर्भगे, रङ्के, वव०३ उ०।
दरिद्रे, निसि०१५ उ०। आव०म०। आव०क०। बुह०। नाया०। विशे०। आव०।
द्रमको नाम दरिद्रो भूत्वा यः प्रव्रजति। बुह०१ उ०।

दमगभत्त- न० *[द्रमकभक्त]*
रङ्केभ्यो दीयमाने भक्ते, निसि०९ उ०

दमघोस- पुं० *[दमघोष]*
शिशुपालपितरि, नाया०१ श्रु०१६ अ०।
वसुदेवस्वसुः पत्यौ, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ०।

दमण- न० *[दमन]*
उपतापे, पण्हा०१ अ०।
पशूनां शिक्षाग्रहणे, पण्हा०३ अ०।

दमणग- पुं० *[दमनक]*
पुष्पजातिविशेषे 'दवना' इतिख्याते, पण्हा० ५ अ०। रा०।
गन्धद्रव्यविशेषे च। आचा०१ श्रु०१ अ० ५ उ०। पन्न०। नाया०। आव०म०।

दमणा- स्त्री० *[दमना]*
गन्धद्रव्यविशेषे, आव०म०१ अ०१ ।

दमदंत- पुं० *[दमदन्त]*
हस्तिशीर्षकपुराधिपतौ, येन हस्तिनागपुरं रुद्धम्। गच्छा०।

दमय- पुं० *[द्रमक]*
कर्मकरे, बुह०१ उ०।

दमसायर- पुं० *[दमसागर]*
दम इन्द्रियदमोऽर्थात् चारित्रम्।
दम एव दुस्तरत्वात् सागर इव दमसागरः। तरितुमशक्यत्वात् सा-गरकल्पे दमे, उत्त०१९ अ०।

दमिड- पुं० *[द्रविड]*
देशभेदे, तद्देशस्थे च। नं०।

दडिल- पुं० *[द्रमिल]*
अनार्यक्षेत्रे, तज्जे मनुष्ये च। पन्न०१ पद०। निसि०। सूय०।

दडिला- स्त्री० *[द्रडिला]*
अनार्यदेशोत्पन्नायां योषिति, भग०९ श०३उ

दडी- पुं० *[दडिन्]*
दडो विद्यते येषां ते दडिनः। उपशमवत्सुसाधुषु उत्त०१९ अ०।
जितेन्द्रिये, उत्त०२२ अ०।
उद्वृत्तदमनशीले च। उत्त०१९ अ०।

दडीसर- पुं० *[दडीश्वर]*
दडो विद्यते येषां ते दडिनो जितेन्द्रियाः तेषामीश्वरो दमीश्वरः। उपशमवतां साधूनामैश्वर्यधारिणि, उत्त० १९ अ०।

दमेयव्व- त्रि० *[दमितव्य]*
वशीकर्त्तव्ये, उत्त०१ अ०।

दम्म- त्रि० *[दम्य]*
दमनयोग्ये, आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०२ उ०। दश०। आव०।

दयपत्त- त्रि० *[दयाप्राप्त]*
प्राप्तकरुणागुणे, उव०।
दयाकारिणि च। ठा०९ ठा०। रा०।

दया- स्त्री० *[दया]*
कृपायाम्, आचा०। सम०। सूय०।
अनुकम्पायाम्, दश०९ अ०१ उ०। आव०। पण्हा०।
जीवरक्षायाम्, दश०१ अ०।
'न तद्दानं न तद्ध्यानं, न तज्ज्ञानं न तत्तपः। न सा दीक्षा न सा भिक्षा, दया यत्र न विद्यते। संथा०।
देहिरक्षा, अहिंसाया एकादशं नाम। पण्हा०।

दर- अव्य० *[दर]*
ईषदर्थे, अर्द्धार्थे च। 'अर्द्धेनेषद्वा विकसितमित्यर्थः। विशे०।
न्यूनतायाम्, दरा द्विविधाः। तद्यथा–पेट्टदराः, धान्यभाजनदराश्च पेट्टमुदरं, तद्रूपा दराः पेट्टदराः।
धान्यभाजनानि कटपल्यादयः, तान्येव दरा धान्यभाजनदराः। बुह० १ उ०। निसि०।

दरजिमिअ- त्रि० *[दरजिमित]*
अर्द्धभुक्ते, बुह०३ उ०।

दरपट्ठावित्त- त्रि० *[दरप्रस्थापित]*
अर्द्धप्रस्थापिते, निसि०१९ उ०।

दरवंदिय- न० *[दरवन्दित]*
द्वाविंशद्वन्दनकदोषे, 'देसीकहवित्तंते, कहेति दरवंदिए कुंचो।' देशीकथावृत्तान्तान् यत्र करोति तद्धि परिकुञ्चितम्। बुह०३ उ०।

दरसण- न० *[दर्शन]*
मते, यथा–'आगारमावसंता वा, अरण्णे वा वि एव्वया। इमं दरसणमावन्ना, सव्वदुक्खा विमुच्चई। अणुओ०।

दरसणिज्ज- त्रि० *[दर्शनीय]*
द्रष्टुं योग्ये, चंद० १८ पाहु०। ।
पश्यच्चक्षुर्न श्राम्यति तस्मिंश्च। भग०२ श०५ उ०।

दरहिंडिय- त्रि० *[दरहिण्डित]*
अर्द्धपर्यटिते, बुह०४ उ०।

दरिद्द- त्रि० *[दरिद्र]*
धनविहीने, ठा०४ ठा०३ उ०।
अनीश्वरे, दुस्थे च। ठा०३ ठा०१ उ०।

दरिद्दकुल- न० *[दरिद्रकुल]*
अनीश्वरे, ठा०८ ठा०।
निर्द्धनकुले च। कल्प०२ क्षण०।

दरिद्दथेर- पुं० *[दरिद्रस्थविर]*
कृताङ्गलानगरीवास्तव्ये समहिले साऽऽरम्भे स्वनामख्याते स्थविरे आव०म० १ अ०।

दरिद्दीहूय- त्रि० *[दरिद्रीभूत]*
अदरिद्रे दरिद्रतां गते, ठा०३ ठा०१ उ०।

दरिय- त्रि० *[दृप्त]*
गर्विते। उव०।
दर्पाऽऽध्माते, रा०। पण्हा०।
दृप्तनागदर्पमथना। पण्हा०४ अ०।

दरियमह- पुं० *[दृप्तमह]*
विशिष्टे काले दर्पात्पूजायाम्, आचा०२ श्रु०१ अ०१ चू०१ उ०।

दरिसण-१ न० *[दर्शन]*
सम्यक्त्वे, आतु०।

दरिसण-२ न० *[दर्शन]*
आगमे, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०।

दरिसण-३ न० *[दर्शन]*
संवेदने, सम०१० सम०।
प्रकाशने, सम०५ अङ्ग।
आलोकने, रा०।
वाक्ये च। सम०६ सम०।

दरिसणरइय- त्रि० *[दर्शनरतिक]*
दर्शने आलोकने रतिर्यस्मिन् स दर्शनरतिकः। दिदृक्षणीये, रा०।

दरिसणावरणिज्ज- न० *[दर्शनाऽऽवरणीय]*
दर्शनं सामान्यार्थबोधरूपमावृणोतीति दर्शनाऽऽवरणीयम्। दर्शनाऽऽवरणकर्मणि, ठा०।
'दंसणसीले जीवे, दंसणथायं करेइ जंबू०

दरिसणिज्ज- त्रि० *[दर्शनीय]*
दर्शनाय चक्षुर्व्यापाराय हितं दर्शनीयम् उव०।
यं पश्यंश्चक्षुषा श्रमं न गच्छति, सम०। नाया०। निर०। विपा०
दर्शनयोग्ये, जंबू० १ वक्ष०। रा०। पन्न०।
रूपातिशये, आव०म० १ अ०। आचा०। रा०। सूर०। उव०।
शोभने, सूय०२ श्रु०१ अ०।

दरिसयंत- त्रि० *[दर्शयत्]*
प्रकटयति, सम०२।

दरिसावण- न० *[दर्शन]*
कृपायां प्रेरणे, आव०१ अ०।

दरी- स्त्री० *[दरी]*
पर्वतकन्दराविशेषे,भग०३श०२ ।नाया० ।जंबू० ।आचा० ।आव०
श्रृगालाऽऽद्युत्कीर्णभूमिविशेषेषु, नाया०१ श्रु० १ अ०। भग०।
मूषिकाऽऽदिकृतायां लघ्व्यां खड्डायाम्, जंबू०२ वक्ष०।

दल- धा० *[दद]*
दाने, सूय० १ श्रु०३ अ०३ उ०। आचा०।

दलयित्ता- अव्य० *[दत्त्वा]*
दानं कृत्वेत्यर्थे, आचा०२ श्रु०३ चू०।

दलंती- स्त्री० *[दलयती]*
घरट्टेन गोधूमाऽऽदिचूर्णयन्त्याम्, पिंड०।

दलयमाण- त्रि० *[ददत्]*
दानं कुर्वति, ठा०३ ठा०१ उ०।
हस्तेन ताडनं हस्तताल:, तं 'दलयमाणे' ददद् यष्टिमुष्टि लकुटाऽऽदिभिर्मरणाऽऽदिनिरपेक्ष आत्मन: परस्य वा प्रहरन्निति भाव:। ठा०३ ठा०४ उ०।
अर्थादानं द्रव्योपादनकारणमष्टाङ्गनिमित्तं ददत् प्रयुञ्जान इत्यर्थ:। ठा०३ ठा० ४ उ०।

दलागणि- पुं० *[दलाग्नि]*
दलानि पत्राणि तेषामग्निस्तद्दहनप्रवृत्तो वह्नि:, ठा० ८ ठा०।

दलिय- न० *[दलिक]*
यां प्रकृतिं बध्नाति जीवस्तदनुभावेन प्रकृत्यन्तरस्थं दलिकम्। तस्मिन्, ठा० ४ ठा० २ उ०।
वस्तु दलिकं द्रव्यं, योग्यमर्हमित्यनर्थान्तरम्।आव०म०१, विशे०

दव- पुं० *[द्रव]*
जले, पिंड०। पानके, बुह०१ उ०।
विकृतिविशेषे, आव० ६ अ०।
सप्तदशविधे संयमे च, कर्मकाठिन्यद्रवणकारित्वाद् विलयहेतुत्वाच्च। आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ०। सूय०।
यच्च सौवीरं द्रवाऽऽदिकमलेपकृतं, यच्च दुग्धतैलवसाद्रवघृताऽऽदिकं लेपकृतं तदुभयमपि द्रवमित्युच्यते। बुह०५ उ०। निसि०

दवकर- त्रि० *[द्रवकर]*
परिहासकारिणि, भग०९ श०३३ उ०। उव०

दवकारी- स्त्री० *[द्रवकारी]*
परिहासकारिण्याम्, भग०११ श०११ उ०

दवगुड- पुं० *[द्रवगुड]*
अपिण्डीकृते आर्द्रगुडे, पण्हा० ४ अ०।

दवग्गि- पुं० *[दवाग्नि]*
वनोद्भवेऽग्नौ, उव०। पण्हा०। उत्त०।
'दवग्गि जालाभिहए।' जीवा०१ प्रति०।
दवाग्निना वह्निज्वालनेन निर्दयं यथा भवति। पण्हा०१ अ०।

दवग्गिदावणया- स्त्री० *[दवाग्निदापनता]*
दवाग्नेर्दवस्य दापनं दाने प्रयोजकत्वमुपलक्षणत्वाद्दानं च दवाग्निदापनं, कर्मत उपभोगपरिभोगव्रतातिचाररूपाणां पञ्चदशकर्मादानानामन्यतमे, । भग०८ श०५ उ० ।
क्षेत्राऽऽदिशोधनिमित्तं वनाग्नेर्वितरणे, उत्त०१ अ०। आव०।

दवण- न० *[दवन]*
यान, सूय०१ श्रु०१ अ०।

दवणमग्ग- पुं० *[दवनमार्ग]*
दवनमिति यानं, तन्मार्गो दवनमार्ग: ।तस्मिन्, सूय०१ श्रु०१ अ०

दवदप्पसील- त्रि० *[द्रुतदर्पशील]*
असमीक्ष्यकारिणि। बुह०।

दवदव- अव्य० *[द्रुतद्रुतम्]*
त्वरिते, दश०१ अ०। निसि०। बुह०।
द्रुतं द्रुतं तथाविधालम्बनं विना त्वरितम्। उत्त०

दवदवचारि- पुं० *[द्रुतद्रुतचारिन्]*
द्रुतगमनशीले, दशा० १ अ०। आव०। सम०। आव०चू०।

दवरग- पुं० *[दवरक]*
रज्जौ, नाया०१ श्रु०८ अ०। आव०म०। रा०। सूय०।
दोरके, आव०म०१ अ०२ ।

दवरिया- स्त्री० *[दवरिका]*
पलाशाऽऽदित्वग् जनितायां रज्जौ, वलनाऽऽदिसंस्कृतो विशिष्टावस्थां प्राप्त: सन् वल्कलो दवरिकेत्युच्यते। विशे०। सूर०।

दवविरोहे- पुं० *[द्रवविरोध]*
काञ्जिकेन सह विरोधे, ओह०।

दवसील- त्रि० *[द्रवशील]*
दर्पद्रुतगमनभाषणाऽऽदौ, ठा०४ ठा०४ उ०। बुह०।

दवावण- न० *[दापन]*
दानक्रियायां प्रेरणे, निसि०२ उ०।

दवावेमाण- त्रि० *[दापयत्]*
दानं कारयति, ठा०४ ठा०२ उ०।

दविड- पुं० *[द्रविम]*
अनार्य्यदेशभेदे, तज्जे मनुष्ये च। पण्हा०१ अ०।
द्रविडदेशोत्पन्नायां योषिति च। नाया०१ श्रु०१ अ०।

दविणसंहरणाइ- पुं० *[द्रविणसंहरणाऽऽदि]* पि तुर्वेश्मनि निक्षेपाऽऽदौ, कल्प० ७ क्षण०।

दविय- पुं० *[द्रविक]*
द्रवः संयमः सप्तदशविधानः कर्मकाठिन्यद्रवकारित्वात् विलय हेतुत्वात्। आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ०।
कर्मग्रन्थिद्रावणो द्रवः संयमः, स विद्यते यस्याऽसौ द्रविकः। सूत्र० २ श्रु० २ अ०। आचा०।
सम्यक् संयमोत्थानेनोत्थिते, सूय० १ श्रु०२ अ०१ उ०।
तृणाऽऽदिद्रव्यसमुदाये, भग० १ श०८ उ०। सूय०।

दविय-१ न० *[द्रव्य]*
गच्छति तांस्तान् ज्ञानाऽऽदिप्रकारानिति द्रव्यम्। दश०२ अ०।
तत्तद् गुणानां भाजने, कल्प०५ क्षण०।

दविय-२ न० *[द्रव्य]*
रागद्वेषरहिते, दश०१० अ०। आचा०। सूय०।

दविय-३ न० *[द्रव्य]*
भव्य, मुक्ति गमनयोग्य, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०। आचा०।
द्रव्यं भव्यो मुक्तिगमनयोग्यः, रागद्वेषविरहाद्वा द्रव्यभूतोऽकषायीत्यर्थः। यदि वा–वीतराग, वीतरागोऽल्पकषाय इत्यर्थः। सूय० १ श्रु०८ अ०।
रागद्वेषकलिकोपद्रवरहितत्वाद्वा जातसुवर्णवच्छुद्धद्रव्यभूते, । सूय० १ श्रु० १६ अ०।
धर्माधर्माऽऽकाशपुद्गलजीवकालाऽऽत्मके गुणपर्य्यायाऽऽधारे, । सूय० २ श्रु०५ अ०।

दवियएक्कय- पुं० *[द्रव्यैकक]*
चतुर्विधैकान्यतमे, ठा० ४ ठा० २ उ०

दवियकप्प- पुं० *[द्रव्यकल्प]*
कल्पनीयद्रव्ये, पंच०भा०।

दवियत्ता- स्त्री०पुं० *[द्रव्याऽऽत्मन्]*
द्रव्यं त्रिकालानुगामि उपसर्जनीकृतकषायाऽऽदिपर्थ्यायं, तद्रूप आत्मा द्रव्याऽऽत्मा। आत्मभेदे, स च सर्वेषां जीवानाम्। भग० १२ श० १० उ०।

दवियरस- पुं० *[द्रवितरस]*
द्रवयुक्तनिर्यासे, ओह०।

दवियाणुओग- पुं० *[द्रव्यानुयोग]*
अनुयोगभेदे, ठा०।

दवियाऽऽता- स्त्री० *[द्रव्याऽऽत्मन्]*
'दवियत्ता' शब्दार्थे, भग० १२ श० १० उ०।

दव्व- न० *[द्रव्य]*
द्रवति गच्छति ताँस्तान् पर्यायानिति द्रव्यम्। आव०म०१ अ० । निसि०। जंबू०। अणुओ०।
अनादिमदुत्प्रेक्षितपर्य्याश्रृङ्खलाऽऽधारेऽर्थे, ठा०।।

दव्वजाय- न० *[द्रव्यजात]*
तथाविधाशनाऽऽदिद्रव्यविशेषे, उत्त० २९ अ०।
द्रव्यप्रकारे, पण्हा० ३ अ०।

दव्वट्ठपएसट्ठया- स्त्री० *[द्रव्यार्थप्रदेशार्थता]*
द्रव्यार्थप्रदेशार्थो भयाऽऽश्रयणे, भग०२५ श०३ उ०।

दव्वट्ठया- स्त्री० *[द्रव्यार्थता]*
द्रव्यमुपेक्षितपर्यायं वस्तु, तदेवार्थो द्रव्यार्थः, तद्भावस्तत्ता। भग०१० श०४ उ०।
द्रव्यत्वे, अणुओ०।
द्रव्यं च तदर्थश्चेति द्रव्यार्थः, तस्य भावो द्रव्यार्थता। प्रदेशगुणपर्यायाऽऽधारतायामवयविद्रव्यतायाम्, ठा०१ ठा०।
द्रव्यार्थतया द्रव्यास्तिकनयमतेन शाश्वती, द्रव्यास्तिकनयो हि द्रव्यमेव तात्त्विकमभिमन्यते, न पर्यायान्, द्रव्यं चान्वयपरिणामित्वात्।अन्यथा द्रव्यत्वायोगात्, अन्वयित्वाच्च सकलकालभावीति भवति द्रव्यार्थतया शाश्वती। जीवा० ३ प्रति० ४ उ०

दव्वट्ठाणाउय- न० *[द्रव्यस्थानाऽऽयुष्]*
द्रव्यं पुद्गलद्रव्य, तस्य स्थानं भेदः परमाणुद्विप्रदेशकाऽऽदि, तस्याऽऽयुः स्थितिः।अथवा–द्रव्यस्याणुत्वाऽऽदिभावेन यत्स्थानमवस्थानं तद्रूपमायुर्द्रव्यस्थानायुः।द्रव्यस्थितौ, भग०५ श०७उ०

दव्वट्ठिइ- स्त्री० *[द्रव्यस्थिति]*
द्रव्याणां वर्तनाकाले, विशे०। भग०।

दव्वट्ठिय- पुं० *[द्रव्यार्थिक]*
द्रव्यमेवार्थो यस्य, न तु पर्यायः, स द्रव्यार्थिकः। नयभेदे, आव०म०१ अ०२ ।

दव्वट्ठिय- पुं० *[द्रव्यस्थित]*
द्रव्ये च वस्तुतत्त्वबुद्धया स्थितो, न तु पर्याये इति द्रव्यस्थितः। नयभेदे, आव०म०१ अ०२ ।

दव्वट्ठिय- पुं० *[द्रव्यास्तिक]*
अस्तीति मतिरस्य आस्तिकः। द्रव्ये आस्तिको न तु पर्याये इति द्रव्यास्तिकः। आव०म० १ अ०। जंबू०

दव्वणय- पुं० *[द्रव्यनय]*
द्रव्यार्थिकनये, उत्त०।

दव्वणाम- न० *[द्रव्यनामन्]*
द्रव्यलक्षणेऽर्थे, अणुओ०।
'से किं तं दव्वणामे ? दव्वणामे छव्विहे पण्णत्ते। तं जहा– धम्मत्थिकाए० जाव अद्धासमए य। सेत्तं दव्वणामे।' अणुओ०।

दव्वदेवत्त- न० *[द्रव्यदेवत्व]*
साध्ववस्थायाम्, भग०१४ श०७ उ०।

दव्वधम्म- पुं०न० *[द्रव्यधर्म]*
दानधर्म्मे, यो दानधर्म्मः स द्रव्यधर्मोऽवगन्तव्य इति। तथा चोक्तम्–'अन्नं पानं च वस्त्रं च, आलयः शयनाऽऽसनम्। शुश्रूषा वन्दनं तुष्टिः, पुण्यं नवविधं स्मृतम्'। सूय०१ श्रु० ९ अ०।
द्रव्यधर्मः-धर्मास्तिकायः तिक्तादिर्वा द्रव्यस्वभावः गम्यादिर्वा धर्मः कृतीर्थिको वा धर्मः। आव०।

दव्वपिय- त्रि० *[द्रव्यप्रिय]*
द्रव्यं परिहासः, तत् प्रिये, उव०।

दव्वपुरिस- पुं० *[द्रव्यपुरुष]*
पुरुषत्वेन उत्पत्स्यते यस्तस्मिन्, उत्पन्नपूर्वे च। ठा०।
मूलगुणनिर्मितः पुरुषप्रायोग्यानि द्रव्याणि, उत्तरगुणनिर्मितस्तु तदाकारवन्ति तान्येवेति भावपुरुषभेदाः। ठा०३ ठा०२ उ०।

दव्वपमाण- न० *[द्रव्यप्रमाण]*
द्रव्याणां गणनायाम्, यथा एतावन्तोऽत्रौदनभेदाः, एतावन्ति च शाकविधानानि, इत्यन्तश्च खाद्यविशेषाः, एतावन्ति च द्राक्षापानकाऽऽदीनि पानकानि। वव० ६ उ०। अणुओ०।

दव्वभावतदुभयकप्प- पुं० *[द्रव्यभावतदुभयकल्प]*
द्रव्यभावसंमिलिते कल्पे, पंच०भा०।

दव्वभूय- पुं० *[द्रव्यभूत]*
अनुपयुक्ते, निसि०२ उ०।

दव्वरासि- पुं० *[द्रव्यराशि]*
पुरीषाऽऽदिद्रव्यसमूहे, पण्हा०५ अ०।

दव्वलिंग- न० *[द्रव्यलिङ्ग]*
भावविकलत्वेनाप्रधानप्रव्रजितादिनेपथ्यचरणलक्षणवेषे, जीवा०

दव्वलेस्सा- स्त्री० *[द्रव्यलेश्या]*
औदारिकशरीराऽऽदिवर्णे, भग० १ श० ९ उ०।

दव्वलोय- पुं० *[द्रव्यलोक]*
लोकभेदे, भग०११ श०१० उ०।

दव्वसंभारिय- न० *[द्रव्यसंभारित]*
द्रव्यैः कर्पूरपाटलाऽऽदिभिः संभारितं वासितं द्रव्यसंभारितम्। कर्पूरपाटलाऽऽदिवासिते जले बुह० २ उ०।

दव्वसमय- पुं० *[द्रव्यसमय]*
द्रव्यस्य सम्यगयनं द्रव्यचसमयः। द्रव्यपरिणतिविशेषे, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०।

दव्वसार- पुं० *[द्रव्यसार]*
द्रव्यलक्षणसारे, पण्हा०५ अ०।

दवसील- न० *[द्रव्यशील]*
चेतनाचेतनाऽऽदेर्द्रव्यस्य स्वभावे, सूय० १ श्रु०७ अ०।

दव्वसुद्ध- न० *[द्रव्यशुद्ध]*
उद्गमाऽऽदिदोषरहिते द्रव्ये, भग०१५ श०।
प्राशुके, विपा० २ श्रु०१ अ०।
द्रव्यतः शुद्धेन प्राशुकादिनेति। विपा०

दव्वहलिया- स्त्री० *[द्रव्यहलिका]*
कुहडाऽऽख्यवनस्पतिभेदे, पन्न० १ पद।

दव्वहोमा- स्त्री० *[द्रव्यहोमा]*
नानाविधैर्द्रव्यैः कणवीरपुष्पाऽऽदिभिर्मधुघृताऽऽदिभिर्वोच्चाटनाऽऽदिकैः कार्य्यैः होमो हवनं यस्यां सा द्रव्यहोमा तस्याम्, सूय० २ श्रु०२ अ०।

दव्वाणंतय- न० *[द्रव्यानन्तक]*
जीवद्रव्याणां पुद्गलद्रव्याणां वा यदनन्तकं तस्मिन्, ठा०१० ठा०।

दव्वाणुओग- पुं० *[द्रव्यानुयोग]*
षड् द्रव्यविचारे, आचा०।

दव्वादेस- पुं० *[द्रव्याऽऽदेश]*
आदेशः प्रकारो द्रव्यरूप आदेशो द्रव्याऽऽदेशः।भग०१४ श०४ द्रव्यप्रकारेण द्रव्यत इत्यर्थे, परमाणुत्वाऽऽद्याश्रित्येति यावत्। ठा० ५ ठा० १ उ०।

दव्वाभिग्गह-पुं० *[द्रव्याभिग्रह]*
लेपकृताऽऽदिद्रव्यविशेषे, गच्छा० १अधि०

दव्वाभिग्गहचरय- पुं० *[द्रव्याभिग्रहचरक]*
द्रव्याभिग्रहेण चरति भिक्षामटति द्रव्याऽऽश्रिताभिग्रहं वा चरत्यासेवते यः स द्रव्याभिग्रहचरकः। उव०।
भिक्षाचर्य्यावति, भिक्षाचर्य्यायास्तद्वतोश्चाभेदविवक्षणाद् भिक्षायां च। भग० २५ श० ७ उ०। गच्छा०।

दव्वावइ- स्त्री० *[द्रव्याऽऽपत्]*
कल्पनीयाऽशनाऽऽदिद्रव्यदुर्लभतायाम्, जीत०।

दव्वावस्सय- न० *[द्रव्याऽऽवश्यक]*
द्रव्यरूपमावश्यकं प्रकृतं, तत्राऽऽवश्यकोपयोगाधिष्ठितः साध्वादिदेहाऽवन्दनकाऽऽदिसूत्रोच्चारणलक्षणक्षाऽऽगम आवर्तकाऽऽदिका क्रिया चाऽऽवश्यकमुच्यते, आवश्यकोपयोगशून्यस्तु ता एव देहाऽऽगमक्रिया द्रव्याऽऽवश्यकम्। तस्मिन्, अणुओ०।

दव्विंद- पुं० *[द्रव्येन्द्र]*
इन्द्रभेदे, ठा० ३ ठा०१ उ०।

दव्विय- पुं० *[दैविक]*
देवेन कृतोपद्रवे, वव० २ उ०।

दव्वी- स्त्री० *[दर्वी]*
भाजनविशेषे, आचा०१श्रु०१चू०१अ०६उ० आव०। पिंड०। पन्न०

दव्वीकर- पुं० *[दर्वीकर]*
दर्वीव दर्वी फणा तत्करणशीलो दर्वीकराः अहिभेदे, पन्न०।

दव्वोवओग- पुं० *[द्रव्योपयोग]*
द्रव्यार्थिकनयजन्यबोधे, नं० ।

दव्वोवगाहणा- स्त्री० *[द्रव्यावगाहना]*
द्रव्यस्य पर्यायैरवगाहना आश्रयणं द्रव्यावगाहना। अवगाहना भेदे, ठा० ४ ठा० ।

दव्वोसह- न० *[द्रव्यौषध]*
बहुद्रव्यसमुदायौषधे, निसि० २ उ० ।
द्रव्यौषधं पिप्पल्यादि। दश० १९३ ।

दस- त्रि० *[दश]*
सङ्ख्याभेदे, दश० ।

दसउर- न० *[दशपुर]*
साम्प्रतं 'मन्दसोर' इति प्रसिद्धे स्वनामख्याते नगरे। आव०चू० ।

दसकालिय- न० *[दशकालिक]*
कालेन निर्वृत्तं कालिकं, प्रमाणकालेनेति भावः। दशाध्ययन-भेदाऽऽत्मकत्वाद्दशप्रकारं कालिकम्, प्रकारशब्दलोपाद्दशका-लिकम्। दशवैकालिकाऽऽख्ये ग्रन्थे, दश० १ अ० ।

दसगुण- पुं० *[दशगुण]*
एकगुणापेक्षया दशाभ्यस्ते, ठा० १० ठा०

दसगुणकालग- पुं० *[दशगुणकालक]*
दशगुण एकगुणकालापेक्षया दशाभ्यस्तः कालो वर्णविशेषो येषां तेषु, ठा० १० ठा० ।

दसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्स- न० *[दशजातिकुलकोटि-योनिप्रमुखशतसहस्र]*
दशैव जातौ यानि कुलकोटीनां जातिविशेषलक्षणानां योनि-प्रमुखाणि उत्पत्तिस्थानद्वारकाणि शतसहस्राणि लक्षाणि तेषु, ठा० १० ठा० ।

दसट्ठाण- न० *[दशस्थान]*
दशसु प्रकारेषु, दश स्थानानि नैरयिकाणामनिष्टानि, देवानां चेष्टानि शब्दाऽऽदीनीति। भग० १४ श० ५ उ० ।

दसट्ठाणणिव्वत्तिय- पुं० *[दशस्थाननिर्वर्तित]*
दशभिः स्थानैः प्रथमसमयैकेन्द्रियत्वाऽऽदिभिः पर्यायैर्हेतुभिर्यै-र्निर्वृत्ता बन्धयोग्यतया निष्पादितास्ताः तेषु, दशभिः स्थानै-र्निर्वृत्तिर्वा येषां तेषु च। ठा० १० ठा० ।

दसणाम- न० *[दशनामन्]*
दशविधपदार्थनामानि, अणुओ० ।

दसण्ण- पुं० *[दशार्ण]*
मृत्तिकावतीपुरीप्रतिबद्धे देवविशेषे, पन्न०१ पद। सूय० । उत्त० । आव०म० ।

दसण्णकूड- न० *[दशार्णकूट]*
स्वनामख्याते कूटे, आव० । आव० म० । आचा० । आव०चू० ।

दसण्णपुर- न० *[दशार्णपुर]*
स्वनामख्याते नगरे, यत्र दशार्णभद्रो नृपः, श्रीभगवन्तं महावीरं दशार्णकूटनगरनिकटसमवसृतं ववन्दे। ठा० १० ठा० । आव० । आव०चू० । आव०म० ।

दसण्णभद्द- पुं० *[दशार्णभद्र]*
स्वनामख्याते दशार्णपुरराजे, ठा० ।

दसदसमिया- स्त्री० *[दशदशमिका]*
दश दशमानि दिनानि यस्यां सा दशदशमिका । दशदशक-निष्पन्नायां भिक्षुप्रतिमायाम्, ठा०
दशदशमिका-भिक्षुप्रतिमाविशेषः। अंत० ।

दसदसय- न० *[दशदशक]*
शते, ठा०१० ठा० ।

दसदिट्ठंत- पुं० *[दशदृष्टान्त]*
मनुष्यलाभे दशसु दृष्टान्तेषु, आव०म० १ अ०१ ।

दसदिवसिय- त्रि० *[दशदिवसिक]*
दशाहिके, 'दसदिवसियं ठिइ-वडियं।' नाया०१ श्रु०१ अ० ।

दसधणु- पुं० *[दशधनुष्]*
जम्बूद्वीपे द्वीपे आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यामैरवते वर्षे भविष्यति षष्ठे कुलकरे, सम० ।
जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां दशमे कुलकरे च। ठा० १० ठा० ।

दसद्धवण्ण- त्रि० *[दशार्द्धवर्ण]*
पञ्चवर्णे, सम०३४ सम० । रा० । उव० जीवा० ।
'दसद्धवण्णस्स कुसुमस्स जाणुस्सेहपमाणमेत्तं।' रा०
दशार्द्धवर्णकुसुमविशेषः। आव० २३१ ।

दसपएसिय- पुं० *[दशप्रदेशिक]*
दशाणुके, ठा०१० ठा० ।

दसपएसोगाढ- पुं० *[दशप्रदेशावगाढ]*
दशप्रदेशेष्वाकाशस्यावगाढा आश्रिता दशप्रदेशावगाढाः। आकाशस्य दशसु प्रदेशेषु आश्रिते, ठा० १० ठा० ।

दसपुव्वि- पुं० *[दशपूर्विन्]*
अधीतोत्पादाऽऽदिपूर्वदशके, कल्प० ।

दसम- त्रि० *[दशम]*
दशानां पूर्णः, येन दश सङ्ख्या पूर्य्यते तस्मिन्, आचा० १ श्रु०९ अ०४ उ० ।

दसमभत्तिय- पुं० *[दशमभक्तिक]*
दिनचतुष्टयमुपोषिते, पण्हा०३ अ० ।

दसमी- स्त्री० *[दशमी]*
श्रुतेः पुरुषस्याऽऽयुः कालस्य शतसंख्यकतया दशभिर्विभागः। नवतेरूर्द्ध्वं दशवर्षावच्छिन्ने काले पुरुषावस्थाऽऽदौ, ज्यो० ।

दसमुद्दामंडियग्गहत्थ- पुं० *[दशमुद्रामण्डिताग्रहस्त]*
दशभिर्मुद्राभिर्मण्डितो अग्रहस्तौ येषां तेषु, जीवा०३प्रति०४ उ०।

दसमुद्दियाणंतय- न० *[दशमुद्रिकानन्तक]*
हस्ताङ्गुलीमुद्रिकादशके, भग०९ श०३३ उ०।

दसरत्तट्ठिइवडिया- स्त्री० *[दशरात्रस्थितिपतिता]*
कुलक्रमादागते पुत्र जन्मानुष्ठाने, विपा० १ श्रु०३ अ०।

दसरह- पुं० *[दशरथ]*
जम्बूद्वीपे भारते वर्षेऽस्यामेवोत्सर्प्पिण्यां जाते ऽष्टमस्य वासुदेवस्य पितरि, ठा०९ ठा०। आव०। सम०।
जम्बूद्वीपे भारते वर्षेऽतीतायामुत्सर्प्पिण्यां जाते नवमे कुलकरे, ठा०१० ठा०। सम०।

दसविह- त्रि० *[दशविध]*
दशप्रकारके, पण्हा०३ अ०।

दसविहकप्प- पुं० *[दशविधकल्प]*
कल्पविकल्पाऽऽदिके दशप्रकारे कल्पे, पंच०भा०।

दसवेयालिय- न० *[दशवैकालिक]*
विकालेनापराह्णलक्षणेन निर्वृत्तं वैकालिकम्, दशाध्ययननिर्माणं च तद्वैकालिकं च मध्यपदपाद्दशवैकालिकम्। नं०।
शय्यम्भवसूरिकृते स्वनामख्याते श्रुत शास्त्रे,अस्य दशवैकालिक-स्यानुयोगः। दश० २ चू०।

दसवेयालियणिज्जुत्ति- स्त्री० *[दशवैकालिकनिर्युक्ति]*
दशवैकालिकस्य भद्रबाहुस्वामिरचितनिर्युक्तिग्रन्थे, दश०।

दससमयट्ठिइय- त्रि० *[दशसमयस्थितिक]*
दश समयान् स्थितिर्येषां तेषु, ठा०१० ठा०।

दससय- न० *[दशशत]*
सहस्रसङ्ख्यायाम्, ठा०१० ठा०।

दससयसहस्स- न० *[दशशतसहस्र]*
दशलक्षाऽऽत्मिकायां संख्यायाम्, अणुओ०।

दससहस्स- न० *[दशसहस्र]*
सङ्ख्याभेदे, अणुओ०।

दसहा- अव्य० *[दशधा]*
दशविधे, उत्त० २३ अ०।

दसा- स्त्री० *[दशा]*
चरितगतिसिद्धिगमनलक्षणायामवस्थायाम्, नं० अनुभागेन युक्तो विभागो दशा। निसि०११ उ०।
वर्षशताऽऽयुष्कापेक्षया वर्षदशकप्रमाणायां कालकृतायां जन्त्व-वस्थायाम्, दश०।

दसार-१ पुं० *[दशार्ह]*
हरिवंशकुलोद्भवेषु, सूय०२ श्रु०१ अ०। आव० म०।
समुद्रविजयाऽऽदिवसुदेवान्ता दश दशाराः। सम०। अंत०।

दसार-२ पुं० *[दशार्ह]*
समयभाषया वासुदेवे, ठा०२ ठा०३ उ०।
वासुदेव कुलीनप्रजासु, सम०।

दसार-३ पुं० *[दशार्ह]*
बन्धदशानां चतुर्थेऽध्ययने दशाराणां वक्तव्यता उक्ता, सा चेदानीं नोपलभ्यते, बन्धदशानां व्युच्छिन्नत्वात्। ठा० १० ठा०।

दसार-४ पुं० *[दशार्ह]*
बलदेवे, आव०म०१ अ०२ । आव०चू०।
'दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं।' निर०१ वर्ग०१ अ०।

दसारगंडिया- स्त्री० *[दशार्हगण्डिका]*
दशार्हैकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगतासु वाक्यपद्धतिषु, यत्र दशा-र्हाणां पूर्वजन्माऽऽद्यभिधीयते सम०।

दसारचक्क- न० *[दशार्हचक्र]*
यादवसमूहे, उत्त०।
'दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ।' उत्त०२२ अ०।

दसारमंडण- न० *[दशार्हमण्डन]*
दशार्हाणां वासुदेवकुलीनप्रजानां मण्डनाः शोभाकारिणो दशार्ह-मण्डनाः। दशार्होत्तमपुरुषेषु, सम०।

दसारमंडल- न० *[दशार्हमण्डल]*
दशार्हाणां वासुदेवानां मण्डलानि दशार्हमण्डलानि, बलदेव-वासुदेवद्वयलक्षणाः समुदाया दशार्ह मण्डलानि। बलदेववासु-देवद्वयलक्षणे समुदाये, सम०।

दसारवग्ग- पुं० *[दशार्हवर्ग]*
दशार्हसमुदाये, दश०१ अ०।

दसारवरवीरपुरिस- पुं० *[दशार्हवरवीरपुरुष]*
दशार्हाणां समुद्रविजयाऽऽदीनां दशार्हस्य वा वासुदेवस्य ये वराश्च पुरुषास्ते। नाया० १ श्रु०१६ अ०।
दशार्हाः समुद्रविजयाऽऽदयस्तेषु मध्ये वरास्त एव वा वरा वीरपुरुषास्ते दशार्हवरवीरपुरुषाः। दशार्हश्रेष्ठपुरुषेषु, नाया०१ श्रु०५ अ०।

दसारवंस- पुं० *[दशार्हवंश]*
बलदेववासुदेववंशे, 'तीसे णं समाए तओ वंसा समुप्पज्जित्था।' जंबू०२ वक्ष०। सम०।

दसारसीह– पुं० *[दशार्हवंसिंह]*
अरिष्टनेमिपितृव्यपुत्रः। प्रधानदर्शनवतोऽपि चारित्रेण विनाऽवर-गतिप्राप्तिः। आव०।
दशार्हसिंहः-कृष्णः। उत्त० ।

दसासुयखंध- पुं० *[दशाश्रुतस्कन्ध]*
दशाध्ययनप्रतिपादको ग्रन्थो दशा, स चाऽसौ श्रुतस्कन्धश्च दशाश्रुतस्कन्धः। दशा०।

दसाहिया- स्त्री० *[दशाहिका]*
दशदिवसप्रमाणायां पुत्रजन्मक्रियायाम्, भग०११ श०११ उ०।

दसिया- स्त्री० *[दशिका]*
वस्त्राञ्चले, बृह०३ उ०।
वर्तिकायां । दण्डस्याग्रभागे ऊर्णिकादशिका बध्यन्ते ।बृह०७उ०

दसुत्तरा- स्त्री० *[दशोत्तरा]*
दशाधिके अष्टौ रेखा दशोत्तरा दशकवृद्ध्या पलपरिमाण-सूचिकाः। ज्यो०२ पाहु०। ।

दस्सु- पुं० *[दस्यु]*
चौरे, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०१ उ०।
अदत्ताऽऽहरो वा दस्युर्वाऽपहरति। आचा०१ श्रु०५ अ०३ उ०।

दह- पुं० *[ह्रद]*
अगाधजलाऽऽशये, जंबू० वक्ष०। आचा०। चंद०। नं०। पन्न०।
ह्रदः-नद्यादीनां निम्नतरः प्रदेशः। उवा०।

दहगलण- न० *[ह्रदगलन]*
ह्रदस्य मध्ये मत्स्वाऽऽदिग्रहणार्थं भ्रमणे जलनिःसारणे च। विपा० १ श्रु०८ अ०।

दहण-१ पुं० *[दहन]*
दहतीति दहनः। अग्नौ, विशे०। आव०चू०।
ज्वालाभिर्भस्मीकरणे, पण्हा०१ अ०।

दहण-२ पुं० *[दहन]*
कृत्तिकानक्षत्रे, दहनः कृतिकाया देवता। ठा०२ ठा०३ उ०

दहण-३ पुं० *[दहन]*
पाटलिपुत्रनगरवास्तव्यस्य हुताशननाम्नः श्रावकस्य ज्वलनशि-खायां भार्य्यायां जाते स्वनामख्याते पुत्रे, आव०।

दहणसील- पुं० *[दहनशील]*
ज्वालनस्वभावे, तं०।
पुत्रश्च मूर्खो विधवा च कन्या, शठं च मित्रं चपलं कलत्रम्। विनाशकालेऽपि दरिद्रता च, विनाऽग्निना पञ्च दहन्ति देहम् ।तं०

दहप्पवहण- न० *[ह्रदप्रवहण]*
ह्रदजलस्य प्रकृष्टे वहने, विपा० १ श्रु०८ अ०।

दहफुल्लिया- स्त्री० *[ह्रदफुल्लिका]*
वल्लीभेदे, पन्न०१ पद।

दहमद्दण- *[ह्रदमर्दन]*
ह्रदस्य मध्ये पौनःपुन्येन परिभ्रमणे, जले निःसारिते पङ्कमर्दने च। विपा० १ श्रु०८ अ०।

दहमद्दल- न० *[ह्रदमर्दल]*
'दहमद्दण' शब्दार्थे, विपा० १ श्रु०८ अ०

दहमह- *[ह्रदमख]*
ह्रदस्य विशिष्टे काले पूजायाम्, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०२ उ०।

दहमहण- न० *[ह्रदमथन]*
ह्रदजलस्य तरुशाखाभिर्विलोडने, विपा०१ श्रु०८ अ०।

दहवई- स्त्री० *[ह्रदवती]*
'दो दहवईओ।' ठा०२ ठा०३ उ०।
'दहावई' शब्दार्थे, ठा०६ ठा०।

दहवहण- न० *[ह्रदवहन]*
स्वत एव ह्रदाम्बलनिर्गमे, विपा० २ श्रु०८ अ०।

दहावई- स्त्री० *[ह्रदावती]*
ह्रदा अगाधजलाऽऽशयाः सन्त्यस्यामिति ह्रदावती ।जंबू०४ वक्ष० जम्बूद्वीपे मेरोः पूर्वस्यां दिशिशीताया महानद्याः दक्षिणतः सङ्गतायामन्तर्णद्याम्, ठा० ६ ठा०।

दहावईकुंड- न० *[ह्रदावतीकुण्ड]*
ह्रदावतीनाम्न्या अन्तर्णद्या उद्गम-कुण्डे, जंबू०।

दहि- न० *[दधि]*
दुग्धविकृतिभेदे, उव०। पन्न०। ठा०। पण्हा०।
दधिनवनीतघृतानि यत्वार्येजगवादिसम्बन्धीनि, यस्मादुष्ट्रीणां तानि दध्यादीनि उ भवन्ति। आव०चू०। आव०। ठा०।

दहिघण- पुं० *[दधिधन]*
दधिपिण्डे, जंबू०१ वक्ष०। पन्न०। जीवा०

दहिमुहपव्वय- पुं० *[दधिमुखपर्वत]*
पर्वतभेदे, ठा०।
दधिवत् श्वेतं मुखं शिरो रजतमयत्वाद् येषां ते दधिमुखाः। ठा०४ ठा०३ उ०।
नन्दीश्वरद्वीपेऽञ्जनपर्वतानां प्रत्येकं चतुर्दिक्षु पुष्करिणीनां मध्यभागस्थेषु स्वनामख्यातेषु पर्वतेषु, सम०।

दहिवण्ण- पुं० *[दधिपर्ण]*
वृक्षभेदे, ठा०१० ठा०। पन्न०। सम०। उव०। रा०।

दहिवासुया- स्त्री० *[दधिवासुका]*
वनस्पतिविशेषे, जीवा०।
दधिवासुका नाम वनस्पतिविशेषः, तन्मया मण्डपका दधि-वासुकामण्डपकाः। जीवा० ३ प्रति०४ उ०। जंबू०। रा०।

दहिवाहण- पुं० *[दधिवाहन]*
चेटकमहाराजदुहितुः पद्मावत्याः पत्यौ चम्पाराजे, आव०। आव०चू०।

दहिव्वय- पुं० *[दधिव्रत]*
न दध्यति दधिव्रतः। दधिप्रत्याख्यानवति, आव०४ उव०।

दाइ- अव्य० *[दाइ]*
अभिप्रायाभिदर्शने, निसि०२ उ०।

दाइज्जमाण- पुं० *[दर्श्यमाण]*
चक्षुषा प्रत्यक्षं कारयिष्यमाणे वस्तुनि कल्प०५ क्षण०।

दाइय- पुं० *[दायाद]*
पुत्राऽऽदिषु, भग०९ श०३३ उ०।
दाइय- पुं० *[दायिक]*
गोत्रिके, कल्प०५ क्षण०।
'दायिकसुतमाणिक्यः, प्रेरितवानस्मदादिजनान्।' भग० ४१ श० १९ उ०।
दाइया- स्त्री० *[दारिका]*
बालिकायाम्, आव०म०१ अ० । '
दाउं- अव्य० *[दातुं]*
सकृद्दानं कर्तुमित्यर्थे, उवा०१ अ०।
दाकलस- पुं० *[उदककलश]*
लघुतरे घटे, भग०१५ श०।
दाकुंभ- पुं० *[उदककुम्भ]*
महद्घटे, भग०१५ श०।
दाडिम- न० *[दाडिम]*
'दालिम। दाडिम। जीवा० ।उव० ।आचा० ।नाया० ।ओह०। रा०
दाडिमपुप्फप्पगासपीवराहरा- स्त्री० *[दाडिमपुष्पप्रकाशपीवराधरा]*
दाडिमपुष्पप्रकाशः पीवरः प्रवरः सुभगोऽधरो यासां ता दाडिमपुष्पप्रकाशपीवराधराः। सुन्दराधरोष्ठासु योषित्सु, जीवा०३ प्रति० ४ उ०।
दाढा- स्त्री० *[दंष्ट्रा]*
दशनविशेषे, पण्हा०१ अ०। आव०।
'वराहं दाढाए।' अणुओ०।
दंष्ट्रार्थं वराहाऽऽदयो व्यापाद्यन्ते। आचा०१ श्रु०१ अ०६ उ०।
दाढिकालि- स्त्री० *[दंष्ट्रिकाऽऽवलि]*
यमलतन्तुद्वयव्यूतायां पट्याम्, जीत०।
यथा मुखमध्ये यमलितोभयदन्तपङ्क्तिरूपा दाढिकाऽऽलिर्दंष्ट्रिकावलिर्निरीक्ष्यते, एवं धौतपोतिकाऽपि द्विजसत्कसदृशवस्त्र परिधानरूपा दृश्यमाना दाढिकालिरिव प्रतिभातीति कृत्वा दाढिकालिरुच्यते। बुह० ३ उ०।
दाढिगालि- स्त्री० *[दंष्ट्रिकाऽऽवलि]*
'दाढिकालि' शब्दार्थे, जीत०।
दाढिया- स्त्री० *[दंष्ट्रिका]*
उत्तरोष्ठकेशगुच्छे दशनविशेषे, ओष्ठस्याधोभागे च। नाया०१ श्रु०२ अ०। भग०।
विशिष्टदंष्ट्राशालिनि, त्रि०। अणुओ०।
दाढियालि- स्त्री० *[दंष्ट्रिकाऽऽवलि]*
'दाढिकालि' शब्दार्थे, जीत०।
दाढुद्धिय- त्रि० *[दंष्ट्रोद्धृत]*
उत्खातदंष्ट्रे, दश०१ चू०।

दाण- न० *[दान]*
लब्धस्याऽन्नाऽऽदेर्ग्लानाऽऽदिभ्यो वितरणे, पण्हा०३ अ० ।
अशनाऽऽदिप्रदाने, आव०४ अ०।
स्वपरानुग्रहार्थमर्थिने दीयत इति दानम्। सूय०१ श्रु०११ अ०। उत्त०। कल्प०।
याचकाभीप्सितार्थे धने, कल्प०५ क्षण०। उत्त०।
'दानेन महाभोगो, दैहिनां सुरगतिश्च शीलेन भावनया च विमुक्तिस्तपसा सर्वाणि सिद्ध्यन्ति'। सूत्र० १ श्रु०१२ अ०।
दाणंतराय- न० *[दानान्तराय]*
दीयते इति दानं, तद्विषयमन्तरायं दानान्तरायम्। प्रथमायामन्तरायस्योत्तरप्रकृतौ यदुदयवशात् सति विभवेऽपि समागते च गुणवति पात्रे दत्वाऽस्मै बहुफलमिति जानन्नपि दातुं नोत्सहते, तद्दानान्तरायम्। तस्मिन्। सम०
दाणग्गहण- न० *[दानग्रहण]*
प्रदानाऽऽदानयोः, निसि०५ उ०।
दाणट्ठ- न० *[दानार्थ]*
दानमर्थो यस्य तद्दानार्थम्। दाननिमित्ते, प्रश्न ०५ अ०। सूय०।
दाणव- पुं० *[दानव]*
दनोरपत्यम्, नाया०१ श्रु०८ अ०।
भवनपतिविशेषे, व्यन्तरभेदे, नाया०१ श्रु०८ अ०।
असुरे, अणुओ०। ठा०। उत्त०। आव०म०।
दाणविंद- पुं० *[दानवेन्द्र]*
चमराऽऽदौ, आव०म०१ अ०१ ।
दाणविप्पणास- पुं० *[दानविप्रनाश]*
दत्तापलापे, पण्हा०३ संव०द्वार।
दाणसूर- पुं० *[दानशूर]*
तृतीये शूरभेदे, दान शूरो वैश्रवण उत्तराशालोकपालः तीर्थकराऽऽदिजन्मपारणकाऽऽदिरत्नवृष्टिपातनाऽऽदिनेति। उक्तं च– 'वेसमणवयणसंचोइया उ ते तिरियजंभगा देवा। कोडिग्गसो हिरण्णं, रयणायि य तत्थ उवणेंति'। ठा० ४ ठा० ३ उ०। संथा०
दाणामा- स्त्री० *[दानमयी]*
प्रव्रज्यायाम्, 'दाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए।भग०३श०२उ०
दाणिं- अव्य० *[इदानीम्]*
सम्प्रतीत्यर्थे, भग०३ श०२ उ०। सूय०।
वाक्यालङ्कारे, बुह०१ उ०।
दाणुवएस- पुं० *[दानोपदेश]*
अन्नाऽऽहारप्रदानोपदेशे, आव०६ अ०।
दाथालय- न० *[उदकस्थालक]*
उदकार्द्रस्थालके, भग०१५ श०।

दाम-१ न० *[दामन्]*
स्रजि, नाया०१ श्रु०१ अ० ।
मालायाम्, भग० ११श० ११उ० । कल्प० । पन्न० । उव० । आव०क० । ठा० ।
रज्जौ, पण्हा०३ अ० ।

दाम-२ स्त्री० *[दामन्]*
दामा । मनःशिलाकस्य वेलन्धरनागराजस्याऽऽवासपर्वते, ठा०४ ठा०२ उ० ।

दाम-३ न० *[दामन्]*
पाशकविशेषे, विपा० १ श्रु०३ अ० ।

दामग- न० *[दामक]*
रज्जुमयपादसंयमने, पण्हा०३ अ० ।

दामड्ढि- पुं० *[दामास्थि]*
शक्रस्य देवेन्द्रस्य देवराज्ञः स्वनामख्याते वृषभानीकाधिपतौ, ठा०५ ठा०१ उ० ।

दामणी- स्त्री० *[दामनी]*
गवादीनां बन्धनविशेषभूतायां रज्जौ, भग०१६श०६ उ० । जंबू० ।
दामन्याकारे स्त्रीणां सुलक्षणविशेषे च । जंबू०२ वक्ष० ।

दामण्णग- पुं० *[दामन्नक]*
राजगृहनगरवास्तव्यस्य मणिकारश्रेष्ठिनः स्वनामख्याते पुत्रे, आव०६ अ० । आव०चू० ।

दामदुग- न० *[दामद्विक]*
मालाद्वये, भग०१६ श०६ उ० । ठा० ।

दामलिवि- स्त्री० *[दामलिपि]*
ब्राह्म्या लिपेः सप्तदशे भेदे, सम०१८ सम० ।

दामिली- स्त्री० *[द्राविडी]*
द्रविडदेशोद्भवायां तद्भाषानिबद्धायां मन्त्रविशेषरूपायां विद्यायाम्, सूय०२ श्रु०२ अ० ।

दाय- पुं० *[दाय]*
पर्वदिवसाऽऽदौ दाने, नाया०१ श्रु०२ अ० । कल्प० ।
सामान्यदाने च । न० । उव० । नाया० । भग० ।

दायग-पुं० *[दायक]*
दातरि, आचा०२ श्रु० १ चू० १ अ० ७ उ० ।पण्हा०

दायगदोस- पुं० *[दायकदोष]*
ग्रहणैषणायाः षष्ठे दोषे, पिंड० ।

दायगसुद्ध- त्रि० *[दायकशुद्ध]*
दायकः शुद्धो यत्राऽऽशंसाऽऽदिदोषरहितत्वात् । दायकदोषरहिते, भग० १५ श० ।
दायकशुद्धं तु यत्र दाता औदार्याऽऽदिगुणान्वितः । विपा० २ श्रु० १ अ० ।

दायण- न० *[दापन]*
यथा गृहीतभक्तपानयोर्निवेदने, पण्हा० १ अ० ।

दायणा- स्त्री० *[दापना]*
पृच्छाप्रतिपृष्टस्यार्थस्य व्याख्याने,विशे० ।आव०म० । आव०चू०

दायव्व-त्रि० *[दातव्य]*
दातुं योग्ये, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०२उ०

दायाद- पुं० *[दायाद]*
पितृपिण्डोदकदानयोग्ये, आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

दायार- पुं० *[दायार]*
दायाय दानार्थम्रियति आगच्छन्तीति दायाराः याचके, कल्प० १ अधि०५ क्षण० ।

दार-१ पुं० *[दार]*
दारयन्ति विदारयन्ति पुरुषस्यान्तरङ्गगुणानिति दाराः । आतु० ।
कलत्रे, आव०चू० । आव० ।
स्त्रियाम्, उत्त०२१ अ० ।

दार-२ न० *[द्वार]*
प्रासादभवनदेवकुलाऽऽदीनां (रा०)
प्रवेशमुखे, । विशे० । भग० । दश० । पन्न० । निसि० । रा० । अणुओ० ।

दारग- पुं० *[दारक]*
बालके, वव०२ उ० । दश० । रा० । आव०क० । सूय० । नाया० । आव०म० ।
डिम्भदारककुमारकाणामल्पबहुबहुतरकालकृतौ विशेषः ।नाया० १ श्रु०२ अ० ।
बालिकायाम्, आव०म० । पण्हा० । अंत० । आचा० ।

दारजक्खिणी- स्त्री० *[द्वारयक्षिणी]*
द्वारस्थायां यक्षिण्याम्, आव० ४ अ० ।

दारट्ठ- पुं० *[द्वारस्थ]*
द्वारपाले, बुह०१ उ० ।

दारपिंड- पुं० *[द्वारपिण्ड]*
द्वारशाखायाम्, जंबू०१ वक्ष० । जीवा० ।

दारपिहाण- न० *[द्वारपिधान]*
द्वारकपारस्थगने । सूय०१ श्रु० २ अ० ३ उ० ।

दारवाल- पुं० *[द्वारपाल]*
द्वाररक्षके, आव०म० १ अ० ।

दारावती- स्त्री० *[द्वारावती]*
सौराष्ट्रदेशप्रतिबद्धायां राजधान्याम्, पन्न०१ पद ।

दारु- न० *[दारु]*
काष्ठे, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० । ठा० । नाया० । निसि० ।

दारुग-१ पुं० *[दारुक]*
वासुदेवस्य धारिण्यां देव्यामुत्पन्ने पुत्रे, स अरिष्टनेमेरन्तिके प्रव्रज्य सिद्ध इत्यन्तकृद्दशानां सूचितम्। अंत० ३ वर्ग० १२ अ०।

दारुग-२ पुं० *[दारुक]*
दारुकोऽनगारो वासुदेवस्य पुत्रो भगवतोऽरिष्टनेमिनाथस्य शिष्योऽनुत्तरोपपातिकोक्तचरित इति। ठा०९ ठा०।

दारुग-३ पुं० *[दारुक]*
कृष्णसारथौ च। नाया०१ श्रु०१६ अ०।

दारुग-४ पुं० *[दारुक]*
काष्ठे न० आचा०२श्रु०२ चू०३ अ०। आव०म०। आव०। उत्त०।

दारुघर- न० *[दारुगृह]*
करपत्रस्फाटितदारुफलकमये गृहे, वव० ४ उ०।

दारुण- पुं० *[दारुण]*
दारयन्ति जनमनांसि इति दारुणाः। विलपिताऽऽक्रन्दिताऽऽदिषु, उत्त०९ अ०।
रौद्रे च। नाया०१ श्रु०२ अ०। पण्हा०।
दारयन्ति मन्दसत्त्वानां संयमविषयां धृतिमिमि दारुणाः। भाषायाम्, स्त्री०। उत्त०२ अ०।
भयानके, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०।
असह्ये, आचा०१ श्रु०४ अ०४ उ०।

दारुणभाव- पुं० *[दारुणभाव]*
रौद्राध्यवसाये, बुह०३ उ०।

दारुणमति- स्त्री० *[दारुणमति]*
रौद्रमतौ, पण्हा०१ अ०।

दारुणसहाव- त्रि० *[दारुणस्वभाव]*
दारुणः क्रोधान्वितः स्वभावो यस्याऽसौ दारुणस्वभावः। क्रोधान्वितस्वभावे, वव० १ उ०।

दारूदंडय- न० *[दारुदण्डक]*
रजोहरणस्य काष्ठमयेऽल्पदण्डे, यत्र दारुमयस्य दण्डस्याग्रभागे ऊर्णिका दशिका वध्यन्ते तद्दारुदण्डकम्। बुह०५ उ०।

दारुपव्वय- पुं० *[दारुपर्वत]*
दारुनिर्मापित इव पर्वतविशेषे, जीवा०३ प्रति०४ उ०। रा०।

दारुपाय- न० *[दारुपात्र]*
काष्ठमये पात्रे, ठा०३ ठा०३ उ०। आचा०।

दारुय- पुं० *[दारुक]*
वसुदेवस्य धारिण्यां जाते स्वनामख्याते पुत्रे, तद्वक्तव्यता गजसुकुमारस्येव। अंत०२ वर्ग०१ अ०।

दारुसंकम- पुं० *[दारुसंक्रम]*
जले सेत्वादिकरणे, स्थले गर्तालङ्घनाऽऽदिके च। आचा०१ श्रु०५ अ०१ उ०।

दालण- न० *[दारुण]*
विदारणे, पण्हा०१ अ०।

दालि- स्त्री० *[दालि]*
मुद्गाऽऽदिद्विदले, उत्त०। ध०।

दालियंब- न० *[दालिकाम्ल]*
दाल्या मुद्गाऽऽदिमय्या निष्पादितेऽम्ले, उवा०१ अ०।

दालिमरसिय- त्रि० *[दामिमरसिक]*
दामिमरससंसृष्टे, विपा० १ श्रु० ८ अ०।

दाव- पुं० *[दाव]*
दावानले, आव०४ अ०।

दावग्गि- पुं० *[दावाग्नि]*
'दवग्गि' शब्दार्थे, उव०।

दावद्दव- पुं० *[दावद्रव]*
समुद्रतटवृक्षविशेषे, नाया०१ श्रु०१ अ०। सम०। पण्हा०। आव०। आव०चू०।

दावर- न० *[द्वापर]*
यदा प्रत्येकस्यापि प्रथमो भङ्गो न प्राप्यते तदा द्वापर इति। समयपरिभाषया द्वितीये, बुह०१ उ०।

दावरजुम्म- न० *[द्वापरयुग्म]*
द्वाभ्यामादित एव कृतयुग्माद्वोपरिवर्त्तिभ्यां यदपरं युग्मं कृतयुग्मादन्यत्तन्निपातनविधेर्द्वापरयुग्मे, भग०।
'जेणं रासीचउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे अवहीरमाणे दुपज्जवसिए। से तं दावरजुम्मे।' भग० १८ श०४ उ०।
द्विपर्य्यवसिते राशौ च। ठा०४ ठा०३ उ०। सूय०।

दावाणल- पुं० *[दावानल]*
वनहुताशने, आव०४ अ०।

दावारय- न० *[उदकवारक]*
जलपात्रे, भग०१५ श०।

दास- पुं० *[दास]*
गृहदास्याः सञ्जाते, दुर्भिक्षाऽऽदिष्वर्थाऽऽदिना वा क्रीते, ऋणाऽऽदिव्यतिरेके वा अवरुद्धे, गच्छा०१ अधि०।
दासा दासीपुत्राऽऽदयः। ठा०३ ठा०१ उ०।सूय०।जीवा०। बुह०
भृतकविशेषे, नाया०१ श्रु०२ अ०।
चेटके, उव०। पण्हा०। रा०। पंच०भा०। पंच०चू०।
आजन्मावधिकिङ्करः।वव०।

दासचेडग- पुं० *[दासचेटक]*
दासस्य भृतकविशेषस्य चेटकः कुमारकः दासचेटकः। अथवा– दासश्चासौ चेटकश्चेति दासचेटकः।दासकुमारे,नाया०१श्रु०२ अ०

दासत्त- न० *[दासत्व]*
गृहदासीपुत्रतायाम्, भग०१२ श०७ उ०।

दासपोरुस- न० *[दासपौरुष]*
चेटकचेटीपतिप्रमुखाऽऽदिके, उत्त०३ अ०।

दासवाय- पुं० *[दासवाद]*
दासोऽयमाचार्य्य इति वार्त्तायाम्, ठा०६ ठा०।

दासा– पुं० *[दासा]*
दासीपुत्रादयः। ठा०।
गृहदासीपुत्रः। नाया० ।

दासी- स्त्री० *[दासी]*
चेटिकायाम्, पण्हा०२ अ०। उव०। रा०
दास्यो घटयोषितः सर्वापसदाः, ताभिरपि सह सम्पर्क परिह-रेत्। सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०।

दासीखव्वडिया- स्त्री० *[दासीकर्वटिका]*
स्थविराद्गोदासन्निर्गतस्य गोदासगणस्य चतुर्थशाखायाम्, कल्प० ८ क्षण०।

दासीचोर- पुं० *[दासीचौर]*
चेटीचौरे, पण्हा०३ अ०।

दासी- पुं० *[दाह]*
बाह्ये संतापे, आव०म०१ अ०२ ।
भस्मीकरणे, निसि०१ उ०।
रोगभेदे, जीवा०३ प्रति०४ उ०। विपा० नाया०। आव०म०।

दाहवक्कंतिय- त्रि० *[दाहव्युत्क्रान्तिक]*
दाहो व्युत्क्रान्त उत्पन्नो यस्या ऽसौ दाहव्युत्कान्तः, स एव दाहव्युत्क्रान्तिकः। दाहोत्पत्तौ, भग०९ श०३३ उ०। नाया०।

दाहा- स्त्री० *[दाहा]*
प्रहरणविशेषे, नाया०१ श्रु०१८ अ०।

दाहिण- त्रि० *[दक्षिण]*
अवामभागस्थे, सूर०। आचा०।

दाहिणगामुय- पुं० *[दक्षिणगामुक]*
दक्षिणस्यां दिशि गमनशीले, सूय०२ श्रु०२ अ०।

दाहिणड्ढभरह- पुं० *[दक्षिणार्द्धभरत]*
भरतक्षेत्रस्य दक्षिणार्द्धे, कल्प ०१ क्षण०।

दाहिणड्ढभरहकूड- न० *[दक्षिणार्द्धभरतकूट]*
दक्षिणार्द्धभरतनाम्नो देवस्याऽऽवासभूते कूटे, जंबू०१ वक्ष०।

दाहिणड्ढमाणुस्सखेत्त- पुं० *[दक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्र]*
दक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्रभवेषु, 'दाहिणड्ढमाणुस्सखेत्ताणं छावट्ठिं चंदा पभासिंसु वा, पभासंति वा, पभाविस्संति वा, छावट्ठिं सूरिया तविंसु वा, तवंति वा, तविस्संति वा।' सम०६५ सम०।

दाहिणड्ढलोगाहिवई- पुं० *[दक्षिणार्द्धलोकाधिपति]*
लोकस्यार्द्धमर्द्धलोको दक्षिणो योऽर्द्धलोको दक्षिणार्द्धलोकस्तस्य योऽधिपतिः तस्मिन्, उवा०२ अ०। कल्प०।

दाहिणत्त- न० *[दक्षिणत्व]*
सरलत्वे, सम०३५ सम०।

दाहिणदारिय- न० *[दक्षिणद्वारिक]*
दक्षिणं द्वारं येषमस्ति तानि दक्षिणद्वारिकाणि। अश्विन्यादिषु सप्तनक्षत्रेषु, ठा०७ ठा०।
दक्षिणदिशि येषु गच्छतः शुभं भवति। सम०७ सम०।

दाहिणपञ्चच्छिमा- स्त्री० *[दक्षिणपश्चिमा]*
नैर्ऋत्यकोणे, रा०। ठा०

दाहिणभुय- पुं० *[दक्षिणभुज]*
दक्षिणहस्ते, रा०। सूर०।

दाहिणवाय- पुं० *[दक्षिणवात]*
दक्षिणस्याः दिशः समागच्छति वाते पन्न०१ पद। ठा०।

दाहिणा- स्त्री० *[दक्षिणा]*
दक्षिणस्यां दिशि, ठा०६ ठा०।

दाहिणायण- पुं०न० *[दक्षिणायन]*
रवेः कर्कसंक्रमादनन्तरं षण्मासाऽऽत्मके समये, सूर०१० पाहु०।

दाहिणावत्त- पुं० *[दक्षिणाऽऽवर्त]*
अनुकूलप्रवृत्तावावर्ते, ठा०४ ठा०२ उ०।

दाहिणिल्ल- त्रि० *[दाक्षिणात्य]*
दक्षिणदिग्भवमात्रे, ठा०४ ठा०२ उ०। पन्न०।

दिअंबर- पुं० *[दिगम्बर]*
साधुभेदे, आव०म०। आचा०।

दिअंबरदंसण- न० *[दिगम्बरदर्शन]*
दिगम्बराणां शास्त्रे, आव०म०१ अ०१ ।

दिअहुत्त- *[देशी]*
पूर्वाह्णभोजन, दे०ना०५ वर्ग०४० गाथा।

दिइ- स्त्री० *[दृति]*
जलाऽऽधारे चर्ममये भाजने, नाया०१ श्रु०१८ अ०। अणुओ०।

दिइआ- स्त्री० *[दृतिका]*
चर्मनिर्मितोदकपात्रे, मत्स्यभेदे च। अणुओ०

दिक्काण- पुं० *[द्रेष्काण]*
मेषाऽऽदीनां लग्नानां दशंशाऽऽत्मके त्रिलवे, 'कूणदिक्काणलोगेसुं, उत्तमट्ठं तु कारए। एवं लग्गाणि जाणिज्जे, दिक्काणेसु न संसओ'। गणि०।

दिक्खकाल- पुं० *[दीक्षाकाल]*
योगकाले, आव०म०१ अ०।

दिक्खा- स्त्री० *[दीक्षा]*
दक्षिणं दिशा। प्रव्रज्यायाम्, ओह०। ठा०

दिगंबर- पुं० *[दिगम्बर]*
'दिअंबर' शब्दार्थे, आव०म०१ अ०

दिगिंछा- *[देशी]*
बुभुक्षायाम्, आचा०१ श्रु०६ अ०४ उ०। सम०। भग०।

दिगिंछापरिगय- त्रि० *[दिगिञ्छापरिगत]*
क्षुधाव्याप्ते, उत्त०२ अ०। आव०चू०।

दिगिंछापरिसह- पुं० *[दिगिञ्छापरिषह]*
इह च दिगिञ्छेति देशीवचनेन बुभुक्षोच्यते, सैवात्यन्तव्याकुलत्व हेतुरप्यसंयमभीरुतया आहारपरिपाकाऽऽदिवाञ्छाविनिवर्त्तनेन परीति सर्वप्रकारेण सह्यत इति परिषहः। क्षुत्परीषहे, उत्त० २ अ०। भग०। सम०।

दिगिंछापरीसह- पुं० *[दिगिञ्छापरीषह]*
'दिगिंछापरिसह' शब्दार्थे, उत्त०२ अ०।

दिगु- पुं० *[द्विगु]*
संख्यापूर्वे समासभेदे, पाणिनिवचनम्। अणुओ०।

दिग्घ- पुं० *[दीर्घ]*
स्थूले च। त्रि०। जंबू० २ वक्ष०।

दिच्छा- स्त्री० *[दित्सा]*
दातुमिच्छायाम्, अणुओ०।

दिट्ठ- न० *[दृष्ट]*
दर्शने, बुह०१ उ०। निसि०। ठा०।
अवलोकिते। पन्न० ।पण्हा० ।आव० ।ठा०। सूय०। वव०। उत्त०
अभिमते, अणुओ०।

दिट्ठंत- पुं० *[दृष्टान्त]*
दृष्टमर्थमन्तं नयतीति दृष्टान्तः अतीन्द्रियप्रमाणदृष्टं संवेदनं निष्ठां नयतीत्यर्थः। दश०१ अ०। आव०म०।
दृष्टोऽन्तः परिच्छेदो विवक्षितः साध्यसाधनयोः संबन्धस्याविनाभावरूपस्य प्रमाणेन यत्र ते दृष्टान्ताः। पन्न० ३० पद०।
साध्यस्योपमाभूते, नं०। उदाहरणे, विशे०।

दिट्ठंतपरिणाम- पुं० *[दृष्टान्तपरिणाम]*
दृष्टान्तेन श्रद्धापयितव्ये, वव०

दिट्ठंतिय- त्रि० *[दार्ष्टान्तिक]*
प्रथमेऽभिनयभेदे, ठा०४ ठा०४ उ०। रा०। आव०म०।

दिट्ठत्थ- पुं० *[दृष्टार्थ]*
दृष्ट उपलब्धोऽर्थः छेदश्रुताभिधेयरूपो येन स दृष्टार्थः। गीतार्थे, बुह० १ उ०।

दिट्ठदोसपतिता- स्त्री० *[दृष्टदोषपतिता]*
दृष्टः दोषश्चैर्य्याऽऽदिर्यस्याः सा तथा। सा चासौ पतिता च दृष्टदोषपतिता। जात्यादिबहिस्कृतायाम्, अंत०३० वर्ग०८ अ०।

दिट्ठधम्म- पुं० *[दृष्टधर्म]*
दृष्टोऽवगतो यथावस्थितो धर्मः श्रुतचारित्राऽऽख्यो येन स तथा। अवगतधर्मे, सूय० १ श्रु०१३ अ०।

दिट्ठपह- पुं० *[दृष्टपथ]*
दृष्टो ज्ञानाऽऽदिको मोक्षस्य पन्था येन स दृष्टपथः। दृष्टमोक्षमार्गे, आचा०१ श्रु०२ अ०६ उ०।

दिट्ठपाठी- पुं० *[दृष्टपाठी]*
दृष्टः पाठो येन स दृष्टपाठी। अधीतवैद्यके, निसि० ४ उ०।

दिट्ठफल- पुं० *[दृष्टफल]*
दृष्टमेव प्रत्यक्षं फलं पूजाऽऽदिकं फलमर्थः प्रयोजनं यस्याऽसौ दृष्टफलः। अपरोक्षफले, विशे०।

दिट्ठभय- पुं० *[दृष्टभय]*
दृष्ट संसाराद्भयं सप्तप्रकार वा येन स तथा अवगतसप्तप्रकारभये, आचा० १ श्रु०३ अ०२ उ०।

दिट्ठमदिट्ठ- न० *[दृष्टादृष्ट]*
वन्दनकभेदे, 'अंतरितो तमसे वा, न वंदती वंदती उ दीसंतो।' बहुषु वन्दमानेषु साध्वादिना केनचिदन्तस्तमसि वा सान्धकारप्रदेशे व्यवस्थितो मौनं विधायोपविश्य चाऽऽस्ते, न तु वन्दते, दृश्यमानस्तु वन्दते। एतद् दृष्टा दृष्टं वन्दनकम्। बुह० ३ उ०। आव०। आव०चू०।

दिट्ठलाभिय- पुं० *[दृष्टलाभिक]*
दृष्टस्यैवं भक्ताऽऽदेर्लाभः प्रदृष्टस्यापवरफाऽऽदिमध्यान्निर्गतस्य श्रोत्राऽऽदिभिः कृतापयोगस्य भक्ताऽऽदिर्लाभस्तेन चरन्ति ये ते दृष्टलाभिकाः। भिक्षाभिग्रहविशेषयुक्ते, सूय०२ श्रु०२ अ०। आव०चू०। ठा०। उव०।

दिट्ठसार- पुं० *[दृष्टसार]*
उपलब्धतत्त्वे, वव० १० उ०।

दिट्ठसाहम्म- न० *[दृष्टसाधर्म्य]*
दृष्टं न पूर्वोपलब्धेनार्थेन सह साधर्म्यम्। सामान्यतो दृष्टानुमाने, अणुओ०।

दिट्ठाभट्ठ- त्रि० *[दृष्टाभाषित]*
कृतदर्शनाऽऽलापे, भग०३ श०१ उ०।

दिट्ठि- स्त्री० *[दृष्टि]*
दर्शनं दृष्टिः। विशे०।
चक्षुर्द्वारोत्पन्नदर्शने, अणुओ०। ठा०। सूय०। विशे०। आचा०। आतु०। नं०।
समुद्भूतपदार्थगते सम्यग्दर्शने, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ०।
तद्वति, भग०६ श०४ उ०।
धर्मप्रज्ञापनायाम्, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ०।
जिनप्रणीतवस्तुतत्त्वप्रतिपत्तौ, पन्न०३४पद ।जीवा० ।सूय०। ठा०
दृष्टिः दर्शनं, रुचिः तत्त्वानि प्रति। ठा०।
दृष्टिः-दर्शनं स्वतत्त्वमिति। रा०।
दृष्टिः-सम्यग्दर्शनात्मका हेतुभूताबुद्धिः। उत्त०।

दिट्ठिकीब- पुं० *[दृष्टिक्लीब]*
यश्चिलिमिलिकान्तर्गतः सर्वतः सर्वं करोति तादृशे क्लीबे, 'दिट्ठिकीबो सव्वं चिलिमिलियंतरितो करेति।' निसि०४ उ०।

दिट्ठिजुद्ध- न० *[दृष्टियुद्ध]*
योधप्रतियोधयोश्चक्षुषोर्निर्निमेषावस्थाने, जंबू० २ वक्ष०।

दिट्ठिणिव्वत्ति- स्त्री० *[दृष्टिनिर्वृत्ति]*
निर्वृत्तिर्निष्पत्तिः, दृष्टेनिर्वृत्तिः दृष्टिनिर्वृत्तिः। दृष्टिनिष्पत्तौ भग०।

दिट्ठिदंड- पुं० *[दृष्टिदण्ड]*
क्रियास्थानभेदे, आव०।

दिट्ठिपरिचित– पुं० *[दृष्टिपरिचित]*
जो एसणा विधिं जाणति सो दिट्ठि परिचितो भणति, अहवा सावगो गहियाणुव्वओ, अवती वा सम्मदिट्ठी दिट्ठी परिचितो भण्णति। निसि०।

दिट्ठिम- पुं० *[दृष्टिमत्]*
दर्शनं दृष्टि सदनुष्ठानं वा यस्यासौ दृष्टिमान् । आचा० १ श्रु० ६ अ० ५ उ० ।
यथावस्थितान् पदार्थान् श्रद्दधाने सूय०१ श्रु०१४ अ०।
सम्यग् दर्शनिनि, सूय०१ श्रु० ४ अ०१उ

दिट्ठिया- स्त्री० *[दृष्टिका]*
दृष्टेर्जाता दृष्टिजा। अथवा दृष्टं दर्शनं वस्तु वा निमित्ततया यस्यामस्ति सा दृष्टिका। दर्शनार्थं या गतिक्रिया, दर्शनाद्धा यत्कर्मेति सा दृष्टिजा, दृष्टिका वा। ठा० २ ठा०१ उ०। आव०।

दिट्ठिराग- न० *[दृष्टिराग]*
दिट्ठिरागो असियमियं किरियाणं अकिरियवादीणमाह–'चुलसी णियसत्तट्ठी, वेणइआणं च बत्तीसं।' स्वकीयायां स्वकीयायां दृष्टौ रक्ता ह्येते, यतो 'जिणवयणबाहिरमती, मूढा णियदंसणा-णुरागेण। सव्वण्णू कहितमेते, मोक्खपहं न तु पविज्जंति'। स्वकीयायां स्वकीयायां दृष्टौ रक्ते, आव०चू०१ अ०।

दिट्ठिवाय- पुं० *[दृष्टिपात]*
दृष्टयो दर्शनानि नया वा उच्यन्ते अभिधीयन्ते पतन्ति वा अवतरन्ति यत्रासौ दृष्टिवादो, दृष्टिपातो वा प्रवचनपुरुषस्य द्वादशेऽङ्गे, ठा०४ ठा०१ उ०।
दृष्टिवादः। आव०।

दिट्ठिवायअक्खेवणी- स्त्री० *[दृष्टिवादाऽऽक्षेपणी]*
दिष्टिवादस्य कथा-भेदे, ठा०४ ठा०।

दिट्ठिविपरियासदंड- पुं० *[दृष्टिविपर्यासदण्ड]*
दृष्टेर्विपर्यासो रज्जुमिव सर्पबुद्धिस्तया दण्डो दृष्टिविपर्यासदण्डः। लेष्टुकाऽऽदिबुद्ध्या शराऽऽद्यभिघातेन चटकाऽऽदिव्यापादाने, सूय० २ श्रु० २ अ०।
स्त्रीदर्शनानुरागतस्तदावलोकनं दृष्टिविपर्यासः। आव०।

दिट्ठिविस- पुं० *[दृष्टिविष]*
दृष्टौ विषं येषां ते दृष्टिविषाः। दर्वीकर-सर्पभेदे, जीवा०१ प्रति०। पन्न०। ठा०।
दृष्टिविषः-नेत्रविषः, उरःपरिसर्पविशेषः। जीवा०

दिट्ठिविसभावणा- स्त्री० *[दृष्टिविषभावना]*
अङ्गबाह्यकालिकश्रुतविशेषे। वव०।

दिट्ठिसंचाल- पुं० *[दृष्टिसंचार]*
निमेषाऽऽदौ, आव०।

दिट्ठिसंपण्ण- पुं० *[दृष्टिसंपन्न]*
सम्यग्दृष्टियुक्ते, आव०। ठा०।

दिट्ठिसंपण्णया- स्त्री० *[दृष्टिसंपन्नता]*
सम्यग्दृष्टितायाम्, ठा०१०ठा

दिट्ठिसंबंध- पुं० *[दृष्टिसम्बन्ध]*
संयतीनां दृष्टिरात्मीयया दृष्ट्या संबध्नाति। संयते, वव०७ उ०।

दिट्ठिसार- पुं० *[दृष्टिसार]*
दृष्टिसद्भावे, आव०चू०१ अ०।

दिट्ठिसूल- न० *[दृष्टिशूल]*
नेत्रशूले, नाया०१ श्रु०१३ अ०।

दिट्ठिसेवा- स्त्री० *[दृष्टिसेवा]*
हावभावानुसारेण दृष्टेदृष्टिमीलने, दश

दिट्ठेल्लय- त्रि० *[दृष्ट]*
चक्षुषा उपलब्धे, आव०म०१ अ०२ खण्ड।

दिणकय- पुं० *[दिनकृत]*
सूर्ये, ठा०२ ठा०३ उ०।

दिणकर- पुं० *[दिनकर]*
दिने करः किरणो यस्य वा। सूर्ये, । अणुओ०।
दिनकरणशीले, नाया०१ श्रु०१ अ०। रा०। सूर०। आव०चू०। आव०म०।

दिणकरपण्णत्ति- स्त्री० *[दिनकरप्रज्ञप्ति]*
सूर्यप्रज्ञप्तिनामके ग्रन्थे, ज्यो० २१ पाहु०। ।

दिणक्खय- पुं० *[दिनक्षय]*
एकस्मिन्सावने त्वह्नि, तिथीनां त्रितयं यदा।तदा दिनक्षयः प्रोक्तः इत्युक्ते एकसावनदिनवृत्तिति-थित्रयरूपे काले, ठा०६ ठा०।

दिणवुड्ढि- स्त्री० *[दिनवृद्धि]*
अधिकदिने, अतिरात्रोऽधिकदिनवृद्धिरिति यावत्। ठा०६ ठा०।

दिणरासि- पुं० *[दिनराशि]*
अहोरात्रपुञ्जे, वव०१ उ०।

दिणसूरि- पुं० *[दिनसूरि]*
इन्द्रदत्तसूरिशिष्ये सिंहगिरिसूरिगुरौ स्वनामख्याते सूरौ, गच्छा०४ अधि०।

दिण्ण-१ त्रि० *[दत्त]*
विसृष्टे, त्यक्ते, रक्षिते च। द्वादशपुत्रमध्ये दत्तक पुत्रभेदे। पन्न०२ पद०। उव०। रा०। आचा०। उत्त०।
वितीर्णे, नाया०१ श्रु०८ अ०। पण्हा०। आचा०।
निवेशिते, पण्हा० १ अ०।

दिण्ण-२ त्रि० *[दत्त]*
नमेरेकविंशतिजिनस्य प्रथमभिक्षादायके, सम०। आव०म०।

दिण्ण-३ त्रि० *[दत्त]*
चन्द्रप्रभस्याष्टमजिनस्य प्रथमे शिष्ये, सम०।

दिण्ण-४ त्रि० *[दत्त]*
श्रेयांसस्यैकादशमस्य जिनस्य पूर्वभवे जीवे, सम०।

दिण्ण-५ त्रि० *[दत्त]*
अष्टापदपर्वतस्थे स्वनामख्याते तापसे ।उत्त०१०अ० ।आव० म०
दत्तं भृतिभक्तलक्षणं द्रव्यं भोजनस्वपरूपं वर्तनं मूल्यं येभ्यस्ते तथा। नाया०१ श्रु०८ अ०। पा०। उत्त०।

दिण्ण-६ न० *[दैन्य]*
दीनस्य भावः । शोके च। ठा० १० ठा०। आव०।

दिण्णय- पुं० *[दत्तक]*
स्वनामख्याते पुत्रभेदे, दत्तकः पुत्रतया वितीर्णो, याथ बाहु-बलिनाऽनिलवेगः श्रूयते, स च पुत्रवत्पुत्रः। ठा० १० ठा०।

दिण्णवयण- न० *[दीप्तवचन]*
कुपितवचने, पण्हा० ५ अ०।

दित्त- पुं० *[दीप्त]*
जाज्वल्यमाने, चंद०१ पाहु० ।जंबू० ।भग० ।नं० ।निर० ।नाया०।
उज्ज्वले,। कान्तिमति, रा०।
भास्वरे च। चंद० १९ पाहु०। नाया०।
धातुबलवीर्याऽऽदियुक्ते, । उत्त०३४ अ०।
प्रसिद्धे, भग०२६ श०३ उ०। ठा०।

दित्त- त्रि० *[दृप्त]*
दर्पवति, उव०। दश० भग०। नाया०। पण्हा०। ठा०। जंबू०।

दित्तचित्त- पुं०स्त्री० *[दीप्तचित्त]*
हर्षातिरेकेणापहृतचित्ते, बुह० ३ उ०।

दित्ततव- पुं० *[दीप्ततपस्]*
दीप्तं तपो यस्य स दीप्ततपः। हुताशन इव कर्मवनदाहकत्वेन ज्वलत्तेजस्के तपस्विनि, विपा० १ श्रु०१ अ०। नाया०। ठा०। उव०। निर० । भग०।

दित्तधर- पुं० *[दीप्तधर]*
ज्वलितधारके, ठा० १० ठा०।

दित्तधर- पुं०
दर्पवद्धारके, दर्पवर्धक, ठा०१० ठा०।

दित्ता- स्त्री० *[दीप्ता]*
ज्वलन्त्याम्, उत्त०१९ अ०।

दित्ति- स्त्री० *[दिति]*
दोऽवखण्डने, दैत्यमातरि कश्यपपत्न्याम्, पुनर्वसुनक्षत्राधिष्ठातु-देवतायाम्, ठा० २ ठा० ३ उ०। चंद०।

दित्ति- त्रि० *[दीप्ति]*
कान्तौ, दीपने, नाया० १ श्रु० १० अ०।

दित्तिमं- पुं० *[दीप्तिमत्]*
परवादिनामक्षोभ्ये षड्त्रिंशत् सूरिगुणानां चतुस्त्रिंशत्तमे गुणे, गच्छा०१ अधि०। आचा०।

दित्था- स्त्री० *[दित्सा]*
दातुमिच्छायाम्, सूय०२ श्रु०४ अ०।

दिद्ध- पुं० *[दिग्ध]*
विषाक्तवाणे, वह्नौ च। स्नेहे, लेपने। निसि० १ उ०।

दिप्पंत- त्रि० *[दीप्यमान]*
भासमाने, निसि० १ उ०।
दीप्यमानविमलग्रहगणसमप्रभाः। दीप्यमानो रजन्यां भास्वान्। विमलोऽत्र धूल्याद्यपगमेन ग्रहगणो ग्रहसमूहस्तेन समा प्रभा यासां ताः। जीवा० ३ प्रति० ४ उ०।

दिप्पमाण- त्रि० *[दीप्यमान]*
भासमाने, उव०। कल्प०।
दीप्यमाना शोभा यस्य तम्। कल्प० ३ क्षण०।

दिय- पुं० *[द्विज]*
द्विर्जायते, संस्कृतब्राह्मणे, आचा०। सूय०।
संस्कारापेक्षया द्वितीयजन्मानः उत्त०।

दिय- न० *[दिव]*
दिव- स्वर्ग, दिवसे, वने च। सम० ४३ सम०।

दियपोय- पुं० *[द्विजपोत]*
पक्षिशिशौ, सूय० १ श्रु०१४ अ०।

दियस-१ पुं० *[दिवस]*
सूर्य्य किरणोपलक्षिते पञ्चदशमुहूर्त्ताऽऽत्मके काले, तं०। ज्यो०।

दियस-१ पुं० *[दिवस]*
मासस्य त्रिंशत्तमे भागे, ज्यो० २ पाहु०। ।

दियसबंभयारि- पुं० *[दिवसब्रह्मचारिन्]*
दिवसे ब्रह्मचरतीत्येवंशीलो दिवसब्रह्मचारी। दिवसे मैथुन-त्यागिनि, सम०। आव०चू०।

दिया- अव्य० *[दिवा]*
दिवसे, भग०।

दियाभोयण- न० *[दिवाभोजन]*
दिवसभोजने, निसि० ११ उ०।

दियालोगच्चुय- त्रि० *[देवलोकच्युत]*
ऋषीभूते, देवलोकच्युतैः ऋषीभूतैराभाषितानि देवलोकच्यु-ताऽऽभाषितानि। सम० ४३ सम०।

दिलिवेढय- पुं० *[दिलिवेष्टक]*
ग्राहभेदे, पण्हा० १ अ०।

दिव- न० *[दिव]*
स्वर्गे, सूय०१ श्रु०६ अ०।

दिवड्ढ- त्रि० *[द्व्यर्द्ध]*
द्वितीयमर्द्धं यस्य तद् द्व्यर्द्धम्। सार्द्धे, सूर० १० पाहु०। । चंद०। आव०म०। ज्यो०। सम०।

दिवड्ढ- त्रि० *[द्व्यपार्द्ध]*
द्वितीयमपार्द्धं यत्र तद् ह्यपार्द्धम्। सार्द्धे, ठा० ६ ठा०।

दिवड्ढखेत्त-१ त्रि० *[द्व्यपार्द्धक्षेत्रिक]*
द्व्यार्द्धं क्षेत्रं येषां ते। सार्द्धक्षेत्रिके ठा०६ ठा०।

दिवड्ढखेत्त-२ त्रि० *[द्व्यर्द्धक्षेत्रिक]*
द्व्यर्द्धं क्षेत्रं येषां ते। सार्द्धोपेतक्षेत्रिके, सम० ४५ सम०। ज्यो०। सूर०। चंद०। आव०म०।

दिवस- पुं० *[दिवस]*
दिवसकराप्रभा प्रकाशितनभःखण्डरूपे सूर्यकिरणाऽऽस्पृष्टव्योम खण्डरूपे वा चतुःप्रहराऽऽत्मके समये,। सम०। उव०। पण्हा०।

दिवसतिहि- स्त्री० *[दिवसतिथि]*
तिथेः पूर्वभागे, सूर० १० पाहु०। चंद०।

दिवसभयग- पुं० *[दिवसभृतक]*
भृयते पोष्यते स्मेति भृतः, स एव भृतकः, कर्म्मकर इत्यर्थः। प्रतिदिवसं नियतमूल्येन कर्मकरणार्थं यो गृह्यते सः। प्रतिदिवसं नियतमूल्येन कर्मकरणार्थं गृहीते भृत्ये, ठा० ४ ठा०१ उ०। पंच०चू०। । पंच०भा०।

दिवसुज्जुत्त- त्रि० *[दिवसोद्युक्त]*
प्रतिदिनमुद्यते, पण्हा० ३ आश्र० द्वार।

दिवाकर- पुं० *[दिवाकर]*
सूर्ये, उत्त०११ अ०। रा०। नाया०। उव०।
'उत्तिट्ठंते दिवायरे जलंत इव।' उत्त०११ अ०।

दिवाकरकूड- पुं० *[दिवाकरकूट]*
जम्बूमन्दरदक्षिणे रुचकवरपर्वतस्याष्टमे कूटे, ठा०८ ठा०।

दिवागर- पुं० *[दिवाकर]*
'दिवाकर' शब्दार्थे, उत्त०११ अ०।

दिवागरकूड- पुं० *[दिवाकरकूट]*
'दिवाकरकूड' शब्दार्थे, ठा०८ ठा०।

दिविट्ठ- पुं० *[द्विपृष्ठ]*
द्वितीये वासुदेवे, आव०।

दिव्व-१ त्रि० *[दिव्य]*
दीव्यतेऽनेन । उत्तमे, । सम० १० सम० । उव०।
प्रधाने, रा०। पण्हा०। जीवा०। भग०। उव०। नाया०। ठा० चंद०। सूर०। पन्न०।
विशिष्टे, सम०१० सम०। नं०।

दिव्व-२ त्रि० *[दिव्य]*
स्वर्गगतवस्तुविषये, ठा०३ ठा०३ उ०। आव०क०। भग०। सुर

दिव्व-३ त्रि० *[दिव्य]*
निर्मिते, आव०म०१ अ०। ठा०। आव०क०।

दिव्व-४ त्रि० *[दिव्य]*
देवोचिते उव०। कल्प०।
देवरमणे, रा०।
दैवजन्ये, द्यौः स्वर्गस्तद्वासी देवोऽप्युपचाराद् द्योः, तत्र भवो दिव्यः। वैमानिकाऽऽदिदेवसम्बन्धिनि, ठा० ४ ठा० ३ उ०।
'दिव्वं ठाणं मणनिव्वुकरं।' नाया० १ श्रु०९ अ०।
'दिव्वजुयलपरिहिओ।' उत्त०२२ अ०।

दिव्व-५ त्रि० *[दिव्य]*
व्यन्तराट्टहासाऽऽदिविषये पापश्रुतभेदे, । व्यन्तराऽऽदिकृते उप-सर्गे, आव०५अ०। विशे०। उत्त०। कल्प०। सूय०। आव०चू०।

दिव्वग- त्रि० *[दिव्यक]*
व्यन्तराऽऽदिना हास्यप्रद्वेषाऽऽदिजनिते उपसर्गभेदे, सूय० १ श्रु० २ अ० २ उ०।

दिव्वजाग- पुं० *[दिव्ययाग]*
जिनपूजायाम्, कल्प० ५ क्षण०।

दिव्वतुडिय- न० *[दिव्यत्रुटित]*
वेणुवीणामृदङ्गाऽऽद्यातोद्येषु, रा०।

दिव्वतुरिय- न० *[दिव्यतूर्य]*
वाद्यभेदे, रा०।

दिव्वदेवजुति- स्त्री० *[दिव्यदेवद्युति]*
विशिष्टायां शराऽऽरणाऽऽदि-दीप्तौ, सम० १० सम०। ठा०।

दिव्वदेवड्ढि- स्त्री० *[दिव्यदेवर्द्धि]*
प्रधानपरिवाराऽऽदिरूपायां देवर्द्धौ, सम०१० सम०। ठा०।

दिव्वदेवाणुभाव- त्रि० *[दिव्यदेवानुभाव]*
उत्तमवैक्रियकरणाऽऽदिप्रभावे, सम० १० सम०। ठा०।

दिव्वाइं– न० *[दिव्यानि]*
अतिप्रधानाः। जंबू० ६३।

दिव्वाग- पुं० *[दिव्याक]*
मकुलिसर्पभेदे, पन्न० १ पद।

दिव्वायपत्त- स्त्री० *[दिव्याऽऽतपत्र]*
शोभने आतपत्रे, रा०।

दिसा- स्त्री० *[दिक्]*
दिशतीति दिक्। आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ०।
दिश्यते व्यपदिश्यते पूर्वाऽऽदितया वस्त्वनयेति दिक्। ठा०३ ठा०३ उ०।

दिसाकुमार- पुं० *[दिक्कुमार]*
भूषणनियुक्तगजरूपचिह्नधरे भवनवासिदेवभेदे, पन्न० २ पद। सम०। भग०। ठा०। उव०।
वैश्रमणस्याज्ञोपपातवचननिर्देश-वर्तिनो देवाः। भग०।
भवनपतिभेदविशेषः। पन्न०

दिसाकुमारावासा- पुं० *[दिक्कुमाराऽऽवास]*
दिक्कुमाराणां भवनाऽऽवासे, 'छावत्तरिं दिसाकुमाराणं वाससय-सहस्सा पण्णत्ता। सम० ७५ सम०।

दिसाकुमारिया- स्त्री० *[दिक्कुमारिका]*
दिक्कुमारभवनपतिदेवविशेषजातीयादेवीषु, आव०म०१ अ०। आव०चू०।
वैश्रमणस्याज्ञोपपातवचननि-र्देशवर्तिन्यो देव्यः। भग०।

दिसाचक्कवाल- न० *[दिक्चक्रवाल]*
दिङ्मण्डले, तपोविशेषे च। एकत्र पारणके पूर्वस्यां दिशि यानि फलाऽऽदीनि तानाहृत्य भुङ्क्ते, द्वितीये तु दक्षिणस्यामित्येवं दिक् चक्रवालेन तत्र तपःकर्म्मणि पारणकरणं तत्तपःकर्म दिक् चक्रवालमुच्यते। निर० १ वर्ग०३ अ०। भग०।

दिसाचर- पुं० *[दिक्चर]*
भगवच्छिष्येषु देशाटेषु, पार्श्वापतीयेष्विति चूर्णिकारः। दिशायां चरन्ति यन्ति मन्यन्ते भगवतो वयं शिष्या इति दिक्चराः, देशाटा वा दिक्चरा भगवच्छिष्याः पार्श्वस्थीभूता।भग०१५ श० दिशं-मेरां चरन्ति-यान्ति मन्यन्ते भगवतो वयं शिष्या इति दिक् चराः देशाटा वा। भग०।

दिसाजत्तिय- स्त्री० *[दिग्यात्रा]*
देशान्तरगमने, उवा०१ अ०।

दिसाडाह- पुं० *[दिग्दाह]*
अन्यतमस्यां दिशि अधोऽन्धकारे उपरि च प्रकाशाऽऽत्मके दह्य-मानमाहनगरप्रकाशकल्पे, भग० ३श० ७उ०। जीवा०। निसि०। आव०चू०। अणुओ०। वव०। ठा०।
दिग्दाहो वायव्यादिषु मण्डलेषु भवन् शस्त्राग्नि क्षुत्पीडाविधायी भवति। सूय० २ श्रु० २ अ०।

दिसाणुवाय- पुं० *[दिगनुपात]*
दिगनुसरणे, पन्न०३ पद०।

दिसादाह- पुं० *[दिग्दाह]*
'दिसाडाह' शब्दार्थे, भग०३ श०७ उ०।
दिशो दिशि वा दाहो दिग्दाहः। जीवा०।

दिसादि- पुं० *[दिगादि]*
मेरुमध्यवर्तिनि रुचके, मेरो च। दिशामादिर्दिगादिः। तथाहि– रुचकाऽऽदिदिशां विदिशां च पभवां रुचकश्चाष्टप्रदेशाऽऽत्मको मेरुमध्यवर्ती, ततो मेरुरपि दिगादिरुच्यते। सूर०५पाहु०। चंद०

दिसापोक्खि- पुं० *[दिक्प्रोक्षिण्]*
उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फलपुष्पाऽऽदि समुच्चवन्ति तादृशेषु तपस्विवानप्रस्थेषु, उव०। निर० । भग०। आव०चू०।
उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फलपुष्पादि समुपचिन्वन्ति। भग० ।

दिसावाल- पुं० *[दिक्पाल]*
दिशामधीश्वरेषु, आव०म०।

दिसामूढ- पुं० *[दिङ्मूढ]*
पूर्वस्यामपि पश्चिमा इत्याकारकज्ञानवति, निसि० १९ उ०।

दिसामोह- पुं० *[दिङ्मोह]*
पूर्वस्यामपि पश्चिमा इत्याकारके ज्ञाने, निसि०।

दिसावलोअ- पुं० *[दिगवलोक]*
दिग्दर्शने, 'सागरयिसरंक्खणट्ठा उड्डमहो तिरियं च दिसावलोगो कायव्वो। निसि०४ उ०।'

दिसासोवत्थिय- पुं० *[दिक्स्वस्तिक]*
जम्बूद्वीपे मेरुपूर्वे रुचकपर्वत-स्याष्टमे कूटे, ठा०८ ठा०।

दिक्सौवस्तिक- पुं०
दिक्प्रोक्षके, दक्षिणाऽऽवर्ते स्वस्तिके च। जीवा० ३ प्रति०४ उ०। उव०। जंबू०।
दिक्प्रधानः स्वस्तिको दिक्स्वस्तिको दक्षिणावर्त्तः पण्हा०

दिसासोवत्थियासण-न० *[दिक्सौवस्तिकाऽऽसन]*
येषामधोभागे दिक्खस्वस्तिका अलिखिताः सन्ति तेष्वासन-विशेषेषु, जीवा० ३ प्रति०४ उ०। जंबू०।

दिसाहत्थिकूड- पुं० *[दिग्घस्तिकूट]*
दिक्षु हस्त्याकारेषु कूटेषु, जंबू०।

दिसिव्वय- न० *[दिग्व्रत]*
प्रथम गुणव्रतभेदे, आव०६ अ०।

दिसिविभाय- पुं० *[दिग्विभाग]*
ईशानाऽऽदिषु कोणेषु, सूर०१ पाहु०। । रा०।

दिस्स- अव्य० *[दृश्य]*
उत्प्रेक्ष्यत्यर्थे, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ०।

दिस्समाण- त्रि० *[दिश्यमान]*
उपदिश्माने, आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ०।

दिस्समाण- त्रि० *[दृश्यमान]*
चक्षुषा उपलभ्यमाने, आव०५ अ०। आचा०।

दिस्सा- अव्य० *[दृष्टा]*
उत्प्रेक्ष्यत्यर्थे, भग०१८ श०८ उ०।

दीण- त्रि० *[दीन]*
दैन्यवति, विपा० १ श्रु०२ अ०।
करुणाऽऽस्पदे, सूय०१ श्रु०१० अ०।
दुःस्थे, नाया०१ श्रु०१ अ०। सूय०। प्रश्न अनुत्त०।
श्रृगालत्वविहारिणि, आचा०१ श्रु०६ अ०।

दीणजाइ- त्रि० *[दिनजाति]*
दीना वा हीना जातिरस्येति दीनजातिः हीनजातौ, ठा०४ ठा०२ उ०।

दीणदिट्ठि- न० *[दीनदृष्टि]*
विच्छायचक्षुषि, ठा०४ ठा०२ उ०।

दीणपण्ण- पुं० *[दीनप्रज्ञ]*
दीनसूक्ष्मार्थाऽऽलोचने, ठा०४ ठा०२उ

दीणपरक्कम- पुं० *[दीनपराक्रम]*
हीनपुरुषकारे, ठा०४ ठा०२ उ०।

दीणपरिणय- पुं० *[दीनपरिणत]*
अदीनः सन् दीनतया परिणतो यस्तमिन्, ठा०४ ठा०२ उ०।

दीणपरियाय- पुं० *[दीनपर्य्याय]*
दीनस्येव पर्य्यायोऽवस्था प्रव्रज्या-ऽऽदिलक्षणो यस्य तस्मिन्, ठा०४ ठा०२ उ०।

दीणपरिवाल- पुं० *[दीनपरिवार]*
दीनः परिवारो यस्य तस्मिन्, ठा०४ ठा०२ उ०।

दीणभावया- स्त्री० *[दीनभावता]*
प्रत्यनीकापमानाऽऽदौ दैन्ये, दीनो भावो मानसाध्यवसायो यस्यासौ दीनभावो, दीनभावस्य भावो दीनभावता। आतु०।

दीणभासि- पुं० *[दीनभाषिण्]*
दीनवद् भाषणशीले, दीनवद्दीनं वा भावते। ठा०४ ठा०२ उ०।

दीणमण- पुं० *[दीनमनस्]*
स्वभावत एवानुद्धचेतसि, ठा०४ ठा० २ उ०।

दीणया- अव्य० *[दीनता]*
दैन्ये, ठा०४ ठा०२ उ०।

दीणववहार- पुं० *[दीनव्यवहार]*
दीनान्योदानप्रतिदानाऽऽदिक्रिये, हीनविवादे च।ठा०४ठा०२उ०

दीणवित्ति- पुं० *[दीनवृत्ति]*
दीनस्येव वृत्तिर्वर्तनं जीविका यस्य तस्मिन्, ठा०४ ठा०२ उ०।

दीणविमण- त्रि० *[दीनविमनस्]*
दीनो दैन्यवान् विमनाः शून्यचित्तः दीनश्चासौ विमनाश्वदनवि-मनाः। दैन्यवच्छून्याचित्ते, विपा० १ श्रु०२ अ०।

दीणविमणवयण- त्रि० *[दीनविमनोवदन]*
दीनस्येव विमनस इव वदनं यस्य तस्मिन्, भग०९ श०३३ उ०। विपा० ।

दीणसंकप्प- त्रि० *[दीनसंकल्प]*
उत्तमचित्तस्वाभाव्येऽपि कथञ्चिद्दी-नविमर्शे, ठा०४ ठा०२ उ०।

दीणसीलसमायार- पुं० *[दीनशीलसमाचार]*
दीनधर्म्मानुष्ठाने, ठा० ४ ठा०२ उ०।

दीणसेवि- पुं० *[दीनसेविन्]*
दीनं नायकं सेवते यतस्तस्मिन्, ठा० ४ ठा०२ उ०।

दीणार- पुं०न० *[दीनार]*
स्वर्णभूषणे, मुद्रायां, सुवर्णकर्षद्वये, निष्कमाने, आचा०। आव०। उव०। निसि०। आव०म०।

दीणारमालिया- स्त्री० *[दीनारमालिका]*
दीनाराऽऽकृतिमालायाम्, उव०।

दीणोभासी- पुं० *[दीनावभासिन्]*
दीनवदवभासते प्रतिभाति, अवभाषते वा याचत इत्येवंशीले, ठा०४ ठा०२ उ०।

दीप्प- त्रि० *[दीप्र]*
भास्वरे, ठा०४ ठा०।

दीव-१ पुं० *[दीप]*
प्रदीपे, निसि०। दश०।
प्रकाशके वस्तुनि, स्था० १० ठा०।
दीपशिखायाम्, सम०१० सम०।
दीपनक्रियाविकल्पे च। विशे०।
त्रिविधा दीपाः–अवलम्बनदीपाः, श्रृङ्खलाबद्धा इत्यर्थः। उत्क-म्पनदीपा ऊर्द्धदण्डवन्तः।पञ्जरदीपा अभ्रपटलाऽऽदिपञ्जरयुक्ताः त्रयोऽऽप्येते त्रिविधाः सुवर्णरूप्यतदुभयत्वादिति।नाया० १श्रु० १

दीव-२पुं० *[दीप]*
दीपयति प्रकाशयतीति दीपः। भावतः श्रुतज्ञानलाभे, सूय०१ श्रु०९ अ०।
दीपाद्दीपशतं प्रदीप्यते ज्वलति, सोऽपि प्रदीप्यते, दीपो न पुनरन्यान्यदीपोत्पत्तावपि क्षीयते। उत्त० १ अ०।

दीव-३ न० *[द्वीप]*
द्विर्गता आपोऽत्र। द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां स्थानदातृत्वाहाराऽऽ द्युपष्टम्भहेतुलक्षणाभ्यां प्राणिनः पान्तीहज द्वीपाः। जन्त्वावास-भूतविशेषे क्षेत्रविशेषे, अणुओ०।
जलवृते भूदेशे, प्रश्न ०४ अ०। पन्न०।

दीवंग- पुं० *[द्वीपांग]*
सुषमसुषमाजाते चतुर्थे कल्पवृक्षभेदे, दीपः प्रकाशकं वस्तु, तत्करणत्वाद्दीपाङः। ठा०१० ठा०। पण्हा०।
यथेह स्निग्धं प्रजवलन्त्यः काञ्चनमय्यो दीपिका उद्द्योतं कुर्वाणा दृश्यन्ते तद्वद् द्वीपाङ्गो विस्रसापरिणतः प्रकृष्टोद्द्योतेन सर्वमु-द्द्योतयन् वर्तते। तं०।

दीवकलिया- स्त्री० *[दीपकलिका]*
दीपशिखायाम्, अणुओ०।

दीवकुमार- पुं० *[दीपकुमार]*
भूषणनियुक्तसिंहरूपधरेषु भवनवासि-विशेषेषु, पन्न०१ पद। ठा०। उव०। भग०।

दीवकुमारावास- पुं० *[द्वीपकुमाराऽऽवास]*
द्वीपकुमाराणां भवनाऽऽवासे, 'छावत्तरिं दीवकुमाराणं वाससय-सहस्सा पण्णत्ता।' सम०७५ सम०।

दीवग-१ पुं० *[दीपक]*
प्रदीपे, आव०म०१ अ०२ ।

दीवग-२ पुं० *[दीपक]*
सम्यक्त्वभेदे, स्वयं तत्त्वश्रद्धानरहित एव मिथ्यादृष्टिः परस्य धर्म्मकथाऽऽदिभिस्तत्त्वश्रद्धानं दीपयति प्रकाशति, तत्सम्बन्धि सम्यक्त्वं दीपकमुच्यते। विशे०

दीवचंपय- न० *[दीपचम्पक]*
दीपस्थगनके, भग०८ श०६ उ०। रा०

दीवचंवग- न० *[दीपचम्पक]*
'दीवचंपय' शब्दार्थे, भग०८ श०६ उ०।

दीवण- पुं०त्रि० *[दीपन]*
प्रकाशने, वाच०। ओह०। दीपनं करोति कययतीत्यर्थे, बुह०१ उ०२ प्रक०।

दीवण्णिज्ज- त्रि० *[दीपनीय]*
दीपयति जठराग्निमिति दीपनीयः, बाहुलकात्कत्तर्य्यनीयप्रत्ययः। अग्निवृद्धिकरे, जीवा०३ प्रति०४ उ०। ठा०। नाया०। पन्न०।

दीवमं- पुं० *[दीव्यत्]*
क्रीमति, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०।

दीवयंत- पुं० *[दीपयत्]*
शोभयति, कल्प०२ क्षण०।

दीवय- पुं० *[दीपक]*
चित्रके, जीवा०१ प्रति०।

दीवसमुद्द-पुं० *[दीपसमुद्र]*
जम्बूद्वीपाऽऽदिलवणसमुद्राऽऽदिषा, जीवा०

दीवसागरपण्णत्ति- स्त्री० *[द्वीपसागरप्रज्ञप्ति]*
दशमे कालिकश्रुतभेदे, नं०।

दीवसिहा- स्त्री० *[दीपशिखा]*
ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिभार्य्यायां सागरदत्तवणिक्सुतायाम्, उत्त० १३ अ०। निर० ।

दीवायण-१ पुं० *[द्वैपायन]*
द्वीपमयनं जन्मभूमिर्यस्य स द्वीपायनः, 'द्वीपे न्यस्तस्या बालस्ततो द्वैपायनोऽभवत्।' सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ०।

दीवायण-२ पुं० *[द्वैपायन]*
षष्ठे ब्राह्मणपरिव्राजके, उव०। ठा०। दश०। आव०म०।

दीवायण-३ पुं० *[द्वैपायन]*
स चाऽऽगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां विंशतितमस्तीर्थकरो भविष्यति। सम०।

दीवावली- स्त्री० *[दीपाऽऽवली]*
यस्यां रात्रौ श्रमणो भगवान् महावीरः कालगतः, यावत् सर्वदुःखप्रक्षीणः, तस्यां रात्रौ नवमल्लिकाजातीयाः काशि-देशस्य राजानः, नवलेच्छकाजातीयाः कोशलदेशस्य राजानः, ते च कार्यवशाद् गणमेलापकं कुर्वन्ति इति गणराजानोऽष्टादश, ये चेटकमहाराजस्य सामन्ताः श्रूयन्ते, ते तस्याममावास्यायां पारं संसारपारमाभोगयति प्रापयति यस्तमेवंविधं पौषधोपवासं कृतवन्तः, आहारत्यागपाषधरूपम् उपवासं चक्रुरित्यर्थः। अन्यथा–दीपकरणं न संभवति, ततश्च गतः स भावोद्द्योतः, ततो द्रव्योद् द्योतं करिष्याम इति तैः दीपाः प्रवर्तिताः, ततः प्रभृति दीपोत्सवः संवृत्तः, कार्तिकशुक्लप्रतिपदि च श्रीगौतमस्य केवलमहिमा देवैश्चक्रे, अतस्तत्रापि जनप्रमोदः, नन्दिवर्द्धन नरेन्द्रश्च भगवतोऽस्तं श्रुत्वा शोकाऽऽर्त्तः सुदर्शनया भगिन्या संबोद्ध्य सादरं स्ववेश्मनि द्वितीयायां भोजितस्ततो भ्रातृद्वितीया-पर्वरूढिः। कल्प०१ अधि०६ क्षण०।

दीविय- त्रि० *[दीपित]*
कथिते, ओह०।

दीविय- पुं० *[द्वीपिक]*
शाकुनिकपुरुषसंबन्धिपरञ्जरस्थितितित्तिरौ, नाया०१ श्रु०१७ अ०।

दीविय- पुं० *[द्वीपिन्]*
चित्रके, आव०म० १ । भग०। पण्हा०। पन्न०। नाया०। जंबू०। ठा०। सूय०। आचा०

दीवियग- त्रि० *[द्वैप्य]* द्वी
पसम्भवे, नाया० १ श्रु० ११ अ०।

दीविया- स्त्री० *[दीपिका]*
ह्रस्वो दीपो दीपिका। ह्रस्वे दीपे जंबू०२ वक्ष०।
दीपिकानां चक्रवालं सर्वपरिमण्डलरूपं वृन्दं दीपिकाचक्रवाल वृन्दम्। जीवा० ३ प्रति० ४ उ०। जंबू०।

दीसंत- त्रि० *[दृश्यमान]*
चक्षुषा प्रत्यक्षे, सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ०।

दीह- पुं० *[दीर्घ]*
'एगे दीहे।'आयते, ठा०१ठा० ।सूय० ।विशे० ।पन्न० ।उव०। रा०
प्रचुरे, भग० १ श० ९ उ०।
असंख्यये । विशे०।
'दीहरहस्सहिमपक्काणि'। विपा० १ श्रु०८ अ०।

दीहकाल-त्रि० *[दीर्घकाल]*
दीर्घःसन्तानापेक्षया अनादित्वात् कालः स्थितिबन्धकालो यस्य तद् दीर्घकालम्। दीर्घस्थितिके, आव० म० १ अ० ।

दीहकालिगी- स्त्री० *[दीर्घकालिकी]*
कालिसंज्ञायाम्, विशे०।

दीहकालिय- त्रि० *[दीर्घकालिक]*
दीर्घः कालो विद्यते यस्य स दीर्घ कालिकः। ठा०३ ठा०१ उ०। चिरन्तने, दशा०७ अ०।

दीहकालियउवएस- पुं० *[दीर्घकालिकोपदेश]*
दीर्घः कालो दीर्घ-कालः, सोऽस्यास्तीति दीर्घकालिकः, स चासावुपदेशश्च, उपदेशो भणनं, दीर्घकालोपदेशः। दीर्घ-कालिके, भणने, आव०म०१ अ०।

दीहखद्ध- त्रि० *[दीर्घखद्र]*
प्रचुरतरे, वव०४ उ०।

दीहगोरवपरिणाम- पुं० *[दीर्घगौरवपरिणाम]*
यत आयुः स्वभावाद् जीवस्य दीर्घं दीर्घगमनतया लोकान्ताद् लोकान्तं यावद्गमन शक्तिर्भवति स दीर्घगौरवपरिणामः। अष्टमे आयुषः परिणामे, इह गौरवशब्दो गमनपर्य्यायः। ठा० ९ ठा०।

दीहडक्क- त्रि० *[दीर्घदष्ट]*
सर्पदष्टे, निसि०१ उ०।

दीहणिव- पुं० *[दीर्घनृप]*
काम्पिल्यपुरराजे, यो हि ब्रह्मदत्तेन हतः। उत्त०१३ अ०।

दीहदंत- पुं० *[दीर्घदन्त]*
जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे आगमिष्यन्त्यामुत्सर्प्पिण्यां भविष्यति द्वितीये चक्रवर्त्तिनि, सम०।

दीहदसा- स्त्री० *[दीर्घदशा]*
दशाध्ययने ग्रन्थविशेषे, ठा०।

दीहपट्ठ- पुं० *[दीर्घपृष्ठ]*
यवराजामात्ये बुह० १ उ० २।

दीहबाहु-१ पुं० *[दीर्घबाहु]*
ऋषभस्य त्रिसप्ततितमे पुत्रे, कल्प०१ अधि०७ क्षण।

दीहबाहु-२ पुं० *[दीर्घबाहु]*
जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आगमिष्यन्त्यामुत्सर्प्पिण्यां तृतीये बलदेवे, । सम०।

दीहबाहु-३ पुं० *[दीर्घबाहु]*
जम्बूद्वीपे भारते वर्षे अस्यामेवोत्सर्प्पिण्यां चन्द्रप्रभजिनस्य पूर्वभवे जीवे, सम०।

दीहभद्द- पुं० *[दीर्घभद्र]*
माठरसगोत्रस्याऽऽर्यसंभूतिविजयस्य स्थविरस्यैकादशे स्वनाम-ख्याते स्थविरेऽन्तेवासिनि, कल्प० २ अधि० ८ क्षण०।

दीहमद्ध- न० *[दीर्घाद्ध]*
दीर्घा अद्धा कालो यस्य तद्दीर्घाद्धम्। मकार आगमिकः। दीर्घ-कालगम्ये, ठा०२ ठा०१ उ०। पण्हा० भग०। सूय०। नाया०।

दीहमद्ध- न० *[दीर्घाध्व]*
दीर्घोऽद्धा मार्गो यस्मिन् तद्दीर्घाध्वम्। दीर्घमार्गगम्ये, ठा० २ ठा०१ उ०। पण्हा०। भग०। सूय०। नाया०।
दीर्घमार्गे, ठा०३ ठा०४ उ०।

दीहमद्धा- स्त्री० *[दीर्घाद्धा]*
दीर्घोऽद्धा कालो यस्यां सा दीर्घाद्धा, ठा० ५ ठा०२ उ०।

दीहमद्धा- स्त्री० *[दीर्घाध्वा]*
दीर्घोऽध्वा मार्गो यस्यां सा दीर्घाध्वा। ठा०५ ठा०२ उ०। उव०।

दीहमाउ- न० *[दीर्घाऽऽयुष्]*
चिरजीविते, शुभमितीह विशेषणं दृश्यमिति। ठा०१० ठा०।

दीहराय- न० *[दीर्घरात्र]*
यावज्जीवे, आव०४ अ०। आचा०।

दीहलोय- पुं० *[दीर्घलोक]*
वनस्पतौ, आचा०।
यस्मादसौ कायस्थित्या परिमाणेन शरीरोच्छ्रयेण च शेषैकेन्द्रियेभ्यो दीर्घो वर्तते।
तथाहि–कायस्थित्या तावत् वण-स्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकाए त्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! अनंतं कालं अनंताओ उस्सप्पिणिअवसप्पिणिओ, खेत्तओ अणंता लोया असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पुग्गलपरियट्ट आवलियाए असंखेज्जइभागे।’
परिमाणतस्तु–’पडुप्पन्न वणस्सकाइया णं भंते ! केवतिकालस्स निल्लेवणा सिया ? गोयमा! पडुप्पन्नवणस्सइकाइयाणं नत्थि निल्लेवणा।’ तथा–शरीरोच्छ्रयाच्च दीर्घो वनस्पतिः,
‘वणस्सइ काइया णं भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोयमा ! साइरेगं जोयणसहस्सं सरीरोगाहणा।’ न तथाऽन्येषा-मेकेन्द्रियाणाम्, अतः स्थितमेतत्सर्वथा दीर्घलोको वनस्पतिरिति । आचा० १ श्रु० १ अ० ४ उ०।

दीहलोयसत्थ- न० *[दीर्घलोकशस्त्र]*
वनस्पत्युत्सादकेऽग्नौ, आचा०।
अस्य च शस्त्रमग्निः, यस्मात्स हि प्रवृद्धज्वालाकलापाऽऽकुलः सकलतरुगणप्रध्वंसनाय प्रभवति, अतोऽसौ तदुत्सादकत्वा-च्छस्त्रम्। आचा० १ श्रु० १ अ०४ उ०।

दीहवच्छ- पुं० *[दीर्घवृक्ष]*
महति वृक्षे, आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०२ उ०।

दीहवेयड्ड- पुं० *[दीर्घवैताढ्य]*
दीर्घे अर्द्धक्षेत्रविभागकारके पर्वतविशेषे, ठा०।

दीहसद्द- पुं० *[दीर्घशब्द]*
दीर्घवर्णाऽऽश्रिते, मेघाऽऽदिशब्दवद् दूरश्राव्ये च। ठा०१० ठा०।
दीहसुत्त- न० *[दीर्घसूत्र]*
बृहत्सूत्रे, निसि०।
दीहसेण-१ पुं० *[दीर्घसेन]*
भरतक्षेत्रजचन्द्रप्रभजिनसमकालिके ऐरवतजे जिने, आव०।
दीहसेण-२ पुं० *[दीर्घसेन]*
श्रेणिकस्य राज्ञो धारण्यां जाते स्वनामख्याते पुत्रे, स च महावीरस्वामिनोऽन्तिके प्रव्रज्य षोडशवर्षपर्यायः संलेखनया मृत्वा विजये देवलोके उपपद्य ततश्च्युत्वा महाविदेहे सेत्स्यतीत्यनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य प्रथमेऽध्ययने सूचितम्। अनुत्त० २ वर्ग० १ अ०।
अस्मादन्यः श्रेणिकधारणीसुत एतन्नामा वीरान्तिके प्रव्रज्य द्वादशवर्षपर्यायः संलेखनया मृत्वा सर्वार्थसिद्धे उपपन्नो महाविदेहे सेत्स्यतीत्य-नुत्तरोपपातिकदशानां प्रथमवर्गस्य षष्ठेऽध्ययने सूचितम्। अनुत्त०१ वर्ग०१ अ०।
अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। *अनुत्त०*
दीहाउ- न० *[दीर्घाऽऽयुष्]*
दीर्घं सागरोपमपरिमिततया आयुरेषामिति दीर्घायुः।उत्त०५ अ०
चिरजीवित्वे, कल्प०१ क्षण
दीहाउअत्ता- स्त्री० *[दीर्घायुष्टा]*
दीर्घस्थितिकजीवितहेतुकर्मत्वे, ठा० ३ ठा०१ उ०।
दीहासण- न० *[दीर्घाऽऽसन]*
शय्यारूपे आसने, जंबू० १ वक्ष०। जीवा०
दीहिया- स्त्री० *[दीर्घिका]*
ऋजुसारिण्याम्, नाया०१ श्रु०१ अ०। रा० जंबू०। अणुओ०। आचा०। जीवा०। पन्न०। भग०। निसि०।उव०
दीर्घिका-ऋजुलघुनदी। पन्न०।
दु- अव्य० *[दुर्]*
अभावे, आचा०१ श्रु०२ अ०५ उ०।
जुगुप्सायाम्, आव०म०१ अ०२ ।
दुअं- अव्य० *[द्रुतम्]*
त्वरिते, अणुओ०। आव०।
दुअक्खरय- पुं० *[द्व्यक्षरक]*
दासे, भृतकः कर्मकरस्तद्विषयोऽक्षरको द्व्यक्षरकः, द्व्यक्षरका-भिधानो दास इत्यर्थः। पिंड०।
दुअक्खरिया- स्त्री० *[द्व्यक्षरिका]*
दास्याम्, आव०म०१ अ०।
दुआइक्ख- न० *[दुराख्येय]*
कृच्छ्राऽऽख्येये वस्तुतत्त्वे, ठा०५ ठा० १ उ०।
दुआर- न० *[द्वार]*
प्रवेशनिर्गममार्गे, नाया०१ श्रु०१८ अ०।
प्रतोल्यां च। नाया०१ श्रु०२ अ०।
दुआरिया- स्त्री० *[द्वारिका]*
अपद्वारे, नाया०१ श्रु०२ अ०।
दुआवत्त- पुं० *[द्विकाऽऽवर्त्त]*
षोडशेऽच्छिन्नच्छेदनयिके दृष्टिवादस्य सूत्रे, सम०१२ सम।
दुओणय- न० *[द्व्यवनत]*
अवनतिरवनतमुत्तमाङ्गप्रधानं प्रणमनमित्यर्थः, द्वे अवनते यस्मिन् तद् द्व्यवनतम्। द्विरवनम्य वन्दने, आव०।
एवं यदा प्रथममेव 'इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए।'
इत्यभिधाय च्छन्छोऽनुज्ञापनायाऽवनतमिति द्वितीयं पुनर्यदा कृताऽऽवर्तो निष्क्रान्तः 'इच्छामि' इत्यादि सूत्र-मभिधाय छन्दोऽनुज्ञापनायैवाऽवनत-मिति। आव०३ अ०। बुह०
दुंदुभग- पुं० *[दुन्दुभक]*
अष्टादशे महाग्रहे, 'दो दुंदुभगा।' ठा० २ ठा० ३ उ०। चंद०। कल्प०। जंबू०। सूर०।
दुंदुभि- पुं० *[दुन्दुभि]*
ढक्काविशेषे, भग० ९ श०३३ उ०। आव०चू०। उव०। रा०। कल्प०। जंबू०।
महत्प्रमाणे मुरजे, निसि० १ उ०
भेर्याकारे संकटमुखे देवाऽऽतोद्यविशेषे, रा०। भग०। पण्हा०। जीवा०। नाया०।
दुंदुहि- पुं० *[दुन्दुभि]*
'दुंदुभि' शब्दार्थे, रा०।
दुक्कड-१ न० *[दुष्कृत]*
दुष्टं कृतं दुष्कृतम्। पापे; सूय० १ श्रु०५ अ०३ उ०। आचा०। आव०म०। सम०।
पापकरणे, सूय० १ श्रु० ४ अ० १ उ०। आव०म०।
पापविपाके, सूय०२ श्रु०१ अ०।
दुक्कड-२ न० *[दुष्कृत]*
असदनुष्ठाने, असातावेदनीयोदयरूपे पापफले, सूय० १ श्रु०५ अ०१ उ०।
अकर्तव्ये, आव०४ अ०
दुःखे च। सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ०।
दुक्कड-३ न० *[दुष्कृत]*
मिच्छाए मणदुक्कमाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए।आव०३ अ०।
'दुक्कडं ति वा, सावज्जमणुट्ठितं ति वा, पावकम्ममासेवितं ति वा वितहमाइन्नं ति वा एगट्ठा।' आव०चू०१ अ०।

दुक्कडकम्म- न० *[दुष्कृतकर्म्म]*
दुष्टं कृतं दुष्कृतं, तदेव कर्म्मानुष्ठानम्। पापानुष्ठाने, दुष्कृतेन कर्म्म ज्ञानाऽऽवरणाऽऽदिकं तद् दुष्कृतकर्म। सूय०१ श्रु०५ अ०२

दुक्कडकम्मकारि- पुं० *[दुष्कृतकर्मकारिण्]*
दुष्कृतं कर्म्म कर्तुं शीलं येषां ते दुष्कृतकर्म्मकारिणः। पापानुष्ठानकरणशीलेषु, सूय० १ श्रु० ५ अ० २ उ०।

दुक्कडकारि- पुं० *[दुष्कृतकारिण्]*
पापविधायिनि, सूय०१ श्रु० ८ अ०

दुक्कडगरहा- स्त्री० *[दुष्कृतगर्हा]*
दुष्कृतेष्विहपरभवगतेषु गर्हा। अकर्तव्यबुद्धिसारापरसाक्षिक्याम् आव० १ अ०।

दुक्कडि- त्रि० *[दुष्कृतिन्]*
दुष्कृतं विद्यते येषां ते दुष्कृतिनः। नारकेषु, सूय०१ श्रु०५ अ०१ महापापेषु, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ०।

दुक्कडिय- त्रि० *[दुष्कृतिक]*
दुष्कृतमसदनुष्ठानं पापं वा तत्फलं वा असातावेदनीयोदयरूपं तद्विद्यते यस्मिन् स दुष्कृतिकः। असदनुष्ठायिनि, सूय०१ श्रु०५ अ० १ उ०।

दुक्कप्प- पुं० *[दुष्कल्प]*
पार्श्वस्थाऽऽदीनां प्रवचननिन्दितानां कल्पे, पंच०भा०।

दुक्कय- त्रि० *[दुष्कृत]*
पापकर्मणि, पण्हा०१ अ०।

दुक्कर- त्रि० *[दुष्कर]*
कर्त्तुमशक्ये, आव०५ अ०। निसि०। ज्यो०।
दुष्करं-अपूर्वकरणतो ग्रन्थिभेदः। भग०।

दुक्करकरण- न० *[दुष्करकरण]*
दुक्करकारितायाम्, वव०१० उ०। निसि०।
'दुक्करकरणं च कहं ? उच्यते–न दुक्करं जं पडिसेवियं तं जीवस्स संफुहाणुकूलं दुक्करं, तओ जंबू०
चित्तनिवित्तिकरणं तं दुक्करकरणं ति।' निसि० २० उ०।

दुक्काल- पुं० *[दुष्काल]*
धान्यमहर्घताऽऽदिना दुष्टे समये, जंबू०१ वक्ष०।

दुक्ख-१ न० *[दुःख]*
दुःखं करोति दुःखयति, दुःखयतीति दुःखम्। पापकर्मणि, उत्त० ६ अ०। सूय०। पण्हा०। उवा०। महानि०। आचा०। उव०।
दुष्करे, बुह० ६ उ०।
क्लेशे, सम०६ सम०।
कष्टे, आव०म०१ अ०। आचा०।

दुक्ख-२ न० *[दुःख]*
संसारे, उत्त०३२ अ०।

दुक्ख-३ न० *[दुःख]*
रोगे, उत्त०२ अ०। सूय०।
असातवेदनीयोदये, आचा०२ श्रु०४ चू०१ अ०।
उदयेन असातवेदनीयोदयं प्राप्ते । सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।
दुष्कृतकर्मफले, दश०१ अ०।
असातोदयाऽऽदिरूपे कर्म्मफले, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०।
असातोदये, आचा०। सूय०।
असातोदयकारणे, । आचा० १ श्रु० ३ अ० ४ उ० । भग० । सूय० । उत्त०
असातवेदनीयविपाकजनिते, आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ०।
अष्टप्रकारके कर्मणि, सूय०१ श्रु०९ अ०।

दुक्ख-४ न० *[दुःख]*
अमनोज्ञ-समुत्पादे, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ०।
अज्ञाने, मोहनीये, आचा० १ श्रु०५ अ०५ उ०।
असंवेद्ये, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

दुक्ख-५ न० *[दुःख]*
असुखरूपे, भग०५ श०६ उ०।
तापातुभवरूपे, दश०१ अ०।
विविधबाधनायोगरूपे, सूय०१ श्रु०१२ अ०।
परीषहोपसर्गजनितपीडायां च। सूय०१ श्रु०७ अ०।

दुक्खक्खंध- पुं० *[दुःखस्कन्ध]*
असातोदयपरम्परायाम्, सूय०१ श्रु० १ अ०२ उ०।

दुक्खक्खम- त्रि० *[दुःखक्षम]*
दुःखसहे, दुःखमसातवेदनीयोदयस्त-दुदीर्णं सम्यक् क्षमते सहते न वैकलव्यमुपयाति नापि तदुपशमार्थं वैद्यौषधाऽऽदि मृग्यते। आचा० २ श्रु० ४ चू० १ अ०।

दुक्खक्खव- पुं० *[दुःखक्षय]*
दुःखमसुखं तत्कारणत्वाद्वा कर्म तत् क्षपयतीति दुःखक्षयः। असुखक्षये, ठा० ४ ठा०१ उ०।

दुक्खपडिकूल- त्रि० *[दुःखप्रतिकूल]*
दुःखद्वेषिणि, आचा०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

दुक्खपरंपरा- स्त्री० *[दुःखपरम्परा]*
दुःखजन्ममरणेषु वियोगाऽऽदिरूपासु संकष्टश्रेणिषु, आतु०।

दुक्खपरंपराणिसवेयण- न० *[दुःखपरम्परानिवेदन]*
दुःखानां शारीरमानसाशर्म्मलक्षणानां प्रवाहप्ररूपणे, आतु०।

दुक्खपालिया- स्त्री० *[दुःखपालिता]*
दुःखेन पालयितुं शक्यायां बालावस्थायाम्, तं०।

दुक्खफास- पुं० *[दुःखस्पर्श]*
दुःखं स्पृशतीति दुःखस्पर्शः। असातोदयविपाकिनि, सूय० १ श्रु० ८ अ०।

दुक्खभय- त्रि० *[दुःखभय]*
दुःखान्मरणाऽऽदिरूपाद्भयमेषामितिदुःखन्नयाः। मरणाऽऽदिभी-तेषु , ठा० ३ ठा० २ उ०।

दुक्खमज्जिय- पुं० *[अर्जितदुःख]*
अर्जितमुपार्जितं दुःखं यैस्ते अर्जित दुःखाः। सञ्चितदुःखे, उत्त० ६ अ०।

दुक्खमत्ता- स्त्री० *[दुःखमात्रा]*
दुःखलेशे, आचा०१ श्रु०३ अ०४ उ

दुक्खमा- स्त्री० *[दुःषमा]*
अधमकालाख्यायाम्, दश० १ चू०।

दुक्खमोक्ख- त्रि० *[दुःखमोक्ष]*
दुःखानामसातोदयजनितानां विनाशे सूय०१ श्रु०१३ अ०।

दुक्खर- त्रि० *[दुष्कर]*
दुःखेन क्रियते इति दुष्करः। दुरनुष्ठाने, उत्त ०३ अ०।

दुक्खरक्खिया-स्त्री० *[दुःखरक्षिता]*
कष्टेन रक्षणयोग्यायाम्, 'दुक्खरक्खियाओ।' तं०।
दुःखरक्षिताः कष्टेन रक्षणयोग्या यौवनावस्थायां (स्त्रियः) तं०।

दुक्खरिय- पुं० *[दुष्करिक]*
दासे, निसि०१६ उ०।

दुक्खरिया- स्त्री० *[दुष्करिका]*
दास्याम्, महाश्राद्ध्याम्, निसि०१६ उ०।
वेश्यायां च। निसि०१ उ०।

दुक्खविमोक्खय- पुं० *[दुःखविमोक्षक]*
दुःखविमोचके, सूय०१ श्रु० १ अ०२ उ०।

दुक्खविमोयग- पुं० *[दुःखविमोचक]*
अष्टप्रकारकर्माऽपनेतरि, सूय० १ श्रु०९ अ०।

दुक्खसंभव- पुं० *[दुःखसंभव]*
दुःखस्य संभवो येषु ते दुःखसम्भवः दुःखभाजनेषु, दुःखं करोति ततो दुःखयतीति वा
दुःखं पापकर्म, ततः संभव उत्पत्तिर्येषां ते दुःखसम्भवाः। पाप-कर्मजेषु, उत्त० ६ अ०।
इहान्यजन्मनि च दुःखभाजनम्। उत्त०।

दुक्खसंभार- पुं० *[दुःखसम्भार]*
दुःखबाहुल्ये, पण्हा०३ अ०

दुक्खसमुदीरण- त्रि० *[दुःखसमुदीरण]*
असुखप्रवर्तके, पण्हा०३ अ०।

दुक्खसह- त्रि० *[दुःखसह]*
परीषहोपसर्गकृतं दुःखं सहते इति दुःखसहः। आचा०१ श्रु०८ अ०४ उ०।
परीषहजेतरि, दश०७ अ०।

दुक्खावणता- स्त्री० *[दुःखापनता]*
मरणलक्षणदुःखप्रापणायाम्, इष्टवियोगाऽऽदिदुःखहेतुप्रापणायां च। भग०३ श०३ उ०।

दुक्खाविज्जंत- त्रि० *[दुःखाय्यमान]*
दुःखमनुभाव्यमाने, आव०म० १ अ०।

दुक्खासिया- स्त्री० *[दुःखासिका]*
उपसर्गाऽऽदिसम्पाद्यवेदनायाम्, ठा० ३ ठा० ४ उ०। आचा०।

दुक्खाहड- त्रि० *[दुःखाऽऽहृत]*
दुःखेनाऽऽह्रियते इति दुःखाऽऽहृतम् दुःखोत्पाद्ये, उत्त०७ अ०।

दुक्खि- त्रि० *[दुःखिन्]*
दुःखमसातवेदनीयमुदयेन यत् प्राप्तं तत्कारणं वा दुःखयतीति दुःखं, तदस्यास्तीति दुःखी। दुःखविशिष्टे सूय० १ श्रु०२ अ०३ उ०। आचा०।

दुक्खिय- त्रि० *[दुःखित]*
दुःखमसाताऽऽत्मकं जातमेवामिति दुःखिताः। जातदुःखेषु, उत्त० ३ अ०।
रोगाऽऽदिपीडालक्षव्याप्ते, तं०।

दुक्खुण्णेय- त्रि० *[दुःखोन्नेय]*
कृच्छ्रबोध्ये, जीवा० ३३ अधि०।

दुक्खुत्त- अव्य० *[द्विःकृत्वस्]*
द्वौ वाराविर्त्यर्थे, ठा० ५ ठा०२ उ०।

दुक्खुव्वेय- पुं० *[दुःखोद्वेग]*
दुःखादुद्वेगो यस्य स दुःखोद्वेगः। दुःखोद्विग्ने, सुखस्यैषकः सुखैषकः दुःखोद्वेगश्चासौ सुखैषकश्च दुःखोद्वेगसुखैषकः। आचा० १ श्रु० २ अ० ३ उ०।

दुक्खुर- पुं० *[द्विखुर]*
द्वौ खुरौ प्रतिपदं येषां ते द्विखुराः। पन्न० १ पद।
गोमहिषाऽऽदिषु, सूय०२ श्रु०३ अ०। उत्त०। ठा०। जीवा०।
द्विखुराः-उष्ट्रादि-चतुष्पदाः। जीवा०।

दुग- न० *[द्विक]*
द्वैक्रियनिह्नवे, उत्तरपदलोपादेकसमये द्वे क्रिये समु दिते द्विक्रियं, तदधीयने तद्वादिनो वा द्वैक्रियाः। कालभेदेन क्रियानुभय-प्ररूपिण इत्यर्थः। आव०म० १ अ० । उत्त० । ठा०।

दुगुंछग- पुं० *[जुगुप्सक]*
गर्हके, आव०३ अ०।
मुनीनां जुगुप्सां कर्तुं योग्यायां योषिति, तं०।

दुगुंछण- न० *[जुगुप्सन]*
गर्हणे, आचा०१ श्रु०१ अ०७ उ०।

दुगुंछमाण- त्रि० *[जुगुप्समान]*
गर्हमाणे, सूय०२ श्रु०६ अ०।

दुगुंछा- स्त्री० *[जुगुप्सा]*
लोकविहितायां निन्दायाम्। आव०चू०। उत्त०। सूय०।आचा०। यत्पुनरस्नानदन्तधावनमण्डलीभोजनाऽऽदिकमपरं मृतकलेवर-विष्ठाऽऽदिकं जुगुप्सते सा जुगुप्सा। साध्वाचारनिन्दारूपे आन्तर ग्रन्थे, बुह०१ उ०२
जुगुप्सा प्रवचनखिंसा विकृताङ्गदर्शनेन मा भूदित्येवं प्रत्ययो यत्र तत्तथा। प्रवचननिन्दायाम्, ठा० ३ ठा० २ उ०।

दुगुंछाकम्म- न० *[जुगुप्साकर्म]*
यदुदयने च विष्ठाऽऽदिवीभत्सपदार्थेभ्यो जुगुप्सते तज्जुगुप्सा-कर्म। कर्मभेदे, ठा० १० ठा०।

दुगुंछिय- त्रि० *[जुगुप्सित]*
गर्हिते, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०१ उ०
जुगुप्सितावद्यगर्हिताः समानार्थाः। आव०म०१ अ०।

दुगुंछियकुल- न० *[जुगुप्सितकुल]*
छिम्पकाऽऽदिकुलेषु, ओह०।
चर्मकारकुलाऽऽदिषु, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०२ उ०।

दुगुण- त्रि० *[द्विगुण]*
द्विरावृत्ते, सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०। आचा०। सम०।
'दुगुणं करेइ स पावं।' सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०।

दुगुल्ल- न० *[दुकूल]*
गौडविषये विशिष्टे कार्पासिके वस्त्रे, आचा० २ श्रु०१ चू०५ अ०१ उ०। जीवा०।
दुकूलो वृक्षविशेषस्तस्य वल्कलं गृहीत्वोदूखले जलेन सह कुट्टयित्वा बुसीकृत्य च सूत्री कृत्य वयते यत्तद् दुकूलम्। जंबू०२ वक्ष०। पण्हा०।
दुकूलाभिधानवृक्षत्वग्निष्पन्ने वस्त्रजातविशेषे, भग०११ श०११ उ०। जीवा०। नाया०। सूर०। आव०म०। दशा०। निसि०।
'दुगुल्लपट्टपडिच्छण्णे।' दुकूलं वस्त्रं तस्य यः पट्टो युगलापेक्षया एकपट्टः, तेन आच्छादितः। कल्प०२ क्षण०। रा०।

दुगूल- न० *[दुकूल]*
'दुगुल्ल' शब्दार्थे, आचा०२ श्रु०१ चू०५ अ०१ उ०।

दुग्ग- त्रि० *[दुर्ग]*
दुःखेन गम्यतेऽसौ, विषमे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।
गहने, दुर्विज्ञेये, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।
खातबलयप्राकाराऽऽदिदुर्गमे, भग०७ श०६ उ०।
स्तेनपरचक्राऽऽद्यगम्यस्थाने च। बुह०३ उ०। भग०। जंबू०।
कष्टसाध्ये, भग०९ श०३ उ०।
दुःखाऽऽश्रयणीये, भग०५ श०६ उ०।
पर्वताऽऽदिदुर्गमिव कथमपिलङ्घयितुमशक्ये, ठा०५ ठा०२ उ० दुर्गमप्रवेशे च। विपा० १ श्रु०३ अ०। दशा०।

दुग्गइ- स्त्री० *[दुर्गति]*
दुष्टा गतिर्दुर्गतिः। दुष्टायां गतौ, ठा०।

दुग्गइगय- त्रि० *[दुर्गतिगत]*
दुर्गतिं प्राप्ते, ठा०४ ठा०३ उ०।

दुग्गइगामि- त्रि० *[दुर्गतिगामिन्]*
दुर्गतिं नारकतिर्यग् रूपामयन्ति प्राणिनमिति दुर्गतिगामिन्यः। दुर्गतिगमनहेतौ, तिस्रो लेश्याः दुर्गतिगमनहेतवः। ठा०३ ठा०४ दुर्गतो दरिद्रः सन् दुर्गतिं गमिष्यतीति दुर्गतिगामी। दुर्गति-गमनशीले च। ठा०४ ठा०३ उ०।

दुग्गइप्पवाअ- त्रि० *[दुर्गतिप्रपात]*
दुर्गतौ नरकाऽऽदिकायां कर्तारं प्रपातयतीति दुर्गतिप्रपातः। दुर्गतौ वा प्रपातो यस्मात् स तथा दुर्गतिपतनहेतौ, पण्हा०१ अ०

दुग्गइफल- त्रि० *[दुर्गतिफल]*
दुर्गतिः फलं यस्य स दुर्गतिफलः। सूय० १ श्रु०११ अ०।

दुग्गइफलवाइ- पुं० *[दुर्गतिफलवादिन्]*
दुर्गतिः फलं यस्य स दुर्गतिफलः, तद्वदनशीला दुर्गतिफल-वादिनः। दुर्गतिफलमार्गोपदेष्टरि मिथ्यादृष्टौ, सूय०१ श्रु०११ अ०

दुग्गइवड्ढण- न० *[दुर्गतिवर्द्धन]*
संसारवर्द्धने, दश०६ अ०।

दुग्गउ- पुं० *[दुर्गो]*
गलिबलीवर्दे, दश०९ अ०२ उ०।

दुग्गंध- पुं० *[दुर्गन्ध]*
दुष्टो गन्धो दुरभिगन्धो यस्यासौ दुर्गन्धः। दुरभिगन्धयुक्ते, दुरभि-गन्धे, ठा० ३ ठा० ६ उ०। भग०। आचा०।

दुग्गम- त्रि० *[दुर्गम]*
दुःखेन गम्यते इति दुर्गमः। कृच्छ्रगतिके, पण्हा०१ अ०।
दुस्तरे, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०।
कृच्छ्रवृत्तौ, ठा०५ ठा०१ उ०।
दुःखेन गम्यत इति दुर्गमम्। भावसाधनोऽयम्, कृच्छ्रवृत्तिरि-त्यर्थः। तद्भवति विनेयानामृजुजडत्वेन, वक्रजडत्वेन च। ठा० ५ ठा० १ उ०।

दुग्गय- त्रि० *[दुर्गत]*
दुर्गतिरेषामस्ति दुर्गतः। दुस्थे,ठा० ४ ठा० १ उ०।पण्हा० दरिद्रे, धनविहीने, ज्ञानविहीने च पुरुषे, ठा० ९ ठा० ३ उ०।

दुग्गयभव- पुं० *[दुर्गतभव]*
दरिद्रकुलोत्पत्तौ, बुह०६ उ०।

दुग्गा- स्त्री० *[दुर्गा]*
महिषाऽऽरूढायामार्य्यायाम्,गच्छा०२अधि०। आचा०। अणुओ०

दुग्गूढ- त्रि० *[दुर्गूढ]*
प्रच्छन्नप्रदेशाऽऽदिभाविनि च। वव०७ उ०।

दुग्घडघडिय- त्रि० *[दुर्घटघटित]*
दुराच्छादनया स्पृष्टे, पण्हा०३ अ०।

दुग्घास- पुं० *[दुर्ग्रास]*
दुर्भिक्षे, बुह०३ उ०।

दुघण- पुं० *[द्रुघण]*
द्रुहन्ति अनेन। भूमिकम्पे । अणुओ०। सूय०।
चट्टकरे च। पण्हा० ३ अ०।

दुचक्कमूल- न० *[द्विचक्रमूल]*
गन्त्रीसमीपे, उव०।

दुच्चय- त्रि० *[दुस्त्यज]*
दुःखेन त्यक्तुं योग्ये, भग० ७ श०१ उ०।

दुच्चर- त्रि० *[दुश्चर]*
दुःखेन चर्य्यतेऽस्मिन्निति दुश्चरः। दुःखेन चर्य्यन्त इति दुश्चराणि। ग्रामाऽऽदिषु, आचा०१ श्रु०९ अ०३ उ०।

दुच्चरलाढचारि- पुं० *[दुश्चरलाढचारिण्]*
दुश्चरश्चासौ लाढस्तं चीर्णवान् विहृतवान् सः। दुःश्चरे देशे ग्रामे च विहारं कृतवति, आचा० १ श्रु०१ अ०३ उ०।

दुच्चिण्ण- न० *[दुश्चीर्ण]*
मृषावादनपारदार्य्याऽऽदौ दुश्चरिते, तद्धेतुके कर्म्मणि च। नाया०१ श्रु०१६ अ०। विपा० । ठा०। उव०बुह०।

दुच्चेट्ठिय- न० *[दुश्चेष्टित]*
दुष्टं प्रतिषिद्धं धावनवल्गनाऽऽदिकार्यक्रियारूपं चेष्टितं यत्र तत्तथा। प्रतिषिद्धे धावनवल्गनाऽऽदौ काय क्रियारूपे चेष्टिते, तदुद्रवे च। आव०चू०।

दुच्चिंतिय- न० *[दुश्चिन्तित]*
दुष्टमार्तरौद्रध्यानतया चिन्तितं यत्र स तथा। आर्त्तरौद्रध्यानतया चिन्तिते, तदुद्भवे च। जीत०। आव०चू०।

दुजडि- पुं० *[द्विजटिन्]*
चतुरशीतितमे महाग्रहे, 'दो दुजडी।' ठा० २ ठा०३ उ०। चंद०।

दुज्जण- पुं० *[दुर्ज्जन]*
मिथ्यादृष्टिलोके, बुह० १ उ० ३ । आव०चू

दुज्जणवज्ज- त्रि० *[दुर्ज्जनवर्ज]*
दुःशीलरहिते, बुह०१ उ०३ प्रक०।

दुज्जंत- पुं० *[दुर्यन्त]*
स्वनामख्याते आचार्ये, कल्प०।
'कोसिय दुज्जंत कण्हे य।' कल्प०२ अधि० ८ क्षण०।

दुज्जय- त्रि० *[दुर्जय]*
अभिभावनानर्हे, आव०म० १ अ०।
षट् पञ्चाशत्तमे ऋषभनन्दने च। कल्प०७ क्षण।
दुःखेन जीयते-ऽभिभूयते इति दुर्जयः। दुस्त्यजे, उत्त०१३ अ०।

दुज्जर- *[दुर्जर]*
दुःखेन जीर्यते। ठा० ४ ठा० ४ उ०।

दुज्जाय- न० *[दुर्यात]*
दुष्टं यातं दुर्य्यातम्। गमनक्रियागर्हाणाम्, आचा० १ श्रु० ५ अ० ३ उ०।

दुज्जोहण- पुं० *[दुर्य्योधन]*
स्वनामख्याते धृतराष्ट्रपुत्रे, नाया० १ श्रु०१६ अ०। आव०म०। सिंहपुरनगरराजस्य सिंहरथाभिधानस्य स्वनामख्याते गुप्तिपाले, ठा० १० ठा०। विपा० ।

दुज्झा- स्त्री० *[दोह्या]*
दोहार्हायाम्, दश०७ अ०।

दुज्झाय- त्रि० *[दुध्यार्त]*
दुष्टो ध्यातो दुर्ध्यातः। एकाग्रचित्ततया आर्त्तरौद्रलक्षणे, आव०। दुष्टचिन्ताविषयीकृते, नाया०१ श्रु०१९ अ०।

दुज्झोस- पुं० *[दुर्ज्झोष]*
दुःक्षये, आचा०१ श्रु०५ अ०३ उ०।

दुट्ठ- त्रि० *[दुष्ट]*
दोषवति, बुह०।
प्रद्विष्टे च राजनि, निसि० १ उ०। सूय०।
दुर्मनसि, सूय०२ श्रु०२ अ०।

दुट्ठ- त्रि० *[द्विष्ट]*
दुष्टः-द्विष्टः तत्त्वं प्रज्ञापकं वा प्रति, स चाप्रज्ञापनीयो, द्वेषेणो-पदेशाप्रतिपत्तेः। ठा० ३ ठा० ४ उ०

दुट्ठग्गाह- पुं० *[दुष्टग्राह]*
निर्दयमहामकराऽऽदिषु, तं०।

दुट्ठचेय- पुं० *[दुष्टचेतस्]*
कलुषान्तःकरणे, आचा०२ श्रु०४ चू०१ अ०२ उ०।

दुट्ठवाइ- पुं० *[दुष्टवादिन्]*
प्रत्यक्षग्राहिणि, पण्हा०२ अ०।

दुट्ठस्स- पुं० *[दुष्टाश्व]*
कुलक्षणघोटके, तं०।
गर्दभे च। बुह०१ उ०२ प्रक०।

दुट्ठसावयसमाहय- त्रि० *[दुष्टश्वापदसमाहत]*
दुष्टाः क्षुद्राः श्वापदा व्याघ्राऽऽदयस्तैः समाहतेष्वभिभूतेषु, पण्हा०३ अ०।

दुट्ठहियय- त्रि० *[दुष्टहृदय]*
दुष्टचित्ते, तं०।

दुट्ठाण- न० *[दुःस्थान]*
शीताऽऽतपदंशमशकाऽऽदियुक्तेषु कायोत्सर्गाऽऽसनाऽऽद्याश्रयेषु भग० १६ श०२ उ०।

दुट्ठाणय- न० *[द्विस्थानक]*
स्वनामख्याते स्थानाङ्गस्य द्वितीयेऽध्ययने ठा०२ ठा०१ उ०।
दुणाम- न० *[द्विनामन्]*
द्विविधं द्विप्रकारकं च तद् नाम द्विनाम। नामभेदे, अणुओ०।
दुण्णय- त्रि० *[दुर्नय]*
स्वार्थग्राहिणि इतरांशप्रतिक्षेपिणि, नयाऽऽभासे, आव०म०।
दुण्णाम- पुं० *[दुर्नाम]*
मदाद् दुष्टं नमनं दुर्नाम इति।मानकषायभेदे, भग०१२ श०५ उ०
दुण्णामधिज्ज- त्रि० *[दुर्नामधेय]*
पुराणः पतित इति कुत्सितनाम-धेये, दश० १ चू०।
दुण्णिक्कम- त्रि० *[दुर्निष्क्रम]*
दुःखेन नितरां क्रमः क्रमणं यत्र तस्मिन्, भग०७ श०६ उ०।
दुण्णिबोह- त्रि० *[दुर्निबोध]*
दुष्प्रापके, सूय०१ श्रु०१५ अ०।
दुण्णिय- न० *[दुर्नीत]*
दुष्टं नीतं दुर्नीतम्। दुष्कृते, सूय०१ श्रु०७ अ०।
अप्रावृते, निसि०१ उ०।
दुण्णिरिक्खरूप- त्रि० *[दुर्निरीक्ष्यरूप]*
दुःप्रेक्ष्ये, कल्प०३ क्षण।
दुण्णिविट्ठ- त्रि० *[दुर्निविष्ट]*
विह्वले निर्भरे, निसि०११ उ०।
दुण्णिसीहिया- स्त्री० *[दुर्निषद्या]*
दुःखहेतुस्वाध्यायभूमौ, भग०१६ श०२ उ०।
दुण्णेय- त्रि० *[दुर्ज्ञेय]*
दुखगमे, आव०४ अ०। आव०म०।
दुर्लक्ष्ये, दश०४ अ०।
दुत- त्रि० *[द्रुत]*
त्वरिते, ठा०७ ठा०।
दुतर- त्रि० *[दुस्तर]*
दुर्लङ्घ्ये, सूय०१ श्रु०३ अ०। उत्त०।
दुत्तितिक्ख- त्रि० *[दुस्तितिक्ष]*
परीषहाऽऽदौ दुःसहे, 'पुरिमपच्छिमगाणं जिणाणं दुग्गमं भवइ। तं–दुआइक्खं दुव्विभज्जं दुत्तितिक्खं दुरणुचरं।' ठा०५ ठा०१ उ०
दुत्तोस- त्रि० *[दुस्तोष]*
यस्य तुष्टिः कर्तुं न शक्यते तस्मिन्, दश०५ अ०।
दुत्थ- त्रि० *[दुस्थ]*
दुर्गते, ठा०३ उ०।
दुद्दंत- त्रि० *[दुर्दान्त]*
दमयितुमशक्ये, उत्त०२७ अ०।
चक्षुषि, उत्त० ३२ अ०। आव०म०।

दुद्दम- त्रि० *[दुर्दम]*
दुर्ज्जये, उत्त०१ अ०।
दुद्दिट्ठ- त्रि० *[दुर्दृष्ट]*
दृष्टे दृष्टे, आचा०१ श्रु०४ अ०२ उ०।
दुद्दिण- न० *[दुर्दिन]*
मेघतिमिरदिने, पिंड०।
दुद्धकाय- पुं० *[दुग्धकाय]*
दुग्धघटकाये, परिहरणायां दुग्धघटकाय दृष्टान्त उक्तः। आव०३ अ०। आव०क०।
दुद्धजाइ- स्त्री० *[दुग्धजाति]*
आस्वादतः क्षीरसदृश्यां मदिरायाम्, जीवा०३ प्रति०४ उ०।
दुद्धर- त्रि० *[दुर्द्धर]*
दुःखेन धर्तुं शक्यं दुर्धरम्। दश०४ अ०।
गहने ठा०६ ठा०।
दुर्वहे, सम०।
धारयितुमशक्ये, वव०३ उ०।
अनुद्धरणीये, पन्न०१ पद।
प्राणातिपातादिनिर्वृतिलक्षानि। पञ्च महाव्रतानि। पन्न०।
प्रतिस्पर्द्धिनामनिवार्यः। पण्हा०।
दुद्धरधर- त्रि० *[दुर्द्धरधर]*
दुर्धराणि प्राणतिपाताऽऽदिनिवृत्तिलक्षणानि पञ्च महाव्रतानि धारयतीति दुर्द्धरधरः। पञ्चमहाव्रतिके, पन्न० १ पाद।
दुद्धरपहकरवेग- त्रि० *[दुर्द्धरपथकरवेग]*
दुर्द्धरं दुर्वहं पन्थानं सम्यग्दर्शनाऽऽदिकं मोक्षमार्गं करोतीति दुर्द्धरपथकरस्तथाविधो वेगः प्रसरो यस्येति तस्मिन्। बुह०१ उ०
दुद्धरिस- पुं० *[दुर्द्धर्ष]*
चतुःपञ्चाशत्तमे ऋषभनन्दने, कल्प० ७ क्षण।
अनभिभवनीये, । नं०।
दुर्द्धर्षं-अनभिभवनीयम्। पण्हा०।
दुधोयतराय– पुं० *[दुधोततारक]*
दुष्करतरधावनप्रक्रियम्। भग० ।
दुप- पुं० *[द्विप]*
हस्तिनि, जीवा०३ प्रति०१ उ०। आव०म०।
दुपएस- त्रि० *[द्विप्रदेश]*
द्वौ प्रदेशावारम्भकावस्येति द्विप्रदेशः।
द्व्यणुक, उत्त०१ अ०।
दुपएसिय- त्रि० *[द्विप्रदेशिक]*
प्रवेशद्वयावस्थिते, भग०५ श०७ उ०
दुपक्ख-१ पुं० *[दुष्पक्ष]* दुष्टः पक्षो दुष्पक्षः। असत्प्रतिज्ञाऽभ्युपगमे, सूय०१ श्रु०३ अ०३ उ०।

दुपक्ख-२ न० *[द्विपक्ष]*
द्वौ पक्षौ समाहृतौ इति द्विपक्षम्। गृहस्थपक्षसंयतपक्षयोः समाहारे, बुह०१ उ०। सूय०।
रागद्वेषाऽऽत्मके पक्षद्वये, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०।
सप्रतिपक्षेऽनैकान्तिके पूर्वापरविरुद्धार्थाऽभिधायितयाऽविरोधि वचने, । सूय० ।
कर्म्मबन्धनिर्जरणे, सूय०१ श्रु०१२ अ०।
द्विपक्षं कर्म्म सेवन्ते। तद्यथा–प्रव्रज्यामाधाकर्म्मिकवसत्या-सेवनाद् गृहस्थत्वं च, रागं द्वेषं च, ईर्य्यापथं साम्परायिकं चेत्यादि। आचा० २ श्रु०१ चू०२ अ०२ उ०।

दुपडोआर- त्रि० *[द्विपदावतार]*
द्वयोः स्थानयोः पर्यवसिते, ठा०।

दुपडोयार- न० *[द्विप्रत्यवतार]*
द्वयोः प्रत्यवतारो यस्य तद् द्विप्रत्यवतारम्। स्वरूपवति, प्रति-पक्षवति च। ठा० २ ठा० १ उ०।

दुपय- पुं० *[द्विपद]*
द्वे पदे यस्याऽसौ द्विपदः। मनुष्ये, सम०१२ सम०, अणुओ०। गन्त्र्याम्, । विशे०। सूय०। आचा०। आव०।
देवे, पक्षिणि, राक्षसे च। निसि०। आव०चू०। उत्त०।
आसाढे मासे दुपया होइ पोरिसी।पादद्वयपरिमिते, उत्त०२६ अ०

दुपय- पुं० *[द्रुपद]*
स्वनामख्याते काम्पिल्यपुरराजे, नाया०१ श्रु०१६ अ०।

दुपयचउप्पयपमाणाइक्कम- पुं० *[द्विपदचतुष्पदप्रमाणातिक्रम]*
द्वे पदे येषां तानि द्विपदानि कलत्रावरुद्धदासीदासकर्मकर पदात्यादीनि, हंसमयूरकुक्कुटशुकसारिकावकोरपारापतप्रभृतीनि च चत्वारि पदानि येषां तानि चतुष्पदानि गोमहिषमेषाविककर-भरासभतुरगहस्त्यादीनि, तानि यद्गर्भं ग्राहयति सोऽतिचार इति संबन्धः। यथा किल केनाऽपि संवत्सराऽऽद्यवधिना द्विपद चतुष्पदानां परिमाणं कृतं, तेषां च विवक्षितसंवत्सराऽऽद्यव-धिमध्यं एव प्रसवेऽधिकद्विपदाऽऽदिभावाद् व्रतभङ्गः स्यादिति तद्भयात्कियत्यपि काले गते गर्भं ग्राहयतोगर्भस्थद्विपदाऽऽदि-भावेन बहिश्च तदभावेन कथञ्चिद् व्रतभङ्गाभङ्गरूपोऽतिचार इति चतुर्थः। उत्त०। निसि०। आव०।

दुप्पउत्त- त्रि० *[दुष्प्रयुक्त]*
दुष्टप्रयोगवति, ठा० १ ठा०।
अकुशले, ठा०५ ठा०१ उ०।

दुप्पउत्तकायकिरिया- स्त्री० *[दुष्प्रयुक्तकायक्रिया]*
दुष्टं प्रयुक्तं प्रयोगो यस्य स दुष्प्रयुक्तस्तस्य कायक्रियायाम्, दुष्टं प्रयुक्तो दुष्प्रयुक्तः स चाऽसौ कायश्च दुष्प्रयुक्तकायस्तस्य क्रियायां च। भग० ३ श० १ उ०।

दुप्पएसिय- पुं० *[द्विप्रदेशिक]*
'दुपएसिया खंधा।' स्कन्धाऽऽदिषु, ठा० २ ठा० ४ उ०।

दुप्पओग- पुं० *[दुष्प्रयोग]*
दुष्टे मनोवाक्कायप्रयोगे, द्रोहाभिमानेर्ष्याऽऽदिलक्षणो मनोदुष्प्र-योगः, वाग् दुष्प्रयोगस्तु हिंस्रपरुषाऽऽदिवचनलक्षणः, काय-दुष्प्रयोगस्तु धावनवल्गनाऽऽदिः। दश० ४ अ०।

दुप्पजीवि- पुं० *[दुष्प्रजीविन्]*
दुःखेन कुच्छ्रेण प्रकर्षेणोदारभोगापेक्षया जीवितुं शीले प्राणिनि, दश०१ चू०।

दुप्पडिक्कंत- त्रि० *[दुष्परिक्रान्त]*
दुराक्रान्ते, आचा०।

दुप्पडिगर- त्रि० *[दुष्प्रतिकर]*
दुःखेन प्रतिकर्त्तुमशक्ये, बुह०३ उ०।

दुप्पडिग्गह- न० *[द्विप्रतिग्रह]*
दृष्टिवादस्य स्वसमयपरिपाट्या स्थिते सूत्रविशेषे, सम०१२ सम।

दुप्पडिपूर- त्रि० *[दुष्प्रतिपूर]*
पूरयितुमशक्ये, तं०।

दुप्पडिवूहणीय- त्रि० *[दुष्प्रतिवृंहणीय]*
प्रतिबृंहणानर्हे, जीवितमायुष्कं तत् क्षीणं सत् दुष्प्रतिबृंहणीयम्, दुरभावार्थो नैव वृद्धिर्नीयते इति यावत्। निष्प्रत्यूहप्रतिपालनार्हे, अथवा–जीवितं संयमजीवितं तद् दुष्प्रतिबृंहणीयं काषानुष-क्तजनान्तर्वर्तिना दुःखेन निष्प्रत्यूह संयम प्रतिपाल्य इति। आचा०१ श्रु०२ अ०५ उ०।

दुप्पडियाणंद- त्रि० *[दुष्प्रत्यानन्द्य]*
बहुभिरपि संतापकारणैरनुत्पाद्यमानसंतोषे, विपा० १ श्रु०२ अ०।
दुःखेन प्रत्यानन्द्यत इति दुष्प्रत्यानन्द्यः। दशा०६ अ०।
उपकृतेन कृतमुपकारं यो नाभिमन्यते। ठा०।

दुप्पडियार- त्रि० *[दुष्प्रत्युपकर]*
दुःखेन कृच्छ्रण प्रतिक्रियते कृतोपकारेण पुंसा प्रत्युक्रियते इति खल् प्रत्यये दुष्प्रत्युपकरः। प्रत्युपकर्त्तुमशक्ये, ठा०।

दुप्पडिलेहण- त्रि० *[दुष्प्रत्युपेक्षण]*
दुष्टमुद् भ्रान्तचेतसा प्रत्युपेक्षणं दुष्प्रत्युपेक्षणम्। आव०४ अ०।
दुर्निरीक्षणे, आव० ४ अ०। आव०चू०।

दुप्पडिलेहिय- त्रि० *[दुष्प्रत्युप्रेक्षित]*
दुर्निरीक्षिते, आचा०१ श्रु०१ चू

दुप्पणिहाण- न० *[दुष्प्रणिधान]*
प्रणिधानं प्रयोगः, दुष्टं प्रणिधानं दुष्प्रणिधानम्। आव०६ अ०।
अशुभमनः प्रवृत्यादिरूपे प्रयोगे, ठा०।

दुप्पणिहिय- त्रि० *[दुष्प्रणिहित]*
विश्रोतोगामिनि, दश० ८ अ०। ठा०। आचा०।

दुप्पणोल्लिय- त्रि० *[दुष्प्रणोद्य]*

दुःखेन प्रणोद्यते इति दुष्प्रणोद्यः। दुस्त्यजे,सूय०१श्रु०३ अ०१ उ०

दुप्पण्णवणिज्ज- न० *[दुष्प्रज्ञाप्य]*

दुःखेन प्रज्ञपुं योग्ये, दुःखेन धर्मसंज्ञोपदेशेनानार्य्यसङ्कल्पा-न्निवर्त्तन्ते। आचा०१ श्रु०१ चू०३ अ०१ उ०।

दुक्खचरणकरणजातामाताओत्तिए धम्मं पण्णविज्जंति। निसि०

दुप्पत- न० *[दुष्पत]*

अपतनशीले पात्रविशेषे, 'जं ठविज्जंतं उड्ढं ठायति, चालियं पुण पलोट्टति, तं दुप्पतं।' निसि० १ उ०।

दुप्पतर- त्रि० *[दुष्प्रतर]*

दुरुत्तरे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।

दुप्पधंसग- त्रि० *[दुष्प्रधर्षक]*

दुर्धर्ष एव दुर्धर्षकः। उत्त०९ अ०।

शत्रुभिर्दुराकलनीये, उत्त०९ अ०।

दुप्पमज्जिय- त्रि० *[दुष्प्रमार्जित]*

अविधिना अनुपयुक्ततया च रजोहरणाऽऽदिना विशोधिते, आचा०। आव०।

दुप्पमज्जियचारि- पुं० *[दुष्प्रमार्ज्जितचारिण्]*

दुष्प्रमार्जितेऽवस्थाननिषीदनशयनीकरनिक्षेपोच्चाराऽऽदिपरिष्ठापनकारके, दशा०१ अ ० सम०। आव०चू०। पण्हा०।

दुप्पय- न० *[दुष्पद]*

पुष्पकमूलेन प्रतिष्ठिते, बुह०३ उ०।

दुप्पयारप्पमद्दण- त्रि० *[दुष्प्रचारप्रमर्दन]*

दुष्प्रचाराश्चौराऽऽदयोऽन्यायकारिणस्तान् प्रमर्दयति यस्तस्मिन्। अन्यायकारिप्रचारनिवारके, कल्प०१ अधि०३।

दुप्परकंत- न० *[दुष्पराक्रान्त]*

प्राणिघातादत्तापहाराऽऽदौ कर्म्मणि, नाया०१ श्रु०१६ अ०।

दुप्परिकम्मतर- न० *[दुष्परिकर्म्मतर]*

कष्टकर्त्तव्यतेजोजनमङ्गकरणा-ऽऽदिप्रक्रिये, भग०६ श०१ उ०।

दुप्परिच्चय- त्रि० *[दुष्परित्यज]*

दुःखेन परित्यक्तुं योग्ये, उत्त०।

दुप्परिच्चया इमे कामा, नो सुजढा अधीरपुरिसेहिं। उत्त० ८ अ०

दुप्परियत्तणसील- त्रि० *[दुष्परिवर्त्तनशील]*

महता कष्टेन पश्चाद्वलनशीले, मत्स्यवत् दुष्परिवर्त्तनशीला महता कष्टेन परिवर्त्तनं पश्चाद्वालयितुं शीलं स्वभावो यासां तास्तथा स्त्रियः। तं०।

दुप्परिवत्तणसील- त्रि० *[दुष्परिवर्तनशील]*

'दुप्परियत्तणसील' शब्दार्थे, तं०।

दुप्परिस- त्रि० *[दुष्प्रधृष्य]*

अपरिभवनीये, पण्हा०५ अ०।

दुप्पलिओसहिभक्खणया- स्त्री० *[दुष्पक्कौषधिभक्षणता]*

भोजनतः परिभोग उपभोगव्रतस्यातिचारविशेषे, दुष्पक्का अग्निना अचित्ता औषधयस्तद्भक्षणता। अतिचारता चास्य पक्कबुद्ध्या भक्षयतः। उवा० १ अ०। आव०।

दुप्पलितोसहिभक्खणया- स्त्री० *[दुष्पक्षौपधिभक्षणता]*

'दुप्पलिओसहिभक्खणया' शब्दार्थे, उवा०८ अ०।

दुप्पवियम- त्रि० *[दुष्प्रावृत]*

परिधानवर्ज्जिते, तं०।

दुप्पवेस- त्रि० *[दुष्प्रवेश]*

दुरवगाहे, आव०म०१ अ०। उव०

दुप्पवेसतरग-त्रि० *[दुष्प्रवेशतरक]*

प्रवेष्टुमशक्ये, पण्हा०३ अ०

दुप्पस्स- त्रि० *[दुर्दर्श]*

दुःखेन दर्श्यत इति दुर्दर्शः। परीषहाऽऽदौ दुर्दर्शे, 'मज्झिमगाणं जिणाणं, दुप्पस्सं दुग्गमं भवइ।' स्था० ५ ठा०१ उ०।

दुप्पहंसय- त्रि० *[दुष्प्रहंस्यक]*

दुरभिभवे, उत्त०११ अ०।

दुःखेन दर्श्यते इति दुर्दशं, उपपत्तिभिर्दुःशकंशिष्याणां प्रतीता वारोपयितुं तत्त्वमिति। ठा० ।

दुफास- त्रि० *[द्विस्पर्श]*

द्वावविरुद्धौ स्निग्धशीताऽऽद्यात्मको स्पर्शावस्येति द्विस्पर्शः।उत्त० स्निग्धरूक्षशीतोष्णस्पर्शानामन्यतराविरुद्धस्पर्शद्वययुक्ते, भग० १८ श० ६ उ०। ठा०।

दुब्बद्ध- त्रि० *[दुर्बद्ध]*

अविधिना बद्धे, आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०३ उ०।

दुब्बल-१ त्रि० *[दुर्बल]*

कृशाङ्गे, दीने, पण्हा०१ अ०। सूय०। तं०।

हीनबले, विपा० १ श्रु०७ अ०। ठा०। भग०।

असमर्थे, पण्हा०३ अ०। रा०।

अविद्यमाननियमे, विपा० १ श्रु०२ अ०।

व्याधिपीडिते, पण्हा०१ अ०।

अद्दढे, निसि०२ उ०।

शारीरमानसावष्टम्भरहिते, जीवा०३ प्रति०२ उ०।

धृतिबलविकले, बुह०४ उ०। निसि०।

ग्लानत्वादधुनैवोत्थितेऽसमर्थशरीरे, बुह०३ उ०।

दुब्बल-२ त्रि० *[दुर्बल]*

दुर्बलिकापुष्पमित्रे, आव०चू० १ अ०।

दुब्बल-३ त्रि० *[दुर्बल]*

न विद्यते बलं गमने यस्मिन् स गाढाऽऽतपासंभवाऽऽदिना दुर्बलो, दुःशब्दोऽभाववाची। जेष्ठाषाढाऽऽदिके च। वव०२उ०

दुब्बलचारित्त- पुं० *[दुर्बलचारित्र]*
दुर्बलश्चारित्रे इति दुर्बलचारित्रः। विनाकारणेन मूलोत्तरगुण परिषेविनि, निसि० १ उ०। वव०।

दुब्बलपच्चवमित्त- पुं० *[दुर्बलप्रत्यवमित्र]*
अबलप्रातिवेशिकराजे, ठा०९ ठा०।
दुर्बलानामकारणवत्सले, रा०। सूय०।

दुब्बलियत्त- न० *[दुर्बलिकत्व]*
दुष्टं बलमस्यास्तीति दुर्बलिकस्तद्भावो दुर्बलिकत्वम्। दौर्बल्ये, भग०१२ श०२ उ०। निसि०।

दुब्बलियापूसमित्त- न० *[दुर्वलिकापुष्यमित्र]*
आत्मार्थमेव भिक्षां हिण्डमानो बहूनां दुर्बलिनामाहारं संपादयन् दुर्बलिकापुष्यमित्र ।ठा०७ ठा०। विशे०। आव०म०। आव०चू०

दुब्भग- त्रि० *[दुर्भग]*
सर्वैः परित्यक्ते निर्गतिके, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ०।
अनिष्टे, पण्हा०२ अ०।

दुब्भगाकरा- स्त्री० *[दुर्भगाऽऽकरा]*
सुभगमपि दुर्भगमाकरोति इति दुब्भर्गाऽऽकरा। सुभगस्य दुर्भगकारके विद्याभेदे, सूय० २ श्रु० २ अ०।

दुब्भासिय- न० *[दुर्भाषित]*
असद्भूतोद्भावे, जीत०।
गर्वे, आव०म०२ अ०।
दुर्वाचा प्रतिक्रान्ते च। आव०म०१ अ०।

दुब्भि- पुं० *[दुरभि]*
दुर्गन्धे वैमुख्यकृति, ठा०१ ठा०। निसि०। पन्न०। आचा०।

दुब्भिक्ख- न० *[दुर्भिक्ष]*
दुर्ल्लभा भिक्षा यस्मिन्देशे स दुर्भिक्षः। अलभ्यभिक्षाके देशे, ठा०३ ठा०१ उ०।
दुर्भिक्षं-भिक्षाचराणां भिक्षादुर्लभत्वम्। जंबू०
भिक्षाभावे, ठा० ५ ठा०२ उ०।
कालविभ्रमे, आव०६ अ०।
दुष्काले, सम०३४ सम०। प्रव०। उव०।
अन्नाकाले, दश०१ अ०।

दुब्भिक्खभत्त- न० *[दुर्भिक्षभक्त]*
भिक्षुकार्थं दुर्भिक्षे संस्क्रियते भक्तभेदे, नाया०१ श्रु०१ अ०। ठा० 'अनविनिग्गयाणं भुक्खत्ताणं जं दुब्भिक्खे रायो देति तं दुब्भि-क्खडत्तं।' निसि० ९ उ०।
दुर्भिक्षकाले भिक्षुकाणां निर्वाहार्थं दुर्भिक्षभक्तम् यद् विहितं भक्तं तद्। भग०।
यद् भिक्षुकार्थं दुर्भिक्षे संस्क्रियते तत्। उव०।
दुर्भिक्षभक्तम्। ठा०

दुब्भिगंध- त्रि० *[दुरभिगन्ध]*
दुर्गन्धे, ठ०३ ठा०३ उ०।
तीव्रतराष्टगन्धोपेते, नाया०१ श्रु०८ अ०।
कुथितकडेवरकाऽऽदौ, आचा ०१ श्रु०९ अ०२ उ०। रा०।
दुरभिगन्धेन कुथितकलेवरातिशायिनि नरके, सूय०१ श्रु०५ अ०१
असह्यगन्धे, सूय० २ श्रु०२ अ०।
दुष्टगन्धे च। नाया०२ श्रु०९ अ०।
दुरभिगन्धपरिणता लसुनाऽऽदिवत्। पन्न०१ पद।

दुब्भिसद्द- पुं० *[दुरभिशब्द]*
दुरीभशुभः मनोज्ञो यो न भवति। 'एगे दुब्भिसद्दे।' ठा०१ ठा०।
अशुभशब्दे, पन्न०१३ पद

दुब्भूइ- स्त्री० *[दुर्भूति]*
अशिवे, बुह०३ उ०।

दुब्भूय- त्रि० *[दुर्भूत]*
दुष्टा जनधान्याऽऽदीनामुपद्रवहेतुत्वात् दुर्भूताः यूकामत्कुणोन्दु-रतिड्डप्रभृतिष्वीतिविशेषेषु सत्त्वेषु, भग०३ श०२ उ०।
अशिवे, जीवा०३ प्रति०४ उ०।

दुब्भेय- त्रि० *[दुर्भेद]*
दुर्मोचे दुःक्षरणीये, विशे०। रा०।

दुभागपत्त- त्रि० *[द्विभागप्राप्त]*
द्विभागोऽर्द्धं तत्प्राप्तो द्विभागप्राप्तः। द्विभागप्राप्ते आहारे, द्विभागो वा प्राप्तोऽनेनेति द्विभागप्राप्तः। भग०७ श०१ उ०।

दुम- पुं० *[द्रुम]*
शाखाऽस्त्यस्य द्रुमः। वृक्षे, उत्त०३२ अ०।

दुमगण- पुं० *[दुमगण]*
वृक्षसङ्घाते, दश०१ अ०।

दुमण- न० *[धवलन]*
सेटिकया स्वेतीकरणे, पण्हा०३ अ०।

दुमपत्तय- न० *[दुमपत्रक]*
वृक्षपर्णे, उत्त०।

दुमपुप्फियज्झयण- न० *[द्रुमपुष्पिकाध्ययन]*
दशवैकालिकस्य द्रुमपुष्पोदाहरणयुक्त, दश० १ अ०।

दुमराय- पुं० *[द्रुमराज]*
प्रधानवृक्षे, ठा०४ ठा०४ उ०।

दुमसेण-१ पुं० *[द्रुमसेन]*
नवमवासुदेवबलदेवयोः पूर्वभवे स्वनामख्यातधर्माऽऽचार्ये,सम०

दुमसेण-२ पुं० *[द्रुमसेन]*
श्रेणिकस्य राज्ञो धारण्यां जाते पुत्रे, स च महावीरस्वामि ऽन्तिके प्रव्रज्य षोडशवर्षपर्यायः संलेखनया मृत्वाऽपराजिते देवलोके उपपद्य ततश्च्युत्वा महाविदेहे सेत्स्यति। अनुत्त० २ वर्ग० १ अ०।

दुमिय- त्रि० *[धवलित]*
श्वेतीकृते, सुधापङ्कधवलिते घृष्टे पाषाणाऽऽदिना उपरि घर्षिते ततो मृष्टे मसृणीकृते। सूर०२० पाहु०। । चंद०। भग०। कल्प०

दुमुह- पुं० *[द्विमुख]*
स्वनामख्याते द्वितीये प्रत्येकबुद्धे, उत्त०।

दुमोक्ख- त्रि० *[दुर्मोक्ष]*
दुःखेन मुच्यते इति दुर्मोक्षः। दुरुत्तरे, सूत्र ०१ श्रु०१२ अ०।

दुम्मइ- त्रि० *[दुर्मति]*
दुष्टा पापोपादानतया मतिर्यस्य सो दुर्मतिः। सूय०१ श्रु०११ अ०।
विपर्य्यस्तबुद्धौ, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०

दुम्मण- त्रि० *[दुर्मनस्]*
दैन्याऽऽदिमति, द्विष्ट इत्यर्थः। ठा०३ ठा० २ उ०।
'दुम्मणजणदइयवज्जियं।' कल्प०१ अधि०१ क्षण।

दुम्मणिय- न० *[दौर्मनस्य]*
दुष्टमनोभावे, दश०९ अ०३ उ०।

दुम्मय- पुं० *[दुर्मद]*
दुष्टो मदो दुर्मदः। दुष्टे मदे, तद्वति च।आचा०१ श्रु०९ अ०२ उ०

दुम्मुह- पुं० *[दुर्मुख]*
वसुदेवस्य धारण्यां जाते पुत्रे, अंत०३ वर्ग० १ अ०।

दुम्मेह- पुं० *[दुर्मेधस्]*
दुर्दुष्टा मेधा यस्यासौ दुर्मेधाः। उत्त०७ अ०
दुर्बुद्धौ, पण्हा०२ अ०। दश०। विपा० ।
दुष्टा विपर्य्ययाऽऽदिदोषदुष्टत्वेन मेधा वस्तुरूपाऽवधारणशक्ति-र्येषा ते दुर्मेधसः। विजयैर्जितेषु जन्तुषु, उत्त०७ अ०।

दुम्मोय- त्रि० *[दुर्मोच]*
दुःक्षपणीये, विशे०।

दुय- न० *[द्रुत]*
शीघ्रे, ठा०७ ठा०। निसि०। तं०।
नाट्यभेदे, जंबू०५ वक्ष०। आव०चू०। आव०म०।
गेयदोषे, द्रुतं यत्त्वरितं गीयते, त्वरितगाने हि रागपुष्टिरक्षव्यक्तिश्च न भवति। जंबू०१ वक्ष०। जीवा०।

दुयअ- त्रि० *[द्विक]*
द्विपरिमाणे, भग०८ श०१ उ०।

दुयअ- त्रि० *[द्विपद]*
द्विपदे, पृथिव्यप्कायप्रयोगपरिणतेष्विव द्विको द्विपरिमाणो, द्विपदो वा। भग० ८ श० १ उ०।

दुयचारित्त- न० *[द्रुतचारित्व]*
असमाधिस्थानभेदे, पण्हा०५ अ०।

दुयट्ठाण- न० *[द्विकस्थान]*
मूलगुणोत्तरगुणस्थाने, पंच०चू०। ।

दुयविलंबिय- न० *[द्रुतविलम्बित]*
विलम्बिताभिनये, रा०। आव० म०।

दुयाह- न० *[द्विकाह]*
दिनद्वये, आचा०२ श्रु०१ चू०३ अ०१ उ०।

दुर- अव्य० *[दुर्]*
अभावे, वव०२ उ०।

दुरइक्कम- त्रि० *[दुरतिक्रम]*
दुःखेनातिक्रमो लङ्घनविनाशो येषां ते तथा। आचा०१ श्रु०२ अ०५ उ०।
दुरतिलङ्घनीये, आचा०१ श्रु०५ अ०४ उ०।

दुरंत- न० *[दुरन्त]*
दुष्टोऽन्तो विनाशः प्रान्तो वा यस्य तद् दुरन्तम्। दुर्विनाशे, दुष्प्रान्ते, तं०। आचा०।
दुःखेनान्तः पर्यन्तो यस्य तद् दुरन्तम्। उत्त०५ अ०।
दुष्टपर्यन्ते, नाया०१ श्रु०८ अ०।
दुरवसाने, पण्हा०३ अ०।
विपाकदारुणे, पण्हा०२ आश्र ० द्वार।
'दुरतपतलक्खणो।' दुरन्तानि दुष्टपर्यवसानानि प्रान्तान्य सुन्दराणि लक्षणानि यस्य स तथा। उवा०२ अ०। भग०

दुरंतपंतलक्खण– पुं० *[दुरन्तप्रान्तलक्षण]*
दुरन्तानि-दुष्टावसानानि अत एव प्रान्तानि अमनोज्ञानि लक्षणानि यस्य सः। भग० १७४।
दुरन्तानि-दुष्टपर्यन्तानि प्रान्तानि-अपसदानि लक्षणानि यस्य सः। नाया० १३९।

दुरणुचर- न० *[दुरनुचर]*
दुःखाऽऽसेव्ये प्रवचने च। भग०९ श०३३ उ०। नाया०।
दुःखेनानुचर्यते सेव्यते यः स तथा। पण्हा०३ अ०।
मार्गे, संयमानुष्ठानविधौ च। आचा०१ श्रु०४ अ०४ उ०।

दुरणुपालय- पुं० *[दुरनुपालक]*
दुःखेनानुपाल्यत इति दुरनुपालः, स एव दुरनुपालकः।
दुःखानुपालनीये, उत्त० २३ अ०।

दुरत्थ- त्रि० *[दूरस्थ]*
ग्रामाऽऽदेर्बहिःस्थे, आचा०१ श्रु०८ अ०२ उ०

दुरप्प- पुं० *[दुरात्मन्]*
दुष्टाऽऽचारप्रवृत्ते आत्मनि, उत्त० २० ।ओह० ।आव०म०। पण्हा०

दुरभि- पुं० *[दुरभि]*
वैमुख्यकृति, अणुओ०।

दुरभिगंध- पुं० *[दुरभिगन्ध]*
दुरभिः सर्वेषामाभिमुख्येन दुष्टो गन्धो यस्यासौ दुरभिगन्धः।
दुर्गन्धयुक्ते, जीवा०३ प्रति०२ उ०। आचा०।

दुरभिगम- त्रि० *[दुरभिगम]*
दु:खेनाभिगन्तव्ये, 'तओ पच्छा अहेलोगे णं दुरभिगमे पण्णत्ते।' ठा०३ ठा० ४ उ०।
अध इत्यधोलोकमभिसमेति, एवं च सामर्थ्यात्प्राप्तमधोलोको दुरभिगम क्रमेण पर्यान्ताभिगम्यत्वादिति। ठा०३ ठा०४ उ०।
दुरवबोधे च। सम०१० सम।

दुरवगाह- त्रि० *[दुरवगाह]*
दुष्प्रवेशे, 'दुरवगाहं।' आव०१ अ०। विशे०। आव०म०।
दु:खाध्येये च। सम०१० सम।

दुरस- न० *[द्विरस]*
रसद्वये, तद्वति च। भग०१ श०७ उ०। ठा०।

दुरहि- पुं० *[दुरभि]*
दुर्गन्धे, तं०।

दुरहिगम- त्रि० *[दुरभिगम]*
'दुरभिगम' शब्दार्थे, ठा०३ ठा०४ उ

दुरहिट्ठिय- त्रि० *[दुरधिष्ठित]*
दुराश्रये दु:सेवे, दश०६ अ०।

दुरहियास- त्रि० *[दुरध्यास]*
सोढुमशक्ये दुर्विषहे, भग०१५ श०।
दुरधिसह्ये, भग०५ श०६ उ०। उवा०। विपा० ।

दुरहियासय- त्रि० *[दुरध्यासक]*
दुरधिसहनीये, आचा०१ श्रु०६ अ० २ उ०। सूय०।

दुरहिसह- त्रि० *[दुरधिसह]*
सोढुमशक्ये, ठा०९ ठा०।

दुराइ- न० *[द्विरात्र]*
द्वयो रात्र्यो: समाहारे, ठा०५ ठा०२ उ०।

दुराणुवत्त- त्रि० *[दुरानुवर्त]*
दु:खेनानुवर्त्ये, वव०३ उ०।

दुराराह- त्रि० *[दुराराध]*
दु:खेनाऽऽराध्ये, कल्प०३ अधि० ९

दुरारोह- त्रि० *[दुरारोह]*
दु:खेनाऽऽरुह्यतेऽध्यास्यत इति दुरारोह:। दुरध्यासे,उत्त०२३ अ०

दुरासय- त्रि० *[दुराश्रय]*
दु:खेनाऽऽश्रीयत इति दुराश्रय:। पण्हा०३ अ०।
दु:खेनाऽऽश्रयन्ति यमतिकोपनत्वादिभिरिति दुराश्रय:। उत्त०अ०
क्रूरे, उत्त०१ अ०।

दुरासय- त्रि० *[दुरासय]*
दु:खेनाऽऽसाद्यतेऽभिभूयते इति दुरासदम्।
दुरभिभवे,दश० २अ०
दु:सहे च। उत्त० २२ अ०।

दुरिय- न० *[दुरित]*
दुष्टमितं गमनं नरकाऽऽदिस्थानमनेनेति। पापे, आतु०।

दुरुक्क- न० *[दुरुक्त]*
दुष्टमुक्तम्। दुष्टवचने,। आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०८ उ०।

दुरुत्तर- त्रि० *[दुरुत्तर]*
दुर्लङ्घ्ये, सूय०१ श्रु०३ अ०२ उ०।
दुर्गमे च । सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०।

दुरुत्तार- त्रि० *[दुरुत्तार]*
दु:खेनोत्तरणीये, आव०३ अ०।

दुरुद्धर- त्रि० *[दुरुद्धर]*
दु:खेनोद्धर्तुं शक्ये, सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०

दुरुवचार- त्रि० *[दुरुपचार]*
दुष्टे उपचारे, तद्वति च। 'दुरुवचाराओ' तं०।
दुरुपचारा:–दुष्ट उपचार उपचारान्वितवचनाऽऽदिविस्तारो यासां तास्तथा स्त्रिय:। तं०।

दुरुवणीय- पुं० *[दुरुपनीत]*
दुष्टमुपनीतं निगमितमस्मिन्निति दुरुपनीतम्। उपन्यासहेतुभेदे, दश० १ अ०। ठा०।

दुरुवयार- त्रि० *[दुरुपचार]*
'दुरुवचार' शब्दार्थे, तं०।

दुरुव्वूढत्त- पुं० *[दुरुद्वेष्टक]*
दु:खेनोद्वेष्टने, वव०१ उ०।

दुरुहमाण- त्रि० *[दूरोहत्]*
दुष्टमारोहति, 'सेज्जासंथारए दुरुहमाणे'। आचा०२ श्रु०१ चू०२ अ०३ उ०।
'से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावं दुरुहमाणे।' आचा० २ श्रु०१ चू०३ अ०१ उ०।

दुरहियास- त्रि० *[दुरध्यास]*
दु:खेनाधिसह्ये, सूय० २ श्रु०१ अ०। जंबू०।

दुरूढ- त्रि० *[दुरुढ]*
आरूढे, ठा०९ ठा०। जंबू०।

दुरूव-१ त्रि० *[दुरूप]*
दुष्टं रूपं यस्य स दुरूप:। सूय०२ श्रु०३ अ०।
बीभत्सदेहे, सूय०२ श्रु०१ अ०।
विरूपे, नाया०१ श्रु०१ अ०।
'एगे दुरूवे।' अमनोज्ञरूपे, ठा०१ ठा०।

दुरूव-१ त्रि० *[दुरूप]*
दु:स्वभावे च भग०७ श०६ उ०।

दुरूवताय- पुं० *[दुरूपताक]*
दुरूपताहेतुतया परिणमति दुरूपतां करोती, भग०७ श०१० उ०

दुरूवभक्खि- पुं० *[दुरूपभक्षिण्]*
अशुच्यादिभक्षके, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।
दुरूहण- न० *[दूरोहण]*
आरोहणे, निसि०१२ उ०।
दुरूहित्तु- अव्य० *[दूरुह्य]*
समारुह्येत्यर्थे, समारोप्येत्यर्थे च। सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ०।
आरोढुम्। आव०।
दुरूहिय- अव्य० *[दूरुह्य]*
आरुह्येत्यर्थे, सूय०१ श्रु०११ अ०।
दुल्लभ- पुं० *[दुर्लभ]*
दुरापे, त्रि०। पण्हा०३ अ०। पञ्चा०। दश०। उत्त०। सूय०। आव०म०। आव०चू०। आतु०। आचा० भग०।
'जीवियं चयइ, दुच्चयं चयइ, दुक्करं करेइ, दुलहं लहइ, बोहिं बुज्झइ।' शतपाकसहस्रपाकाऽऽदिद्रव्ये, निसि० १ उ०।
दुल्लभदव्वागाढ- पुं० *[दुर्लभद्रव्यागाढ]*
दुर्लभद्रव्यालाभेऽनागाढे, 'सतपागसहस्सपागं घयं तेल्लं तेण साहुणो कज्जं, तम्मि अलब्भंते दुल्लभदव्वागाढं। निसि०११ उ०
दुल्लभबोहिय- पुं० *[दुर्लभबोधिक]*
दुर्ल्लभा बोधिर्भवान्तरे जिनधर्मप्राप्तिर्यस्यासौ दुर्लभबोधिकः। भवान्तरे दुरापजिनधर्मके, ठा०।
दुल्लभबोहियता- स्त्री० *[दुर्ल्लभबोहिकता]*
दुर्ल्लभा बोधिर्जिनधर्म्मो यस्य स तथा, तद्भावस्तत्ता। दुर्ल्लभ-जिनधर्म्मतायाम्, ठा०५ ठा०२ उ०। रा०।
दुल्ललिय- न० *[दुर्ललित]*
दुष्टेच्छायाम्, दुर्लभवस्तुवाञ्छायाम्, महानि० ६ अ०।
दुल्लह- त्रि० *[दुर्लभ]*
'दुल्लभ' शब्दार्थे, पण्हा०३ अ०।
दुल्लहसेज्जा- स्त्री० *[दुर्लभशय्या]*
असुलभवसत्तौ, निसि०।
दुवअण- न० *[द्विवचन]*
उच्यतेऽनेनोक्तिर्वेति वचनम्। द्वयोरर्थयोर्वचनं द्विवचनम्। ठा०३ ठा०९ उ०।
वस्तुद्वयप्रतिपादके वचने च। यथा वृक्षौ। आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०१ उ०। आव०म०। पन्न०।
दुवई- स्त्री० *[द्रौपदी]*
द्रुपदराजदुहितरि, नाया०।
दुवग्ग- पुं० *[द्विवर्ग]*
उभयकोटौ, निसि०१५ उ०। आचा०।
दुवण- न० *[दुवन]*
उपतापने, पण्हा०२ अ०।

दुवय- पुं० *[द्विपद]*
'दुपय' शब्दार्थे, सम०१२ सम।
दुवार- न० *[द्वार]* प्रतोल्याम्, आव०म०१ अ०१ खण्ड। ग्रामस्य मुखे बृह०१ उ०३ प्रक०। प्रासादभवनदेवकुलाऽऽदीनां प्रवेशमुखे च बृह०१ उ०३ प्रक०। पन्न०।
दुवारकम्म- न० *[द्वारकर्म]* द्वारस्य विषमायाः भूमेः समीकरणे, निसि०५ उ०।
दुवारपिहाण- न० *[द्वारपिधान]* कपाटमाश्रित्य द्वारस्थगने, आचा० २ श्रु०१ चू०२ अ०२ उ०।
दुवालस- पुं० *[द्वादशन्]*
द्वौ च दश च, द्व्यधिका वा दश, आत्वम् सङ्ख्याभेदे, पण्हा०। सूर०। आचा०।
दुवालसंग- न० *[द्वादशाङ्ग]*
परमपुरुषस्याङ्गानीवाङ्गानि द्वादश अङ्गान्याचाराऽऽदीनि यत्र तद् द्वादशाङ्गम्। श्रुते, अणुओ०।
दुवालसंगी- स्त्री० *[द्वादशाङ्गी]*
अङ्गप्रविष्ट श्रुते, सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०।
दुवालसंसिय- त्रि० *[द्वादशाश्रिक]*
द्वादश अश्रयः कोटयो यत्र तस्मिन् द्वादशकोणोपेते, अणुओ०। ठा०।
दुवालसम- त्रि० *[द्वादशम]* द्वादशसङ्ख्यापूर्वके, ठा०६ ठा०।
दुवालसविह- त्रि० *[द्वादशविध]* द्वादशप्रकारे, पण्हा०२ अ०। आव०चू०।
दुवालसायतण- न० *[द्वादशायतन]* द्वादशवस्तुषु, सूय०।
दुवेयग- पुं० *[द्विवेदक]* स्त्रीपुरुषवेदयुक्ते, बृह०४ उ०।
दुवारबाहा- स्त्री० *[द्वारबाहा]* द्वारभावे, आचा०२श्रु०१चू०१अ०५ उ०
दुवारसाहा- स्त्री० *[द्वारशाखा]* द्वारपार्श्वस्थकाष्ठाऽऽदौ, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०६ उ०।
दुवालसावत्त- न० *[द्वादशाऽऽवर्त]*
'दुवालसावत्ते कितिकम्मे पण्णत्ते तं जहा–दुओणयं जहाजायं, कितिकम्मं वारसावयं। चउसिरं तिगुत्ते दुपवेसं एगनिक्खमणं। इति सूत्राभिधानगर्भेषु कायव्यापारविशेषेषु, सम०१ सम०।
दुविट्ठ- पुं० *[द्विविष्ट]*
द्वितीये वासुदेवे, ति०। नवमे भविष्यति वासुदेवे, सम०।
दुविह- त्रि० *[द्विविध]*
द्वे विधे प्रकारावस्येति द्विविधः। आचा०१ श्रु०८ अ०८ उ०। द्विप्रकारे, सूय०१श्रु०८अ० ।आचा० ।विशे० ।उत्त० ।ठा०। पण्हा०
दुविहभूमिपत्त- त्रि० *[द्विविधभूमिप्राप्त]*
वयः (व्यञ्जनजातत्वाऽऽदि) श्रुतपर्याय (यावत्पर्यायस्य यत्श्रुतं दीयते) रूपश्रुतवाचनायोग्यतां प्राप्ते, निसि०१९ उ०।

दुव्वण्ण- न० *[दुर्वर्ण]*
अशुभवर्णे, निसि०।
'पंचवण्णोवणेयं दुव्वण्णं।' एकस्मिन्नपि पततीत्यर्थः। 'अहवा– प्रवालाङ्कुरसंनिभं सुवण्णं, सेसा सव्वे दुव्वण्णा।' अनिष्टा इत्यर्थः। निसि० १ उ०। भग०।
कुरूपे च। सूय० २ श्रु० २ अ०।

दुव्वय- त्रि० *[दुर्व्रत]*
असम्यग्व्रते, ठा०४ ठा०३ उ०।
दुष्टानि व्रतानि येषां ते तथा। यथा मांसभक्षणं, व्रतकालसमाप्तौ प्रभूततरसत्त्वोपघातेन मांसप्रदानम्, अन्यदपि नक्तभोजनादिकं दुष्टव्रतमिति।
तथाऽन्यस्मिन् जन्मान्तरे मधुमद्यमांसाऽऽदिकमभ्यवहरिष्यामी- त्येवमज्ञानान्धा जन्मान्तरविधिद्वारेण सनिदानमेव व्रतं गृह्णन्ति। सूय०२ श्रु०२ अ०।
व्रतवर्जिते, विपा० १ श्रु०१ अ०। दशा०।

दुव्वसुमुणि- पुं० *[दुर्वसुमुनि]*
मोक्षगमनायोग्ये, आचा०।

दुव्वह- त्रि० *[दुर्वह]*
वोढुमशक्ये, उत्त०१९ अ०।

दुव्वाइ- पुं० *[दुर्वाक्]*
अप्रियवक्तार, दश०२ अ०।

दुव्वामतरय- पुं० *[दुर्वाम्यतरक]*
दुस्त्याज्यतरकलङ्के, भग०६ श०१ उ०।

दुव्विअड्ड- पुं० *[दुर्विदग्ध]*
ज्ञानबलगर्वोद्धुरे, जीवा०२० अधि०।
पण्डितम्मन्ये, ठा०।

दुव्विअड्डा- स्त्री० *[दुर्विदग्धा]*
मिथ्याऽहङ्कारविडम्बितायां पर्षदि, नं०

दुव्विजाण- त्रि० *[दुर्विज्ञ]*
दुर्विज्ञातरि, पण्हा०१ अ०।

दुव्विण्णाय- त्रि० *[दुर्विज्ञात]*
दुष्टं विज्ञातं दुर्विज्ञातम्। दुष्टे विज्ञाते, आचा०१ श्रु०९ अ०२ उ०।

दुव्विणीय- त्रि० *[दुर्विनीत]*
दुर्विनययुक्ते, पण्हा०३ अ०। आव०। आव०म०।

दुव्विदड्ड- पुं० *[दुर्विदग्ध]*
'दुव्विअड्ड' शब्दार्थे, जीवा०२० अधि०।

दुव्विदद्ध- पुं० *[दुर्विदग्ध]*
'दुव्विअड्ड' शब्दार्थे, जीवा०२० अधि०।

दुव्विभज- न० *[दुर्विभज]*
कष्टविभजनीये, ठा०५ ठा०१ उ०।

दुव्वियड- त्रि० *[दुर्विवृत]*
दुष्टविवृतो दुर्विवृतः। परिधानवर्जिते, ठा०५ ठा०१ उ०।

दुव्वियड्ड- पुं० *[दुर्विदग्ध]*
'दुव्विअड्ड' शब्दार्थे, जीवा०२० अधि०।

दुव्वियद्ध- पुं० *[दुर्विदग्ध]*
'दुव्विअड्ड' शब्दार्थे, जीवा०२० अधि०।

दुव्विसह- त्रि० *[दुर्विषह]*
दुस्सहे, भग०७ श०६ उ०।

दुव्विहिय- पुं० *[दुर्विहित]*
पार्श्वस्थाऽऽदौ, आव०३ अ०।

दुसंणप्प- पुं० *[दुःसंज्ञाप्य]*
दुःखेन कृच्छ्रेण संज्ञाप्यन्ते प्रज्ञाप्यन्ते बोद्ध्यन्त इति दुःसंज्ञाप्याः। ठा०३ ठा०४ उ०।

दुसमदुसमा- स्त्री० *[दुःषमदुःषमा]*
अवसर्पिण्याः षष्ठे उत्सर्पिण्याश्च प्रथमेऽरके भग०।
'एक्कवीसवाससहस्साइं कालो दुसमदुसमा।'भग०६ श०७ उ०। ठा०। आव०चू०। तं०। ज्यो०

दुसमय- त्रि० *[द्विसमय]*
द्वौ समयौ यत्र स द्विसमयः। समयद्वयजाते, भग०१४ श०१ उ०।

दुसमयसिद्ध- पुं० *[द्विसमयसिद्ध]*
सिद्धत्वसमयात्त्रितीयसमयवर्तिनि, प्रकारान्तरेण तृतीयसमय- वर्तिनि परम्परसिद्धभेदे, पन्न० १ पद

दुसमसुसमा- स्त्री० *[दुःषमसुषमा]*
अवसर्पिण्याश्चतुर्थे उत्सर्पिण्यास्तृतीये चारके, भग०।
'एगा सागरोवमकोडाकोडीओ बायालीसए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दुसमयसुसमा।' भग० ६ श०७ उ०। जंबू०।
'एगा दुसमसुसमा।' ठा०१ ठा०।

दुसमा- स्त्री० *[दुःषमा]*
अवसर्पिण्याः पञ्चमे उत्सर्पिण्या द्वितीये चारके, भग०।
'एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दुसमा।' भग० ६ श०७ उ०। ठा०। ती०। ति०। आव०चू०। ज्यो०। तं०।
'दसहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा। तं जहा–अकाले वरिसइ, काले न वरिसइ, असाहू पूइज्जंति, साहु न पूइज्जंति, गुरुसु जणो मिच्छं पमिवण्णो अमणुण्णा सद्दा० जाव फासा।' ठा० १० ठा०।

दुसमाकाल- पुं० *[दुःषमाकाल]*
अवसर्पिण्याः पञ्चमे उत्सर्पिण्या द्वितीये च समये, जंबू०२ वक्ष०
'एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दुसमा।' भग० ६ श०७ उ०।

दुसुमिण- न० *[दुःस्वप्न]*
अशुभसूचके स्वप्ने, पण्हा०१ अ०।

दुस्संचार- त्रि० *[दुःसंचार]*
दुर्गमार्गे, दशा०१० अ०।

दुस्संबोह- पुं० *[दुःसम्बोध]*
दुःखेन सम्बोध्यते धर्मचरणप्रतिपत्तिः कार्यत इति दुःसम्बोधः। दुःखेन धर्माऽऽचरणं प्रतिपाद्यमाने, बोधयितुमशक्ये च। आचा० १ श्रु० १ अ०१ उ०।

दुस्समाण- पुं० *[दुष्यमाण]*
द्वेषं कुर्वति, सूय०१ श्रु०१२ अ०।

दुस्सल- स्त्री० *[दुःशल]*
दुर्ग्रहे, दुर्विनीते, बुह०९ उ०।

दुस्सह- पुं० *[दुःषह]*
'दुसह' शब्दार्थे, पण्हा०१ अ०।

दुस्सहिय- त्रि० *[दुःसहित]*
दुःखेनाधिसहिते, सूय०१ श्रु०३ अ०१ उ०।

दुस्साहड- त्रि० *[दुःसंहृत]*
दुःखेन संह्रियते मील्यते स्मेति दुःसंहृतम्। दुर्मिले, उत्त० ७ अ०

दुस्सिज्जा- स्त्री० *[दुःशय्या]*
विषमभ्रमाऽऽदिरूपायां शय्यायाम्, दश०८।

दुस्सील- त्रि० *[दुःशील]*
दुष्टं रागद्वेषाऽऽदिदोषकृतं शीलं स्वभावः समाधिराचारो वा यस्वासौ दुःशीलः। उत्त०१ अ०। दशा०। विपा० ।
शुभस्वभावहीने, विपा० १ श्रु०१ अ०।
दुष्टाऽऽचारे, गच्छा०१ अधि०। पण्हा०। उत्त०। बुह०।
दुःसमाधौ च। पिण्डोलके च। सूय०१ श्रु०१० अ०।

दुस्सुय- त्रि० *[दुःश्रुत]* दुष्टं श्रुतं श्रवणं यत्राऽसौ दुःश्रुतः। दुष्टश्रुते, पण्हा०२ अ०।
दुष्टं श्रुतं दुःश्रुतम्। दुष्टे श्रुते, । आचा०१ श्रु०४ अ०२ उ०।

दुस्सेज्जा- स्त्री० *[दुःशय्या]*
दुःखोत्पादकवसतौ, भग०१ श०९ उ०।

दुह- न० *[दुःख]*
नरके, नरकाऽऽवासे, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।
नरकाऽऽदियातनास्थाने, सूय०१ श्रु०१० अ०।
दुःखहेतुत्वासदनुष्ठाने, असातवेदनीयोदयात् तीव्रपीडाऽऽत्मके असाते, सूत्र० १ श्रु०५ अ०१ उ०।
असातवेदनीयोदये, सूय०१ श्रु०५ अ० १ उ०।
पीडायाम्, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।
शरीरमनसोरननुकूले, आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ०।
दुःखोत्पादके च। सूय०१ श्रु०१० अ०।
'विपुलकक्कसा य गाढा चंडा दुहा तिव्वा दुरहियासा।' इति एकार्थाः विपा० १ श्रु०१ अ०।

दुह- पुं० *[दोह]*
दुग्धे, दोहने, गोदोहनस्थाने च। बुह० ३ उ०।

दुहअ-१ त्रि० *[दुर्हत]*
दुष्टं हतो दुर्हतः। दुष्टहते, आचा० १ श्रु०३ अ० ३ उ०।

दुहअ-२ त्रि० *[द्विहत]*
द्वाभ्यां रागद्वेषाभ्यां हतो द्विहतः। द्वाभ्यां हते, आचा०१ श्रु०३ अ०३ उ०।

दुहओ- अव्य० *[द्विधा]*
प्रकारद्वये, आचा०१ श्रु०३ अ०३ उ०। रा० सूय०। उत्त०।

दुहओ- अव्य० *[द्विधातस्]*
द्वयोर्भागयोः, भग०१६ श०६ उ०।
उभयत इत्यस्यार्थे च। दशा०१० अ०। आचा०।
'दुहओ गुलित्ता।' बहिरन्तश्च गोमयाऽऽदिना लिप्ता। रा०।
द्विधातो द्वयोः पार्श्वयोः संवेल्लितानि अग्रणि यस्य तत् द्विधातः संवेल्लितात्रं न्यस्तं सामर्थ्यादुत्तरं यैस्ते तथा तेषाम्। रा०।
रागद्वेषाभ्यां हतः-द्विहतः। आचा०।

दुहओउण्णय- त्रि० *[द्विधोन्नत]*
उन्नते, भग०११ श०११ उ०। जीवा०।

दुहओखहा- स्त्री० *[द्विधाखा]*
उभयतोऽङ्कुशाऽऽकारायां श्रेण्याम्, ठा०७ नाया०। भग०।
नाड्या वामपार्श्वाऽऽदेनाडीः प्रविश्य तथैव गत्वा अस्या एव दक्षिणपार्श्वाऽऽदौ ययोत्पद्यते सा द्विधाखा नाडी, बहिर्भूतयोर्वा-मदक्षिणपार्श्वलक्षणयोर्द्वयोराकाशश्रेण्योस्तया स्पृष्टत्वादिति। भग० २५ श० ३ उ०।

दुहओणंतय- न० *[द्विधाऽनन्तक]*
सर्वाद्धायाम्, ठा०१० ठा०।

दुहओलोगासंसप्पओग- पुं० *[द्विधालोकाऽऽशंसाप्रयोग]*
भवेयामन्दस्ततश्चक्रवर्तीत्येयंरूपेऽर्थे, ठा० १० ठा०। भग०।

दुहओवंका- स्त्री० *[द्विधावक्रा]*
यस्यां वारद्वयं वक्रं कुर्वन्ति सा द्विधावक्रा। इयं चोर्ध्वक्षेत्रा-दाग्नेयदिशोऽधक्षेत्रे वायव्यदिशि गत्वा य उत्पद्यते तस्य भवति। तथाहि–प्रथमसमये आग्नेयास्तिर्यग्नैऋत्यां याति, ततस्तिर्यगेव वायव्यां, ततोऽधो वायव्यामेवेति। त्रिसमयेयं त्रसनाड्या मध्ये बहिर्वा भवतीति। भग० २५ श०३ उ०।
श्रेणीभेदे, उभयतो वक्रायां स्थापनायाम्। ठा०७ ठा०।

दुहट्ट- त्रि० *[दुर्घट]*
दुःस्थगे, उवा०२ अ०।
दुरवाप्ये, विपा० १ श्रु० २ अ०।

दुहट्ट- त्रि० *[दुःखाऽऽर्त्त]*
दुःखपीडिते, नाया०१ श्रु०१ अ०।

दुहट्टिय- त्रि० *[दुःखार्तित]*
दुःखयताति दुःखं रोयः, तेन आर्त्तः पीडितः क्रियते इति दुःखार्तितः। रोगपीडिते, उत्त०२ अ०।

दुहट्ट- पुं० *[दुःखार्थ]*
दुःखमेवार्थो यस्मिन् स दुःखार्थः।नरके, सूय० १श्रु०५अ०१उ०

दुहण- पुं० *[द्रुघण]*
चट्टकरे, पण्हा०३ अ०।
मुद्गर विशेषे च। पण्हा० १ अ०। उवा०।

दुहण- न० *[दोहन]*
दोहे, पण्हा०२ अ०।

दुहतोआवत्ता- स्त्री० *[द्विधातआवृत्ता]*
द्वीन्द्रियजीयभेदे, जीवा०१ प्रति०।

दुहलोगपडिणीय- पुं० *[द्विधालोकप्रत्यनीक]*
यौर्ष्याऽऽदिभिरिन्द्रियार्थसाधनपरे गतिप्रत्यनीके, भग०८श०८उ०

दुहविमोयणतर- त्रि० *[दुःखविमोचनतर]*
अतिशयेन दुःखविमोच्ये, भग० १९ श०२ उ०।

दुहविवाग- पुं० *[दुःखविपाक]*
पापकर्म्मफले, विपा० ।

दुहवेयणतर- त्रि० *[दुःखवेदनतर]*
अतिशयेन दुःखवेद्ये, भग० १९ श० २ उ०।

दुहसयविवाग- पुं० *[दुःखशतविपाक]*
दुःखशतरूपे कर्म्मफले,पण्हा० ३ अ०।

दुहसिज्जा- स्त्री० *[दुःखशय्या]*
शेरते आस्विति शय्याः दुःखदाः शय्या दुःशय्याः।

दुहसेज्जा- स्त्री० *[दुःखशय्या]*
'दुहसिज्जा' शब्दार्थे, ठा०४ ठा०३ उ०।

दुहा- स्त्री० *[द्विधा]*
प्रकारद्वये, आचा०१ श्रु०३ अ०३ उ०।

दुहा- त्रि० *[द्विविध]*
द्वे विधे प्रकारावस्येति द्विविधः। द्विप्रकारे, सूय०१ श्रु०७ अ०।

दुहापडिबद्ध- त्रि० *[द्विधाप्रतिबद्ध]*
द्विप्रकारेण बद्धे, ठा०३ ठा०२ उ०।

दुहावह- त्रि० *[दुःखावह]*
दुःखमावहतीति। दुःखोपार्जके, निसि० १ उ०।
दुःखदायके, उत्त०।
सर्वे कामाः शब्दाऽऽदयो दुःखाऽऽवहाः मृगाऽऽदीनामिव यतो दुःखावाप्तिहेतुत्वान्मत्सरेर्ष्याविषादाऽऽदिभिश्चित्तव्याकुलत्वोत्पादकत्वान्नरकाऽऽदिहेतुत्वाच्चेति। उत्त० १३ अ०। सूय०।

दुहावास- पुं० *[दुःखाऽऽवास]*
नरकाऽऽदिषु, सूय०१ श्रु०८ अ०।

दुहि- पुं० *[दुःखिन्]*
दुःखयुक्ते, सूय० १ श्रु०१ अ०३ उ०। उत्त०। आव०म०।

दुहिय- त्रि० *[दुःखित]*
दुःखं संजातमस्येति दुःखितः। सजातदुःखे, उत्त०९ अ०।

दुहिया- स्त्री० *[दुहिता]*
दुहितुः पतिः। जामातरि, आव०म०।

दुहिल- न० *[द्रुहिल]*
द्रुहिलं-द्रोहस्वभावम्। सूत्रदोष विशेषः। कलुषं वा येन पुण्यपापयोः समताऽऽपाद्यते। आव०।

दुहोवणीय- त्रि० *[दुःखोपनीत]*
सामीप्येन प्राप्तदुःखे, दश०१ चू०।
दुःखेन पीडयोपनीतान्युच्चारितानि दुःखोपनीतानि। पीडयोच्चरितेषु, । सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०।

दूअ- पुं० *[दूत]*
अन्येषां गत्वा राजाऽऽदेशनिवेदके, कल्प०१ अधि० ३ क्षण०।

दूइज्जंत- त्रि० *[दूयमान]*
गच्छति, वव०८ उ०।

दूइज्जंत- त्रि० *[द्रवत्]*
ग्रामानुग्रामं गच्छति, दूइज्जंता दुविधा, णिक्कारणिगा तहेव कारणिगा। असिवादी कारणिगा, वक्के मूलाइया इतरे। बुह०५ उ०

दूइज्जंतग- पुं० *[दूइजन्तक]*
मोराकसन्निवेशस्थेषु स्वनामख्यातेषु पाखण्डिषु, स्वनामख्याते तेषामधिपतौ, भगवतो महावीरस्य पितुः सिद्धार्थकस्य वयस्ये, मित्रे च। आव०म०।
मोराकसंनिवेशं प्राप्तस्य (तन्निवासी दूइज्जन्तकाभिधानपाखण्डस्थो दूइज्जन्तक एवोच्यते) पितुः सिद्धार्थस्य वयस्यो मित्रं स भगवन्तमभिवाद्य वसतिं दत्तवानिति।आव०म०१ । आव०चू०।

दूइज्जमाण- त्रि० *[दूयमान]*
विहरति, धातूनामनेकार्थत्वात्। आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०४ उ०

दूइज्जमाण- त्रि० *[द्रवत्]*
गच्छति, उव०। रा०। विपा० । नाया०। आचा०। अ०।

दूइज्जित्तय- अव्य० *[द्रोतुम्]*
विहर्तुमित्यर्थे, ठा०५ ठा०२ उ०।
ग्रामानुग्रामं हिण्डितुम्। कल्प० ९ क्षण०।

दूइपलासय- न० *[दूतिपलाशक]*
वाणिजकग्रामे स्वनामख्याते चैत्ये यत्र श्रीमहावीरस्वामी समवसृतः। भग०१० श०३ उ०। आव०चू

दूई- स्त्री० *[दूती]*
परस्परसंदिष्टार्थकथिका दूती। पिंड०।
द्वितीये उत्पादनदोषे, ठा०३ ठा०४ उ०।

दूईपिंड- पुं० *[दूतिपिण्ड]*
कार्वसङ्घटनाय दूत्यं विधत इति दूतीपिण्डः। द्वितीये उत्पादनादोषे, आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ० ९ उ०

दूत- पुं० *[दूत]*
अन्येषां ज्ञात्वा राजाऽऽदेशनिवेदके, उव०। रा०। कल्प०। नाया०। म०।

दूतविज्जा- स्त्री० *[दूतविद्या]*
विद्याभेदे, वव०१ उ०।
काचिद् दूतविद्या भवति, तया च दूतविद्यया यो दूत आगच्छति, तस्य दंशस्थानमापद्यते, तेनेतरस्य दंशस्थानमुपशाम्यति। वव० ५ उ०

दूभगसत्ता- स्त्री० *[दुर्भगसत्त्वा]*
दुर्भगः सत्त्वः प्राणी यस्याः सा तथा। दुर्भगप्राणिकायां योषिति, नाया०१ श्रु०१६ अ०।

दूभगनिंबोलिया-१ स्त्री० *[दुर्भगनिम्बगुलिका]*
निम्बगुलिकेव निम्बफलमिव अत्यनादेयत्वसाधर्म्याद् दुर्भगानां मध्ये निम्बगुलिका दुर्भगनिम्बगुलिका।
दुर्भगत्वान्निम्बगुलिका- वदनादेयायाम्, नाया० १ श्रु० १६ अ०।

दूभगनिंबोलिया-२ स्त्री० *[दुर्भगनिर्वोलिता]*
दुर्भगानां मध्ये निर्वोर्लिता निर्मथिता निमज्जिता दुर्भगनिर्वोलिता। दुर्भगानां मध्ये निमज्जितायाम्, नाया० १ श्रु०१६ अ०।

दूमग- त्रि० *[दावक]*
उपतापके, पण्हा० ३ अ०।

दूमण- न० *[दवन]*
उपतापने, पण्हा० ३ अ०।

दूमण- न० *[धवलन]*
श्वेतकिरणे, वव० ४ उ०।

दूमण- त्रि०न० *[दुर्मनस्]*
दुष्टमनसि, सूय० १ श्रु०२ अ०२ उ०।
दुष्टमनः कारिण उपतापकारिणो वा शब्दादयो विषयाः। सूय०

दूमिअ- त्रि० *[धवलित]*
सेट्यादिना श्वेतीकृते, कल्प०। नाया०। निसि०।
दूमिया नाम सुकुमारलेपेन सुकुमारीकृतकुड्या, सेटिकया धवलीकृता वा। बुह० १ उ०।

दूय- पुं० *[दूत]*
अन्येषां गत्वा राजाऽऽदेशनिवेदके, भग०७ श०९ उ०। उव०।

दूयकम्म- न० *[दूतकर्म]*
द्वितीये उत्पादनादोषे, उत्त०२४ अ०।
यदा गृहस्थगृहे गुप्तप्रकटसमाचारान् स्वजनाऽऽदीनां कथयित्वा आहारं गृह्णाति तदा दूतकर्माऽऽख्यो द्वितीयो दोषः।उत्त० २४अ०

दूयपलास- न० *[दूतपलाश]*
वाणिजक ग्रामनगरस्येशानकोणे स्वनामख्याते चैत्ये,उवा०१ अ०

दूयविज्जा- स्त्री० *[दूतविद्या]*
विद्याभेदे, वव०१ उ०।

दूर- त्रि० *[दूर]*
विप्रकृष्टे, भग०१ श०१ उ०। निसि०।
अगोचरे च। भग०२ श०१ उ०।
विप्रकर्षे, नाया०१ श्रु०१ अ०। निर०।
अत्यर्थे च। सम०।
दीर्घकाले, दूरवर्तित्वान्मोक्षे च। सूय० १ श्रु० २ अ०२ उ०।

दूरगइय- त्रि० *[दूरगतिक]*
सौधर्माऽऽदिगतिकेषु, ठा० ८ ठा०।

दूरपाय- न० *[दूरपात]*
दूरात्पतने, पण्हा०३ अ०।

दूरय- त्रि० *[दूरग]*
असमीपवर्तिनि, सूय० १ श्रु०५ अ०२ उ०।

दूरसुच्चंत- त्रि० *[दूरश्रूयमाण]*
दूरे श्रूयमाणे, पण्हा० ३ अ०।

दूरालइय- त्रि० *[दूरालयिक]*
दूरालयो मोक्षस्तन्मार्गो वा। मोक्षगामिनि, आचा०१ श्रु०३ अ०३

दूरालय- पुं० *[दूरालय]*
मौक्षे, मोक्षमार्गे च। आचा० १ श्रु० ३ अ०३ उ०।

दूरल्ल- त्रि० *[दूरवत्]*
दूरस्थे, आव०४ अ०।

दूरुहइत्ता- अव्य० *[दुरारुह्य]*
दुष्टमारुह्येत्यर्थे, उवा०२ अ०।

दूरुहमाणी- स्त्री० *[दुरारोहन्ती]*
दुष्टमारोहन्त्याम्, दश०५ अ०१उ०।

दूस- न० *[दूष्य]*
तन्तुसन्तानसम्भवे, जंबू०२ वक्ष०।
वस्त्रे, नाया०१श्रु ०१ अ०। उत्त०। आचा०। आव०म०। निसि०।
आच्छादनवस्त्रे, उव०।
वस्त्रजातो, जीवा०३ प्रति०४ उ०।
चीवांशुकाऽऽदौ च। सूय०२ श्रु०२ अ०।

दूसंतर- न० *[दूष्यन्तर]*
वस्त्ररचितभित्त्यन्तरे, उत्त०१६ अ०।

दूसगणि- पुं० *[दूष्यगणिन्]*
नन्द्यध्ययनकर्तुर्देववाचकस्य स्वनामख्याते गुरौ, नं०।

दूसपट्टपरिपूय- न० *[दूष्यपट्टपूरिपूत]*
वस्त्रपट्टगालिते, तं०।

दूसपणग- न० *[दूष्यपञ्चक]*
वस्त्रपञ्चके, दश० ।
दूसमा- स्त्री० *[दुःषमा]*
'दुसमा' शब्दार्थे, भग०६ श०६ उ० ।
दूसरयण- न० *[दूष्यरत्न]*
प्रधानवस्त्रे, कल्प० । उव० ।
दूसिय- त्रि० *[दूषित]*
दत्तदूषणे, प्राप्तदूषणे, अभिशस्ते, मैथुनापवादयुक्ते, उव० ।
दूषितं-कलुषितम् । आव० ।
दूसियपंडग- पुं० *[दूषितपण्डक]*
पण्डकभेदे, दूषितपण्डको द्विविधः आसिक्तः, उपसिक्तश्च ।बुह०
दूसिया- स्त्री० *[दूषिका]*
दूषयति नेत्रं क्लिन्नं करोति । नेत्रयोर्मले, निसि० ३ उ० । ठा० ।
देउल- न० *[दिवकुल]*
देवस्थाने, आव०म०१ । रा० ।
देउलदरिसण- न० *[देवकुलदर्शन]*
देवप्रतिमादर्शने, पिंड० ।
देउलिया- स्त्री० *[देवकुलिका]*
यक्षाऽऽदीनामावतने, बुह०१ उ० ।
देवकुलपरिपालके, । ओह० ।
देयड- पुं० *[द्दतिकार]*
शिल्पाऽऽचार्यभेदे, पन्न०१ पद । नाया० ।
देव- पुं०न० *[देव]*
दीव्यन्ति निरुपमकीडामनुभवन्तीति देवाः । नं० । दश० । ठा० ।
दिव्यन्ति यथेच्छं क्रीडन्तीति देवाः । आव०म० १ । पन्न० । ठा० ।
भगवत्याः त्रयोदशशते देवप्ररुपणार्थो द्वितीय उद्देशकः । भग०
देवशब्देन दवा देव्यश्च गृहीता । सम० ।
देवई- स्त्री० *[देवकी]*
कृष्णस्य वासुदेवस्य मातरि, सम० । आव० ।
सा च जम्बूद्वीपे भारते वर्षे आगमिष्यन्त्यामुत्सर्प्पिण्यां मुनि-सुव्रतो नाम एकादशमो जिनो भविष्यति । सम० ।
देवउत्त- त्रि० *[देवोप्त]*
देवेनोप्तो देवोप्तः । देवनिष्पादिते, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।
देवउत्त- *[देवगुप्त]*
देवरक्षिते, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।
देवउत्त- पुं० *[देवपुत्र]*
देवस्य पुत्रो देवपुत्रः । देवसुते, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।
देवउत्तवाइ- पुं० *[देवोप्तवादिन्]*
देवेनोप्तो देवोप्तः, कर्षकेणेव बीजवपनं कृत्वा निष्पादितोऽयं लोक इत्येवंवादिनि परतीर्थिके, सूय०१ श्रु०१ अ०३ उ० ।

देवउल- *[देवकुल]*
देवस्थाने, आव०म०१ अ०२ ।
देवंधगार- पुं० *[देवान्धकार]*
देवानामप्यऽन्धकारोऽसौ तच्छरीरप्रभाया अपि तत्राप्रभावना-दिति देवान्धकारः । तिमिरकाये, ठा० ४ ठा०२ उ० ।
देवानामपि तत्रोद्द्योताभावेनान्धकारभावात् भग०६ श०५ उ० ।
तमस्कायस्य सप्तमं नाम । देवानामति तत्रोद्योताभावेनान्धका-रात्मकत्वाद् देवान्धकारम् । भग० २७० ।
देवकज्ज- न० *[देवकार्य]*
देवकृत्ये, निर० १ श्रु०३ वर्ग०३ अ० ।
देवकम्म- न० *[देवकर्म्मन्]*
देवक्रियायाम्, ठा०५ ठा०२ उ० ।
देवकम्म- न० *[देवकार्म्मण]*
देवश्च कार्म्मणं च । तथाविधद्रव्यसंयोगे, ठा०५ ठा०२ उ० ।
देवकलिया- स्त्री० *[देवोत्कलिका]*
देवानां वातस्येवोत्कलिका देवोत्कलिका । देवलहरौ, ठा०४ ठा०३ उ० ।
तत्समवाय परिशेषे च । ठा०३ ठा०१ उ० । जीवा० ।
देवकहकहय- पुं० *[देवकहकहक]*
देवानां प्रमोदभरवशतः स्वेच्छावचनैर्बोलः कोलाहलो देवकह-कहकः । देवकोलाहले, जीवा०३ प्रति०५ उ० । आचा० ।
देवप्रमोदकलकले, ठा० ४ ठा०३ उ० । रा० ।
देवकाम- पुं० *[देवकाम]*
देवसंबन्धिविषये, उत्त० ७ अ० ।
देवकामाः-दिव्याङ्गनाङ्गस्पर्शादयः । उत्त० ।
देवकिब्बिस- पुं० *[देवकिल्बिष]*
देवकिल्विषभावनाजनिते देवभेदे, ठा० ४ ठा० ४ उ० ।
देवकिब्बिसिया- स्त्री० *[दैवकिल्बिषिकी]*
देवानां मध्ये किल्विषाः पापाः, अत एवाऽस्पृश्याऽऽदिधर्म्माण-श्चाण्डालप्रायाः, तेषामियं दैवकिल्विषिकी । संक्लिष्टभावनाभेदे, बुह०१ उ० । दश० ।
देवकिब्बिसियत्त- नं० *[देवकिल्बिषिकत्व]*
देवानां मध्ये किल्विषश्चाण्मालप्रायोऽत एवास्पृश्याऽऽदिधर्म्मको, देवश्चासौ किल्बिषश्चेति वा देवकिल्बिषः, तस्य भावस्तत्ता । किल्विषिकदेवत्वे, ठा० ४ ठा०४ उ० ।
देवकिब्बिसीया- स्त्री० *[दैवकिल्बिषिकी]* 'देवकिब्बिसिया' शब्दार्थे, बुह० १ उ० ।
देवकुमार- पुं० *[देवकुमार]*
देवबालक, रा० । तं० ।
देवबालिकायाम्, रा० ।

देवकुरु- पुं० *[देवकुरु]*
जम्बूमन्दरपर्वतस्य दक्षिणस्थे स्वनामख्याते देशविशेषे, ठा० २ ठा०३ उ०। जंबू०।
जम्बूद्वीपेद्वीपे दशक्षेत्रेषु स्वनामख्यातेऽन्यतमे क्षेत्रे, ठा०१० ठा० मन्दरपर्वतस्य दक्षिणस्यां दिशि देवकुरुषु देशेषु स्वनामख्याते ह्रदे च। ठा०५ ठा०२ उ०।
जम्बूद्वीपे द्वीपे षट्त्सु अकर्म्मभूमिषु स्वनामख्यातायामन्यत-मायां भूमौ, ठा०६ ठा०।
रतिकरपर्वते उत्तरस्थायामीशानदेवराजस्य रामरक्षिताया अग्र-महिष्याः स्वनामख्यातायां राजधान्यां।ठा०४ठा०२उ०। जीवा०।
जम्बूद्वीपे सौमनसे वक्षस्कारपर्वतस्थे स्वनामख्याते चतुर्थे कूटे, ठा० ७ ठा०।
जम्बूद्वीपे द्वीपे विद्युत्प्रभवक्षस्कारपर्वतस्थे स्वनामख्याते तृतीये कूटे, ठा० ९ ठा०
जम्बूद्वीपे द्वीपे मेरुपर्वतस्य दक्षिणपश्चिमायां दिशि सिद्धाऽऽ-यतनविद्युत्प्रभकूटयोर्दक्षिणपश्चिमस्थे स्वनामख्याते कूटे च। नं०। जंबू० ४ वक्ष०। ठा०।
'दो देवकुराओ।' ठा० २ ठा० ३ उ०।

देवकुरुमहदुम- पुं० *[देवकुरुमहाद्रुम]*
द्रुमभेदे, 'दो देवकुरुमहद्दुमा।' ठा० २ ठा० ३ उ०।

देवकुरुमहदुमावास- पुं० *[देवकुरुमहाद्रुमावास]*
आवासभेदे, 'दो देवकुरुमहाद्रुमावासा।' ठा०२ ठा०३ उ०।

देवकुरुय- पुं० *[देवकुरुज]*
अकर्म्मभूमिकमनुष्यभेदे, अणुओ०।
'पंचहिं देवकुरुएहिं।' पन्न०१ पद।

देवकुल- न० *[देवकुल]*
सशिखरे देवप्रासादे, पण्हा०१ अ०। उव०। अणुओ०। आचा०। देवकुलं-वनगह्वारम्। ओह० ५३।

देवकुलिय- पुं० *[देवकुलिक]*
देवस्थाननियुक्ते देवपूजके, आव०म०१ अ०।

देवगइ- स्त्री० *[देवगति]*
देवेषु गतिर्यस्यासौ देवगतिः, देवत्वप्रसाधिका वा मतिर्देव-गतिः। ठा०५ ठा०३ उ०।
दीव्यन्तीति देवाः नाकिनः, तेषां गतिर्गम्यमानत्वाद् देवगतिः, नामकर्म्मोदवसंपाश्चो देवत्वलक्षणः पर्य्यायविशेषो वेति देवगतिः। गतिभेदे, ठा० १० ठा०। उत्त०। रा०।

देवचिंतग- पुं० *[दैवचिन्तक]*
राज्ञां शुभाशुभचिन्तके, वव०१० उ०।

देवचेइय- न० *[देवचैत्य]*
जिनप्रतिमायाम्, दशा० १० अ०।

देवछंदग- पुं० *[देवच्छन्दक]*
देवाऽऽसने, जीवा०३ प्रति०४ उ०। रा०। आव०म०।

देवजस- पुं० *[देवयशस्]*
भगवतोऽरिष्टनेमिनः शिष्ये स्वनामख्यातेऽनगारे,आव०म०१ अ० आव०चू०।

देवजुइ- स्त्री० *[देवद्युति]*
शरीराऽऽमरणाऽऽदीनां दीप्तियोगे, निर०१ वर्ग०४ अ०। रा०।

देवज्जग- पुं० *[देवार्जक]*
देवश्रेष्ठे, आव०म० १ अ०।

देवट्ठाण- न० *[देवस्थान]*
देवभेदे, चतुर्विंशतिर्देवस्थानानि देवभेदाः दश भवनपतीनाम्, अष्टौ व्यन्तराणां, पञ्च ज्योतिष्काणाम्, एकं कल्पोपपन्नं वैमानिकानाम्। एवं चतुर्विंशतिः। सम० २४ सम०।

देवट्ठिइ- स्त्री० *[देवस्थिति]*
देवमर्यादायाम्, ठा०।

देवडुहडुहक- न० *[देवदुहदुहेत्येवं]*
देवदुहदुहेत्येवं शब्दप्रतिपादने, जीवा०३ प्रति०४ उ०। रा०।

देवड्ढि- स्त्री० *[देवर्द्धि]*
विमानरत्नाऽऽदिसंपदि, ठा०३ ठा०३ उ०।
परिवाराऽऽदिसम्पदि च। निर० १ श्रु०३ वर्ग०४ अ०।
बन्धदशानां स्वनामख्याते तृतीयेऽध्ययने, ठा०१० ठा०।

देवड्ढिपत्त- पुं० *[देवर्द्धिप्राप्त]*
देवर्द्धिविकुर्वणासमर्थेषु, कल्प०१ अधि०६ क्षण०।

देवणिकाय- पुं० *[देवनिकाय]*
देवसमानधर्म्मप्राणिसङ्घे, ठा०।

देवतम- न० *[देवतमस्]*
तमःकायभेदे, ठा०४ ठा०२ उ०।

देवता- न० *[देवत्व]*
देवभावे, ठा०४ ठा०४ उ०।

देवती- स्त्री० *[देवकी]*
कृष्णस्य वासुदेवस्य मातरि, अंत०३ वर्ग० ८ अ०।

देवदत्त- पुं० *[देवदत्त]*
देवा एनं देयासुरिति देवदत्तः। देवैर्दत्ते, पिंड०
धातकीखण्डभरते हरिषेणसय राज्ञः समुद्रदत्तायां भार्य्यायां जाते स्वनामख्याते पुत्रे, उत्त० ९ अ०।

देवदत्ता- स्त्री० *[देवदत्ता]*
चम्पायां नगर्य्यां स्वनामख्यातायां गणि० दश० ३ अ०। नाया०।
वीतभयनगरे उदायननृपतेर्महिष्याः प्रभावत्याः स्वनामख्यातायां चेट्याम्, आव०म० १ अ०२। पण्हा०।
विपाकश्रुतस्य स्वनामख्याते नवमेऽध्ययने, ठा०।

देवदार-न० *[देवद्वार]*
सिद्धाऽऽयतनस्य पूर्वदिक्स्थे स्वनामख्याते द्वारे, ठा०४ठा०२ उ०
देवदारु- न० *[देवदारु]*
गन्धाङ्गभेदे, आचा०१ श्रु०१ अ०५ उ०।
देवदाली- स्त्री० *[देवदाली]*
बहुबीजके लताविशेषे, पन्न०१ पद।
वल्लीविशेषः। पन्न० ३२।
देवदिण्ण-पुं० *[देवदत्त]*
राजगृहे नगरे धननाम्नः सार्थवाहस्य भद्रायां भार्यायां च जाते स्वनामख्याते पुत्रे, नाया०१ श्रु०२ अ०।
देवदीव- पुं० *[देवद्वीप]*
स्वनामख्याते द्वीपे, जीवा०।
देवदूसजुगल- न० *[देवदूष्ययुगल]*
देववस्त्रयुग्मे, जीवा०३ प्रति०४ उ०।
देवदेव- पुं० *[देवदेव]*
इन्द्रेषु, तीर्थकरेषु च। आव०चू०५ अ०।
देवदेवमहिय- पुं० *[देवदेवाधिक]*
इन्द्रादप्यधिके तीर्थकराऽऽदौ, आव०चू०५ अ०।
देवदेवमहिय- पुं० *[देवदेवमहित]*
देवाधिदेवपूजिते जिने, आव०चू० ५ अ०।
देवदोणी- स्त्री० *[देवद्रोणी]*
स्थल्याम्, 'साधम्मियत्थलीसुं।' निसि० १ उ०।
देवपंचिंदियसंसारसमावन्नजीव-पुं० *[देवपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीव]*
पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवभेदे, पन्न० १ पद।
देवपडिक्खोभ- पुं० *[देवप्रतिक्षोभ]*
तमःकाये, देवप्रतिक्षोभ इति,तत्क्षोभहेतुत्वात्। भग० ६श०५उ०
देवपरिसा- स्त्री० *[देवपरिषत्]*
देवपरिवारे, उव०।
देवपव्वय- पुं० *[देवपर्वत]*
जम्बूमन्दरपश्चिमस्थे सीतायाः महानद्या उत्तरकूलस्थे स्वनाम ख्याते वक्षस्कारपर्वते, ठा० ४ ठा० २ उ० जंबू०। ठा०।
पश्चिमवनखण्डवेदिकान्त्यविजयाभ्यां पूर्वस्थे स्वनामख्याते पर्वतयुगले च। 'दो देवपव्वया।' ठा० २ ठा०३ उ०।
देवप्पिय- पुं० *[देवप्रिय]*
वसन्तपुरे स्वनामख्याते श्रेष्ठिनि, गच्छा०२ अधि०।
देवफलिक्खोभ- पुं० *[देवपरिक्षोभ]*
तमस्काये, देवानां परिक्षोभहेतुत्वादिति।भग०६श०५उ०। ठा०
देवफलिह- पुं० *[देवपरिघ]*
देवानां परिघ इवार्गलेव दुर्लङ्घ्यत्वाद्देवपरिघ ।भग०६श०५उ० तमस्काये, भग० ६ श०५ उ०। ठा०।

देवभद्द- पुं० *[देवभद्र]*
देवद्वीपस्थे स्वनामख्याते देवे, चंद० २ पाहु०। । सूर०।
चैत्रगच्छस्थे भुवनेन्द्रसूरिशिष्ये स्वनामख्याते गणिनि, बुह०।
देवमइ- स्त्री० *[देवमति]*
स्वर्गिचातुर्ये, जंबू०३ वक्ष०।
देवमहाभद्द- पुं० *[देवमहाभद्र]*
देवद्वीपस्थे स्वनामख्याते देवे, सूर० १९ पाहु०। चंद०। जीवा०।
देवमहावर- पुं० *[देवमहावर]*
देवसमुद्रस्थे स्वनामख्याते देवे, सूर०१९ पाहु०। चंद०। जीवा०।
देवय- न० *[दैवत]*
देवतैव दैवतम्। ठा०३ ठा०१ उ०।
देवे, नाया० १ श्रु०१ अ०। दशा०। भग०। उव०। आव०। ओह०। आव० म०।
परमदेवतायां च। चंद० १८ पाहु०। ।
देवया- स्त्री० *[देवता]*
रागाऽऽदिदोषरहिते, । विशे०।
जिननायके, धर्माऽऽचार्ये, इन्द्राऽऽदिदेवेषु, ठा०। ओह०।
देवयाणाम- न० *[देवतानामन्]*
देवताऽभिधायके नामनि, अणुओ०।
देवयाभिओग- पुं० *[देवताभियोग]*
देवपरतन्त्रतायाम्, उवा०२ अ०
देवरण्ण- न० *[देवारण्य]*
देवानामरण्यमिव बलाद्भयेन नाशनत्वाद्यः स देवारण्यमिति। तमस्काये, ठा०४ ठा०२ उ०।
देवरमण- न० *[देवरमण]*
सौभाञ्जन्या नगर्याः बहिरुत्तर पश्चिमायां दिशि स्थिते स्वनामख्याते उद्याने, विपा० १ श्रु०४ अ०।
सुघोषनगरे उद्यानम्। विपा० ९५।
देवराय- पुं० *[देवराज]*
देवेषु कान्त्यादिगुणैः राजमाने, कल्प०१ अधि०१ क्षण। उवा०।
इन्द्रे, आव०४ अ०।
कोशलाविषये कस्मिंश्चिद् ग्रामे स्थिते स्वनामख्याते कुटुम्बिनि परमश्रावके, पिंड०।
देवरायकुंजरवरप्पमाण- पुं० *[देवराजकुञ्जरवरप्रमाण]*
देवराजो देवेन्द्रस्तस्य कुञ्जरो हस्ती तद्वद् वरं शास्त्रोक्तं प्रमाणं देहमानं यस्य स तथा। देवराजहस्तिशरीरप्रमाणसदृश प्रमाण-शरीरे, कल्प० १ अधि० २ क्षण।
देवल- पुं० *[देवल]*
मुनिभेदे, व्यासशिष्ये, धौम्यस्य ज्येष्ठभ्रातरि, 'देवकोषोपजीवी च, नाम्ना देवलको भवेत्।' इत्युक्ते विप्रे, सूय०।

देवलासुय- पुं० *[देवलासुत]*
उज्जयिनीनृपे, आव०चू० ।
देवलोग- पुं० *[देवलोक]*
देवानामिन्द्रादीनां लोकः स्थानम्। सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०। सौधर्माऽऽदिषु द्वादशसु लोकेषु, सूय०१ श्रु०५ अ०१ उ०। भग०
देवलोगगमण- न० *[देवलोकगमन]*
सुकुलप्रत्यागतौ, सम० ७ सम।
देवलोगसमाण- त्रि० *[देवलोकसमान]*
देवलोकसदृशे, दश०१ चू०
देवलोय- पुं० *[देवलोक]*
'देवलोग' शब्दार्थे, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।
देवलोयगमण- न० *[देवलोकगमन]*
'देवलोगगमण' शब्दार्थे, सम० ७ सम।
देवलोयसमाण- त्रि० *[देवलोकसमान]*
'देवलोगसमाण' शब्दार्थे, दश०१ चू०।
देववर- पुं० *[देववर]*
देवसमुद्रे, स्वनामख्याते देवे, सूर० १९ पाहु०। चंद०। जीवा०।
देववायग- पुं० *[देववाचक]*
नन्द्यध्ययनकर्त्तरि दूष्यगणिशिष्ये स्वनामख्याते आचार्य्ये, नं०।
देवविग्गहगइ- स्त्री० *[देवविग्रहगति]*
देवानां नाकिनां विग्रहान् क्षेत्र विभागानतिक्रम्य गतिर्गमनं देवविग्रहगतिः। स्थितिनिवृत्तिलक्षणायामृजुवक्ररूपायां विहायोगतिकर्म्माऽऽपाद्याया वा गतौ, ठा० १० ठा०।
देववूह- पुं० *[देवव्यूह]*
देवानां व्यूहः साङ्ग्रामिकव्यूह इव यो दुरधिगमत्वात्स देवव्यूहः। सागराऽऽदौ, ठा० ४ ठा० २ उ०। भग०।
देवसंघ- पुं० *[देवसङ्घ]*
देवसमुदाये, उव०।
देवसंसारविउस्सग्ग- पुं० *[देवसंसारव्युत्सर्ग]*
संसारव्युत्सर्गभेदे,उव०
देवसण्णत्ति- स्त्री० *[देवसंज्ञप्ति]*
देवसंज्ञप्तेर्देवप्रतिवाधना या सा तथा प्रव्रज्याभेदे, ठा०१० ठा०। 'उदायणसंबोही पभावाई देवसण्णत्ती।' पंच०भा०। पंच०चू०।
देवसण्णिवाय- पुं० *[देवसन्निपात]*
देवानां भुवि समवतारे, तं– अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं नाणुप्पयमहिमासु, एवं देवुक्कलिया देवकहकहए। ठा०३ ठा०१ उ०।
देवानां सन्निपातः समागमो रमणीयत्वाद्यत्र स तथा। देवसमागमोपेते शिलापट्टकाऽऽदौ, भग० २ श०१ उ०।
देवसङ्घाते च। रा०।
देवसत्त- पुं० *[देवशप्त]*
नपुंसकभेदे, गच्छा०१ अधि०। पंच०भा०।
'देवेहिं सत्तो देवसत्तो।' पंच०चू०। ।
देवसमुद्द- पुं० *[देवसमुद्र]*
स्वनामख्याते समुद्रे, देवः समुद्रो वृत्तो वलयाऽऽकारसंस्थान-संस्थितो यावत् परिक्षिप्य तिष्ठति, अत्राऽपि समचक्रवालाऽऽदि सूत्राणि तथैव, नवरं देवोदकस्य समुद्रस्य विजयद्वारं देवोदक-समुद्रपूर्वार्द्धपर्यन्ते नाम द्वीपपूर्वार्द्ध पश्चिमदिशि, अत्र वक्तव्यम्– राजधानी विजयद्वारस्य पश्चिमदिशि देवं समुद्रं तिर्यग्संख्येयानि योजनशतसहस्राणि अवगाह्य वक्तव्यता।
एवं वैजयन्तजयन्ता-पराजितद्वारवक्तव्यताऽपि भावनीया, नामान्वर्थाचिन्तायामपि देववरदेवमहावरौ देवौ, शेषं तथैव यथा देवद्वीपः। जीवा० ३ प्रति०
देवसम्मण- पुं० *[देवशर्म्मन्]*
काम्पिल्यनगरासन्ने कस्मिंश्चिद् ग्रामस्थिते गौतमप्रतिबोधिते।तं० स्वनामख्यातेब्राह्मणे,उत्त०१३अ०।आव०चू०।कल्प०।आव०म० जम्बूद्वीपे ऐरवते वर्षे अस्यामेवोत्सर्प्पिण्यां जाते देवसेनापर-नामके स्वनामख्याते एकादशे तीर्थकरे, सम०।
देवसयणिज्ज- न० *[देवशयनीय]*
देवशय्यायाम्, जीवा०।
देवसिअ- त्रि० *[दैवसिक]*
दिवसेन निर्वृत्तो दिवसपरिणामो वा दैवासिकः। दिवसभवे, आव०४ अ०। आव०म०। आव०चू०।
दिवसे भवा दैवसिकी। दिवसभवायाम्, उव०।
देवसेण- पुं० *[देवसेन]*
देवा सेना यस्य, देवाधिष्ठिता वा सेना यस्य स देवसेन इति। शतद्वारनगरस्थे महापद्मापरनामके स्वनामख्याते नृपे, ठा० ९ ठा०। भग०।
भद्दिलपुरनगरे नागस्य गृहपतेः सुलसानामभार्यायामुत्पन्ने स्वनामख्याते पुत्रे, स चारिष्टनेमेरन्तिके प्रव्रज्य शत्रुञ्जये सिद्ध इत्यन्तकृद्दशानां पञ्चमेऽध्ययने सूचितम्। अंत०१ वर्ग०१ अ०।
देवाइ-पुं० *[देवादि]*
देवाऽऽदियोगाद्देवाऽऽदिः। जिने, 'देवाइ समणे भगवं । रा०।
देवाइदेव- पुं० *[देवातिदेव]*
देवान् शेषानतिक्रान्ताः पारमार्थिकदेवत्वयोगाद्देवातिदेवाः। पञ्चविधभव्यद्रव्यदेवाऽऽदिदेवभेदे, भग० १२ श०९ उ०।
देवाउय- न० *[देवाऽऽयुष्]*
देवानामायुष्कर्म्मणि, 'चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति। तं जहा– पगइभद्दयाए, विणीययाए, साणुक्कोसयाए, अमच्छरियाए।' ठा० ४ ठा० ४ उ०

देवाणंदा- स्त्री० *[देवानन्दा]*
ब्राह्मणकुण्डग्रामे कोडालसगोत्रस्य ऋषभदत्ताभिधानस्य ब्राह्मणस्य जालन्धरायणसगोत्रायां भार्य्यायां महावीरस्वामिनो मातरि, आचा०२ श्रु०३ चू०१ अ०।
पुरन्दराऽऽदिष्टेन हरिनैगमेषिदेवेन यदुदरात् त्रिशलाभिधानाया राजपत्न्या उदरसंक्रामणं भगवतमहावीरस्य कृतम्। ठा०१०ठा०

देवाणुपुव्वी- स्त्री० *[देवानुपूर्वी]*
एकोनविंशतितमे शुभकर्म्मभेदे, उत्त०३३ अ०।
आनुपूर्वीविशेषः। पन्न० ४७३।

देवाणुप्पिय- पुं० *[देवानुप्रिय]*
सरलस्वभावे, कल्प०१ अधि०। भग०। रा०। विपा० ।
स्वामिनोऽनुकूलाचरणेन अनुप्रीणन्ति इति देवानुप्रियाः। जंबू०।

देवाणुभाग- पुं० *[देवानुभाग]*
अद्धुवैक्रियशरीराऽऽदिशक्तियोगे, नि० १ वर्ग० ४ अ०।

देवाणुभाव- न० *[देवानुभाव]*
कोषदण्डाऽऽदिजाते देवानां तेजोविशेषे, सामर्थ्ये च। रा०। ठा०

देवातिदेव- पुं० *[देवातिदेव]*
देवानां मध्येऽतिशयवान् देवातिदेवः। अर्हति, ठा०५ ठा०१ उ०।

देवारण्ण- न० *[देवारण्य]*
देवानां क्रीडास्थाने, ज्यो०६ पाहु०। ।
तमस्काये, देवारण्यमिति वा बलवद्देवभयान्नश्यतां देवानां तथाविधाऽऽरण्यमिव शरणभूतत्वात्। भग० ६ श० ५ उ०।

देवावास- पुं० *[देवाऽऽवास]*
देवानां भवनपत्यादीनां स्थानेषु, भग० १३ श०२ उ०।

देवावासंतर- न० *[देवाऽऽवासान्तर]*
देवाऽऽवासविशेषे, भग०१० श० ३ उ०।

देवावुक्कलिया- स्त्री० *[देवोत्कलिका]*
'देवकलिया' शब्दार्थे, ठा० ४ ठा०३ उ०।

देवाहिदेव- पुं० *[देवाधिदेव]*
तीर्थकरेषु, ते च चतुर्विंशत्। सम०२३ सम०। आव०।

देवाहिवइ- पुं० *[देवाधिपति]*
देवेषु अधिपतिर्देवाधिपतिः। देवेष्वधिककान्तिधारिणि, उत्त० ११ अ०। सूय०।
इन्द्रे, सूय०१ श्रु०६ अ०।

देविंद- पुं० *[देवेन्द्र]*
दीव्यन्तीति देवा भवनवास्यादयस्तेषामिन्द्राः प्रभवो देवेन्द्राः। चमराऽऽदिषु, आव०४ अ०। आव०म०। कल्प०।
ते च द्वात्रिंशत्। सम०। उवा०।

देविंदत्थव- पुं० *[देवेन्द्रस्तव]*
देवेन्द्रवक्तव्यताप्रतिबद्धे स्वनामख्याते प्रकीर्णकसूत्र, देविं०।

देविंदोग्गह- पुं० *[देवेन्द्रावग्रह]*
अवगृह्यते स्वामिना स्वीक्रियते यः सोऽवग्रहः। देवेन्द्रस्य शक्रस्य ईशानस्य वाऽवग्रहः। दक्षिणलोकार्द्धे, उत्तरे च। भग०।
देवेन्द्रस्य लोकमध्यवर्तिरुचकदक्षिणार्द्धमवग्रहः। आचा० २ श्रु० १ चू० ७ अ० १ उ०।

देविंदोववाय-पुं० *[देवेन्द्रोपपात]*
स्वनामख्याते कालिकश्रुतभेदे,। पा०।

देविंधयार- न० *[देवान्धकार]*
अन्धकारभेदे, ठा०।

देविड्ढि- स्त्री० *[देवर्द्धि]*
त्रिधात्रिधा प्रकाराभ्यां षट्धा देवर्धिः। ठा०३ ठा०४ उ०।

देवित्थी- स्त्री० *[देवस्त्री]*
स्त्रीभेदे, जीवा० २ प्रति०।

देविलासुय- पुं० *[देविलासुत]*
अनुरक्तलोचनायाः पत्यौ स्वनामख्यातउज्जयनीनृपे,आव०४ अ०

देवी- स्त्री० *[देवी]*
दीव्यति, दुर्गायाम्, उत्त०।
'यत्प्रभावादवाप्यन्ते, पदार्थाः कल्पनां विना। सा देवी संविदे नः स्तादस्तकल्पलतोपमा। उत्त०१ अ०।
भूर्वायाम, स्पृक्कायां च।देवस्य पत्नी। देवपत्न्याम्, ठा०।
देवीनां सुरवधूनाम्।राजाग्रमहिष्याम्, वव०३उ०।सूर०। पण्हा०
जम्बूद्वीपे भारते वर्षे अस्यामेवोत्सर्प्पिण्यां सप्तमस्यारनाम्नश्चक्रवर्तिनः स्वनामख्यातायां मातरि, सम०। आव०।
अत्रैव दशमहरिषेणचक्रवर्तिनः स्वनामख्यातायां पत्न्याम्, सम०
अस्यामेवोत्सर्पिण्यामष्टादशमस्याऽरस्वामिनस्तीर्थंकरस्य स्वनामख्यातायां मातरि, सम०। आव०।

देवीपडिमा- स्त्री० *[देवीप्रतिमा]*
देव्या मूर्तौ, तत्थ रण्णो देवीओ य पडिमा कया। आव०म०१ ।

देवुक्कलिया- स्त्री० *[देवोत्कलिका]*
देवानां वा तस्यैवोत्कलिका देवोत्कलिका।आव०म०१। पण्हा०।
तत्समवायविशेषे, ठा०३ ठा०१ उ०। रा०।
देवलहरौ च। ठा० ४ ठा० ३ उ०।

देवज्जोय- पुं० *[देवद्योत]*
देवप्रकाशे, ठा०।

देवेंदगणि- पुं० *[देवेन्द्रगणिन्]*
देवभद्रगणिशिष्ये तपागच्छस्थे स्वनामख्याते गणिनि, देवभद्रगणिमधिकृत्यतेषामुभौ विनेयौ, देवेन्द्रगणीन्द्रविजयचन्द्राह्वौ।' गच्छा० ४ अधि०।

देवेसरवंदिय- पुं० *[देवेश्वरवन्दित]*
देवेन्द्रवन्दिते, 'देवेसरवंदियं च मरुदेवं।' सम०।

देवोववाय- पुं० *[देवोपपात]*
जम्बूद्वीपे भारते वर्षे आगमिष्यन्त्यामुत्सर्पिण्यां त्रयोविंशतितमे स्वनामख्याते भविष्यति तीर्थकरे, सम० ।

देस-१ पुं० *[देश]*
जनपदे, बृह०४ उ० । जीत० । ठा० । आव० । निसि० । रा० ।
मण्डले, ठा०५ ठा०३ उ० ।
जन्मक्षेत्राऽऽदौ, ठा०३ ठा०३ उ० ।
प्रदेशे, ठा०३ ठा०३ उ० । भग० । अणुओ०
प्रकारे, विशे० । ठा० ।
अवयवविशेषे, ठा०१ ठा० । जीवा० ।
अंशे, आतु० । पण्हा० ।
पूर्वाऽऽदिदिक्षु, ठा०७ ठा० ।
एकदेशे उवा०१ अ० ।
प्रस्तावे, विशे० ।
देशः प्रस्तावोऽवसरो विभागः पर्याय इत्यनर्थान्तरम्। दश०१ अ० । आव०म० । विशे० ।

देस-२ पुं० *[देश]*
देशनं देशः । कथने, विशे० । आव०म० ।

देसकहा- स्त्री० *[देशकथा]*
तृतीये विकथाभेदे, गच्छा०१ अधि० ।
देशस्य जनपदस्य कथा देशकथा । ठा० । आव० ।

देसकाल- पुं० *[देशकाल]*
देशः प्रस्तावोऽवसरो विभागः पर्याय इत्यनर्थान्तरम्। स देशरूपः कालो देशकालः। अभीप्सितवस्त्ववाप्यवसरकालरूपे कालभेदे, विशे० । आतु० । आव०चू० ।

देसकालजुय- त्रि० *[देशकालयुत]*
क्षेत्रकालोचिते, पन्न० १ पद ।

देसकालण्णया- स्त्री० *[देशकालज्ञता]*
अवसरोचितार्थसम्पादनरूपायां प्रस्तावज्ञतायाम्, भग०२५ श०७

देसकालदाण- न० *[देशकालदान]*
कटकाऽऽदौ विशिष्टनृपतेः प्रस्तावदाने, दश० ९ अ० १ उ० ।

देसकालभावण्ण- पुं० *[देशकालभावज्ञ]*
देशं कालं भावं च लोकानां ज्ञात्वा सुखेन विहरति शिष्याणां वाऽभिप्रायान् ज्ञात्वा सुखेनानुवर्त्तयति । आचा० ।

देसकालावइत्ता- न० *[देशकालाव्यतीतत्व]*
प्रस्तावोचिततारूपे चतुर्दशसत्यवचनातिशये,सम०३५सम० ।रा०

देसकालसंवरण- न० *[देशकालसंस्मरण]*
स्मरणभेदे, वव०१ उ० ।

देसग- पुं० *[देशक]*
देशयति कथयतीति देशकः । कथके, सम० १ सम० ।

देसग्ग- न० *[देशाग्र]*
देशान्ते, नाया० १ श्रु०१५ अ० ।

देसच्चाइ-पुं० *[देशत्यागिन्]*
देशस्य जन्मक्षेत्राऽऽदेस्त्यागो देशत्यागः स यस्मिन्नविनये प्रभु-गालीप्रदानाऽऽदावस्ति न देशत्यागी ।जन्मनक्षत्राऽऽदित्यागवत्य-विनये, ठा० ३ ठा० ३ उ० । निसि०

देसच्चाय- पुं० *[देशत्याग]*
जन्मक्षेत्राऽऽदित्यागे, ठा०३ ठा०३ उ०

देसच्छंद- पुं० *[देशच्छन्द]*
देशविषयके गम्यागम्यविभागे, ठा०३ ठा०३ उ० ।

देसच्छंदकहा- स्त्री० *[देशच्छन्दकथा]*
देशकथाभेदे, ठा०३ ठा०३ उ० ।

देसजइ- पुं० *[देशयति]*
सर्वेण द्वादशव्रताऽऽत्मकेन देशेन वाऽन्तरव्रतप्रतिपत्तिलक्षणेन युक्ते श्रावके, आतु० ।

देसण- न० *[देशन]*
प्ररूपणे, नं० ।

देसणा- स्त्री० *[देशना]*
धर्मकथायाम्, ठा० ।
कथने, जीवा० २७ अधि० ।
आख्यातं भगवतेदं न कुड्याऽऽदिनिः सृतं, यथा कश्चिदभ्युप-गम्यते– ठा० ९ ठा० ।

देसणिग्गमण- न० *[देशनिर्गमन]*
देशेषु विहारक्रमकरणे, वव० ३ उ०

देसणी- स्त्री० *[देशनी]*
प्रज्ञापन्याम्, दश० ७ अ० ।

देसणेवत्थ- न० *[देशनेपथ्य]*
देशानुकूले स्त्रीपुरुषाणां वेषे, देशकथाभेदे, ठा०४ ठा०२ उ० ।

देसदंसण- न० *[देशदर्शन]*
देशनिरीक्षणे, बृह० ।

देसधम्म- पुं० *[देशधर्म]*
देशाऽऽचारे, देशधर्मो देशाऽऽचारः। स च प्रतिनियत एव नेपथ्याऽऽदिभेदलिङ्ग इति। दश० १ अ० ।

देसप्पंत- पुं० *[देशप्रान्त]*
देशस्य शेषसीमायाम्, विपा० १ श्रु० १ अ०

देसबंध- पुं० *[देशबन्ध]*
देशतो देशापेक्षया बन्धः। बन्धभेदे, भग० ८ श० ९ उ० ।

देसभासा- स्त्री० *[देशभाषा]*
मालवमहाराष्ट्राऽऽदिप्रसिद्धभाषायाम्, बृह० ६ उ० ।
पुरुषद्वासप्ततिकलाभेदे, कल्प०१ अधि० ७ क्षण।

देसय- पुं० *[देशक]*
देशयतीति देशकः। उपदेष्टरि, आव०म०१ अ० । आव०।

देसवासी- पुं० *[देशवर्षिन्]*
देशे आत्मनो वा देशेन वर्षतीति देशवर्षी। एकदेशमात्रे वर्षण-शीले, ठा० ४ ठा० ४ उ०।

देसविअप्पकहा- स्त्री० *[देशविकल्पकथा]*
देशकथाभेदे, ठा०।

देसवित्थाराणंतय- न० *[देशविस्तारानन्तक]*
एक आकाशप्रतरः सर्व विस्तारानन्तकसर्वाऽऽकाशास्तिकाय इत्येवंरूपेऽनन्तभेदे, ठा० १० ठा०।

देसविरइसामाइय- न० *[देशविरतिसामायिक]*
देशविरतिरुक्तस्वरूपैव सामायिकमिति। सामायिकभेदे, अस्य पर्यायाः–'विरयाविरई संवुडमसंवुडे बालपंडिए चेव देसिक्क देसविरई अणुधम्मो य।' विशे०। आव०म०।

देसविराहय- पुं० *[देशविराधक]*
देशं स्तोकमंशं ज्ञानाऽऽदित्रयरूपस्य मोक्षमार्गस्य तृतीयभागरूपं चारित्रं विराधयति। प्राप्तस्य चारित्रस्यापालनादप्राप्तेर्वा देश-मात्रस्य विराधके, भग० ८ श० ९ उ०

देससंका- स्त्री० *[देशशङ्का]*
यथाऽस्ति जीवः केवलं सर्वगतोऽसर्वगतो वा सप्रदेशोऽप्रदेशो वेति शङ्का देशविषया,जीवाऽऽद्यन्यतमपदार्थैकदेशगोचर।निसि०

देससाहणणबंध- पुं० *[देशसंहननबन्ध]*
देशेन देशस्य संहननलक्षणो बन्धः संबन्धः शकटाङ्गाऽऽदी-नामिव। देशसंहननबन्धभेदे, भग०८ श०९ उ०।

देसाराहय- पुं० *[देशाऽऽराधक]*
सम्बोधरहितत्वाक्रियापरत्वाद् देशं स्तोक अंशं मोक्षमार्गस्याऽऽ-राधयति। देशमात्राऽऽराधके, भग० ८ श०९ उ०।

देसावगासिय- न० *[देशावकाशिक]*
देशे दिग्व्रतगृहीतस्य दिक्परिमाणस्य विभागोऽवकाशोऽवस्थान मवतारो विषयो यस्य तद्देशावकाशं, तदेव देशावकाशिकम्। दिग्व्रतगृहीतस्य दिक्परिमाणस्य प्रतिदिनं संक्षेपकरणलक्षणे, सर्वव्रतसंक्षेपकरणलक्षणे वा। ठा० ४ ठा० ३ उ०।

देसाहिवइ- पुं० *[देशाऽधिपति]*
देशाऽऽरक्षिके, देशव्यापृतिकेवा। बुह०४ उ०। ठा०।

देसि- त्रि० *[देशिन्]*
देशवति, अवयविनि, विशे०।

देसिक्कदेसविरय- पुं० *[देशैकदेशविरत]*
श्रावके, आतु०।
षण्णां पृथिव्यादिकायानां षष्ठांशत्वाद् देशस्त्रसकायव्यपरोपण-लक्षणः, तस्यापि संकल्पजाऽऽरम्भजत्वेन द्विभेदत्वादेकदेशः संकल्पजत्रसविनाशनिवृत्तिरूपः पुनस्तस्यापि सापराधीनपरपरा-धभेदद्वयेन द्विप्रकारत्वादत्र। नरपराधसंकल्पजत्रसजीवविनाश-निवृत्तिरूपो देशैकदेशस्तेन स्वयं हननघातनाद्विरतो निवृत्तो देश-विरतः। आतु०।

देसिगणि- पुं० *[देशगणि]*
स्वनामख्याते आचार्ये, 'अथिरचरित्तं, उत्तमसम्मत्तसत्त संजुत्तं। देसिगणिखमासमणं, माढरगुत्तं नमंसामि' ।कल्प०२ अधि० ८ ।

देसितव- त्रि० *[देशितवत्]*
प्रकाशिते, सूय०१ श्रु०९ अ०।

देसिता- अव्य० *[देशित्वा]*
कथयित्वेत्यर्थे, आव०म०१ अ०

देसिय-१ पुं० *[देशिक]*
देशनं देशः कथनं, सोऽस्यास्तीति देशिकः। गुरो, उपदेष्टरि, आव०म०१ अ०। विशे०। वव०।
बृहत्क्षेत्रव्यापिनि, आचा० २ श्रु० १ चू० १ अ० ३ उ०।

देसिय-२ त्रि० *[देशित]*
उपदिष्टे, कथिते, विशे०। आव०। जीवा०

देसिय-३ त्रि० *[दैवसिक]*
दिवसयाते, देसियं च अईआइं, चिंतिज्ज अणुपुव्वसो। उत्त०२६
दिवसनिर्वृत्तं प्रतिक्रमणम्। आव०।

देसिल्लग- त्रि० *[देशीय]*
देशोद्भवे, बुह०३ उ०।
यथा पाण्डुवर्द्धनकम्। निसि०१६ उ०।

देसीतो- अव्य० *[देशीतस्]*
देशीभाषामाश्रित्येत्यर्थे, बुह० २ उ०।

देसीनाममाला- स्त्री० *[देशीनाममाला]*
देशीभाषानामकोषे, रा०।

देसीपोरपमाण- त्रि० *[देशीपर्वप्रमाण]*
अङ्गुष्ठपर्वपरिमितमुष्टिप्रमाणे, देशीशब्दस्याऽङ्गुष्ठवाचकत्वात्। वव० ८ उ०। निसि०।

देसीभासा- स्त्री० *[देशीभाषा]*
देशप्रसिद्धाऽपभ्रंशभाषायाम्, आव० चू०१ अ०। आचा०।

देसेय- त्रि० *[देशैजस्]*
देशैश्चले (देशैजा देशतश्चलाः) भग०२५ श० ४ उ०।

देसोहि- पुं० *[देशावधि]*
देशप्रकाशके अवधिज्ञाने, सम०।

देह- पुं० *[देह]*
देहः। आहारपरिणामजनितोपचये, शरीरे, अणुओ०। उत्त०। आव०। विशे०। आव०चू०। आव०म०। ठा०।
पिशाचनामभेदे, पन्न० १ पद।

देहवलिया- स्त्री० *[देहवलिका]*
अनुस्वारो नैपातिकः। देहबलमित्यस्याख्याने,नाया०१श्रु०१६ अ० भिक्षावृत्तौ, देहंवलिका नाम भिक्षावृत्तिः। आव०म०१अ० ।

देहवुव्वलदोस- पुं० *[देहदुर्बलदोष]*
संहननदुर्बले, पंच०चू०। ।

देहपरिणाम- पुं० *[देहपरिणाम]*
प्रतिविशिष्टायां शरीरशक्तौ, आचा० १ श्रु०१ अ०४ उ०।

देहपलोयण-न० *[देहप्रलोकन]*
आदर्शाऽऽदौ देहदर्शने, दश०३अ०

देहबल- न० *[देहबल]*
संहननजनिते शरीरसामर्थ्ये, बुह० ३ उ०।

देहबलिया- स्त्री० *[देहबलिका]*
भिक्षावृत्तौ, आव०म०१ अ०

देहमाण- त्रि० *[प्रेक्षमाण]*
पश्यति, 'दिट्ठोरा देहमाणो चिट्ठइ।' भग०९ श०३३ उ०। सूय०।

देहली- स्त्री० *[देहली]*
द्वारशाखाप्रोते अधःखण्डे, आव०म०२ अ०।

देहविभूसा- स्त्री० *[देहविभूषा]*
स्नानाऽऽदिरूपायां देहपरिष्क्रियायाम् बुह०१ उ०।

देहविमुक्क- पुं० *[देहविमुक्त]*
सिद्धे, भग०८ श०२ उ०।

देहव्वावि- पुं० *[देहव्यापिन्]*
शरीरमात्रव्यापके आत्मनि, दश० ४ अ

देहसहाव- पुं० *[देहस्वभाव]*
शरीरस्वरूपे, वव० ५ उ०।

देहि- पुं० *[देहिन्]*
आत्मनि, सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०।

दोइ- अव्य० *[दोइ]*
'दो' इति निपातो विकल्पार्थे,दोइ सिणेह उवालब्धं। बुह०३ उ०

दोकिरिय- पुं० *[द्वैक्रिय]*
द्वे क्रिये समुदिते द्विक्रियं, तदधीयते तद्वेदिनो वा द्वैक्रियाः। कालाभेदेन क्रियाद्वयानुभवप्ररूपेषु गङ्गाचार्य्यप्रवर्तितेषु पञ्चम-निह्नवेषु, ठा० ७ ठा०।

दोक्खर- न० *[द्वयक्षर]*
षण्ढे, बुह०।

दोगच्च- न० *[दौर्गत्य]*
दुर्गतिभावे, दारिद्रये च। बुह०। निसि०।

दोगिद्धिदसा- स्त्री० *[द्विगृद्धिदशा]*
स्वरूपतोऽप्यनवसितायाम्,दोगिद्धिदसाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता तं जहा– वाए विवाए उववाए नातीसं महासुविणा वावत्तरि-सव्वसुमिणाहारे रामगुत्ते एमेए दस आहिया।' द्विगृद्धिदशाश्च स्वरूपतोऽप्यनवसिता। ठा० १० ठा०।

दोगुंछि- त्रि० *[जुगुप्सिन्]*
निन्दके, उत्त०।
जुगुप्सते आत्मानमाहारं विना धर्म्मधुराधरणाक्षममित्येवंशीलो जुगुप्सी। उत्त०६ अ०।

दोग्गइ- स्त्री० *[दुर्गति]*
दुष्टा गतिः दुर्गतिः। अथवा दुर्गा गतिः दुर्ग-तिः। अथवा-दुःखं वा यत् सेव्यते सा दुर्गतिः। दुर्गती विषमे-त्यर्थः। अथवा-कुत्सिता गतिः दुर्गतिः। अनभिलषितार्थे दुःशब्दः। यथा-दुर्गमः। नरकगतौ, तिर्यग्गतौ च। ठा० १ ठा०

दोच्चग- न० *[द्वितीयाङ्ग]*
शाकाऽऽदिभाज्याम्, 'दोच्चंग ति' सामयिकी संज्ञा।ओदनाऽऽदि मूलापेक्षया भोजनस्य राद्धशाकरूपाणी द्वितीयाङ्गानि।बुह०१ उ०

दोच्च- त्रि० *[दौत्य]*
दूतकर्मणि, नाया० १ श्रु०८ अ०।

दोच्च- *[द्वितीय]*
द्वित्वसंख्यापूरके, विपा० १ श्रु०३ अ०। भग०। उवा०।

दोज्झ- त्रि० *[दोह्य]*
दोहनयोग्ये, 'जहा गावो दोज्झाति वा' आचा० २ श्रु०१ चू०४ अ० २ उ०।

दोण- पुं० *[द्रोण]*
माने, चत्वारः पुनराढकाः समुदिता एको द्रोणः। ज्यो०२ पाहु०। । उव०।
पलप्रमाणं द्रोणमानम्। तं०।
द्रोणाऽऽख्ये सिन्धुवेलावलयिते नगरे, सूय०२ श्रु०२ अ०।

दोणमुह- न० *[द्रोणमुख]*
द्वयोः पथोर्मुखमस्येति द्रोणमुखम्।
जलस्थलनिर्गमप्रवेशने, आचा०१ श्रु०८ अ०६ उ०।
पट्टने, रा०। पण्हा०। वव०। भग०। जीवा०।
बाहुल्येन जलनिर्गमप्रवेशे, दशा० ७ अ०। ठा०। गच्छा०।
यत्र जलस्थलपथाबुभावपि भवतः। कल्प०१ अधि०४ क्षण। जीवा०। निसि०। जंबू० १ अणुओ०। ठा०। उत्त०।
यस्य तु जलपथेन वा द्वाभ्यामपि प्रकाराभ्यां भाण्डमागच्छति तद् द्वयोः पथयोर्मुखमिति निरुत्तया द्रोणमुखमुच्यते, तच्च तथा भृगुकच्छं ताम्रलिप्ती वा। बुह०१ उ०। निसि०। उव०।
जलस्थलपथोपेते नगरे, पण्हा०३ अ०।

दोणमेह- पुं० *[द्रोणमेघ]*
यावता वृष्टेनाऽऽकाशविन्दुभिर्महती नगरी म्रियते तावत्प्रमाण-जलवर्षिणि मेघे, विशे०।

दोणसूरि- पुं० *[द्रोणसूरि]*
अणहिलपट्टननगरे अभयदेवसूरिसमकालिके स्वनामख्याते विद्वद्वरे, येन नवस्वङ्गेषु स्थानाङ्गाऽऽदिषु अभयदेवसूरिकृतवृत्तेः संशोधनमकारि। ठा० १ ठा०

दोणी- स्त्री० *[द्रोणी]*
नौकायाम्, पण्हा० १ अ०।
जलपरिपूर्णायां महत्यां कुण्डिकायाम्, अणुओ०।

दोतिप्पभा- स्त्री० *[द्युतिप्रभा]*
चन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, नाया०१ श्रु०६ वर्ग०१ अ०।

दोधार- पुं० *[द्विधाकार]*
द्रव्यस्य द्विधाकरणे, ठा०५ ठा०३ उ०।

दोभागकर- न० *[दौर्भाग्यकर]*
कलाभेदे, सम०७२ सम०।

दोमणंसिया- स्त्री० *[दौर्मनसिका]*
वैमन्यस्ये, ठा०५ ठा०२ उ०।

दोमासिय- न० *[द्वैमासिक]*
द्विमासपरिणाममस्येति द्वैमासिकम्। मासद्वयपरिमाणे, निसि०२० उ०।

दोमासियपडिमा- स्त्री० *[द्वैमासिकप्रतिमा]*
मासद्वयप्रतिमा निर्वाह्ये साधुप्रतिज्ञाविशेषे, तत्र हि द्वौ मासौ यावद् द्वे दत्ती भक्तस्य, द्वे एव च पानकस्य। उव०।

दोमिलि- स्त्री० *[दोमिली]*
ब्राह्म्या लिपेर्लेख्यविधाने, पन्न०१ पद।

दोर- स्त्री० *[दोर]*
सूत्रदवरके, रज्जौ, आव०म०१ ।
कटिसूत्रे, दे०ना०५ वर्ग०३८ गाथा।

दोरज्ज- न० *[द्वैराज्य]*
राज्यद्वयभावे, ठा०३ ठा०१ उ०।

दोव- पुं० *[दोव]*
अनार्यभेदे, पन्न०१ पद।

दोवारिय- पुं० *[दौवारिक]*
प्रतीहारे द्वारपालके, भग०६ श०५ उ०। निसि०। नाया०। रा०।
'दोवारिज्जा तु द्वारिट्ठा दो वारिया दारे चेव (अन्तःपुरस्य) जेसिं मिलेति।' निसि० ९ उ०। उव०।

दोवारियभत्त- न० *[द्वौवारिकभक्त]*
द्वारपालस्य कृतवृत्तेः जरापङ्गुलाऽऽदेः पेट्टकादिभक्ते,निसि०९ उ०

दोविह- त्रि० *[द्विविध]* द्विविध एव द्वैविध्यम्। द्विःप्रकारे, उत्त०२अ

दोस- पुं० *[दोष]*
मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगेषु, । सूय०१श्रु०११अ० ।पण्हा०
चौर्याऽऽदिके, अंत० ३ वर्ग०८ अ०।
आत्मनः परस्य वा दूषणे, भग०१२ श०६ उ०
मालिन्यकारिचेष्टायाम्, तं०।

दोस- *[द्वेष]*
द्विष्यत्यनेनेति द्वेषः। द्वेषवेदनीये कर्म्मणि, यद्वा द्वेषणं द्वेषः वेदनीयकर्म्माऽऽपादिते भावे, अप्रीतिपरिणामे, सूय०।
'एगे दोसे।' ठा०१ ठा०। आव०। उव०। आव० चू०। भग०। आव०म०। सूय०। नाया०। निसि०। कल्प०।
उपशमत्यागाऽऽत्मके, विकारे, उत्त०६ अ०।
परद्वेषाध्यवसाये, आतु०।
स्वपराऽऽत्मनोर्बाधारूपे, सूय० १ श्रु०१६ अ०।
क्रोधमानकषायाऽऽत्मके, गच्छा०२ अधि०। ठा०।
'दोसे दुविहे पन्नत्ते। तं जहा–कोहे य, माणे य।' पन्न०२३ पद।

दोसंझाण- न० *[द्वेषध्यान]*
अप्रीतिमात्रं परद्रोहाध्यवसायो वा द्वेषः, तस्य ध्यानं, मधुदेवपिङ्गलाऽऽदयोरिव धर्म्मरुचिनाविकनन्दयोरिव वंशोत्पत्तौ वीरकदेवस्येव वा दुर्ध्याने, आतु०।

दोसउरिया- स्त्री० *[दोषोरिका]*
ब्राह्मीलेख्यविधाने, सम०१८ सम०।

दोसकिरिया- स्त्री० *[द्वेषक्रिया]*
द्वेषजन्यक्रियाभेदे, आव०चू०४ अ०।

दोसणिग्घायणाविणय- पुं० *[दोषनिर्घातनाविनय]*
क्रुद्धाऽऽदेः क्रोधाऽऽद्यपनयनाऽऽत्मके विनयभेदे, दशा०।

दोसणिस्सिय- न० *[द्वेषनिःसृत]*
द्वेषे निःसृतं मत्सरिणां गुणवत्यपि निर्गुणोऽयमित्यादिरूपे मृषा-वादे, ठा०१० ठा०।

दोसदंसि- त्रि० *[दोषदर्शिन्]*
दोषस्य स्वरूपतो वेत्तरि, आचा०१ श्रु०३ अ०४ उ०।

दोसबंधण- न० *[द्वेषबन्धन]*
द्विष्यत्यनेनेति वा द्वेषः, द्वेष एव बन्धनं द्वेषबन्धनम्। द्वेषबन्धने, आव०चू०४ अ०।
द्वेषमोहनीयसंबन्धे च। पन्न०२ पद।

दोसरहिय- पुं० *[दोषरहित]*
दोषा रोगाऽऽदयः, तैः रहितः। रोगाऽ-ऽदिरहिते, सूर०२० पाहु०

दोसवत्तिया- स्त्री० *[द्वेषप्रत्यया]*
अप्रीतिकारकायां क्रियायाम्, आव ०४ अ०।
सा दुविहा पन्नत्ता–कोहनिस्सिया य, भावनिस्सिया य। कोह-णिस्सिया अप्पणाकुप्पइ, परस्स कोहं उप्पाएइ। माणनिस्सिया सवं मज्जति, परस्स वा माणं उप्पाएइ। आव०४ अ०।
मूर्छाभेदे, ठा०२ ठा०४ उ०।
क्रियाभेदे, आव०चू०४ अ०।

दोससयगग्गरी- स्त्री० *[दोषशतगर्गरी]*
दोषा- परस्परकलहमत्सरगालिप्रदानमर्म्मोद्घाटनकलङ्कप्रदान जल्पनशापप्रदानस्वपरप्राणाघातविन्तनादयस्तेषां शतानि तेषां गर्गरिका भाजनविशेषः। दोषशतभृतायां कुम्भयाम्, तं०।

दोसा- स्त्री०
ब्राह्मीलेख्यविधाने, पन्न०१ पद।

दोसिणा- स्त्री० *[ज्योत्स्ना]*
चन्द्रलेश्यायाम्, चंद०।

दोसिणाभा- स्त्री० *[ज्योत्स्नाभा]*
ज्योतिषेन्द्रस्य चन्द्रस्याग्रमहिष्याम्, ठा०४ ठा०१ उ०। जंबू०। सूर०। जीवा०।

दोसिय- त्रि० *[दौषिक]*
दूष्यं परमस्येति दौषिकः। दूषकक्रयविक्रयकारिणि, अणुओ०। वव०।

दोसियण्ण- न० *[दोषान्न]*
रात्रिपर्युषितेऽन्ने, पण्हा० ५ अ०।

दोहणवाडण- न० *[दोहनपाटन]*
यत्र ग्रामिका गाः दोग्धि। गोदोहनस्थाने, निसि०२ उ०।

दोहल- पुं० *[दौहृद]*
गर्भप्रभावोद्भूतेऽन्तर्वत्नीफलाऽऽदावभिलाषविशेषे, । कल्प०१ अधि० ४ । सूय०।

द-कारादि शब्द-परिभाषा: समाप्ता:

ध-कारादि शब्द-परिभाषा

धंत-१ *[देशी]*
अतिशये, (धंतं पि त्ति) देशीवचनत्वादतिशयेनाऽपि दुग्धकाङ्क्षी, न लभते दुग्धमधेनोः सकाशादिति। बुह० १ उ०।

धंत-२ त्रि० *[ध्मात]*
दग्धे, आव०म०१अ०। विशे०
अग्निसम्पर्केण निर्मलीकृते, आव०म०१अ० ।जीवा०। नं०। रा०।
अग्निना तापिते च। उव०।
शब्दिते, पिंड०।
अग्निसंयोगे, जीवा०३ प्रति०४ उ०। जंबू०। नाया०।
'ध्मा' शब्दाग्निसंयोगयोरिति वचनात्। आव०म०१ ।

धंतघोयकणगरुअगसरिसप्पभत्रि० *[ध्मातधौतकनकरुचकसदृशप्रभ*
ध्यातमग्निना तापितं धौतं जलेन क्षालितं यत्कनकं तस्य यो रुचको वर्णस्तत्सदृशप्रभः। गौराङ्गे, उव०।

धंतधोयरुप्पपट्ट- न० *[ध्मातधौतरूप्यपट्ट]*
ध्मातोऽग्निसम्पर्केण निर्मलीकृतो धौतो भूतिखरण्टितहस्तसंमार्जनेनातितेजितो रूप्यमयः पट्टः विशदीकृतो यो रूप्यपट्टो रजतपत्रम्। जीवा०४ प्रति० ४ उ०।
विशदीकृतो यो रूप्यपट्टो रजतपत्रकं स ध्मातधौतरूप्यपट्टः। रा०
अन्ये तु व्याचक्षतेध्मातोऽग्निसंयोगेन यो धौतः शोधितो रूप्यपट्टः स ध्मातधौतरूप्यपट्टः। रा०। नाया०।
अग्निसम्पर्केण निर्मलीकृते भृतिखरण्टितहस्तसंमार्जनेनातितेजितेऽग्निसंयोगेन शोधिते रजतपत्रके, 'धंतधोयरुप्पपट्टेइ वा' जीवा० ४ प्रति०४ उ०। जंबू०।

धंतधोयरुप्पपट्टअंकसंखचंदकुंदसालिपिट्ठरासिसमप्पभ-त्रि० *[ध्मात-धौतरूप्यपट्टाङ्कशङ्खचन्द्रकुन्दशालिपिष्टराशिसमप्रभ]* ध्मातधौत-रूप्यपट्टाङ्कशङ्खचन्द्रकुन्दशालिपिष्टराशिसदृशप्रभे,नाया०१श्रु०१अ

धंसण- न० *[ध्वंसन]*
भ्रंशे, 'धंसेइ जो अभूएणं।' ध्वंसयति० । सम०३० सम०।
अपनयने, 'सउणी जह पंसुगुंठिया, विहुणिय धंसइ ईसियं रयं।' ध्वंसयत्यपनयतीति सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०।

धगधगंत- त्रि० *[धगधगायमान]*
जाज्वल्यमाने, 'धगधगंतसंदुद्धएणं।' नाया० १ श्रु०१ अ०।

धगधगाइय- त्रि० *[धगधगायित]*
धगधगिति कुर्वति, 'धगधगाइयजलंतजालुज्जलाभिरामं।' कल्प० १ अधि०३ क्षण।

धडिया-स्त्री० *[धटिका]*
'मणैर्दशभिरेका च, धटिका कथिता बुधैः इत्युक्तलक्षणे दशमणाऽऽत्मके मानविशेषे, तं०। कल्प०।

धण- धा० *[धन]*

हिरण्यरूप्याऽऽदिके, उत्त० ६ अ० । रा० ।

यद् घटितमितरद् वा अघटितं तद्वनमुच्यते बृह०१ उ० ।

गोमहिष्यादिके, सूय०२ श्रु०१ अ० । आव० । उव० उत्त० ।

गुडखण्डशर्कराऽऽदिके, धनं गुडखण्डशर्कराऽऽदि, गोमहिष्य-जाऽविकाकरभतुरगाऽऽदि वा । आव०६ अ० ।

भाण्डाऽऽदिके, आव०चू०६ अ० ।

'धनम्' गणिम–धरिम–मेय–पारिच्छेद्य–भेदाच्चतुर्धा । आव० चू० । दशा० । कल्प० । उव० । नाया० । भग० ।

द्वाविंशतीर्थंकरस्य प्रथमभिक्षादाता । सम० ।

धनः-राजगृहनगरे सार्थवाहः । आव० ।

धनः-चक्षुरिन्द्रियान्तर्दृष्टान्ते चम्पायां माहेश्वरः सार्थवाह विशेषः । आव० ३९९ ।

धनः-वसन्तपुरे सार्थवाहः । आव० ।

धणंजय-१ पुं० *[धनञ्जय]*

अपरविदेहस्थमूकाराजधानीभवे स्वनामख्याते नृपे, यस्य पुत्रः प्रियमित्रो विंशतिभिस्तीर्थकरत्वकारणैस्तीर्थकरत्वमवाप । आव० म०१ । आव० । आव०चू० । कल्प० ।

सौर्यपुरनगरस्थे स्वनामख्याते श्रेष्ठिनि, आव० ४ अ० । आव० । आव०चू० ।

धणंजय-२ पुं० *[धनञ्जय]*

पक्षस्य पञ्चदशसु दिवसेषु नवमे दिवसे, ज्यो०४ पाहु० । । जंबू० कल्प० ।

धणंजय-३ पुं० *[धनञ्जय]*

स्वनामख्याते गोत्रे च । 'उत्तरापोट्ठपदा नक्खत्ते किं गोत्ते पन्नत्ते? धणंजयसगोत्ते पण्णत्ते ।' सूर० १० पाहु० । जंबू० ।

धणक्खय- पुं० *[धनक्षय]*

धनहानौ, वव०३ उ० ।

धनक्षय इति वा जीवा० ३ प्रति०४ उ० ।

धणगिरि-१ पुं० *[धनगिरि]*

अवन्तीजनपदस्य तुम्बवनसन्निवेशे स्थिते स्वनामख्याते इभ्यपुत्रे, आव०म०१ । कल्प० ।

आर्य्यसिंहगिरिस्थविरस्य शिष्ये स्वनामख्याते स्थविरे । कल्प ।

धणगिरि-२ पुं० *[धनगिरि]*

आर्य्यफल्गुमित्रस्य शिष्ये स्वनामख्याते वसिष्ठसगोत्रे स्थविरे च । 'थेरस्स णं अज्जफग्गुमित्तस्स गोयमसगुत्तस्स अज्जधणगिरी थेरे अंतेवासी वासिट्ठसगोत्ते ।' कल्प०२ अधि०८ क्षण ।

धणगुत्त- पुं० *[धनगुप्त]*

कस्मिंश्चिन्नगरे स्थिते स्वनामख्याते आचार्य्ये आव०चू०४ अ० । उल्लुकातीरनगरस्थे आचार्य्यमहागिरिशिष्ये द्वैक्रियपञ्चमनिह्नव धर्माचार्य्यस्य गङ्गाचार्य्यस्य स्वनामख्याते गुरौ, आव०म०१ अ० । विशे० । ठा० ।

धणगोव- पुं० *[धनगोप]*

राजगृहनगरस्थधनसार्थवाहस्य पुत्रे, नाया० १ श्रु०७ अ० ।

धणणिहि- पुं० *[धननिधि]*

कोशे, तदात्मके लौकिके निधिभेदे च । ठा० ५ ठा० ३ उ० ।

धणतोसग- त्रि० *[धनतोषक]*

धनेन तुष्यतीति धनतोषकः । चौराऽऽदिके, 'धणतोसगा गहिया य जे नरगणा ।' पण्हा०३ अ० ।

धणदत्त- पुं० *[धनदत्त]*

राजगृहनगरस्थे धनापरनामधेये स्वनामख्याते सार्थवाहे, नं० । आव० । आव०म० । आव०चू० ।

वसन्तपुरस्थे तिलकश्रेष्ठिपुत्रे स्वनामख्याते श्रेष्ठिनि, पिंड० ।

विस्तीर्णग्रामस्थे स्वनामख्याते कुटुम्बिनि च । पिंड० ।

धणदेव-१ पुं० *[धनदेव]*

मण्डिकगणधरस्य पितरि, आव०म०१ अ०२ खण्ड । आव०चू० ।

धणदेव-२ पुं० *[धनदेव]*

अस्थिकग्रामापरनामधेये वर्द्धमानकनगरस्थे स्वनामख्याते वणिजि, आव०चू०१ अ० । आव०म० । कल्प० । ठा० ।

धणदेव-३ पुं० *[धनदेव]*

द्वारवतीवास्तव्ये कमलामेलायाः पत्यौ उग्रसेनस्य नप्तरि, आव०म० १ । आव०चू० ।

काम्पिल्यपुरस्थे स्वनामख्याते वणिजि, उत्त० १३ अ० ।

राजगृहनगरस्थधनसार्थवाहस्य पुत्रे, नाया०१ श्रु०७ अ० ।

धणधण्णदव्वजाय- न० *[धनधान्यद्रव्यजात]*

धनधान्यरूप्यकारे, । पण्हा०३ अ० ।

धणधण्णपमाणाइक्कम- पुं० *[धनधान्यप्रमाणातिक्रम]*

धनधान्ययोः प्रमाणस्य बन्धनतोऽतिक्रमोऽतीचारः धनधान्य-प्रमाणातिक्रमः

इच्छापरिमाणस्य पञ्चमाणुव्रतास्यातिचारभेदे, धनधान्यस्य प्रमाणप्राप्तस्याऽधर्मणाऽऽदिभ्योऽधिकलाभेसमुपस्थिते यावन्ना-ग्रेतनं विक्रीणीते तावद् गृह एव तत्स्थापयतः सत्यकारेण वा स्वीकुर्वतः स्थूलमूढकाऽऽदिबन्धनेन वा धनधान्यतिक्रमरूपः प्रथमोऽतिचार इति । आव० । उवा० ।

धनाधान्यप्रमाणातिक्रमः । आव०

धणधण्णसंचय- पुं० *[धनधान्यसंचय]*

धनं हिरण्याऽऽदि, धान्यं शाल्यादि, तयोः संचयो राशिर्धनधान्य-संचयः । धनधान्ययो राशौ, उत्त० ६ अ० ।

धणपाल-१ पुं० *[धनपाल]*

राजगृहनगरस्थधनसार्थवाहसुते सार्थवाहे, नाया०१ श्रु०७ अ० ।

धणपाल-२ पुं० *[धनपाल]*
कौशाम्बीनगरस्थे नृपे,'कोसंबी नयरी, धनपालो राया, वेसमण-भद्दे अणगारे पडिलाभिए इह जाव सिद्धे।'विपा० २ श्रु०४ अ०।

धणपाल-३ पुं० *[धनपाल]*
अवन्तीजनपदस्थतुम्बवनसन्निवेशस्थे स्वनामख्याते इभ्ये च। आव०म०१ ।

धणवद्धण- पुं० *[धनवर्द्धन]*
धनवृद्धिकारके, ठा०१० ठा०।

धणमण- त्रि० *[धनवत्]*
धनिनि, वव०।

धणरक्खिय- पुं० *[धनरक्षित]*
राजगृहनगरस्थस्य धनसार्थवाहस्य पुत्रे, नाया०१ श्रु०७ अ०।

धणराइ- स्त्री० *[धनराजि]*
सिन्धुदत्तसुतायां काम्पिल्यपुरस्थस्य ब्रह्म दत्तस्यान्तःपुरप्रधानायां महिष्याम्, उत्त०१३ अ०।

धणवइ-१ पुं० *[धनपति]*
द्वारावतीवर्णनमधिकृत्य धनपतिर्वैश्रवण । नाया०१ श्रु०४ अ०।
वसन्तपुरनगरस्थे धनावहश्रेष्ठिनो भ्रातरि, आव०म० १।

धणवइ-२ पुं० *[धनपति]*
कनकपुरनगरस्थस्य वैश्रवणकुमारस्य युवराजस्य स्वनामख्याते पुत्रे, सुखविपाकाध्ययनेषु षष्ठेऽध्ययने, विपा० २ श्रु० ६ अ०।

धणवई- स्त्री० *[धनवती]*
एकस्मिन् सन्निवेशे स्थितस्य कस्यचिद् ग्रामाधिपतिसुतस्य धन नाम्नो नवमे भवे भविष्यदरिष्टनेमितीर्थकरस्य भार्यायाम्, उत्त० २२ अ०। कल्प०।

धणवसु- पुं० *[धनवसु]*
उज्जयिनीनगरस्थे स्वनामख्याते वणिजि, आव० ४ अ०।
'उज्जयिन्यां धनवसुश्चम्पां गन्तुमना वणिक्।' आव०चू०।

धणवह-१ पुं० *[धनवह]*
वसन्तपुरनगरस्थे धनपतिश्रेष्ठिभ्रातरि, 'वसंतपुरं नगरं जियसत्तू राया, धणवई–धणावहा भायरो सेट्ठी।' आव०म०१ अ०२ ।

धणवह-२ पुं० *[धनवह]*
राजगृहनगरस्थे स्वनामख्याते श्रेष्ठिनि, आव०म०१।

धणवह-३ पुं० *[धनवह]*
कौशाम्बीनगरवास्तव्ये मूलायाः पत्यौ स्वनामख्याते श्रेष्ठिनि, आव०चू०।
'आसीद्धनावहः श्रेष्ठी, मूला तस्य च गेहिनी।' आव०क०।
'तत्थेव नयरे धणवहो सेट्ठी, मूला भारिया।'आव०म०१।

धणवह-४ पुं० *[धनवह]*
ऋषभपुर स्वस्तूपकरण्डकोद्यानस्थे नृपे, विपा० २ श्रु०२ अ०।

धणसमिद्ध- त्रि० *[धनसमृद्ध]*
धनेन समृद्धे, 'धणसमिद्धे सत्थवाहकुलजाओ।' आव०४ अ०। पण्हा०।

धणसम्म- पुं० *[धनशर्म्मन्]*
उज्जयिनीनगरस्थे धनमित्रवणिक् सुते स्वनामख्याते वणिजि, गच्छा० २ अधि०। उत्त०।

धणसिरी-१ स्त्री० *[धनश्री]*
वसन्तपुरस्थयोर्धनपतिधनावहश्रेष्ठिनोर्भगिन्याम्, आव०म० १।

धणसिरी-२ स्त्री० *[धनश्री]*
श्रेणिकस्य भार्य्यायाम्, तं०

धणसिरी-३ स्त्री० *[धनश्री]*
दन्तपुरनगरस्थस्य धनमित्रसार्थवाहस्य भार्यायाम्, आव० ४ अ० । आव०क०। आव०चू०। निसि०।

धणसिरी-४ स्त्री० *[धनश्री]*
चम्पानगरीस्थस्य धनसार्थवाहस्य भार्य्यायाम्, आव०४ अ०।
चम्पानगरीमधिकृत्य 'धनमित्रसार्थवाहो, धनश्रीस्तस्य वल्लभा।' आव०।

धणसेट्ठि- पुं० *[धनश्रेष्ठिन्]*
राजगृहनगरस्थे श्रेष्ठिनि, नाया०१ श्रु०१ अ०।
श्रावस्तीवास्तव्ये श्रेष्ठिनि, उत्त०८ अ०।
पाटलिपुत्रनगरस्थे श्रेष्ठिनि, यस्य दुहिता भगवतः सकाशे प्रव्रजिता। आव०म० १ ।
कस्मिंश्चिन्नगरे स्थिते धनप्रियायाः पत्यौ श्रेष्ठिनि च। पिंड०।

धणसेण- पुं० *[धनसेन]*
द्वारावतीवास्तव्ये कमलामेलायाः पितरि स्वनामख्याते नृपे, आव०म०। आव०चू०।
धनसेन-नन्दनबलदेवपूर्वनाम। आव०।

धणहाणि- स्त्री० *[धनहानि]*
धनक्षये, तत्कारणीभूते राज्यस्यापलक्षणभेदे च। यतः सर्वत्र धनक्षयः सम्भवति। वव० ३ उ०।

धणहारि- त्रि० *[धनहारिण्]*
धनं हरतीति धनहारी। धनहरणशीले, पण्हा०३ अ०।

धणि- पुं० *[ध्वनि]*
शब्दे, ठा० १ ठा०। विशे०। आव०
तूर्य्यनिनादे, आव०म०१।

धणिओज्जालिय- त्रि० *[धनितोज्ज्वालित]*
अत्यर्थमुज्ज्वालिते, जीवा० ३ प्रति०४ उ०।

धणिट्ठा- स्त्री० *[धनिष्ठा]*
अतिशयेन धनवती । वसुदेवताके स्वनामख्याते नक्षत्रभेदे, । ज्यो०। ठा०। अणुओ०। चंद०। जंबू०। सूर०। सम०।

धणिट्ठासंवच्छर- पुं० *[धनिष्ठासंवत्सर]*
यस्मिन्संवत्सरे धनिष्ठानक्षत्रेण सह शनैश्चरो योगमुपादते स धनिष्ठासम्वत्सरः।
इत्युक्तलक्षणे शनेश्चरसंवत्सरभेदे, जंबू०७ वक्ष०

धणिय-१ न० *[धणिय]*
अत्यर्थे, पण्हा०३ अ०।
धणियमत्यर्थमिति। वव०२ उ०। आव०। आतु०।
अत्यन्ते, उत्त०१ अ०।

धणिय-२ न० *[धनिक]*
अत्यर्थे, 'धीइधणियणिप्पकंपे' धनिकमत्यर्थमिति। उव०।
धनिकः-व्यवहारकः। बुह०।

धणिय-३ न० *[धनित]*
अत्यर्थे, 'धीइधणियबद्धकच्छा।' संथा०।

धणु-१ न० *[धनुष्]*
मियालवृक्षे, धनुर्द्धरे, । भग०।
चापे, आव० म०१ । सम०। जंबू०। विपा० ।
धनुर्दण्डगुणाऽऽदिसमुदायः। भग०५ श०६ उ०।

धणु-२ न० *[धनुष्]*
चतुर्भिर्हस्तैर्निष्पन्ने अवमानविशेषे, अणुओ०।
'दंडं धणू य जूबं, नालिया य अक्खो मुसलं च चउहत्थं।' ज्यो० २ पाहु०। । जीवा०। पन्न०। तं०। जंबू०। ठा०।
'छण्ण उइअंगुलाणि से एगे दंडेइ वा धणूइ वा जूएइ वा नालियाइ वा अक्खेइ वा मुसलेइ वा।' भग०६ श०७ उ०। सम०।

धणु-३ न० *[धनुष्]*
'धणुं च पयम्मि।' पथि मार्गविधौ धनुरेव मानं मार्गगव्यूताऽऽदिपरिच्छेदो धनुः संज्ञाप्रसिद्धेनैवावमानविशेषेण क्रियते, न तु दण्डाऽऽदिभिरिति। अणुओ०।
यो धनुर्विमुक्तार्द्धचन्द्राऽऽदिभिर्वाणैः कर्णाऽऽदीनां च्छेदनभेदनाऽऽदि करोति स धनुः। नारकाणां कदर्थके दशमे परमाधार्मिक भेदे, । भग०। अणुओ०। सम०।
दशमः परमाधार्मिकः। सूय०। सम०।

धणुकुमल- न० *[कुटिलधनुष्]*
कुटिले धनुषि, धनुष्कुटिलं कुटिलं धनुः। ततोऽपि वक्रेण प्रकारेण परिक्षिता या सा तथा। रा०। नाया०।

धणुक्क-१ न० *[धनुष्क]*
चापे, सम०।
चतुर्भिर्हस्तैर्निष्पन्ने अवमानविशेषे च। अणुओ०।

धणुक्क-२ न० *[धनुष्क]*
पाञ्चालदेशस्थकाम्पिल्यपुरनृपतेर्ब्रह्मदत्तपितुर्ब्रह्मराजस्य स्वनामख्याते सेनापतौ, उत्त० १३ अ०। आव०क०।

धणुग्गह- पुं० *[धनुर्ग्रह]*
वातव्याधिविशेषे, धनुर्ग्रह इति वा। जीवा०३ प्रति० ४ उ०।
धनुर्ग्रहोऽपि वातविशेषो, यः शरीरं कुब्जीकरोति। बुह०३ उ०। वव०।

धणुत्तासणा- स्त्री० *[धनुस्त्रासना]*
धनुषा भयजनने, धानुष्कैर्वा पाषाणैर्वा पक्षिणस्त्रासनां कुर्वन्ति भयमुपजनयन्तीत्यर्थः। बुह० २ उ०।

धणुद्धय- पुं० *[धनुर्ध्वज]*
भविष्युदुत्सर्पिण्यां महापद्मस्य प्रथमतीर्थकरस्य सकाशे प्रव्रजिष्यति स्वनामख्याते नृपे, ठा०८ ठा०।

धणुद्धर- पुं० *[धनुर्धर]*
धनुर्द्धराः कोदण्डप्रहरणा इति। सम०।

धणुपिट्ठ- न० *[धनुष्पृष्ठ]*
मण्डलखण्डाऽऽकारे क्षेत्रे, सम० ५७ सम०।
जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य हैमवतैरण्यवताऽऽदिवर्षाविच्छिन्नस्याऽऽरोपितज्याधनुष्पृष्ठाकारे परिधिखण्डे च। हैमवतैरण्यवतोरधिकारे जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य हैमवतैरण्यवताभ्यां द्वितीयषष्ठवर्षाभ्यामवच्छिन्नस्याऽऽरोपितज्याधनुष्पृष्ठाकारे परिधिखण्डे धनुष्पृष्ठे, उच्येते, तत्पर्य्यन्तभूते सरलप्रदेशपङ्क्ती तु जीवे इव जीवे इति। सम० ३७ सम०।

धणुपुहत्तिया- स्त्री० *[धनुष्पृथक्त्विका]*
गव्यूते, गव्यूतं द्विधनुः सहस्रप्रमाणमिति। पन्न० १ पद

धणुबल- न० *[धनुर्बल]*
धनुर्द्धरबले, 'धणुबलं वा आलिंगति।' भग०३ श०२ उ०।

धणुय- न० *[धनुष्क]*
'धणुक्क' शब्दार्थे, सम०।

धणुव्वेय- पुं० *[धनुर्वेद]*
धनुःशास्त्रे, जंबू० २ वक्ष०
इषुशास्त्रे, तच्च भगवत ऋषभदेवस्य समये आसीत्। इषुशास्त्रं नाम धनुर्वेदः, स च तदैव राजधर्मे सति प्रावर्तत। आव०म०१
तदात्मके द्वासप्ततिकलान्तर्गते कला, उव०।सम०।नाया०।सूय०
तदात्मके पापश्रुतभेदे च। आव०४ अ०।

धणुस्सग्ग- पुं० *[धनोत्सर्ग]*
धनसम्पत्तौ, ठा०३ ठा०३ उ०।

धणेसर- पुं० *[धनेश्वर]*
भद्रबाहुस्वामिविरचितबृहत्कल्पभाष्यवृत्तिकर्तुः क्षेमकीर्तिसूरेर्गुरु परम्परायां जाते स्वनामख्याते आचार्य्ये, बुह०।

धणोहसंचय- पुं० *[धनौघसंचय]*
धनस्यौघः समूहो धनौघस्तस्य संचयो राशीकरणम्। कनकाऽऽदिद्रव्यसमूहस्य राशीकरणे, उत्त० १० अ०।

धण्ण-१ त्रि० *[धन्य]*
धनं लब्धा, धने साधुः, धनमर्हति। भग०२ श० १ उ०। अंत०। ठा०। निर०।
धनलम्भिनि, नाया०१ श्रु०१ अ०। कल्प०। भग०।
'धन्नाओ अनंताओ अंवगाओ।' आव०म०१।
धनावहे, नाया०१ श्रु०१ अ०।
धन्यः-धर्मधनलब्धा। भग०।
धनलाभयोग्ये, पण्हा०१ अ०।
श्रेयस्करे, आव०४ अ०।
धनं ज्ञानदर्शनचारित्रलक्षणमर्हन्तीति धन्याः। साध्वादिषु ज्ञानदर्शनचारित्रधनेषु, 'धन्ना नाणाइधणा।' विशे०।

धण्ण-२ त्रि० *[धन्य]*
पार्श्वनाथस्य प्रथमभिक्षादायके श्रावके, आव०म०१ अ०।

धण्ण-३ त्रि० *[धन्य]*
काकन्दीवास्तव्ये स्वनामख्याते सार्थवाहे च। तत्कथाऽनुत्तरोपपातिकदशायास्तृतीयवर्गस्य प्रथमेऽध्ययने। अणुत्त०।
धन्यः- भद्रासार्थवाह्याः पुत्रः। *अनुत्त०*।

धण्ण-४ स्त्री० *[धन्य]*
वाराणसीनगर्यां कोष्ठचैत्यवास्तव्यस्य सुरादेव गृहपतेर्भार्य्यायां च। । उवा०४ अ०।

धण्ण-५ न० *[धान्य]*
धाने षोषणे साधु–यत्। सतुषे तण्डुलाऽऽदौ, सबीजे शालितिलयवाऽऽदौ च। दश०६ अ०। उत्त०। सूय०।
धान्यं व्रीहिकोद्रवमुद्गमाषतिलगोधूमयवाऽऽदि। आव ०६ अ०।
तच्च सप्तदशविधम्–शणं सप्तदशं येषां तानि शणसप्तदशानि बीजानि धान्यं भवेदिति। बुह०१ उ०२ प्रक०। आव०म०।
धान्यं-चतुर्विंशतिभेदम्। दश० १९३।

धण्ण-६ न० *[धान्य]*
धन्यः-ऋषभ-पुरस्य स्तूपकरण्डोद्याने यक्षः। विपा०।

धण्णंतरि-पुं० *[धन्वन्तरि]*
वैद्यकशास्त्रप्रणेतरि स्वनामख्याते योगी धन्वन्तरिः, तेन च विभङ्गज्ञानबलेनाऽऽगामिनि काले प्राचुर्य्येण रोगसंभवं दृष्ट्वाऽष्टाङ्गाऽऽयुर्वेदरूपं वैद्यकशास्त्रं चक्रे। बुह०१ उ०२ प्रक०।
विजयपुरराजस्य कनकरथस्य स्वनामख्याते वैद्ये, तत्कथा विपाकश्रुतस्याष्टमेऽध्ययने इति। ठा०१० ठा०।
जमदग्निपरीक्षार्थं मनुष्यलोकमुपागते देवलोकस्थे स्वनामख्याते तापसे, । आव०चू०। आव०म० १ अ०।
द्वारावतीवास्तव्ये कृष्णवासुदेवस्य स्वनामख्याते वैद्ये। आव०।

धण्णकड- पुं० *[धन्यकड]*
विमलविनस्य प्रथमपारणकस्थानम्। आव०।

धण्णअ-१ पुं० *[धन्यक]*
शालिभद्रभगिनीपतौ, ठा० १० ठा०।
काकन्दीनगरीवास्तव्ये स्वनामख्याते सार्थवाहे, तद्वक्तव्यता प्रतिबद्धेऽनुत्तरोपपातिकदशायास्तृतीयवर्गे । ठा० १० ठा०।

धण्णअ-२ न० *[धान्यक]*
कुस्तुम्भरीनामके धान्यभेदे, दश०६ अ०।

धण्णगर- न० *[धान्यकर]*
स्वनामख्याते पुरे, यत्र विमलजिनेन प्रथमभिक्षा लब्धेति। आव०म०१ अ०।

धण्णजक्ख- पुं० *[धन्ययक्ष]*
ऋषभपुरस्थकरण्डकोद्यानस्थे यक्षे, विपा० २ श्रु० २ अ०।

धण्णगिहि- पुं० *[धान्यनिधि]*
कोष्ठागारे लौकिके निधिभेदे ठा० ५ ठा०३ उ०।

धण्णपत्थय- न० *[धान्यप्रस्थक]*
धान्यमानविशेषे, वव०१ उ०।

धण्णपिडक- न० *[धान्यपिटक]*
धान्यप्रस्थके, वव०१ उ०।

धण्णपुंजियसमाणा- स्त्री० *[पुञ्जितधान्यसमाना]*
खले लूनपूतविशुद्धपुञ्जीकृतधान्यसमाना सकलातिचारकचवरविरहेण लब्धस्वस्वभावत्वात् पुञ्जितस्य धान्यविशेषणस्य परनिपातः प्राकृतत्वात् । ठा० ।
प्रव्रज्याभेदे, ठा० ४ ठा० ४ उ०।

धण्णप्पमाण- न० *[धान्यप्रमाण]*
मानमये प्रमाणं, धान्यविषयं मानं प्रमाणं धान्यप्रमाणम्। मानप्रमाणभेदे, अणुओ०।

धण्णमाण- न० *[धान्यमान]*
धान्यप्रमाणे, निसि०१ उ०।

धण्णमासफल- न० *[धान्यमाषफल]*
षोडशश्वेतसर्षपाऽऽत्मके हिरण्याऽऽदिपरिमाणभेदे, ठा०८ ठा०।

धण्णविक्खत्तसमाणा- स्त्री० *[विक्षिप्तधान्यसमाना]*
यद्विकीर्णं गोखुरक्षुण्णतया विक्षिप्तं धान्यं तत्समाना विक्षिप्त धान्यसमाना, । ठा०४ ठा०४ उ०।
या हि सहसमुत्पन्नातिचारकचवरयुक्तत्वात् सामग्र्यन्तरापेक्षितया कालक्षेपलभ्यस्वस्वभावा सा धान्यविकीर्णसमानोच्यते। इत्युक्तलक्षणे प्रव्रज्याभेदे, ठा० ४ ठा०४ उ०।

धण्णविरल्लियसमाणा- स्त्री० *[विरल्लितधान्यसमाना]*
खलक एव यद्विरल्लितं विसारितं वायुना पूतपुञ्जीकृतं धान्यं तत्समाना, । ठा० ४ ठा०४ उ०।
या हि लघुनाऽपि यत्नेन स्वस्वभावं लप्स्यत इत्युक्तलक्षणे प्रव्रज्याभेदे, ठा०४ ठा०४ उ०।

धण्णसंकड्डियसमाणा- स्त्री० *[संकर्षितधान्यसमाना]*
यत्संकर्षितं क्षेत्रादाकर्षितं खलमानीतं धान्यं तत्समाना। ठा० ४ ठा० ४ उ०।
या हि बहुतरातिचारोपेतत्वाद् बहुतरकालप्राप्तव्यस्वस्वभावा सा धान्यसङ्कर्षितसमाना। इत्युक्तलक्षणप्रव्रज्याभेदे, ठा०४ठा०४ उ०

धण्णहाणि- स्त्री० *[धान्यहानि]*
राज्यापलक्षणभेदे, यत्प्रभावाद् वृष्टेऽपि मेघे शस्यनिष्पत्तिस्ता-दृशी नोपजायते। वव० १० उ०।

धण्णागार- न० *[धान्यागार]*
कोष्ठागारे, निसि० ८ उ०।

धण्णावह- पुं० *[धान्यावह]*
राजगृहनगरस्थे स्वनामख्याते प्रधानश्रेष्ठिनि, आव०चू०१ अ०।
ऋषभपुरस्थस्तूपकरण्डकोद्यानवास्तव्ये नृपे, विपा० २ श्रु०२ अ०

धत्त-१ पुं० *[धत्त]*
बहुबीजके वनस्पतिभेदे, जीवा० १ प्रति०।
निहिते, । आव०म०१ अ०।
धत्त इति मित्थवदव्युत्पन्न एव यदृच्छाशब्दः। आव०१ अ०।

धत्त-२ त्रि० *[धात्त]*
धेनाऽऽत्तो गृहीतो धात्तः। निहिते, आव०१ अ०

धमण- पुं० *[धमन]*
धम्यतेऽनेनधमल्युः। नले भस्त्राध्मापके, क्रूरे च। अग्निसंयोगे, 'वीयणधमणाहिधारणा।' आचा० १ श्रु० १ अ०७ उ०।

धमणि- स्त्री० *[धमनी]*
नाड्याम्, उत्त०२ अ०। नाया०। पण्हा०। भग०।
'नव धमणीओ।' धमन्यो रसवहा नाड्यः। तं०।
शिरायाम्, उत्त० २ अ०
कोष्ठकहृद्यन्तरे, नाडीमधिकृत्य–धमन्यः कोष्ठकहृद्यन्तराणीति। विपा० १ श्रु०१ अ०।

धमणिसंतय- त्रि० *[धमनिसंतत]*
धमनीभिर्नामीमिः संततो व्याप्तः। उत्त०२ अ०।
नाडीव्याप्ते, नाया०१ श्रु०१ अ०।
'किं से धमणि संतए।' धमनीसंततो नाडीव्याप्तो, मांसक्षयेण दृश्यमाननाडीकत्वात्। भग०२ श०५ उ०।
यस्य शरीरं नशाभिर्व्याप्तं दृश्यत इत्यर्थः। उत्त०२ अ०।
धमनयः शिरास्ताभिः संततो व्याप्तो धमनिसंततः। शिरभिः व्याप्ते, उत्त० २ अ०।

धमणी- स्त्री० *[धमनी]*
'धमणि' शब्दार्थे, उत्त०२ अ०।

धमधमेंत- त्रि० *[धमधमायमान]*
धमधमेति वर्णव्यक्तिमिवोत्पादयति, नाया०१ श्रु०९ अ०।

धमधमेंतघोस- त्रि० *[धमधमायमानघोष]*
धमधमायमानो धमधमेति वर्णव्यक्तिमिवोत्पादयन् घोषः शब्दो यस्य स।धमधमेति वर्णव्यक्त्युपादकशब्दोपेते,नाया०१श्रु०९ अ०

धमास- पुं० *[धमास]*
कपोतलेश्याया वर्णकमधिकृत्य । पन्न० १७ पद।

धम्म-१ पुं० *[धर्म]*
स्वभावे, । ठा०। आचा०। दश०। दशा०। नाया०। विशे०। सूय०। उत्त०।
'धम्मस्सभावो त्ति एगट्ठा धम्मो त्ति वा सभावो त्ति वा दो वि एगट्ठा।' निसि०२० उ०।
परिणामः स्वभावः शक्तिर्धर्म्म इतिपर्य्यायाः। ठा०९ ठा०।
धर्माः सहभाविनः, क्रमभाविनश्च पर्य्याया । ठा०२ ठा०१ उ०।
धर्मः-लोलुपतया तद्विषयग्रहणस्वभावः। पण्हा०।

धम्म-२ पुं० *[धर्म]*
धर्म्मं जीवाऽऽदिद्रव्यस्वभावमुपयोगोत्पत्त्यादिकं श्रुताऽऽदिरूपं वा। सम०१० सम०।
'लोहो सुयस्स धम्मो।' विशे०।

धम्म-३ त्रि० *[धर्म्य]*
धर्मादनपेतः, धर्मेण प्राप्यो वा यत्। धर्म्मयुक्ते च। उत्त०।

धम्म-४ न० *[धर्म्य]*
जिनप्रणीतभावश्रद्धानाऽऽदिलक्षणे ध्यानभेदे, आव० ४ अ०।

धम्म-५ पुं० *[धर्म]*
धर्मः-दुर्गतौ प्रयतन्तं सत्त्वसङ्घातं धारयतीति, आव०।
दुर्गतौ प्रपतन्तमात्मानं धारयतीति धर्मः। आव०।

धम्म-६ पुं० *[धर्म]*
धर्मः पञ्चदशो जिनः, यस्मिन् गर्भगते सति जननी दानदयादिके-ष्वधिकारेषु जाती सुधर्म्मेति तेन धर्मजिनः। आव०।

धम्मंतराइय- त्रि० *[धर्मान्तरायिक]*
अन्तरायो विघ्नः, सोऽस्ति येषु तान्यन्तरायिकाणि, धर्मस्य चारित्रप्रतिपत्तिलक्षणस्यान्तरायिकाणि धर्मान्तरायिकाणि। वीर्यान्तरायचारित्रमोहनीयभेदे, भग०९ श०३१ उ०।

धम्मंतराय- पुं० *[धर्मान्तराय]*
धर्मविघ्ने, गच्छा०।

धम्मंतेवासि- पुं० *[धर्मान्तेवासिन्]*
अन्ते समीपे वस्तुं शीलमस्येत्यन्तेवासी, धर्मार्थमन्तेवासी धर्मान्तेवासी। शिष्ये, ठा० १० गच्छा०।
धर्मप्रतिबोधनतः शिष्यो धर्मार्थितयोपपन्नो वा शिष्यो धर्मान्ते-वासी। शिष्यभेदे, ठा० ४ ठा० ३ उ०।

धम्मकंखिय- त्रि० *[धर्मकाङ्क्षित]*
धर्मे काङ्क्षा संजाताऽस्येति धर्मकाङ्क्षितः। धर्मेच्छावति, तं०।

धम्मकहा- स्त्री० *[धर्मकथा]*
दुर्गतौ प्रपतन्तं सत्त्वसङ्घातं चारयतीति धर्मः, तस्य कथनं कथा धर्मकथा। ओह०।
धर्मसम्बद्धाया वार्त्तायाः कथनं धर्मकथा। उत्त० २९ अ०।
धर्मदेशनाऽऽदिलक्षणवाक्यप्रबन्धरूपे कथाभेदे, गच्छा०३ अधि०
अहिंसाऽऽदिधर्मप्ररूपणा धर्मकथेति। उव०।
यत् पुनः–इह परत्र च स्वयं च कर्मविपाकोपदर्शनं सा धर्मकथति। बुह०१ उ०३ प्रक०।
धर्मकथा धर्मोपायकथा। उक्तं च–'दयादानक्षमाऽऽद्येषु, धर्माङ्गेषु प्रतिष्ठिता। धर्मोपादेयतागर्भाः, बुधैर्धर्मकथोच्यते इयं चोत्तराध्ययताऽऽदिरूपाऽवसेयेति। ठा० ३ ठा० ३ उ०।

धम्मकहि- पुं० *[धर्म्मकथिन्]*
प्रवचनप्रभावकभेदे, संथा०। निसि० । दश०। पिंड०।

धम्मकाम- त्रि० *[धर्मकाम]*
धर्मे श्रुतचारित्रलक्षणे कामो वाञ्छा यस्य स धर्म्मकामः। धर्म्मवाञ्छावति, तं०।

धम्मकित्ति- पुं० *[धर्म्मकीर्त्ति]*
स्वनामख्याते आचार्य्ये, नं०।
स्वनामख्याते बौद्धसूरौ, आव०म०१ अ०।

धम्मक्खाइ-१ पुं० *[धर्माऽऽख्यायिन्]*
धर्म्मामाख्याति भव्यानां प्रतिपादयतीति धर्म्माऽऽख्यायी। धर्म-प्रतिपादके, उव०। सूय०। नाया०।

धम्मक्खाइ-२ पुं० *[धर्माऽऽख्यायिन्]*
धर्माद्वा ख्यातिः प्रसिद्धिर्यस्य सः। धर्मेण प्रसिद्धे, उव०।

धम्मघोस-१ पुं० *[धर्मघोष]*
मथुरास्थे पार्श्वनाथस्य शिष्ये स्वनाम-ख्याते आचार्य्ये, कल्प०।
दक्षिणमथुरास्थे स्वनामख्याते आचार्य्ये, आव०चू०१ अ०।
महावीरस्वामिनः शिष्ये स्व नामख्याते आचार्य्ये, आव०चू०४ अ०। आव०।
कौशाम्बीनगरस्थे धर्मवसोराचार्य्यस्य शिष्ये स्वनामख्याते आचार्य्ये, आव० ४० अ०। आव०चू०।
तपागच्छस्थे देवेन्द्रसूरेः शिष्ये स्वनामख्याते आचार्य्ये, गच्छा०४
मगधजनपदस्थवसन्तपुरनगरस्थे स्वनामख्याते आचार्य्ये, सूय० २ श्रु० ६ अ०।

धम्मघोस-२ पुं० *[धर्मघोष]*
आतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्ण्णकवृत्तिकारकस्य महेन्द्रसूरेर्गुरौ स्वनाम ख्याते आचार्य्ये, आतु०।

धम्मघोस-३ पुं० *[धर्मघोष]*
चम्पानगरीवास्तव्ये स्वनामख्याते स्थविरे, नाया०१ श्रु०१६ अ०।
विमलजिनस्य प्रपौत्रके शिष्ये स्वनामख्याते स्थविरे, भग०।

धम्मघोस-४ पुं० *[धर्मघोष]*
वाराणसीनगरस्थे स्वनामख्यातेऽनगारे,आव०चू०४अ०। आव०।
उज्जयिनीवास्तव्ये स्वनामख्यातेऽनगारे, आव० ४अ०। आव०।

धम्मघोस-५ पुं० *[धर्मघोष]*
चम्पानगरीनृपतेर्मित्रप्रभस्य स्वनामख्यातेऽमात्ये, आव० ४ अ०।

धम्मचक्क- न० *[धर्मचक्र]*
तीर्थकृतां धर्म्मप्रकाशकं चक्रं धर्मचक्रम् तीर्थकृतां पुरः पद्म प्रतिष्ठिते स्फुरत्किरणचक्रे धर्मप्रकाशके चक्रे, तच्च यत्र यत्र जगद्गुरु र्विचरति तत्र तत्र देवैर्नीयमानं गगनगतं गच्छतीति। आव०म०। आव०चू०।
तक्षशिलायां बाहु बलिना कारिते भगवत ऋषभदेवस्य धर्मप्रकाशके चक्रे च, आव०।

धम्मचक्कवट्टि- पुं० *[धर्मचक्रवर्तिन्]*
तीर्थकरे, आव०चू० १ अ०।

धम्मचरण- न० *[धर्मचरण]*
क्षान्त्याद्यासेवने। 'धम्मचरणं पडुच्च।' जीवा० १ प्रति०।
बाह्यवेषपरिकरितप्रव्रज्याप्रतिपतिः। जीवा०।

धम्मचिंतग- पुं० *[धर्मचिन्तक]*
धर्मशास्त्रपाठके सभासदे, उव०।
धर्मचिन्तको धर्मसंहितां परिज्ञातवान् सभासदः। नाया० १ श्रु० १४ अ०।
याज्ञवल्क्यप्रभृत्यृषिप्रणीतधर्म्मसंहिताश्चिन्तयन्ति, ताभिश्च व्यव-हरन्ति ये ते धर्म्मचिन्तकाः अणुओ०।

धम्मचिंता- स्त्री० *[धर्मचिन्ता]*
धर्मा जीवाऽऽदिद्रव्याणामनुष्योगोत्पादाऽऽदयः स्वभावास्तेषां चिन्ताऽनुप्रेक्षा, धर्मस्य वा श्रुतचारित्राऽऽत्मकस्य सर्वज्ञ-भाषितस्य हरिहराऽऽदिनिगदितधर्मेभ्यः प्रधानोऽयमित्येवं चिन्ता धर्मचिन्ता। सम० १० सम०। दशा०।
सूत्रार्थानुचिन्तनाऽऽदिलक्षणशुभचित्तप्रणिधाने, 'छट्ठं पुण धम्म-चिंताए।' गच्छा० २ अधि०। ठा०।

धम्मजणणी- स्त्री० *[धर्मजननी]*
धर्मदातृत्वेन प्रतिपन्नमातरि, यथा हरिभद्रसूर्याकिनी महत्तरिका 'हरिद्दधम्मजणणीऐ, । जीवा० २७ अधि०।

धम्मजस-१ पुं० *[धर्मयशस्]*
कौशाम्बीवास्तव्यस्य धर्मवसोराचार्य्यस्य शिष्ये स्वनामख्याते आचार्य्ये, । आव०। आव० चू०।

धम्मजस-२ पुं० *[धर्मयशस्]*
महावीरस्वामिनः स्वनामख्याते शिष्ये, आव०४अ०। आव०चू०।

धम्मजस-३ पुं० *[धर्मयशस्]*
वाराणसीनगरस्थे स्वनामख्यातेऽनगारे,आव०४अ०। आव०चू०।

धम्मजागरिया- स्त्री० *[धर्मजागरिका]*
धर्मचिन्तायाम् ।धर्मध्यानेन जागरिका धर्मजागरिका। कल्प०३।
धर्मध्यानानुस्मरणे, धर्मध्यानलक्षणं जागरितुं, 'झाणं वा झाइ-त्तए' धर्मध्यानमनुस्मर्तव्यम्। बुह० १ उ० १ ।
धर्माय धर्मचिन्ताया वा जागरिका जागरणं धर्मजागरिका। भग० १२ श० १ उ०।

धम्मजिण- पुं० *[धर्मजिन]*
सर्वेऽपि भगवन्त ईदृशास्ततो विशेषमाह–'गब्भगए जं जननी, जायसुधम्म त्ति तेण धम्मजिणो।' भगवति गर्भगते येन कारणेन विशेषतो जननी जात-सुधर्मा दानदयाऽऽदिरूपशोभनधर्मपरा-यणा, तेन नामतो धर्म जिनः।आव०म०२ अ०। सम०। कल्प०।
'धम्मेणं अरहा दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे० जाव पहीणे।' ठा० १० ठा०।

धम्मजीवि- पुं० *[धर्मजीविन्]*
संयमैकजीविनि, 'णिग्गंथा धम्मजीविणो।' दश० ६ अ०।

धम्मज्जिय- त्रि० *[धर्मार्जित]*
धर्मेण क्षान्त्यादिरूपेणार्जितमुपार्जितम्। धर्मेणोत्पादिते, 'धम्म-ज्जियं च ववहारं।' धर्मेण साधु धर्मेणोत्पादितः। उत्त०१ अ०।

धम्मज्झय-१ पुं० *[धर्मध्वज]*
धर्मचक्रवर्तित्वसूचके केतौ, महेन्द्रध्वजे रा०।

धम्मज्झय-२ पुं० *[धर्मध्वज]*
ऐरवते भविष्यति स्वनामख्याते जिने, सम०।

धम्मज्झयण- न० *[धर्माध्ययन]*
सूत्रकृताङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धस्य धर्मप्रतिपादकनवमेऽध्ययने,सूय०

धम्मज्झाण- न० *[धर्मध्यान]*
धर्ममाज्ञाऽऽदिपदार्थस्वरूपपर्य्यालोचनैकाग्रता। सम०१ सम०।
धर्मभावं गतो धर्म्यः। आव०चू०४ अ०।
श्रुतचरणधर्मादनपेतं धर्म्यम्। स्था० ४ ठा० १ उ०।
तदेव ध्यानं धर्म्मध्यानम्। ध्यानभेदे, उव०। गच्छा०।

धम्मज्झाणि- पुं० *[धर्मध्यानिन्]*
धर्मध्यानवति, 'जिणसाहुगुणुक्कित्तणपसंसणादाणविणयसंपन्नो। सुअसीलसंजमरओ, धम्मज्झाणी मुणेअव्वो। आव०४ अ०।

धम्मट्ठ- पुं० *[धर्मार्थ]*
धर्मः श्रुतचारित्राऽऽख्यस्तेनार्थः प्रयोजनम्। धर्महेतुके प्रयोजने, सूय० १ श्रु० २ अ० २ उ०।
धर्मनिमित्ते, आचा०२ श्रु०५ अ०१ उ०।
धर्मश्चार्थः, परमार्थतोऽन्यस्यानर्थरूपत्वात् ।सूय०१श्रु०२अ०३ उ०
तस्यैव सद्भिरर्ज्यमाणत्वात् धर्मार्थः। सूय०१ श्रु०१६ अ०।
धर्मरूपेऽर्थे, जन्तूतां धर्मरूपमर्थं व्याकुर्वन्ति ये धर्मप्रतिपत्ति-योग्या इत्यर्थः। सूय० १ श्रु० १५ अ०।

धम्मट्ठकाम- पुं० *[धर्मार्थकाम]*
धर्मः चारित्रधर्मादिस्तस्यार्थः प्रयोजनं मोक्षः, तं कामयतीच्छति विशुद्धविहितानुष्ठानकरणेनेति धर्मार्थकामः।मुमुक्षौ, दश०६अ०
धर्मार्थकामेषु, दश० ६ अ०।

धम्मट्ठाण- न० *[धर्मस्थान]*
धर्मश्चासौ स्थानं धर्मस्थानम्। धर्मरूपे आलये, । दश०१ अ०।
धर्मादनपेतं धर्म्मम्, तदेव स्थानम्। उपशमप्रधाने द्वितीये क्रियास्थानभेदे, सूय०२ श्रु०२ अ०।
तथा च क्रियास्थानस्याधर्मस्थानधर्मस्थानधर्माधर्मस्थान भेदेषु। द्वितीयं धर्मोपादानभूतं पक्षमाश्रित्य पुरुषविजयविभङ्गाद् वक्ष्यति । सूय० २ श्रु० २ अ०

धम्मट्ठि- पुं० *[धर्मार्थिन्]*
धर्मः श्रुतचारित्राऽऽख्यस्तेनार्थो धर्मार्थः। सूय०२ श्रु०१ अ०।
धर्मः श्रुतचारित्राऽऽख्यस्तेनार्थः प्रयोजनं, स एवार्थस्तस्यैव सद्भि रर्ज्यमाणत्वाद् धर्मार्थः, स यस्यास्ति। सूय० १श्रु० २अ० २उ०।
धर्मेणार्थो, धर्म्म एव वाऽर्थः परमार्थतोऽन्यस्यानर्थरूपत्वाद् धर्मार्थः, स विद्यते यस्याऽसौ धर्मार्थः।
धर्मप्रयोजनवति, सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ० । जीवा०।
धर्मः श्रुतचारित्राऽऽख्यस्तेनार्थः स एवार्थोधर्मार्थः, स विद्यते यस्याऽसौ धर्मार्थी।
न पूजाऽऽद्यर्थं क्रियासु प्रवर्त्तते, अपि तु धर्मार्थम्। सूय० १ श्रु० १६ अ०

धम्मणायग- पुं० *[धर्मनायक]*
धर्मस्य क्षायिकज्ञानदर्शनचारित्राऽऽ-त्मकस्य नायकः स्वामी, यथावत्पालनाद् धर्मनायकः। सम०१ सम०।
तद्वशीकरणात् तत्फलपरिभोगाच्च धर्मनायकः।जीवा०३ प्रति०।
तीर्थकरे, कल्प०१ अधि०१ । रा०।

धम्मणिरुच्छाह- पुं० *[धर्मनिरुत्साह]*
सदनुष्ठाननिरुद्यमे, 'णहु धम्म निरुच्छाहो, पुरिसो सूरो सुवलिओ वि।' सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०।

धम्मतित्थ- न० *[धर्मतीर्थ]*
तीर्यते संसारसागरोऽनेनेति तीर्थं, धर्म एव धर्मप्रधानं वा तीर्थं धर्मतीर्थम्। धर्मरूपे तीर्थे, धर्मप्रधाने तीर्थे च।आव०म०२ अ०।

धम्मतित्थयर- पुं० *[धर्मतीर्थकर]*
तीर्यतेऽनेनेति तीर्थं, धर्मप्रधानं तीर्थं धर्मतीर्थं, धर्मग्रहणाद् द्रव्यतीर्थस्य नद्यादेः शाक्याऽऽदिसम्बन्धिनश्चाधर्मप्रधानस्य परिहारः। तत्करणशीलो धर्मतीर्थकरः। सदेवमनुजासुरायां पर्षदि सर्वभाषापरिणामिन्यां धर्मतीर्थप्रवर्तके जिने। आव०म०।

धम्मतोलण- न० *[धर्मतोलन]*
धर्माधिकरणिकनीतिशास्त्रप्रसिद्धे धर्मतोलने, वव०२ उ०।

धम्मत्थकाम- पुं० *[धर्मार्थकाम]*
धर्मार्थं कामयतीति। साधौ, दश० ६ अ०।
धर्मश्चारित्रधर्माऽऽदिस्तस्यार्थः प्रयोजनं मोक्षः, तं कामयन्ते इच्छन्ति विशुद्धवेदानुष्ठानकरणेनेति धर्मार्थकामाः। मुमुक्षुषु, दश० ६ अ०।
आयारकहा। निसि०।

धम्मत्थिकाय- पुं० *[धर्मास्तिकाय]*
जीवानां पुद्गलानां च स्वभावत एव गतिपरिणामपरिणतानां तत्स्वभावधारणात् तत् स्वभावपोषणाद्धर्मः, अस्तयश्चेह प्रदेशः, तेषां कायः सङ्घातः, अस्तिकायः प्रदेशसङ्घात इत्यर्थः, धर्मश्चासौ अस्तिकायश्च धर्मास्तिकायः। पन्न०१ पद। जीवा०। अणुओ०।
'जीवानां पुद्गलानां च गत्युपग्रहकारणम्। धर्मास्तिकायो ज्ञान-स्य, दीपश्चक्षुष्मतो यथा।।१।।' इत्युक्तलक्षणे, आव०४ अ०।
सकललोकव्याप्यसंख्येयप्रदेशाऽऽत्मकामूर्तः।अजीवद्रव्य विशेषे अणुओ०।

धम्मत्थिकायदेस- पुं० *[धर्मास्तिकायदेश]*
धर्मास्तिकायस्य बुद्धिकल्पितो द्व्यादिप्रदेशाऽऽत्मको विभागो धर्मास्तिकायदेशः। अजीवद्रव्यभेदे, पन्न०१ पद। जीवा०।

धम्मत्थिकायप्पएस- पुं० *[धर्मास्तिकायप्रदेश]*
धर्मास्तिकायस्य प्रकृष्टो देशः प्रदेशः, निर्विभागो निरंशो भागो धर्मास्तिकायप्रदेशः। पन्न०१ पद।
अजीवद्रव्यभेदे। जीवा०।

धम्मद- पुं० *[धर्मद]*
धर्मं चारित्ररूपं ददातीति धर्मदः। जीवा०३ प्रति०। चारित्रधर्मदायके तीर्थकरे, कल्प०१ अधि०१ क्षण।

धम्मदय- पुं० *[धर्मदय]*
धर्मं श्रुतचारित्राऽऽत्मकं दुर्गतिप्रपतज्जन्तुधारणस्वभावं दयते ददातीति धर्मदयः। सम०१ सम०।
चारित्रधर्मदायके तीर्थकरे, भग०१ श०१ उ०।

धम्मदाण- न० *[धर्मदान]*
धर्मकारणं दानं, धर्म एव वा दानम्। 'समतृणमणिमुक्ताभ्यो, यद्दानं दीयते सुपात्रेभ्यः। अक्षयमतुलमनन्तं, तद्दानं भवति धर्माय।।१।।' इत्युक्तलक्षणे दानभेदे, ठा०१० ठा०।

धम्मदार- न० *[धर्मद्वार]*
धर्मस्य चारित्रलक्षणस्य द्वारमिव द्वारं धर्म द्वारम्। क्षान्त्यादिके धर्मोपाये, 'चत्तारि धम्मदारा पण्णत्ता। तं जहा–खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे।' धर्मस्य चारित्रलक्षणस्य द्वाराणीव द्वाराण्यु-पायाः क्षान्त्यादीनि धर्मद्वाराणि। ठा०४ ठा०४ उ०।

धम्मदिवस- पुं० *[धर्मदिवस]*
चतुर्दश्यष्टमाऽऽदिके धर्मदिने, सूय०२ श्रु०७ अ०।

धम्मदुम- पुं० *[धर्मद्रुम]*
धर्मवृक्षे, संथा०।

धम्मदूअ- पुं० *[धर्मदूत]*
वृद्धावस्थासूचके पलिताऽऽदिके, तस्या धर्मकरणयोग्यावस्थो-पदेशकत्वात्तथात्वम्। आव० ४ अ०।

धम्मदेव- पुं० *[धर्मदेव]*
धर्मेण श्रुताऽऽदिना देवो धर्मप्रधानो वा देवो धर्मदेवः। भग०१२ श०९ उ०।
चारित्रवद्रूपे देवभेदे, ठा० ५ ठा०१ उ०।
धर्मप्रधाना देवाः चारित्रवन्तः। ठा० ३०३।

धम्मदेसग- पुं० *[धर्मदेशक]*
धर्मं श्रुतचारित्राऽऽत्मकं देशयतीति धर्मदेशकः।भग०१श०१ उ० धर्मोपदेशदायके, कल्प०१ अधि०१ क्षण। रा०।

धम्मधम्मिभाव- पुं० *[धर्मधर्मिभाव]*
धर्मधर्मितायाम्, आव०म०१ अ०।

धम्मधुरा- स्त्री० *[धर्मधुरा]*
धर्म एवातिसात्त्विकैरुह्यमानतया धूरिव धूर्धर्मधुरा।उत्त०१४ अ० धर्माऽऽत्मिकायां धुरि, धर्मधुराधिकारे दशविधयतिधर्मधूर्वह-नाधिकारे। उत्त० १४ अ०।
धर्मचिन्तायाम्, बुह०१ उ०।

धम्मपइण्ण- त्रि० *[धर्मप्रतिज्ञ]*
धर्मकरणाभ्युपगमपरे, वव०१ उ०।

धम्मपक्खिय- त्रि० *[धर्मपाक्षिक]*
पुण्योपादानभूते, सूय०२ श्रु०२ अ०।

धम्मपडिमा- स्त्री० *[धर्मप्रतिमा]*
धर्मः श्रुतचारित्रलक्षणः, तद्विषया प्रतिमा-प्रतिज्ञा, धर्मप्रधानं शरीरं वा धर्मप्रतिमा। धर्मविषयकप्रतिज्ञायाम्, धर्मप्रधाने शरीरे च। ठा० १ ठा०।

धम्मपण्णत्ति- स्त्री० *[धर्मप्रज्ञप्ति]*
धर्मप्ररूपणायाम्, धर्मप्ररूपणावति दर्शने च। उवा० ६ अ०।
धर्मप्रज्ञप्तिर्यथावस्थितधर्मप्रज्ञापनात्।दशवैकालिकस्य षड्जीव-निकायाऽऽख्येऽध्ययने च। दश०४ अ०।
'आयप्पवायपुव्वा, निज्जूढा होइ धम्मपण्णत्ती' दश०१ अ०।

धम्मपण्णवणा- स्त्री० *[धर्मपन्न०पना]*
धर्मस्य क्षान्त्यादिदशलक्षणोपेतस्य प्रज्ञापना प्ररूपणा धर्मप्रज्ञा-पना। धर्मप्ररूपणायाम्, । सूय०१ श्रु०१ अ०२ उ०।

धम्मपय- न० *[धर्मपद]*
धर्मफलके सिद्धान्तपदे, 'जस्संतिए धम्मफलानि सिक्खे।' दश० ९ अ०१ उ०।
क्षान्त्यादिके च। आचा० १ श्रु०५ अ० ४ उ०।

धम्मपरंपरा- त्रि० *[परम्पराधर्म]*
परम्परया धर्मो यस्य स परम्पराधर्मः। । परम्परया धर्मं प्राप्ते, उत्त०१४ अ०।

धम्मपरायण- त्रि० *[धर्मपरायण]*
धर्मानुष्ठायिनि, दर्श०४ अ०।
धर्म ध्यानतत्परे, उत्त०१४ अ०।
धर्मेकनिष्ठे, उत्त०१४ अ०।

धम्मपाढग- त्रि० *[धर्मपाठक]*
धर्माध्यापके, आव०म०१ अ०

धम्मपारग- त्रि० *[धर्मपारग]*
धर्मस्य श्रुतचारित्राऽऽत्मकस्य पारगः सम्यग् वेत्ता धर्मपारगः। धर्मस्य सम्यग् वेत्तरि, 'आचा० १ श्रु० ८ अ०८ उ०।

धम्मपिवासिय- त्रि० *[धर्मपिपासित]*
पिपासेव पिपासा, प्राप्तेऽपि धर्मेऽतृप्तिः, धर्मपिपासा संजाता-ऽस्येति धर्मपिपासितः। धर्मप्राप्तावतृप्ते, तं०। भग०।

धम्मपुरिस- पुं० *[धर्मपुरुष]*
अर्हति, ठा०।
धर्मः क्षायिकचारित्राऽऽदिः, तदर्जनपरः पुरुषो धर्मपुरुषः। पुरुषभेदे, ठा०३ ठा० १ उ०। विशे०। आव०म०। आव०चू०।

धम्मप्पएस- पुं० *[धर्मप्रदेश]*
धर्मशब्देन धर्मास्तिकायो गृह्यते, तस्य प्रकृष्टो देशः प्रदेशो निर्विभागो भागो धर्मप्रदेशः। अणुओ०।

धम्मप्पलज्जण- त्रि० *[धर्मप्ररञ्जन]*
धर्मे प्ररज्यते आसज्यते इति धर्म प्ररञ्जनः। उव०।
धर्मप्रायेषु कर्मसु प्रकर्षेण रज्यत इति धर्मप्ररञ्जनः। धर्माऽऽ सक्ते नाया० १ श्रु०१८ अ०।

धम्मप्पलोइ- पुं० *[धर्मप्रलोकिन्]*
धर्मं प्रलोकयत्युपादेयतया प्रेक्षते पाखण्डिषु वा गवेषयतीति धर्मप्रलोकी। धर्मरयापादयतया प्रेक्षके, पाखण्डिषु धर्मगवेषके च। उव०। नाया०।

धम्मप्पवाइ- पुं० *[धर्मप्रवादिन्]*
धर्मं प्रवदितुं शीलं यस्य स धर्मप्रवादी। धर्मप्रावादुके, आचाराङ्गचतुर्थाध्ययनस्य द्वितीयोद्देशकार्थाधिकारमधिकृत्य– धर्मं प्रवदितुं शीलं येषां ते धर्मप्रवादिनः, त एव धर्मप्रवादिकाः, धर्मप्रावादुका इत्यर्थः। तेषां परीक्षा युक्तायुक्तविचारणम्। आचा०१ श्रु०४ अ०२ उ०।

धम्मप्पसंसा- स्त्री० *[धर्मप्रशंसा]*
दुर्गतौ प्रपतन्तमात्मानं धारयतीति धर्मः, तस्य प्रशंसा धर्मप्रशंसा। सकलपुरुषार्थानामेव धर्मः प्रधानमित्येवंरूपे धर्मस्य स्तवे, दश०१ अ०।

धम्मप्पावाउय- पुं० *[धर्मप्रावादुक]*
धर्मप्रवादिनि, आचा०१ श्रु० १४ अ०१ उ०।

धम्मप्पिय- त्रि० *[धर्मप्रिय]*
धर्ममित्रे, आचा०२ श्रु०१ चू०४ अ०१ उ०।

धम्मफल- न० *[धर्मफल]*
धर्मस्य फलं धर्मफलम्, धर्मेण वा फलं धर्मफलम्। धर्मप्रयोजने, दश०१ अ०।

धम्मभट्ठ- त्रि० *[धर्मभ्रष्ट]*
धर्मच्युते, दश०१ चू०।

धम्ममाण- त्रि० *[ध्मायमान]*
भस्त्रावातेनोद्दीप्यमाने,लोहगरधम्ममाणधमधर्मितघोसं।उवा० २
अग्निना ताप्यमाने, नाया०१ श्रु०९ अ०।

धम्ममित्त- पुं० *[धर्ममित्र]*
पद्मप्रभजिनस्य पूर्वभवनामधेये, सम०।

धम्ममुह- न० *[धर्ममुख]*
धर्माणां मुखमिव मुखमुपायो धर्ममुखम्। धर्मोपाये, 'धम्माणं कासवो मुहं।' उत्त० २५ अ०।

धम्मय- पुं० *[धर्मद]*
'धम्मद' शब्दार्थे, सम०१ सम०।

धम्मरय- त्रि० *[धर्मरत]*
उद्युक्तविहारिणि, 'धम्मरयपुव्वसूरीणं।' उद्युक्तविहारिचिर-न्तनाऽऽचार्य्याणाम्। जीवा० १ अधि०।

धम्मरयण- न० *[धर्मरत्न]*
जिनप्रणीतदेशविरतिसर्वविरत्यात्मकधर्मरूपे सकलैहिकाऽऽमु-ष्मिकसम्पत्तिजनकेऽचिन्त्यचिन्तामणौ, दश० ४ अ०।

धम्मरुइ- स्त्री० *[धम्मरुचि]*
धर्मे श्रुताऽऽदौ रुचिर्यस्य स तथा। स्था ०१० ठा०।
धर्मेण श्रुतधर्मेण रुचिर्यस्य स धर्मरुचिः। श्रुतधर्माभ्यासरुचिके, । उत्त०२८ अ०।
यो हि धर्मास्तिकायं श्रुतधर्मं चारित्रधर्मं च जिनोक्तं श्रद्धते चारित्रधर्मं च जिनोक्त श्रद्धते स धर्मरुचिरिति। ठा०१० ठा०।

धम्मलद्ध- त्रि० *[धर्मलब्ध]*
धर्मेण सुधिकया लब्धं धर्मलब्धम्, उद्देशकक्रीतकृताऽऽदिदोष-रहिते भक्ताऽऽदौ, ते धम्मलद्धं विणिहाय भुंजे सूय०१ श्रु०११अ०

धम्मवं- त्रि० *[धर्मवत्]*
धर्मोपेते, आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ०।

धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टि- पुं० *[धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्तिन्]*
धर्म्म एव वरं प्रधानं चतुरन्तहेतुत्वात् चतुरन्तं चक्रमिव चातुरन्त-चक्रम्, तेन वर्तितुं शीलं यस्य सः धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती। जीवा० ३ प्रति०४ उ०।

धम्मवररयणमंडियचामीयरमेहलाग- पुं० *[धर्मवररत्नमण्डितचामीकरमेखलाक]*
उत्तरगुणरूपरत्नमण्डितमूलगुणरूपधर्माऽऽत्मकचामीकरमेखलोपेते संघमेरौ, तथा च–सङ्घस्य मेरुरूपकेण स्तवमधिकृत्य, नं० इह धर्मो द्विधामूलगुणरूपः, उत्तरगुणरूपश्च। तत्रोत्तरगुणरूपो रत्नानि, मूलगुणरूपस्तु मेखला, न खलु मूलगुणरूपधर्माऽऽत्मकः चामीकरमेखलाविशिष्टोत्तरगुणरूपवररत्नविभूषणविकला शोभते। नं०।

धम्मवसु- पुं० *[धर्मवसु]*
कौशाम्बीनगरस्थे धर्मघोषधर्मयसोर्गुरौ स्व नामख्याते गुरौ, 'कोसंविअजियसेणो, धम्मघोसधम्मजसे।' आव० ४ अ०।

धम्मवाय- पुं० *[धर्मवाद]*
धर्माणां वस्तुपर्यायाणां धर्मस्य वा चारित्रस्य वादो धर्मवादः। दृष्टिवादे, ठा०१० ठा०।

धम्मविउ- त्रि० *[धर्मवित्]*
दुर्गतिप्रसृतजन्तुधारणस्वभावं स्वर्गापवर्गमार्गं वेत्तीति धर्मवित्। आचा०१ श्रु०३ अ०१ उ०।
धर्मं चेतनद्रव्यस्वभावं श्रुतचारित्ररूपं वा वेत्तीति धर्मवित्। आचा० १ श्रु०३ अ०१ उ०।
धर्मं यथावत्तत्फलानि च स्वर्गावाप्तिलक्षणानि सम्यग् वेत्तीति धर्मवित्। सूय०१ श्रु०१६ अ०।
यथावस्थितं परमार्थतो धर्मं सर्वोपाधिविशुद्धं जानातीति धर्म्मवित् सूय०२ श्रु०१ अ०।
धर्मपरिच्छेदकरणनिपुणे, ते सम्यग् धर्म्मपरिच्छेदे कर्तव्ये विद्वांसो निपुणाः।
तथाहि–क्षान्त्यादिको दशविधो धर्मस्तमज्ञात्वै वान्यथा च धर्म्मं प्रतिपादयन्तीति। सूय०१ श्रु०१ अ०१ उ०।

धम्मविणिच्छय- पुं० *[धर्मविनिश्चय]*
इत्यादिरूपे धर्मस्वरूपपरिज्ञानाऽऽत्मके विनिश्चयभेदे, ठा० ३ ठा० ३ उ०।

धम्मवित्तिय- त्रि० *[धर्मवृत्तिक]*
धर्मेणैव चारित्राविरोधेन, श्रुताविरोधेन वा वृत्तिर्जीविका यस्य। धर्माविरुद्धजीविके, 'धम्मे ण चेव वितिं कप्पेमाणा।' उव०।

धम्मवीमंसय- पुं० *[धर्मविमर्शक]*
धर्मविचारके, पण्हा०२ अ०।

धम्मसंहिया- स्त्री० *[धर्मसंहिता]*
धर्मवृद्ध्यर्थं संहिता बद्धा रचिता। अणुओ०।

धम्मसड्डा- स्त्री० *[धर्मश्रद्धा]*
धर्मः श्रुतधर्माऽऽदिस्तत्र तत्करणाभिलाषरूपा श्रद्धा धर्मश्रद्धा। धर्मकरणाभिलाषे, उत्त०२९ अ०।

धम्मसड्डालु- त्रि० *[धर्मश्रद्धालु]*
धर्मलिप्सौ, सूय०२ श्रु०१ अ०।

धम्मसण्णा- स्त्री० *[धर्मसंज्ञा]*
धर्मश्रद्धायाम्, भग०७ श०६ उ०।
मोहनीयक्षयोपसमाज्जावमाने क्षमाऽऽद्यासेवनरूपे संज्ञाभेदे, आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ०।
धर्मसंज्ञा आगमबुद्धिर्मिथ्यात्वम्। ठा०।

धम्मसमुयायार- पुं० *[धर्मसमुदाचार]*
धर्मरूपश्चारित्राऽऽत्मकः समुदाचारः सदाचारः, सप्रमोदो वाऽऽचारो यस्य स धर्मसमुदाचारः। चारित्रधर्माऽऽत्मकसदाचारोपेते, श्रद्धया चारित्रधर्माऽऽत्मकाऽऽचारोपेते च। उव०।

धम्मसरण- न० *[धर्मशरण]*
धर्माऽऽत्मके शरणे, प०।

धम्मसार- पुं० *[धर्मसार]*
धर्मसामर्थ्ये, 'धम्मस्स सारमुवलब्भकरे पमायं।' आव०५ अ०।
धर्मस्य सारः परमार्थो धर्मसारः।धर्मस्य परमार्थे,सूय०१श्रु०८अ०
धर्मस्य सारः चारित्रं धर्मसारः। चारित्रे, सूय०१ श्रु०८ अ०।

धम्मसारहि- पुं० *[धर्मसारथि]*
धर्मरथस्य प्रवर्त्तकत्वेन सारथिरिव धर्मसारथिः। यथा–रथस्य सारणी रथं रथिकमश्वाँश्च रक्षति, एवं भगवान् चारित्रधर्माङ्गानां संयमाऽऽत्मप्रवचनाऽऽख्यानां रक्षणोपदेशाद् धर्मसारथिः। भग०१ श०१ उ०। जीवा०। सम०। रा०।
धर्मस्य स्वपरापेक्षया सम्यक् प्रवर्त्तनपालनदमनयोगतः सारथित्वम्।तद्यथा–सम्यक् प्रवर्त्तनयोगेन परिपाकापेक्षणात्, प्रवर्त्तकज्ञानसिद्धेरपुनर्बन्धकत्वात्, प्रकृत्याऽऽभिमुख्योपपत्तेः। धर्ममार्गप्रवर्त्तयितरि तीर्थकरे, उत्त०१६ अ०। कल्प०।
यथा सारथिरुन्मार्गे गच्छन्तं रथं मार्गमानयति, एवं भगवन्तोऽपि मार्गभ्रष्टं जनं मार्गे आनयन्ति अत्र च मेघकुमारदृष्टान्तः। कल्प०१ अधि०१ क्षण०।

धम्मसासण- न० *[धर्मशासन]*
धर्मज्ञाने, दश०१ चू०।
धर्मशास्त्रे च। दश०।

धम्मसिरी- पुं० *[धर्मश्री]*
अस्याश्चतुर्विंशतिकायाः प्रागनन्तकालेनातीतायां चतुर्विंशतिकायां भवे चरमतीर्थकरे, गच्छा०।
अस्याः ऋषभाऽऽदिचतुर्विंशतिकायाः प्रागनन्तकालेन याऽतीता चतुर्विंशतिका तस्यां मत्सदृशः सप्तहस्ततनुर्धर्मश्रीनामा चरम तीर्थकरो बभूव। गच्छा० १ अधि०।

धम्मसील- त्रि० *[धर्मशील]*
धर्मस्वभावे च। सूय०२ श्रु०२ अ०

धम्मसीलसमुयायार- त्रि० *[धर्मशीलसमुदाचार]*
धर्मशीलो धर्मस्वभावो धर्माऽऽत्मकः समुदाचारो यत्किञ्चनानुष्ठानं यस्य सः।
धर्मस्वभावाऽऽत्मकानुष्ठाने, सूय०२ श्रु०२ अ०।

धम्मसीह- पुं० *[धर्मसिंह]*
अभिनन्दनजिनस्य पूर्वभवनामधेये, सम०
पाटलिपुत्रस्थे स्वनामख्याते क्षत्रियमुनौ, संथा०।

धम्मसुइ- स्त्री० *[धर्मश्रुति]*
अर्हत्प्रणीतधर्माऽऽकर्णने, उत्त०३ अ०।

धम्मसेण- पुं० *[धर्मसेन]*
भगवत ऋषभदेवस्य शतपुत्रेषु स्वनामख्यातेऽन्यतमे पुत्रे, कल्प०१ अधि०७ क्षण०।
नन्दनस्य सप्तमबलदेवस्य पूर्वभवनामधेये, सम०।

धम्महिय- त्रि० *[धर्महित]*
धर्माय हितमुपकारकं धर्महितम्। धर्मोपकारके, उत्त० २ अ०।

धम्माइगर- पुं० *[धर्माऽऽदिकर]*
धर्मो द्विभेदः–श्रुतधर्मश्चारित्रधर्म्मश्च श्रुतधर्मेणेहाधिकारः, तस्य करणशीलो धर्मादिकरः। आव०५ अ०।
श्रुतधर्मस्य सूत्रतः प्रथमकरणशीले तीर्थकरे, आव० ५ अ०। आव०चू०

धम्माणुओग- पुं० *[धर्मानुयोग]*
धारयति दुर्गतौ प्रपतन्तं सत्त्वमिति धर्मः, तस्मिन् धर्मे धर्मविषयेऽनुयोगो धर्मानुयोगः। उत्तराध्ययनाऽऽदिप्रकीर्णक रूपेऽनुयोगभेदे, ओह०।
धर्मकथानुयोग उत्तराध्ययनाऽदिक । आचा०१ श्रु०१ अ०१ उ०।

धम्माणुण्ण- त्रि० *[धर्मानुज्ञ]*
धर्मे श्रुतचारित्रलक्षणेऽनुज्ञाऽनुमोदनं यस्य स धर्मानुज्ञः। दशा०६
धर्मे कर्त्तव्येऽनुज्ञाऽनुमोदनं यस्य स धर्मानुज्ञः। नाया०१ श्रु०१८
धर्मानुमोदितरि, सूत्र ०२ श्रु०२ अ०।

धम्माणुय- त्रि० *[धर्मानुग]*
धर्मं श्रुतचारित्ररूपमनुगच्छतीति धर्मानुगः। धर्मानुयायिनि, दशा० ६ अ०। नाया०। उव०। सूय०।

धम्माणुराग- पुं० *[धर्मानुराग]*
धर्मबहुमाने, भग०१ श०७ उ०।

धम्माणुरागरत्त- त्रि० *[धर्मानुरागरक्त]*
धर्मानुरागो धर्मबहुमानः, तेन रक्त इव यः स तथा। धर्मबहुमानानुरागिणि, भग० १ श० ७ उ०

धम्माधम्मट्ठाण- न० *[धर्माधर्मस्थान]*
उपशमप्रधानानुपशमप्रधाने क्रियास्थानस्य तृतीये भेदे, सूय०२ श्रु०२ अ०।

धम्मारयण- न० *[धर्माऽऽचरण]*
धर्मानुष्ठाने, आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ०।

धम्मायरिय- पुं० *[धर्माऽऽचार्य्य]*
धर्मः श्रुतधर्मस्तत्प्रधानः प्रणायकत्वेनाऽऽचार्य्यो धर्माचार्य्यः। मतोपदेष्टरि, ठा०७ ठा०।
धर्म दाताऽचार्य्यो धर्माचार्य्यः। ठा०३ ठा०१ उ०।
धर्मप्रतिबोधके, ठा० ४ ठा०३ उ०।
'धम्मो जेणुवइट्ठो, सो धम्मगुरू गिही व समणो वा।' ठा० ४ ठा०३ उ०।

धम्मायार- पुं० *[धर्माचार]*
स्त्रीणां चतुःषष्टिकअन्तर्गते कलाभेदे, कल्प०७ अधि०१ क्षण०।

धम्माराम-पुं० *[धर्माराम]*
धर्मे श्रुतधर्माऽऽदावाडित्यभिव्याप्त्या रमते रतिमान् भवतीति धर्मारामः। उत्त०२ अ०।
धर्मविषयकरतिमति साधौ, उत्त० १६ अ०।
धर्म एव सततमानन्दहेतुतया प्रतिपाल्यतया चाऽऽरामो धर्मारामः। उत्त०२ अ०।
धर्मआराम इव पापसंतापोपतप्तानां जन्तूनां निर्वृतिहेतुतया अभिलषितफलप्रदानतश्च धर्माऽऽरामः। धर्माऽऽत्मके आरामे, उत्त०१६ अ०।

धम्मारामरय- त्रि० *[धर्माऽऽरामरत]*
धर्माऽऽरामे रत आसक्तिमान् धर्मारामरतः। धर्माऽऽरामाऽऽसक्ते, उत्त०१६ अ०।
धर्म आ समन्तात् रमन्त इति धर्मारामाः साधवस्तेषु रतो धर्माऽऽरामरतः। साधुभिः सह युक्ते च। उत्त०१६ अ०।

धम्माराहग- पुं० *[धर्माऽऽराधक]*
धर्मानुकूलवर्त्तिनि, ठा०२ ठा०४ उ०। सूय०।

धम्माराहण- न० *[धर्माराधन]*
धर्माऽऽसेवने, ठा०२ ठा०४ उ०।

धम्मावाय- पुं० *[धर्मवाद]*
धर्माणां वस्तुपर्यायाणां धर्मस्य वा चारित्रस्य वादो धर्मवादः। दृष्टिवादे, ठा० १० ठा०।

धम्मि- त्रि० *[धर्मिन्]*
धर्मोऽस्ति यस्याऽसौ धर्म्मी। उव०।
धर्म अस्त्यर्थे इतिः। पुण्यवति, वस्तुगुण स्वरूपधर्मयुक्ते, आचा०

धम्मिट्ठ-१ त्रि० *[धर्मिष्ठ]*
अतिशयेन धर्मी। अत्यन्त-धर्मवति, । रा०।
धर्मबहुले, सूय०२ श्रु०२ उ०।
धर्मोऽस्ति यस्य स धर्मी, स एवान्येभ्योऽतिशयवान् धर्म्मिष्ठः। उव०।

धम्मिट्ठ-२ त्रि० *[धर्मेष्ट]*
धर्मः श्रुतरूप एवेष्टो वल्लभः पूजितो वा यस्य स धर्मेष्टाः। प्रियधर्मे, उव०।

धम्मिट्ठ-त्रि० *[धर्मीष्ट]*
धर्मिणामिष्टो धर्मीष्टः। धर्मिणां वल्लभे,उव०

धम्मिय- त्रि० *[धार्मिक]*
'धर्मेण श्रुतचारित्ररूपेण चरति धार्मिकः। साधौ, ठा० २ ठा०४ उ०। नाया० । सूय०। रा०। उव०। भग०।
धर्मे श्रुतचारित्राऽऽत्मके भवः। ठा०३ ठा०३ उ०।
'न हिंस्यात्सर्वभूतानित्वाचराणि चराणि च। आत्मवत्सर्वभूतानि, यः पश्यति स धार्मिकः।।१।।' अणुओ०।
'धर्मः प्रयोजनमस्येति धार्मिकः। ठा०३ ठा०१ उ०।
धर्मार्थे, दशा०१० अ०।
धर्मे नियुक्तो धार्मिकः। उव०।
धर्माय नियुक्तं धार्मिकम्। धर्मप्रतिबद्धे, धार्मिको धर्म प्रतिबद्धत्वान्, निर० १ श्रु०१ वर्ग०१ अ०।
धार्मिकस्य संयतस्येदं धार्मिकम्। धार्मिकसम्बन्धिनि च। ठा०३ ठा०१ उ०।

धम्मिय- त्रि० *[धर्मित]*
अतिशयेन सन्नद्धे, 'उव०।

धम्मियकरण- न० *[धार्मिककरण]*
धार्मिकस्य संयतस्येदं धार्मिकम्, कृतिः करणमनुष्ठानम्। धार्मिककरणभेदे, ठा०३ ठा०४ उ०

धम्मियजाण- न० *[धार्मिकथान]*
धर्मार्थगमनसाधने याने, धर्मार्थं वानं-गमनं येन तद्धर्मयानं, तन्मध्ये प्रवरं श्रेष्ठं शीघ्रगमनत्वाऽऽदिगुणोपेतमिति। दशा० १० अ०। नाया०। अंत०।

धम्मियजायणा- स्त्री० *[धार्मिकयाचना]*
धर्मकथापूर्वके याचने, आचा०।
धर्मकथनपूर्वकं गच्छान्निर्गतो याचेत। आचा० २ श्रु०१ चू० ३ अ०३ उ०।

धम्मियाधम्मियकरण- न० *[धार्मिकाधार्मिककरण]*
धार्मिकस्य संयतस्येदं धार्मिकमेवमितरन्नवरमधार्मिकोऽसंयतः तस्य करणम्। अथवा धर्मे भवं धर्मो वा प्रयोजनमस्येति धार्मिकम्। विपर्यमितरत्करणं धार्मिकाधार्मिककरणम्। करण भेदे, ठा० ३ ठा० ४ उ०।

धम्मियाधम्मियोवक्कम- पुं० *[धार्मिकाधार्मिकोपक्रम]*
धार्मिकश्चासौ देशतः संयमरूपत्वादधार्मिकश्च तथैवासंयमरूपत्वाद् धार्मिकाधार्मिकः।उपक्रम उपायपूर्वक आरम्भो धार्मिकाधार्मिकोपक्रमः। देशविरताऽऽरम्भरूपे उपक्रमभेदे, ठा० ३ ।

धम्मियाराहणा- स्त्री० *[धार्मिकाऽऽराधना]*
आराधनमाराधना ज्ञानाऽऽदिवस्तुनोऽनुकूलवर्तित्वं, निरतिचार ज्ञानाऽऽद्यासेवनेति यावत्। धर्मेण श्रुतचारित्ररूपेण चरन्तीति धार्मिकाः साधवस्तेपाडियं धार्मिकी। सा चासावाराधना चेति निरतिचारज्ञाना-ऽऽदिपालना धार्मिकाऽऽराधना। आराधनाभेदे, ठा०२ ठा० ४ उ०।
'धम्मिवाराहणा कुविहा पण्णत्ता। तं जहा–सुयधम्माराहण चेव, चरित्तधम्माराहणा चेव।' ठा०२ ठा०४ उ०
विषयभेदेनाऽऽराधनाभेदे, ठा०२ ठा०४ उ०।

धम्मियोवक्कम- पुं० *[धार्मिकोपक्रम]*
धर्मे श्रुतचारित्राऽऽत्मके भवः, स वा प्रयोजनमस्येति धार्मिकः उपक्रमणमुपक्रम उपायपूर्वक आरम्भो धार्मिकोपक्रमः। श्रुतचारित्राऽऽद्यर्थकाऽऽरम्भाऽऽत्मके उपक्रमभेदे, धार्मिकस्य संयतस्य च चारित्राऽऽद्यर्थं द्रव्यक्षेत्रकालभावानामुपक्रमः स धार्मिक एवोपक्रमः। ठा० ३ ठा०३ उ०।

धम्मिल्ल- पुं० *[धम्मिल्ल]*
स्वनामख्याते साधौ, आव०६ अ०। तं०।
कुल्लागसन्निवेशस्थे सुधर्म्मस्वामिनः पितरि, विप्रे च। कल्प०२ अधि०८। आव०म०। आव०चू०

धम्मुज्जय- त्रि० *[धर्मोद्यत]*
धर्मस्पृहावति, जीवा०१२ अधि०।

धम्मुत्तर- त्रि० *[धर्मोत्तर]*
धर्मैर्गुणैरुत्तरो धर्म्मोत्तरः। आव०चू०५ अ०
धर्मप्रधाने सम्यग्दर्शनाऽऽदिके, धर्मोत्तरं चारित्रधर्मोत्तरं चारित्रधर्मप्राधान्यं यथा स्यात्। आव०।

धम्मोवगरण- न० *[धर्मोपकरण]*
संयमोपकरणे, आचा०।

धम्मोवग्गहदाण- न० *[धर्मोपग्रहदान]*
ज्ञानाभयप्रदातृणामाहाराऽऽद्यैरुपग्रहः। दत्तैर्यैर्जायते शुद्धस्तद्धर्मोपग्रहं स्मृतम्' । इत्युक्तलक्षणे दानभेदे, गच्छा०२ अधि०।

धम्मोवाय- पुं० *[धर्मोपाय]*
प्रवचने, तदस्तरेण धर्मस्यासम्भवात्। चतुर्दशसु पूर्वेषु, आव०म०१ अ० ।
सामायिकाऽऽदिके च, आव०म०१ अ०।

धम्मोवायदेसग- पुं० *[धर्मोपायदेशक]*
दुर्गतौ प्रपतन्तमात्मानं धारयतीति धर्मः, तस्योपायो द्वादशाङ्गः प्रवचनम्। अथवा– पूर्वाणि देशयतीति देशकः, धर्मोपायस्य देशको धर्मोपायदेशकः। गणधरे, चतुर्दशपूर्ववित्सु, आव०म०१
'धम्मोवाओ पवयणमहवा पुव्वाइं देसया तस्स। सव्वजिणाण गणहरा, चोद्दसपुव्वी उ जे जस्स। आव०म०१ अ०।

धय- *[ध्वज]*
'झय' शब्दार्थे, कल्प०१ अधि०३ क्षण।

धर- त्रि० *[घर]*
धारके, उव०।
पद्मप्रभस्य षष्ठजिनस्य पितरि कौशाम्बीवास्तव्ये स्वनामख्याते नृपे, आव०१ अ०। सम०। ठा०।
अस्यामवसर्पिण्यामैरवतवर्षभवे विंशतितमे जिने, सम०

धरण-१ पुं० *[धरण]*
दक्षिणनागकुमारनिकायेन्द्रे, ठा०४ ठा०१ उ० पन्न०। भग०।

धरण-१ पुं० *[धरण]*
सलिलावतीविजयस्थवीतशोकाराजधानीस्थस्य महाबलराजपुत्रस्य स्वनामख्याते सवयस्ये मित्रे, नाया०१ श्रु०८ अ०।

धरण-३ पुं० *[धरण]*
द्वारवतीवास्तव्येषु समुद्रविजयाऽऽदिषु दशसु दशार्हेष्वन्यतमे दशार्हे, अंत०१ श्रु०१ वर्ग०१ अ० । सम०।

धरण-४ पुं० *[धरण]*
अधर्मणाऽऽदिभ्यो लभ्यद्रव्यग्रहणार्थे लङ्घनपूर्वके उपवेशने च। नागकुमारेन्द्रे, ठा०।

धरणग- न० *[धरणक]*
ध्रियते येन तद्धरणम्, धरणमेव धरणकम्। येन धृत्वा तोल्यते तस्मिन् तोलनसाधने वस्तुनि, ज्यो० २ पाहु०। ।

धरणप्पभ- पुं० *[धरणप्रभ]*
धरणनागकुमारेन्द्रस्य स्वनामख्याते उत्पातपर्वते, ठा०१० ठा०।

धरणा- स्त्री० *[धरणा]*
मगधदेशस्थायां स्वनामख्यातायां राजधान्याम्, यत्राला देवी। नाया०२ श्रु०३ वर्ग०१ अ०।

धरणिंद- पुं० *[धरणेन्द्र]*
नागराजे, 'नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे।' सूय०१ श्रु०६ अ०। विश्वपुरस्थे स्वनामख्याते राजनि, गच्छा०२ अधि०।

धरणि- स्त्री० *[धरणि]*
भूमौ, सम० ३१ सम०। संथा०। सूर०। चंद०।
जिनस्य प्रथमाऽऽर्थिकायाम्, सम०।

धरणिखील- पुं० *[धरणिकील]*
धरण्याः पृथिव्याः कीलक इव धरणिकीलकः। मेरौ, सूर० ५ पाहु०। । चंद०।

धरणितल- न० *[धरणितल]*
महीपीठे, संथा०। सूय०। नाया०।

धरणितलगमणतुरितसंजणितगमणप्पयार-त्रि० *[धरणितलगमनत्वरितसंजनितगमनप्रचार]* धरणितलगमनाय भूतलप्राप्तये त्वरितः शीघ्रं संजनित उत्पादितो गमनप्रचारो गतिक्रियाप्रवृत्तिर्येन स ।भूतलप्राप्तये शीघ्रोत्पादितगतिक्रियाप्रवृत्तौ, नाया०१श्रु०१अ०

धरणितलगमणतुरितसंजणितमणप्पयार- त्रि० *[धरणितलगमनत्वरितसंजनितमनःप्रचार]*
भूतलप्राप्तये शीघ्रोत्पादितमनः प्रवृत्तो, नाया०२ श्रु०१ अ०।

धरणितलवेणिभूय- त्रि० *[धरणितलवेणिभूत]*
धरणितलस्य वेणिभूतो वनिताशिरसः केशबन्धविशेष इव यः कृष्णत्वदीर्घत्वश्लक्ष्णत्वपश्चाद्भागत्वाऽऽदिसाधर्म्यात् स धरणितलवेणिभूतः। धरण्याः केशबन्धविशेष इव प्रतीयमाने सर्पाऽऽदौ, उवा० २ अ०। भग०।

धरणिधर- पुं० *[धरणिधर]*
विमलजिनस्य स्वनामख्यातायां प्रथमाऽऽर्यिकायाम्, सम०।

धरणिसिंग- पुं० *[धरणिश्रृङ्ग]*
धरण्याः श्रृङ्गमिव धरणिश्रृङ्गः। मेरौ, चंद०५ पाहु०। । सूर०।

धरणी- स्त्री० *[धरणी]*
'धरणि' शब्दार्थे, सम०।

धरणीखील- पुं० *[धरणीकील]* 'धरणिसील' शब्दार्थे, सूर०५ पाहु०। ।

धरणीतल- न० *[धरणीतल]*
'धरणितल' शब्दार्थे, संथा०।

धरणीधर- पुं० *[धरणीधर]*
'धरणिधर' शब्दार्थे, सम०।

धरिज्जंत- त्रि० *[ध्रियमाण]*
धारणविषयीक्रियमाणे, छत्तेणधरिज्जमाणेणं।पण्हा०४अ०। उव

धरिज्जमाण- त्रि० *[ध्रियमाण]* 'धरिज्जंत' शब्दार्थे, पण्हा०४ अ०।

धरिम- न० *[धरिम]*
तृणद्रव्ये, नाया०१ श्रु०१ अ०। विपा० ।
उन्मान-प्रमाणभेदे, ज्यो०२ पाहु० ।ठा०।
धरिमं मञ्जिष्ठादीनि। आव०चू०६ अ०। नाया०। उत्त०।
धरिमं यत्तुलाधृतं सद् व्यवह्रियते इति। नाया०१ श्रु०८ अ०।

धरिमप्पमाण- न० *[धरिमप्रमाण]*
प्रमाणभेदे, ज्यो०।

धरिसण- न० *[धर्षण]*
परिभवे, रमणे, धर्षशब्दार्थे च। निसि०१ उ०।

धव- पुं० *[धव]*
धवति, धुनोति, धुनाति वा। पत्यौ, नाया०१ श्रु०१ अ०। वव०।

धवल- पुं० *[धवल]*
धववृक्षे, वीरणवृक्षे, श्वेतमरिचे, वृषश्रेष्ठे, चीन कपूरि, श्वेतवर्णे च। रा०। ओह०। नाया०। तं०।
'धवलकमलपत्तपयराइरेगरूवप्पभं।' कल्प०१ अधि०२। तं०।

धवलपुप्फदंत- त्रि० *[धवलपुष्पदन्त]*
धवलपुष्पवत् सामर्थ्यात् कुन्दकलिकावद् दन्ता यस्य स धवलपुष्पदन्तः। कुन्दलिकासदृशदन्ते, जीवा०३ प्रति०४ उ०।

धवलिय- त्रि० *[धवलित]*
धवलवर्णीकृते, ठा०५ ठा०२ उ०।

धसत्ति- अव्य० *[धसदिति]*
धसधसेत्यस्यानुकरणे, धसत्तीत्यनुकरणे, नाया०१ श्रु०४ अ०।

धाई- स्त्री० *[धात्री]*
स्तनदायिन्यां जननीकल्पायां बालपालिकायाम् सूय० १ श्रु० ४ अ०१ उ०।
सा च रूढ्या क्षीरमज्जनमण्डनक्री-डनाङ्कभेदात्पञ्चधा। आचा०। अणुओ०। गच्छा० अंत०। रा०। उत्त०। नाया०।

धाईपिंड- न० *[धात्रीपिण्ड]*
बालस्य क्षीरमज्जनमण्डनक्रीडनाङ्कधात्र्यः पञ्च। तासां कर्म धात्रीत्वं, तेन लब्धः पिण्डो धात्रीपिण्डः जीत०।
उत्पादनादोषभेदे, पिंड०। आचा०। गच्छा०। ठा०।
अशनाऽऽद्यर्थं दातुरपत्योपकारे वर्त्तते इति धात्रीपिण्डः। आचा०२ श्रु०१ चू०१ अ०९ उ०।

धाउ- पुं० *[धातु]*
'धारणाद् धातवस्ते स्युर्वातपित्तकडास्त्रयः।' इत्युक्तेषु वाताऽऽदिषु, 'रसासृङ्गांसभेदोऽस्थिमज्जा शुक्राणि धातवः।' सूय०।

धाउकम्म- न० *[धातुकर्मन्]*
पुरुषद्वासप्ततिकलान्तर्गते कलाभेदे, कल्प०१ अधि०७ क्षण।

धाउक्खोभ- पुं० *[धातुक्षोभ]*
धातुवैषम्ये, उव०।

धाउपाग- पुं० *[धातुपाक]*
द्वासप्ततिकलाऽन्तर्गते कलाभेदे, सम०७२ सम०।

धाउप्पावेयण- न० *[धातुप्रावेदन]*
धातुदर्शने, निसि०१३ उ०।

धाउय- न० *[धातुज]*
वस्त्रभेदे, पंच०भा०।

धाउरत्त- त्रि० *[धातुरक्त]*
गैरिकोपरञ्जिते, 'धाउरत्ताओ य गिण्हइ।' भग०२ श०१ उ०।
धातुरक्ता गैरिकोपरञ्जिता, शाटिका इति गम्यम्। उव०।

धाउवाइ- पुं० *[धातुवादिन्]*
वादिभेदे, ठा०९ ठा०।

धामण- न० *[धाटन]*
प्रेरणे, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०।
बध्यपुरुषैर्धाट्यमानाः प्रेर्यमाणाः। प्रश्न० ३ अ०। आव०म०।
नाशने, उव०।

धाण- न० *[ध्राण]*
सुभिक्षे, विभवे च। उत्त०३ अ०।

धाय-१ पुं० *[धाय]*
पणपन्नव्यन्तरविशेषनिकायेन्द्रे, ठा०२ ठा०३ उ०।

धाय-२ न० *[घ्रात]*
सुभिक्षे, दश०७ अ०।
घ्रातं सुभिक्षमिति चैकोऽर्थः। बुह०५ उ०।

धायइ- स्त्री० *[धातकी]*
एकास्थिके वृक्षविशेषे, सम०। पन्न०। अनु० । ठा०।

धायइखंड- पुं० *[धातकीखण्ड]*
धातकीनां वृक्षविशेषाणां खण्डो वनसमूहो धातकीखण्डः। धातकीवने, तद्युक्तो यो द्वीप स धातकीखण्ड एवोच्यते, यथा दण्डयोगाद्दण्डः। ठा०२ ठा०३ उ०।
धातकीनां खण्डानि वनानि यस्मिन् स धातकीखण्डः । आव०।
धातकीवृक्षखण्डोपलक्षितो द्वीपो धातकीखण्डः।
लवणसमुद्रं परिक्षिप्य स्थिते कालोदसमुद्रपरिक्षिप्ते द्वीप भेदे, अणुओ०।

धायइरुक्ख- पुं० *[धातकीवृक्ष]*
एकास्थिके वृक्षविशेषे, ठा०८ ठा०।

धायइवण- न० *[धातकीवन]*
धातकीसमूहे, । आचा०२ श्रु०२ चू०१० अ०। जीवा०।

धायइसंडदीव- पुं० *[धातकीखण्डद्वीप]*
धातकीनां वृक्षविशेषाणां खण्डो वनसमूह इत्यर्थो धातकीखण्डस्तद्युक्तो यो द्वीपः स धातकीखण्ड एवोच्यते। यथा दण्डयोगाद्दण्ड इति धातकी खण्डश्चासौ द्वीपश्चेति धातकीखण्डद्वीपः। लवणसमुद्रं परिक्षिप्य स्थिते कालोदसमुद्रपरिक्षिप्ते द्वीपभेदे, ठा० २ ठा० ३ उ०।

धायइसंडदीवग- त्रि० *[धातकीखण्डद्वीपग]*
धातकीखण्डद्वीपगते, जीवा०३ प्रति०४ उ०।

धायइसंडदीवपच्चच्छिमद्ध- न० *[धातकीखण्डद्वीपपश्चिमार्द्ध]*
धातकीखण्डद्वीपस्य पश्चिमेऽर्द्धभागे, ठा०७ ठा०।

धायइसंडदीवपच्चच्छिमद्धग-पुं० *[धातकीखण्डद्वीपपश्चिमार्द्धग]*
धातकीखण्डद्वीपपश्चिमार्द्धगते मनुष्यभेदे, ठा०६ ठा०।

धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धग-पुं० *[धातकीखण्डद्वीपपौरस्त्यार्द्धग]*
धातकीखण्डद्वीपपौरस्त्यार्द्धगते मनुष्यभेदे, ठा०६ ठा०।

धार- न० *[धार]*
धाराभिर्निर्वृत्तम्, 'धाराभिः पतितं तोयं, गृहीतं स्फीतवाससा। शिलायां वसुधारायां, शीतायां पतितं च यत्।' इत्युपक्रम्य, 'भाजने मृण्डये वाऽपि, स्थापितं धारमुच्यते।' इत्युक्ते शिलाऽऽदिभाजनधृते वर्षोद्भवेजले धारके, बुह०३ उ०। उत्त०।

धारण- न० *[धारण]*
पालने, ठा०३ ठा०३ उ०।
अप्रतिस्खलने, विहारयेत् प्रतिस्खलेत् ।आचा० १ श्रु०६अ०३ उ०
धारयन्ति विभ्रति। सूय०१ श्रु०२ अ०३ उ०।
वस्त्राऽऽदीनां परिग्रहणे, उपभोगे च। ठा० ३ ठा० ३ उ०।

धारणा- स्त्री० *[धारणा]*
मर्य्यादायाम्, न्याय्यपथस्थितौ, अवधारणे, आव०म०१ अ०१।
गृहीतस्याविस्मरणे,विशे० ।आव० ।आव०म० ।निसि० ।आव०चू
अवगतार्थविशेषधारणं धारणा। भग०८ श०२ उ०। ठा०।
निश्चितस्यैव वस्तुनो व्युतपत्यादिरूपेण धारणं। विशे०।
तदात्मके मतिज्ञानभेदे च। ठा०८ ठा०। दश०। नं०। आव०चू०
धृतिर्धारणमर्थानामिति वर्त्तते। परिच्छिन्नस्य वस्तुनोऽविच्युति-वासनास्मृतिरूपं धरणं पुनर्धारणां ब्रुवते। आव०म०१ अ०। नं०।

धारणाबल- न० *[धारणाबल]*
प्रतिवादिनः शब्दतदर्थावधारणबले, वव० १ उ०।

धारणाववहार- पुं० *[धारणाव्यवहार]*
गीतार्थसंविग्नेन द्रव्याऽऽद्यपेक्षया यत्रापराधे यथा या विशुद्धिः कृता, तामवधार्य यदन्यस्त त्रैव तथैव तामेव प्रयुङ्क्ते सा धारणा, वैयावृत्त्यकराऽऽदेर्वा गच्छोपग्रहकारिणोऽशेषानुचितस्योचित-प्रायश्चित्तपदानां प्रदर्शितानां धरणं धारणेति। ठा०५ ठा०२ उ०।
सा एव व्यवहारो धारणाव्यवहारः। पञ्च व्यवहाराणां मध्ये चतुर्थे व्यवहारभेदे, भग०८ श०८ उ०। जीत०। वव०।
धारणाव्यवहारो नामगीतार्थेन संविग्नेनाऽऽचार्येण द्रव्यक्षेत्रकाल-भावपुरुषान् प्रतिसेवनाश्चावलोक्य यस्मिन्नपराधे यत्प्रायश्चित्तम-दायि तत्सर्वमन्यो दृष्ट्वा तेष्वेव द्रव्याऽऽदिषु तादृश एवापराधे तदेव प्रायश्चित्तं ददाति। एष धारणाव्यवहारः। वैयावृत्त्यकरस्य गच्छोपग्राहिणः स्पर्द्धकस्वामिनो वा देशदर्शनसहायस्य वा संविग्नस्योचितप्रायश्चित्तदानंधारणमेषधारणाव्यवहारः ।वव०१उ०

धारणिज्ज- त्रि० *[धारणीय]*
धारयितुं योग्ये, भग० १५ श०। आचा०
धारयितुं शक्ये, यापनीये च। नाया०१ श्रु०८ अ०।

धारणी-१ स्त्री० *[धारिणी]*
सकलगुणधारणाद्धारिणी। सूर०१ पाहु०।

धारणी-२ स्त्री० *[धारिणी]*
एकादशजिनस्य प्रथमार्य्यिकायाम्, सम०।

धारणी-३ स्त्री० *[धारिणी]*
द्वारवतीवास्तव्यस्य वसुदेवस्य भार्यायाम्,अंत०१श्रु०१वर्ग०१ अ०

धारणी-४ स्त्री० *[धारिणी]*
द्वारवतीवास्तव्यस्यान्धकवृष्णेः स्वनामख्यातायां भार्यायाम्, अंत०१ श्रु०१ वर्ग०१ अ०।

धारणी-५ स्त्री० *[धारिणी]*
हस्तिशीर्षनगरस्थस्यादीनशत्रोः राज्ञः भार्यायाम्, 'विपा०२श्रु०१

धारणी-६ स्त्री० *[धारिणी]*
अपरविदेहस्थपूताराजधान्यां धनञ्जयस्य भार्यायाम्,आव०चू० १

धारणी-७ स्त्री० *[धारिणी]*
मथुरानगरीवास्तव्यस्य जितशत्रोः राज्ञो भार्यायाम्, आव०म०१

धारणी-८ स्त्री० *[धारिणी]*
कौशाम्बीवास्तव्यस्याऽजितसेनराज्ञो भार्यायाम्, आव० ४ अ०।

धारणी-९ स्त्री० *[धारिणी]*
राजगृहनगरस्य श्रेणिकराज्ञो भार्यायाम्,नाया०१श्रु०१अ०,अनुत्त०

धारणी-१० स्त्री० *[धारिणी]*
चम्पानगरीस्थस्य मित्रप्रभस्य राज्ञो भार्यायाम्, आव०४ अ०।

धारणी-११ स्त्री० *[धारिणी]*
चम्पानगरीस्थस्य दधिवाहनस्य राज्ञः भार्यायाम्, आव०म०१

धारणी-१२ स्त्री० *[धारिणी]*
पोतनपुरनगरस्य सोमचन्द्रराज्ञो भार्यायाम्,आव०म० ।आव० चू०

धारणी-१३ स्त्री० *[धारिणी]*
राजगृहनगरस्थस्य विश्वनन्दिनृपस्य भ्रातुर्विशाखभूतेर्भार्यायाम्, आव०म०१ अ०

धारणी-१४ स्त्री० *[धारिणी]*
मगधनन्दिग्रामस्थस्य गौतमस्य कणवृत्तिकस्य भार्यायाम्, आव०

धारणी-१५ स्त्री० *[धारिणी]*
कस्मिंश्चिन्नगरे स्थितस्य वज्रसेनस्य राज्ञः स्वनामख्यातायां मङ्गलावत्यपरनामधेयायां भार्यायाम्, आव०चू० १ अ०।

धारणी-१६ स्त्री० *[धारिणी]*
मिथिलास्थस्य जितशत्रोः स्वनामख्यातायां भार्यायां च। सूर० १ पाहु०। । चंद०।

धारय- त्रि० *[धारक]*
धारणसमर्थे, कल्प०१ अधि०१ क्षण०।
धारको धारयितुं क्षमः। उव०।
प्रवर्तके च। निर० १ वर्ग०१ अ०।

धारा- स्त्री० *[धारा]*
खड्गाऽऽदेर्निशिताग्रे, भग०१३ श०६ उ०।
'खुरो इव एगंतधाराए।' नाया०१ श्रु०१ अ०। जंबू०। उत्त०।
घण्टाऽऽदिच्छिद्रे, सन्ततौ, द्रवद्रव्यस्य सन्तत्या पतने, उत्कर्षे, यशसि, अतिवृष्टौ, समूहे,
मेघस्याऽऽसारवर्षणे, भग० कल्प०।
हस्तिनापुरस्थस्य शिवस्य राज्ञो भार्यायां च। आव०म०१।

धारावारि- न० *[धारावारि]*
धाराप्रधाने जले, भग०१३ श०६ उ०।

धारावारिय- त्रि० *[धारावारिक]*
धाराप्रधानं वारि जलं यस्मिन्। धाराप्रधानजलोपेते, 'धारावारि-यलेणाइ वा।' भग०१३ श० ६ उ०।

धाराहय-त्रि० *[धाराहत]*
मेघजलधारासिक्ते, 'धाराहयकयंबपुप्फगं पि व समुस्ससि अरोमकूवे।' कल्प० १ अधि०१ क्षण। भग०।

धारि- पुं० *[धारिन्]*
धारयतीत्येवंशील:। पन्न०२ पद।

धारिणी- स्त्री० *[धारिणी]*
'धारिणी' शब्दार्थे, सूर०१ पाहु०। ।

धारित्तए- अव्य० *[धारयितुम्]*
पालयितुमित्यर्थे, ठा०६ ठा०।
परिग्रहीतुमित्यर्थे, उपभोक्तुमित्यर्थे च। धारयितुं परिग्रहे परि-हर्तुमासेवितुमिति।
अथवा–'धारणया उवभोगो, परिहरणा होइ परिभोगो।' ठा० ५ ठा० ३ उ०

धारय- त्रि० *[धारित]*
सम्यग्धारणाविषयीकृते, धारितं सम्यग् धारणाविषयीकृतं, न विनष्टमिति भाव:। वव० ३ उ०।

धारोदग- न० *[धारोदक]*
गिरिनिकरजले, बुह०२ उ०।

धाव- सक० *[धाव]*
धावति गच्छति। सूय०१ श्रु०७ अ०।

धावण- न० *[धावन]*
शीघ्रगमने, सूय०१ श्रु०७ अ०।
धावनमिति वेगेन गमनम्। जीत०। महानि०। नाया०।
धावनं निष्कारणमतित्वरितमविश्रामं गमनम्। जीत०।
अभ्यङ्गोद्वर्त्तनस्नाने, निसि०११ उ०।
वस्त्राऽऽदीनां प्रक्षालने, सूय०। निसि०। वव०। गच्छा०। पण्हा०
पात्राऽऽदीनां कल्पप्रदाने च। जीत०। बुह०।
मुखनयनाऽऽदिधावने, वव०६ उ०।
वस्त्राण्यधिकृत्य–नो धावयेत्प्रासुकोदकेनाऽपि न प्रक्षालयेद्, गच्छवासिनो ह्यपाप्तवर्षाऽऽदौ ग्लानावस्थायां वा प्रासुकादेकेन यतनया धावनमनुज्ञातं, न तु जिनकल्पिकस्येति।
तथाहि–न च धौतरक्तानि वस्त्राणि धारयेत्पूर्वं धौतानि पश्चाद्रक्तानीति। आचा० १ श्रु० ८ अ० ४ उ०।
धावनं च संयतानां वर्षाकालादर्वाक् कल्पते, न शेषकाले, अनेकदोषसम्भवात्। पिंड०।
कल्पत्रयप्रदानम्। बुह० ।
वेगवद् गमनम्। नाया० २३२।

धि- अव्य० *[धिक्]*
अनिष्टशब्दैर्भयजनने, निर्भर्त्सने, निन्दायाम्, ठा० ७ ठा०। वव०। जंबू०।
'धिगत्थु ते जसोकामी।' धिक् शब्द: कुत्सायाम्। दश०२ अ०।

धिइ- स्त्री० *[धृति]*
धरणं धृति:। आव०म०१ अ०।
धारणे, आव०म०१ अ०।
धारणारूपे मतिज्ञानभेदे, विशे०।
सन्तोषे, कल्प०१ अधि०५ क्षण।
धृतिर्धैर्य्यं चित्तस्यैकाग्रम्। उत्त०३२ अ०।
धृति: संयमे धैर्य्यं चित्तसमाधानम्। सूय०१ श्रु०८ अ०।
रागद्वेषानाकुलतया मन:प्रणिधाने, आव०५ अ०
धृतिर्वज्रकुड्यवदच्छेद्यं प्रणिधानम्। बुह०६ उ०। नाया०। ठा० संथा०। गच्छा०।
धृतिरुद्वेगाऽऽदिदोषपरिहारेण चित्त स्वास्थ्यम्। सम०। बुह०। चंद०।
धृतिश्चित्तदाढ्येमिति। पण्हा०१ अ०। सूर०। विपा० ।
धरणं धृति:। सम्यग्दर्शनचारित्रावस्थाने, सूय०१श्रु०११ । उत्त०।
धृतिर्मूलोत्तरगुणविषय: प्रतिदिवसमुत्सहमान आत्मपरिणाम विशेष:। नं०।
तत्परिपालनीयत्वादहिंसायाम्। पण्हा०१ अ०।
धैर्य्या धिष्ठात्र्यां देवतायाम्, नाया०१ श्रु०१ अ०।
जम्बूमन्दरदक्षिणस्यां दिशि स्थितस्य निषधवर्षधरपर्वतस्य तिगिच्छद्रहाधिष्ठाभ्यां धृतिकूटस्थायां देवतायान्, ठा० ३ ठा० ४ उ०। जंबू०।
निरयावलिकोपाङ्गस्य पुष्पचूलाऽऽख्यचतुर्थवर्गस्य तृतीयाध्य-यने प्रतिबद्धवक्तव्यतायां देव्याम्, निर० १ वर्ग० १ अ०।

धिइकंद- पुं० *[धृतिकन्द]*
धृतिश्चित्तस्वास्थ्यं, स एव कन्द: स्कन्धाधोभागरूपो यस्य स । चित्तस्वास्थ्यरूपस्कन्धाधोभागयुते संवरपादपे, पण्हा०५ अ०।

धिइकूड- न० *[धृतिकूट]*
धृतिस्तिगिच्छह्रदसुरी तस्या: कूटं धृतिकूटम्। जम्बूमन्दरदक्षि-णस्यां दिशि स्थितनिषधवर्षधरपर्वतस्य तिगिच्छह्रदाधिष्ठात्र्या धृतिदेव्याऽधिष्ठिते स्वनामख्याते कूटे, जंबू० ४ वक्ष०। ठा०।

धिइजुय- त्रि० *[धृतियुत]*
धृतिश्चित्तावष्टम्भस्तद्युतो धृतियुत:। मानसावष्टम्भयुते, स हि नातिगहनेष्वप्यर्थेषु भ्रममुपयाति। ठा० १ ।

धिइधणिय- पुं० *[धृतिधनिक]*
धृतेर्मन:स्वास्थ्यस्य धनिक: स्वामी धृतिधनिक:। मन:स्वास्थ्य-स्वामिनि, सम० ६ सम।

धिइधणियणिप्पकंप- त्रि० *[धृतिधनिकनिष्प्रकम्प]*
धृतिरज्जुबन्धनेन धनिकमत्यर्थं निष्प्रकम्पोऽविचलो यः स मध्यमपदलोपाद् धृतिधनिकनिष्प्रकम्पः। धृतिरज्जुबन्धनेनात्यर्थ मविचले, उव०।

धिइधणियबद्धकच्छ- त्रि० *[धृतिधनिकबद्धकक्ष]*
धृतिरेव धनिकमत्यर्थं बद्धा कक्षा येन स । भग०९ श०३३ उ०।
धृतौ सन्तोषे, धैर्ये वा अत्यर्थं बद्धकक्षः धृतिधनिकबद्धकक्षः। कल्प०१ अधि०५ क्षण।
धृत्या चित्तस्वास्थ्येन अत्यर्थं बद्धा कक्षा येन स तथा। नाया०१ श्रु०१ अ०। संथा०।
धृतिश्चित्तसमाधानं, तद्रूपा 'धणिय त्ति' अत्यर्थं बद्धा निष्पीडिता कक्षा बन्धविशेषो यत्र तत्तथा। धृतिबलयुक्ते सम०११ सम।
धृत्या चित्तस्वास्थ्येन धनिकमत्यर्थ बद्धा कृता आराधनारूपा कक्षा प्रतिज्ञा परिकरो वा यैस्ते धृतिधनिकबद्धकक्षाः। संथा०।

धिइबल- न० *[धृतिबल]*
सात्त्विके, कातरे च। बुह० १ उ०।

धिइबलिय- त्रि० *[धृतिबलिक]*
धृतिर्वज्रकुड्यवदच्छेद्यं प्रणिधानं, तया बलिको बलवान्। बुह०

धिइमइ- स्त्री० *[धृतिमति]*
धृतौ मतिर्धृतिमतिः। आव० ४ अ०।
धृतिप्रधाना मतिर्धृतिमतिः। आव० ४ अ०। सम०।
योगसंग्रहभेदे, आव०चू०४ अ०। पण्हा०।

धिइमइववसायदुब्बल- त्रि० *[धृतिमतिव्यवसायदुर्बल]*
धृतिमतिव्यवसाया दुर्बला यस्य स तथा। धृतिमतिव्यवसायेषु दुर्बलो धृतिमतिव्यवसायदुर्बलः। दुर्बलधृतिमतिव्यवसाये धृति-मतिव्यवसायेषु दुर्बले च। सम० ४२ सम०।

धिइमंत- त्रि० *[धृतिमत्]*
धैर्य्यवति, उत्त० २६अ०।
चित्तस्वास्थ्ययुक्ते,अरतिरत्यनुलोमप्रतिलोमोपसर्गसहे,ठा०८ ठा०
असह्यपरीषहाभिद्रुतोऽपि चारित्रधृतिमानिति। सूय०१ श्रु०६ अ०
धृतिः समाधानं संयमे यस्य स धृतिमान्।आचा०२ श्रु०४ चू०१६ अ०। सूय०।
संयमस्वस्थे। दश०
धृतिः संयमे रतिः, सा विद्यते येषां ते धृतिमन्तः। संयमधृत्या हि पञ्चमहाव्रतभारोद्वहनं सुसाध्यं भवति।सूय०१श्रु०९अ०।दश०

धिइवीरियपरिहीण- त्रि० *[धृतिवीर्यपरिहीण]*
मानसिकावष्टम्भबलरहिते, बुह०२ उ०।

धिक्कय- त्रि० *[धिक्कृत]*
धिक् निन्दनीयः कृतः। धिक्कारं प्राप्ते, वव०१ उ०।
भावे तु धिक्कारे,। बुह०६ उ०।

धिक्करण- न० *[धिक्करण]*
धिक्शब्दविषयीकरणे, नाया० १ श्रु० १६ अ०।

धिक्कार- पुं० *[धिक्कार]*
धिगधिक्षेपार्थं एव, तस्य करणमुच्चारणं धिक्कारः। ठा०७ ठा०।
तदात्मके दण्डनीतिभेदे, ठा०७ठा०।जंबू०। आव०म०। कल्प०।

धिज्ज- न० *[धैर्य]*
'धैर्य्यं चित्तसमाधानम्।' सूय०१ श्रु०८ अ०।
सत्त्वे, पण्हा०२ अ०।

धिज्ज- त्रि० *[धेय]*
धारणीये, पालनीये, नाया०१ श्रु०१ अ०।

धिज्ज- त्रि० *[ध्येय]*
हृदि धारणीये, नाया०१ श्रु०१ अ०।

धिज्जाइय- त्रि० *[धिग्जातिक]*
धिग्जातिमति, आव०२ अ०। निसि० ।

धिज्जाईय- त्रि० *[धिग्जातीय]*
धिग्जात्युत्पन्ने, आव०३ अ०। निसि० । आव०म०।

धिज्जीविय- न० *[धिग्जीवित]*
कुत्सितजीविते, सूय०२ श्रु०२ अ०

धिम्मल- न० *[धिङ्गल]*
निन्द्यमले, तं०।

धी- स्त्री० *[धी]*
बुद्धौ, धीर्बुद्धिरित्यनर्थान्तरम्। पंच०चू०। । आचा०।
'धी मई बुद्धी।' आतु०। सूय०। अणुओ०। आचा०।

धीर-१ त्रि० *[धीर]*
धियं बुद्धिं राति ददातीति धीरः। उत्त०७ अ०। आतु०।
धिया औत्पत्त्यादिकया बुद्ध्या राजत इति धीरः। गच्छा० १ अधि०। वव०। आचा०। सूय०। उत्त०। नं०। आव०। आतु०।
बुद्ध्या विराजिते। आचा०।
धीरो विशुद्ध-बुद्धिमानिति। आतु०।
'धीरः सद्बुद्ध्यलङ्कृतः।' सूय०१ श्रु० १३ अ०।
बुद्धिमति, पण्हा०५ अ०। दश०। वव०। सूय०। उत्त०।

धीर-२ त्रि० *[धीर]*
तीर्थकरे, गणधरे च।आचा०१ श्रु०५ अ०२ उ०।आव०। आतु०।

धीर-३ त्रि० *[धीर]*
विवेकिनि, सूय०१ श्रु०७ अ०।
विदुषि, आतु०। दृढचित्ते। पंच०चू०।
साहसिके, सूय०१ श्रु०१ अ०४ उ०। ।
परीषहोपसर्गाऽऽदिभिरक्षोभ्ये, पण्हा०। सूय०। उत्त०। पिंड०। ठा०। आचा०। बुह०। उव०।
महासत्त्वे, सूय०। सम०।

धीर-४ त्रि० *[धीर]*
धीराः कर्मविदारणसहिष्णवः। सूय०१ श्रु०३ अ०४ उ०।
स्थिरे, आव०म०१ अ०१ खण्ड। उत्त०। नं०।

धीर-५ न० *[धैर्य]*
'धिज्ज' शब्दार्थे। प्रा०१ पाद।

धीरकरण- न० *[धीरकरण]*
धीरत्वोत्पादने, धीरकरणकारणानि। सम०६ सम।

धीरकित्तिपुरिस- पुं० *[धीरकीर्तिपुरुष]*
धीराणां सतां या कीर्तिस्तत्प्रधानः पुरुषो धीरकीर्तिपुरुषः। सत्कीर्तिप्रधाने पुरुषे, पण्हा० ४ अ०।

धीरत्त- न० *[धीरत्व]*
परीषहोपसर्गाक्षोभ्यतायाम्, सूय०१ श्रु०८ अ०।

धीरपुरिस-१ पुं० *[धीरपुरुष]*
धीर्बुद्धिस्तया राजत इति धीरः, स चाऽसौ पुरुषश्च धीरपुरुषः। पन्न०१ पद।

धीरपुरिस-१ पुं० *[धीरपुरुष]*
एकान्ततो वीर्यान्तरायकर्मापगमात् तीर्थकरे, धिया राजितत्वाद् गणधरे च। आव० ४ अ०। वव०। दश०।
महासत्त्वमहाबुद्धितीर्थकरगणधरप्ररूपितम्। आव०६ अ०।

धीरवणा-स्त्री० *[धीरापना]*
दुःखेन परिताप्यमानस्य धीरो भव धीरो भव, अहं तवैतद् दुःखं विश्रामणाऽऽदिनाऽपनेष्यामि, अपि च पुण्यभागिन् ! सहस्वैतद् दुःखं सम्यग्, अत एव तत्सहनानन्तरमचिरात्सर्वदुःखप्रहीणो भविष्यसीत्यादिके आश्वासने, वव०१ उ०।

धुंधुमार- पुं० *[धुन्धुमार]*
सुंसुमारपुरस्थे स्वनामख्याते नृपे, आव०चू०४ अ०। आव० । संवेगोदाहरणे शिशुमारपुराधिपतिः। आव० ७०९।

धुण्ण- न० *[धूनन]*
अपनयने, सूय०।
कृशीकरणे, आचा०१ श्रु०४ अ०४ उ०।
परित्यागे, आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ०। ठा०।
भिन्नग्रन्थैरनिवृत्तिकरणेन सम्यक्त्त्वावस्थानरूपे कर्म्मणोऽवस्था-भेदे, आचा०१ श्रु०९ अ०१ उ०।

धुणित्तए- अव्य० *[धूनयितुम्]*
अपनेतुमित्यर्थे, सूय०१ श्रु०२ उ०।
धूननायापनयनाय। सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०।

धुणिया- अव्य० *[धूत्वा]*
क्षपयित्वेत्यर्थे, दश०९ अ०३ उ०। सूय०

धुणेज्ज- न० *[धूननीय]*
पापकर्मणि, आव०चू०१ अ०।

धुण्ण- *[धून्य]*
पापे, दश०९ अ०१ उ०।

धुण्णबहुल- न० *[धून्यबहुल]*
धूयते इति धून्यं प्राग्बद्धं कर्म तत्प्रचुरे दशा०६ अ०।

धुण्णमल- न० *[धून्यमल]*
पापमले, दश०९ अ०१ उ०।

धुतोवाय- पुं० *[धुतोपाय]*
अष्टप्रकारकर्मधूननोपाये संयमाऽऽदिके, आचा०१श्रु०६अ०१ उ०

धुत्तक्खाण- न० *[धूर्त्ताऽऽख्यान]*
धूर्त्तकथानके, गच्छा०।

धुत्तसंवलय- न० *[धूर्तशम्बलक]*
पुरुषद्वासप्ततिकलाऽन्तर्गते कलाभेदे, कल्प०१ अधि०७ क्षण।

धुत्ति- स्त्री० *[धूर्ति]*
जरायाम्, आव०म०१ अ०।

धुम्म- पुं० *[धूम्र]*
कपोतवर्णे, ठा०१ ठा०।

धुय-१ न० *[धुत]*
त्यजने, ठा०९ ठा०।
संयमे, सूय०१ श्रु०७ अ०।
मोक्षे, सूय०१ श्रु०७ अ०।

धुय-२ न० *[धुत]*
धूयतेऽष्टप्रकारं कर्म येन तद् धूतम्। संयमानुष्ठाने, धूननार्हत्वाद् धूतम्। सूय०१ श्रु०२ अ०२ उ०।
धूयते इति धूतम्। प्राग्बद्धे कर्मणि, सूय०२ श्रु०२ अ०। बुह०।
अष्टप्रकारके कर्मणि, आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ०।

धुय-३ न० *[धुत]*
धूतं सङ्गानांत्यजनम्, तत्प्रतिपादकमध्ययनं धूतम्। ठा०९ ठा०।
आचाराङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धस्य षष्ठेऽध्ययने च। नं०। आचा० १ श्रु०६ अ०१ उ०। सम०।

धुय-४न० *[धुत]*
कम्पिते, स्फेटिते, नं०। बुह०।
क्षिप्ते, आतु०। दश०।
अपनीते, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०।
त्यक्ते, 'धुतकेसमंसु लोमनहेहिं।' पण्हा०१ अ० ।
अपगते च। बुह०६ उ०।

धुयकिलेस- त्रि० *[धुतक्लेश]*
क्षिप्तसप्तभयक्लेशे, आतु०।
धूता अपनीताः क्लेशाः कर्माणि येनासाविति। क्षीणाष्टकर्मणि, बुह० १ उ०।

धुयचारि- *[धुतचारिन्]*

धुनातीति धुतं, संयमो मोक्षो वा, तं चरतीति। संयमाऽऽदि-चरणशीले, आचा०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

धुयज्झयण- न० *[धुताध्ययन]*

आचाराङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धस्यषष्ठेऽध्य-यने, आचा०।

धुयपाव- त्रि० *[धुतपाप]*

अपनीतपापे, 'नमोत्थु धुयपावाणं।' आतु०।

धुयबहुल- त्रि० *[धुतबहुल]*

धूयते इति धूतं, प्राग् बद्धं कर्म्म, तत्प्रचुरे, सूय०२ श्रु०२ अ०।

धुयमोह- त्रि० *[धुतमोह]*

धूतो मोहरागद्वेषरूपो येन सः। सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०।

धूतो मोहोऽज्ञानं येन सः। विक्षिप्तमोहे, दश०१ अ०।

धुयरय- त्रि० *[धुतरज्]*

धूतमपनीतं रजः कर्म येन स धूतरजाः।सूय०१ श्रु०४ अ०२ अ०।

धूतं कम्पितं स्फोटितं रजो बध्यमानं कर्म येन स धूतरजाः। नं०

अपगतपापकर्मणि, बृह० ६ उ०।

धुयरजस्कः। ओह० । सम०।

धुयरागमग्ग- पुं० *[धुतरागमार्ग]*

धूतोऽपनीतो रागमार्गो रागपन्था यस्मिन्। अपनीतरागपथे, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०।

धुयवाय- पुं० *[धुतवाद]*

धूतमष्टप्रकारं कर्म, धूननं ज्ञातिपरित्यागो वा, तस्य वादो धूतवादः। कर्मपरित्यागकथने, आचा०।

धुर- पुं० *[धुर]*

अष्टाशीतिमहाग्रहेष्वन्यतमे स्वनामख्याते ग्रहे, 'दो धुरा।' ठा० २ ठा०३ उ०। कल्प०।

धुरी- स्त्री० *[धुरी]*

अक्षे, अणुओ०।

धुव-१ पुं० *[ध्रुव]*

भगवत ऋषभदेवस्य भरताऽऽदिशतपुत्रेष्वन्यतमे पुत्रे, कल्प०१।

धुव-२ पुं० *[ध्रुव]*

शाश्वतत्वाद् मोक्षे, तदुपाये संयमे च। सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०।

ध्रुवो मोक्षः संयमो वा तन्मार्गमेव प्रवदन्ति। सूय०१ श्रु०४ अ०१ उ०। आचा०।

मोक्षकारणीभूते ज्ञानाऽऽदिके आचा०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

कर्मणि, तत्फलभूते संसारे, अणुओ०।

धुव-३ पुं० *[ध्रुव]*

अत्यन्ते, विशे०।

ध्रुवमत्यन्तं, सर्वदेत्यर्थः। ठा०६ ठा०

अवश्यमिर्थे आव०

धुव-४ पुं० *[ध्रुव]*

अर्थतो ध्रुवत्वाच्छाश्वतत्वाद् ध्रुवम्। आवश्यके, विशे०।

त्रिकालभावित्वाद् ध्रुवः। नित्ये, 'धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे। ठा० ।

ध्रुवोऽप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरस्वभावः। सूय० २ श्रु० ४ अ०।

त्रिकालावस्थायित्वाद् ध्रुवं, मेर्वादिवदचले, जीवा० ३ प्रति०४ अधि०। भग०।

ध्रुवोऽवश्यंभावित्वात्। ठा०५ ठा०३ उ०।

अवश्यं भाविनि, सूय०२ श्रु०१ अ०। विशे०। आव०।

ध्रुवं नियतं नैत्यि कमिति त्रयोऽप्येकार्थाः। वव०१ उ०। बृह०।

धुव-५ पुं० *[ध्रुव]*

इन्द्रशक्राऽऽदिवत्पर्यायशब्दा ध्रुवाऽऽदयोनानादेशजविनेयप्रतिप-त्त्यर्थमुपन्यस्ताः। ठा०५ ठा०३ उ०। विशे०। आचा०। गच्छा०।

धुव-६ पुं० *[ध्रुव]*

अप्रतिहार्य्ये, निसि०५ उ०।

निश्चिते, विशे०। आचा०। उत्त०।

अव्यभिचारिणि च। सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०। आचा०।

धुवकम्मिय- पुं० *[ध्रुवकर्मिक]*

लोहकाराऽऽदौ, वव०१ उ०। कल्प ओह०।

धुवचारि- पुं० *[ध्रुवचारिन्]*

ध्रुवो मोक्षस्तत्कारणं च ज्ञानाऽऽदि ध्रुवं, तदाचरितुं शीलं यस्य। मोक्षचरणशीले, मोक्षकारणज्ञानाऽऽद्याचरणशीले च। आचा० १ श्रु० २ अ० २ उ०।

धुवजोगि- पुं० *[ध्रुवयोगिन्]*

नित्ययोगवति, दश०१० अ०।

धुवणिग्गह- पुं० *[ध्रुवनिग्रह]*

प्रवाहतोऽनादिकालीनत्वाद् ध्रुवं कर्म, तन्निगृह्यतेऽनेनेति ध्रुव-निग्रहण विशे०।

अनादित्वात् क्वचिदप्यपर्य्यवसितत्वाद् ध्रुवं कर्म, तत्फलभूतः संसारो वा, तस्य निग्रहहेतुत्वान्निग्रहो ध्रुवनिग्रहः। अणुओ०।

धुवपगडि- स्त्री० *[ध्रुवप्रकृति]*

ध्रुवकर्मप्रकृतौ, आचा०।

ध्रुवकर्मप्रकृतयश्चेमाः–पञ्चधा ज्ञानाऽऽवरणीयं, नवधा दर्शनाऽऽ-वरणीयं, मिथ्यात्वं कषायषोडशकं, भयं, जुगुप्सा, तैजसकार्मण शरीरवर्णगन्धरसस्पर्शाः,गुरुलघूपघातनिर्माणानांपञ्चधाऽन्तरायः एताः सप्तचत्वारिंशद् ध्रुवप्रकृतयः।आचा०१ श्रु०२ अ०१उ०

धुवमग्ग- पुं० *[ध्रुवमार्ग]*

ध्रुवो मोक्षः संयमो वा, तस्य मार्गः। मोक्षमार्गे, संयममार्गे च। 'धुवमग्गमेव पवयंति।' सूय० १ श्रु०४ अ०१ उ०।

धुवराहु- पुं० *[ध्रुवराहु]*

सदैव चन्द्रविमानस्याधस्तात् संचरति राहु-भेदे, सूर० २०

पाहु० । चंद० २० पाहु० ।

धुववग्गणा- स्त्री० *[ध्रुववर्गणा]*

ध्रुवा नित्या लोकव्यापितया सर्वकालावस्थायिनी वर्गणा ध्रुववर्गणा। वर्गणाभेदे, आव०म०१ अ० ।

धुववण्ण- पुं० *[ध्रुववर्ण]*

ध्रुवोऽव्यभिचारी, स चाऽसौ वर्णः संयमो मोक्षो वा ध्रुववर्णः। अव्यभिचारिणि संयमे, मोक्षे च। ध्रुवो वर्णो यशः कीर्तिर्वा ध्रुववर्णः।शाश्वते यशसि,शाश्वत्यां कीर्त्यां च।आचा०१ श्रु०९ अ०

धुवसेण- पुं० *[ध्रुवसेन]*

वीरनिर्वाणान्नवशताशीतिवर्षेष्वतीतेषु जाते स्वनामख्याते नृपे, यस्य पुत्रमरणाऽऽर्त्तस्य शोकापहारार्थं कल्पसूत्रस्य वाचनाऽऽरब्धेति। कल्प०१ अधि०६ क्षण।

धूअरायमग्ग- पुं० *[धूतराजमार्ग]*

धूतोऽपनीतो राजमार्गो राजपन्था यस्मिन्। अपनीतराजपथे, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०।

धूओवाय- पुं० *[धूतोपाय]*

'धुओवाय' शब्दार्थे, आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ०।

धूम- पुं० *[धूम]*

'अंतो धूमेण नारेइ।' धूमेन वह्निलिङ्गेन। सम० ३० सम०।

धूमो मनः शिलाऽऽदिसम्बन्धीभूतत्रासनाऽऽदिकः।उत्त०१५ अ०

द्वेषे, निसि०१६ उ०।

द्वेषाग्निना दह्यमानस्य निन्दाऽऽत्मके कलुषभावे च। धूमो द्विधा। तद्यथा–द्रव्यतो, भावतश्च। तत्र द्रव्यतो योऽर्द्धदग्धानां काष्ठाऽऽदीनां सम्बन्धी। भावतोद्वेषाग्निना दह्यमानस्य सम्बन्धी कलुषभावो निन्दाऽऽत्मकः। पिंड०।

चरणेन्धनस्य द्वेषेण धूमवत इव करणं । गच्छा०१ अधि०।

धूमकेउ- पुं० *[धूमकेतु]*

अष्टाशीतिमहाग्रहाणामन्यतमे महाग्रहे, चंद० २० पाहु०। पन्न०। पण्हा०। ठा०। कल्प०। सूर० ।

अग्नौ, 'पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं।' उत्त०२२ अ०।

धूमकेतु धूम चिह्नं धूमध्वजं नोल्काऽऽदिरूपम्। दश० २ अ०।

धूमचारण- पुं० *[धूमचारण]*

चारणभेदे, धूमवर्तितिरश्चीनामूर्द्धगां वाऽवलम्ब्यास्खलितगमनाऽऽस्कन्दिनो धूमचारणाः। गच्छा०२ अधि०। प्रव०।

धूमण- न० *[धूमन]*

अनागतव्याधिनिवृत्तये धूमपाने, दश०३ अ०।

धूमदोस- पुं० *[धूमदोष]*

अन्तप्रान्ताऽऽदाबाहारे द्वेषाच्चारित्रस्यापि धूननाद्धूमदोषः। आचा० २ श्रु०१ अ०३ उ०।

निन्दन् पुनः पुनश्चारित्रेन्धनम्, दहन् धूमकरणाद् धूमदोषः। द्वेषेण भुञ्जान-स्य धूमदोषः। जीत०। उत्त०।

द्वेषेणाऽऽध्मातस्य यद् भोजनं तत्सधूमं, निन्दाऽऽत्मक-कलुषभावरूपधूमसंमिश्रत्वात्। पिंड०।

धूमपलीयाम- पुं० *[धूमप्रदीप्ताम]*

आमभेदे, निसि०।

धूमप्पभा- स्त्री० *[धूमप्रभा]*

धूमस्य प्रभा यस्यां सा धूमप्रभा। धूमा ऽऽभद्रव्योपलक्षितायां स्वनामख्यातायामपरिष्टापरनामधेयायां पञ्चम्यां पृथिव्याम्। ठा०। अणुओ०। भग०। पन्न०। सम०।

धूमवण्ण- पुं० *[धूमवर्ण]*

पाण्डुरे, नाया०१ श्रु०१७ अ०।

धूमसिहा- स्त्री० *[धूमशिखा]*

धूमाग्रभागे, 'चत्तारि धूमसिहाओ पन्नत्ताओ। ठा०४ ठा०२ उ०।

धूमा- स्त्री० *[धूमा]*

धूमिकायाम्, ठा०१० ठा०।

धूमिय- त्रि० *[धूमित]*

धूमयुते, 'अप्पत्तियधूमधूमितं चरणं।' पिंड०

धूमिया-स्त्री० *[धूमिका]*

मिहिकाभेदे, धूमिका मिहिकाभेदः, वर्णतो धूमिका धूमाऽऽकारा, धूम्रेत्यर्थः। ठा०१० ठा०।

धूमिकामिहिकयोर्वर्णकृतो भेदः। धूमिका धूम्रवर्णा, धूसरेत्यर्थः मिहिका त्वापाण्डुरेति। भग०३ श०७ उ०।

धूमिका रूक्षा प्रविरलाधूमाभा प्रतिपत्तव्या। अणुओ०। जीवा०।

तदात्मके आन्तरिक्षेऽस्वाध्यायभेदे, ठा०१० ठा०।

धूय- न० *[धूत]*

'धुय' शब्दार्थे, ठा०९ ठा०।

धूयकिलेस- त्रि० *[धूतक्लेश]*

'धुयकिलेस' शब्दार्थे, अणुओ०।

धूयचारि- पुं० *[धूतचारिन्]*

'धुयचारि' शब्दार्थे, आचा०१ श्रु०२ अ०३ उ०।

धूयज्झयण- न० *[धूताध्ययन]*

'धुयज्झयण' शब्दार्थे, आचा०१ श्रु०८ अ०४ उ०।

धूयपाव- त्रि० *[धूतपाप]*

'धुयपाव' शब्दार्थे, आतु०।

धूयबहुल- त्रि० *[धूतबहुल]*

'धुवबहुल' शब्दार्थे, सूय०२ श्रु०२उ०

धूयमोह- त्रि० *[धूतमोह]*

'धुयमोह' शब्दार्थे, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०। दश०।

धूयरय- त्रि० *[धूतरजस्]*

'धुयरय' शब्दार्थे, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ०।

धूयरागमग्ग- पुं० *[धूतरागमार्ग]*
'धुयरागमग्ग' शब्दार्थे, सूय०१ श्रु०४ अ०२ उ० ।

धूयवाय- पुं० *[धूतवाद]*
'धुयवाय' शब्दार्थे, आचा०१ श्रु०६ अ०१ उ० ।

धूया- स्त्री० *[दुहितृ]*
दोग्धि च केवलं जननीं स्तन्यार्थमिति दुहिता ।धूया । उत्त०१ अ० 'ताणं धूयाणं ।' आचा०१ श्रु०२ अ०५ उ० । निसि० । आव०म० ।

धूलि- स्त्री० *[धूलि]*
रजसि, परागे च । जीवा०३ प्रति०४ अधि० ।

धूलिजंघ- त्रि० *[धूलिजङ्घ]*
धूल्या धूसरे जङ्घे यस्य स धूलिजङ्घः । पादलग्नधूलिके, वव० १० उ० । निसि० ।

धूलिणाय- न० *[धूलिज्ञात]*
चिक्खिल्लज्ञाते, बुह०१ उ० २ प्रक० ।

धूलिधूसर- त्रि० *[धूलिधूसर]*
लग्नधूलिके, 'धूलिधूसरसर्वाङ्गौ ।' आचा० ।

धूलिबहुल- त्रि० *[धूलिबहुल]*
प्रचुरपांशुके, भग०७ श०६ उ० ।

धूलिवरिस- पुं० *[धूलिवर्ष]*
पांशवृष्टौ, 'धूलीवरिसं वरिसइ ।' आव०म०१ ।

धूली- स्त्री० *[धूली]*
'धूलि' शब्दार्थे, जीवा०३ प्रति०४ उ० ।

धूव- पुं० *[धूप]*
कप्पूरमलयचंदणकालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतसुरभिम-घमघंतगंधुद्धयाभिरामे ।' धूपश्च दशाङ्गाऽऽदिगन्धद्रव्यसंयोगजः । जंबू०१ वक्ष० ।
एतेषां सम्बन्धी यो धूपस्तस्य दह्यमानस्य सुरभिर्यो मघमघाय-मानोऽतिशयवान् गन्ध उद्धत उद्धूतः, तेनाभिराममभिरमणीयं यत् ।नाया०१ ।निसि० ।आव०म० ।पन्न० ।पण्हा० ।जंबू० ।अणुओ

धूवघडी- स्त्री० *[धूपघटी]*
धूपभृतघटिकायाम्, 'ताओ णं धूवघडीओ कालगुरुपवरकुंदुरुक्क तुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुआभिरामाओ सुगंधवरगंधिआओ गंध-वट्टिभूआओ उरालेणं मणुण्णेणं घाणमणणिव्वुइकरेणं गंधेणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणीओ सिरीए अईव उवसोभे-माणा चिट्ठंति ।' जंबू० १ वक्ष० जीवा० ।

धूवण- पुं० *[धूपन]*
धूपप्रदाने, आचा०२ श्रु०२ चू०१३ अ० ।
धूपनमित्यात्मवस्त्राऽऽदेः, तच्चानाचरितम् ।नाया०१श्रु०१७ अ० ।
नो शरीरस्य स्वीयवस्त्राणां वा धूपनं कुर्यात् । सूय०२ श्रु०१ अ० ।

धूवणजाय- न० *[धूपनजात]*
धूपनप्रकारे, आचा०२ श्रु०२ चू०१३ अ० ।

धूवणविहि- पुं० *[धूपनविधि]*
धूपदानप्रकारे, 'धूवणविहिपरिमाणं करेइ नन्नत्थ अगुरुतुरुक्क-धूवमाइएहिं ।' उवा०१ अ० ।

धूविय- त्रि० *[धूपित]*
अगुर्वादिसुगन्धिद्रव्यैः सुगन्धीकृते च । 'दुग्गंध त्ति काउं अगुरु-माईहिं सुगंधीकयं ।' गच्छा०१ अधि० ।
दुर्गन्धाऽऽद्यपनयनार्थं धूपाऽऽदिना धूपित इति । आचा० २ श्रु०१ चू०२ अ०१ उ० ।

धूसर- पुं० *[धूसर]*
गर्दभे, उष्ट्रे, कपोते, तैलाऽऽकारे ईषत्पाण्डुवर्णे, कृष्णश्वेतवर्णे, शुक्लपीतवर्णे च । तद्वर्णवति, 'धूलिधूसरसर्वाङ्गौ ।' आचा० ।

धेज्ज- त्रि० *[धेय]*
धारणीये, पालनीये, नाया०१ श्रु०१ अ० ।

धेज्ज- त्रि० *[ध्येय]*
हृदि धारणीये, नाया०१ श्रु०१ अ० । विपा० ।

धेणु- स्त्री० *[धेनु]*
नवप्रसूतायां गवि, बुह०१ उ० २ । आचा० ।

धेवय- पुं० *[धैवत]*
अतिसंधयते अनुसंधयति शेषस्वरानिति निरुक्तिवशाद् धैवतः । 'इत्युक्तार्थकेरैवतापरनामधेये, ठा०७ ठा० । अणुओ० ।

धोज्ज- त्रि० *[धुर्य]*
धौरेये, 'धोज्जेहिं हुंति उवणीया ।' धुर्य्यै धौरेयैः । वव०१ उ० ।

धोय- त्रि० *[धौत]*
अतिनिर्मलीकृते, जीवा०३ प्रति० ४ उ० । आव०म० । नाया० ।
जलाऽऽदिना प्रक्षालिते, भग० ६ श० ३ उ० ।
प्रभूतजलक्षालनक्रियया धौतं मलिनं सत् प्रक्षालितम् बुह० १ उ० २ ० । उव० ।
अतिनिशितीकृते, रा० । पन्न० ।
शोधिते, नाया०१ श्रु०१ अ० । रा० । जीवा० ।

धोयरत्त- त्रि० *[धौतरक्त]*
पूर्वं धौते पश्चाद्रक्ते वस्त्राऽऽदौ, 'नो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारएज्जा' पूर्वं धौतानि पश्चाद्रक्तानि । आचा० १ श्रु० ८ अ० ४ उ० ।

ध-कारादि शब्द-परिभाषाः समाप्ताः

न-कारादि शब्द-परिभाषा

नई- स्त्री० *[नदी]*

सरिति, सूय०१ श्रु०१ अ०५ उ०।

नंदण-१ न० *[नन्दन]*

देववने।

नंदण-२ न० *[नन्दन]*

नन्दनं भमरस्य विकुर्वणा विषयकोद्देशके मोचानगर्यां चैत्यम्। भग० ।

नंदण-३ न० *[नन्दन]*

मल्लिनाथजिनस्य पूर्वभवनाम महावीरस्वामिनः पूर्वभवनाम। सम० ।

नंदण-४ न० *[नन्दन]*

रधाणिताधिपती। ठा० ४०६।

नंदण-५ न० *[नन्दन]*

भरतक्षेत्रे भावि सप्तमो वासुदेवः। सम० १५४।

नंदण-६ न० *[नन्दन]*

नन्दयति आनन्दयति देवादीनिति नन्दनं देववनम्। जंबू०।

नन्दनः लक्षणोपेततया समृद्धिजनकः। उत्त०।

द्वितीयवर्गे दशमममध्ययनम्। *निर०* ।

नंदणवण-१ न० *[नन्दनवन]*

नंदनवनं द्वारवत्यां वनविशेषः। *अन्त०* ।

नंदणवण-२ न० *[नन्दनवन]*

नंदनवनं मेरुसम्बन्धी उत्तमवनविशेषः। पण्हा०।

नंदनवनं मेरोर्द्वितीयवनम्। पण्हा० ।

नंदणवण-३ न० *[नन्दनवन]*

नंदनवनं रैवतपर्वते वनविशेषः। *अन्त०*।

रैवतकपर्वतस्य उद्यानविशेषः। *निर०*।

नंदणवण-४ न० *[नन्दनवन]*

नन्दन्ति सुरासुरविद्याधरादयो यत्र तन्नन्दनं वनं-अशोकसहकारादिपादपवृन्दं च तद्वनं च नन्दनवनम्। नं०।

नंदी-१ स्त्री० *[नन्दी]*

हर्षे, ज्ञानपञ्चके, ज्ञाते, आव०म०१

नन्दन्ति प्राणिनोऽनेनास्मिन् वेति वा नन्दिः इदमेवप्रस्तुतमध्ययनं नन्दनं नन्दि प्रमोदो हर्षः इत्यर्थः। ज्ञानपञ्चकाभिधायका-ध्ययनमपि नन्दिः। नं० ।

नंदी-२ स्त्री० *[नन्दी]*

'नंदी मंगलहेउं।' बुह०१ उ०।

नन्दी अतिशयेन महान्।वव०।

नंदिः तुष्टिः प्रमोदः। आचा० ।

नन्दिः आविष्टलिंगः। नं० ।

क्रीडा। आचा०।

नंदी-३ स्त्री० *[नन्दी]*

द्वादशतूर्यसङ्घाते नन्दिः। जीवा० ।

नन्दीः द्वादशतूर्यनिर्घोषः। पण्हा०।

नंदिगाम- पुं० *[नन्दीग्रामः]*

भगवतो वर्धमानस्वामिनः पितुर्मित्रस्य ग्रामः। आव० ।

नक्खत्त- न० *[नक्षत्र]*

ज्योतिष्कभेदे, गणि०। ठा०। जंबू०।

नग्गोह- पुं० *[न्यग्रोध]*

वटे, पन्न०१ पद। निसि०।

नट्ट- न० *[नाट्य]*

नृत्ते, नाया०१ श्रु०१ अ०। बुह०। जंबू०। रा०।

नढ- पुं० *[नट]*

नाटकानां नाटयितरि, नाया०१ श्रु०१ अ०।

नडिअ- न० *[नटित]*

विडम्बिते, नाया०१ श्रु०९ अ०।

नयण- न० *[नयन]*

प्रापणे, आव०म०१ ।

नर- पुं० *[नर]*

पुरुषे। आचा०। आव०म०।

नलिणी- स्त्री० *[नलिनी]*

कमलिन्याम्, 'भिसिणी नलिणी कमलिणी य।' पद्मिन्याम्, नाया० १ श्रु०१ अ०।

नारी- स्त्री० *[नारी]*

नरस्त्रियाम्, बुह० ४ उ०।

'पुरिसाणां नो अन्नो एरिसो अरी अत्थि त्ति नारी उ।' तं०।

नालिआ- स्त्री० *[नालिका]*

ताम्राऽऽदिमयघटिकायाम्, अणुओ०।

निअय- त्रि० *[नियत]*

नियमिते, 'निच्चं निअयं सासयं।' सूय०। बुह०।

निअय- त्रि० *[निजक]*

स्वकीये। आव०।

निउण- त्रि० *[निगुण]*

नियतगुणे, विशे०।

निग्गहट्ठाण- न० *[निग्रहस्थान]*

वादकाले वादी प्रतिवादी येन निग्रह्यते तन्निग्रहस्थानम्। सूय०१ श्रु०१२ अ०।

वादिवञ्चनार्थके प्रतिज्ञाहान्यादौ, ठा०१ ठा०।

निज्झर- न० *[निर्झर]*

उदकप्रस्रवणे, भग०५ श०७ उ०।

नित्त- न० *[नेत्र]*

नयने, ठा० १० ठा०।

निब्भर- त्रि० *[निर्भर]*

अतिशयपूरिते, आव०म०।

निम्माय- त्रि० *[निर्मात]*

निष्पन्ने, बुह०६ उ०।

निरत्थय- पुं० *[निरर्थक]*

सप्तमे निग्रहस्थानभेदे, ठा०।

निलय- पुं० *[निलय]*

गृहे, उत्त०३२ अ०।

निव- पुं० *[नृप]*

राजनि, निसि०। आचा०। बुह०।

निसा- स्त्री० *[निशा]*

रात्रौ, हरिद्रायाम्, बुह०५ उ०।

निह- न० *[निभ]*

छले, सदृशे, आव०म०१ अ०।

मायिनि, सूय०१ श्रु०६ अ०।

क्रोधाऽऽदिभिः पीडिते, सूय०१ श्रु०२ अ०१ उ०

आघातस्थाने, सूय०१ श्रु०५ अ०२ उ०।

निह- त्रि० *[स्निह]*

रागवति, आचा०१ श्रु०४ अ०३ उ०।

रागद्वेषयुक्ते, आचा०१ श्रु०५ अ०३ उ०।

ममत्वसहिते, सूय०१ श्रु० २ अ०२ उ०।

निहय- त्रि० *[निहत]*

मारिते, उत्त०१२ अ०।

भावरिपुभिरिन्द्रयकषायकर्मभिर्हन्यमाने, आचा०१श्रु०४अ०३ उ०

निहुअ- त्रि० *[निभृत]*

तदर्थमनुद्युक्ते, सूय०१ श्रु०८ अ०।

निर्व्यापारे, बुह०३ उ०।

निश्चले, उत्त०१९ अ०।

असंभ्रान्ते, कायस्थि त्या उचितधर्मे, दश०६ अ०।

नीअ- त्रि० *[नीच]*

अत्यन्तावनतकन्धरे, उत्त०१ अ०।

उच्चविपरीते ठा०३ ठा०४ उ०।

अपूज्ये, भग०३ श०१ उ०।

निम्ने, निसि० १ उ०।

नीचैः स्थाने, मालाऽऽदौ, उत्त०१ अ०।

नीअ- त्रि० *[नित्य]*

सदाऽवस्थायिनी, ठा०१० ठा०।

नीणिअ- त्रि० *[नीणित]*

स्वस्थानं प्रापिते, नाया०१ श्रु०१६ अ०। उत्त०। सूय०।

नीलकंठ- पुं० *[नीलकण्ठ]*

शक्रस्य देवेन्द्रस्य महिषानीकाधिपतौ, ठा०४ ठा०२ उ०।

नीलुप्पल- न० *[नीलोत्पल]*

नीलकमले, गाथा। कुवलये, जंबू०१ वक्ष०। उवा०।

नेवत्थ- न० *[नेपथ्य]*

वेषे, स्त्रीपुरुषाणां वेषे, ठा०४ ठा०२ उ०।

परिधानाऽऽदिरचने, नाया०१ श्रु०१ अ०।

केशचीवरसमारचने, निर० । उव०।

निर्मलवेषे, नाया०१ श्रु०१६ अ०। ठा०।

नेह- पुं० *[स्नेह]*

मोहोदयजे प्रीतिविशेषे, पुत्राऽऽदिष्वत्यन्तानुरागे, आतु०। जीत०

न-कारादि शब्द-परिभाषाः समाप्ताः

आगम परिभाषा कोषः
भाग-३ परिसमाप्तः

[1] મૂળ આગમ સાહિત્ય (૧ થી ૩)કુલ બુક્સ– ૧૪૯, કુલપાના 7864				
		1/1– આગમ મૂળ પ્રિન્ટેડ બુક્સ– [49]		
ક્રમ	ફાઈલનં.	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
1	9727	आगम ०१ आयारो अंगसुत्त ०१ मूलं	130	
2	9728	आगम ०२ सूयगडो अंगसुत्त ०२ मूलं	122	
3	9729	आगम ०३ ठाणं अंगसुत्त ०३ मूलं	170	
4	9730	आगम ०४ समवाओ अंगसुत्त ०४ मूलं	82	
5	9731	आगम ०५ विवाहपन्नत्ती अंगसुत्त ०५ मूलं	514	
6	9732	आगम ०६ नायाधम्मकहाओ अंगसुत्त ०६ मूलं	182	
7	9733	आगम ०७ उवासगदसाओ अंगसुत्त ०७ मूलं	74	
8	9734	आगम ०८ अंतगडदसाओ अंगसुत्त ०८ मूलं	42	
9	9735	आगम ०९ अनुत्तरववाइदसाओ अंगसुत्त ०९ मूलं	18	
10	9736	आगम १० पण्हावगराणं अंगसुत्त १० मूलं	42	
11	9737	आगम ११ विवागसूयं अंगसुत्त ११ मूलं	50	
12	9738	आगम १२ उववाइयं उवांगगसुत्त ०१ मूलं	50	
13	9739	आगम १३ राइपसेनीयं उवांगगसुत्त ०२ मूलं	74	
14	9740	आगम १४ जीवाजीवाभिगम उवांगगसुत्त ०३ मूलं	162	
15	9741	आगम १५ पन्नवण्णा उवांगगसुत्त ०४ मूलं	210	
16	9742	आगम १६ सूरपन्नत्ती उवांगगसुत्त ०५ मूलं	74	
17	9743	आगम १७ चंदपन्नत्ती उवांगगसुत्त ०६ मूलं	74	
18	9744	आगम १८ जम्बूद्वीपपन्नत्ती उवांगगसुत्त ०७ मूलं	130	
19	9745	आगम १९ निरयावलीयानम उवांगगसुत्त ०८ मूलं	22	
20	9746	आगम २० कप्पवडिंसानम् उवांगगसुत्त ०९ मूलं	14	
21	9747	आगम २१ पूप्फियाम् उवांगगसुत्त १० मूलं	22	
22	9748	आगम २२ पूप्फचूलियाम् उवांगगसुत्त ११ मूलं	14	
23	9749	आगम २३ वण्हिदसाणं उवांगगसुत्त १२ मूलं	14	
24	9750	आगम २४ चउसरणं पइण्णसुत्त ०१ मूलं	14	
25	9751	आगम २५ आउरपच्चक्खाण पइण्णसुत्त ०२ मूलं	18	
26	9752	आगम २६ महापच्चक्खाण पइण्णसुत्त ०३ मूलं	22	
27	9753	आगम २७ भत्तपरिन्न पइण्णसुत्त ०४ मूलं	22	
28	9754	आगम २८ तंदुलवेयालीयम् पइण्णसुत्त ०५ मूलं	26	
29	9755	आगम २९ संथारग पइण्णसुत्त ०६ मूलं	18	
30	9756	आगम ३०ए गच्छायारपइण्णसुत्त ०७ए मूलं	20	
31	9757	आगम ३०बी चंदवेज्झयम्पइण्णसुत्त ०७बी मूलं	22	
32	9758	आगम ३१ गणिविज्जा पइण्णसुत्त ०८ मूलं	18	
33	9759	आगम ३२ देविंदत्थओ पइण्णसुत्त ०९ मूलं	30	
		આગમ મૂળ પ્રિન્ટેડ ચાલુ...		

		પાછલા પાનેથી આગમ મૂળ પ્રિન્ટેડ ચાલુ		
ક્રમ	ફાઈલનં	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
34	9760	आगम ३३ए मरणसमाहि पइण्णसुत्त १०ए मूलं	52	
35	9761	आगम ३३बी विरत्थव चउसरणं पइण्णसुत्त १०बी मूलं	16	
36	9762	आगम ३४ निसिह छेयसुत्त ०१ मूलं	90	
37	9763	आगम ३५ बृहत्कप्पो छेयसुत्त ०२ मूलं	26	
38	9764	आगम ३६ ववहार छेयसुत्त ०३ मूलं	38	
39	9765	आगम ३७ दसासूयक्खंध छेयसुत्त ०४ मूलं	34	
40	9766	आगम ३८ए जीयकप्पो छेयसुत्त ०५ए मूलं	21	
41	9767	आगम ३८बी पंचकप्पभाष छेयसुत्त ०५बी मूलं	164	
42	9768	आगम ३९ महानिसिह छेयसुत्त ०६ मूलं	154	
43	9769	आगम ४० आवस्सयं मूलसुत्त ०१ मूलं	22	
44	9770	आगम ४१ए पिंडनिज्जुत्ती मूलसुत्त ०२ए मूलं	78	
45	9771	आगम ४१बी ओहनिज्जुत्ती मूलसुत्त ०२बी मूलं	52	
46	9772	आगम ४२ दसवेयालीयं मूलसुत्त ०३ मूलं	46	
47	9773	आगम ४३ उत्तराज्झयणम् मूलसुत्त ०४ मूलं	114	
48	9774	आगम ४४ नंदिसूयं चूलिकासुत्त ०१ मूलं	34	
49	9775	आगम ४५ अनुओगदारं चूलिकासुत्त ०२ मूलं	74	
	1/1- આગમ મૂળ પ્રિન્ટેડ કુલ બુક્સ- 49 કુલપાના 3510		03,510	
		1/2- આગમ મૂળ નેટ- [47]		
ક્રમ	ફાઈલનં	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
50	3701	आगम ०१ आयारो पढमं अंगसुत्तं मूलं नेट	103	
51	3703	आगम ०२ सूयगडो बीइअं अंगसुत्तं मूलं नेट	85	
52	3705	आगम ०३ ठाणं तइअं अंगसुत्तं मूलं नेट	141	
53	3707	आगम ०४ समवाओ चउत्थं अंगसुत्तं मूलं नेट	81	
54	3709	आगम ०५ भगवई पंचमं अंगसुत्तं मूलं नेट	565	
55	3711	आगम ०६ नायाधम्मकहाओ षष्ठं अंगसुत्तं मूलं नेट	159	
56	3713	आगम ०७ उवासगदसाओ सत्तम अंगसुत्तं मूलं नेट	34	
57	3715	आगम ०८ अंतगडद्दसाओ अट्ठम अंगसुत्तं मूलं नेट	31	
58	3717	आगम ०९ अनुत्तरोववाइदसाओ नवम अंगसुत्तं मूलं नेट	10	
59	3719	आगम १० पण्हावागरणं दसमं अंगसुत्तं मूलं नेट	35	
60	3721	आगम ११ विवागसूयं एक्कारसमं अंगसुत्तं मूलं नेट	42	
61	3723	आगम १२ उववाइयं पढमं उवंगसुत्तं मूलं नेट	38	
62	3725	आगम १३ रायपसेणियं बिइअं उवंगसुत्तं मूलं नेट	62	
63	3727	आगम १४ जीवाजीवाभिगम तइयं उवंगसुत्तं मूलं नेट	152	
64	3729	आगम १५ पन्नवणा चउत्थं उवंगसुत्तं मूलं नेट	202	
		આગમ મૂળ નેટ ચાલુ...		

		પાછલા પાનેથી આગમ મૂળ નેટ ચાલુ		
ક્રમ	ફાઈલનં	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
65	3731	आगम १६ सूरपन्नत्ति पंचमं उवंगसुत्तं मूलं नेट	66	
66	3733	आगम १७ चंदपन्नत्ति छट्ठं उवंगसुत्तं मूलं नेट	66	
67	3735	आगम १८ जंबुदीवपन्नत्ति सत्तम उवंगसुत्तं मूलं नेट	122	
68	3737	आगम १९ निरयावलियाणं अट्ठमं उवंगसुत्तं मूलं नेट	15	
69	3739	आगम २० कप्पवडिंसियाणं नवमं उवंगसुत्तं मूलं नेट	4	
70	3741	आगम २१ पुप्फियाणं दसमं उवंगसुत्तं मूलं नेट	15	
71	3743	आगम २२ पूप्फचूलियाणं एक्कारसमं उवंगसुत्तं मूलं नेट	5	
72	3745	आगम २३ वण्हिदसाणं बारसमं उवंगसुत्तं मूलं नेट	6	
73	3747	आगम २४ चउसरणं पढमं पइण्णयं मूलं नेट	6	
74	3749	आगम २५ आउरपच्चक्खाणं बिइयं पइण्णयं मूलं नेट	7	
75	3751	आगम २६ महापच्चक्खाणं तइयं पइण्णयं मूलं नेट	11	
76	3753	आगम २७ भत्तपरिन्ना चउत्थं पइण्णयं मूलं नेट	13	
77	3755	आगम २८ तंदुलवेयालीयम् पंचमं पइण्णयं मूलं नेट	17	
78	3757	आगम २९ संथारगं छट्ठं पइण्णयं मूलं नेट	10	
79	3759	आगम ३०/१ गच्छायारो सत्तमं पइण्णयं मूलं नेट	11	
80	3760	आगम ३०/२ चंदावेज्झयं सत्तमं पइण्णयं मूलं नेट	16	
81	3761	आगम ३१ गणिविज्जा अट्ठमं पइण्णयं मूलं नेट	8	
82	3763	आगम ३२ देविंदत्थओ नवमं पइण्णयं मूलं नेट	21	
83	3765	आगम ३३/१ मरणसमाहिं दसमं पइण्णयं मूलं नेट	42	
84	3766	आगम ३३/२ वीरत्थव दसमं पइण्णयं मूलं नेट	6	
85	3767	आगम ३४ निसीहं पढमं छेयसुत्तं मूलं नेट	85	
86	3769	आगम ३५ बृहत्कप्पो बिइयं छेयसुत्तं मूलं नेट	19	
87	3771	आगम ३६ ववहारो तइयं छेयसुत्तं मूलं नेट	30	
88	3773	आगम ३७ दसासुयक्खंधं चउत्थं छेयसुत्तं मूलं नेट	27	
89	3775	आगम ३८ जीयकप्पो पंचमं छेयसुत्तं मूलं नेट	9	
90	3777	आगम ३९ महानिसीहं छट्ठं छेयसुत्तं मूलं नेट	153	
91	3779	आगम ४० आवस्सयं पढममं मूलसूत्तं मूलं नेट	12	
92	3781	आगम ४१ पिंडनिज्जुत्ति बीइअं मूलसूत्तं मूलं नेट	45	
93	3783	आगम ४२ दसवेयालियं तइअं मूलसूत्तं मूलं नेट	39	
94	3785	आगम ४३ उत्तरज्झयणं चउत्थं मूलसूत्तं मूलं नेट	112	
95	3787	आगम ४४ नंदिसूयं पढमा चूलिया मूलं नेट	26	
96	3789	आगम ४५ अनुओगदाराइं बिइया चूलिया मूलं नेट	68	
	1/2– આગમ મૂળ નેટ કુલ બુક્સ– 47 કુલપાના 2832		02,832	

		1/3- આગમ મંજુષા નેટ – [53]		
ક્રમ	ફાઈલનં	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
97	3901	आगम मंजूषा 01 अंगसुत्तम मूल 01 आयारो	38	
98	3902	आगम मंजूषा 02 अंगसुत्तम मूल 02 सूयगडो	39	
99	3903	आगम मंजूषा 03 अंगसुत्तम मूल 03 ठाणं	62	
100	3904	आगम मंजूषा 04 अंगसुत्तम मूल 04 समवाओ	30	
101	3905	आगम मंजूषा 05 अंगसुत्तम मूल 05 भगवई	248	
102	3906	आगम मंजूषा 06 अंगसुत्तम मूल 06 नायाधम्मकहाओ	85	
103	3907	आगम मंजूषा 07 अंगसुत्तम मूल 07 उवासगादसाओ	19	
104	3908	आगम मंजूषा 08 अंगसुत्तम मूल 08 अंतगडदसाओ	15	
105	3909	आगम मंजूषा 09 अंगसुत्तम मूल 09 अनुत्तरोववाइयदसाओ	6	
106	3910	आगम मंजूषा 10 अंगसुत्तम मूल 10 पण्हावागरणं	22	
107	3911	आगम मंजूषा 11 अंगसुत्तम मूल 11 विवागसूयं	21	
108	3912	आगम मंजूषा 12 उवांगसुत्तम मूल 01 उववाइअं	19	
109	3913	आगम मंजूषा 13 उवांगसुत्तम मूल 02 रायप्पसेणियं	33	
110	3914	आगम मंजूषा 14 उवांगसुत्तम मूल 03 जीवाजीवाभिगमं	76	
111	3915	आगम मंजूषा 15 उवांगसुत्तम मूल 04 पन्नवणा	107	
112	3916	आगम मंजूषा 16 उवांगसुत्तम मूल 05 सूरपन्नत्ति	38	
113	3917	आगम मंजूषा 17 उवांगसुत्तम मूल 06 चंदपन्नत्ति	26	
114	3918	आगम मंजूषा 18 उवांगसुत्तम मूल 07 जम्बुद्दीवपन्नत्ति	60	
115	3919	आगम मंजूषा 19 उवांगसुत्तम मूल 08 निरयावलियाणं	9	
116	3920	आगम मंजूषा 20 उवांगसुत्तम मूल 09 कप्पवडिंसियाणं	3	
117	3921	आगम मंजूषा 21 उवांगसुत्तम मूल 10 पुप्फियाणं	9	
118	3922	आगम मंजूषा 22 उवांगगसुत्तम मूल 11 पुप्फचूलियाणं	4	
119	3923	आगम मंजूषा 23 उवांगसुत्तम मूल 12 वण्हिदसाणं	5	
120	3924	आगम मंजूषा 24 पइन्नगसुत्तम मूल 01 चउसरणं	4	
121	3925	आगम मंजूषा 25 पइन्नगसुत्तम मूल 02 आउरपच्चक्खाणं	4	
122	3926	आगम मंजूषा 26 पइन्नगसुत्तम मूल 03 महापच्चक्खाणं	6	
123	3927	आगम मंजूषा 27 पइन्नगसुत्तम मूल 04 भत्तपरिण्णा	6	
124	3928	आगम मंजूषा 28 पइन्नगसुत्तम मूल 05 तंदुलवेयालियं	10	
125	3929	आगम मंजूषा 29 पइन्नगसुत्तम मूल 06 संस्तारकं	5	
126	3930	आगम मंजूषा 30 पइन्नगसुत्तम मूल 07 गच्छायारो	6	
127	3931	आगम मंजूषा 31 पइन्नगसुत्तम मूल 08 गणिविज्जा	4	
128	3932	आगम मंजूषा 32 पइन्नगसुत्तम मूल 09 देविंदत्थओ	9	
129	3933	आगम मंजूषा 33 पइन्नगसुत्तम मूल 10 मरणसमाहि	16	
130	3934	आगम मंजूषा 34 छेयसुत्तम मूल 01 निसीहं	15	
		આગમ મંજુષા નેટ ચાલુ...		

		પાછલા પાનેથી આગમ મંજુષા નેટ ચાલુ...		
ક્રમ	ફાઈલનં	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
131	3935	आगम मंजूषा 35 छेयसुत्तम मूल 02 बृहत्कप्पो	11	
132	3936	आगम मंजूषा 36 छेयसुत्तम मूल 03 ववहारो	14	
133	3937	आगम मंजूषा 37 छेयसुत्तम मूल 04 दसासूयक्खंधो	14	
134	3938	आगम मंजूषा 38 ए छेयसुत्तम मूल 05 ए जीयकप्पो	56	
135	3939	आगम मंजूषा 38 बी छेयसुत्तम मूल 05 बी पंचकप्प भासं	53	
136	3940	आगम मंजूषा 39 छेयसुत्तम मूल 06 महानिसीहं	63	
137	3941	आगम मंजूषा 40 मूलसुत्तम मूल 01 आवस्सयं निज्जुत्तिसहियं	47	
138	3942	आगम मंजूषा 41 ए मूलसुत्तम मूल 02 ए ओहनिज्जुत्ति	25	
139	3943	आगम मंजूषा 41 बी मूलसुत्तम मूल 02 बी पिंडनिज्जुत्ति	18	
140	3944	आगम मंजूषा 42 मूलसुत्तम मूल 03 दसवेयालियं	15	
141	3945	आगम मंजूषा 43 मूलसुत्तम मूल 04 उत्तरज्झयणं	31	
142	3946	आगम मंजूषा 44 चूलिकासुत्तम मूल 01 नंदीसूयं	13	
143	3947	आगम मंजूषा 45 चूलिकासुत्तम मूलं 02 अनुओगदारं	32	
144	3948	आगम मंजूषा मूल कप्पसूयं	22	
145	3949	आगम मंजूषा एन 01 आयारो निज्जुत्ति	10	
146	3950	आगम मंजूषा एन 02 सूयगडो निज्जुत्ति	8	
147	3951	आगम मंजूषा एन 37 दसासूयक्खंधं निज्जुत्ति	6	
148	3952	आगम मंजूषा एन 42 दसवेयालिय निज्जुत्ति	11	
149	3953	आगम मंजूषा एन 43 उत्तरज्झयणं निज्जुत्ति	14	
	1/3- આગમમંજુષા-કુલ બુક્સ-53, કુલપાના- 1522		01,522	
				0,07,864
	[2] આગમ અનુવાદ(૪ થી ૯)કુલ બુક્સ-175, કુલપાના 23180			
	2/1 આગમ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ નેટ [49] અથવા પ્રિન્ટેડ [15]			
ક્રમ	ફાઈલનં	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
150	35601	આગમદીપ ૦૧ આયારો ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	120	
151	35602	આગમદીપ ૦૨ સુયગડો ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	104	
152	35603	આગમદીપ ૦૩ ઠાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	140	
153	35604	આગમદીપ ૦૪ સમવાઓ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	088	
154	35605	આગમદીપ ૦૫ ભગવઈ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ-1	240	
155	35606	આગમદીપ ૦૫ ભગવઈ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ-2	240	
156	35607	આગમદીપ ૦૬ નાયધમ્મકહાઓ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	144	
157	35608	આગમદીપ ૦૭ ઉવાસગદસાઓ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	040	
158	35609	આગમદીપ ૦૮ અન્તગડદસાઓ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	040	
159	35610	આગમદીપ ૦૯ અનુત્તરોવવાઈદસાઓ ગુજરાતી અનુ.	016	
	આગમગુજરાતી ભાવાનુવાદ નેટ 49 અથવા પ્રિન્ટેડ 15 ચાલુ..			

	પાછલા પાનેથી આગમગુજરાતી ભાવાનુવાદ નેટ 49 અથવા પ્રિન્ટેડ 15 ચાલુ..			
ક્રમ	ફાઈલનં	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
160	35611	આગમદીપ ૧૦ પણ્હાવગરાણમ્ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	160	
161	35612	આગમદીપ ૧૧ વિવાગસૂયમ્ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	161	
162	35613	આગમદીપ ૧૨ ઉવવાઇયમ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	162	
163	35614	આગમદીપ ૧૩ રાઈપસેણીયમ્ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	163	
164	35615	આગમદીપ ૧૪ જીવાજીવાભિગમ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	164	
165	35616	આગમદીપ ૧૫ પન્નવણા ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	165	
166	35617	આગમદીપ ૧૬ સૂરપન્નત્તિ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	166	
167	35618	આગમદીપ ૧૭ ચંદપન્નત્તિ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	167	
168	35619	આગમદીપ ૧૮ જમ્બુદ્ધીપપન્નત્તિ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	168	
169	35620	આગમદીપ ૧૯ નિરયાવલીયાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	169	
170	35621	આગમદીપ ૨૦ કપ્પવડિંસિયાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	170	
171	35622	આગમદીપ ૨૧ પુપ્ફિયાણમં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	171	
172	35623	આગમદીપ ૨૨ પુપ્ફચૂલિયાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	172	
173	35624	આગમદીપ ૨૩ વણ્હિદસાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	173	
174	35625	આગમદીપ ૨૪ ચઉસરણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	174	
175	35626	આગમદીપ ૨૫ આઉરપચ્ચક્ખાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	175	
176	35627	આગમદીપ ૨૬ મહાપચ્ચક્ખાણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	176	
177	35628	આગમદીપ ૨૭ ભત્તપરિણ્ણા ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	177	
178	35629	આગમદીપ ૨૮ તંદુલવેયાલીયં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	178	
179	35630	આગમદીપ ૨૯ સંથારગં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	179	
180	35631	આગમદીપ ૩૦ એ ગચ્છાયારો ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	180	
181	35632	આગમદીપ ૩૦ બી ચંદાવેજ્ઝયં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	181	
182	35633	આગમદીપ ૩૧ ગણિવિજ્જા ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	182	
183	35634	આગમદીપ ૩૨ દેવીંદત્થઓ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	183	
184	35635	આગમદીપ ૩૩ બી વીરત્થઓ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	184	
185	35636	આગમદીપ ૩૪ નિસીહિં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	185	
186	35637	આગમદીપ ૩૫ બુહત્કપ્પો ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	186	
187	35638	આગમદીપ ૩૬ વવહારો ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	187	
188	35639	આગમદીપ ૩૭ દસાસૂયક્ખંધં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	188	
189	35640	આગમદીપ ૩૮ એ જિયકપ્પો ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	189	
190	35641	આગમદીપ ૩૯ મહાનિસીહીં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	190	
191	35642	આગમદીપ ૪૦ આવસ્સયં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	191	
192	35643	આગમદીપ ૪૧ એ ઓહનિજ્જુત્તિ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	192	
193	35644	આગમદીપ ૪૧ બી પિણ્ડનિજ્જુત્તિ ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	193	
	આગમગુજરાતી ભાવાનુવાદ નેટ 49 અથવા પ્રિન્ટેડ 15 ચાલુ..			

	પાછલા પાનેથી આગમગુજરાતી ભાવાનુવાદ નેટ 49 અથવા પ્રિન્ટેડ 15 ચાલુ..			
ક્રમ	ફાઈલનં	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
194	35645	આગમદીપ ૪૨ દસવેયાલિયં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	048	
195	35646	આગમદીપ ૪૩ ઉત્તરજ્ઝયણં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	136	
196	35647	આગમદીપ ૪૪ નંદીસૂત્તં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	048	
197	35648	આગમદીપ ૪૫ અનુઓગદારં ગુજરાતી ભાવાનુવાદ	112	
198	35649	કલ્પ(બારસા) સૂત્ર મૂળ	106	
2/1-આગમગુજરાતીભાવાનુવાદ કુલબુક્સ-49 નેટ અથવા પ્રિન્ટેડ15 કુલપાના			03,450	
		2/2 આગમ હિન્દી અનુવાદ નેટ [48]		
ક્રમ	ફાઈલનં	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
199	34667	**आगम ०१ आचारांग सूत्र हिन्दी अनुवाद**	126	
200	34668	**आगम ०२ सूत्रकृतांग सूत्र हिन्दी अनुवाद**	114	
201	34669	**आगम ०३ स्थानांग सूत्र हिन्दी अनुवाद**	158	
202	34670	**आगम ०४ समवायांग सूत्र हिन्दी अनुवाद**	96	
203	34671	**आगम ०५ भगवती सूत्र भाग ०१ हिन्दी अनुवाद**	250	
204	34672	**आगम ०५ भगवती सूत्र भाग ०२ हिन्दी अनुवाद**	254	
205	34673	**आगम ०६ ज्ञाताधर्म सूत्र हिन्दी अनुवाद**	162	
206	34674	**आगम ०७ उपासकदशा सूत्र हिन्दी अनुवाद**	33	
207	34675	**आगम ०८ अन्तकृद्दशा सूत्र हिन्दी अनुवाद**	35	
208	34676	**आगम ०९ अनुत्तरोपपातिक सूत्र हिन्दी अनुवाद**	13	
209	34677	**आगम १० प्रश्नव्याकरण सूत्र हिन्दी अनुवाद**	54	
210	34678	**आगम ११ विपाक सूत्र हिन्दी अनुवाद**	52	
211	34679	**आगम १२ औपपातिक सूत्र हिन्दी अनुवाद**	40	
212	34680	**आगम १३ राजप्रश्नीय सूत्र हिन्दी अनुवाद**	62	
213	34681	**आगम १४ जीवाजीवाभिगम सूत्र हिन्दी अनुवाद**	136	
214	34682	**आगम १५ प्रज्ञापना सूत्र हिन्दी अनुवाद**	181	
215	34683	**आगम १६ सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र हिन्दी अनुवाद**	51	
216	34684	**आगम १७ चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र हिन्दी अनुवाद**	52	
217	34685	**आगम १८ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र हिन्दी अनुवाद**	105	
218	34686	**आगम १९ निरयावलिका सूत्र हिन्दी अनुवाद**	17	
219	34687	**आगम २० कल्पवतंसिका सूत्र हिन्दी अनुवाद**	7	
220	34688	**आगम २१ पुष्पिका सूत्र हिन्दी अनुवाद**	21	
221	34689	**आगम २२ पुष्पचूलिका सूत्र हिन्दी अनुवाद**	7	
222	34690	**आगम २३ वृष्णिदशा सूत्र हिन्दी अनुवाद**	9	
223	34691	**आगम २४ चतुशरण सूत्र हिन्दी अनुवाद**	11	
		આગમ હિન્દી અનુવાદ નેટ ચાલુ..		

		પાછલા પાનેથી આગમ હિન્દી અનુવાદ નેટ ચાલુ..		
ક્રમ	ફાઈલનં	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
224	34692	आगम २५ आतुरप्रत्याख्यान सूत्र हिन्दी अनुवाद	12	
225	34693	आगम २६ महाप्रत्याख्यान सूत्र हिन्दी अनुवाद	16	
226	34694	आगम २७ भक्तपरिज्ञा सूत्र हिन्दी अनुवाद	20	
227	34695	आगम २८ तंदुलवैचारिक सूत्र हिन्दी अनुवाद	22	
228	34696	आगम २९ संस्तारक सूत्र हिन्दी अनुवाद	16	
229	34697	आगम ३० १ गच्छाचार सूत्र हिन्दी अनुवाद	16	
230	34698	आगम ३० २ चंदावेज्झया सूत्र हिन्दी अनुवाद	19	
231	34699	आगम ३१ गणिविद्या सूत्र हिन्दी अनुवाद	9	
232	34700	आगम ३२ देवेन्द्रस्तव सूत्र हिन्दी अनुवाद	22	
233	34701	आगम ३३ वीरस्तव सूत्र हिन्दी अनुवाद	10	
234	34702	आगम ३४ निशिथ सूत्र हिन्दी अनुवाद	51	
235	34703	आगम ३५ बृहत् कल्प सूत्र हिन्दी अनुवाद	20	
236	34704	आगम ३६ व्यवहार सूत्र हिन्दी अनुवाद	28	
237	34705	आगम ३७ दशाश्रुतस्कंध सूत्र हिन्दी अनुवाद	30	
238	34706	आगम ३८ जीतकल्प सूत्र हिन्दी अनुवाद	15	
239	34707	आगम ३९ महानिशिथ सूत्र हिन्दी अनुवाद	151	
240	34708	आगम ४० आवश्यक सूत्र हिन्दी अनुवाद	19	
241	34709	आगम ४१ १ ओघनिर्युक्ति सूत्र हिन्दी अनुवाद	48	
242	34710	आगम ४१ २ पिंडनिर्युक्ति सूत्र हिन्दी अनुवाद	56	
243	34711	आगम ४२ दशवैकालिक सूत्र हिन्दी अनुवाद	48	
244	34712	आगम ४३ उत्तराध्ययन हिन्दी अनुवाद	128	
245	34713	आगम ४४ नंदिसूत्र हिन्दी अनुवाद	28	
246	34714	आगम ४५ अनुयोगद्वार सूत्र हिन्दी अनुवाद	68	
	2/2- આગમ હિન્દી અનુવાદ કુલ બુક્સ -48, કુલપાના 2898		02,898	
		2/3 આગમ દીપ પ્રિન્ટેડ [7] ગુજરાતી અનુવાદ		
ક્રમ	ફાઈલનં	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
247	5054	આગમદીપ આગમ ०१ થી ०४ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૧	468	
248	5055	આગમદીપ આગમ ०૫ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૨	532	
249	5056	આગમદીપ આગમ ०૬ થી ૧૩ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૩	434	
250	5057	આગમદીપ આગમ ૧૪ થી ૧૫ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૪	420	
251	5058	આગમદીપ આગમ ૧૬ થી ૨૩ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૫	316	
252	5059	આગમદીપ આગમ ૨૪ થી ૩૯ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૬	396	
253	5060	આગમદીપ આગમ ૪૦ થી ૪૫ ગુજરાતી અનુવાદ ભાગ ૭	396	
2/3- આગમદીપ પ્રિન્ટેડ ગુજ.અનુવાદ કુલબુક્સ –7, કુલપાના 2962			02,962	

		2/4 આગમ ઈંગ્લીશઅનુવાદ net [11]		
ક્રમ	ફાઈલનં.	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
254	**6815**	**Antkruddasha Sutra English Translation**	**62**	
255	**6817**	**Anuttaropapatikdasha Sutra Eng.Translati.**	**22**	
256	**6821**	**Vipak Sutra English Translation**	**71**	
257	**6837**	**Niryavalika Sutra English Translation**	**25**	
258	**6839**	**Kalpvatansika Sutra English Translation**	**8**	
259	**6841**	**Pushpika Sutra English Translation**	**28**	
260	**6843**	**Pushpchulika Sutra English Translation**	**8**	
261	**6845**	**Vrushnidasa Sutra English Translation**	**10**	
262	**6859**	**Gachchhachar Sutra Engl. Translation**	**15**	
263	**6865**	**Veerstava Sutra English Translation**	**8**	
264	**6887**	**Nandi Sutra English Translation**	**153**	
	2/4- આગમ ઈંગ્લીશ અનુવાદ નેટ કુલ બુક્સ -11 કુલપાના		**00,410**	
		2/5 આગમ સટીક ગુજરાતી અનુવાદ પ્રિન્ટેડ [48]		
ક્રમ	ફાઈલનં.	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
265	**9034**	આગમ ૦૧ આચારાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**516**	
266	**9035**	આગમ ૦૨ સુત્રકૃતાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**484**	
267	**9036**	આગમ ૦૩ સ્થાનાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**676**	
268	**9037**	આગમ ૦૪ સમવાયાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**242**	
269	**9038**	આગમ ૦૫ ભગવતી સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**1138**	
270	**9039**	આગમ ૦૬ જ્ઞાતાધર્મકથાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**290**	
271	**9040**	આગમ ૦૭ ઉપાસકદશાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**72**	
272	**9041**	આગમ ૦૮ અંતકૃદ્દશાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**38**	
273	**9042**	આગમ ૦૯ અનુત્તરોપપાતિક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**20**	
274	**9043**	આગમ ૧૦ પ્રશ્નવ્યાકરણાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**162**	
275	**9044**	આગમ ૧૧ વિપાક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**92**	
276	**9045**	આગમ ૧૨ ઔપપાતિક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**128**	
277	**9046**	આગમ ૧૩ રાઈપસેણીય સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**166**	
278	**9047**	આગમ ૧૪ જીવાજીવાભિગમ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**486**	
279	**9048**	આગમ ૧૫ પ્રજ્ઞાપના સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**660**	
280	**9049**	આગમ ૧૬ સૂર્યપ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**446**	
281	**9050**	આગમ ૧૭ ચંદ્રપ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**36**	
282	**9051**	આગમ ૧૮ જમ્બુદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	**628**	
		આગમ સટીક ગુજરાતી અનુવાદ પ્રિન્ટેડ		

	પાછલા પાનેથી આગમસટીકગુજરાતીઅનુવાદ અથવા પ્રિન્ટેડ ચાલુ			
ક્રમ	ફાઈલનં.	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
283	9052	આગમ ૧૯ નિરયાવલિકા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	52	
284	9053	આગમ ૨૦ કલ્પવતંસિકા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	36	
285	9054	આગમ ૨૧ પુષ્પિકા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	50	
286	9055	આગમ ૨૨ પુષ્પચૂલિકા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	36	
287	9056	આગમ ૨૩ વૃષ્ણિદશા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	38	
288	9057	આગમ ૨૪ ચતુશરણ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	40	
289	9058	આગમ ૨૫ આતુરપ્રત્યાખ્યાન આચારાંગ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી	44	
290	9059	આગમ ૨૬ મહાપ્રત્યાખ્યાન સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	40	
291	9060	આગમ ૨૭ ભક્તપરિજ્ઞા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	40	
292	9061	આગમ ૨૮ તંદુલવૈચારિક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	84	
293	9062	આગમ ૨૯ સંસ્તારક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	48	
294	9063	આગમ ૩૦ એ ગચ્છાચાર સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	74	
295	9064	આગમ ૩૦ બી ચંદ્રવેધ્યક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	48	
296	9065	આગમ ૩૧ ગણિવિદ્યા સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	40	
297	9066	આગમ ૩૨ દેવેન્દ્રસ્તવ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	54	
298	9068	આગમ 33 બી વીરસ્તવ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	38	
299	9069	આગમ ૩૪ નિશીથ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	87	
300	9070	આગમ ૩૫ બૃહત્ કલ્પ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	27	
301	9071	આગમ ૩૬ વ્યવહાર સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	54	
302	9072	આગમ ૩૭ દશાશ્રુતસ્કન્ધ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	68	
303	9073	આગમ ૩૮ એ જિતકલ્પ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	36	
304	9075	આગમ ૩૯ મહાનિશીથ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	210	
305	9076	આગમ ૪૦ આવશ્યક મૂલ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	932	
306	9077	આગમ ૪૧ એ ઓઘનિર્યુક્તિ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	76	
307	9078	આગમ ૪૧ બી પિણ્ડનિર્યુક્તિ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	184	
308	9079	આગમ ૪૨ દશવૈકાલિક સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	240	
309	9080	આગમ ૪૩ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	680	
310	9081	આગમ ૪૪ નન્દિ સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	224	
311	9082	આગમ ૪૫ અનુયોગદ્વાર સૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	272	
312	9084	કલ્પ સૂત્ર મૂલ ગુજરાતી અનુવાદ	208	
	2/5- આગમસટીકગુજરાતીઅનુવાદ પ્રિન્ટેડ બુક્સ 48 પાના 10340		10340	

		2/6 આગમ હિન્દી અનુવાદ અથવા પ્રિન્ટેડ બુક્સ [12]		
ક્રમ	ફાઈલનં	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
313	9779	आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-१	257	
314	9780	आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-२	274	
315	9781	आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-३	290	
316	9782	आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-४	306	
317	9783	आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-५	274	
318	9784	आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-६	274	
319	9785	आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-७	242	
320	9786	आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-८	242	
321	9787	आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-९	225	
322	9788	आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-१०	242	
323	9789	आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-११	242	
324	9790	आगम सूत्र हिन्दी अनुवाद भाग-१२	242	
	2/6- આગમ હિન્દી અનુવાદ પ્રિન્ટેડ બુક્સ 12 પાના 3110		03,110	
				0,23,170
[3] આગમ વિવેચન સાહિત્ય (૧૦થી૧૬) કુલબુક્સ 171, કુલપાના 60884				
		3/1 આગમ સૂત્ર સટીકં પ્રિન્ટેડ બુક્સ [46]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
325	3335	आगम सूत्र सटीक ०१ आचार अंगसूत्र ०१	468	
326	3336	आगम सूत्र सटीक ०२ सूत्रकृत अंगसूत्र ०२	484	
327	3337	आगम सूत्र सटीक ०३ स्थान अंगसूत्र ०३	596	
328	3338	आगम सूत्र सटीक ०४ समवाय अंगसूत्र ०४	204	
329	3339	आगम सूत्र सटीक ०५ भगवती अंगसूत्र ०५	1096	
330	3340	आगम सूत्र सटीक ०६ ज्ञाताधर्मकथा अंगसूत्र ०६	280	
331	3341	आगम सूत्र सटीक ०७ उपासकदशा अंगसूत्र ०७	80	
332	3342	आगम सूत्र सटीक ०८ अन्तकृद्दशा अंगसूत्र ०८	58	
333	3343	आगम सूत्र सटीक ०९ अनुत्तरोपपातिकदशा अंगसूत्र ०९	34	
334	3344	आगम सूत्र सटीक १० प्रश्नव्याकरण अंगसूत्र १०	192	
335	3345	आगम सूत्र सटीक ११ विपाकश्रुत अंगसूत्र ११	86	
336	3346	आगम सूत्र सटीक १२ औपपातिक उपांगसूत्र ०१	150	
337	3347	आगम सूत्र सटीक १३ राजप्रश्निय उपांगसूत्र ०२	184	
338	3348	आगम सूत्र सटीक १४ जीवाजीवाभिगम उपांगसूत्र ०३	532	
339	3349	आगम सूत्र सटीक १५ प्रज्ञापना उपांगसूत्र ०४	664	
340	3350	आगम सूत्र सटीक १६ सूर्यप्रज्ञप्ति उपांगसूत्र ०५	336	
		આગમ સૂત્ર સટીક પ્રિન્ટેડ ચાલુ..		

		પાછલા પાનેથી આગમ સૂત્ર સટીક પ્રિન્ટેડ ચાલુ.		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
341	3351	आगम सूत्र सटीक १७ चन्द्रप्रज्ञप्ति उपांगसूत्र ०६	28	
342	3352	आगम सूत्र सटीक १८ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति उपांगसूत्र ०७	564	
343	3353	आगम सूत्र सटीक १९ निरयावलिका उपांगसूत्र ०८	46	
344	3354	आगम सूत्र सटीक २० कल्पवतंसिका उपांगसूत्र ०९	27	
345	3355	आगम सूत्र सटीक २१ पुष्पिका उपांगसूत्र १०	44	
346	3356	आगम सूत्र सटीक २२ पुष्पचूलिका उपांगसूत्र ११	27	
347	3357	आगम सूत्र सटीक २३ वृष्णिदशा उपांगसूत्र १२	29	
348	3358	आगम सूत्र सटीक २४ चतुशरण पइण्णसूत्र ०१	45	
349	3359	आगम सूत्र सटीक २५ आतुरप्रत्याख्यान पइण्णसूत्र ०२	38	
350	3360	आगम सूत्र सटीक २६ महाप्रत्याख्यान पइण्णसूत्र ०३	41	
351	3361	आगम सूत्र सटीक २७ भक्तपरिज्ञा पइण्णसूत्र ०४	45	
352	3362	आगम सूत्र सटीक २८ तंदुलवैचारिक पइण्णसूत्र ०५	88	
353	3363	आगम सूत्र सटीक २९ संस्तारक पइण्णसूत्र ०६	38	
354	3364	आगम सूत्र सटीक ३० गच्छाचार पइण्णसूत्र ०७	74	
355	3366	आगम सूत्र सटीक ३१ गणिविद्या पइण्णसूत्र ०८	35	
356	3367	आगम सूत्र सटीक ३२ देवेन्द्रस्तव पइण्णसूत्र ०९	60	
357	3368	आगम सूत्र सटीक ३३ मरणसमाधि पइण्णसूत्र १०	103	
358	3370	आगम सूत्र सटीक ३४ निशीथ छेदसूत्र ०१	1372	
359	3371	आगम सूत्र सटीक ३५ बृहतकल्प छेदसूत्र ०२	1500	
360	3372	आगम सूत्र सटीक ३६ व्यवहार छेदसूत्र ०३	1046	
361	3373	आगम सूत्र सटीक ३७ दशाश्रुतस्कन्ध छेदसूत्र ०४	110	
362	3374	आगम सूत्र सटीक ३८ जितकल्प छेदसूत्र ०५	56	
363	3376	आगम सूत्र सटीक ३९ महानिशीथ छेदसूत्र ०६	170	
364	3377	आगम सूत्र सटीक ४० आवश्यक मूलसूत्र ०१	808	
365	3378	आगम सूत्र सटीक ४१ए ओघनिर्युक्ति मूलसूत्र 2ए	256	
366	3379	आगम सूत्र सटीक ४१बी पिण्डनिर्युक्ति मूलसूत्र 2बी	202	
367	3380	आगम सूत्र सटीक ४२ दशवैकालिक मूलसूत्र ०३	284	
368	3381	आगम सूत्र सटीक ४३ उत्तराध्ययन मूलसूत्र ०४	704	
369	3382	आगम सूत्र सटीक ४४ नन्दि चूलिकासूत्र ०१	265	
370	3383	आगम सूत्र सटीक ४५ अनुयोगद्वार चूलिकासूत्र ०२	257	
	3/1- આગમ સૂત્ર સટીકં પ્રિન્ટેડ બુક્સ 46 પાના 13806		13,806	

		3/2 આગમ મૂલ એવં વૃત્તિ-1 નેટ બુક્સ [51]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
371	4101	आगम ०१ आचार मूलम् एवं वृत्ती	871	
372	4102	आगम ०२ सूत्रकृत मूलम् एवं वृत्ती	860	
373	4103	आगम ०३ स्थान मूलम् एवं वृत्ती	1059	
374	4104	आगम ०४ समवाय मूलम् एवं वृत्ती	324	
375	4105	आगम ०५ भगवती मूलम् एवं वृत्ती	1967	
376	4106	आगम ०६ ज्ञाताधर्मकथा मूलम् एवं वृत्ती	512	
377	4107	आगम ०७ उपासकदशा मूलम् एवं वृत्ती	113	
378	4108	आगम ०८ अन्तकृद्दशा मूलम् एवं वृत्ती	69	
379	4109	आगम ०९ अनुत्तरोपपातिकदशा मूलम् एवं वृत्ती	21	
380	4110	आगम १० प्रश्नव्याकरणम् मूलम् एवं वृत्ती	335	
381	4111	आगम ११ विपाकश्रुत मूलम् एवं वृत्ती	132	
382	4112	आगम १२ औपपातिक मूलम् एवं वृत्ती	244	
383	4113	आगम १३ राजप्रश्नीय मूलम् एवं वृत्ती	304	
384	4114	आगम १४ जीवाजीवाभिगम मूलम् एवं वृत्ती	938	
385	4115	आगम १५ प्रज्ञापना मूलम् एवं वृत्ती	1227	
386	4116	आगम १६ सूर्यप्रज्ञप्ति मूलम् एवं वृत्ती	600	
387	4117	आगम १७ चंद्रप्रज्ञप्ति मूलम् एवं वृत्ती	602	
388	4118	आगम १८ जम्बुद्वीप प्रज्ञप्ति मूलम् एवं वृत्ती	1097	
389	4119	आगम १९ निरयावलिका मूलम् एवं वृत्ती	42	
390	4120	आगम २० कल्पवतंसिका मूलम् एवं वृत्ती	9	
391	4121	आगम २१ पुष्पिका मूलम् एवं वृत्ती	36	
392	4122	आगम २२ पुष्पचूलिका मूलम् एवं वृत्ती	9	
393	4123	आगम २३ वृष्णिदशा मूलम् एवं वृत्ती	13	
394	4124	आगम २४ चतुशरण मूलम् एवं छाया	14	
395	4149	आगम २४ चतुशरण मूलम् एवं वृत्ती	45	
396	4125	आगम २५ आतुरप्रत्याख्यान मूलम् एवं छाया	17	
397	4126	आगम २६ महाप्रत्याख्यान मूलम् एवं छाया	24	
398	4127	आगम २७ भक्तपरिज्ञा मूलम् एवं छाया	29	
399	4128	आगम २८ तन्दुलवैचारिक मूलम् एवं छाया	49	
400	4150	आगम २८ तंदुलवैचारिक मूलम् एवं वृत्ति	117	
401	4129	आगम २९ संस्तारक मूलम् एवं छाया	21	
402	4130	आगम ३० गच्छाचार मूलम् एवं छाया	24	
403	4151	आगम ३० गच्छाचार मूलम् एवं वृत्ति	91	
404	4131	आगम ३१ गणिविद्या मूलम् एवं छाया	16	
		આગમ મૂળ + વૃત્તિ-1 નેટ ચાલુ..		

		પાછલા પાનેથી આગમ મૂળ + વૃત્તિ–1 ચાલુ.		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
405	4132	आगम ३२ देवेन्द्रस्तव मूलम् एवं छाया	46	
406	4133	आगम ३३ मरणसमाधि मूलम् एवं छाया	98	
407	4134	आगम ३४ निशिथ मूलम् एव	18	
408	4135	आगम ३५ बृहत् कल्प मूलम् एव	14	
409	4136	आगम ३६ व्यवहार मूलम् एव	17	
410	4137	आगम ३७ दशा श्रुतस्कंध मूलम् एव	17	
411	4138	आगम ३८ ए जितकल्प मूलम् एवं भाष्य	59	
412	4139	आगम ३८ बी पंचकल्प भाष्य एव	56	
413	4140	आगम ३९ महानिशिथ मूलम् एव	66	
414	4141	आगम ४० आवश्यक मूलम् एवं वृत्ति	1736	
415	4142	आगम ४१ १ ओघनिर्युक्ति मूलम् एवं वृत्ति	459	
416	4143	आगम ४१ २ पिंडनिर्युक्ति मूलम् एवं वृत्ति	364	
417	4144	आगम ४२ दशवैकालिक मूलम् एवं वृत्ति	577	
418	4145	आगम ४३ उत्तराध्ययनानि मूलम् एवं वृत्ति	1428	
419	4146	आगम ४४ नंदिसूत्र मूलम् एवं वृत्ति	514	
420	4147	आगम ४५ अनुयोगद्वार मूलम् एवं वृत्ति	547	
421	4148	कल्प बारसा सूत्र	145	
	3/2- આગમસૂત્ર મૂલ એવં વૃત્તિ બુક્સ–1, 51 પાના 17992		17,992	
		3/3 આગમ મૂલ એવં વૃત્તિ–2 બુક્સ [9]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
422	6211	आगम 05 भगवती दानशेखरीय वृत्ति अंग सूत्र 5 भाग 01	312	
423	6212	आगम 05 भगवती दानशेखरीय वृत्ति अंग सूत्र 5 भाग 02	305	
424	7201	आगम 40 आवश्यक मलयगिरि वृत्ति मूल सूत्र 1 भाग 01	307	
425	7202	आगम 40 आवश्यक मलयगिरि वृत्ति मूल सूत्र 1 भाग 02	325	
426	7203	आगम 40 आवश्यक मलयगिरि वृत्ति मूल सूत्र 1 भाग 03	316	
427	7204	आगम 40 आवश्यक मलयगिरि वृत्ति मूल सूत्र 1 भाग 04	327	
428	7205	आगम 44 नन्दिसूत्र हारिभद्रिय वृत्ति	124	
429	7206	आगम 45 अनुयोगद्वार हारिभद्रिय वृत्ति	133	
430	7209	कल्पसूत्र सुबोधिका वृत्ति	411	
	3/3– આગમસૂત્ર મૂલ એવં વૃતિ –2, બુક્સ 9 પાના 2560		02,560	

		3/4–આગમ ચૂર્ણિ સાહિત્ય બુક્સ [9]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
431	6201	आगम ०१ आचार चूर्णि:	388	
432	6202	आगम ०२ सूत्रकृत चूर्णि:	472	
433	6203	आगम 40 आवश्यक चूर्णि: 01	310	
434	6203	आगम 40 आवश्यक चूर्णि: 02	320	
435	6204	आगम 40 आवश्यक चूर्णि: 03	332	
436	6205	आगम 42 दशवैकालिक चूर्णि:	387	
437	6206	आगम 43 उत्तराध्ययनानि चूर्णि:	291	
438	6207	आगम 44 नन्दिसूत्र चूर्णि:	70	
439	6208	आगम 45 अनुयोगद्वार सूत्र चूर्णि:	98	
	3/4– આગમચૂર્ણિ સાહિત્ય પ્રિન્ટ બુક્સ 9 પાના 2667		02,667	
		3/5–સવૃતિકઆગમસૂત્રાણિ પ્રિન્ટેડ બુક્સ [40]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
440	35001	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 01	314	
441	35002	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 02	586	
442	35003	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 03	498	
443	35004	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 04	392	
444	35005	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 05	594	
445	35006	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 06	494	
446	35007	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 07	338	
447	35008	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 08	592	
448	35009	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 09	552	
449	35010	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 10	514	
450	35011	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 11	384	
451	35012	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 12	522	
452	35013	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 13	538	
453	35014	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 14	384	
454	35015	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 15	314	
455	35016	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 16	480	
456	35017	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 17	488	
457	35018	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 18	426	
458	35019	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 19	514	
459	35020	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 20	336	
460	35021	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 21	610	
		સવૃતિક આગમ સૂત્રાણિ પ્રિન્ટેડ ચાલુ..		

		પાછલા પાનેથી સવૃત્તિક આગમ સૂત્રાણિ પ્રિન્ટેડ ચાલુ..		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	
461	35022	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 22	614	
462	35023	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 23	376	
463	35024	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 24	426	
464	35025	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 25	344	
465	35026	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 26	312	
466	35027	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 27	330	
467	35028	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 28	466	
468	35029	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 29	442	
469	35030	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 30	464	
470	35031	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 35	426	
471	35032	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 36	472	
472	35033	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 37	376	
473	35034	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 31	590	
474	35035	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 32	522	
475	35036	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 33	482	
476	35037	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 34	466	
477	35038	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 38	528	
478	35039	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 39	560	
479	35040	सवृत्तिक आगम सुत्ताणि 1 भाग 40	394	
	3/5–સવૃત્તિક આગમસૂત્રાણી 1 પ્રિન્ટ બુક્સ 9 પાના 18460		18,460	
		3/6–સવૃતિક આગમ સૂત્રાણિ–2 પ્રિન્ટેડ બુક્સ [8]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	
480	35061	सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 भगवती मूल एवं वृत्ति आगम	320	
481	35062	सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 भगवती मूल एवं वृत्ति आगम	318	
482	35063	सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 आवश्यक निर्युक्ति एवं वृत्ति	318	
483	35064	सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 04 आवश्यक निर्युक्ति एवं	336	
484	35065	सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 05 आवश्यक निर्युक्ति एवं	328	
485	35066	सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 06 आवश्यक निर्युक्ति एवं	336	
486	35067	सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 07 नन्दि एवं अनुयोगदवार	270	
487	35068	सवृत्तिक आगम सूत्राणि 2 कल्पसूत्रम् मूल एवं वृत्ति	422	
	3/6–સવૃત્તિક આગમ સૂત્રાણી 2, પ્રિન્ટેડ બુક્સ 8 પાના 2648		02,648	

		3/7 સચૂર્ણિક આગમ સુત્તાણિ, પ્રિન્ટેડ બુક્સ [8]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	
488	35051	सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 01	400	
489	35052	सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 01	486	
490	35053	सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 04	320	
491	35054	सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 05	328	
492	35055	सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 06	344	
493	35056	सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 06	398	
494	35057	सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 07	302	
495	35058	सचूर्णिक आगम सुत्ताणि 08	176	
	3/7–સચૂર્ણિક આગમ સુત્તાણિ પ્રિન્ટેડ બુક્સ 8 પાના 2754		02,754	
				0,60,884
[4] આગમ કોષ સાહિત્ય(૧૭ થી૨૧) કુલ બુક્સ 16 કુલપાના 5506				
		4/1 આગમ સદ્દ કોસો, પ્રિન્ટેડ બુક્સ [4]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
496	16024	आगमसद्दकोसो भाग- १	546	
497	16025	आगमसद्दकोसो भाग- २	562	
498	16026	आगमसद्दकोसो भाग-३	546	
499	16027	आगमसद्दकोसो भाग- ४	530	
		4/1– આગમ સદ્દકોસો પ્રિન્ટેડ બુક્સ 4 પાના 2184	02,184	
500	16094	4/2 आगम कहा व नाम कोसो प्रिन्टेड बूक [1]	208	
		4/3 આગમ સાગર કોષ: નેટ બુક્સ [5]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
501	16133	आगम-सागर-कोश: भाग-१	238	
502	16134	आगम-सागर-कोश: भाग-२	200	
503	16135	आगम-सागर-कोश: भाग-३	272	
504	16136	आगम-सागर-कोश: भाग-४	246	
505	16137	आगम-सागर-कोश: भाग-५	170	
	4/3- આગમ સાગર કોષ: નેટ બુક્સ 5 પાના 1126		01, 126	
		4/4 આગમબૃહત્ નામકોષ: પ્રિન્ટેડ બુક્સ [2]		
506	35091	આગમ બૃહત્ નામ કોષ: ભાગ– ૧	250	
507	35092	આગમ બૃહત્ નામ કોષ: ભાગ– ૨	250	
	4/3- આગમ સાગર કોષ: નેટ બુક્સ 5 પાના 1126		01, 126	

		4/5 આગમ શબ્દાદિ સંગ્રહ: પ્રિન્ટેડ બુક્સ [4]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
508	34455	आगम शब्दादि संग्रह (प्राकृत, संस्कृत, गुजराती) भाग 01	368	
509	34456	आगम शब्दादि संग्रह (प्राकृत, संस्कृत, गुजराती) भाग 02	392	
510	34457	आगम शब्दादि संग्रह (प्राकृत, संस्कृत, गुजराती) भाग 03	392	
511	34458	आगम शब्दादि संग्रह (प्राकृत, संस्कृत, गुजराती) भाग 04	336	
	4/5– આગમ શબ્દાદિ સંગ્રહ: પ્રિન્ટેડ બુક્સ 4 પાના 1488		01,488	
				05,506
		[5] આગમ અનુક્રમ સાહિત્ય(૨૨થી૩૦) કુલ બુક્સ ૯		
		5/1 આગમવિષયાનુક્રમ,પ્રિન્ટ/નેટ બુક્સ [2]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
512	8040	આગમ વિષય દર્શન	382	
513	9143	આગમ વિષય અનુક્રમ	344	
	5/1– આગમવિષયાનુક્રમ પ્રિન્ટ/નેટ બુક્સ 2 પાના 726		00,726	
		5/2 આગમ સટીક વિષયાનુક્રમ, નેટ બુક્સ [4]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
514	7213	अंग सूत्र विषयानुक्रम	179	
515	7214	उपांग सूत्र विषयानुक्रम	108	
516	7214	प्रकिर्णक सूत्र विषयानुक्रम	18	
517	7215	नन्दि आदि सप्त सूत्र विषयानुक्रम	123	
	5/2- આગમ સટીક વિષયાનુક્રમ નેટ બુક્સ 4 પાના 428		00,428	
		5/3 આગમ સૂત્ર–ગાથા અનુક્રમ, નેટ બુક્સ [3]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
518	7210	अंग सूत्र गाथादी अकारादि क्रम	148	
519	7211	उपांग प्रकिर्णक सूत्र गाथादि अकारादि क्रम	79	
520	7212	नन्दि आदि सूत्र गाथादि अकारादि क्रम	197	
	5/3– આગમ સૂત્ર–ગાથા અનુક્રમ નેટ 3 બુક્સ પાના 424		00,424	
				01,578
		[6] આગમ અન્ય સાહિત્ય(૩૧થી૪૪)કુલ બુક્સ 14		
		6/1 આગમ સંબંધી લેખ નેટ બુક્સ [3]		
521	24971	આગમના પ્રખર વ્યાખ્યાતાઓ	28	
522	24971	આગમકાલીન શ્રાવક–શ્રાવિકા_ જીવન અને કવન	36	
523	35150	આગમ–યાત્રા	4	
	6/1- આગમ સંબંધી લેખ પ્રિન્ટેડ 3 બુક્સ પાના 68		00,068	

		6/2 આગમ કથાનુયોગ પ્રિન્ટેડ બુક્સ [6]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
524	5008	આગમ કથાનુયોગ ગુજરાતી ભાગ ०१	386	
525	5009	આગમ કથાનુયોગ ગુજરાતી ભાગ ०२	370	
526	5010	આગમ કથાનુયોગ ગુજરાતી ભાગ ०३	434	
527	5011	આગમ કથાનુયોગ ગુજરાતી ભાગ ०४	386	
528	5012	આગમ કથાનુયોગ ગુજરાતી ભાગ ०५	322	
529	5013	આગમ કથાનુયોગ ગુજરાતી ભાગ ०६	274	
		6/2- આગમ કથાનુયોગ પ્રિન્ટેડ 6 બુક્સ પાના 2172	02,172	
		6/3 આગમ સંબંધિ અન્યસાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ [4]		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
530	35073	आगम सूत्र-गाथा आदि अकारादि	431	
531	35074	आगम सूत्र लघु बृहत् विषयानुक्रम	439	
532	35071	आगमीय सुक्तावलि आदि	96	
533	35072	प्रत्येकबुद्ध भाषितानी ऋषिभाषितसूत्राणि मूलं	78	
534	35100	આગમ સંક્ષિપ્ત પરીચય	96	
		6/4 આગમ પૂજન સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ [1]		
535	5163	૪૫ આગમ મહાપૂજન વિધિ	00,068	
				03,352
	કુલ આગમ સાહિત્ય બુક્સ 535, કુલ પેજીસ 1,02,550			
		આગમ સિવાયનું અન્ય સાહિત્ય		
	7/1 તત્ત્વાભ્યાસ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ-13 કુલ પેજ 2090			
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
536	5030	તત્ત્વાર્થ સૂત્ર પ્રબોધ ટીકા અધ્યાય ०१	254	
537	5031	તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ०१	174	
538	5032	તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ०२	194	
539	5033	તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ०३	170	
540	5034	તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ०४	186	
541	5035	તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ०५	194	
542	5036	તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ०६	178	
543	5037	તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ०७	170	
544	5038	તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ०८	154	
		તત્ત્વાભ્યાસ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ ચાલુ..		

		પાછલાપાનેથી તત્ત્વાભ્યાસ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ ચાલુ..		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
545	5039	તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ૦૯	202	
546	5040	તત્ત્વાર્થાધિગમ સૂત્ર અભિનવ ટીકા અધ્યાય ૧૦	82	
547	5041	તત્ત્વાર્થ સૂત્રના આગમ આધાર સ્થાનો	118	
548	31008	तत्त्वार्थ सूत्र के ८४ प्रकाशनों संबंधी डीवीडी की माहिती	14	
	7/1 –તત્ત્વાભ્યાસ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ 13 બુક્સ પાના 2090		02,090	
	7/2 સૂત્રાભ્યાસ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 6 પાના 1480			
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
549	8042	પંડીત વિરવિજયજી જૈન એજ્યુકેશનલ સર્ટીફીકેટ કોર્સ	174	
550	8043	પ્રતિક્રમણસૂત્ર અભિનવ વિવેચન ભાગ ૧	321	
551	8044	પ્રતિક્રમણસૂત્ર અભિનવ વિવેચન ભાગ ૨	322	
552	8045	પ્રતિક્રમણસૂત્ર અભિનવ વિવેચન ભાગ ૩	305	
553	8046	પ્રતિક્રમણસૂત્ર અભિનવ વિવેચન ભાગ ૪	306	
554	35075	શ્રમણ જ્ઞાન–કૌશલ્ય અભિયાન (કક્ષા– ૧ થી ૧૫)	52	
		7/2 સૂત્રાભ્યાસ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ ૬ પાના 1480	01,480	
		7/3 વ્યાકરણ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 5 પાના 1048		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
555	5135	અભિનવ હેમ લઘુ પ્રક્રિયા ભાગ ૦૧	256	
556	5136	અભિનવ હેમ લઘુ પ્રક્રિયા ભાગ ૦૨	200	
557	5137	અભિનવ હેમ લઘુ પ્રક્રિયા ભાગ ૦૩	310	
558	5138	અભિનવ હેમ લઘુ પ્રક્રિયા ભાગ ૦૪	254	
559	3632	कृदन्तमाला	28	
		7/3 વ્યાકરણ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 5 પાના 1048	01,048	
		7/4 વ્યાખ્યાન સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 5 પાના 1300		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
560	9105	અભિનવ ઉપદેશ પ્રાસાદ વ્યાખ્યાનો ભાગ ૦૧	364	
561	9106	અભિનવ ઉપદેશ પ્રાસાદ વ્યાખ્યાનો ભાગ ૦૨	402	
562	9107	અભિનવ ઉપદેશ પ્રાસાદ વ્યાખ્યાનો ભાગ ૦૩	354	
563	9108	અભિનવ ઉપદેશ પ્રાસાદ વ્યાખ્યાનો ભાગ ૦૪	98	
564	9207	લઘુ વ્યાખ્યાન સંગ્રહ કારણ કે તે સાધુ હતા	82	
		7/4 વ્યાખ્યાન સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 5 પાના 1300	1300	

		7/5 જિનભક્તિ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 9 પાના 1196		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
565	5165	વિતરાગ સ્તુતિ સઞ્ચય ૧૧૫૧ સ્તુતિ	222	565
566	5166	સિદ્ધાચલનો સાથી ભાવયાત્રા સહિત	102	566
567	5170	શત્રુંજય ભક્તિ	50	567
568	5176	ચૈત્ય પરિપાટી	56	568
569	3631	शत्रुंजय भक्ति	50	569
570	5133	ચૈત્યવંદન માળા	362	570
571	3633	चैत्यवन्दन संग्रह तीर्थ जिन विशेष	146	571
572	3634	चैत्यवन्दन पर्वमाला	98	572
573	3635	चैत्यवन्दन चौविसी	110	573
		7/5 જિનભક્તિ સાહિત્ય પ્રિન્ટ બુક્સ 9 પાના 1196	01,196	
		7/6 વિધિ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 3 પાના 256		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
574	5161	દીક્ષા યોગાદિ વિધી	86	
575	5162	વિધિ સંગ્રહ	154	
576	5183	સાધુ સાધ્વી કાળધર્મ વિધિ	16	
		7/6 વિધિ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 3 પાના 256	00,256	
		7/7 આરાધના સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 4 પાના 534		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
577	5134	સમાધિમરણ	366	
578	5182	સાધુ સાધ્વી અંતિમ આરાધના	18	
579	5168	શ્રાવક અંતિમ આરાધના	50	
580	3538	સમાધિ મૃત્યુનું મેનેજમેન્ટ	100	
		7/7 આરાધના સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 4 પાના 534	00,534	
		7/8 પરિચય સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 3 પાના 136		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
581	35151	સાહિત્ય-યાત્રા ફોલ્ડર 1 થી 31 નો પરિચય	36	
582	31012	દીપરત્નસાગરની 585 સાહિત્ય કૃતિયો _word_2017	60	
583	35152	દીપરત્નસાગરની 585 સાહિત્ય કૃતિયો _Excl _2017	40	
		7/8 પરિચય સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 3 પાના 136	00,136	
		7/9 પૂજન સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ-1 પાના		
584	5163	પાર્શ્વ પદ્માવતી મહાપૂજન વિધિ	68	

		7/10 તીર્થંકર સંક્ષિપ્ત દર્શન પ્રિન્ટેડ બુક્સ 25 પાના 680		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
585	35101	ભગવંત ઋષભ પરિચય	18	
586	35102	ભગવંત અજિતપરિચય	18	
587	35103	ભગવંત સંભવ પરિચય	18	
588	35104	ભગવંત અભિનંદન પરિચય	18	
589	35105	ભગવંત સુમતિ પરિચય	18	
590	35106	ભગવંત પદ્મપ્રભ પરિચય	18	
591	35107	ભગવંત સુપાર્શ્વ પરિચય	18	
592	35108	ભગવંત ચંદ્રપ્રભ પરિચય	18	
593	35109	ભગવંત સુવિધિ પરિચય	18	
594	35110	ભગવંત શીતલ પરિચય	18	
595	35111	ભગવંત શ્રેયાંસ પરિચય	18	
596	35112	ભગવંત વાસુપૂજ્ય પરિચય	18	
597	35113	ભગવંત વિમલ પરિચય	18	
598	35114	ભગવંત અનંત પરિચય	18	
599	35115	ભગવંત ધર્મ પરિચય	18	
600	35116	ભગવંત શાંતિ પરિચય	18	
601	35117	ભગવંત કુંથુ પરિચય	18	
602	35118	ભગવંત અર પરિચય	18	
603	35119	ભગવંત મલ્લિ પરિચય	18	
604	35120	ભગવંત મુનિસુવ્રત પરિચય	18	
605	35121	ભગવંત નમિ પરિચય	18	
606	35122	ભગવંત નેમિ પરિચય	18	
607	35123	ભગવંત પાર્શ્વ પરિચય	18	
608	35124	ભગવંત વર્ધમાન પરિચય	18	
609	34662	૨૪ તીર્થંકર પરિચય ૧૮૫ દ્વારોમાં	248	
		7/10 તીર્થંકર સંક્ષિપ્ત દર્શન બુક્સ 25 પાના 680	00,680	
		7/11 પ્રકીર્ણ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 4 પાના 246		
ક્રમ	ફાઈલ	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
610	05164	ચોઘડિયા તથા હોરાની કાયમી સમય દર્શિકા	66	
611	05169	અમદાવાદના જિનમંદિર ઉપાશ્ર આદિ ડિરેક્ટરી	128	
612	05159	શ્રાવકના બાર વ્રત તથા અન્ય નિયમો	16	
613	00560	અભિનવ જૈન પંચાંગ	36	
		7/11 પ્રકીર્ણ સાહિત્ય પ્રિન્ટેડ બુક્સ 4 પાના 286	00,246	

	7/12 દીપરત્નસાગરનાલઘુશોધનિબંધ નેટબુક્સ 2 પાના 106			
ક્રમ	ફાઈલનં.	પુસ્તકનું નામ	કુલપાના	કુલપાના
614	249713	આગમકાલીન શ્રાવક-શ્રાવિકા_જીવન અને કવન	70	
615	249547	શ્રુત ઉપાસકો અને સાહિત્ય સર્જન	36	
		7/12 દીપરત્નસાગરનાલઘુશોધનિબંધ બુક્સ 2 પાના	00,106	

મુનિ દીપરત્નસાગરજી દ્વારા [31/12/2020 સુધીમાં] થયેલ સાહિત્ય કાર્ય

આગમ સાહિત્ય બુક્સ 535 કુલ પેજ 1,02,460

આગમેતર સાહિત્ય બુક્સ 80 કુલ પેજ 0,09,140

કુલ સાહિત્ય નિર્માણ બુક્સ 615 કુલ પેજ 1,11,600

+ 'તત્ત્વાર્થ સૂત્ર'ના એક વિશિષ્ટ સંકલનની DVD કુલ પેજ 27,930

અમારા સાહિત્યનો વિસ્તાર કુલપાના 1,39,530

એક લાખ ઓગણચાલીશ હજાર પાંચસો ત્રીશ પાના

મુનિ દીપરત્નસાગર વિશે અન્ય લેખક દ્વારા લખાયેલ
મહત્ત્વના 5 આર્ટીકલ્સ

ક્રમ	લેખનું નામ	મેગેઝીન	લેખક
૧	જૈન ધર્મના મોબાઈલ એન્સાઈક્લોપીડિયા-દીપરત્નસાગર	ચિત્રલેખા	શ્રી પાર્થિવ વોરા
૨	પ્રાચીન મુનિઓની ઉજળી પરંપરાનું તેજસ્વી અનુસંધાન	પ્રબુદ્ધજીવન	ડો. બીપીન આશર
૩	જાણ્યું છતાં અજાણ્યું – 'દીપરત્નસાગર મહારાજ	ગુજરાતસમાચાર	ડો. કુમારપાળ દેસાઈ
૪	વિશ્વમાં સૌ પ્રથમ જૈન આગમનો ગુજરાતી અનુવાદ	દિવ્ય ભાસ્કર	પ્રો. વિજય આશર
૫	જૈન જ્ઞાનસાગરના મોંઘેરા રત્ન 'દીપરત્નસાગરજી	સાગરનું ઝવેરાત	આ૦ હર્ષસાગરસૂરિજી

1/1/2021 થી આરંભ થઇ ગયું છે 'આગમનું એક વિરાટ કાર્ય'

" आगम परिभाषा कोष: "

आप कौन से भागमे क्या देखोगे ?

भाग	‘आगम-परिभाषा-कोष:’	वर्ण	पृष्ठांक
०१	‘आगम परिभाषा कोष:’ भाग- १ ३३६	अ, आ	०,००१ से ०,३३६
०२	‘आगम परिभाषा कोष:’ भाग- २ ३४४	इ ..से.. घ	०,३३७ से ०,६८०
०३	‘आगम परिभाषा कोष:’ भाग- ३ ३३६	च ..से.. न	०,६८१ से १,०१६
०४	‘आगम परिभाषा कोष:’ भाग- ४ ०००	प ..से.. म	१,०१७ से ०,०००
०५			

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथाय नम:

पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरूभ्यो नम:

[३] आगम-परिभाषा-कोष:

आगम शब्दादि परिचय-३ (वर्ण- च से न)

‘વેબ સાઈટ:– (1) www.jainelibrary.org (2) deepratnasagar.in

ઈમેલ એડ્રેસ:– jainmunideepratnasagar@gmail.com મોબાઈલ 09825967397